

दि बुलडाणा जिल्हा केन्द्रीय सहकारी बँक म. बुलडाणा

तुम्ही जेव्हा घेतत करता तेव्हा भविष्यातील आर्थिक अडचणीतुन
सुटण्याचा मार्ग तयार करता

जिल्हा व शीप सहकारा बँक म बुलडाणा या संस्थेच्या
ठेवीन जापती गिःलप गुतवा आणि भविष्यातील
आर्थिक अडचणीसदल निर्धास्त रहा इतर योणःप्राहि
पेकापेशा ही बँक ठेवीपर साःपक दगान ध्याज वत

खःत्रल ठेवीवर

३ टक्के

सुःदली ठेवीवर

५ ले ७ टक्के पर्यंत



स्वार्थावरोधरच जिल्हयाचा कृषि औद्योगिक विकासरुपी
परमाथ साधण्यासाठी आपल्या ठेवी या वकेतच ठेवा

आपल्या ३६ शाखासह सपुण जिल्हयात वक आपली
सेवा प्रवान करीत आहे



भा मो विगळ
अध्यक्ष

धृ अ देशपांडे
संरःध्यवस्थापक

रा दे मोड
उपाध्यक्ष

श वि देशमुख
अध्यक्ष

हिन्दुस्थान समाचार

रूरमाय

संख्या	कायालय	जोवन विहार पार्लियामेंट स्ट्रीट नई दिल्ली	३११९३३, ३१२०३०
१	असम	नवजान राड, उद्यान बाजार, गोहाटी	६१३३
२	आंध्र प्रदेश	५ ए २२/१०६, आदश नगर, हैदराबाद ८	३७६६२
३	उत्तर प्रदेश	विश्वेश्वरनाथ रोड, पोस्ट बाकम न० १०६ लखनऊ भगतसिंह द्वार, आगरा	२४२०१ ७२८४८
४	उत्तर प्रदेश	सी १२/११ श्रीरगावाट, वाराणसी १४/मी राजापुर इलाहाबाद ८६/५६ काहीयाना वानपुर	६६१२५ ४८३८ ६१६५२
५	उत्तर प्रदेश	हाडकोट राड कटक २ १७/२ टार्डप ६ ए अजाक नगर भुवनेश्वर ६	२२७५४ ५००१५
६	केरल	हरी बिहार चिराकुलम रोड त्रिवेन्द्रम १	३५७१
७	गुजरात	भगवती भवन, शाहपुर मिन कम्पाउण्ड अहमदाबाद १	२३१३७
८	गुजरात	गवनमेट कालोती, पणजी	२३२६
९	जम्मू कश्मीर	रना हाउस, श्रीमोरा कदल, श्रीनगर जम्मू तबी	६३१४ ३२६५
१०	तमिलनाडु	१५ विचूर मुथिया मुडाली स्ट्रीट बेपरी मद्रास ३	३६७५४
११	त्रिपुरा	८ ए जगन्नाथबाडी रोड कृष्णनगर अगस्तल्ला	१२६८
१२	नागालण्ड	मिशन कम्पाउण्ड, कोहिमा	
१३	पंजाब	जी० टी० रोड जालंधर नगर	३५१४
१४	पंजाब व हरियाणा	हाउस न० ४०२ सेक्टर न० २२ ए चण्डीगढ	२३६५६
१५	पश्चिम बंगाल	१०-ए सुरेन्द्रनाथ बनर्जी रोड, बनकता १०	२४२१६०
१६	बिहार	पास्ट बाकम न० ११० पटना १	२२४२१
१७	मध्य प्रदेश	३ हाथी खाना भाषान फानके बाजार, गोन विल्डिंग लखन, ग्वानियर	३५७७ २२६१२
१८	मणिपुर	मन्त्री पाखरी इम्फाल	
१९	महाराष्ट्र	वीर नारीमान रोड बम्बई १ ३८८ वेस्ट पार्क राड धन्ताली नागपुर १ निलक पथ, पूना ६	२४२०४८ २२६७६ १६७७४
२०	कर्नाटक	३६, अनयप्पा टनाक बगनोर २०	२७६१६
२१	राजस्थान	यू कालोनी मिर्जा इम्माइल रोड जयपुर	७०६६५
२२	हिमाचल प्रदेश	मानिग ब्यू लोघर क्यू गिमला	३८८३
२३	नेपाल	दिल्ली बाजार पास्ट बाकम न० ११० काठमाण्डू	११२७६
२४	सिक्किम	मन रोड गगटोक (सिक्किम)	५६६
२५	भूटान	फुल्सालिंग (भूटान)	

*Key to Prosperity of Rajasthan is with
Entrepreneurs to whom*

Rajasthan State Industrial & Mineral Development Corporation Ltd.

OFFERS ITS SERVICES THROUGH

- ★ Allotment of Development Land on 99 years lease on subsidised rates to be paid in instalments
- ★ Construction of Sheds in hire purchase with facilities of repayment
- ★ Arranges loan from financial institutions
- ★ Provides help to unemployed technocrats in establishing industries by arranging finances, management assistance and Technical guidance
- ★ Prepares Pre investment Notes, Project Reports Feasibility Reports, etc
- ★ Renders technical assistance to new and old units
- ★ Renders Cost Consultancy and Technical Consultancy Services and much more

Please Contact

THE PUBLIC RELATIONS MANAGER OF THE CORP

100 Jawaharlal Nehru Marg
JAIPUR 302004

Phone 63777 63748

Gram RIMDCO

हिन्दुस्थान समाचार वार्षिकी १९७४

(Year Book 1974)

[विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा शिक्षण मस्थाओं एव
पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत]

सम्पादक

शिवकुमार गोयल



प्रकाशक

हिन्दुस्थान समाचार
(प्रसंग लेख एव प्रकाशन विभाग)
जीवन विहार, पार्लियामेंट स्ट्रीट,
नई दिल्ली-११०००१

प्रकाशक

हिन्दुस्थान समाचार सहकारी समिति

(प्रसंग-संग एव प्रकाशन विभाग)

जीवन विहार पब्लिशिंग्स स्ट्रीट

मई दिल्ली ११०००१

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

आवरण पृष्ठ श्री सुरेश सी० लाल

आठवां संस्करण

मूल्य २५ रुपये

मुद्रक

नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि०

(लीजिज ग्राफ धनुन प्रेस)

नया बाजार दिल्ली ११०००६

भूमिका

देश के सभी लोग इस बात से महमन रहे हैं कि देश का आन्तरिक काम दश की ही किसी भाषा में होना चाहिये। इस दृष्टि से सविधान में हिन्दी का मध्य के कार्यों के लिये राजभाषा माना गया।

हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा के नाते प्रतिष्ठित करने का यह कार्य उसी स्वप्नेश भावना से प्रेरित है जो हमारी आजादी की लड़ाई में शक्ति प्रदान करती रही और आजादी के बाद हमारी प्रगति और समृद्धि का मापदण्ड है।

निम्नोक्त राष्ट्र की स्व-भाषायें ही राष्ट्र की भावात्मक एकरता स्थापित करने का एक मात्र मांग बन सकती है। यह सभी मभव है जब दश की इन सभी भाषाओं का जोड़ने वाली राष्ट्रभाषा हिन्दी पूर्ण समय और सम्पन्न बन। इसीलिये यह कहा जाता है कि हिन्दी की प्रतिष्ठापना राष्ट्र की समस्त भाषाओं की ही प्रतिष्ठापना है।

राष्ट्रीय प्रगति में हिन्दी की इस महत्ता का ध्यान में रखकर ही ज्ञान विज्ञान के विविध क्षेत्रों में तत्परी से श्रम हो रहा है। सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग न केवल देश के शीघ्रत आदमी का अधिक जानकारी बना रहा है बरन प्रजातन्त्र की जड़ों का मजबूत कर रहा है। इसमें माध्य-माध्य तकनीकी चिकित्सा, कानून तथा वैज्ञानिक विविध क्षेत्रों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। हिन्दी के इस बढ़ने हुए प्रयोग का ध्यान में रख कर सम्पन्न प्रथा की आवश्यकता स्वयं स्पष्ट हो जाती है। हिन्दी का व्यवहार में पूर्णतः राष्ट्र-भाषा और राजभाषा का रूप देने के लिये आवश्यक है कि छात्रों के व्यवसायिक, पत्रकारों के प्रशासक तथा जन-सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले असंख्य कार्यकर्ताओं के पास वह सब जानकारी सज्जित रूप में उपलब्ध हो जिससे अपने कामकाजों के उपयोग में ला सकें। इसी उद्देश्य का सामन रखकर 'हिन्दुस्थान समाचार सहकारी समिति' की आर से विभिन्न भाषाओं से वापिकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

इतने वर्षों में 'हिन्दुस्थान समाचार' वापिकों ने अपना स्थान भी बना लिया है।

अपने देश के राजकाज के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिये अंग्रेजी भाषा पर निर्भर बन रहना एक ऐसी बात थी जो प्रत्येक स्वामिनीय श्रम करने का खटकती थी। सौभाग्य से 'हिन्दुस्थान समाचार वापिकों' प्रकाशन से यह कमी दूर हुई है। हिन्दुस्थान समाचार के इस प्रयास में सहयोग देकर उत्साहवर्धन करना राष्ट्रभाषा और राष्ट्र के प्रत्येक प्रेमी का कर्तव्य है।

हिन्दुस्थान समाचार वापिकों के १९७४ के संस्करण में पाकिस्तानी आक्रमण का इतिहास, भारत के समस्त विस्थापितों की समस्या भारत और विश्व अग्र्याय पाठकों को सामयिक तथ्या से अवगत कराने वाला है। विज्ञान और श्रृंखला अध्यायों का भी गहनता की अपेक्षा अधिक विस्तार से संस्करण में सम्मिलित किया गया है।

मुझे आशा है कि केवल हिन्दी ही नहीं बरन समस्त राष्ट्रीय भाषाओं की प्रगति में रुचि रखने वाले सुधीजन इस वापिकों के सद्म प्रथम का आर करेंगे। माध्य हों में नम्र प्रार्थना करना चाहूँगी कि यदि इस सम्पन्न श्रम में सुधार के लिये कुछ सुझाव भी वे दे सकें तो हम उनके अत्यन्त आभारी होंगे।

जीवन विहार
पालियामेंट स्टीट
नई दिल्ली १

भवदीय
सरोजिनी महिषी

केन्द्रीय पत्रक तथा आन्तरिक उद्घरण राज्यमंत्री
अध्यक्ष हिन्दुस्थान समाचार सहकारी समिति

प्रकाशक की ओर से

'हिन्दुस्थान समाचार वापिकी' का यह छाठवा सस्करण राष्ट्रवासियों के हाथों में पहुँचाने समय असीम प्रसन्नता का अनुभव होना स्वाभाविक ही है।

हिन्दी में अपने राष्ट्रजीवन के विविध अंग उपागों की जानकारी सजलित कर सद्म ग्रथ के रूप में प्रस्तुत करने का यह कार्य अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। यह क्षेत्र बहुत विस्तृत है तथा हिन्दी में सद्म ग्रथों के अंग प्रकाशन भी होते रहे हैं। फिर भी 'हिन्दुस्थान समाचार वापिकी' ने विगत सात प्रकाशनों में अपना विशाल स्थान बना लिया है।

अपने राष्ट्र की यह परम्परागत विशेषता रही है कि हम विविधता में एकता और समन्वय की स्थापना कर पाते हैं। भारत के वर्तमान प्रजातांत्रिक ढाँचे में यह कार्य और भी अधिक आवश्यक हो गया है। आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक सभी स्तरों पर असमानता और उपीडन को समाप्त कर प्रगतिशील समृद्ध भारत का निर्माण के लिये सरकार की ओर से घोषित लक्ष्यों तक पहुँचने की जोरदार कोशिश हो रही है। इस समय में सरकारी प्रयत्नों की मफलता के लिए प्रत्येक देशवासी का हाथ बटाना अतीव आवश्यक है। परन्तु यह तो सभी समझते हैं जब देश का हर सोचने समझने वाला नागरिक राष्ट्रीय प्रगति के प्रयत्नों की ठीक ठीक जानकारी रखे। विभिन्न सांस्कृतिक तथा निजी धर्मों की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन कर जनता को हर स्थिति में जागरूक और सक्रिय रखा जाय। यही वह उद्देश्य है जिसे हम सद्म ग्रथ द्वारा प्राप्त करने का छटा सा यत्न किया गया है।

हम प्रसन्नता के साथ कि हिन्दुस्थान समाचार के वापिकी प्रकाशन के इस कर्म का बन्धन तथा राज्य सरकारों ने सराहा है। हम उनकी ओर से प्राप्त सहायता तथा प्रोत्साहन के लिए अतीव आभारी हैं।

इसी प्रकार देश के प्रमुख उद्योग संस्थानों, शिक्षा संस्थानों, नगरपालिकाओं और निगमों, विभिन्न छात्र-वृद्धे व्यापारों, मिलमालिकों, पत्रकारों आदि उन सभी का सहयोग प्राप्त हुआ है जो देश की प्रगति में हाथ बटाने के लिये प्रयत्नशील हैं। उनकी ओर से प्राप्त विनायना के लिए भी हम अत्यन्त आभारी हैं।

विश्वास है कि प्रतिवर्षानुसार यह प्रकाशन भी पुस्तकालयों, शिक्षा केंद्रों के वाचनालयों, छात्रों और प्रतिभागीता परीक्षार्थियों तथा अन्य सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

इन शब्दों के साथ जब यह प्रकाशन आप सबके हाथों में प्रस्तुत किया जा रहा है तब हिन्दुस्थान समाचार के विभिन्न कार्यालयों के साथी तथा सुदूर जिन केंद्रों तक कायरेत अपने सवात्ता सहायियों का धन्यवाद लिये जिना नहीं रखा जा सकता जिनके कठोर परिश्रम के बिना यह सद्म ग्रथ बन पाना अत्यन्त कठिन था।

समस्त विनायनाताओं, प्राहकों तथा पुस्तक विप्रेनाओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुये यह सद्म ग्रथ पाठकों के हाथों में सार्वभौमिक है। आशा है पिछले प्रकाशनों की तरह इसका भी हार्दिक स्वागत होगा और भविष्य के लिये हम उन सभी से उत्साह तथा सहायता मिलगी।

धन्यवाद,

वालेश्वर अग्रवाल

सचिव

हिन्दुस्थान समाचार सहायक समिति

अनुक्रमणाका

विषय	पृष्ठ संख्या
१ भारत	१--८
भौगोलिक परिचय, प्राकृतिक संरचना हिमालय भारतीय पठार, नदी प्रणालियाँ, मरुस्थल, जनवायु, भूगर्भीय ढाँचा, साधारण वात ।	
२ कालगणना	९--१४
काल का सूक्ष्मतम विभाजन, कालचक्र अथ पंचांग, काल मान ।	
३ भारतीय इतिहास	१७--३५
वदिककाल, रामायणकाल, महाभारतकाल, मध्यकाल, प्रसिद्ध राजवंश मुसलमानों का आक्रमण, निरङ्कुश का उत्थान मराठाकाल ब्रिटिश ज्ञान, भारत के वायसराय राष्ट्रपति ।	
४ स्वाधीनता संग्राम का इतिहास	३६--५२
१८५७ का स्वातन्त्र्य संघर्ष काँग्रेस, रिपब्लिकन आन्दोलन आजाद हिन्द सेना देश स्वाधीन हुआ भारतीय इतिहास का निष्कर्ष ।	
५ भारतीय प्राचीन साहित्य	५३--५७
वेदांग जन साहित्य, जौहरी साहित्य ।	
६ भारतीय विचारक	१६--६४
७ भारतीय पत्र और त्योहार	६७--७३
८ भारत दर्शन	७९--८६
९ भारत की सामल व्यवस्था	८५--१०४
मविधान नागरिकता, वायपालिका राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, संसद भाषा निर्वाचन आयोग, वित्त आयोग वायपालिका मविधान मशासन ।	
१० भारत की वाय व्यवस्था	१०७--११३
ग्राम पंचायत उच्चतम वायालय उच्च वायालय अधीनस्थ अदानत, विशेष वायालय पंचायत वायालय विधि मन्त्रालय विधि आयोग ।	
११ भारत की रक्षा व्यवस्था	११४--१२६
पार का आक्रमण व वगना देश की मुक्ति भारत व सर्वोच्च सेनाध्यक्ष, रक्षा मन्त्रालय स्थलसेना नौसेना, वायुसेना, एन०सी०सी०, प्रतिरक्षा बजट सम्मान और पुरस्कार, पीरड माशल ।	
१२ शिक्षा	१२७--१६१
घण्ट, पाठ्यपुस्तकें, प्राथमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा	

वनानिक शिक्षा, शताब्दी समारोह भारत के विश्वविद्यालय भारतीय भाषाएँ, संस्कृत का विकास साहित्य अकादमी ।

- १३ जनस्वास्थ्य १८३—१४३
मलेरिया उ मूलन चेचक उ मूलन कुष्ठ नियंत्रण हैजा, दाय्योन रोग मानसिक स्वास्थ्य, कसर औषध नियंत्रण, चिकित्सा अनुसंधान महीबल कालज आयुर्वेद कालेज, खाद्य पदार्थों में मिलावट परिवार नियोजन पाचवी योजना ।
- १४ परिवहन तथा पयटन १४५—१६६
वायु परिवहन दुधटनाएँ रेलवे परिवहन मडक परिवहन जनमार्ग परिवहन पयटन हाटल ।
- १५ डाक तार संचार १६६—१७५
दूर संचार सेवाएँ परिषात के आवड डाक बीमा टेलीफोन तार सेवा हिंदी का प्रयोग इडिपेक्म ७३ ।
- १६ समाज कल्याण १८१—१८६
पहला एशियाई सम्मेलन पिछडा बग कल्याण कार्यक्रम योजनाएँ भगिया की स्थिति आनिवासी विकास खड असुपृश्यता निवारण मद्यनिपध अपग नरहीन, वेश्यावति उ मूलन भिक्षावति उ मूलन ममाज कल्याण, पीठिक आहार कार्यक्रम ।
- १७ सिंचाई और बिजली १६३—१६६
जल मोत विद्युत खपत, बिजली का भीषण मकट परमाणु उपयोग की महत्ता पाचवी योजना में प्राजेक्ट ।
- १८ भारतीय कृषि २०१—२१६
भूमि का उपयोग उत्पादनशील किम्म कृषि नीति कृषि ऋण उबरक कृषि अनुसंधान पशुपालन उत्पादन व लभ्य कृषि शिक्षा मू सुधार चीनी खाद्यान्ना का आयात ।
- १९ सहकारिता २२१ २२४
कृषि विकास और सहकारिता बका की मदद समितियों का क्षत्र गह निर्माण समितिया सहकारिता द्वारा रोजगार ।
- २० समाचारपत्र एवं प्रसारण २२६—२३८
वागज का मकट भारतीय पत्र भाषानुसार पत्रा की प्रसार महया स्वामित्व समाचार समितिया प्रसारण दूरगणन फिम डिबीजन प्रकाशन विभाग ।
- २१ भारतीय अर्थ-व्यवस्था २३६—२६३
वित्तमंत्रालय वजन कर आयोग विकास की तर औद्योगिक उत्पादन मूय सरकारी वित्त विदेशी मुद्रा केन्द्रीय सरकार द्वारा दिया गाने वाला ऋण गहरी व देहाती क्षत्रा की आय

बढ़ती हुई महगाई, भारत में वर व्यवस्था, राष्ट्रीयवृत्त वका की प्रगति, भारतीय रुपय का विदेशी विनिमय मूल्य, ग्राम बीमा राष्ट्रीयकरण, भीषण महगाई ।

- २२ आयोजन २६५—२७६
स्वदेशी माधना पर निभरता, पाचवी पचवर्षीय याजना, बचत, याजना परिव्यय, पाचवी याजना १९७४-७६, निधनता का उमूलन ।
- २३ उद्योग २८१—२९३
श्रीचागिक उत्पादन, लाइसेंस, नई लाइसेंस नीति विदेशी सहयोग, उत्पादन म र्कावटें, सप्त सूत्री याजना ।
- २४ वाणिज्य व्यापार २९७—३१६
नये श्रीचागिक उत्पादन निर्यात, व्यापारिक श्रान्ति का श्रारम्भ मुख्य आयात, मुख्य निर्यात, प्रमुख देशा से आयात नियान ।
- २५ बजट ३१६—३२८
श्रविभवत कुटुव व वृषि आय, बजट एक नजर म ।
- २६ भारत जनसाल्पिकी विवरण ३२८—३३३
भू क्षेत्र और जनसख्या, जमदर व मत्युदर, स्त्री-पुरुष अनुपात, साभरता, कितन नर क्तिने नारी, हिन्दुधमा की जनसख्या बद्धि म गिरावट, १० लाख स अधिक जनसख्या के नगर श्रादिवासी विभिन्न राज्या म ।
- २७ विज्ञान ३३५—३४४
वनानिका की कुन सख्या वृषि अनुसधान, परमाणुशक्ति तथा अन्तरिक्ष अनुसधान निरन्तर प्रगति ।
- २८ पुस्तकालय ३४७—३४९
इडिया आफिम लायब्रेरी नेशनल लायब्रेरी ।
- २९ श्रीडा ३५७—३७५
भारत म खेता की स्थिति, १९७० की उपलब्धिया, भारतीय खिलाडी उल्लेखनीय रिकाह म्युनिख ओलम्पिक, राष्ट्रमडल खेल, विश्व मुकाबला म भारत राष्ट्रीय मुकाबल, विभिन्न खेल परिणाम, प्रतियागिताए पुरस्कार व सम्मान, राष्ट्रीय खेल कूद सपठन, १९७०-७८ की प्रतियागिताए ।
- ३० भारताय श्रमिक ३७६—३८३
- ३१ विदेशा मे प्रवासी भारतीय ३८७—३९१
वगा मे शुन्धान श्रीनका मलवेशिया और सिंगापुर मारीशम, फिजी ।
- ३२ भारत मे विस्थापित ३९५—३९८

- ३३ भारतीय चलचित्र ६०१—४०१
एक बच्चा उद्यम बालती फिल्म सबसे पहली श्रेष्ठतम फिल्म, वनचित्र नई लहर की फिल्म फिल्म समारोह सतराणिप राष्ट्रीय पुरस्कार सन ७३ का सर्वश्रेष्ठ फिल्म ।
- ३४ भारतीय समीन व नृत्य ४०७—६१०
- ३५ राजनीतिक दल ६११—४२१
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, कांग्रेस व दो दल, स्वतंत्र पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी भारतीय जनसंघ, रिपब्लिकन पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी, अकाली दल द्रविड मुन्नेट कपगम, भारतीय प्रातिदल ।
- ३६ पाकिस्तानी आक्रमण तिथिक्रम ४२७—४४६
भारत पर पाक आक्रमण का इतिहास कश्मीर पर आक्रमण कच्छ पर आक्रमण कश्मीर पर दूसरा आक्रमण १९७१ का आक्रमण व भारत की विजय, भारत पाक युद्ध का घटनाक्रम, शिमला समझौता वदिया की वापसी ।
- ३७ हिन्दुस्थान समाचार (रजत जयंती वर्ष) ४४३—४४४
विकास प्रगति का तीसरा चरण सहकारी समिति सुन्न आधार अन्नक महानुभावा का सहाय प्रगति व आकड भाषी योजनाए वनमान गठन हमारी प्रतिबद्धता प्रमुख काय केंद्र ।
- ३८ मध्यावधि निर्वाचन ४५३—६७
निदलीय कम हृय व्यय मायता प्राप्त लाक्सभा परिणाम विधान सभा निर्वाचन १९७२ ।
- परिशिष्ट ६७१—५५
कन्द्रीय मन्त्रिमंडल नाकगभा एक रायगना राज्य और सघाय धर १९७३ का राष्ट्रीय घटनाक्रम दूतावास कुछ महत्वपूर्ण तथ्य ।

SIKKIM's gift to your Cocktail Cabinet —

- Sikkim's Black CAT RUM
- Sikkim's SHANGRILA WHISKY
- Sikkim's JUNIPER GIN

Where **QUALITY** counts
SIKKIM Liquors & Liqueurs are a must

SNOW-LION



FOR QUALITY

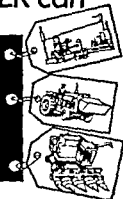
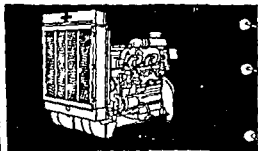
For your pleasure and your specific taste, SIKKIM brings from the highlands of the Himalayas, Whiskies and Brandies, Rum and Wine, Gin and Liqueurs

Please try them out once for a lifetime of gracious companionship

SIKKIM DISTILLERIES LTD.

Rangpo, SIKKIM

What can turn the mousy squeak of agriculture into a lions roar? CUMMINS POWER can



Remember the days not so long ago when agriculture was a squeaky backward activity? Now look what's happening to it. Mechanisation. Scientific Agriculture. Large Scale Farming. a national priority activity.

You are involved in it and need big power. durable. reliable. economical power. We have just the power you need. CUMMINS POWER 80-800 bhp. prime movers for Water Well Drilling Rigs. Agricultural Tractor. Bulldozers. Irrigation Pumps and other agricultural applications. Our CUMMINS ENGINES are custom built, tailored to your requirements as recommended by our Application Engineers. 85° and generous content up to 320 hp. Prompt supply of spare parts, technical advice and after sales service everywhere.

A roaring lion that's what agriculture must be. CUMMINS POWER helps make it.

For a giant step in agriculture specify CUMMINS POWER.

KIRLOSKAR CUMMINS LIMITED

Kothrud, Poona 29 INDIA

PRATIBHA 712A

भारत

अस्त्युत्तरस्या विशि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराज ।
पूर्वापरौ तोयनिधी बगाह्य,
स्थित पूयिव्या इव मानदण्ड ॥

महाकवि कालिदास ने 'कुमार सभवा' म वणन किया है कि भारत उत्तर मे देवतात्मा नगाधिगज हिमालय, पूरव पश्चिम में समुद्र स घिरा हुप्रा पथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है । हिमाच्छादित हिमालय की चाटी मे ही ससार की सर्वाच्च चोटी 'मेगर माया' (गौरीशकर) है जिसके कारण समार के साहसी पवतारोही हिमालय की ओर आकृष्ट होते रहे हैं ।

- १ हिमालय पवतमालाग्रा म से हमारे दश को शस्वश्यामला करने वाली गगा, यमुना, सरस्वती, सतलुज, व्यास, झेलम, चिनाव रावी आदि नदिया का उद्भव हुग्रा है । भौगोलिक तथा प्राकृतिक दृष्टि मे हिमालय को दश क प्रहरी के रूप म माना जाता था किन्तु १९६२ म चीन द्वारा उत्तर पूव सीमा की ओर से आक्रमण किये जाने के बाद हिमालय के क्षेत्र म स्थित नेपाल भूटान, सिक्किम तथा तिब्बत आदि पडोसी देश का महत्व बढ गया है । हिमालय के उम पार रूम तथा अफगानिस्तान जसे पडोसी राट्रा के साथ भारत के मत्री सम्बन्ध को भी एक विशेष तथा असाधारण महत्व प्राप्त हुग्रा है ।

हिमालय की छत्रछाया म जिस भारतीय सभ्यता-संस्कृति का जन्म तथा विकास हुग्रा है उसके प्रभाव के कारण ही भारतभूमि की बन्दना अनेक विदेशिया ने भी की है । इसे देवभूमि कह कर बन्दना की गयी है । भारतीय संस्कृति म हिमालय की पवतमालाग्रा को तथा गगा यमुना, सरस्वती आदि नदिया को इतना महत्व प्राप्त हुग्रा है कि किमी भी शुमकाय का प्रारम्भ करते समय—

गगे च यमुने चव, गोदावरि सरस्वति,
नमदे सिधुकावेरि, जलेऽस्मिन् सनिधिं कुरु ॥

इनके नामा वा पुण्य स्मरण किया जाता है । आधुनिक भारत म इन्ही महान नदिया की शक्ति का उपयोग सिंचाई तथा विद्युत निमाण के लिये करके ही भारत कृषि-उद्योग मे श्रान्ति द्वारा आत्मनिर्भर बनने की दिशा म अग्रसर हो रहा है । भरतखड, आर्यावत, सप्तसिधु, भारतवप आदि इमके प्राचीन नाम हैं । इस देश की गाय देवता

भी गाते हैं

‘गायति देवा स्तित गीतवानि, ध्यायानु ये भारत भूमिमाने ।

भारत को विश्व-गुरु कहना वा गौरव प्राप्त है । न केवल गरीब धरिणु प्राचीन पारस व अरब धरति देशा म भारत को मान की विद्विया या गणभूमि कह कर इसकी स्तुति की जाती रही है ।

भगवान मनु ने भारत को मानव मान व तित प्ररणा व गि त्त का कर्ता बनाइ हूण कहा था —

एतद्दश प्रसूतस्य सखासावपजमन ।

स्व स्य धरित्त शिक्षरन पयिष्यां सयमानया ॥

अर्थात् यदि समार के कित्सा ब्यक्ति का गणनाचर की गिणा धरण करती ह्ता गा वद् भारत के विद्वाना से जाकर प्रहूण कर ।

समार म अनेक सस्कृतिया ने जन्म तिया और व देखा ही ग्यन मिट गयी तिनु भारतीय सस्कृति ध्राज भी समार का समरत्व का सन्देश ले गयी है । इगीनिय गर भारतीय शायर ने कहा था—

यूनान, मिथ, रोमां, सब मिट गये जहाँ से

अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा ।

भौगोलिक परिचय

अपजी म भारत को इडिया कहा जाता है । पारस धरति देशा म प्राचीनतान म भारत को हिंद कहा जाता था । हम नाम तथा मिधु नशी के लिए यूनानी नाम इण्डिया के आधार पर भारत का ‘इडिया’ नाम बना ।

भारत के सविधान म भी इसका मूल नाम इडिया-जो भारत है कहा गया है । समुक्त राष्ट्र सभ के सन्स्य देशा की सूची म इस देश का नाम इडिया है ।

भारत के लिए एक और नाम हिन्दुस्थान है, इसका प्रपधरण हिन्दुस्तान प्रचलित है । भारत विश्व म क्षेत्रफल की दृष्टि म ७वा एक जनसध्या की दृष्टि स दूसरा देश है । भारत को उपमहाद्वीप कहा जाता है । भारत भूमि एशिया के दक्षिण म एक प्रायद्वीप है । यह भूमध्य रेखा के उत्तर म ८°४ से ३७°६ उत्तरी अक्षाण रेखाया तथा ६८°७ से ९७°२५ पूर्वी देशांतर रेखायो के मध्य स्थित है ।

भारत का विस्तार जनवरी १९६५ के अनुसार ३२,६८,०६० बग किलोमीटर है । उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई ३,२२० कि० मी० है । इसकी चौड़ाई पूव से पश्चिम २,६७७ कि० मी० है । इसकी स्थल सीमा १५,१६८ कि० मी० है । भारत का समुद्र तट ५,६८६ कि० मी० लम्बा है ।

प्राकृतिक रचना भारत की उत्तरीय सीमा हिमालय बनाता है । पश्चिम म सिंधु सागर या अरब सागर और पूव मे बंगाल की खाडी है । दक्षिण मे हिन्द महासागर लहरा रहा है । देश हिमालय के दक्षिण म फला हुआ है ।

नक्शे मे भारत त्रिभुजाकार दिखाई देता है । इसका प्राधार उत्तर म हिमालय है और शीय दक्षिण मे हिन्द महासागर मे है । दक्षिणी छोर पर त्रिभुज नाशपाती की शक्ति ले लेता है और यह अन्तरीय कन्याकुमारी के नाम से प्रसिद्ध है ।

उत्तर में स्थित हिमालय साधारणतः भारत को एशिया के शेष भू-भाग में अलग करता है। यह विश्व की सर्वोच्च पर्वतमाला है। भारत के पश्चिम व पश्चिमात्तर में पाकिस्तान व अफगानिस्तान, उत्तर में पूव से पश्चिम चीनी तुविन्सान (सिन्धियाग), तिब्बत व नेपाल हैं। पश्चिम में बर्मा है। बंगला देश, पश्चिमी बंगाल व असम के दक्षिणी अंचल के बीच स्थित है। उत्तर में सिक्किम व भूटान विशेष संधिया के अंतर्गत भारत से सम्बद्ध हैं। दक्षिण में श्रीलंका द्वीप है जिसे मन्नार की खाड़ी भारत से अलग करती है। बंगाल की खाड़ी में स्थित प्रद्यमान तथा निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर के लक्षद्वीप मिनीक्वॉय तथा अमीन द्वीप-समूह भारत से अंतर्गत हैं।

भारत लघु विश्व है। इस कारण राष्ट्रीय 'औसत तापमान' और औसत वर्षा इन शब्दों का भारत के लिए कोई अर्थ नहीं है। राजस्थान की मरुभूमि में औसत वार्षिक वर्षा ४ इंच होता है पर चेरापूजी में ४२५ इंच होती है। इसी प्रकार कश्मीर के कुछ स्थानों में 'न्यूनतम तापमान ४०° फारनहाईट रहता है और राजस्थान के कुछ स्थानों में अधिकतम तापमान १२०° एफ० रहता है। इसलिए स्थानीय औसत की बात की जा सकती है भारतीय या राष्ट्रीय औसत की नहीं।

देश के विस्तार के अनुपात में समुद्र-तट कम है क्योंकि खाड़ियाँ और उप-खाड़ियाँ की संख्या कम है। भारत का पश्चिमी समुद्र तट चट्टानी है। पूव में समुद्र उथला है अतः महासागर गामी बड़े जहाज दूर से तगर डालने का वाध्य होत है।

प्राकृतिक संरचना

तीन प्राकृतिक भाग प्राकृतिक दृष्टि से भारत तीन क्षेत्रों में विभक्त है—

(१) हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र। (२) गंगा सिन्धु का मैदान और (३) दक्षिणी पठार।

हिमालय भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणी २५०० किलोमीटर की लम्बाई में पूव से पश्चिम तक फैली हुई है। इसकी चौड़ाई २४० से ३२० कि० मी० है। इस पर्वत श्रेणी का पहाड़ी, घाटियाँ, पठार आदि का कुल क्षेत्रफल ५ लाख किलोमीटर है। पूव में बर्मा और भारत के मध्य की पर्वतीय शृंखला को पतकोई कहते हैं। अरुण में जयन्तिया खासी और गारो शाखाएँ हैं। हिमालय की पूर्वी शाखाएँ असम से नीचे उतरकर बंगाल की खाड़ी तक जा पहुँचती हैं। उत्तर पश्चिम शाखाएँ अफगानिस्तान की सीमा का स्पर्श करती हुई अरब सागर तक जा पहुँचती हैं। उत्तर पश्चिम शाखाओं में सुलेमान कांधार हिन्दुकुश आदि पर्वत प्रसिद्ध हैं। अफगानिस्तान की सीमा पर सुलेमान पर्वत में खैबर, घुरम, गामर, बोलन टोची आदि सशौण मार्ग (दर्रे) हैं। भारत पर प्रारम्भिक आक्रमण इन्हीं दर्रे से हुए।

हिमालय पर्वत को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है महान हिमालय लघु या मध्य हिमालय एवं शिवालिक पहाड़ियाँ।

महान हिमालय यह भाग बर्फीला है। इस भाग की ऊँचाई साधारणतः ६००० से ७,००० मीटर तक है। विश्व के उच्चतम पर्वत शिखर इसी भाग में हैं। एवरेस्ट (गौरीशंकर) ८,८४८ मीटर, कंचनजंघा ८,५८६ मीटर, घोलागिरि ८,०७५ मीटर, नन्दा देवी ७,८१६ मीटर, कामत ७,७५५ मीटर तथा अन्नपूर्णा ७,६५० मीटर ऊँचे हैं।

लघु या मध्य हिमालय में महान हिमालय के निचली ढलान में ३,५०० से ५,०००

भी गाते हैं

‘गायन्ति देवा किल गीतकानि ध्यास्तु ये भारत भूमिभागे ।

भारत को ‘विश्व-गुरु’ कहलाने का गौरव प्राप्त है। न केवल यूरोप अपितु प्राचीन फारस व अरब आदि देशों में भारत को ‘सोने की चिड़िया या स्वर्णमणि’ कह कर इसकी स्तुति का जाती रही है।

भगवान् मनु ने भारत को मानव मात्र के लिए प्रेरणा व शिक्षा का केन्द्र बताया हुआ कहा था —

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादप्रजन्मन ।

स्व स्व चरित्र शिक्षेरन पथि-यां सवमानवा ॥

अर्थात् यदि ससार के किसी व्यक्ति को मदाचार की शिक्षा ग्रहण करनी हो तो वह भारत के विद्वानों से जाकर ग्रहण करे।

ससार में अनेक सस्कृतियाँ ने जन्म लिया और वे देखते ही देखते मिट गयीं किन्तु भारतीय सस्कृति आज भी ससार को अमरत्व का संदेश दे रही है। इसीलिये एन भारतीय शायर ने कहा था—

यूनान, मिथ्र, रोम, सब मिट गये जहाँ से

अब तक मगर है बाकी, नामोनिशां हमारा ।

भौगोलिक परिचय

अग्नेजी में भारत को इंडिया कहा जाता है। फारस आदि देशों में प्राचीनकाल में भारत को हिन्द कहा जाता था। इस नाम तथा सिन्धु नदी के लिए यूनानी नाम इण्डस के आधार पर भारत का इंडिया नाम बना।

भारत के सर्विधान में भी इसका मूल नाम इंडिया जो भारत है कहा गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देशों की सूची में इस देश का नाम इंडिया है।

भारत के लिए एक और नाम हिन्दुस्थान है, इसका अपभ्रंश हिन्दुस्तान प्रचलित है। भारत विश्व में क्षत्रफल की दृष्टि से ७वाँ एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा देश है। भारत को उपमहाद्वीप कहा जाता है। भारत भूमि एशिया के दक्षिण में एक प्रायद्वीप है। यह भूमध्य रेखा के उत्तर में ८° ४' से ३७° ६' उत्तरी अक्षांश रेखाओं तथा ६८° ७' से ९७° २५' पूर्वी देशांतर रेखाओं के मध्य स्थित है।

भारत का विस्तार जनवरी १९६५ के अनुसार ३२,६८,०६० वर्ग किलोमीटर है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई ३,२२० कि० मी० है। इसकी चौड़ाई पूरब से पश्चिम २,९७७ कि० मी० है। इसकी स्पष्ट-सीमा १५,१६८ कि० मी० है। भारत का समुद्र तट ५,६८६ कि० मी० लम्बा है।

प्राकृतिक रचना भारत की उत्तरीय सीमा हिमालय बनाता है। पश्चिम में सिन्धु सागर या अरब सागर और पूरब में बंगाल की खाड़ी है। दक्षिण में हिन्द महासागर लहरा रहा है। देश हिमालय व दक्षिण में फला हुआ है।

नामों में भारत त्रिभुजाकार दिखाई देता है। इसका आधार उत्तर में हिमालय है और दक्षिण में हिन्द महासागर में है। गिनी छोर पर त्रिभुज नामगोपी की शक्ति से बना है और यह अन्तरीय कन्याकुमारी के नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तर में स्थित हिमालय साधारणतः भारत को एशिया के शेष भू-भाग से अलग करता है। यह विश्व की सर्वोच्च पर्वतमाला है। भारत के पश्चिम व पश्चिमोत्तर में अफ़ग़ानिस्तान व अफ़ग़ानिस्तान, उत्तर में पूरव से पश्चिम चीनी तुर्किस्तान (सिक्किम), तिब्बत व नेपाल हैं। पश्चिम में बर्मा है। बंगला देश, पश्चिमी बंगाल व असम के दक्षिणी पर्वत के बीच स्थित है। उत्तर में सिक्किम व भूटान विशेष संधिया के अंतर्गत भारत से सम्बद्ध हैं। दक्षिण में श्रीलंका द्वीप है जिसे मन्नार की खाड़ी भारत से अलग करती है। बंगाल की खाड़ी में स्थित अरबमान तथा निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर के लक्षद्वीप मिनीकोय तथा अमीन दीवी द्वीप-समूह भारत संध के अंतर्गत हैं।

भारत लघु विश्व है। इस कारण राष्ट्रीय 'औसत तापमान' और 'औसत वर्षा' इन शब्दों का भारत के लिए कोई अर्थ नहीं है। राजस्थान की मरुभूमि में औसत वार्षिक वर्षा ४ इंच होती है, पर चेरापूजी में ४२५ इंच होती है। इसी प्रकार कश्मीर के कुछ स्थानों में 'न्यूनतम तापमान ४०° फ़ारनहाइट रहता है और राजस्थान के कुछ स्थानों में अधिकतम तापमान १२०° एफ़ो रहता है। इसलिए स्थानीय औसत की बात की जा सकती है भारतीय या राष्ट्रीय औसत की नहीं।

देश के विस्तार के अनुपात में समुद्र तट कम है क्योंकि खाड़ियाँ और उप-खाड़ियाँ की संख्या कम है। भारत का पश्चिमी समुद्र तट चट्टानी है। पूरव में समुद्र उबला है, अतः महासागर गामी बड़े जहाज दूर से लगेर डालने की वाध्य होते हैं।

प्राकृतिक संरचना

तीन प्राकृतिक भाग प्राकृतिक दृष्टि से भारत तीन क्षेत्रों में विभक्त है— (१) हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र। (२) गंगा सिंधु का मदान और (३) दक्षिणी पठार। हिमालय भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणी २५०० किलोमीटर की लम्बाई में पूरव से पश्चिम तक फैली हुई है। इसकी चौड़ाई २४० से ३२० कि० मी० है। इस पर्वत श्रेणी के पहाड़ों घाटियाँ पठार आदि का कुल क्षेत्रफल ५ लाख किलोमीटर है। पूरव में बर्मा और भारत के मध्य की पर्वतीय दीवार को 'पर्वतकोई' कहते हैं। असम में जयंतिया खामी और गारो शाखाएँ हैं। हिमालय की पूर्वी शाखाएँ असम से नीचे उतरकर बंगाल की खाड़ी तक जा पहुँचती हैं। उत्तर पश्चिम शाखाएँ अफ़ग़ानिस्तान की सीमा को स्पष्ट करती हुई अरब सागर तक जा पहुँचती हैं। उत्तर पश्चिम शाखाओं में सुलेमान, कांधार हिन्दुकुश आदि पर्वत प्रसिद्ध हैं। अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पर सुलेमान पर्वत में खैबर खुरम गोमर बोलन, टोची आदि सकीण भाग (दर्रे) हैं। भारत पर प्रारम्भिक आक्रमण इन्हीं दर्रे से हुए।

हिमालय पर्वत को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है— महान हिमालय, लघु या मध्य हिमालय एवं शिवालिक पहाड़ियाँ।

महान हिमालय यह भाग बर्फीला है। इस भाग की ऊँचाई साधारणतः ६००० से ७००० मीटर तक है। विश्व के उच्चतम पर्वत शिखर इसी भाग में है। एवरेस्ट (गौरीशंकर) ८८४८ मीटर, कंचनजंघा ८५८६ मीटर, धौलागिरि ८,०७५ मीटर, नन्दा देवी ७८१६ मीटर कामन ७७५५ मीटर तथा अन्नपूर्णा ७६५० मीटर ऊँचे हैं।

लघु या मध्य हिमालय ये महान हिमालय के निचली ढलान में ३,५०० से ५०००

मीटर की ऊचाई के हैं तथा ८० कि० मीटर चौड़ाई में पने हुए हैं। इनमें शिमला, ननीताल, दार्जिलिंग जैसे प्रसिद्ध पर्वतीय केंद्र हैं।

शिवालिक पहाड़ियाँ इनकी ऊचाई १००० से १,५०० मीटर तथा चौड़ाई १० से ५० कि० मी० तक है। पश्चिम क्षेत्र में कटोले जंगल तथा उथले क्षरते हैं जबकि पूर्वी भाग नेपाल और बंगाल में यह तराई का रूप धारण कर लेती है। ऊपरी हिस्सों में घने जंगल हैं जहाँ वन्यपशु काफी हैं।

हिमालय की घाटियाँ कश्मीर, चम्बा कागडा, कुल्लू आदि हिमालय की अनेक घाटियाँ हैं। ये प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण हैं। इन घाटियाँ में नदियाँ ऊँचे ऊँचे जलप्रपात बनाती हैं जिनमें विद्युत् उत्पादन की बड़ी क्षमता है।

मदान भूगर्भशास्त्र की दृष्टि से गंगा का मदान उत्तरीय सीमा के पहाड़ों का अंगला गहरा भाग है। इस भाग का निमाण पहाड़ों से आयी मिट्टी-बालू आदि के जमाव से हुआ है। यह निक्षेप से भरा गड्ढा है। पूर्व में इस निक्षेप में पर्वतों से आई कछारी सामग्री है। पश्चिम में मदान हवा से उड़ाई गई सामग्री से पूर्ण है। यह सारा निक्षेप पर्वत और बालू से बना हुआ है।

गंगा सिन्धु का मदान २,००० कि० मी० से २४०० कि० मी० लम्बा तथा २५० से ३२० कि० मी० चौड़ा है। इसका क्षेत्रफल ७७७००० वर्ग कि० मी० है। यह पथक पृथक तीन नदी प्रणालियाँ—सिन्धु गंगा और ब्रह्मपुत्र के बसिन या सिंचित क्षेत्र से बना है। इस सारे मदान के बीच कहीं कोई पहाड़ी नहीं है। पहाड़ से समुद्र तक ढलान इतना क्रमिक रूप से हुआ है कि गंगा के मुहाने से १६० कि० मि० ऊपर का भाग समुद्री सतह से १५० मी० से अधिक ऊँचा नहीं है। दुनिया भर में इससे बड़ा और इससे अधिक सघन बसा हुआ दूसरा मदान नहीं है। सुरक्षा की दृष्टि से यह मदान अमरुदक्षित है। चढाई करने वाले यात्राकर्तों को रोक्ने वाला कोई प्राकृतिक अवरोध इसमें नहीं है। इसी कारण इस देश का मुख्य इतिहास इसी मदान में बना। सिन्धु पश्चिम में सतलुज और व्यास नदियाँ सिन्धु नदी की शाखा-नदियाँ हैं। रावी भी सिन्धु नदी की शाखा है। सिन्धु नदी अरब सागर में गिरती है। भारत की राजधानी सिन्धु और गंगा के मध्य-जलद्वार (वाटर शेड) पर अवस्थित है। ब्रह्मपुत्र इन तीनों नदी प्रणालियाँ में से तीसरी ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय के उत्तर की ओर से निकल कर पूर्व की ओर मुड़ जाती है और भारत में पूर्वी सीमा के छोर पर प्रवेश करती है। यह बंगाल की खाड़ी तक पहुँचने से पहले गंगा में मिल जाती है। गंगा की शाखा-नदियाँ के समान ब्रह्मपुत्र की शाखा-नदियाँ नहीं हैं।

भारत के मैदान की नदियों की तीन विशेषताएँ हैं—१ बारह मास इनमें पानी प्रवाहित होता है। गर्मियों में ये सूखती नहीं। २ ये सपाट मैदान में बहती हैं। यह मैदान बहुत उर्वराक्षम है। यह भू-भाग सिंचाई के उपयुक्त है। ३ बारह मास पानी रहता है अर्थात् वर्षा के अधिकांश समय में इनमें नौसफावण सम्भव है।

पश्चिम से पूर्व की ओर हम जिनना प्रायें बढते जाते हैं उसी के परिमाण में वर्षा का परिमाण भी बढता जाता है।

भारतीय पठार

देश का तीसरा प्राकृतिक भाग भारतीय पठार या प्रायद्वीपीय पठार का नाम से प्रसिद्ध है। यह तीन ओर से उच्च समतल भूमि में घिरा हुआ है और समुद्र तक चला गया है।

भारत के मदान से इस पठार को अलग करने वाली अनेक पहाडियों का समूह है जा पूव से पश्चिम की ओर चली गई है। इसके पूव और पश्चिम में, दोनों ओर सकीण समुद्र-तट हैं।

हिन्दुस्थान के मदान से पठार को विभक्त करने वाली मुख्य पवत-श्रेणिया के नाम हैं अरावली, विन्ध्य, सतपुडा, मैकन और अजता। इनकी ऊचाई ५५५ से १२०० मीटर तक है। पूर्वी घाट की औसत ऊचाई ६१० मीटर है। पश्चिमी घाट ६१५ से १२२० मीटर तक ऊचा है। पश्चिमी घाट की ऊचाई कहीं-कहीं २४४० मीटर तक भी हो जाती है। इस समय इसमें सड़कें बन गई हैं तथा रेलगाडिया चलने लगी है। देश के उत्तरी और दक्षिणी भाग के मध्य जगल और पहाडिया का अवरोध है।

पूर्वीघाट और पश्चिमी घाट का आरम्भ विन्ध्य पवत की ढाल से हा जाता है। ये दोनों दूर दक्षिण में जाकर नीलगिरि पवत में मिल जाते हैं। जहा इनका मेल होता है वहा एक ऊचा उठा हुआ धेर है जा दश का दक्षिणी कोण बनाता है। पश्चिमी घाट महाराष्ट्र और मसूर से होकर जाता है। इसके पवत शिखरा की ऊचाई १६०० से २७३५ मी० के मध्य है। घाट की औसतन ऊचाई ६१५ मी० है। पूर्वी घाट आंध्र प्रदेश से होकर मद्रास तक पहुंचता है। इसकी औसतन ऊचाई ४६० मीटर है। दोनों घाटा के बीच के त्रिभुजा कार पठार के दक्षिण में नीलगिरि पवत है, जिसमें प्रसिद्ध दशनीय तीर्थ-स्थल ऊटकमड है।

नदी प्रणालियाँ

भारत की नदिया या नदी प्रणालिया (जल निवासी प्रणाली) तीन प्रकार की है (१) उत्तर की ओर बहने वाली, (२) पश्चिम की ओर बहने वाली और (३) पूव की ओर बहने वाली। भारतीय पठार के उत्तरीय किनारे या विन्ध्य से निचली नदिया उत्तर की ओर बहती है। जैसे—सोन, चम्बल आदि। दूसरे बग म नमदा और ताप्ती नदिया हैं। ये क्रमश विन्ध्य और सतपुडा से निकलकर लगभग समानांतर बहती हैं और अरब सागर में गिरती हैं। इनमें महानदी गादावरी, कृष्णा और कावेरी मुख्य हैं। मदानी नदिया से इनमें अंतर है (१) इनकी जल-पूर्ति एकमात्र बपा से होती है। अत इनसे निरन्तर पानी नहीं मिलता। (२) इनकी घाटिया सिंचाई के कम उपयुक्त हैं। (३) साल के कुछ मासा में जब नदिया सूख जाती हैं, तब ये नौकायन के योग्य नहीं रहती।

भारत की नदियों का एक दृष्टि से चार भागों में वर्गीकरण किया गया है (१) हिमालय की नदिया, (२) दक्षिण की नदिया (३) तटवर्ती नदिया तथा आन्तरिक जलक्षेत्र की नदिया। तटीय नदिया, विशेषत पश्चिमी तट की लम्बाई में हाती हैं। इनका प्रसवण क्षेत्र सीमित है। पश्चिमी राजस्थान के आन्तरिक जलक्षेत्र की नदिया अपने क्षेत्र से बाहर नहीं जाती और यदि गड तो, साम्भर झील तक पहुंचकर ही रह जाती हैं। एकमात्र लूनी नदी समुद्र के समीप कच्छ के रण तक ही पहुंचती है। कहते हैं, सरस्वती भी इसी मरु-भूमि में विलीन हो गई है।

गंगा गंगा का नदी क्षेत्र सबसे बड़ा है। भारत में कुल क्षेत्रफल के एक चौथाई भाग का गंगा से पानी मिलता है। गंगा के उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्य पवत है। इस क्षेत्र में नदिया भी पर्याप्त संख्या में हैं। गंगा गंगोत्तरी में गोमुख से निकलती है। पहाडा में इसका नाम भागीरथी, अलकनन्दा आदि है। यमुना, घाघरा, गण्डक और वासी

हिमातय से निकलकर गंगा म मिलती हैं। बेतवा और सान भी गंगा म मिलती हैं। हरिद्वार म पहाडा से निकलन के बाद यह सीधी दक्षिण की ओर न जाकर एक बडी कमान बनात हुए पूव की ओर मुड जाती है तथा उत्तर प्रदेश और बिहार से होकर गुजरती है। राजमहल पबल (बिहार) के पास गंगा दक्षिण-पूव की ओर घूमती है और प० बगाल म जाती है। फिर यह बगला देश (पूव बगाल) म प्रवेश करती है तथा पद्मा कहलाती है। एक धारा हुगली नाम से प० बगाल म बहती है। बगाल की खाडी म गिरने से पूव यह कई धाराओ म विभक्त हो जाती है।

गोदावरी इसका क्षेत्र भारत म गंगा नदी-क्षेत्र क बाद सबसे बडा है। यह सम्पूर्ण भारत के दम प्रतिशत क्षेत्र म व्याप्त है। पूव म ब्रह्मपुत्र नदा का क्षेत्र और पश्चिम म सिन्धु नदी का क्षेत्र भी लगभग इतने ही हैं। कृष्णा नदी का क्षेत्र प्राय द्वीप म दूसरे स्थान पर सबसे बडा है। महानदी क्षेत्र का स्थान इसके बाद है। दूर दक्षिण म कावेरी का नदी क्षेत्र भा इसके ही समान है।

उत्तर म ताप्ती और दक्षिण म पेनार क नदी-क्षेत्र छोटे हैं, लेकिन दोना कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

ब्रह्मपुत्र ब्रह्मपुत्र नदी का उत्पन्न स्थान मानसरोवर झील के पास है। यहा से निकलने पर पूव की ओर लगभग १२८० कि० मी० बहती है। तिव्रत म इस नदी का नाम त्सांग-पो है। भारत म प्रवेश करने पर यह दक्षिण का ओर बहती है। यहाँ इसम दीवान और सोहित नदियां मिलती हैं और इसका नाम ब्रह्मपुत्र हा जाता है। यहा स फिर प्रसम घाटी म जाती हुई पश्चिम को मुडती है। प्रसम घाटी ८०० कि० मी० लम्बी और ८० कि० मी० चौडा है। ब्रह्मपुत्र नदी गाम्बालुडो (बगला देश) क पास दक्षिण पश्चिम की ओर मुडती है। यहा यह गंगा की सर्वाधिक पूर्वी शाखा पद्मा से मिलती है। इन दाना का मिला प्रवाह बगाल की खाडी म गिरता है लेकिन इसके गिरने से पहले इसम अनेक नानिया आकर मिलती हैं। इन मिनने वाली नानिया म मघना नदी (बगला देश) मुख्य है।

पश्चिमी घाट स निकलन वाली नानिया म गारावरी, कृष्णा और कावेरी मुख्य हैं। ये पठार की ढाल पर बहती हैं और इनका गहरा काटती हुई जाती हैं तथा बगाल की खाडी म गिरती हैं। पूव का ओर बहन वाली नानिया म और दा महत्वपूर्ण नानिया हैं—महानदी और दामाण्ड। पश्चिम की ओर बहन वाली नानिया म गारावरी नत्रवता चरियाल, पेन्नाती और देरियार नानिया हैं। ये सब नानिया पश्चिमी घाट स निकलता हैं और प्ररव सागर या सिन्धु सागर म गिरती हैं। उत्तर का ओर बहन वाला नानिया उत्तरी मगन की ओर जाती है। इन नानिया म चम्बन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। चम्बन यमुना नदी म मिनती है। दूसरी महत्वपूर्ण नदी मान है जा दानापुर (पटना) क पास गंगा म मिनती है। परन्तु मरम बडी दा नानिया नमन और ताप्ती हैं जा पश्चिम का ओर बहती हुई प्ररव सागर या सिन्धु सागर म गिरता है।

मरस्थल

गंगा क मैदान क दक्षिण पश्चिम म विस्तृत मरस्थल है। यह राजस्थान क परिवर्तमान भाग म मर सुवर्तन क कच्छ क रण थल पना हया है। इस रणितानी क्षेत्र का चौडाई ३०० स ६४० कि० मा० तथा लम्बाई १,०४,००० वर्ग कि० मा० है। पश्चिमी मरस्थल

रेतीला तथा पूर्वी मरम्यल पथरीला है। इस क्षेत्र म वर्षा बहुत कम हाती ह तथा नदियाँ नहीं हैं। सरस्वती नदी का इसी क्षेत्र म अदृश्य होना माना गया है। इस समय इस क्षेत्र म एवमात्र नदी लूनी है जा अमेर की अनासागर क्षील से निकलकर पश्चिम की ओर बहती हुई कच्छ के रण म प्रवेश करती है। इस नदी का पानी भी बालोया तक मीठा तथा उसके बाद खारा हो जाना ह। यहाँ गर्मी की ऋतु म पीने का पानी मुश्किल स मिलता है। राजस्थान का रेतीला भाग साधारणतः अनालप्रस्त रहता ह तथा पीने का पानी मिलना भी कठिन हो जाता है।

जलवायु

भारत का मौसम विज्ञान विभाग चार ऋतुएँ मानता है—(१) शीत ऋतु (दिसम्बर-मार्च), (२) ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल मई), (३), वर्षा ऋतु (जून सितम्बर) और (४) दक्षिण पश्चिम मधुवात (मानसून) की वापसी का काल (अक्टूबर-नवम्बर)।

भारतीय परम्परा से साधारणतः ६ ऋतुएँ मानते हैं—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर। यह षण् विभाग वैदिक है तथा सौर मण्डल के अनुसार है।

वर्षा की दृष्टि से देश के चार भाग किए गए हैं—(१) सम्पूर्ण अरब और पश्चिमी घाट की तली का पश्चिमी तट तथा उत्तर म बम्बई और दक्षिण म त्रिवेन्द्रम का सारा क्षेत्र भारी वर्षा का है। यहाँ वष म २०५ से ३०० मी० मे अधिक वर्षा हाती है, (२) १२७ से २०५ से० मी० तक की वर्षा के प्रदेश हैं—उत्तर-पूर्वी पठार तथा गया घाटी का मध्य भाग, (३) कच्छ तक फली राजस्थान की मरुभूमि, लद्दाख तथा गिलगित तक कश्मीर का पठार बहुत कम वर्षा का क्षेत्र है (४) मद्रास, दक्षिणी पठार का दक्षिणी और उत्तर पश्चिमी भाग तथा गया के मैदान क उत्तरी क्षेत्र म ५० से १०० से० मी० इंच ही वर्षा होती है।

भूगर्भीय ढांचा

भूगर्भ की दृष्टि स भी भारत के तीन पृथक् पृथक् भाग हैं। पठार इनमे प्राचीनतम ह। हिमालय पर्वत और उसके साथ के पहाड़ और सिन्धु गया का मैदान उसकी तुलना म पाछे के हैं।

प्रायद्वीप भूगर्भीय स्थिरता का एक महान प्रदेश है। विलक्षण बात यह है कि यह साधारणतः भूकंपीय जारदार घक्का से मुक्त है। प्रायद्वीप काल द्वारा रूपान्तरित चट्टानों के आघारभूत मिश्रण से बना है।

भूगर्भ शास्त्र के इतिहास की दृष्टि स आज जहा हिमालय है वहाँ कुछ समय पहले तक समुद्र था। भूगर्भ शास्त्र की दृष्टि से आज भी इस क्षेत्र का बहुत सा भाग अज्ञात है। पूब के बारे म यह बात विशेष रूप से सत्य है। कुछ बातें अभी विवादास्पद हैं। सिवानिक पहाड़ का निर्माण ही पहाड़ा के क्षरण से हुआ है। हिमालय के ऊंचा उठने के कारण वन अग्रगत का इसने भरा। ये निक्षेप आजकल वन रहे निक्षेप से बहुत भिन्न नहीं हैं।

सिन्धु गया का मैदान एक बड़ा कछारी प्रदेश है। कछारी निक्षेप की गहर्गर्द बना है। इस गड्डे की भरवाई एक समान रूप स नहीं हुई है। इसकी प्रकृति भी अलग अलग है।

भूगर्भ शास्त्र की दृष्टि से पठार विल्लीरी चट्टान का बना हुआ है। यह हिमात्रय स बहुत पुराना है। पठार के उत्तर-पूब किनारे पर तलहटी चट्टानें हैं। दग का अग्रिवाग

कोयला इनसे मिलता है। देश का कुल कोयला उत्पादन का ६० प्रतिशत इसी पठारी भाग में स्थित झरिया (बिहार) और रानीगंज (५० बंगाल) से मिलता है, यद्यपि कोयला क्षेत्र अन्य भी हैं जैसे—गोदावरी घाटी और विंध्य पर्वत की उत्तरी ढाल।

पठार का उत्तर-पश्चिमी भाग लावा से पूण है। इसका नाम दक्कन लावा है। यह विश्व भर में सबसे बड़ा लावा क्षेत्र है तथा ६४०००० वर्ग कि० मी० में फैला हुआ है। यह हजारों मीटर गहरा है। बड़ी मात्रा में लावा होने पर भी, विचित्र बात है कि इस प्रदेश में ज्वालामुखिया का कोई चिह्न नहीं पाया जाता या बहुत कम मिलता है।

शोप पठार में जहाँ तहाँ मूल्यवान खनिज द्रव्य मिलते हैं। पुरानी विल्लोरी चट्टानों से मसूर में सोना मिलता है। भग्नीज आंध्र प्रदेश, मसूर और मध्य प्रदेश में ताँबा और लोहा बिहार और उड़ीसा में अभ्रक आंध्र और दक्षिण पूव में तथा हीरा पन्ना (मध्य प्रदेश) में पाया जाता है। कुरनूल (आंध्र) में भी हीरे वाली एक चट्टान मिली है।

काठियावाड़ का कच्छ अंध द्वीप है। कच्छ सूखा चट्टानी, शिलामय और वक्षहीन क्षेत्र है। यहाँ भूतेल (पेट्रोल) निकलने की सम्भावना है। तेल के अन्य प्रमुख क्षेत्र असम, त्रिपुरा मणिपुर और राजस्थान आदि हैं।



रोवर—
हमारा
दोस्त ...



एवरेड रोवर है जिसने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा है। चाहे पूरा ही अंधापना धरसात यह मुझे खेतों में, कलियानों में कारखानों में डाकखानों में अस्पतालों में शूटों में एवं दूर दूर स्थित स्थानों तक सुगमता पूर्वक और शीघ्र पहुँचाता है।

एवरेड साइकिल्स लिमिटेड

गोहाटी • कलकत्ता • वाराणसी
वितरक भारत में सर्वत्र

रोवर अपने मूल्य से कहीं अधिक काफ़ी सेवा करता है।

रोवर खरीदिये—जनता का अपना वाहन

काल गणना

वस्तु एवं समय के 'सूक्ष्मतम' एवं 'महत्तम' स्वरूप का ज्ञान भारतीय ऋषियों का अनादि काल से रहा है। पृथ्वी का जो भाग सूक्ष्मतम अंश है, जिसका और विभाग नहीं हो सकता उसको परमाणु कहते हैं। जिस समग्र का यह परमाणु अंश है उसे 'परम महान' कहते हैं। यह वस्तु का 'सूक्ष्मतम' और 'महत्तम' स्वरूप है। श्रीमद्भागवत के अनुसार—
जो काल परमाणु में व्याप्त है, वह परम सूक्ष्म है जो सृष्टि की उत्पत्ति से प्रलय पयन्त व्याप्त है वह परम महान् है।

कालमान का सूक्ष्मतम रूप में प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने निश्चित किया। सूक्ष्मतम मान क्षुटि और तत्परम हैं। एक दिन रात में १७४६६ ०००,००० क्षुटिया या ४६,६५६,०००,००० तत्परम मान हैं। पश्चिम देश अणुमान के बताने से पहले तक मेकेंड तक ही पहुँचे थे और भारतीय एक मेकेंड को २०२,५०० क्षुटिया और ५,१४० ००० तत्परमा में विभक्त कर चुके थे। १६५५ ई० में आणविक घड़ी बनी और पश्चिम में भी मेकेंड को ६१,६३१ ७७० भागों में बाँट दिया है।

काल का सूक्ष्मतम विभाजन

२ परमाणुओं के संयोग से एक 'अणु' बनता है।

३ अणुओं के संयोग से एक 'संरणु' बनता है।

(शराब में आयी सूयकरिणा में त्रमरेणु उड़ा करते हैं एसे तीन संरणुओं का पार करन में सूय जितना समय लेता है उसे क्षुटि कहते हैं)

क्षुटि मान पद्धति

तत्परम मान पद्धति

१०० क्षुटि एक वेद्य

६० तत्परम

१ परम

३ वेद्य—लव

६० परस

५ विनिष्ठा

३ लव—निमेष

६० विलिप्ता

१ लिप्ता (विपन)

३ निमेष—क्षण

६० लिप्ता

१ विपयिका (पन)

५ क्षण—काष्ठा

६० विघटिका

१ घटिका (२०)

१५ काष्ठा—लघु

६० घटिका

१ दिन रात

१५ लघु—नाडिका

६ नाडिका—प्रहर

८ प्रहर—एक दिन रात

१५ दिन रात—एक पक्ष

२ पक्ष—शुक्ल + वृष्ण—एक मास ।

२ मास—एक ऋतु होती है ।

६ मास—एक ऋयन (उत्तरायण दक्षिणायन । ये देना के दिन रात हैं) ।

२ ऋयन—एक वष ।

कालचक्र

समय का पुनरावतन ही कालचक्र है। गति बिना कालचक्र गतिमान गता है। वास्तव में कालचक्र का दूसरा नाम 'कालगति' ही है। गति बिना सरार का कोई भी क्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती है। यह गति ही सब पदार्थों जीवा तथा तथा लोको-परलोक का स मुक्त होकर उन सबको गतिशील बनाती है। सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी तार, पृथ्वी जल अग्नि, वायु—सब इस गति द्वारा ही गतिशील हैं।

सूर्य अथवा चन्द्र की गति का आधार पर ही विभिन्न देशों में समय चक्र का यज्ञानिक विग्रहण किया। फलस्वरूप देश विशेषों में भिन्न भिन्न प्रकार के पचासों का प्रचलन हुआ। भारत में ही अनेक पचास प्रचलित हैं। सरकार ने सन् १९५२ ई० में समस्त भारत के लिए देशी पचासों की गणित पद्धति में एकरूपता लाने तथा समान पचासों का निर्धारण करने के लिए एक पचास सुधार समिति नियुक्त की थी। समिति के सुझाव पर भारत सरकार ने देश भर के लिए राष्ट्रीय पचासों के रूप में शक सम्बत को निर्धारित करने की घोषणा की।

शक सम्बत पचासों का पहला मास चत्र है और यह ३६५ दिन का है। सरकार ने २२ मार्च १९५७ को जारी घोषणा में सरकारी कार्यों के लिए भी अग्रेजा पचासों के साथ साथ राष्ट्रीय पचासों के व्यवहार को लागू कर दिया। सरकार ने यह भी सुझाव दिया कि राष्ट्रीय पचासों में दिये गये राष्ट्रीय दिनों का सब लौकिक कार्यों में प्रचलित अग्रेजा तारीखा के समान ही उपयोग किया जाय। इस राष्ट्रीय पचासों में समस्त भारत के उपयोग के लिए शालिवाहन शकाब्द स्वीकृत किया गया है एवं शकाब्द १८८६, १८९०, १८९४ आदि वर्ष प्लुन वर्ष (लीप ईयर) होंगे। इस प्रकार ऋतुनिष्ठ वर्ष पर आधारित अग्रेजा त्रिविध के साथ राष्ट्रीय पचासों का सम्बन्ध स्थापित हो गया है।

पहले शक सम्बत का व्यवहार शाकद्वीपी ब्राह्मण (ज्योतिषी लोग) करते थे। शक सम्बत ईसा से ७८ साल पीछे है। चक्र के बाद के पांच मास ३१ ३१ दिनों के होते हैं। इसमें ग्रेगेरियन कलंडर के अनुसार रूपांतर किए गए हैं। तदनुसार मासों का आरम्भ इस प्रकार है

शक कलेंडर	ईस्वी कलेंडर	शक कलेंडर	ईस्वी कलेंडर
१ चत्र	२२ मार्च लीप वर्ष में २१ मार्च	१ आश्विन	२३ सितम्बर
१ वशाख	२१ अप्रैल	१ कार्तिक	२३ अक्टूबर
१ ज्येष्ठ	२२ मई	२ मागशीष अग्राह्य	२३ नवम्बर
१ आषाढ	२२ जून	१ पौष	२२ दिसम्बर
१ श्रावण	२३ जुलाई	१ माघ	२१ जनवरी
१ भाद्रपद	२३ अगस्त	१ फाल्गुन	२० फरवरी

पचागा म अथ पुन परिवतन की स्थिति दिखाई देती है। अनुभव किया जा रहा है कि पृथ्वी की गति क्रमशः बढ़ती जा रही है। मत है कि पृथ्वी की गति में १७०० ई० से अथ तक ४७ सेकेंड की घोर १६०३ ई० से ३५ सेकेंड की कमी आ गई है। अतः काल का नया माप बड़ा जायेगा। इस दिशा में पहला प्रयत्न 'ऐफिमेरिज टाइम' है। इस नये काल माप का निणय चंद्रमा के आधार पर किया गया है।

अन्य पचाग

रोमन पचाग विश्व में रोमन पचाग में ही अधिकांश काय प्रचलित है। इस समय १९७६वाँ वर्ष चालू है। इस पचाग के अंग्रेजी मासों के नाम प्रायः रोमन देवताओं के नामों पर हैं। उनका क्रम इस प्रकार है—जानुस, फरवरी—फ्रेब्रुअस, मार्च—युद्ध का देवता मार्स (मूलतः मार्च रोमन कैलेण्डर में पहला मास था), अप्रैल—लटिन शब्द—एप्रिलिस मई—रोमन देवी मैया, जून—जूना (रोमन देव मण्डल का एक मदस्य), जुलाई—जुलियस सीज़र, अगस्त—अगस्त सीज़र। सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर तथा दिसम्बर मास क्रमशः ७, ८, ९, १० में रोमन मास हैं तथा इनके नाम सद्यः-सूचक लटिन शब्दों में दिये हैं।

विश्वी सम्बन्ध विश्वी सम्बन्ध इस देश में सर्वाधिक प्रचलित है। यह राष्ट्रीय सन्त है, यद्यपि सरकार द्वारा मान्य नहीं है। इसका प्रारम्भ ईसा से ५७ ५८ वर्ष पहले सम्राट विक्रमादित्य से माना जाता है। अथक शिलालेखों में इसका उल्लेख है। विश्वमादित्य की शक्ति पर विजय की स्मृति में यह सम्बन्ध है। इस समय विश्वी सम्बन्ध २०३० चालू है। अप्रैल १९७४ से सम्बन्ध २०३१ प्रारम्भ होगा।

बौद्ध पचाग भगवान् बुद्ध के जन्म-काल ५६३ ई० पू० से इसका प्रारम्भ हुआ। पर अथ बुद्ध का जन्म-समय ६८७ ई० पू० भी माना जाने लगा है। इसमें कुछ विवाद है। इस कैलेण्डर में वर्ष का प्रारम्भ वशाख पूर्णिमा से होता है। बुद्ध का जन्म और निर्वाण इसी तिथि को हुआ था।

जैन पचाग २६वें तीर्थंकर महावीर के जन्म-काल ५२७ ई० पू० से यह प्रारम्भ हुआ माना जाता है।

सृष्टि सम्बन्ध भारत में सृष्टि सम्बन्ध भी प्रचलित है। दान और सकल्प के समय आज भी इसका प्रयोग होता है।

फसली साल अथर्व के समय १५५५ ५६ ई० में खेती और राजस्व की दृष्टि से फसली साल चलाया गया था। बंगाल में इसी फसली साल को बंगाली वर्ष माना जाता है।

कलियुग सम्बन्ध सृष्टि सम्बन्ध के बाद सबसे पुराना सम्बन्ध कलियुग सम्बन्ध है। इसका प्रारम्भ १८ फरवरी ३१०२ ई० पू० का हुआ था। इस समय १९७४ ई० में कलियुग सम्बन्ध ५०७४ है। भारत में आज भी दान और सकल्पों में इसका पाठ किया जाता है।

दयानन्द सम्बन्ध अथ समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर अथ समाज ने यह चलाया है। इसका प्रारम्भ उनके निर्वाण से होता है। इस समय दयानन्द सम्बन्ध १४६ है।

मुस्लिम पचाग हिजरी सम्बन्ध का पहला दिन १६ जुलाई ६२२ ई० से होता है। यह विशुद्ध रूप से चन्द्र वर्ष है।

विश्व मान्य समय (स्टैंडर्ड टाइम) ग्रेन (इंग्लैंड) के समीपस्थ गांव ग्रीनविच

से स्टड्ड टाइम माना जाता है। १८८४ ई० में एक अंतर्राष्ट्रीय भरिद्विष्यता काँग्रेस हुई थी। उसने निश्चय के अनुसार, ग्रीनविच से होकर जाने वाली मध्याह्न रेखा (भरिद्विष्यता साइदा) को ही प्रधान मध्याह्न रेखा माना गया और सत्तार के समय का हिसाब उसी से सागाया जाने लगा। ग्रीनविच के भरिद्विष्यता को शून्य अंश पर मानकर यहाँ से १८० अंश तक पूर्वीय और पश्चिमी रेखाओं की गणना की जाती है। ग्रीनविच के पूरुव की विंगी स्थान का समय जानने के लिए ग्रीनविच के समय में प्रति १५ अंश पर १ घंटा और १ अंश पर ४ मिनट का समय घटाना पडता है तथा पश्चिम के स्थानों के लिए जोडना पडता है।

भारतीय स्टड्ड टाइम भारत का समय ग्रीनविच मीनटाइम (ग्रीनविच मध्यरात) से साढ़े पाच घंटा आगे है। यह १ जनवरी १९०६ में स्वीकार किया गया था। भारत में अब भारतीय स्टड्ड टाइम (काल) चलता है। १९०६ का स्टड्ड काल ८२॥ अंश पू० दशांतर रेखा वाराणसी और काकोनाड होकर जाती है। भारत की रेलवे तार घरा आदि में यही समय प्रयोग में लाया जाता है।

कालमान

ब्रह्ममाण्ड इस काल का इन्द्रियगोचर विस्तार विशाल ब्रह्माण्ड है। ब्रह्माण्ड का दूसरा नाम नभोमण्डल भी है। सम्पूर्ण नभोमण्डल असंख्य तारा से भरा है। ब्रह्माण्ड में अनेक सौर मण्डल हैं। तारे इन्हा सौर मण्डलों में से किसी न किसी में हैं। मनुष्य को केवल एक ही सौर मण्डल का आश्रित ज्ञान है जिसमें हमारी पृथ्वी है। आकाश में स्थित ये असंख्य तारे हमारे लोक पृथ्वी के ही समान लोक हैं और पृथ्वी से लाखों मील दूर हैं। पृथ्वी से तारों की दूरी प्रकाश वर्ष द्वारा मापी जाती है। प्रकाश की गति प्रति सेकण्ड २२७६०० कि० मी० है। इस गति से एक वर्ष में प्रकाश जितनी दूर जाता है वह प्रकाश वर्ष का मापपड है। वैज्ञानिक इस प्राचीन भारतीय तथ्य को मानते हैं कि शून्य आकाश में स्थित सभी ज्योतिषिण्ड किसी महान शक्ति को केन्द्र बनाकर उसने चारा और घूमते हैं। यह भी माना जाता है कि सभी षिण्ड अण्डाकार वत्त में घूमते हैं। इन तारा ग्रहा ज्योतिषिण्डों की सहायता पहले डेढ़ लाख मानी गयी। पर अब इस सम्बन्ध में नये नये तथ्य सामने आ रहे हैं। यह भी अनुमान है कि पृथ्वी के अतिरिक्त कुछ अन्य ग्रहों में भी प्राणी रहते हैं। ब्रह्माण्ड में ऐसे तारे भी हैं जो हमारे सौर-मण्डल के सूर्य से लाखों गुणा बडे और प्रकाशमान हैं। ऐसा एक तारा अगस्त्य है जो सूर्य से ८०००० गुणा प्रकाशमान है। सेण्ट डोरा समूह के तारों की ज्योति तीन लाख सूर्यों के बराबर बतायी जाती है। बहुत से तारा का भार भी बहुत होता है।

हमारा सौर परिवार हमारे जैसे सौर परिवार और जितने हैं और इनकी कुल संख्या क्या है यह बात नहीं है। हमारे सौर परिवार का केन्द्र सूर्य है। सूर्य के चारों ओर ग्रह और उपग्रह चक्कर लगाते हैं। सूर्य के अपनी धुरी पर घूमने से इसके अक्ष विकीर्ण हो जाते हैं और वे सूर्य की परिक्रमा करने लगते हैं। हर सौर-परिवार में घूमकेतु है। पृथ्वी अपनी गति के अनुसार अपनी धुरी पर पश्चिम से पूरुव की ओर चक्कर काटती है। सूर्य का निवृत्तम ग्रह बुध है। बाद का क्रम शुक्र पृथ्वी मंगल बृहस्पति शनि यूरेनस नेपच्यून और प्लूटो का है। आखिरी तीना ग्रह भारतीय नव ग्रहों में नहीं आते। न ग्रहों के उपग्रह भी हैं जैसे पृथ्वी का चंद्रमा। उपग्रह स्वप्रकाश से प्रकाशित नहीं हैं। ये सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। तारे ग्रह अपनी कक्षाओं में चलते हुए सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

सूर्य हमारे सौर मण्डल का केन्द्र सूर्य है। यह एक स्व प्रकाशमान गसीय पिण्ड गोलाकार और अग्निमय है। यह एक तारा है, जो रोशनी और ताप देता है। पृथ्वी से इसकी दूरी १४८८ लाख कि० मी० है। इसका व्यास १३८४ हजार कि० मी० है तथा पृथ्वी की तुलना में इसका गुरुत्व ३,३३,४३४ गुणा और आकार १० लाख गुणा से अधिक है। सूर्य की सतह पर तापमान ६,००० डिग्री सेण्टीग्रेड है और अतः तापमान ८ करोड़ सेण्टीग्रेड है। सूर्य की भी अपनी घुरी है, जिस पर वह मत्त धूमता है। सूर्य विपुवत रेखा पर २५ दिनों में और ध्रुव पर ३३ दिनों में एक चक्कर पूरा करता है। सूर्य में तीव्र गुरुत्वाकर्षण है। इसी कारण वह अपने ग्रहों को उनकी कक्षाओं में निश्चित रखता है। सूर्य द्वारा यह प्रति सेकेण्ड २० कि० मी० की गति से चलायमान है। सूर्य में काले-काले धब्बे भी हैं। सूर्य में आधिया उठती हैं। ये धब्बे आधियों के परिणाम हैं। सूर्य अपने कक्ष का २५ दिन ६ घंटे में पूरा चक्कर लगा लेता है।

पृथ्वी हमारी पृथ्वी नारगी के आकार की गोल है। इसके उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव कुछ चपटे से हैं। यह भी एक चमकते तारे की भांति है। ग्रहों में यह पाचवा बड़ा ग्रह है। इसका क्षेत्रफल ५० करोड़ ४३ लाख १२ हजार ७२६ कि० मी० है। विपुवत रेखा पर इसकी परिधि ३६ लाख ८४ हजार ३८२ कि० मी० है। इसका व्यास १२ हजार ६७२ कि० मी० है। उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक इसकी परिधि ३८४०१३७७ कि० मी० है। यह एक ठोस पिंड है। इसके भीतर जाने पर हर १५ मिनट पर १० अंश फोरनहाइट ताप बढ़ता जाता है। भीतर के मध्य भाग का तापमान तप्त पिघली धातु के बराबर है। पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर २४ घंटे में अपनी घुरी पर घूम जाती है। सूर्य के चारों ओर जिस अड्डाकार माग से पृथ्वी चक्कर लगाती है, उस ग्रह पथ या 'कक्षा' (आरबिट) कहते हैं। सूर्य की परित्रमा में पृथ्वी को ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट ४६७।१० सेकेंड लगते हैं। इस कालावधि को ही वर्ष कहते हैं। अड्डाकार कक्षा पर पृथ्वी के घूमने और उस पर उसकी घुरी के ६६।। अंश मुके रहने से विभिन्न ऋतुएं बनती हैं।

चंद्रमा यह पृथ्वी का एक उपग्रह है तथा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित है। पृथ्वी से यह ३ लाख ८२ हजार १७६ कि० मी० दूर है। कुछ यह दूरी ३ लाख ८२ हजार २४० कि० मी० मानते हैं। इसका व्यास ३,४५६ कि० मी० है। इसका पिंड ७४१०००,०००,०००,००० टन का है। चंद्रमा पृथ्वी की परित्रमा २७ दिन ७ घंटे ४३ मिनट १२ सेकेंड में पूरा करता है। पृथ्वी के साथ-साथ चंद्रमा सूर्य के चारों ओर भी चक्कर लगाता है और यह परित्रमा वह २६ दिन १२ घंटे ४४ मिनट और ५ सेकेंड में पूरा करता है। इसको ही चंद्र-मास कहते हैं। हमारे सामने इसका सदा आधा भाग ही आता है। समुद्र में ज्वार भाटे चंद्रमा के कारण आते हैं। अतः वहां कोई नहीं रह सकता। सूर्य की ओर इसका जा भाग रहता है उसका तापमान २०० डिग्री सेण्टीग्रेड है। मानव ने चंद्र पर अपने चरण रख लिये हैं तथा अब उसके विषय में अनेक तथ्य प्रकाश में आ रहे हैं। रूस व अमेरिका दोनों ने चंद्र विजय में सफलता प्राप्त कर ली है। अंतरिक्ष यात्रियां ने चंद्रलोक की मिट्टी व पत्थर आदि लाने में सफलता प्राप्त कर नये अध्याय जोड़ दिये हैं।

आकाश गंगा आकाश में उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई एक सफेद चौड़ी पट्टी सी है जो रात में दीखती है यही आकाश गंगा है। यह तारक पुजा का समूह है। मध्य में इसकी दो शाखाएं भी हो गई हैं। अग्रही रात में यह स्पष्ट दिखाई देती है। अनुमान है कि

आकाश-गंगा में हमारे सौर परिवार सदस्य अनेक परिवार हैं।

क्रांति-युक्त नक्षत्रों की संख्या २७ है। सूर्य वं गंगा ग्रह भी पश्चिम में पूर्व की ओर चलते हैं। सूर्य तारा के बीच से होकर पश्चिम से पूर्व की ओर चलकर मेष भर में चक्कर पूरा करता है। उससे दृग पथ का नाम क्रांति-युक्त है। चन्द्रमा भी दृग पथ पास ही पश्चिम से पूर्व की ओर चलकर लगाता है। चन्द्रमा यह पार २७ दिन १६ घंटी १८ पल और १६ विपल में पूरा करता है। यह प्राचीन मान दृग प्रकार का है—६० विपल १ पल, ६० पल १ घंटी या दृद ६० घंटी या दृद १ घंटी रात्रि रात्रि रात्रि। चन्द्रमा २७ दिनों में चक्कर पूरा करता है। अतः गगन मंडल को भी २७ भागों में विभक्त करने पर प्रत्येक का उसके काल्पनिक प्रकार के अनुसार नाम दिया गया है। प्रत्येक नक्षत्र साठे १३ अंश का होता है। चन्द्रमा की गति सदा एक गमान नहीं रहती। अतः एक नक्षत्र का पार करने में वह ५४ से लेकर ६५ दृद तक समय लेता है। अतः प्रत्येक नक्षत्र का मान एक नहीं है। नक्षत्र २७ हैं। पश्चिम से पूर्व की ओर इनका नाम दृग प्रकार है—अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृग आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा मेष पूर्वा उत्तरा हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुषाधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण पनिष्ठा शतताराका पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवति। प्रत्येक नक्षत्र को चार चरणा में बाटा गया है। उत्तराषाढा के चौथे चरण और श्रवण के पहले १५वें भाग का अभिजित नक्षत्र कहते हैं।

राशि चन्द्रमा की दैनिक गति को नक्षत्र सूचित करते हैं। सूर्य की मासिक गति की सूचना राशियाँ देती हैं। सूर्य के मास क्रांति-युक्त के १२वें भाग का नाम राशि है। राशियाँ १२ हैं। एक राशि में ३० अंश होते हैं। पश्चिम से पूर्व की ओर चलने पर क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धेनु, मकर, कुम्भ और मीन राशियाँ हैं। इन राशियों के ये नाम इनकी आकृति के अनुसार हैं। प्रत्येक राशि में दो नक्षत्रों की हानी है। सूर्य जब राशि में प्रवेश करता है तो सञ्जाति होती है। राशियाँ वं अनुसार १२ सञ्जातियाँ हैं। मेष सञ्जाति पर कभी दिन रात बराबर होते थे। परन्तु मेष मेष-सञ्जाति २३ दिन बाद जाती है। आकाशस्थ अश्विनी नक्षत्र या मेष राशि क्रांति के निश्चित तारा से राशियों की गणना करने पर वह निरयन राशियाँ होती हैं। सायन राशियों की गणना क्रांति वृत्त और विषुवत वृत्त के पीछे खिसकते हुए सम्पात बिन्दु से होती है। यह सम्पात बिन्दु हर साल ५६ विक्ला की गति से पीछे हट रहा है। सायन और निरयन राशियों में दो वर्ष पूर्व २३ अंश, १८ कला और ४१ विक्ला का अंतर है।

पृथ्वी दिन भर में राशि चक्र की परिभ्रमा करती है। पलत विभिन्न समयों पर पूर्वी क्षितिज में विभिन्न राशियाँ दिखाई देती हैं। देश के अक्षांश के अनुसार इनका उदय काल भिन्न भिन्न होता है। जगत् का निश्चय इस बात से होता है कि पूर्वी क्षितिज पर कौन-सी राशि लगी।

गोलादृक् यदि आकाश के दो भाग इस प्रकार किए जाए कि एक भाग के मध्य उत्तरी ध्रुव पड़े और दूसरे भाग के बीच दक्षिणी ध्रुव आये तो ये दो भाग क्रमशः उत्तरी गोलादृक् और दक्षिणी गोलादृक् होंगे। भूमध्य या विषुवत रेखा के ठीक ऊपर से आकाश विभक्त माना जाता है। उत्तरी गोलादृक् में मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह तथा कन्या राशियाँ हैं। शेष ६ राशियाँ दक्षिणी गोलादृक् में पड़ती हैं।

चंद्र की गति के अनुसार बारह मास चैत्र वशाख ज्येष्ठ आषाढ, श्रावण भाद्रपद आश्विन कार्तिक भाद्रपदी, पौष, माघ तथा फाल्गुन हैं। सौर भास का आरम्भ सप्तमि म होता है। बार का आरम्भ सप्तमि म होता है। भारतीय बारा के नाम ग्रहा के नामा पर हैं जैसे—सूय रविवार चंद्र-सोमवार, मंगल-मंगलवार, बुध बुधवार बृहस्पति-बृहस्पतिवार शुक्र-शुक्रवार शनि शनिवार।

दिनमान सूय भूमध्य रेखा के सामने सायन मेघ पर आता है तब पृथ्वी पर दिन रात सबस समान होत है। इसके बाद सूय ज्या-ज्या उत्तर की ओर बढ़ता है पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध म क्रमश दिन बड़ा और रात छोटी हाती जानी है। ठीक इसके विपरीत दक्षिण गोलार्ध म होता है। सूय जब सायन क्व पर पहुंचता है तब पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध म दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी हाती है। इसके बाद सूय दक्षिणायन होता है दक्षिण की ओर फिरता है। इससे उत्तर म क्रमश दिन छोटा और रात बड़ी हाने लगती है।

सूय जब भूमध्य रेखा के सामने सायन तुला पर आता है तो पृथ्वी पर रात और दिन बराबर होते हैं। दक्षिणी गोलार्ध म सूय का प्रवेश होने पर जब वह सायन मकर पर पहुंचता है, तब दक्षिण म दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। इसका ठीक उल्टा उत्तरी गोलार्ध म होता है, वहा स सूय उत्तरायण होता है। इससे दक्षिण म क्रमश दिन छोटा और रात कुछ कुछ बड़ी होने लगती है। सूय चक्कर लगाता हुआ पुन भूमध्य रेखा के सामने सायन मेघ म आता है।

भूमध्य रेखा से उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव की दूरी ९० अंश है। भूमध्य रेखा पर दिन और रात १२ १२ घंटे के होते हैं। भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ने पर दिनमान या रात्रिमान बड़ा हाने लगता है। साडे ६६ अंश पर सबसे बड़ा दिन या रात्रि २४ घण्टे की हाती है। ७० अंश पर दो मास के साडे ७८ अंश पर ४ मास के और ९० अंश पर ६ मास के दिन गन होत हैं।

मानाश-गंगा म हमार सौर परिवार सदन मनेव परिवार है ।

त्राति-वृत्त नक्षत्रा की सख्या २७ है । सूर्य के गमना ग्रह भी पश्चिम म पूव की ओर चलते हैं । सूर्य सारो व बीच से होकर पश्चिम से पूव की ओर चलकर वष भर म चलकर पूरा करता है । उमके इस पथ का नाम त्राति-वृत्त है । चन्द्रमा भी इसक भाग पास ही पश्चिम से पूव की ओर चलकर लगाता है । चन्द्रमा यह चकार २७ दिन १६ घड़ी १८ पल और १६ विपल म पूरा करता है । यह प्राचीन मान इस प्रकार का है—६० विपल १ पल, ६० पल १ घड़ी या दृष्ट ६० घड़ी या दृष्ट १ ग्रहा रात दिन रात । चन्द्रमा २७ दिन म चलकर पूरा करता है । घत गगत मडल को भी २७ भाग म विभक्त करके प्रत्येक का उमके कालपनिन चानार के अनुगार नाम दिया गया है । प्रत्येक नक्षत्र साठे १३ घश का होता है । चन्द्रमा की गति मदा एक गमान नही रहती । घत एक नक्षत्र को पार करने म वह ५४ स सेकर ६५ दृष्ट तक समय लेता है । घत प्रत्येक नक्षत्र का मान एक नही है । नक्षत्र २७ है । पश्चिम से पूव की ओर इनका नाम इस प्रकार है—श्रिवनी भरणी, वृत्तिका रोहिणी मृग आश पुनर्वसु पुष्य श्रुवेया मया पूर्वा उत्तरा हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा शततारका, पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा, रेवति । प्रत्येक नक्षत्र को चार चरण म बाटा गया है । उत्तराषाढा क चौथ चरण और श्रवण क पहले १२वें भाग का अभिजित नक्षत्र कहते हैं ।

राशि चन्द्रमा की दनिव गति को नक्षत्र सूचित करत है । सूर्य की मामिक गति की सूचना राशिया देती है । सूर्य के माग त्राति-वृत्त क १२वें भाग का नाम राशि है । राशिया १२ हैं । एक राशि म ३० भश होने हैं । पश्चिम म पूव की ओर चलने पर क्रमश मेघ, वष, मिथुन कक सिंह कया तुला वृश्चिक धेनु मकर कुम्भ और मीन राशियां हैं । इन राशिया के ये नाम इनकी आकृति के अनुसार हैं । प्रत्येक राशि सवा दो नक्षत्र की हाती है । सूर्य जब राशि म प्रवेश करता है तो सत्राति होती है । राशिया के अनुसार १२ सत्रा तिया हैं । मेघ सत्राति पर कभी दिन रात बराबर होते थे । परंतु अब मय-सत्राति २३ दिन बाद हाती है । आकाशस्थ श्रिवनी नक्षत्र या मय राशि आदि के निश्चित तारा से राशिया की गणना करने पर वह निरयन राशिया होती हैं । सायन राशिया की गणना त्राति वृत्त और विषुवत वृत्त के पीछे खिसकते हुए सम्पात बिन्दु से होती है । यह सम्पात बिन्दु हर साल ५६ विकला की गति से पीछे हट रहा है । सायन और निरयन राशियो म दो वष पूव २३ भश १८ कला और ४१ विकला का अंतर है ।

पृथ्वी दिन भर म राशि चक्र की परिक्रमा कर लती है । फलत विभिन्न समया पर पूर्वी क्षितिजो म विभिन्न राशिया दिखाई देनी हैं । देश के भ्रशाश के अनुसार इनका उदय काल भिन्न भिन्न होता है । लग्न का निश्चय इस बात से होता है कि पूर्वी क्षितिज पर कौन-सी राशि लगी ।

गोलाद्ध यदि आकाश के दो भाग इस प्रकार किए जाए कि एक भाग के मध्य उत्तरी ध्रुव पडे और दूसरे भाग के बीच दक्षिणी ध्रुव आये ता य दोना भाग क्रमश उत्तरी गोलाद्ध और दक्षिणी गोलाद्ध हागे । भूमध्य या विषुवत रेखा के ठीक ऊपर से आकाश विभक्त माना जाता है । उत्तरी गोलाद्ध म मेघ वष मिथुन, कक सिंह तथा कया राशिया हैं । शेष ६ राशिया दक्षिणी गोलाद्ध म पडती है ।

चंद्र की गति के अनुसार वारह मास चैत्र, बशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, माघिन, कार्तिक, माघशोप, पौष, माघ तथा फाल्गुन है। सौर मास का आरंभ मकराति से होता है। वार का आरंभ मूर्योदय से होता है। भारतीय वारों के नाम ग्रहा के नामा पर हैं जस—सूय रविवार, चंद्र सोमवार, मंगल मंगलवार, बुध बुधवार, बृहस्पति-बृहस्पतिवार, मङ्गल-शुक्रवार, शनि शनिवार।

दिनमान सूय भूमध्य रेखा के सामने सायन मेघ पर आता है तब पृथ्वी पर दिन रात सबत्र समान होत है। इसके बाद सूय ज्या-ज्या उत्तर की ओर बढ़ता है पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में त्रमश दिन बड़ा और रात छोटी होनी जाती है। ठीक इसके विपरीत दक्षिण गोलार्ध में होता है। सूय जब सायन कर्क पर पहुँचता है तब पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। इसके बाद सूय दक्षिणायन होता है, दक्षिण की ओर फिरता है। इससे उत्तर में त्रमश दिन छोटा और रात बड़ी होन लगनी है।

सूय जब भूमध्य रेखा के सामने सायन तुला पर आता है तो पृथ्वी पर रात और दिन बराबर होने हैं। दक्षिणी गोलार्ध में सूय का प्रवेश होने पर जब वह मारयन मकर पर पहुँचता है, तब दक्षिण में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। इसका ठीक उल्टा उत्तरी गोलार्ध में होता है, वहाँ स सूय उत्तरायण होता है। इससे दक्षिण में त्रमश दिन छोटा और रात कुछ कुछ बड़ी होने लगनी है। सूय चक्र पर नगाना हुआ पुन भूमध्य रेखा के सामने सायन मेघ में आता है।

भूमध्य रेखा से उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव की दूरी ६० अंश है। भूमध्य रेखा पर दिन और रात १२ घंटे के होते हैं। भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ने पर दिनमान या रात्रिमान बड़ा होने लगता है। साढ़े ६६ अंश पर सबसे बड़ा दिन या रात्रि २४ घंटे की होनी है। ७० अंश पर तो मास के, साढ़े ७८ अंश पर ८ मास के और ६० अंश पर ६ मास के दिन रात होते हैं।

The Profile of a Pioneer—

BHARAT ELECTRONICS LTD.

SET UP IN 1954 in Jaahalli near Bangalore with an authorized capital of Rs. 10 crores paid up capital Rs. 5.96 crores. BEL went into production in 1956 with two items—HF Medium Power Communication Transmitter and associated Piece-Per-Product in 1955 with only Rs. 6 lakhs Total Labour strength 1000.

TODAY BEL HAS GROWN INTO A MAJOR ELECTRONIC EQUIPMENT AND COMPONENT MANUFACTURER EMPLOYING OVER 13,000 PEOPLE AND CONSISTING OF SIX PRODUCTION DIVISIONS

RADAR DIVISION Manufactures Fire Control Radar, Field Artillery Radar, Surveillance Radar, Navigation Radar, Search & Weapon Control Radar, Secondary Surveillance Radar, Sonar, Vessel Radar for the Army, Navy and Meteorological Department in L, S and X Bands. Gun Control Equipment for the Vijayanta tanks.

Also manufactures Computers and Digital equipment as a sub-contractor for ICL. Also processing equipment for radars, data display consoles.

HIGH POWER COMMUNICATION & BROADCAST EQUIPMENT DIVISION Manufactures 1 KW to 100 KW Medium Wave Broadcast Transmitters, TV Stations and Transmitters, Professional Type Console Tape Recorders, Tape Decks, 100 W SSB Transceivers, 400 W 1 KW and 5 KW SSB Communication Transmitters, to cater to the Army and Civilian needs for static and mobile roles.

LOW POWER COMMUNICATION EQUIPMENT DIVISION Produces short distance communication equipment like Vackalakes, Ground to Air Communication, Ship to Ship and Ship to Shore Communication, Airborne Communication and Multichannel Radio Relay equipment—in HF, VHF, LMF ranges.

ELECTRON TUBE DIVISION Produces Rectifier Tubes for Radio sets, Ionospheric receivers, industrial applications, X-ray tubes and TV picture tubes. Manufacturing Tubes for communication, broadcast, industrial applications, Cathodes, Variacorns, Thermions, X-ray tubes and Vacuum Cathodes, X-ray tubes for medical applications, CRTs for instruments and radars.

SEMICONDUCTORS DIVISION Produces Germanium Transistors and Diodes, Silicon Transistors and Diodes, Switching Transistors, Zener Diodes, Field Effect Transistors, Diode Gates, Darlingtons, Parasitically Regulated Circuits and Hybrid Microcircuits.

PASSIVE COMPONENTS Piezo Electric Crystals for Oscillators, Clocks, Filter Quartz Elements for ultrasonic work and other industrial uses, Microwaves Ceramic Capacitors in plaques and miniature devices.

BEL is setting up its second Unit at Ghazabad near Delhi to manufacture exclusively a defence radar.

BEL's exports reached Rs. 1 crore during 1972-73 and these have gone to customers in United Kingdom, United States, Canada, West Germany, Japan, several South East Asian and Middle Eastern countries.

With the know-how and the expertise garnered in the past 17 years, BEL has now reached the stage when it can go ahead on its own steam. Its Development and Engineering Division now has over 170 highly qualified engineers who are contributing more and more to the independent production of many types of communication equipment, radars and components. During 1972-73 out of a total production of Rs. 39 crores, over Rs. 9 crores worth of equipment and components were accounted for by items of BEL design—while another Rs. 6 crores were by licensed items, but on which BEL had carried out modifications. By 1976, nearly 70 per cent of BEL products would be of its own design.

BEL looks to the future with confidence

**Pioneers in '56...
Leaders Today,**



BHARAT ELECTRONICS LTD.
JALAHALLI BANGALORE 560 013

भारतीय इतिहास

वदिक काल

—एक विहगम दृष्टि

भारत के इतिहास का प्रारम्भ वेदा स है। वेदा सट्टि क प्रारम्भ म प्रगटित ईश्वरीय मान माना जाना है। विश्व के इस भादि देश भारत का प्रात्तिकाल प्रायों स सम्बधित है। वेदा स भारत क आदिकाल के भूपोल इतिहास तथा सामाजिक जन जावन का वणन है। वेदा म ऋग्वेदा सवस प्राचीन माना जाता है। पश्चिमी इतिहासकार ईसा से ५० हजार वष पूर्व तक ऋग्वेदा स का काल मानते है किन्तु भारतीय इतिहासकारा ने इन लाखा वष प्राचीन काल माना है।

महापि दृष्य द्रैपायन न वेदा का सहिता का रूप लिया था। वेदा का हि द दशवराय मानत है तथा उनका विश्वास है कि वेदा अनादि अनन्त तथा अपारुपेय है। वेदा स साहित्य के अन्तगत—वेदा, उपवेदा ब्राह्मण आरण्यक तथा उपनिषदा का समा वष है। वेदा के छ अग भी है जा वेदाग कहलान है। ब्राह्मण य था म एतरेय तत्तिरीय गायत्री शतपथ और पञ्चविश मुन्य है। उपनिषदा की सट्टया गे सा स भी अधिक है। पर भारताय आचार्यों न त्पारह को मुन्य माना ह और इन्ही का भाष्य किया है।

आय-जन एक बडे परिवार के समान रहन थ। मव सजात होन स एक समान थ। वर्णाश्रम व्यवस्था गुण-बम क आधार पर की गई। गहस्थ को सबसे बडा आश्रम माना जाता था। साधारणत एक पत्नीग्रन का पालन किया जाता था। स्त्रिया पदे म नही रहती थ। अनेक म्त्रिया ब्रह्मवादिनी थी। आर्यों का भोजन सादा था। चावल तिल जौ धी, दध की इनम प्रधानता थी। गाय को पूज्य और अघया माना जाता था।

आय लाग ऊन रेशम और रुई क वस्त्र पहनत थे। सिर पर पगडी धारण करत थे। गाय अघो-वस्त्र (धोती या साडी) और उत्तरीय (चादर) धारण करत थे। स्त्री-मुख्य तना स्वर्णाणि आभूषण पहनत थे। कुण्डल कपूर निकुप्रौव कण्ठहाग आत्ति प्रचलित थे। आय एक ईश्वर की पूजा करते थ। बहुदेवतावात् प्रचलित नहा था। पर आय प्रकृतिदेव पूजक भी थे।

आर्यों का जीवन मरन और उच्च विचार का था। वे पती वरन थ और पणु पावन थ। भिन्न (बध) विन माना जाता था। जुषा घनना माना था। पत्थर का काम

होना था। समुद्र मंथन के बाल पौन और नीयान थे। दूर दूर तक ये व्यापार करने जाते थे। विमानों का भी क्रमबद्ध म उल्लेख मिलता है।

राज्य का संचालन सभा तथा समिति की सहायता से राजा या गण प्रमुख करते थे। राज्याभिषेक के समय की गई अपनी प्रतिचाओं का पालन न करने वाला राजा सिंहासन से उतार दिया जाता था।

रामायण काल

रामायणकाल में अयोध्या में मूषवश कुल का राज्य स्थापित हुआ। मूषवशी महाराजा रघु व पुत्र व प्रतापी राजा श्री रामचन्द्र ने छोटे छोटे अनेक राजसत्ता को पराजित किया। उन्होंने वनवासियों के सहायण से लका के कुमारी एवं ग्रहकारी राजा रावण से सघष किया तथा इस घमघुद्ध में भगवान राम व रावण की सत्ता का नष्ट कर लका की गद्दी पर राजन व धार्मिक व वायव्य भाई विभाषण को अधिष्ठित कर दिया। श्री राम अपने प्राण जीवन व कारण मयाग पुरपातम कहलाय। मर्त्य बाल्मीकि ने रामायण काल का रामायण में विस्तार से वर्णन किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में राम व काल का सरन वर्णन किया है।

महाभारत काल

महाभारत का युद्ध कौरव पांडवों के बीच कुरुक्षेत्र के मैदान में हुआ। इस भयंकर तम युद्ध में १८ अश्विनी सेना मारी गई थी। महाभारत के युद्ध में पांडव मुट्ठी भर थे जबकि कौरवों का पास भारी सेना थी। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सारथी के रूप में युद्ध में भाग लिया था क्योंकि श्रीकृष्ण पांडवों के पक्ष का वायव्य मानते थे।

इस भयंकर युद्ध की गाथा को मर्त्य वदयास ने महाभारत में निषिद्ध किया। महाभारत भारतीय साहित्य का बहुमूल्य ग्रन्थ है। भगवान श्रीकृष्ण ने मोक्षप्रस्त अर्जुन को घमघुद्ध में भाग लेने का निषेध जो उपदेश दिया था वह गाथा के रूप में विख्यात है।

मोहनजोदारो हट्ट्या यह ऐतिहासिक तथ्य है कि माहन जोदारो और हट्ट्या के शहर प्राचीन व ही नगरों के ध्वंसावशेष हैं क्योंकि ये ध्वंसावशेष हट्ट्या तक ही सीमित नहीं हैं। सिंधु घाटी के शहर मुर्गुव व यदवान चौबीस परगना तक और लोथन से लेकर विन्त दुग तक प्रसिद्ध हैं। गांधारवन (अजमेर) से ब्रह्मगिरि तक इनका प्रसार है।

सिंधुघाटी सभ्यता मोहन-जोदारो व हट्ट्या नगरों का घाटा युफ्रेटस और टिग्रिस (द्वन्द्व नगर नदियाँ) का घाटा हुआ हो विष्णु-सभ्यता सभ्यता की घाटी और सिंधु घाटी में एक समय विरत में सभ्यता का चर चर था। परन्तु भारत में सिंधु घाटी का सभ्यता की घाटा सभ्यता नहीं था समस्तकों भी थी और तास्मिनिय (कनकता) में सायन १४ फमा है था। सिंधु-सभ्यता का साग ताबा और कास का व्यवहार करने में। यह सभ्यता का सिंधु-सभ्यता में सभ्यता का चर चर और उत्तर में हिमालय तक फैला हुई था। यह सभ्यता सिंधु-सभ्यता एक विभक्त व रूप में माना जाय ता इसकी तीना भुजाएँ १२०० ई० ८०० ई० ६०० ई० ५०० ई० तक थी। यह सभ्यता प्रायः सिंधु व नीच दवा पडी है। ४० म सभ्यता का सभ्यता है। यह सभ्यता सिंधु-सभ्यता का सभ्यता है।

सिंधु (सभ्यता) का सभ्यता १६२३ ई० में है। यह भी सिंधु घाटी की सभ्यता का सभ्यता में बुद्ध सभ्यता है। यह उमा का एक सभ्यता है। इसका काल २००० ई० १००० ई० १२०० ई० १००० ई० का सभ्यता है। यह सभ्यता सिंधु-सभ्यता का सभ्यता है।

बताई जाती है। यह अत्यन्त विकसित व उन्नत नगर-मध्यता थी। यहा सुनहर आभूषण मिले हैं जिन पर चित्र अंकित है।

मध्य काल

जन धम का उदय जन धम के अनुयायियों की सख्या भारत म लगभग एक कराड है। जनी इसे प्राचीनतम धम मानते हैं। वद्धमान महावीर २४वें तीथकर थे। प्रथम तीथ कर भगवान ऋषभदेव वदिक सूक्ता के व्याख्याता भी हैं। २३वें तीथकर पाशवनाथ के नाम पर विहार मे पारमनाथ पवत है और यह जैनिया का प्रमुख तीथक्षेत्र है। २४वें तीथकर वद्धमान महावीर का जम ज्ञातक राजकुल म हुआ जो वज्जि गणराज्य क सध म था। इसकी राजधानी कुडग्राम थी। ३० वष की आयु म वद्धमान ने घर वार छोड दिया तथा भिक्षु हो गये। वारह साल की धार तपस्या के बाद उन्हाने क्वली पद प्राप्त किया। समार के समग स सबथा मुक्त होकर तथा सुख दुख की भावना स ऊपर उठ सब वस्तुआ स पथक कवल रूप की अनुभूति क्वली भ्रवस्था है। धम प्रचार करत हुए ७२ वष की आयु म राजगह क समीप 'पावापुरी' (पटना) मे ५२० ई० पू० म उनकी मत्यु हुई।

जन मत म अहिंसा सत्य, ब्रह्मचय और परिग्रह-परिमाण ये पाच अत भिक्षु और गह्स्च दोना को पालन चाहिए। जना का अहिंसान्नत बौद्धा से भी अधिक कठार है।

जैन धम भारत से बाहर नही गया। जन धम के अन्तगा दिगम्बर और श्वेताम्बर वा सम्प्रदाय है। श्वेताम्बरा म अनक सम्प्रदाय हैं। तेरापथी इनम से ही हैं। दिगम्बर जनिया के मदिर म प्रतिमाए निवस्त्र होती हैं।

बौद्ध धम शाक्य क्षत्रिया का एक छाटा-ना राज्य हिमालय की तराई म था। इसकी राजधानी कपिलवस्तु थी। इस गणराज्य का शासक शुद्धोदन था। इस शुद्धोधन के घर मिद्धाथ का जम हुआ। इनका गोत्र गौतम था अत ये गौतम ही कहलाये। इनका बालपन ऐश्वय और विलास मे बीता। सिद्धाथ का राजकुमारा के योग्य शिक्षा दी गई थी। मिद्धाथ का विवाह यशोधरा से हुआ। एक पुत्र भी हुआ। इसका नाम राहुन रखा गया। कपिलवस्तु क सौम्यका दखत हुए उहाने एक दिन मरणासन्न रागी एक दिन बडा और श्मशान जा रही एक अर्थी को दखा। इन मक्के बाद एक शात प्रसन सयासी का देखा। उन चारा दश्या का सिद्धाथ पर गहरा प्रभाव पडा। वह घर-वार छाडकर भिक्षु हान का विचार करन लगे और एक रात पत्नी और पुत्र को छाडकर घर से निकल गये। गया पहुच कर उहाने वट-वक्ष व नीचे वठकर धार तपस्या की। यही उहें नान प्राप्त हुआ। उहाने अनुभव किया कि तपस्या व्यथ है, जस भोग विलास व्यथ है। दोनाके मध्य का माग ही मही है। यही बुद्ध का मध्य माग ह।

३६ वष की आयु म भगवान बुद्ध न धम प्रचार किया। लुम्बिनी उद्यान म ४८७ ई० पू० बुद्ध का जम हुआ और ८० साल की आयु मे कुशीनगर (कमिया) म ४०७ ई० पू० मत्यु हुई। ४४ साल निरतर पयटन करत हुए उहाने धम प्रचार किया। बुद्ध का अष्टाग माग है (१) सम्यक-दृष्टि (२) सम्यक प्रयत्न (३) सम्यक वचन (४) सम्यक सक्ल्प (५) सम्यक कर्म (६) सम्यक आज्ञाविका (७) सम्यक विचार और (८) सम्यक ध्यान। बद्ध भगवान हिंसा के विराघी और ऊच-नीच का भावना स सबथा मुक्त थे। प्राणी मात्र का एक समान मानत थे। जम के कारण किसी को ऊच या नीच नही मानते थे। भगवान

बुद्ध की मृत्यु के कुछ वर्ष बाद उनके शिष्य राजगृह में एकत्र हुए। यहाँ बुद्ध का शिष्याघ्रा का 'खवद' किया गया। बुद्ध ने धर्म प्रचार के लिए सभ की स्थापना की। स्त्रियाँ का भी भिक्षु बनने का अधिकार दिया। जन व बौद्ध धर्म धर्मा ने मस्त्रुन की धर्म प्रचार का माध्यम नहीं बनाया। बौद्ध का माहिय पाली में और जना का अध मागधी प्राकृत में है। यह म मस्त्रुन में भी इन धर्मा का माहिय लिखा गया। दोना धर्म कानातर में भारत में प्रत्यत मीमित होकर रह गए।

यूनानी आक्रमण

ईरान में गए आय धर्म देश की आर्यात या आर्यात बहुत थे। इरान शक का मूल यही है। उनकी दो शाखाएँ थी—पाण (पश्चिम) और मीड। इनमें से पाण ने साम्राज्य बनाया। हरबमनी के समय लगभग सारा ईरान पाण साम्राज्य में आ गया था। हरबमनी के वंशजा में डेरियस या दारयबुद्ध (५२१-४२८ ई० पू०) बड़ा प्रतापी राजा था। इसने भारत के तीन प्रदेश सिंधु, कम्बोज और गांधार जीत लिए। डेरियस ने अपने विजय स्तंभों में अपने को ऐश्वर्य (आश्वर्य) कहा है। भारत के सिंधु नदी के भाग का उसने एक क्षत्रप के अधीन रखा था। इसके कारण भारत का सबंध पश्चिमी एशिया से दृढ़ हो गया तथा भारतीय व्यापारी एशिया माइनर और मिस्र पहुँचने लगे।

दारा के आक्रमण के समय उसका नौ सेनापति स्वाईलक्स (शलाक्ष) समुद्र मार्ग से सिंधु के महाने तक आया था। इससे भारत के समुद्री व्यापार को बहुत सहायता मिली। ईरानी आक्रमण के कारण भारत में खरोष्ठी लिपि आयी। भारत की अपनी लिपि इस समय ब्राह्मी थी जिसका वर्तमान रूप नागरी है। खरोष्ठी दायाँ ओर से बायीँ ओर को लिखी जाती थी। ईरानी लिपि का नाम ब्रह्मिक था। सिंधु नदी के पश्चिम के भारतीय प्रदेश में अरमिर लिपि का प्रचार हुआ। खरोष्ठी की बणमाला ब्राह्मी के समान थी पर लिपि उसकी ब्रह्मिक से ली गई थी।

ग्रीस में भी आय बसे थे। ग्रीस पर मसीडोनिया ने हमला किया। मसीडोनिया के प्रतापी राजा का नाम अलेक्स था। उसका लड़का फिलिप हुआ। इसने अपने राज्य का विस्तार किया। फिलिप का लड़का सिकन्दर हुआ। सिकन्दर अलेक्स (अलेक्सांडर) का शिष्य था। वह विश्व विजय की महत्वाकांक्षा रखता था। सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण करने से पहले ईरानी साम्राज्य को लूट लिया। इससे उसको अनायास हिन्दु कुश तक का भू-भाग मिला गया। ईरान की राजधानी पर्सिपोलिस को जीतकर सिकन्दर भारत की ओर बढ़ा। गांधार के राजा अम्बि ने सिकन्दर से मित्रता कर ली। अम्बि की सहायता पाकर सिकन्दर ने राजा पारस (पुरु) पर आक्रमण किया। वह वीरता से लड़ा। उस युद्ध के परिणाम के सबंध में दाँत हैं। सिकन्दर की हार सिकन्दर की विजय। विद्वानों की नयी धृष्टि दूसरे मत को अधिक पुष्ट व साधक मानने लगी है। पुरु का मित्रता प्राप्त कर सिकन्दर आगे बढ़ा। उसकी अनेक गणनाया से युद्ध करने पड़े। इनमें से म्लुचुनायन भद्र और कठ मुत्त थे। कठ की राजधानी भारत (स्यालको) नगरी थी। कठ-युद्ध से सिकन्दर की सेना घबड़ा गयी और उसने युद्ध करने से इकार कर दिया। मगध सम्राट महानन्द की सेना के आदेश में भद्र और सिकन्दर आगे तक पहुँचकर लौट पड़ा। वापसी में सिकन्दर की सेना का मानस और क्षमता ने लड़कर। सिकन्दर इनमें संधि करने का वाच्य हुआ। वहाँ उगा रत्न में बड़े की बातें लगी। यह मायावित मिद्ध है। ३२३ ई० पू० मिस्र

बबीलोनिया पहुँचा। यहाँ ३३ वष की आयु में बर्छों के घाव से उसकी मृत्यु हा गई। सिक्न्दर व आक्रमण के कारण ग्रीकों का भारत की कला पर प्रभाव पडा। मंदिर निर्माण मूर्तिकला और मुद्रा निर्माण तथा इसी प्रकार ज्योतिष भी प्रभावित हुए। व्यापार बडा। यवनानी लिपि भी आई। भारत का धम, दशन व ज्यातिष पश्चिम में पहुँचा।

मौर्य वंश

चन्द्रगुप्त मौर्य आचाय चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने भारत में ग्रीक विजय का प्रभाव का मिटा दिया तथा पुन भारत की सीमा हिन्दुकुश तक पहुँचा दी। इस प्रकार भारत की राजनीतिक सीमा और प्राकृतिक सीमा एक हो गई। आचाय चाणक्य का मत था कि हिमालय से लेकर समुद्र तक फैली एक सहस्र भोजन आय भूमि है और इसमें एक चक्रवर्ती राज्य स्थापित होना चाहिए। इस लक्ष्य को उन्होंने अपने शिष्य चन्द्रगुप्त को मगध का सम्राट बनाकर पूरा किया। सेल्यूकस सिक्न्दर का एक सेनापति था। सिक्न्दर के पद चिह्न पर चलते हुए उसने भारत पर ३०४ ई० पू० में आक्रमण किया। चन्द्रगुप्त ने उसके मनोरथा को मिट्टी में मिला दिया। पराजित सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को परोपनिसेडेई (काबुल) एरिया (हिंरात), आर्कोशिया (बदहार) और जद्रोसिया (कलात लानवेला और मकरान) के प्रदेश दिये। उसने अपनी कन्या भी चन्द्रगुप्त से विवाही। चन्द्रगुप्त ने अपने यूनानी श्वसुर को ५०० हाथी दिये। मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त के दरबार में यूनान का राजदूत होकर आया। चन्द्रगुप्त की सेना में ६ लाख पैदल ३० हजार घुडसवार और ६ हजार हाथी थे। ८ हजार से अधिक रथ थे। सेना का प्रबंध ६ उपममितिया द्वारा होता था। खान राज्य की अपनी थी, इससे राज्य का बड़ी आमदनी थी। समुद्र से मोती निकालने का काम राज्य करता था। नमक का कारोबार भी राज्य के अधीन था। चन्द्रगुप्त ने ३२२ ई० पू० से २६८ ई० पू० तक राज्य किया।

चन्द्रगुप्त के पुत्र विदुसार के दरबार में सेल्यूकस के उत्तराधिकारी राजा एण्टीओकस का दूत रहता था। मिन्न का राजदूत डायोनीमियस भी दरबार में था। विदुसार की २७२ ई० पू० में मृत्यु हो गई।

सम्राट अशोक विदुसार की मृत्यु के बाद मगध के राजसिंहासन पर अशोक बठा। इसने सवप्रथम कलिंग (उड़ीसा) को जीता। अशोक ने इस विजय के बाद 'धम्म विजय (धम विजय)' की धार ध्यान दिया। बौद्ध धम के प्रचार के लिये उसने देश विदेश में अपने प्रचारक भेजे। अशोक व 'महामाय का काय ही धम प्रचार का काम देखना था। अशोक ने चिकित्सालय खोले। शिलाग्रा पर अपने सदेश अंकित करा उन्हें भिन्न भिन्न स्थानों पर प्रतिष्ठापित किया। ये शिला लेख अफगानिस्तान से लेकर ममूर तक मिन हैं। सारनाथ से प्राप्त स्तम्भ पर सिंह की चार मूर्तिया बनी हुई है। कहते हैं अशोक ने ८८ हजार इमारतें बनवाईं। सारनाथ, राची और पाटलिपुत्र में अशोक का भवना के कुछ अवशेष मिले हैं। पाटलिपुत्र के राज प्रासाद को देखकर चीनी यात्री फाहियान अंकित रह गया था। उसने उसको देवताग्रा का बनाया हुआ बताया। राज्य शक्ति का धम प्रचार और जन-कल्याण में प्रयोग करने वाला विश्व का यह सभवन पहला सम्राट था।

मौर्य साम्राज्य प्राची मध्य, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर—इन पांच मडला में विभक्त था। जनपद और इनकी जनपद सभा को कायम रखा गया। ग्राम का शासक प्रांभिक कहलाता था। यह कर वसूल करने के अतिरिक्त मनोरजन के लिए प्रेमाया (लमाशा) का

भी प्रवृत्त करता था। 'प्राभिव' शासन का एक महत्वपूर्ण भूगण।

केन्द्रीय शासन घटारह विभागों में विभक्त था। प्रत्येक विभाग एक महामायिक व प्रधीन था। 'यायालय, धर्मस्थीय (धीवानी) और कटक शासन (जीरनागी) का प्रकार के होते थे। 'यायालय व सामने कोई मुकदमा चलन पर रिफ्त बाव प्रवृत्त रिचिबद्ध का जानी थी (१) तिथि (२) प्रपराध का स्वल्प (३) घटारास्यस (४) र्गि ज्ञान का हा ला ऋण की भासा (५) वाणी प्रतिवाणी के देश गांव जानि गांव नाम पना (६) र्गाना पक्षी की युक्तिवा प्रवृत्तियों का पूण विवरण। मंगस्थनीज ने गाता है कि भाग्य व साग घरो में ताले नहीं लगते थे। चोरियों घनातप्राय थीं। लोग सत्यवाणी व गमनामा थ।

सारनाथ का स्तम्भ मौरवालीन कला का प्रतीक है। घनात व समय की पापान वटनिया (रजिग) भी दर्शनीय है। इन पर जानक की कथाएँ उल्लिखित हैं। वटनियों कायर काटकर बनाई गई हैं। साँचों का रूप महत्व का है। घाघार व समाप गाता भाग १०० फुट है। यह ताल रंग व पत्थर से बनाया गया है। गुप्त मन्दिर बनाया का परगना का प्रारम्भ हुआ समय से हुआ। एक मन्दिर बराबर (विहार) की पहर्णाइया में बना है।

मगस्थनीज के अनुसार भारत में तब गात वग या जानियों था (१) दागनिक् (२) किसान () अहीर, गडरिय और चरवाह (४) बारागर (५) मनिक् (६) राय कमचारी और (७) निरीक्षक या गुप्तचर। लोग मितव्ययी थ तथा ग्यन्ता व भव्या पूवक रहते थ। रत्ना की धारण करने की प्रथा थी। घायन गुप्तर मानमन व बने पूरुत्तर कपडे लोग पहनते थे। तक्षशिला शिगा का महावे था। एक भाषाय व पाग ५०० सन्धर दस सहस्र तक छात्र रहते थे। राय शिगा को महायना देना था। अधिकांश भाग में सिपाई होने से साल में दो फसल होती था। अनाज कभी नहीं पड़ता था। अनाज गन्ना था।

मिनादर भारत के ग्रीक राजासा में मिनादर का नाम प्रसिद्ध है। उमरी राज घानी साकल (सिवालकोट) थी। वह बौद्ध था। मिलित पाहो उमरा रिगा पातो भागा में एक प्रथ है। तक्षशिला व ग्रीक नरेश अतलिखित का राजदूत हेलिउत्तारे विग्शा में रहता था वह धण्डव हो गया था। वामुदेव (विष्णु) की पूजा व रिण उसका बनाया गरुड ध्वज, गाज भी विद्यमान है। कलिग नरेश छोरेवल ने डमेट्रियस (डेमस्थीय) को हरा कर भारत की यवनो से रक्षा की।

शुंग वंश

पुष्यमित्र मौर्यों का सेनापति था। इसने शुंग राजवंश चलाया। प्रश्वमेध यज्ञ भी किया। एक शिलालेख में इसे द्विरश्वमेध यात्री बताया गया है। यचना न उसका छोटा अश्व पकड़ लिया था। इसने पीर वसुमिद ने उसको छुड़ाया। महाभाष्यकर्ता पातजलि ने इसका अश्वमेध यज्ञ कराया था। महाभाष्य में कहा गया है पुष्यमित्र यज्ञमहे।

सातवाहन वंश

सिमाक मौर्यों के निबन्ध हान पर दक्षिण में सिमुक न २१० ई० पू० सातवाहन वंश की नींव डाली। गोदावरी नदी के किनारे प्रतिष्ठान नगरी इसकी राजधानी थी। इसने वंशज गोतमिपुत्र सातकर्ण ने पश्चिम में अरवि तक राय का विस्तार किया। इसने शक पल्हव (पाण्ड्यन) और यचना (ग्रीक) को पराजित किया। इसका काल ६६ ४४ ई० पू० था। प्रसिद्ध भारतीय इतिहासज्ञ डॉ० वाशीप्रसाद जायसवाल ने इसी को शकारि विज्रमा

दिये जाता है। वासिष्ठीपुत्र श्री पुलमावि के समय सातवाहन राज्य चीन देश तक फैल गया। पुलमावि ने मगध के राजा सुशर्मा का मार कर मगध के कण्व वंश की समाप्ति कर दी। सातवाहन वंश का शासन २२५ ई० तक चला।

कुशाण साम्राज्य हूणा से भगाये और सीर नदी घाटी में बसने के बाद उसका छोड़कर बैक्ट्रिया पहुँचे यइशि लोग ने पाच राज्य स्थापित किए। इनमें एक कुशाण साम्राज्य था। इसका राजा कर्पिसिम बौद्ध था। चीन के सम्राट को बौद्ध धर्म ग्रथ भेजने वाला यह पहला भारतीय नरेश था। ८० साल की आयु में वह मर गया। इसका उत्तराधिकारी विम क्यफिश शव था। इसने अपना राज्य मथुरा तक बढ़ाया। पाटलिपुत्र के राजा सातवाहन कुतल सातकर्ण ने कुशाणा का अनेक युद्ध में पराजय दी और 'शवारि' कहलाया। ७८ ई० में कनिष्क राजगद्दी पर बैठे। इसने सातवाहना को हराकर अयोध्या पाटलिपुत्र तक राज्य का विस्तार किया। कनिष्क पाटलिपुत्र से बौद्ध विद्वान अश्वघोष और बुद्ध के एक कमण्डल को साथ ले गया। उत्तरी भारत से इसने सातवाहन वंश के राज्य को समाप्त कर दिया। कनिष्क ने उत्तर में वक्षु सीर नदिया तक के प्रदेशों को जीता। चीन से लड़कर काशगर खोतान और यारकंद के प्रदेश इसने अपने साम्राज्य में मिला लिए। वक्षु और यारकंद से पाटलिपुत्र तक फैले साम्राज्य के शासन के लिए इसने पुष्यपुर (पशावर) को अपनी राजधानी बनाया। कनिष्क के सिक्का पर देवी देवताओं की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। कुण्डलवन (कश्मीर) बिहार में कनिष्क के संरक्षण में बौद्धों की चौथी महासभा हुई। अश्वघोष वसुमित्र और पाशव इसमें ५०० विद्वानों के साथ सम्मिलित हुए थे। त्रिपिटिका का प्रामाणिक भाष्य संहृत में तैयार किया गया। मध्य एशिया और चीन में बौद्ध प्रचारक भेजे गए। महायान सम्प्रदाय का प्रवर्तन इसी समय हुआ। कनिष्क की एक सिरवटी मूर्ति मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है। कनिष्क ने ४० वर्ष तक राज्य किया। कनिष्क के बाद हविष्क और वामुदेव प्रसिद्ध राजा हुए।

११० ई० में सातवाहना ने उज्जैन के शक क्षत्रप को हराया और उसके प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। पंजाब के कुण्ड, यौधेय और मालव गणराज्यां ने अपनी सत्ता पुनः स्थापित की। कुशाण साम्राज्य को इन सबको समाप्त कर दिया।

नागभारशिव वंश कुशाणा के साम्राज्य के भग्नावशेष से उत्पन्न राज्यां में नागभारशिव वंश मुख्य है। इन्होंने ग्वालियर के पास पदमावती को अपनी राजधानी बनाया। कौशाम्बी से बढ़ते-बढ़ते ये मथुरा पहुँचे। इन्होंने गंगा-यमुना का प्रदेश कुशाणा से जीता था, अतः गंगा-यमुना को अपना राज्य चिन्ह बनाया। इस वंश के शासक वीरसेन ने बनारस में गंगा घाट पर अनेक अश्वमेध यज्ञ किए।

वाकाटक वंश भारशिव राजाओं का एक समत था विन्ध्य शक्ति (२७८ ई०)। इसने कुशाणा को हराया। इसके पुत्र प्रवरसेन ने गुजरात और वाठियावाड के शकाओं को मार भगाया। प्रवरसेन के पुत्र का नाम गौतमिपुत्र था। इसका विवाह नागभारशिव वंश के राजा भगनाग की कन्या से हुआ। इससे उत्पन्न पुत्र रद्रीसेन भारशिव और वाकाटक दोनों वंशों के राज्यों का शासक हुआ। उत्तरी भारत इसके राज्य में आ गया।

गुप्त साम्राज्य (३१६ ई०—५१० ई०) वाकाटकों के निबल होने पर लिच्छिवियों ने गंगा के दक्षिण में पाटलिपुत्र को भी जीत लिया। कुशाण साम्राज्य के अंत में उत्पन्न वीरा में श्रीगुप्त एक था। इसने पूर्वी मगध में अपना राज्य स्थापित किया। श्रीगुप्त ने गुप्त

वंश की स्थापना की। इसका पीव चन्द्रगुप्त (३१६ ई०—३३५ ई०) महाराजमी हुआ। वह महाराजाधिराज हो गया। चन्द्रगुप्त ने लिच्छवीगण स मंत्री की तथा उसकी राजकन्या कुमार देवी के साथ विवाह किया। इस विवाह के कारण गुप्त राज्य और लिच्छवी राज्य एक हो गए। कुमार देवी का पुत्र समुद्रगुप्त हुआ। समुद्रगुप्त भारत का नेपालियन माना जाता है। प्रयाग के एक पुराने स्तम्भ पर इसकी विजय प्रशस्ति अंकित है। प्रशस्ति हरिष्यण की लिखी हुई है। समुद्रगुप्त ने वाकाटक वंश का राज्य समाप्त कर दिया बाची के राजा विष्णुगोप का हराया। ममतट (गंगा-ब्रह्मपुत्र का मुहाना) देवाक (चटगाव त्रिपुरा) कामरूप (असम) नेपाल और कृतपुर (कुमायू) के राज्या ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली। कुशाण शाहानुशाही ने भी समुद्रगुप्त का प्रभाव स्वीकार किया। समुद्रगुप्त विद्या और कला प्रेमी सम्राट था। ३७८ ई० में समुद्रगुप्त का देहान्त हो गया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (३८०—४१३ ई०) रामगुप्त पर कुशाण-नरेश 'शाहानुशाही' ने हमला कर दिया। रामगुप्त ने संधि की जा शर्तें स्वीकार का थी वे उमक छोटे भाई चन्द्रगुप्त का स्वीकार नहीं थी। चन्द्रगुप्त ने स्त्री वेष धारण करके कुशाण राजा के अंतपुर में प्रवेश किया और उसका मार दिया। रामगुप्त के पराभव पर वह गुप्त राज्य का स्वामी हो गया। ध्रुवदेवी या ध्रुवस्वामिनी के साथ उसने विवाह कर लिया। चन्द्रगुप्त ने कुशाणा का हराया। चन्द्रगुप्त की सेना हिंदुकुश पर्वतमाला को पार कर बाल्हीक (बल्ख) तक जा पहुँची। तिल्ली में महरोली के पास एक लाट खड़ी है। इस पर चन्द्रगुप्त की विजय की प्रशस्ति उत्कीर्ण है। वक्षु नदी से अरब सागर तक साम्राज्य स्थापित करने के बाद इसने विजयमाल्य की उपाधि धारण की।

कुमार गुप्त (४१४—४५५ ई०) इसका ४१ वर्ष का शासन शान्ति का शासन रहा। नावना महाविहार की स्थापना इसी ने की। इसमें दूर दूर के विद्यार्थी शिक्षा पाने आते थे। इस समय हूणा के हमले पुन प्रारम्भ हो गए इनके कारण गुप्त वंश की सत्ता दृढमान लगी।

स्कन्द गुप्त (४५५—४६७ ई०) हूणा से यह वीरतापूर्वक लड़ा गुप्त राजवंश की रक्षाय का उद्धार किया गया का हराया।

स्कन्द गुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य क्षीण होता गया। तीरमाण हूण ने ५०० ई० में पंजाब और मानवा जीता। इसका उत्तराधिकारी मिहिरकुट था। स्कन्द गुप्त वंश के नरसिंह बालास्य ने हराया। मिहिर कुट ने स शक था।

यशोवर्मा हूणा को विजयी करने वाले उस सेनानी का नाम शिलालेखा में जन द्रयशावर्मा कहा गया। मत्स्य (मध्य प्रदेश) का विजय स्तम्भ इसकी यश-गाथा गा रहा है।

गुप्त वंश का साम्राज्य नष्ट होने पर भारत में सावर्भूम सम्राटों का भा अन्त हो गया। पाटलिपुत्र साम्राज्य का इसमें बाद फिर उदय हुआ।

काहियान चीना यात्री काहियान गुप्त सम्राटों के राज्यकाल में भारत आया था। यह त्रिपुरा की खोज में भारत आया तथा महा १५ वर्ष रहकर एक भारतीय जहाज पर चीन मोगा। इसने अपने यात्रा विवरण में भारतीय शासन की बड़ी प्रशंसा की। इसने लिखा है कि राज्य के एक मिर में दूसरे मिर तक कोई भी साना उछानना चला जाय कोई उम नहीं छटना। यह नैन मीथिक ही होता था निम्न-पट्टी और पचायत की बोर्ड जकरन

तही होने। अणराधिप का अणराध के अनुसार अर्ध-दंड दिया जाता था। प्राण-शुद्ध और शारीरिक शक्ति नहीं दिया जाता था। राज्य भर में जीव हिंसा नहीं होती। कोई मद्य भी नहीं पीता। चाटाल का छोड़कर लहसुन प्याज भी काम नहीं आता। गुजर और मुर्गी नहीं पाल जाते। शराब की दुकानें नहीं थीं। सूनागार (बूढ़कपान) भी नहीं थे। बचन चांगन मछली पकवत शिकार खेलने और मौस बेचने थे।

हपवधन गुप्त साम्राज्य का अंत हान पर (१) कन्नौज में मौखरि वंश (२) पानेश्वर में वधन वंश और (३) वल्लभि में मन्त्रिक वंश राज्य कर रहे थे। गुप्ता का राज्य मगध तक सीमित रहा। इनमें वधन वंश का हपवधन, गुप्त वंश के बाद भारत का सबसे विख्यात राजा हुआ।

मौखरि राज-वंश ने गुप्ता की अधीनता यागवर्मा की छोटी मंत्री में कन्नौज में अपना राज्य स्थापित किया। ईश्वर वर्मा हूणा में लड़ा था। उसके बाद कन्नौज की गल्ली पर ईश्वरवर्मा और मववर्मा बैठे। मववर्मा ने गुप्त वंशी राजा दामोदर गुप्त का एक युद्ध में मार दिया। मववर्मा के बाद अवन्तिवर्मा और गुप्तवर्मा राजगद्दी पर बैठे। गुहवर्मा का विवाह पानेश्वर के राजा प्रभाकरवधन की पुत्री राज्यश्री के साथ हुआ। गुहवर्मा की मृत्यु के बाद राज्यश्री कन्नौज की स्वामिनी हुई। प्रभाकरवधन के राज्यवधन और हपवधन दो पुत्र थे। राज्यश्री के राजगद्दी पर हान पर गुप्ता के एक मामला नरेन्द्र गुप्त शशाक ने कन्नौज पर आक्रमण किया और राज्यश्री का कत्ल कर दिया। इस पर राज्यवधन एक बड़ी मना लेकर अपनी बहिन का सहायता के लिए कन्नौज पहुंचा। शशाक ने युद्ध नहीं करके, राज्यवधन के संधि-वार्ता के आभरण का धाया देकर उमकी हत्या कर दी। भाई की हत्या का समाचार सुनकर राज्यश्री घबड़ा गई। उमने मंत्री हान का निश्चय किया और विध्याचन के जगन में चली गई। हपवधन अब भाई की मृत्यु का बदला लेने कन्नौज पहुंचा। हपवधन स्वयं बहिन की छात्र में चला। शशाक का मामला उमने ममेरे भाई भंडी ने किया। राज्यश्री चित्त में प्रवेश करने को जब उद्यत थी, तब हपवधन ढलता हुआ वहां पहुंच गया। राज्यश्री की रक्षा हो गई। अपनी ने इधर शशाक को हराया। हपवधन पानेश्वर के माय-माथ अपनी बहिन का प्रतिनिधि होकर कन्नौज का भी राज्य करने लगा। राज्यश्री ने मत्तान थी। हपवधन ने ६ साल तक विजय-यात्रा की। गुप्त वंश का राजा माधवगुप्त हपवधन का बालसखा था। अंत गुप्ता की आर से उसका विरोध नहीं हुआ। प्राण-यातिपि (अमम) का राजा भास्कर वर्मा हपवधन का मित्र हुआ गया। हपवधन ने वत्तभि के भासक मन्त्रवन्शीय ध्रुवमन द्वितीय का हराया। फिर उसने मंत्री कर ला और अपनी पुत्री भी उसका विवाह दी।

चालुक्य वंश पुनर्वशी द्वितीय नमन के दक्षिण में चालुक्यवंशी पुनर्वशी द्वितीय का शासन था। इसकी राजधानी वातापी (बादामी बीजापुर) थी। पुलकशी ने पल्लव वंशी महेंद्रवर्मा का जीतकर कावेरी तक अपना राज्य विस्तार किया था। चोल पांड्य और केरल राज्य तक उसकी अधीनता स्वीकार करने थे। हपवधन आर पुलकेशा द्वितीय के बीच अनेक युद्ध हुए। हपवधन उसमें सफल नहीं हुआ। हपवधन प्रयाग के सगम पर हुए पाचवें साल एक बड़ा मला लगवाता था जिसमें वह विपुल धन राशि दान करता था। हप ने कन्नौज में एक महामथा का आह्वान किया था। इसमें राजा महाराजाप्रा के अनिश्चित चार हजार बौद्ध भिक्षु और तीन हजार पौराणिक पण्डित सम्मिलित हुए थे।

ह्यूएत्सांग यह चीनी यात्री हपवधन के समय में आया था। १४ साल बाद जब स्वयंश लौटा तब यह अपने साथ अनेक मूर्तियों तथा बुद्ध अस्थ्यावशेषों के अतिरिक्त ६५७ मन्त्रों के ग्रंथ भी ले गया था। इसकी सग्रहीत सामग्री मियान नगर के समीप तायेन (वरण-न्याण) नामक विहार में आज भी विद्यमान है। ह्यूएत्सांग ने यहाँ रहकर भारत से लाय हुए ग्रंथों का २० साल तक चीनी में अनुवाद किया। उसकी समाधि इस विहार से कुछ मील दूर है। इस महायात्री ने १२८ देशों की सीमाओं का पार किया और हजारों ग्रंथों का अनुवाद किया। ह्यूएत्सांग नालंदा विश्वविद्यालय में ६ साल रहा था। उस समय वहाँ दस हजार से अधिक विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। वहाँ की एक इमारत नौ मजली थी। विद्यार्थियों के छात्रावास थे। हरेक विद्यार्थी का कक्ष अलग अलग था। परन्तु ऐसे भी भवन थे जहाँ दस हजार छात्र एक साथ बैठकर अध्ययन करने थे। छात्रों को द्वार पण्डित का परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही विश्वविद्यालय में प्रवेश मिलता था। द्वार पण्डित की परीक्षा बड़ी कड़ा था। २०-३० प्रतिशत ही परीक्षा में उत्तीर्ण होते थे। शिक्षा निवास भोजन वस्त्र सब निशुल्क थे।

मुस्लिम आक्रमण

भारत पर मध्यम पहला मुस्लिम आक्रमण ७१२ ई० में हुआ। मुहम्मद बिन कासिम ने ७१० ई० में सिन्ध और मुलतान का जीता। परन्तु अरब भारत में स्थायी राज्य स्थापित नहीं कर सके। सिन्ध में बौद्धों ने शहर का दरवाजा बंद किया था अतः महाराजा दाहर का अरबों के हाथों पराजय देखनी पड़ा।

महमूद गजनवी (६६७-१०३० ई०) पिता सुवृत्तगोन की मृत्यु पर यह गजनों की गद्दी पर ६६७ ई० में बैठा। १००० से १०२६ ई० के मध्य इसने भारत पर १७ हमले किए। भारत पर उमक आक्रमण साम्राज्य का स्थापना के लिए नहीं हुए बरन उसका उद्देश्य दश का लूटना था। उसने भारत पर बार बार हमला किया पर अपना राज्य स्थापित करने का उमक कभी काशिश नहीं की। १०२५ ई० में उसने सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण कर उम लूटा।

मोहम्मद गौरी (११८६-१२०६) ११८६ ई० में इसने लाहौर जीता। ११६१ ई० में इसको पृथ्वीराज चौहान ने पानीपत के समीप तरावली में हराया। मोहम्मद गौरी पृथ्वीराज से १७ बार उठा और हमेशा हाग। १८वीं बार माहम्मद गौरी ने धत्तना से काम लिया और पृथ्वीराज का कत्ल कर लिया। पर पृथ्वीराज ने अपने मया कविवर चन्दबरदाई के मन्त्राग से माहम्मद गौरी से प्रतिज्ञाध लिया और उम बाण से मार डाला। पृथ्वीराज चौहान गजनी धनुर्विद्या में निपुण था।

गुलाम वंश (१२०६-१२६० ई०)

कुतुबुद्दीन ऐबक (१२०६-१२१० ई०) यह माहम्मद गौरी का एक मन्त्रापति था। गौरी के मरने पर इसने सिन्ध का शासक हो गया। अमरगढ़ नाम राज्य की स्थापना की।

अल्लाउद्दीन (११९१-१२६० ई०) यह कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद था। यह उत्तरी भारत का शासक हो गया।

रजिया बेगम (११९१-१२४० ई०) यह अल्लाउद्दीन का लड़का था। यह सिन्ध की सुल्तान का शासक था।

रजिया व पश्चान ३० वष तक दिल्ली के मिहासन पर नमीरउद्दीन महमूद शासक रहा । किन्तु वास्तविक शक्ति बलवन के हाथ में थी । १२३६ ई० में बलवन स्वयं मुसलमान बन गया । बलवन का मवात दोघावा एव आम-पास के क्षत्रा में हिन्दू जगता के विद्रोह का कठार दमन करने का श्रेय दिया जाता है । बलवन न पहली बार अरवार में ईरानी वभव एव शिष्टाचार का लागू किया । वस्तुतः बलवन ने डगमगाती हुई दिल्ली मल्तनत का पुन ठोम आधार पर खडा कर लिया ।

खिलजी वंश

अलाउद्दीन खिलजी (१२६६-१२९६ ई०) यह अपने चाचा और श्वसुर जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके गद्दी पर बैठा । इसके शासन के साथ इस्लामी साम्राज्य का प्रारम्भ हुआ । दक्षिण भारत का पहली बार एक सनापति मदिन ताफूर ने विजय किया । दक्षिण भारत का लुटकर मरिनक काफूर १२९९ ई० में दिल्ली गेया । अलाउद्दीन ने राजपूताना में रणथम्भौर का जीतने के बाद चित्तौड़ पर आक्रमण किया । वह मवाड की महारानी पद्मिनी को चाहता था । १३१२ ई० में जब उमन चित्तौड़ जीता और किले में प्रवेश किया तो वहा उमका एक भी महिना नही मिनी । रानी पद्मिनी ने एक हजार वीरगनामा के साथ जौहरकृत किया था—चिता में बूदकर भस्म ह्रा गई थी । यह चित्तौड़ का पहला माका के नाम में प्रसिद्ध है । अलाउद्दीन खिलजी हृदयहीन तथा धर्मांध था । अतः प्रजा का प्रेम नही प्राप्त कर सका । इसके मरने ही खिलजी साम्राज्य छिन्न भिन्न ह्रा गया ।

तुगलक वंश (१३२०-१४१४ ई०)

मोहम्मद तुगलक (१३२५-१३५९ ई०) ग्यासुद्दीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जूना मोहम्मद तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा । उमको बुद्धिमान पागल बादशाह कहा जाता है । यह दक्षिण विजय के उद्देश्य से अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरि) ले गया । दिल्ली उजड गई । युद्धों का खर्च पूरा करने के लिए इमन ताम्बे के मिक्के चलाये । राजकाप खाली ह्रा जान पर इमने कर बढ़ाये । किसानों का कुचला । किसान खेत छोडकर जंगल में भाग गये । आर्थिक व्यवस्था विगड गई । फलतः जगह जगह विद्रोह हो गये ।

फिरोजशाह (१३५९-१३८८ ई०) मोहम्मद तुगलक के बाद उसका चचेरा भाई फिरोजशाह तुगलक गद्दी पर बैठा । वह कट्टर मुसलमान था । धर्मांध होने से उमने गर-मुस्लिमा को मुसलमान बनाने के लिए अनेक उपाय बरतते । जजिया कर कठोरता से वसूल किया । ब्राह्मण भी इमसे मुक्त नही रखे गये । तुगलक साम्राज्य में हो रहे विद्रोह को शांत करने में यह सवथा अममथ रहा । इसके बाद के शासक दुबल थे । १३६८ ई० में तमूरलगा ने दिल्ली को चूटा और बल्लेआम किया । उमने राज्य न किया और लौट गया ।

लोदी वंश (१४५१-१५२६)

इस वंश का पहला शासक बहलोल लोदी था । इसके बाद मिक्दर लोदी (१४८६-१५१७ ई०) हुआ ।

इब्राहीम लोदी (१५१७-१५२६ ई०) यह मिक्दर लोदी का लडका था । इसको बाबर ने पानीपत के पहले सन्ग्राम में हराया । लोदी राज्य-वंश का १५२६ ई० में अन्त हो गया ।

मुगल वंश

बाबर (१५२६-१५३० ई०) बाबर ने मुगल राजवंश की स्थापना की। पानीपत खानवा और घाघरा का लड़ाईया जीती। पठानी और गजपूता का हराया। तुर्की में इमने अपना आत्म चरित्र लिखा है।

हुमायूँ (१५२०-१५५६ ई०) यह बाबर का बेटा था और शेरशाह सूरी से हारकर ईरान चला गया। शेरशाह की मृत्यु के बाद इसने फिर राज्य वापस किया। अकबर का बेटा था।

सूरी राजवंश (१५४०-१५५५ ई०) शेरशाह सूरी ने हुमायूँ का पराजित किया और भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया। सहसराम (बिहार) में बना इसका मकबरा कला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। इसकी मृत्यु १५४५ ई० में हुई।

अकबर (१५५६-१६०५ ई०) यह १३ साल का आयु में १४ फरवरी १५५६ ई० का ग्वाली पर बठा। सनापति बरमखा ने पानीपत में हिंदू राजा हमचंद्र को १५५६ ई० में हराया। अपने उपरान्त अकबर का राज्य स्थिर हुआ गया। राजपूता का अकबर ने पदा का लालच देकर मुगल-माम्राज्य में स्थान दिया किन्तु महाराणा प्रताप आज भी अकबर से सघप करत रहे। हल्दीघाटी के भवान में उन्होंने अकबर की सना में डटकर लाहा लिया। अकबर के ममूय कभी नहीं झुक। अकबर ने दीए ए लाही मजहब चलाया। वह बहुत ही चानाक शासक था तथा हिन्दुओं को प्रसन्न रखने के लिये उमने कुछ दिना तक तिनके नामाने व मूय का जन दन का नाटक भी रचा। १६०५ ई० में उमकी मृत्यु हुआ गई।

जहाँगीर (१६०५-१६२७ ई०) यह अकबर का पुत्र था। इसके शासन में चित्रकारी और झालखन में उत्तमि हुई। महम्मिमा से विवाह कर उमने उमकी नूरमहन और नूरजहा की उपाधि दी थी।

शाहजहाँ (१६२८-१६५८ ई०) शाहजहाँ का काल मुगल शासन का स्वर्ण-युग माना जाता है। इसके शासनकाल में दीवान ए आम दीवान ए-खास जाभा मस्जिद ताजमहल व नान किना गण्डमरत जना तथा वास्तु में स्थापत्य-कला ने बहुत प्रगति की।

औरंगज़ेब (१६५८-१७०७ ई०) राज की ननिया बहाकर भाइया की हत्या कर तथा अपने बड़ पिता शाहजहाँ को कत्ल में डालकर यह गद्दी पर बठा। इसने धर्मांधता की नीति बरना। इसका मारा जीवन हिन्दुओं में नडत हुए बीता। शिवाजी ने औरंगज़ेब से डटकर सघप किया तथा अपने बार उमके शासन का जड़ें हिला ली। गुरु गोविन्दसिंह ने भी औरंगज़ेब के अत्याचारों के विरुद्ध तनवार उठाई। औरंगज़ेब ने हिन्दुओं से जजिया वसूल किया व उनको धमसाना व प्रति सकोण नीति अपनाई। सिखा के गुरु तेगबहादुर व बाद वीरामो की निमम लया उमका धर्मांध नीति का ही परिचायक है।

सिखों का उत्थान

मस्जिद कात्ल में अनेक धार्मिक घातना का उत्भव हुआ। इनमें सिख मत का घातना विनायक महत्वपूर्ण है। एक मत के सम्पापक गुरु नानकदेव थे। उनका उद्देश्य हिंदू धर्म में धार्मिक कुरानिया का दूर करके उमका रथा करना था। परन्तु राजनैतिक परिस्थितियाँ के कारण इस मत ने एक अनिष्ट संगठन का रूप धारण कर लिया। सिख शास्त्र सिख शास्त्र का धर्मशास्त्र है। गुरु प्रथमादेव में भगवान राम-कृष्ण आदि धर्मगुरु की

प्रशस्ति भरी पढी ह। मभी सिख गुरु ऽवी-दवतामा क धाराधन थे तथा हिंदू धर्म की रक्षा ही उनका उद्देश्य था।

गुरु नानक (१४६९-१५३८ ई०) गुरु नानकदेव का जन्म १४६९ म पश्चिमो पंजाब म ननकाना साहब म हुआ। उनम बाल्य अवस्था म ही बराग्य की भावना उत्पन्न हा गई था। पनत नीम वय की आयु म उहाने ईश्वर भक्ति का प्रचार आरम्भ कर दिया। गुरु नानक एक ईश्वर का मानत थे। उनका विचार था कि ईश्वर प्राप्ति क निग निरन्तर नाम का जाप करना चाहिये। इसके लिए व मच्चे गुरु की सहायता प्राप्त करना आवश्यक मानत थे। वे जाति पानि के विरोधी थे। गुरु नानकदेव त अपन युग म भक्ति की गंगा प्रवाहित करके आध्यात्मिक जागति उत्पन्न की।

गुरु अमरदेव (१५३८-१५५२ ई०) उनका वास्तविक नाम भाई रहता था। व गुरु नानकदेव के प्रमुख शिष्य थे आर उनक गुरु का गद्दी पर आसीन हुए। उन्हान गुरुमुखी निधि बनाई और इममे गुरु नानक की जीवनी गद्य म लिखी जिस 'जम माखी कहा जाता ह।

गुरु अमरदास (१५५०-७८ ई०) यह गुरु अमरदेव क शिष्य थे। उन्हान गुरु लगर जारी किया। उहाने सिख मत क प्रचार के लिए विभिन्न स्थाना पर केन्द्र स्थापित किए।

गुरु रामदास (१५७८-८१ ई०) इनका वास्तविक नाम भाई जेठा था। इनका जन्म लाहौर म हुआ। इहाने मिखा क प्रसिद्ध तीर्थस्थान अमृतसर नगर की नींव रखी।

गुरु अर्जुनदेव (१५८१-१६०६ ई०) यह गुरु रामदास क मवम छोट पुत्र थ। इहाने अमृतसर का मिखा का तीर्थ स्थान बनाया। आपन 'गुरुग्रन्थ-साहब तमार करामा जिसम समस्त गुरुद्या की वाणिया वणित ह। एनक मवम म मिखा न राजनीति म भाग नना आरम्भ कर लिया। गुरु अर्जुनदेव का हिंदू धर्म त्याग कर भुसलमान बनन पर विवश किया गया तथा इकार करने पर तन क खौनत कडाह म उवाल कर मार डाला गया। गुरुजी शरण हा गये किन्तु उन्हाने अपन धर्म की रक्षा की।

गुरु हरगोविन्दसिंह (१६०६-१६८५ ई०) गुरु अर्जुनदेव न मत्यु म पूव अपन उत्तरा धिवादी का आदेश दिया कि सिख शस्त्र ग्रहण कर। उहाने गद्दी पर बैठन ही 'मच्छ बादशाह का पद ग्रहण किया। इहाने सनिक वस धारण किया आर मिखा का भी ऐमा करन का आदेश दिया। इनको मुगला क साथ तीन बार युद्ध करना पडा जिसम हमशा इनकी विजय हुई।

गुरु हरराय (१६४५-१६६१ ई०) यह गुरु हर गार्गिंसिंह क पुत्र थ। उहाने श्रीरगजेव र भाई दाराशिकोह का शरण दी जिसस वह इनम कुपित हा गया।

गुरु हरकिशन (१६६१-८४ ई०) जब यह गुरु की गद्दी पर बठता इनकी आयु केवन पाच वय की थी।

गुरु तेगबहादुर (१६६८-७५ ई०) यह गुरु हरगार्गिन्दसिंह क छोट पुत्र थ। एनके समय म सिख गतिशाली तथा सगठिन बन गए। श्रीरगजेव न इन्ह दिल्ली बुलाकर इन्नाम स्वीकारन करने पर ११ नवम्बर १६७५ ई० का एनकी निममनापूर्वक हत्या करवा दी।

गुरु गार्गिन्दसिंह (१६७५-१७०८ ई०) इनका जन्म ०६ दिसम्बर १६६६ ई० का पटना म हुआ। जब यह गद्दी पर बैठे तो इनकी आयु केवन ६ वय की थी। इहाने मुगला क प्रत्याचार के विरुध म सारा धामु धार्मिक मुद्दे छेडे रखा। इहाने मिखा का सगठन किया और उह सनिक गि ता दा। प्रत्येक सिख का कश कघा कृपाण कश और कच्छा पहनन का आदेश दिया। १६६० ई० म मुगल मताया का पराजित किया। १६६५ म उहाने राजकुमार

मुघलजम से घड़ म बिजय प्राप्त की । १६६६ म उग्राग मिथा की एक घरी मभा की जग
 यनि श्री क उगुन पाप धारा का बुता । एक ही गुता का गरहित क भगवत न शागत
 न मुननमा न वनन पर शीवार म जीवित बुता किया । १७०० ई० म उर पर एक गंगा
 न प्राणपातक प्राथमण कर दिया । घान गुग्घा की गरी गर धम गान्त का ममति क
 स्वर्गवामा हा गव गव गुग्घा की ममति र हा ग ।

बन्दा बरतगी यर रात्रपूत हागरा था । यर वनाकमा म ही मथ वर गया ।
 गुरु गावित्तिगह न एता मिथा का मतिव ता निवत किया । एतन ममता का क ई घड़
 म भारी पराजय थी । गरहित क शागत म गुग्घा वित्तिगह क गुता की एता का बरता रता ।
 धन्त म उम पतहन म मयन हुए तथा गरम गरम भीमता म मीम गुग्घाकर एता कर दी ।
 बन्दा बरतगा न धम की रता की किन्तु दुस्वाम एताकर गरी दिया । बन्दा बरतगा क मथ न
 मिथा न पवता पर मरण ली । बन्दा म मिथ ममठन बिजय गया ।

महाराजा रणजोतीसह (१७००-१७२६ ई०) १७६६ म एता म एता पर घोर
 १७०० म धमनगर पर अधिार कर दिया । १७०६ ई० तक बर मगुन म म क धन
 राय का सीमा विस्तृत करने म मयन हा गय । १७०६ म एता एता धमनगर का मति क
 धनुमार धमजा न सधि कर ली त्रिमम मगुन गरी महाराजा क राज्य का गुता माता रियासि
 हुई । महाराजा रणजोतीसह धत्यन्त धार्मिक बलि क बन्ति थे । उर मय म क ई
 गोहा नही कर मकता था । उरती यह अधिताया थी कि व घना काटुन हा क भयन
 विठ्ठलेश्वर की मूर्ति का भट कर । उहाने धन (१७१) मुल्तान (१७१७) कम्पार (१७१६)
 और डरा इस्मादन या (१७२५) का विजय किया । उता जा १७३६ ई० म एता रता गया ।

महाराजा रणजोतीसह क परवान क ई मगुन धार्मिक बन्ति न निवता का मय का मभा
 मकता । धमजा न १७६६ ई० म मिथा का पराजिता कर मिथ मय का धन कर दिया ।

मराठा काल

मराठा श महराष्ट्र क निवासिया क निग प्रयाग किया जाता है । मराठा का रति
 हाम वीरता दूरदर्शिता तथा माहम का इतिहास है । मराठ बम्ब क रति ग-पूर्वी पराग म रता
 थ । व स्वभावत वीर तजस्वी तथा नीति कुशल मान जात है । मराठा मराठा मराठा
 क इतिहास म विशय महत्वपूर्ण है । एम काल म मराठा म ममथ गुग्घा रामनाथ म
 और मत तुकाराम श्रानि महापुरया न धार्मिक जागति का अधिया छटकर धार्मिक भयता क
 माथ माथ स्वधम व स्वशे पर मरन की भावना जागृत की । ए महापुरया न मुग्घा क
 मरयाचारा स नस्ल जनता म सघय की भावना उपन्न की ।

शिवाजी का उदय इमी काल म मराठा का वार नाति निपुण एर दूरदर्शी नेता शिवाजी
 का नतत्व प्राप्त हुआ । उनक तजस्वी व्यक्तिय न मभा मराठा को एक शक्त क नी र मगति
 कर दिया । शिवाजी का जन्म १० अप्रत १६२७ ई० की पूना क निरत शिवनरा दुग म
 हुआ था । उनके पिता शाहजी भामन बीजापुर क मुतान की मना म उच्चार्धितारा थ ।
 शिवाजी की माता जीजाबाई परम धार्मिक हिन्दुत्वामिमानि नारी थी । वह शिवाजी का
 प्रतिनि महाभारत रामायण क पुराणा की वीर गाथाए सुना कर उनम वारता का भाव भरती
 थी । जीजाबाई ने बालक शिवा को गो-ब्राह्मण की रक्षा की शपथ लिला । शिवाजी पर इस्का
 एसा प्रभाव पडा कि उतान वायावस्था म ही एक माहायार कर्त का वध करत गाय की
 रक्षा की ।

जीजासाई शिवाजी को सघपशीन नेता बनाना चाहती थी। इसलिए उन्होंने शिवाजी की शिक्षा दीक्षा का भार कोणदेव नामक एक सुयोग्य ब्राह्मण के हाथ में सौंपा। उन्हें शामन प्रणाली व युद्धकला की शिक्षा दी गई। उसी समय ममथ गुरु रामदाम नामक तजस्वी सन्त धार्मिक प्रचारक व माय-माय हिंदुधर्म में राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने में लगे हुए थे। उन्हें एक ऐसे वीर की आवश्यकता थी जो मराठा को संगठित करके विदेशी आक्रामक मुगल व साम्राज्य से लाहल ब उमें चकनाचूर करके 'हिंदवी साम्राज्य' की स्थापना करे। शिवाजी के रूप में उन्हें एक महान शिष्य मिल गया और शिवाजी को ममथ गुरु के रूप में तजस्वी महापुरुष का नेतृत्व।

शिवाजी ने अपनी कुनदवी तुलजा भवानी व मम्मूख प्रतिमा की —“विदेशी आक्रामक म्लच्छ व शासन का चकनाचूर करने के लिये मत्त सघपशीलरहूया तथा हिंदू साम्राज्य' स्थापित करके ही चन स दठ पाऊंगा।” शिवाजी ने मराठा का एकत्र किया तथा छोटी छोटी टापिया बनाकर नवनी दुर्गों पर आक्रमण करके युद्ध का पूर्वाभाम प्रारम्भ किया। उन्होंने अल्प समय में ही अपनी शक्ति बना ली। मग १६४४ ई० में अचानक एक दिन उन्होंने तारण व दुग पर आक्रमण करके अधिकार कर लिया। श्रीघर ही उन्होंने बीजापुर के दुग रायगढ़-मुरदर और कल्याण पर अपना अधिकार कर लिया। मग १६५६ में बीजापुर के सेनापति अफजल खां ने सधि के बहाने शिवाजी का हत्या का पडयन्त्र रचा किन्तु शिवाजी ने गल मितते समय मत्तक रहकर अफजल खां के वार का अमफन कर दिया व उनकी हत्या कर डाली। मग १६६३ ई० में शिवाजी ने औरंगजेब के सेनापति शाइस्तखा को पराजित किया। औरंगजेब ने जयसिंह व नेतृत्व में सेना भेजी। शिवाजी का उम विशाल सेना के सम्मुख घिर जाना पडा। उन्होंने चतुराई से काम लेकर सधि कर ली। जयसिंह के अनुरोध पर शिवाजी औरंगजेब से मिलन प्रागरा पहुंचे। किन्तु औरंगजेब ने उन्हें दरबार में धोखे से बन्नी बना लिया। शिवाजी चतुराई के साथ मिठाई के एक बडे टाकर में छिपकर जेल से बाहर निकल गये। मुगल हा जान पर उन्होंने पुन अपने सभी किता पर अधिकार कर लिया। १६७४ ई० में उनका राज्याभिषेक किया गया और उन्हें 'छत्रपति' की उपाधि से विभूषित किया गया।

शिवाजी अत्यंत धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय तथा वीर शासक थे। छापामार युद्ध-नीति के कारण उन्होंने मुगल की बडी-बडी सेनापति को करारा मत्त दी। शिवाजी अपने धर्मशास्त्रा का निष्ठा के साथ पालन करते थे। इसलिए उन्होंने अपने सन्तिका का शत्रुभा की स्त्रिया में भी माता की भावना रखन का आदेश दिया था। निधना व कृपका के हित के लिए उन्होंने जागीरदारों प्रया ममाप्त कर दी थी। १३ अप्रैल १६८० ई० का शिवाजी का दहान्त हो गया।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

सम्भाजी (१६८०-८६ ई०) शिवाजी का पुत्र सम्भाजी एक अग्रगण्य और विलासी व्यक्ति था। पिता का मृत्यु के पश्चात् जद वह गद्दी पर बठा ता मराठा का संगठन कमजोर पड गया। शिवाजी की मृत्यु के बाद औरंगजेब का ध्यान मराठा की ओर पुन आकृष्ट हुआ। उसने सम्भाजी पर आक्रमण कर लिया। सम्भाजी और उसका पशवा पकड गये। सम्भाजी में आखिर था तो शिवाजी का ही रक्त। अत उमका स्वाभिमान जाग उठा और उमने मुगल को मराठा का काय बनाने में डरार कर दिया। बान्शाह की आना से सम्भाजी की निममता पूर्वक हत्या कर दी गई।

राजाराम (१६८६-१७०० ई०) सम्भाजी की हत्या के बाद उमर छान् भाई राजा राम ने अपने का राजा घोषित किया। परन्तु वह भी कोई वाय्य शासन नहीं था। मराठा मरठारा ने उम जिजी के निन्दन भजन किया और मुगल म युद्ध जारी रखा। मन् १७०० ई० म राजाराम की मृत्यु हा गई।

ताराबाई (१७००-१७०८ ई०) राजाराम के बाद उमकी विधवा राना ताराबाई ने अपने चार वर्षीय पुत्र का गद्दी पर बठाकर शासन भार अपने हाथो म ले लिया। उमके समय म मराठा ने बुरहानपुर मरत, भडोच पर आक्रमण किया।

शाहूजी (१७०८-१६ ई०) १७०८ ई० म सम्भाजी का पुत्र शाहूजी गद्दा पर बग। उम समय वह मुगला की कर्म म था। औरंगजेब की मृत्यु पर बहादुरशाह ने उम रिहा कर लिया। उसने मनारा का अपनी राजधानी बनाया। शाहूजी भी एक अयोग्य शासन था। १७१४ ई० म राज्य पेशवाभा के हाथ आ गया।

पेशवाओं का उत्थान

शिवाजी के उत्तराधिकारियों के अयोग्य हान के कारण पेशवाओं की शक्ति बढ़ गई। शाहूजी ने मत्तारु हान के बाद बानाजी विश्वनाथ का अपना पेशवा बना लिया और स्वयं निर्जित हानर भाग विलास म मग रहने लगा। पेशवा बानाजी विश्वनाथ एक वाय्य राजनीतिज्ञ था। उसने मय भाइया की महायता से मुगल बागशाह फरखसियर की मरवा लिया। मय भाइया ने जो प्रयोग शिवाजी के समय मराठा से जीत थे वे पुन पेशवा की ताठ दिया।

बाजीराव प्रथम (१७००-६० ई०) पेशवाओं के पतन अधिवार के कारण बालाजी बाजीराव की मृत्यु पर उसका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना। उमका यह हार्तिक आकांक्षा था कि हिंदू राज्य का क्षा अटक से वृष्णा नदी तक फहरा उठे। उमने १७०४ म मानवा पर अधिकार किया। १७०८ ई० म उसने निजाम का पराजित किया। उमने गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की और बुंदलखंड जीतकर बुंदला का दे दिया। उमने मुगल और निजाम की सयुक्त सेना को १७३८ ई० म पराजित किया जिससे उम ३० लाख रुपया हर्जाना और मालवा तथा नमना और चम्बल के मध्य की भूमि पर अधिकार प्राप्त हुआ। १७३६ ई० म उमने पुतगातिघा पर हमला किया और उनसे कुछ क्षत्र छान लिया। उमने मराठा मघ का स्थापना का। १७६० ई० म उमका निधन हो गया।

बालाजी बाजीराव (१७४०-६१ ई०) बाजीराव का मृत्यु पर उसका पुत्र बानाजी बाजीराव पेशवा बना। उस समय उसकी आयु १६ वर्ष की थी। १७६८ म शाहूजी का मृत्यु पर वह स्वयं राजा बन बठा और अपनी राजधानी पूना म बनाई। उमने उगीमा पर अधिकार कर लिया। बानाजी बाजीराव के चचेरे भाई मन्गेश्वरराव ने १७५८ म मरवाबाद के निजाम का उगीर म पराजित किया जिससे मराठा को बीजापुर का बहूत सा प्रश एव बुरहानपुर के असीरण के किने प्राप्त हुए। मराठो ने अब नगभन सार भारत से चथे वनून की। परन्तु उनकी १७०१ ई० म विशेषी आक्रमणकारी घाली के हाथो भयकर पराजय हुई। उम युद्ध ने मराठा का भारत म हिंदू साम्राज्य स्थापित करन का स्वप्न मग के लिए ध्वस्त कर लिया। उम पराजय से बालाजी बाजीराव के मृत्यु पर गहरा आघात लगा और १७६१ ई० म उनकी मृत्यु हा गई।

माधवराव (१७६१-७२ ई०) माधवराव पेशवा १६ वर्ष का आयु म गद्दी पर बठा। पानावन की पराजय म मरवाबाद का निजाम ममूर का मरठानी के अजेज मराठा को उमने

समय कर अपनी अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे थे। परन्तु माधवराव ने वही युद्ध और वही नीति से सबको अपने वश में कर लिया। माधवराव ने वे सभी प्रदेश पुनः हस्तगत कर लिये जो पानीपत के युद्ध से पूर्व मराठों के पास थे। माधवराव ने जाटों, राजपूतों और रूहेलों से भी चौथ बमूल की। १७७७ में उसने मुगल गद्दी के उत्तराधिकारी शाह आलम का देहली में सना भेजकर गद्दी पर बठाया। १७७२ ई० में २८ वर्ष की आयु में माधवराव की मृत्यु हो गई।

मराठों का पतन

माधवराव के कई पुत्र न थे। इन उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके भाई नारायणराव का पशवा बनाया गया। परन्तु उनका चाचा नारायण ने १७७३ में पडयन्त्र द्वारा उनको हत्या करा दी। मराठा सरदारों ने नारायण को पेशवा मानने में इनकार कर दिया और १२ व्यक्तियों की एक शासनकृत्य समिति बनाई जिन्होंने शासन की वागडार संभाल ली।

बाजीराव द्वितीय (१७६६-१८१८ ई०) माधवराव द्वितीय भी निःसन्तान हो मर गया। इस कारण पेशवा पद के लिए फिर झगडा उत्पन्न हो गया। नाना पडनवीस ने रघुनाथराव को पुत्र बाजीराव का पशवा बना लिया लेकिन वह स्वयं सर्वोत्तम बना रहा और टीपू सुल्तान का पराजित किया। १७६५ में उसने हैदराबाद के निजाम को पराजित किया। १७६४ ई० में मराठा के प्रसिद्ध सरदार महादजी सिंधिया की मृत्यु हो गई। म० १८०० ई० में नाना पडनवीस भी मृत्यु-ग्रस्त हो गये। नाना पडनवीस की मृत्यु के पश्चात् छोटे छोटे सरदारों की फूट को कोई न रोक सका और मराठा की शक्ति भी समाप्त हो गई। अंत में पेशवा के पद के लिए झगडा उठ खडा हुआ। जसवंतराव होल्कर ने अमृतराव को पेशवा घोषित किया। बाजीराव द्वितीय ने पूना में भागकर अंग्रेजों की शरण ली। अंग्रेजों ने उसके साथ सन् १८०३ ई० में बसीन की संधि की और उस पुत्र पेशवा बना दिया। परन्तु उस पर अंग्रेजों का प्रभुत्व छा गया। इस प्रभुत्व से मुक्त होने के लिए उनको अंग्रेजों से १८१७ ई० में युद्ध करना पडा। युद्ध में उसकी हार हुई और अंग्रेजों ने मराठा राज्य छीन लिया। पेशवा का ८ साल की वार्षिक पेंशन और छोटी सी जागीर दे दी गई। इस प्रकार मराठा के इतिहास का अंत हुआ गया।

अंग्रेजों का अधिकार

अंग्रेजों ने भारत में व्यापार करने की छान लकर ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना करने पर जमाये और धीरे धीरे उन्हें देश पर अपना अधिकार जमा लिया।

ब्रिटेन ने भारत पर आधिपत्य करने में बाद क्लाइव का बंगाल के शासन का प्रभुत्व बनाया। म० १७५७ ई० में क्लाइव ने प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला को पराजित कर दिया। इस विजय के क्लाइव को भारत में ब्रिटिश राज्य के सम्स्थापक के रूप में चर्चित कर दिया।

भारत के गवर्नर जनरल

ब्रिटेन ने भारत में अपना पहला गवर्नर जनरल थॉमस हॉस्टिज (१७७४-१७८५ ई०) को नियुक्त किया। उसने बंगाल, अवध और निजाम का ब्रिटिश शासन में मिलाया। थॉमस हॉस्टिज के बाद लॉड डलहौजी (१८४८-१८५६ ई०) गवर्नर जनरल बना। उसने पंजाब, दक्षिणी बंगाल का ब्रिटिश शासन में मिलाया। उसके समय में ही भारत में रेलवे लाइन बननी प्रारम्भ हुई, डाक-तार घर खोल गये।

लॉड डलहौजी के बाद लॉड कैनिंग (१८५६-५८ ई०) गवर्नर जनरल बना। भारत की स्वाधीनता के लिए प्रथम सद्योग १८५७ में इसी के समय में प्रारम्भ हुआ। १८५७ के

आन्दोलन के विरुद्ध हो जाने पर भारत का सामान्य गवर्नर की नियुक्ति का प्रावधान किया गया।
यह मन्त्रालय जनरल को वायसराय का मामला दिया गया।

वायसराय

साइडर (१८५८-१८६३ ई०) ने भारत में ब्रिटिश शासन का पुनर्स्थापन किया।
साइडर (१८८०-१८८४ ई०) ने भागई गमायागवा कायानु रद्द किया। स्वतंत्र
शासन कानून बनाया। शांति का प्रसार की घोर धारा दिया तथा इन्हीं मन्त्रालय की सेवा
के लिए फैसली कानून बनाया।

साइडर (१८६६-१८७५ ई०) ने भारत का पराजित करने के उद्देश्य का उद्देश्य
परराष्ट्र नीति का भार मीठा। उमने बहाइला द्वाारा की रक्षा के लिए बहाइली सेवा किया
की। १८७५ ई० में उमने बहाइला को विभक्त किया। जब कि मन्त्रालय विभाजन के विरोध में
जनरोप भड़काता १८७७ ई० में उस रद्द कर दिया गया।

साइडर (१८७५-१८७७ ई०) ने मुगलशासन के लिए पुनर्स्थापित प्रशासकी
मान्य करने मुमकिनता में पुनर्स्थापित की जाय किन्तु कारण पाकिस्तान का जोरना
बनी।

साइडर (१८७७-१८७९ ई०) जात्र पंचम के राज्याभिषेक के समय शांति में
जशन मनाया गया तथा साइडर की शोभा यात्रा विराती के मन्त्रालय की घोर में शोभा
यात्रा पर आतिथ्यकारियों ने बम फेंक दिया। साइडर शोभायात्रा में बच गया।

साइडर (१८७९-१८८० ई०) ने इण्डिया एक्ट १८७९ कायाया। रीज
एक्ट माशुल ला और अमहयाग आन्दोलन लाइ धम्मपाइ के समय की मुख्य घटनाएं हैं।

साइडर (१८८१-८६ ई०) के समय में गांधीजी के नन्धु मन्त्रालय घान के
की भारत यात्रा का बहिष्कार किया गया। मन्त्रालय कानून भंग आन्दोलन का तथा विदेशी मान्य
के बहिष्कार का आन्दोलन भी उसी के समय में चला।

साइडर (१८८६-१८९० ई०) गांधीजी के नन्धु मन्त्रालय का प्रथम में भारत के
निये पुनः स्वराज्य घोषित किया तो नमक कानून भंग के साथ-साथ सामूहिक कानून भंग आन्दोलन
ने जोर पकड़ लिया। गांधीजी ने दांडी में नमक कानून भंग किया। माघ १८९१ ई० में साइडर
इरविन ने आन्दोलन की आपकता देखकर गांधीजी से समझौता किया तब जाकर यह आन्दोलन
समाप्त हुआ।

साइडर (१८९१-१८९६ ई०) के समय १८९१ ई० में दूधरा व लोमरी
गोलमज काफस हुई। उसी के आदेश पर कांग्रेस का प्रथम घोषित किया गया। रज्ज मन्त्र
डानलड के साम्प्रदायिक नियम की घोषणा के विरोध में गांधीजी ने आमरण अनशन किया।

साइडर (१८९६-९९ ई०) ने प्राता में इण्डिया एक्ट १८९५ ई० लागू
कराया तथा चुनाव होने पर देश के ८ प्रांतों में कांग्रेसी मन्त्रिमंडल बने। साइडर लिनलियगो
द्वारा अडगे व अमहयाग की नीति अपनाये जाने पर १८९६ ई० में कांग्रेस मन्त्रिमण्डल ने त्यागपत्र
दे दिया। ८ अगस्त १८९९ ई० को कांग्रेस ने बम्बई में भारत छोड़ो आन्दोलन का सूत्रपात
किया तो साइडर लिनलियगो ने दमनचक्र प्रारम्भ करके भारतीय जनता पर अत्याचार कराये।

साइडर (१८९९-४७ ई०) के समय में १६ दिसम्बर १८९६ ई० को सविधान
परिषद् की पहली बैठक डा० राजेन्द्रप्रसाद की अध्यक्षता में हुई। मुस्लिम लीग ने बैठक का

प्रहिकार किया तथा भारत विभाजन की माग की। जिना आदि ने स्पष्ट घोषणा की कि मुसलमान अलग राष्ट्र है तथा वह किसी भी कीमत पर हिन्दुओं के साथ रहने को तैयार नहीं है। इसी काल में आजाद हिन्द फौज के तीन जनरल पर लालकिले में मुकदमा चला।

लाइ माउण्टबेटन (१३ मार्च १९४७ ई० से १४ अगस्त १९४७ ई०) ३ जून १९४७ ई० को भारत विभाजन की घोषणा की गई। १५ जुलाई को ब्रिटिश पार्लियामेंट ने इंडिया इंडिपेंडेंट एक्ट पास कर दिया। १५ अगस्त १९४७ ई० को विधिवत भारत को विभक्त करने पाकिस्तान की घोषणा कर दी गई।

भारत संघ के वैधानिक गवर्नर जनरल

लाइ माउण्टबेटन (१५ अगस्त ४७ से २० जून ४८ तक) श्री चक्रवर्ती राजगोपाला चारी (२१ जून ४८ से २५ जनवरी ५० तक)।

भारत गणराज्य के राष्ट्रपति

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद चुने गये। २६ जनवरी १९५० ई० से १९६२ ई० तक वे इस पद पर आसीन रहे। उनके बाद उपराष्ट्रपति डा० सबपल्ली राधाकृष्णन मई १९६२ में राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। उन्होंने अप्रैल १९६७ तक इस पद का प्रतिष्ठित किया। अप्रैल १९६७ ई० में डा० जॉर्जवर्सेन राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। ३ मई १९६९ ई० को उनका अचानक निधन हो गया। भारत के चौथे राष्ट्रपति डा० बी० पी० गिरि निर्वाचित हुए।

दिन भर ताजे फूलों के सुगंध का अनुभव लो

मराठा मिलन

मराठा सुगन्ध

मराठा सेट

मराठा मल्लिका

मराठा अमीना

मराठा दरवार एव मेट्रो दरवार बत्ती

शाखा

मेट्रो अगरबत्ती कंपनी

मेट्रो मेनशन, पुरानी हवेली रोड, हैदराबाद-२

टेली-अगरबत्ती

फोन-४२८६६, ४२९/५०२

हैड आफिस मंसूर (बायजी) अगरबत्ती वर्क्स

बा० न० २५, जलगांव (महाराष्ट्र)

EXCUSE ME

A lacunae in your Sales Promotion Drive ?

Assam Meghalaya and Border Hill States are waking up to join the national current of industrial and economic growth Planning Commission is spending crores of rupees—but what is your share?

Till such time it becomes industrialised it will bank upon manufactures of upcountry South Western India and Bengal etc Also the urban population engaged in industrial stimulation in far off corners will turn to the few rail centres for their purchases Travelling entrepreneurs and the white collar intelligentsia will also be prejudiced by displays on stations

N F Railway advertisement services undertake to offer to you sites at Station platforms and circulation area for your hoardings sign boards and even posters—or the queen of display Plastic—Glass glow—sign or/and neon signs

WE SPECIALLY SUGGEST THE FOLLOWING STATIONS

- Gauhati** Gate way to Shillong the seat of North Eastern Council and Meghalaya Capital of Assam University Medical College and Oil Refinery Kamakhya Temple population—4 lakh Rail passengers 5000 daily Shopping centre for Assam Bhutan Arunachal & Meghalaya Biggest town in North Eastern Frontiers defence centre
- Tinsukia** Major town in Upper Assam Shopping centre for Tea Oil & Coal and Plywood World Railway Junction Second biggest distributing centre of upper Assam
- Lumding** Gate way to Cachar Railway Junction
- Siliguri & New Jalpaiguri** Gate way to and shopping centre for Nepal Bhutan & Sikkim and North Bengal Tea Areas Army Headquarters serves Darjeeling Railway Junction
- Katihar** Biggest Railway Junction in north eastern India
- Dibrugarh** Nowgong Jorhat Tezpur District Headquarters
- Dharmanagar** Gate way to Tripura
- Badarpur & Karimganj**—Main towns of Cachar

In 1972 73 we displayed 10 000 posters 500 plates 100 hoardings and 10 glow-signs only for one and half lakh rupees Gwalior Suting alone spent Rs 15 000/ on N F Railway Stations—How much did you—by the way

Our rates are the same as in your areas A postcard to undersigned will bring you the rate card too

We humbly suggest that ignoring the sites of N F Railway while drawing up your promotion drives—will perhaps leave a lacunae

CHIEF PUBLIC RELATIONS OFFICER

NORTH EAST FRONTIER RAILWAY

GAUHATI—II ASSAM

PIN 781011

स्वाधीनता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास

भारत पर सबसे पहले मुसलमानों ने आक्रमण किया तथा उन आक्रमणों का भारतीय जनता ने डटकर प्रतिहार किया। किन्तु भारत के राजा-महाराजाओं की आपसी फूट का आक्रमणों का लाभ उठाया और उनका शासन देश पर स्थापित हो गया।

अकबर के शासनकाल में जहाँ महाराजा प्रताप देश की स्वाधीनता के लिए सघन वरत रहे वहाँ औरंगजेब आदि मुस्लिम बादशाहों के शासन के विरुद्ध एक और छत्रपति शिवाजी न ता दूसरी ओर सिख नेता गुरु गोबिन्दसिंह, बदा बरागी आदि ने सघन किया। मुगल शासकों से देश का स्वाधीन कराने के लिए देश में प्रतिक्षण स्वाधीनता संग्राम चलता ही रहा। भारतीय रणवाकुरों ने विदेशी आक्राता शासकों को चन से कल्पि नहीं बठन दिया।

मुगलों के शासनकाल में ही अंग्रेजों ने भारत में व्यापार की आड में अपने पाव जमाने प्रारम्भ किये। उन्होंने व्यापारिक सुविधा के नाम पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की। अंग्रेज कम्पनी के नाम पर छोटे छोटे राजाओं में फूट डानकर उन्हें लडाते रहे व सम्पूर्ण देश पर शासन करने का पड्यत्न रचते रहे। अन्त में चालाक अंग्रेज आपसी फूट का लाभ उठाने में सफल हुए और उन्होंने भारत पर कब्जा कर लिया।

१८५७ का स्वातन्त्र्य समर

देश की बागडार छत्र-बल से अपने हाथों में लेते ही देश का सदब के लिए गुलाम बनाये रखने के लिए अंग्रेजों ने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन किया तथा 'फूट डालो और राज्य करो' का सूत्र अपनाकर देश की जनता का लडाने का पड्यत्न रचा। स्थान-स्थान पर गोहत्या को प्रोत्साहन देकर हिंदू मुस्लिम झगडे प्रारम्भ करा दिये गये।

१८५१ ई० में जब बाजीराव पेशवा का देहात हुआ तो अंग्रेजों ने उनके दत्तक पुत्र नाना को गद्दी पर बठान से इनकार कर दिया। १८५६ ई० में झासी के महाराजा मगाधर-राव का देहात हुआ तो उनके दत्तक पुत्र लामोदर के राज्याभिषेक में भी अंग्रेजों ने बाधा डाली। फिर क्या था सुसुप्त चिनगारी भडक उठी। झासी की महारानी लक्ष्मीबाई ने उन्धीप किया— 'मेरी झासी, फिरगी को नहीं दूगी। महारानी लक्ष्मीबाई रणचडी का रूप धारण करके रणागण में कूद पडी और अंग्रेजों से प्रबल सघन किया। उधर नाना साहब पेशवा आदि ने स्वाधीनता संग्राम की तयारिया प्रारम्भ कर दी। चारा और अंग्रेज शासकों के विरुद्ध वातावरण बनने लगा।

प्रथम आहुति

१८५७ के स्वातन्त्र्य समर के महान् यज्ञ म पहली आहुति दी युवा सनिर वीर मगल पाण्डे ने । अंग्रेज हिंदू सनिका का घम अष्ट करने की दष्टि स कारतूसा म गाय की चर्बी लगाते थे । जैसे ही सनिको को यह पता चला कि अंग्रेज उनका घम अष्ट करने पर तुले हुए हैं कि उनके अदर रोष व क्षाभ की भावना व्याप्त हो गयी । एक दिन अचानक एक सनिक मगन पाण्डे ने सेना की परेड म खुला विद्रोह कर लिया और घोषणा की— गोमाता की चर्बी स बने कारतूस को मुह लगाकर अपना घम अष्ट कदापि नही करेंगे । मगल पाण्डे स जब राष्ट्रपन रख देने के लिए कहा गया तो उस तेजस्वी वीर सेनानी ने अंग्रेज सार्जेंट पर आक्रमण करके उसे जान से मार डाला । मगल पांडे को गिरफ्तार कर लिया गया । सनिक अदालत ने उस मौन की सजा दी और इस प्रकार १८५७ ई० के स्वातन्त्र्य युद्ध के महान यज्ञ म पहली आहुति उम वीर ने दी ।

वीर मगल पांडे का बलिदान रग लाया और सना म विद्रोह की भावना फलती गयी । मगल पांडे के बलिदान के बाद ६ मई १८५७ ई० को मेरठ छावनी के ६० घुड़मवार सनिका ने गाय की चर्बी लगे कारतूसो को छूने तक से इकार कर लिया । परिणामस्वरूप उन्हें बंदी बना लिया गया । सनिक अदालत ने उन्हें दम दस बष की सजाए सुना दी ।

भारतीय सिपाहिया न संगठित होकर त्राति का विगुल बना लिया । उन्हान १० मई का मेरठ के तोपखाने व शस्त्रागार पर आक्रमण करके उस पर अधिकार कर लिया । सनिका ने मेरठ स दिल्ली की ओर कूच कर दिया और १५ मई को दिल्ली पहुंच कर अंग्रेजो स जमकर लोहा लिया व उनके पर उखाड़ दिये । एक बार पुन बहादुरशाह जफर को दिल्ली के तख्त पर बठा दिया गया ।

मेरठ क बाद बानपुर इलाहाबाद शामी लखनऊ बरेली अलीगढ़ आदि म भी अंग्रेजो का कत्लेआम प्रारम्भ हो गया । ३१ मई तक समस्त उत्तर प्रदेश त्राति की ज्वाला मे धधकने लगा । बानपुर म नाना साहब ने अंग्रेजो का खदेडकर शासन पर अधिकार कर लिया । तात्या टापे आदि ने उनके साथ बघे से कधा मिलाकर सघष किया । उधर झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई के अंग्रेजो से युद्ध करत समय बलिदान हो जाने से समस्त देश म नई चेतना उत्पन्न हुई । दूसरी ओर बिहार के वीर राजा कुवर्सिह और नाना साहब तात्या टापे आदि ने फिरंगिया के विरुद्ध ननत्व करके जनता म स्वाधीनता की भावनाए भरी । स्थान-स्थान पर अंग्रेजो का कत्ल आम प्रारम्भ कर लिया । अंग्रेजो न दमन व अत्याचार का सहारा लेकर स्वाधीनता की इस चिनगारी को बुझाने का भरमब प्रयास किया किन्तु देश के कोने-कोने से निकालो फिरंगी को की आवाज और भी तेजी स गूज उठी । कुछ भारतीय सनिका द्वारा ही अंग्रेजो को सहयोग दिये जाने के परिणामस्वरूप समस्त भारत पर पुन अंग्रेजो का साम्राज्य स्थापित हो गया । अंग्रेज इस बार त्राति को दबाने म सफल हो गये । स्थान स्थान पर त्रातिकारिया को सामूहिक रूप से फासी पर लटकाया गया तापा के मुह से बाघकर उढाया गया ।

फूफों का बलिदान

सन १८७२ ई० म नामधारी मिखा के नेता कूका सन्गुठ रामसिंह ने देश से अंग्रेजी साम्राज्य को उखाडने के लिए अभियान प्रारम्भ किया । असहयोग आंदोलन का सूत्रपात भी कूका न ही किया । स्वतंत्रता का प्रयाग करके उहाने जनता म राष्ट्रीय भावनाए उत्पन्न

की। सरकार कूको के इस अभियान से बोखला उठी। उसने उन पर अनेक प्रतिबंध लगा दिये। मलेरकोटला में कुछ बसाइयां ने गोहत्या कर दी तो धर्माभिमानी कूका ने यह सहन नहीं किया तथा उन्होंने बसाइयों का वध कर डाला। अंग्रेजों को मौका मिल गया और उन्होंने अनेक कूका वीरों को फाँसी पर लटवा दिया। ६८ कूका को तापा के मुह से बाधकर उड़ा दिया गया। सदगुरु रामसिंह को जेल में डालकर उन पर अमानवीय प्रत्याचार किये गये।

कांग्रेस की स्थापना

सन १८८५ ई० में मि० ह्यूम नामक अंग्रेज ने कांग्रेस की स्थापना की। २७ दिसम्बर १८८५ ई० को बम्बई में कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ। कुछ ही समय में कांग्रेस में देश के अनेक प्रमुख नेता शामिल हो गये। एडिन मदनमोहन मालवीय लाला लाजपतराय, गणपल कृष्ण गोखले लोकमाय तिलक विपिनचन्द्र पाल, महात्मा गांधी भ्रजमल खा आदि न जस ही कांग्रेस में प्रवेश किया वैसे ही कांग्रेस ने राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया। अंग्रेजों ने बंगाल का बटवारा किया तो कांग्रेस ने उसका प्रबल विरोध किया। कुछ ही समय में कांग्रेस में दो दल बन गए एक का नाम था 'गरम दल' और दूसरे का 'नरम-दल'। गरम दल में लालमाय तिलक, विपिनचन्द्र पाल एवं लाला लाजपतराय आदि थे। नरम दल में मातीराल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, दादाभाई नौरोजी, गणपलकृष्ण गोखले आदि थे। लोकमाय तिलक ने 'बिसरी' के माध्यम में जनता में स्वाधीनता की भावनाएँ उत्पन्न करने का अभियान चलाया। दूसरी ओर पंजाब में लाला लाजपतराय ने अपने लोगों के माध्यम से जनता में स्वाधीनता की चिनगारी प्रज्वलित की।

बग भग का विरोध करने के लिए बंगाल से स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। कांग्रेस के गरमदलीय नेताओं की अपील पर जनता ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार प्रारम्भ कर दिया। बंगाल में प्रारम्भ हुआ यह स्वदेशी आन्दोलन कुछ ही समय में समस्त देश में फैल गया। उधर दूसरी ओर पंजाब में अंग्रेजों ने दमनचक्र को और बढ़ा कर दिया। लाला लाजपतराय ने दमनकारी प्रवृत्ति का खुलकर विरोध किया। लालाजी के शीर्षक की भाषणा व लेखा ने न केवल पंजाब में अपितु सम्पूर्ण देश में खूबसली मचा दी। अतः सरकार ने उन्हें बन्दी बना दिया। उधर महाराष्ट्र में श्री लोकमाय तिलक का बन्दी बना कर माडल जेल में नजरबंद कर दिया गया।

गांधीजी का सत्याग्रह

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने गारा द्वारा काला पर विशेषकर भारतीयों के साथ, किये जाने वाले भेदभाव व प्रत्याचारा के विरुद्ध आवाज उठाई। गारा ने उन पर आक्रमण भी किये किन्तु गांधीजी ने अहिंसात्मक तरीके से आन्दोलन जारी रखा। उन्हें बन्दी बनाया गया। जेल से छूटते ही उन्होंने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। सत्याग्रह की व्यापकता से अंग्रेजों का झुकना पड़ा। सत्याग्रह की सफलता के बाद गांधीजी अफ्रीका से भारत वापस आ गये। श्री गणपलकृष्ण गोखले की प्रेरणा से वे कांग्रेस में शामिल हो गये। गांधीजी ने भारत की जनता को अफ्रीका में अंग्रेजों द्वारा की गई ज्यादतियाँ व भेदभाव की नीति से अवगत कराया।

प्रथम महायुद्ध

सन १९१४ ई० में यूरोप में युद्ध प्रारम्भ हो गया। अंग्रेज भी उस युद्ध में कूद पड़े। कांग्रेस के नरम दल के नेताओं ने अंग्रेजों का युद्ध में सहायता देने की धारणा की तो गरम दल

वे नेताओं ने इगना बड़ा विरोध किया। लाला लाजपत राय ने स्पष्ट घोषणा की कि 'धरम हत्या के शत्रु हैं, अतः हमें उनकी जिंजी भी प्रकार की सहायता नहीं करनी चाहिये।' देश का प्रतिनिधि जनता की यही आकांक्षा थी कि जिंजी भी प्रकार से अंग्रेजों की पराजय होनी चाहिये जिंजी उनकी शक्ति क्षीण हो और वे देश से भगाये जा सकें।

विदेशों में क्रान्ति की ज्वाला

इधर लोकमान्य तिलक आदि देश में जनता को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह के लिए प्रेरित कर रहे थे उधर श्री तिलक की प्रेरणा से महाराष्ट्रीय युवा विद्यार्थी दामोदर सावरकर गंगा पहुँचकर सशस्त्र आति की ज्वाला घघराने में लगाने लगे।

इंग्लैंड में भारतीय देशभक्त श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा ने 'इण्डिया हाउस' का भारतीय आतिकारिया का एक केंद्र बनाया हुआ था। सावरकर भी इण्डिया हाउस में ही रहकर युवाओं का संगठन कर रहे थे। लन्दन में भाई परमानन्द मेनानाथ बापट मन्तानाल बीगल और राम बिहारी बोस लाला हरदयाल आदि देश की स्वाधीनता के लिए प्रयत्नशील थे। उन्होंने श्री इण्डिया सोसायटी नामक संस्था खोल रखी थी।

सबसे पहले इंग्लैंड में बीर सावरकर लिखित '१८५७ का भारतीय स्वाधीनता गमक प्रथम ने छलबली मचायी। अंग्रेजों ने इस प्रथम को प्रशंसित होने से पूरा ही जण कर लिया। सावरकर का प्रेरणा पर १ जुलाई १९०६ ई० को लन्दन में भारतीय युवाओं की मन्तानाल बीगल ने सर वजन वायला को भरी सभा में गोली से उड़ा लिया तथा गुजरकर अपना वायु के गमक में वक्तव्य दिया ता समस्त विश्व का ध्यान भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की ओर आकर्षित हुआ। अंग्रेज सावरकर को बन्दी बनाने के लिये तत्पर हो गये।

इधर १६ अप्रैल १९०६ ई० का नासिक के अंग्रेज जिलाधीश मि० जयका का १६ वर्षीय बालक का हेर ने गोली से भून डाला। इस कांड के सम्बन्ध में सावरकर ने यह भाई श्री गणेश दामोदर सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया। १३ मार्च १९१० ई० का लन्दन के रेलवे स्टेशन पर श्री सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया। बन्दी बनकर भारत लाये जाते समय सावरकर जलयान से समुद्र में बूढ़ पड़ किन्तु उन्हें फास के बिना पर पुनः पकड़ लिया गया और भारत लाकर दा आज़म कारावासा का दण्ड देकर अण्डमान भेज दिया गया। बीर सावरकर ने पूरे १३ वर्षों तक अण्डमान में यातनाएँ सहनीं थीं। इसी काल में रासबिहारी बोस लाला हरदयाल राजा महेंद्रप्रताप सरकार अजीतसिंह आदि ने विदेशों में अन्तर्पार्टी के माध्यम से सशस्त्र आति द्वारा देश को स्वाधीन कराने का अभियान चलाया।

देश की अधिवाश जनताका यह विश्वास बन चुका था कि अत्याचारी व साम्राज्यवादी अंग्रेजों को सशस्त्र आति से ही देश से खदेड़ा जा सकता है। इसलिए स्थान-स्थान पर पुनः सशस्त्र आतिकारियों के संगठन बने तथा वहाँ खुदीराम बोस ने ता बही हेमू मालानी ने और वहीं बबर अचलिया ने अंग्रेजों की हत्या की। युवाओं में शहीद होने की होड लग गई।

लाड हार्डिंग पर बम

राजधानी दिल्ली में लाड हार्डिंग की शोभा यात्रा का आयोजन था। २३ दिसम्बर १९१२ ई० को जस ही लाड की शोभा-यात्रा चालनी चौक से गुजर रही थी कि उस पर एक बम फेंका गया। लाड तो बच गये किन्तु उनके पीछे बठा अग्ररक्षक मारा गया। इस घटना से समस्त विश्व का ध्यान भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की ओर आकर्षित हुआ। दिल्ली पडयन्त

केस के नाम से १३ प्रांतिकाख्या पर केस चनाया गया। अखण्डबिहारी, मास्टर अमीरचंद भाई बालमुकुंद और चमन्तकुमार को ता फासी पर लटका दिया गया बाकी ६ को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। श्री रामबिहारी बोस पर भी अभियाग था, किन्तु वे पुलिस के हाथ नहीं आये तथा विदेश चले गये। उधर लाना हृदयान के नतत्व म विदेशा म अमेरिका म बसे भारतीया न गदर पार्टी की स्थापना की। भारत की स्वाधीनता के प्रचार के लिए अमेरिका से 'गदर' नामक एक पत्र भी निकाला गया। स्थान-स्थान पर प्रवामी भारतीया ने चंदा एकत्रित किया तथा प्रातिकारी योजना के लिए भारी मात्रा म धन भेंट किया। गदर पार्टी न जहा विदेशा से भारत को गुप्त रूप मे शस्त्र भिजवाये वहा वम आदि बाने का प्रशिक्षण देकर युवका का भारत भेजा गया। भारत म प्राति की पुन योजना बनाई गई। काशी का बन्द बनाकर प्रातिकाख्या ने अपनी गतिविधिया प्रारम्भ की। अनेक प्रातिकाख्या ने गुप्त रूप से सैनिक छावनिया म पहुचकर सैनिका मे सम्पर्क स्थापित किया तथा उनम दशभक्ति व स्वाधीनता की भावनाएं जागत की। मरठा युवक श्री विष्णु गणेश पिंगले न अमरीका मे भारत आकर इन योजना मे भाग लिया। इसी बीच कुछ सरकारी भेदिये प्रातिकाख्या म आ मिले और एक दिन उन्हाने श्री पिंगले को मरठ छावनी म कुछ वमा क साथ रगे हाया पकडवा दिया। पुलिस ने भेदिये के आघार पर अनेक स्थाना पर छाप मारे तथा अनेक प्रातिकाख्या का गिरफ्तार कर लिया। इस प्रकार से एक बार पुन प्राति की योजना विफल हु गई। सरकार ने पिंगले व अय प्राति-वीरा का फासी देकर आनेक फताउ का पूर प्रयास किया।

काले कानून का विरोध

प्रातिकाखी आंदोलन का दवान के बाद अग्रजा ने सन् १९१८ ई० म रोलट एक्ट बना कर जनता का और भी अधिन बेडिया म जकड लिया। कांग्रेस के गरम दल के नेताआ ने इस काल कानून का डटकर विरोध किया। इसी बीच श्री लाकमाय तिलक न उद्घोष किया— स्वाधीनता हमारा जन्मदिन अधिकार है तथा उम प्राप्त करके ही दम लगे। लाकमाय तिलक के इस उदघाप न समस्त देश म नई चेतना व जागृति उत्पन्न कर दी। उधर गांधीजी न सत्याग्रह आन्दान छेड दिया। जगह-जगह हडतालें हुइ विदेशी माल की हाली जलाई गई।

जलियावाला कांड

रोलट एक्ट का समस्त देश मे भारी विरोध किया गया। १३ अप्रैल १९१९ ई० को अमृतसर म बैसाखी ने दिन जलियावाला बाग म एक सभा का आयोजन किया गया। सभा म काले कानून को एक कलक बताया गया। इसी बीच अग्नेज अधिवारी डायर ने जलियावाला बाग का सशस्त्र सनना द्वारा चारा और स घिरवा दिया। जलियावाला बाग के द्वार पर मशीनगने व राइफने तगवा दी गयी। डायर ने सभा म शात बंठे श्रोताआ पर गालिया की धौंठार प्रारम्भ करा दी। छोटे छोट बच्चो, वडा व महिनाआ तक का बुरी तरह से गालिया से भून डाला गया। जब निहत्थे लोग ने बाग के पास की णव गली म शरण लेने का प्रयास किया तो मारा ने उनका पीछा करके उनकी निममतापूर्वक हत्या कर डाली। इस हत्याकांड में सक्डा जानें गयीं तथा सक्डा का पायन होना पडा। जलियावाला बाग का समाचार पंने ही समस्त देश में जगह-जगह रोपपूण सभाए व प्रदर्शन किये गये।

काकोरी कांड

जलियावाला कांड ने युवका के हृदय को विद्रोह व विद्राम से भर दिया। मरदार

भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि ने गणसत्त प्राप्ति द्वारा देश को स्वाधीन बनाने की प्रतिज्ञा ली। प्राप्ति के लिए धन प्राप्त करने के उद्देश्य से सन् १९२५ ई० में सरकारी मंत्रालय का सूटने को योजना बनाई गई। उत्तर प्रदेश के कावारी (शाहजहाँपुर) रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन में ले जाये जा रहे सरकारी धजाने का सूटा गया। इस संबंध में रामप्रसाद बिस्मिल घग्गाकुटा था, ठाकुर राधनासिंह एक राजद्रोह का हिंदी का पापी पर लम्बा किया गया गया धर्म धनेक प्रातिकारिया का कानापानी भजा गया।

साइमन कमीशन का विरोध

भारतीय जनता के शोभ का शान करने के लिए सन् १९२८ ई० में इंग्लैंड में सर जान साइमन के नेतृत्व में साइमन कमीशन भारत भजा गया। यह घोषणा की गया कि कमीशन भारतीय जनता के शोभ के कारणों का अध्ययन करके उनकी समस्याओं के हल के लिए सुझाव देगा। कांग्रेस ने कमीशन के बहिष्कार की घोषणा कर दी। कमीशन के गम्य जहाँ भी गये उन्हें काल झड़ दिया गया तथा साइमन कमीशन घोषण जाया के नाम लगाय गया। ३० अक्टूबर १९२८ ई० का जस ही कमीशन लाहौर पहुँचा कि साना लाजपतराय के नेतृत्व में जनता ने कमीशन को काले बड़े दिखाने के लिए एक जुलूम निकाला। अग्रज साइमनिया न पुनिग को जुलूस पर अघ्राधुध लाठिया बरगाने का आदेश किया। पुनिग ने जनता पर लम्बा विगपकर साना लाजपतराय पर अमानुषिक डग में लाठिया बरगाना। साना पर बुरी तरह में लाठिया के प्रहार किए गए जिससे वे घायल होकर गिर पड़े। सानाजी का भयंकर चोटें प्राई थी जिसके कारण १७ नवम्बर को उनका निधन हो गया। निधन से पूर्व सानाजी ने कहा था 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कपन में एक-एक कील बनेगी। साना लाजपतराय के निधन का समाचार फलत ही समस्त देश में हड़ताल हो गयी शोक सभाएँ करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। सरदार भगतसिंह एक उनके साथी प्रातिकारिया ने सानाजी की निमम हत्या का प्रतिशोध लेने का निणय किया। राजगुरु ने १५ दिसम्बर १९२८ ई० के दिन सड़क की गान्त्री मार कर हत्या कर दी। राजगुरु को गिरफ्तार कर लिया गया। सरदार भगतसिंह चंद्रशेखर आजाद मुखदेव आदि की गिरफ्तारी के लिए पुलिस प्रयत्नशील थी। इसी बाव फरारी की अवस्था में भगतसिंह ने केंद्रीय असेम्बली भवन में पहुँचकर दशकदीपा से एक बम फेंक दिया जिसके धडाके से समस्त अग्रजी साम्राज्य दहल उठा। मुखदम का नाटक रखकर अग्रज सरकार ने भगतसिंह मुखदेव व राजगुरु का फाँसी पर लटका कर शबा का सतलज नदी के किनारे जला दिया। फाँसी पर लटकाये जाने के समाचार से देश में राग का लहर दौड़ गई। अनेक नगरों में हड़तालें हुई। गांधी इरविन समझौते का भी जनता ने तीव्र विरोध किया।

गोलमेज सम्मेलन

भारतीय जनता में स्वाधीनता के प्रति उमंग व जागृति को देखकर ब्रिटिश शासन दहल उठा। उसने भारतीय जनता की समस्याओं पर विचार करने के नाम पर इंग्लैंड में गोल मेज सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन में गांधीजी व अन्य भारतीय नेता सम्मिलित हुए किन्तु अग्रजों का झूठा 'गठक' सफल नहीं हुआ। गांधीजी जैसे ही सम्मेलन से वापस भारत लौट कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अग्रज सरकार ने खीझकर कायस का गर-बानूनी घोषित कर दिया। स्थान-स्थान पर कांग्रेस नेताओं व नायकताओं की अघ्राधुध गिरफ्तारिया प्रारम्भ कर दी गया। लाखों व्यक्तियों को जेल में बंद कर दिया गया। सन १९३६ ई० में

समस्त दश म ग्राम चुनाव का नाटक रखा गया। कांग्रेस भी चुनाव मदान म उतरी और उसने ११ प्रदेश म से सात प्रदेश म बहुमत प्राप्त कर लिया। कांग्रेस ने यह शत रखी कि यदि गवर्नर मन्त्रिमण्डल के कार्यों म हस्तक्षेप न करन का आश्वासन देंगे तभी कांग्रेस मन्त्रिमण्डल का गठन करेगी। पहले तो अंग्रेजा न इस शत को स्वीकार नहीं किया, किन्तु जब भर कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल विश्वास प्राप्त न कर सका के कारण अमफन हो गए तो यह शत माननी पड़ी और कांग्रेसी मन्त्रिमंडल स्थापित हो गए।

मन १९३८ ई० के नवम्बर मास म जमनी व ब्रिटेन के बीच युद्ध की ज्वालायें घड़न उठी। ब्रिटिश सरकार न गिना मन्त्रिमंडल स महमति लिए यह घोषणा कर दी कि भारत भी ब्रिटेन की धार स लड़ाई म शामिल है। इस घोषणा का कांग्रेस व गांधीजी न खुला विराध किया। देश के ६ प्रान्ता ने विराध म प्रस्ताव पारित किये।

अंग्रेजो भारत छोडो

मन १९४० ई० के प्रारम्भ म गांधीजी न भारतीयों का आह्वान किया कि वे इस लड़ाई म किसी भी तरह सहयोग वदापि नहा दें। उन्होंने सत्याग्रह प्रारम्भ कर लिया। हजारों व्यक्ति सत्याग्रह करत हुए गिरफ्तार कर लिए गए।

८ अगस्त १९४२ ई० का वम्बई कांग्रेस म गांधीजी न 'अंग्रेजा भारत छोडो आन्दोलन की घोषणा कर दी। ६ अगस्त का सरकार न कांग्रेस कायममिति के तमाम सदस्या का बंदी बना लिया। दश के बान-बाने में कांग्रेसी नेताओं की पकड़ धकड़ प्रारम्भ कर दी गयी। अन्व स्थाना पर पुलिस न अहिंसक व शांत जुलूमों व सत्याग्रहियों पर लाठिया व गानिया चनाकर सैकड़ा देशभक्ता की मार डाला। १९४० ई० के इस जन आन्दोलन म प्रत्येक स्थान पर 'अंग्रेजा भारत छोडो के उन्धोप गूज उठे। महिलाओं व बानका न भी अपनी आहुतिया दी।

अजाद हिन्द सेना की स्थापना

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सन १९४० ई० म वम्बई म वीर सावरकर स भट की और उनम विचार विनिमय करके वे गुप्त रूप म भारत स निकल गये तथा विदेशा म जाकर प्रवासी भारतीयों स भारत की स्वाधीनता के सम्बन्ध म विचार विनिमय किया। नेताजी न सन् १९४० म अजाद हिन्द मना की स्थापना की। जापान और ब्रिटेन म उन दिना युद्ध छिटा हुआ था। नेताजी न आजाद हिन्द सेना के माध्यम से युद्ध म ब्रिटेन को क्षति पहुंचाने का प्रयास किया। उन्होंने आजाद हिन्द सेना का मुख्य केंद्र सिगापुर म बनाया। वही से 'आजाद हिन्द नामक एक पत्र भी निकाला। नेताजी के आह्वान पर प्रवासी भारतीयों ने धन का सम्यार उनके चरणा म लगा लिया। छोटे छोटे वच्चा ने भी उनकी सहायता की। नेताजी का सोने म तालकर सना भेंट किया गया। नेताजी ने आजाद हिन्द सेना के अतपत महिलाओं की एक ब्रिगेड भी बनायी, जिसका नाम 'रानी कासी ब्रिगेड' रखा गया। महिलाओं ने भी अंग्रेजा म डटकर युद्ध किया व उनके छक्के छुड़ाये। जापान म नेताजी को प्रसिद्ध भारतीय शानिकारी श्री रामबिहारी बोस का पूण सहयोग प्राप्त हुआ। श्री बोस ने पहले ही अंग्रेजा व विरुद्ध समन्त सेना का गठन कर लिया था। २१ अक्टूबर १९४३ ई० को सिगापुर म आजाद भारत का एक अतपत सरकार की घोषणा की गई। नेताजी न घोषणा की—तुम मुझे खून दो—मैं तुम्हें आजागी दूंगा। उह्नी दिल्ली चला व 'जयहिन्द' का नारा दिया। सन् १९४४ म आजाद हिन्द मना न बर्मा और असम के मार्चों पर अंग्रेजा स डटकर टक्कर ली। एक बार ता

भ्राजद हिंद सेना ने अडमान द्वीप तक अंग्रेज के झण्डे को उतार कर उस पर भारतीय ध्वज फहरा दिया। नेताजी ने अडमान पहुँच कर उस जेल कोठरी को देखा, जिसमें वीर सावरकर आदि प्रातिवारिया न अनेक वर्षों तक यातनाएँ सहन की थी।

सन् १९४५ ई० में अचानक जापान की पराजय हो गयी। अंग्रेजों ने जापानी सैनिकों व साथ-साथ भ्राजद हिंद सेना व जवानों पर भी अत्याचार प्रारम्भ किये। सबका भारतीय सैनिकों का निममता व साथ भार डाला गया।

अंग्रेजों की जीत व बाद नेताजी सेगाव से जापान व लिए रवाना हुए। माना जाता है कि रास्ता में फारमोसा के पास विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से उनका देहात हा गया। उनकी मृत्यु व सम्बन्ध में अभी भी विवाद बना हुआ है।

देश स्वाधीन हुआ

१९४७ में चारों ओर अंग्रेजों के विरुद्ध विपाकृत वातावरण बनता जा रहा था। एक ओर सशस्त्र प्रातिवारिया ने अंग्रेजों पर आतंक जमा रखा था दूसरी ओर कांग्रेस के जन आन्दोलन ने। अन्त में तात्कालिक अंग्रेजों को भारत से अपना विस्तार गोल करने का निणय लेना ही पड़ा। अंग्रेजों ने वायस प्रानिनिधि के माते श्री जवाहरलाल नेहरू को अन्तरिम सरकार बनाने का निमन्त्रण किया। २ मितम्बर १९४६ ई० को कांग्रेस मन्त्रिमंडल की घोषणा कर दी गई।

अंग्रेजों व मुस्लिम लीगियों ने भारत विभाजन का पडयत्न रचा तथा इसकी भूमिका बनाने व लिए जगह जगह हिन्दू मुस्लिम दंग भडकाये। मुस्लिमलीग के नेता जिना ने द्विराष्ट्र के सिद्धान्त व आधार पर घोषणा की कि भारत में मुसलमान अलग राष्ट्र है तथा व किम्भी भी स्थिति में हिन्दुओं व साथ नहीं रहे मन्त। जिना व सवेत पर नौआजागी लाहौर मुलतान जम तथा अन्य स्थानों पर वहाँ व अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर अमानवाय अत्याचार किये गये। उन्हें मार-नाटक भगाया जाने लगा। उनके घरों व सम्पत्ति को जला कर राख कर डाला गया। मुस्लिम लोग का पडयत्न सफल हुआ और भारत विभाजन स्वीकार कर लिया गया। भारत का दो भागों में विभक्त कर लिया गया। मुसलमानों ने अपने देश का नाम पाकिस्तान रखा।

१५ अगस्त १९४७ ई० को जहाँ देश स्वाधीन हुआ वहाँ उसी दिन भारत मा के अंग्रेज राज्य भी किये गये। स्वाधीनता की घोषणा व साथ ही मार-नाटक कर भगाये जाने वाले साया-नाया साया का घोषण गुनाई दी। ताया व्यक्तिता को बपरखार होकर दर-दर की टारों घानी पड़ा। ताया को गाजर-भूनी की तरह काट डाला गया। स्वाधीनता-सपना के इतिहास में अतिशय ही पवित्र स भारत विभाजन के परिणामस्वरूप शहीद हुए लाया नर ताया को अन्त कर्णित नया किया जा मन्ता।

अपना व सग व विना होने व बाद भा सग का कुछ बन्धिया पर पास और पुतगालियों का अधिपत्य था। सग और नगर हजला पाडिचेरी तथा गांधी पराधान थे। जहाँ इन बन्धियों का जनता व स्वाधीनता व लिए मरण किया वहाँ अन्त में भारत सरकार का सशस्त्र वायवाही करती व वायव जना पदा तथा इन बन्धियों का मन्त्रता प्राप्त हुई।

स्वाधीनता के पश्चात्

१५ अगस्त १९४७ ई० का स्वाधीनता प्राप्त हान व बाद श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमन्त्रि म दग न नर किया घटा था।

भारत में १९५० में अन्त किया मन्ते था। सग का स्वाधीनता व अन्त का रसा के

लिए उनकी एकीकरण आवश्यक था। सरदार पटेल स्वाधीन भारत के प्रथम गृहमंत्री बने। उन्होंने बड़ी कुशलता व दृढ़ता के साथ अधिकांश रियासतों के राजाओं से भारतीय वैद्रीय शासन के अधीन होने की स्वीकृति प्राप्त कर ली। जूनागढ़ व हैदराबाद के नवाबा ने पाकिस्तान से मिलने की शरारत की किन्तु लौह पुरुष सरदार पटेल ने दृढ़ता के साथ काम लिया। जूनागढ़ रियासत की जनना ने नवाब की पाकिस्तान के साथ मिलने की घोषणा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अतः यह राज्य काठियावाड़ में मिला लिया गया। इसी प्रकार हैदराबाद के नवाब ने पाकिस्तान से साठगाठ करके रजाकारा की सेना गठित की किन्तु सरदार पटेल ने स्थिति पर काबू पाने के लिए १३ सितम्बर १९४८ ई० को भारतीय सेना हैदराबाद, भेजकर निजाम की सेना व रजाकारा के छत्र छुना दिये। अतः निजाम ने भारत में शामिल होना स्वीकार कर लिया।

कश्मीर पर पाक आक्रमण कश्मीर के महाराजा हरिसिंह अपनी रियासत को स्वाधीन रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने विलयपत्र पर हस्ताक्षर नहीं दिये। पाकिस्तान के कश्मीर पर दावत थे अतः पाकिस्तान ने १९४७ में ही श्रीमान्त कवाइलिया को उक्साकर व घुले रूप में उनकी सहायता कर कश्मीर पर आक्रमण करा दिया। जत्र पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर से कुछ ही मील दूर रह गये तो महाराजा हरिसिंह ने भारत से मिलने की घोषणा कर, भारत सरकार से कश्मीर की रक्षा की मांग की। सेनाध्यक्ष महाराजा राजेन्द्रसिंह के नेतृत्व में सेना ने कश्मीर पहुँचकर पाकिस्तानी कवाइलिया के पड्यत्र को भ्रमण कर दिया। राष्ट्रपति ने 'युद्धविराम' का आदेश दिया। पाकिस्तान ने कश्मीर के एक भाग पर अधिकार कर लिया जिस पर वह राज भी बलात बना किये हुए है।

गांधीजी की हत्या देश के विभाजन के परिणामस्वरूप हुए साम्प्रदायिक दंगा के विषाक्त वातावरण में ३० जनवरी १९४८ ई० को एक युवक ने गांधीजी की गोली मार कर हत्या कर दी। गांधीजी की हत्या से देश में शांति की लहर दौड़ गई।

प्रथम राष्ट्रपति भारत का संविधान बनाया गया तथा २६ जनवरी १९५० ई० को देश में प्रजातान्त्रिक शासन की घोषणा की गई। डॉ० राजेन्द्रप्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। भारतीय संविधान में देश के सम्स्त नागरिकों का समान अधिकार दिये गये तथा भारत का 'धर्मनिरपेक्ष गणराज्य' घोषित किया गया।

राज्य पुनर्गठन आयोग स्वाधीनता के बाद कुछ प्रांतों की जनता ने भाषायी आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करने की मांग की। आदालतों के कारण सरकार को बाध्य होकर २६ दिसम्बर १९५३ ई० को 'राज्य पुनर्गठन आयोग' नियुक्त करना पड़ा। आयोग के मुझावा पर राज्यों में हेरफेर हुए। बम्बई का गुजरात व महाराष्ट्र का राज्यों में विभक्त किया गया तथा अन्य अनेक राज्यों का पुनर्गठन हुआ।

गोम्रा की स्वाधीनता गोम्रा का पुतगालिया न गुलाम बनाया हुआ था तथा उसकी मुक्ति के लिए १५ अगस्त १९५५ ई० का अनेक सत्याग्रहियों ने गोम्रा की सीमा पर पहुँचकर पुतगालिया की गालिया खाईं। गोम्रा के अन्दर आनिवीर माहन रानाडे, सुधीर फडके तथा अन्य आनिवारियों ने पुतगालिया के विरुद्ध मशन्त्र आनि का मधप छेड़ दिया था। गोम्रा की जनता सालाजार के अत्याचारों से तन्त हाँकर स्वाधीनता के लिए सधपरत थी।

दिसम्बर १९६१ ई० में सरकार ने गोम्रा की मुक्ति के लिये सेना का आदेश दिया तथा भारतीय सेना ने पुतगाली साम्राज्यवादियों को कुछ ही घंटों में देश छोड़ने को बाध्य कर दिया। गोम्रा व दमन-दीव पर पुर्तगाली हाँडे के स्थान पर तिरंगा फहरा उठा।

मन १९६२ ई० म डा० राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति पद मे निवृत्त हुए । उनके स्थान पर उपराष्ट्रपति मन्मथ लाल डा० राधाकृष्णन ने मई १९६२ ई० म राष्ट्रपति पद ग्रहण किया ।

चीन का आक्रमण भारत स्वाधीनता के बाद तेजी के साथ विकास की ओर अग्रसर हो रहा था । देश के विकास के लिए नई-नई परियोजनाएँ चालू थीं तथा कृषि औद्योगिक व अन्य क्षेत्रों में बड़े आशातीत प्रगति कर रहा था । चीन से यह प्रगति महन न हुई और उसने प्रगति का अवरोध करने की दृष्टि से भारत को घमकिया देनी प्रारम्भ कर दी । २० अक्टूबर १९६२ ई० को चीन ने अचानक उत्तरी सीमान्त पर आक्रमण कर लिया । देश ने एक हीकर चीनी आक्रमण का मुकाबला किया । भारतीय सैनिकों ने चीनिया से चप्पे चप्पे की रक्षा के लिए शपथ किया । अन्त में चीन को विश्व का जनमत देखकर युद्ध बंद करना पडा ।

नागालैंड नागाप्रदेश के विद्रोही नागाओं ने चीन व पाकिस्तान के सन्धे पर विध्वंसकारी गतिविधियाँ जारी की । नागाओं का अधिक सुविधाएँ प्रदान करने की दृष्टि से सरकार ने मन १९६२ म नागालैंड का भारत का १६वाँ राज्य घोषित कर दिया ।

नेहरूजी का निधन २७ मई १९६४ ई० को अचानक प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू का निधन हो गया । ममस्त देश में उनके निधन से शोक की लहर दौड़ गई । श्री लालबहादुर शास्त्री उनके स्थान पर प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए । शास्त्रीजी ने बड़ी कुशलता के साथ देश का प्रगति की ओर अग्रसर करने में योग्य किया । उन्होंने कृषि प्राप्ति को मुख्य लक्ष्य बनाया तथा देश को गाँवों के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा की ।

लालबहादुर शास्त्री

पाकिस्तान का आक्रमण इसी बीच अगस्त १९६५ ई० म पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपट्टियाँ भेजकर उस पर बर्तान अधिकार करने का पडयन्त्र रचा । भारतीय सैनिकों ने पाक के पडयन्त्र का अग्रस्तन कर लिया । पाक के नापाक इरादों का चकनाचूर करने के लिए प्रधान मंत्री था लालबहादुर शास्त्री ने भारतीय सत्ता को तहोरी की ओर कूच करने का आदेश दिया । मना न होकर माँवों पर पाकिस्तान के मर्त को धूर किया तथा उनका काफी भू भाग पर अपना अधिकार कर लिया । शास्त्रीजी ने देश का जय-जवाँत—जय विमान का नारा दिया ।

राम ने अग्रस्तपना करके ताशकत में जनवरी १९६६ म मममौता बठन का आयाजन किया । श्री लालबहादुर शास्त्री ने ताशकत मममौत पर अस्तान कर दिया किन्तु अचानक १० जनवरी १९६६ ई० को ताशकत म उनका निधन हो गया । उनके निधन में विश्वभर में शोक का लहर लौड़ गई ।

श्रीमती इंदिरा गांधी

शास्त्रीजी के निधन के बाद मन् १९६६ ई० म श्रीमती इंदिरा गांधी स्वतन्त्र भारत का तीसरी प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुई । था मोरारजी मेधाजी उपप्रधानमन्त्री चुन गये । श्रीमती गांधी ने देश का आत्मनिर्भर बनाने के विकास का ओर अग्रसर करने की दृष्टि से पंचवर्षीय योजना पर विशेष ध्यान दिया । कृषि उत्पादन के अर्थ में मन् कुटुंबों में भारी महत्त्व मित रहा है । इंदिरा गांधी का महत्त्व न भारतवर्ष जनसाधारण के हृदय में घोड़ा व उन्नत की भावना अस्तन की ।

हरियाणा के अग्रमन् के शहादी प्रयोग पत्राब म १९६५ ई० म अकाली नेता मास्टर गार्तलकर एक मन् पत्रार्थकर न अग्रमन् शहादी शहादी प्रयोग का माग किया । मास्टर गार्तलकर

ने मित्र राज्य' की माग की। सन पनहसिह ने पजाबी सूबे के निर्माण के नये आमरण अनशन किया। उनके विरोध में भी अनशन होने रह। प्रदेश की जनता की माग का देखते हुए सरकार न नवंबर १९६६ई० में हिंदी भाषी क्षेत्र को 'हरियाणा प्रदेश तथा पजाबी भाषी क्षेत्र को पजाब' प्रदेश में विभक्त कर लिया। अमम की खासी, जयतियाँ, गारो, मिकिर आदि पहाड़िया की जनता न क्षेत्र के विकास के लिए अधिख स्वशासन प्राप्त करने की माग की। जनवरी १९६७ ई० में भारत सरकार ने अमम को दो स्वशासित प्रदेशों का एक राज्य बना देने का निणय किया।

राजनीतिक अस्थिरता सन १९६७ ई० के चतुथ महानिर्वाचन में कांग्रेस पहली बार ६ प्रदेशों में बहुमत प्राप्त करने में अमफल रही। इस निर्वाचन के बाद दलबल की प्रवृत्ति इतनी तेजी से बढ़ी कि ममस्त देश में राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण व्याप्त हो गया। अनेक विधानमभा सदस्या ने एक एक दिन में दो-दो दल बदलकर कठिनाइया उत्पन्न कर दी। कई राज्यों में एक के बाद एक सरकार गिरी और नई बनी, किंतु वह भी स्थिर न रह सकी। अतः में पजाब, हरियाणा उत्तरप्रदेश, बिहार और पश्चिमी बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। फरवरी १९६९ में बिहार उत्तरप्रदेश, पजाब व पश्चिमी बंगाल में मध्यावधि चुनाव हुए। इनमें भी कांग्रेस को किसी भी राज्य में स्पष्ट बहुमत न मिल सका तथा पजाब व बंगाल में संयुक्त दला की सरकारें बन गईं व उत्तरप्रदेश व बिहार में कांग्रेस मंत्रिमंडल बनाने में सफल हुई।

कांग्रेस का विघटन मितम्बर अक्तूबर १९६९ ई० में देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का विघटन हो गया। एक कांग्रेस सत्तारूढ़ दल कहलाया और दूसरा मगठन कांग्रेस कहा जाने लगा। श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में सत्तारूढ़ कांग्रेस दल ने शासन सत्ता के सूत्र सभाले।

बक राष्ट्रीयकरण नई कांग्रेस ने १९६९ ई० में देश के प्रमुख १४ व्यवसायिक बका का राष्ट्रीयकरण करके देश के आर्थिक क्षेत्र को नया मोड़ दिया।

प्रिवीपस एवं विशेषाधिकार उन्मूलन ऐसी रियासतों के भारत सघ में विलय हेतु राजाशा एवं भारत सरकार के बीच पूर्व काल में हुए समझौता के अनुसार, उनको मिलने वाले प्रिवीपस एवं विशेषाधिकार-समाप्ति मन्वर्गी विधेयक लोकसभा द्वारा पारित कर दिया गया। इस कृम के फलस्वरूप नयी कांग्रेस एवं वामपथी दला का महयोग अधिक् प्रगाढ हुआ। परंतु राज्य सभा में यह विधेयक पारित न हो सका। तत्काल राष्ट्रपति के आदेश के माध्यम से भूतपूर्व नरेणा की मान्यता समाप्त कर दी गई और प्रिवीपस तथा विशेषाधिकार समाप्त कर दिये गये।

मध्यावधि चुनाव

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी व उनके मंत्रिमंडल ने लोकसभा के मध्यावधि चुनाव का निणय किया तथा फरवरी १९७१ में चुनाव सम्पन्न हुये जिसमें सत्ता कांग्रेस को आशा तीन सफलता प्राप्त हुई तथा भारी बहुमत से श्रीमती गांधी पुन प्रधानमंत्री निर्वाचित हुई।

पाकिस्तान का आक्रमण व बंगला देश का निर्माण

३ दिसम्बर १९७१ को अचानक पाकिस्तान ने भारत की पश्चिमी सीमा पर हवाई आक्रमण कर दिया। भारत ने आक्रमण का जारलार जवाब दिया तथा पूर्वी सीमा पर बंगला देश की मुक्तिवाहिनी को सहयोग देते हुए भारतीय सेना बंगला देश को पाकिस्तानी खूनी पजा से मुक्त कराने के लिये आगे बढ़ी।

भारतीय सेना ने दोना क्षेत्रों में पाकिस्तानी आक्रमणकारी सेना के दात छूटे लिये । प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कुशल नेतृत्व में समस्त देश एक होकर देश की सुरक्षा के लिये यत्न हो गया ।

१६ दिसम्बर को ढाका पर अधिकार हात ही भारत न युद्धविराम की घोषणा कर दी । लगभग एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों ने ढाका में भारतीय सेना के समान आत्मसमर्पण किया । पाकिस्तान की भारी पराजय ने राष्ट्रपति याह्या खा को सत्ता से हटने को बाध्य किया । नये राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने भारत से समझौते की पेशकश की और २८ जून को श्री भुट्टो समझौते के लिए शिमला पहुँचे । तीन जुलाई को एक समझौते पर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा श्री भुट्टो ने हस्ताक्षर किये । समझौते के बाद श्री भुट्टो व पाकिस्तान न पुन अपना खया वलना प्रारम्भ कर दिया जिसमें समझौते के कार्यान्वयन में बाधाएँ छाईं चिन्तु भारत ने समझौते के प्रति रुचि ली । अतः म अजीज अहमद के नेतृत्व में पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल १७ अगस्त १९७३ को दिल्ली आया तथा १० दिन की बार्ता के बाद २७ अगस्त का दोनों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर हुये । भारत ने पाकिस्तानी मुद्देबादी लौटाने प्रारम्भ कर सभ्यता का परिचय दिया ।

भारतीय इतिहास का तिथिक्रम

ईसा पूर्व

३१०२	महाभारत युद्ध का अन्त एवं कलियुग सम्बत का आरम्भ परीक्षित का राज्याभिषेक
२७००	वप में पायी गयी सिन्धु घाटी मुद्राओं की तिथि
१३७५	वदिक देवताओं का उल्लेख करने वाल वांगज कुई अभिलेख की तिथि
८१७	जन तीर्थकर पश्यनाथ का जन्मकाल
५४४	बुद्ध निर्वाण की तिथि लका की परम्परा के अनुसार
५२७	महावीर निर्वाण के सम्बत का आरम्भ जन परम्परा के अनुसार
३२७-२६	सिरादर का आक्रमण
३२४	मौर्य साम्राज्य की स्थापना

ईसा पश्चात्

७८	शक सम्बत का आरम्भ
२४८	लक्ष्मण पञ्चरि सम्बत का आरम्भ
३२०	गुप्त साम्राज्य का उत्पन्न एवं गुप्त सम्बत का आरम्भ
३८८	शक शासन का भारत में अन्त
६०६	हर्षवर्धन का राज्याभिषेक
६०६	पुनर्वशिन का राज्याभिषेक
६२०	चीनी यात्रा ह्युएनसांग की भारत यात्रा
७११	सिन्ध पर मुहम्मदगिन कासिम का आक्रमण
७१२	दाहिर की पराजय एवं मुमु सिन्ध पर भरवा का अधिकार
७५३	राष्ट्रकूट का उत्पन्न
८१५	नागमट्ट (प्रतिहार) द्वारा भरवा पर आक्रमण

८३८	भाज प्रतिहार का कन्नौज की गद्दी पर अभिषेक
८७५	पश्चिमी अफगानिस्तान पर मुस्लिम आधिपत्य
१००१	शाही राजा जयपान महमूद गजनवी द्वारा पराजित
१०२६	मारनाथ के मंदिर पर महमूद का आक्रमण
११६१	तराइन का प्रथम युद्ध मुहम्मद गोरी की पराजय
११६२	तराइन का द्वितीय युद्ध पृथ्वीराज चौहान की पराजय, दिल्ली पर मुस्लिम अधिकार
११६४	कन्नौज का राजा जयचंद्र की पराजय व मृत्यु
१२००	खिनजार खिनजी द्वारा बगाल पर अधिकार
१२६२	अलाउद्दीन खिलजी का भिनसा (विदिशा) पर अधिकार
१२६४	अलाउद्दीन द्वारा देवगिरि की लूट
१२६७	गुजरात पर मुस्लिम आधिपत्य
१३०१	रणथम्भौर पर खिलजी की विजय
१३०२ १३०३	चित्तौड़ की विजय
१३०६ १३१०	मनिक काफूर के दक्षिण भारत पर हमले
१३२१ २३	वारानस पर मुहम्मद बिन तुगलक का धावे
१३२७	महम्मद बिन तुगलक की राजधानी दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) की
१३३०	विजयनगर साम्राज्य की स्थापना
१४६६	गुरु नानक का जन्म
१६६८	बाम्बोडिगामा भारतीय तट पर
१५१०	गांधार पर पुतुगालिया का अधिकार
१५२६	पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर की लोदी पर विजय
१५२७	घनुआ का युद्ध, बाबर से राणा सांगा पराजित
१५२६ ३०	विजयनगर साम्राज्य के कृष्णदेवराय की मृत्यु
१५३३	चित्तौड़ पर गुजरात का बहादुर शाह का अधिकार
१५३८	गुरु नानक का मृत्यु
१५६०	हुमायूँ औरशाह सूरी से हारा
१५५५	हुमायूँ का दिल्ली पर पुनः अधिकार
१५५६	पानीपत का द्वितीय युद्ध हेमचंद्र विक्रमादित्य अकबर से पराजित
१५६५	तालीकाटा के युद्ध में विजयनगर साम्राज्य ध्वस्त
१५६८	हत्तीघाटी का लड़ाई
१५६६	रणथम्भौर और कालिंजर का पतन
१५८२	उड़ीसा पर मुस्लिम अधिकार
१५६७	राणाप्रताप की मृत्यु
१५००	गुरु अंगनदेव का बलिदान
१६०६	पहली डच फ़ैक्टरी की पुलीकट में स्थापना
१६१२	पहला अंग्रेज फ़ैक्टरी की मूरत में स्थापना
१ २४	अंग्रेजों का बंगाल में व्यापार का अनुमति
१६४६	मिर्जापुर का तारण दुर्ग पर अधिकार

१६५६	शिवाजी का जावली पर अधिकार
१६५८	औरंगजेब का राज्याभिषेक
१६५९	शिवाजी द्वारा अफजलखा का वध
१६६४	शिवाजी का सूरत पर पहला धावा
१६६६	शिवाजी की आगरा में निरुपतारी और पलायन
१६६८	औरंगजेब द्वारा मदिना के विध्वंस की आता
१६६९	मथुरा का निकट जाता का विद्रोह
१६७०	सूरत पर शिवाजी का दूसरा धावा
१६७२	मन्तामी विद्रोह
१६७४	शिवाजी द्वारा हिंदू पन्पादशाही की स्थापना
१६७५	गुरु मगवहाडुर का बनिष्पान
१६७९	जजिया पुन लाग
१६८०	शिवाजी की मृत्यु
१६८१	औरंगजेब का दक्षिण का प्रस्थान
१६८६	बीजापुर राज्य का पतन
१६८७	गोनकुण्ण राज्य का पतन
१६९०	मन्भाजी की हत्या
१७०३	औरंगजेब की दक्षिण में मृत्यु
१७०३	औरंगजेब की दक्षिण में मृत्यु
१७०८	शाह मराठा का राजा का गुरु गाविन्सिंह का दक्षिण में मृत्यु
१७१६	वन्धु बरागी की हत्या
१७१७	जजिया पुन लाग
१७३५	मालवा पर मराठा का अधिकार
१७४४	अंग्रेज फार्मिमी प्रतिस्पर्धा भारत में
१७४७	अहमदशाह अंगली का पहला आक्रमण
१७५७	सिन्धी और मथुरा पर अंगली के हमले प्लासी की लड़ाई बंगाल में अंग्रेजों का परजय
१७५८	पंजाब पर मराठा का राजा अंगक पर भगवा फहराया
१७६१	पानापन का तनीप मुद्र अंगला से मराठा की हार कर्नाटक में हैदरअली का उन्म अंगरा ने फार्मिसिया का उन्नेडा
१७६४	उत्तर की उदात्त में अंगरा की जय
१७७०	बंगाल में भीषण अंगरा मन्थानी विद्रोह
१७७२	मराठा ने मुगल मन्थान शाह अंगतम का सिन्हा का गद्दी पर बठाया
१७७५	राजा तन्कुमार की अंगरा गारा फार्मी
१७७५ =	प्रथम अंगन गराठा युद्ध
१७८१	कागा का राजा अन्मिन् का गद्दी में उतराया गया
१७९४	मन्गाराणा रणजानमिह गंग पर बठ
१७९९	टीपू का पंगजय और मन्थु मन्थुर की स्वतंत्रता का अंगत
१८१८	मराठा मन्गारा का अन्म

- १८२४ २६ प्रथम बर्मा युद्ध
 १८३४ छप्रेजी शिन्धा प्रणाली के पक्ष में निणय
 १८३६ महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु
 १८३६-४२ प्रथम अफगान युद्ध में अफ्रेजा की पराजय
 १८४३ सिन्ध की स्वाधीनता का अपहरण
 १८४५ पंजाब की स्वाधीनता का अन्त
 १८५२ द्वितीय बर्मा युद्ध
 १८५३ पहली रेलवे एवं टेलीग्राफ लाईन
 १८५५ मथान विद्रोह
 १८५७ ५६ प्रथम स्वातन्त्र्य मभर
 १८५८ ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जगह सम्राट का सीधा शासन, वासी की रानी लक्ष्मीबाई का वलिदान
 १८६५ उड़ीसा में अकाल, यूरोप से टेलीग्राफ सम्बन्ध प्रारम्भ
 १८७४ बिहार में अकाल, आमसमाज की स्थापना
 १८७६ भारतीय जनता का निर्म्मोकरण
 १८७६ ८० वासुदेव बलवन्त फडके का अफ्रेजा के विरुद्ध विद्रोह
 १८८० आयसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का निधन
 १८८५ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म
 १८८९ मणिपुर विद्रोह
 १८९३ विवेकानन्द का शिवागा-वक्तव्य अरविन्द घोष का भारत का प्रस्थान
 १९०५ प्रथम बंग भग
 १९०६ मुस्लिम लीग का जन्म, मूरत कांग्रेस भग तिनक माण्डले जेल का मुसतमाना को अलग प्रतिनिधित्व मिला
 १९०९ बंग भग वापस, धीर मावरकर का दो अज्ञान कारावास की सजा
 १९१० राजप्राणी कर्कत्ता में दिल्ली को
 १९१४ १५ प्रथम विश्वयुद्ध
 १९१५ गांधीजी का भाग्य आमन
 १९१६ हिन्दू मुस्लिम लखनऊ-ममपौता
 १९१६ जनियावाना बाग काण्ट भाग्य सरकार एकट प्रान्ता में शासन
 १९२० खिलाफत व अमहयाग आन्दोलन तिलक की मृत्यु कांग्रेस का नतत्व गांधीजी के हाथ में
 १९२१ मानना विद्रोह
 १९२५ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द का वलिदान
 १९२७ माइमन कमीशन, लाला लाजपतराय की लाली प्रहारा में मृत्यु
 १९२८ पण्डित मानीराल नहू रियाट गांधीजी की एक वर्ष में स्वराज्य लान की घोषणा
 १९२९ भगतसिंह न असेम्बली में बम फेंका यतीन्द्रनाथ की भूय हडतान में जेल में मृत्यु कांग्रेस के लालौर अधिवेशन में पूण स्वराज्य के लक्ष्य की घोषणा
 १९३० (२६ जनवरी) स्वाधीनता दिवस मनाया गया
 १९३० ३४ गांधीजी का डाडी माच, नमक सत्याग्रह

- १९३५ नया भारत सरकार का कर्तव्य अधिनियम का जन्म, प्रायः म उत्तराखण्ड शासन
- १९३७ ३९ मान प्रान्ता म कायम मरिमडन
- १९३९ द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ सिपुरा कायम म सुभाषचन्द्र बोस का अध्यक्षता म से त्यागपत्र
- १९४० सुभाषचन्द्र बाम का विरमनारी कायम का स्थितिगत मर्यादा
- १९४१ सुभाषचन्द्र बाम का भारत म बाहर जाता जापान युद्ध म मरिमडन, विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ टागोर का निधन
- १९४२ भारत छोडा आन्दोलन
- १९४३ सुभाषचन्द्र बाम जापान म आजात हिन्दु सना का निर्माण
- १९४४ गांधीजी की रिहाई
- १९४५ द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त शिमला सम्मेलन
- १९४६ जनमना म विद्रोह बबिनट मिशन का आगमन अन्तरिम सरकार मुस्लिम लीग का अयत्नक एगशन भयकर स्वतन्त्रता
- १९४७ लाड माउण्टबटन का आगमन भारत का विभाजन एक स्वाधानता प्राप्ति पाकिस्तानी बगलईन्दिया का बश्मार पर आक्रमण
- १९४८ महात्मा गांधी की हत्या
- १९५० गणतन्त्रात्मक संविधान लागू अरविन्द घोष का निधन
- १९५३ डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का कश्मीर म निधन
- १९६१ गोआ पुतगाली गलामी स मुक्त
- १९६२ चीन का भारत पर आक्रमण
- १९६४ प्रधानमंत्री श्री नेहरू का निधन
- १९६५ पाकिस्तान का आक्रमण
- १९६६ प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का ताशकन्त म निधन
- १९६९ राष्ट्रपति डा० जकिरहुसन का निधन
- १९६९ राष्ट्रपति श्री वराह गिरि व्यंकट गिरि निर्वाचित बका का राष्ट्रीयकरण
- १९७० अमम क अतगत मेघानय उपराय की स्थापना एक बन्द शासित हिमाचल प्रदेश को पून राय का दर्जा प्रिविपम एक विशेषाधिकार उमूलन प्रस्ताव लोकसभा म पारित परतु रायमभा म पारित न हो सका
- १९७१ लोकसभा क मर्यावधि चुनाव म नई कांग्रेस को भारी बहुमत प्राप्त बगला दश म पाकिस्तानी सना क भीषण नरसंहार के परिणामस्वरूप एक बगोड विस्थापित भारत म
- १९७१ ३ दिसम्बर का पाकिस्तान का भारत पर खुला आक्रमण १४ दिना के युद्ध म बगलादेश पाक के बगल स मुक्त
- १९७१ १६ दिसम्बर का राका म भारतीय सेना क समक्ष जनरल नियाजी क नेतृत्व म ९३ हजार पाकिस्तानी सनिको द्वारा आत्मसमर्पण
- १९७२ शिमला म भद्रा इन्दिरा समझौता वार्ता सफल
- १९७३ भारत द्वारा पाकिस्तानी युद्धबंदिया की रिहाई प्रारम्भ



भारतीय प्राचीन साहित्य

—वैदिक संहिता

भारत का सबसे प्राचीन साहित्य वेद है। वेद का अर्थ है ज्ञान। वेद मुख्यतया पद्य में है यद्यपि उनमें गद्य भाग भी विद्यमान है। वैदिक पद्य को 'ऋग या ऋचा कहते हैं वदिक गद्य को 'यजुष' कहा जाता है और वेदा में जो गीतात्मक (छन्दस्य) पद्य हैं उन्हें 'साम' कहते हैं। प्राचीन समय में वेदा का 'त्रयी' भी कहते थे। ऋचा, यजुष और साम इन तीन प्रकार के पदा में होने के कारण ही वेद की 'त्रयी' सजा भी थी। पर वैदिक मन्त्रों का मन्त्रालय जिन रूप में आजकल उपलब्ध होता है, उसे संहिता कहते हैं। विविध ऋषि-वृत्तों में जो मन्त्र श्रुति द्वारा चले आते थे, बाद में उनका सन्तुलन व संप्रह किया गया। इस कार्य का प्रधान श्रेय मुनि वेदव्यास का है। वेदव्यास ने वैदिक सूक्ता का संहिता रूप में संप्रह किया। उनके द्वारा सन्तुलित वैदिक संहितायें चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

ऋग्वेद में कुल मिलाकर १०१७ सूक्त हैं। यदि ११ बाल खिन्व सूक्ता को भी इसमें गणना कर लिया जाय तो ऋग्वेद में कुल सूक्ता की संख्या १०२८ हो जाती है। सम्भवतः ये बालखिन्व सूक्त परिशिष्ट रूप में हैं और वात में जाते गये हैं। यही कारण है कि अनेक विद्वान् इन्हें ऋग्वेद का अंग नहीं मानते और इस वेद की कुल सूक्त संख्या १०१७ समझते हैं। ये १०१७ या १०२८ सूक्त १८ मण्डला में विभक्त हैं। वेद के प्रत्येक सूक्त में ऋचा (मन्त्र) के साथ उसके 'ऋषि' और 'देवता' का नाम दिया गया है। ऋषि का अर्थ है मन्त्रद्वेषा या मन्त्र का दशन करने वाला। यजुर्वेद में दो प्रधान रूप इस समय मिलते हैं, शुक्ल-यजुर्वेद और कृष्ण-यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद का वाजसनेयी संहिता भी कहते हैं जिसकी दो शाखायें उपलब्ध हैं कृष्ण और माध्यन्दिनीय। कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखायें प्राप्त होती हैं काठक संहिता, कपिष्ठल संहिता मन्त्रेयी संहिता और ततरीय संहिता।

सामवेद की तीन शाखायें उस समय मिलती हैं कौथुम शाखा राणायनीय शाखा और जमिनीय शाखा। पुराणा में तो सामवेद की महत्त्व शाखाओं का उल्लेख है। सामवेद के दो भाग हैं पूर्वाचिक और उत्तराचिक। दोनों भागों को मिलाकर मन्त्र-संख्या १८१० है। इसमें अनेक मन्त्र ऐसे भी हैं जो एक में अधिक बार आये हैं। यदि इन्हें अलग कर दिया जाय तो सामवेद मन्त्रों की कुल संख्या १५८६ रह जाता है। इनमें से भी १४७८ मन्त्र ऐसे हैं जो ऋग्वेद में भी पाये जाते हैं। इस प्रकार सामवेद में अनेक मन्त्रों की संख्या केवल ७५ रह जाती है। नामरूप में ऋचाएँ वैदिक ऋषियों द्वारा मगान के लिए प्रयुक्त होती

यी। अथर्ववेद की दो शाखायें इस समय मिलती हैं शौनक और पिप्पलाद। अथर्ववेद में कुल मिलाकर २० वाण्ड और ७३२ सूक्त हैं। सूक्तों में मन्त्रों को यदि गिना जाय तो उनकी संख्या ६००० के लगभग पहुँच जाती है। इनमें से भी बहुत-से मन्त्र ऐसे हैं जो ऋग्वेद में भी पाये जाते हैं।

वैदिक साहित्य में चार वैदिक संहितायाँ के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रन्थों का भी महत्त्व मिलित किया जाता है। इन ब्राह्मण ग्रन्थों में उन अनुष्ठानों का विशद रूप से वर्णन है जिनमें वैदिक मन्त्रों को प्रयुक्त किया जाता है। अनुष्ठानों के अतिरिक्त इनमें वेद मन्त्रों के अभिप्राय व विनियोग की विधि का भी वर्णन है। प्रत्येक ब्राह्मण-ग्रन्थ का किसी वेद के साथ सम्बन्ध है और उस उसी वेद का ब्राह्मण माना जाता है। ऋग्वेद का प्रधान ब्राह्मण ग्रन्थ एतरेय है। ऋग्वेद का दूसरा ब्राह्मण ग्रन्थ कौशीतकी या साख्यायन है। कृष्ण-यजुर्वेद का ब्राह्मण तत्तिरीय है। शुक्ल-यजुर्वेद का ब्राह्मण शतपथ है जो अत्यन्त विशाल ग्रन्थ है। इसमें कुल मिलाकर सौ अध्याय हैं जिन्हें चौदह कांडों में विभक्त किया गया है। सामवेद के तीन ब्राह्मण हैं ताडय महाब्राह्मण पडविंश ब्राह्मण और जमिनीय ब्राह्मण। अनेक विद्वानों के अनुसार ये तीनों ब्राह्मण ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थों की अपेक्षा प्राचीन हैं। अथर्ववेद का ब्राह्मण गोपथ है।

वैदिक ऋषि आध्यात्मिक दार्शनिक व पारलौकिक विषयों का भी चिन्तन किया करते थे। आत्मा क्या है सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है सृष्टि किस तत्त्वा से बनी है इस सृष्टि का कर्त्ता व नियामक कौन है अर्थात् प्रकृति से भिन्न जो चेतन सत्ता है उसका क्या स्वरूप है—इस प्रकार के प्रश्नों पर भी वे विचार किया करते थे। इन गूढ़ विषयों का चिन्तन करने वाले ऋषि व विचारक प्रायः जगत् का अन्वेषण ही निवास करते थे जहाँ वे आश्रम बनाकर रहते थे। यही उच्च साहित्य की सृष्टि हुई जिसे आरण्यक व उपनिषद् कहते हैं। अनेक आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों का ही भाग है। इन ऋषियों ने अरण्य में स्थापित आश्रमों में जिन आरण्यकों व उपनिषदों का विकास किया उनकी संख्या दो सौ से भी ऊपर है।

एतरेय उपनिषद्—यह ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण का एक भाग है। ऋग्वेद के दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थ कौशीतकी ब्राह्मण के अन्त में भी आरण्यक भाग है जिसमें कौशीतकी उपनिषद् कहते हैं।

यजुर्वेद का अन्तिम अध्याय ईशोपनिषद् के रूप में है। शुक्ल-यजुर्वेद के ब्राह्मण-ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण का अन्तिम भाग आरण्यक रूप में है जिसमें बहुदारण्यकापनिषद् कहते हैं। कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मण-ग्रन्थों के अन्तर्गत ऋग्वेदोपनिषद् श्वेताश्विनोपनिषद् तत्तरीय उपनिषद् और मैत्राण्योपनिषद् हैं। सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थों के साथ सम्बन्ध रखने वाले उपनिषद् वन और छान्दोग्य हैं। अथर्ववेद के साथ मूण्डकोपनिषद् प्रश्नोपनिषद् और माण्डूक्य-उपनिषद् का सम्बन्ध है।

वेदांग

वैदिक-साहित्य के महत्त्वपूर्ण भाग व ग्रन्थ भाग हैं जिन्हें वेदांग नाम से जाना जाता है। वेदांग मन्त्रों में छह हैं—गान्धर्व व्याकरण निरुक्त ज्योतिष और कल्प।

गान्धर्व व्याकरण नाम का है जिसमें वर्णों व शब्दों का सही उच्चारण प्रतिपादित किया जाता है। यह शास्त्र व प्राचीन ग्रन्थ प्रातिशाख्य कहान है। विभिन्न वैदिक संहितायाँ व प्रातिशाख्य निम्नलिखित हैं—(१) शौनक द्वारा रचित ऋग्वेद प्रातिशाख्य

(२) तृतीय प्रातिशाख्य-सूत्र, (३) कात्यायन द्वारा विरचित वाजसनेयो प्रातिशाख्य-सूत्र और (४) अथर्ववेद प्रातिशाख्य-सूत्र। इन चार मुख्य प्रातिशाख्यों ने अतिरिक्त भारद्वाज, वसिष्ठ व्यास, याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों द्वारा रचित अन्य प्रातिशाख्य ग्रंथ भी हैं। इन सब में वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण के ढंग का प्रतिपादन किया गया है। प्रातिशाख्यों से पूर्व भी शिक्षा शास्त्र की मत्ता था। प्राचीन अनुश्रुति के अनुसार इस शास्त्र का प्रारम्भ ब्राह्मण्य ऋषि द्वारा हुआ था।

वेदा का मली प्रकार ने समझने के लिये व्याकरण शास्त्र बहुत उपयोगी है। सस्कृत भाषा का मूलमें प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ पाणिनीय अष्टाध्यायी है जिसे पाणिनी मुनि ने बनाया था। किन्तु पाणिनी की अष्टाध्यायी वेदांग के अन्तर्गत नहीं है बल्कि उसमें प्रधान तथा लौकिक सस्कृत भाषा का व्याकरण लिया गया है। वेद या छन्दस भाषा के नियम उसमें अपवाद रूप में ही दिये गये हैं। अष्टाध्यायी के रूप में सस्कृत-व्याकरण अपने विकास व पूर्णता की चरम सीमा को पहुँच गया था। चन्द्र, इन्द्र आदि अनेक प्राचीन वैयाकरणा के ग्रंथों की सत्ता के प्रमाण प्राचीन साहित्य में मिलते हैं। याम्ब के निम्निका म शाकपूणि नामक एक आचार्य का उल्लेख आता है जो व्याकरण शास्त्र का बड़ा आचार्य था।

निम्न शास्त्र भी एक वेदांग है, जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति या निरवृत्त का प्रतिपादन किया गया है। यास्काचार्य का निरवृत्त ऋग् शास्त्र का प्रसिद्ध ग्रंथ है। ज्योतिष शास्त्र भी छ वेदांगों में से एक है। बाद में ऋग् शास्त्र का भारत में बहुत विकास हुआ और आयुष्य, वराहमिहिर आदि अनेक ऐसे आचार्य हुए जिन्होंने इस विद्या का बहुत उत्तम किया, पर प्राचीन युग का केवल एक ग्रंथ इस समय मिलता है जिसका नाम 'ज्यातिष्यवेदांग' है।

वर्णिक साहित्य के पश्चात् सूत्र साहित्य प्रारम्भ होता है। सूत्रों में तीन विभाग हैं—
(१) कल्पसूत्र (२) गृह्यसूत्र और (३) धर्मसूत्र। कल्पसूत्रों में वर्णिक यज्ञों का शास्त्रीय ढंग से वर्णिकरण और वर्णन किया गया है। गृह्यसूत्रों में गृह्यसंघ रखने वाले मस्कारों, वसवाण्ड और भोममी यज्ञों का विधान है।

वर्तमान समय में जो सूत्र ग्रंथ उपलब्ध होते हैं उनमें अधिक महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं—गौतम धर्मसूत्र, बौधायनसूत्र आपस्तम्बसूत्र मानवसूत्र काठकसूत्र कात्यायन श्रौत सूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र आश्वलायन श्रौतसूत्र आश्वलायन गृह्यसूत्र मान्यायन श्रौत सूत्र, मान्यायन गृह्यसूत्र, लाटयाया श्रौतसूत्र, गोभिल गृह्यसूत्र बौधायनसूत्र और वैतान श्रौतसूत्र। इन विविध सूत्रों के नाम से ही यह बात सूचित होती है कि इनका निर्माण विविध प्रदेशों में और विविध सम्प्रदायों में हुआ है।

सूत्रों के पश्चात् अपने वर्तमान रूप में रामायण और महाभारत दो भारतीय महाकाव्य माने हैं। रामायण के रचयिता बाल्मीकि ने अपने नायक राम के चरित्र के आधार से तत्कालीन राजनीति समाजजाति धर्म और दूसरे अनेक विषयों का चित्रण किया है। मूल महाभारत के रचयिता व्यासजी थे। इन दोनों ग्रंथों के साथ ही पुराणों का उल्लेख करना आवश्यक है। शायद रचनाक्रम में ये अपने मुख्य भागों में महाकाव्यों के ही समकालीन हैं, परन्तु विषय की दृष्टि से भारतीय इतिहास के आरम्भकाल में लेकर गुप्तकाल तक की सामग्री इनमें समीचीन है। परम्परानुसार पुराणों की संख्या अष्टादश बतायी जाती है। वाराह पुराण में पुराणों की नामावली इस क्रम से दी हुई है—वल्गुपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, भागवतपुराण, नारदपुराण, मार्कण्डेयपुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवर्तपुराण, निगपुराण, वाराहपुराण, स्कन्द

पुराण यमापुराण, वसुपुराण मन्वपुराण ब्रह्मपुराण तथा इन्द्रपुराण । वीम सर्षप पुराणों का उपयोग किया न किमी रूप में भारतीय इतिहास रचना के विभिन्न क्षेत्रों में है किन्तु मत्स्यपुराण वायुपुराण विष्णुपुराण ब्रह्माण्डपुराण भास्करपुराण धर्मपुराण और धर्म पुराण का प्रयोग बहुत अधिक महत्व है । पौराणिक परिभाषा के अनुसार उन पाँच विभाग हैं—(१) मग (मृत्ति) (२) प्रतिमग (३) मग (स्वभावात् का) (४) मन्वन्त २०२ (५) वसुानुचरित (राज्यशा का नामिक परिभाषा) ।

छ यन्त्रों के धर्मरिक्त इन युग में प्राप्त उद्देश्यों का भा विभाग रूप । म उद्देश्य निम्नलिखित हैं—सायुर्वेद धूर्त्त विभाग और साधनवद । विद्विगात्तय उद्देश्य के अन्तर्गत है । अरक्त सुभत धर्म साक्षात्की न विद्विगात्तय मन्त्र भी जो उद्देश्य विद्य के व साजकत उपरन्ध है । न विद्विगात्तय का उपरन्ध मन्त्रा जाता ही नम धर्म का उद्देश्य प्रमाण है कि प्राचीन धर्म बचन याज्ञिक अनुष्ठान और ब्रह्मविद्या का ही विधान नहीं करत थे धर्मिन्नु चिन्तित्वा युद्ध विद्या शिल्प और मगान धर्म नीतिक विषयों का भी धर्मागत करत थे ।

छा-दोग्य

इन उपनिषद् के अन्तर्गत प्रपाठक में महर्षि गार्ग्युमार और नारद का मन्त्र छाता है जिसमें गन्तुमार ने यह पूछत पर कि उद्देश्य कि कि विषयों का ध्यान किया है नारद ने इस प्रकार उत्तर दिया— इ भगवन् ! मैं प्राण्य मन्त्रों सामय्य और अथर्व का अध्ययन किया है मैं पंचमय इतिहास पुराण का पढ़ा है मैं विद्विद्या शक्तिविद्या (शक्ति) दक्षविद्या निधि विद्या (ग्रान मन्त्रों विद्या) याज्ञिकशास्त्र (मन्त्रशास्त्र) तन्त्रायत (भक्ति शास्त्र) ब्रह्मविद्या (अध्यात्म शास्त्र) भक्तविद्या शास्त्रविद्या (पद शास्त्र) तन्त्र विद्या (ज्यातिष) सप विद्या और दक्षजन विद्या को पढ़ा है ।

अथ अनेक नीतिक विद्याओं के समान इन युग में दण्डनीति या अथर्वशास्त्र का भी भलाभाति विकास हुआ । महाभारत के शास्त्रिय राजधर्मशास्त्र का अर्थ उद्देश्य व विद्विगात्तय है । उनमें इन युग की राजनीति व सामाजिक विचारों पर अनेक सुन्दर प्रकाश पड़ता है । बौद्धिकीय अथर्वशास्त्र की रचना बौद्धराज के बाद म हूँ पर उगम प्राप्त प्राणीय साक्षात्की का उत्तरय मितता है जिसका सम्मति को बार-बार छाताय ध्याय्य न उद्देश्य किया है । इनमें म कतिपय के नाम निम्नलिखित हैं—भारतान विद्याता व पागकर विष्णुन कौण्यदेव वात-प्राधि और वाहुत्तीपुत्र । इन छातायों के धर्मरिक्त साधारण ने मानव वाहस्पत्य औशनस धर्म अनेक सम्प्रदायों का उत्तरय किया है जिनमें उद्देश्यता व राजनीतिशास्त्र-मन्त्रों विविध विचारधारामा का विकास हुआ था ।

भारत की प्राचीन परम्परा के अनुसार छ धार्मिक ज्ञान है । अनेक नाम निम्नलिखित हैं—साय्य योग चाय वज्रपिक भीमामा और वदान । य छ ज्ञान धार्मिक व वदमन्त्र मान जात है । इनके अतिरिक्त कतिपय अथर्व ज्ञानों का विनाम भी प्राचीन समय में हुआ था जिन्हें नास्तिक व नाकायत कहा जाता है ।

जैन साहित्य

जैन शास्त्रों के धार्मिक साहित्य का हम प्रधानतया छ भागों में विभक्त कर सकत हैं— (१) द्वादश अंग (२) द्वादश उपांग (३) दस प्रकीर्ण (४) पट छद सूत्र (५) चार मूल सूत्र (६) विविध ।

द्वादश अंग (१) आचार्य मुनि (२) स्वकृदंग (३) स्थापनांग (४) समवायांग,

(५) भगवनी सूत्र (६) नानधर्म कथा, (७) उवासगन्माओ, (८) अत कृद्दशा, (९) अनुतरापपातिक दशा, (१०) प्रश्न व्याकरण, (११) विपाकश्रुतम, (१२) दष्टिवाद ।

द्वादश उपाय प्रत्येक अंग का एक एक उपाय है—इनके नाम निम्नलिखित हैं—
(१) औपपातिक, (२) राजप्रश्नीय, (३) जीवाभिगम (४) प्रनापता, (५) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, (६) चन्द्रप्रनप्ति (७) सूर्यप्रनप्ति (८) निर्यावली (९) कल्पावतसिका (१०) पुष्पिका, (११) पुष्यचूलिका (१२) वणिगदशा ।

दस प्रकीण इनम जन धम सम्बन्धी विविध विषया का वर्णन है । इनके नाम निम्न लिखित हैं—(१) चतु शरण (२) स्तनारक (३) आतुरप्रत्याख्यानम भक्तापरिज्ञा (४) तद्गुल वैचारिका (५) चन्द्रवध्यक, (६) गणिविद्या, (७) देवेद्रस्तव (८) वीरस्तव (९) महाप्रख्यान ।

षट छदसूत्र—इन सूत्रा म जैन भिक्षु और भिक्षुणिया के लिए विविध नियमा का वर्णन कर उन्हें दृष्टान्ता द्वारा प्रदर्शित किया गया है । छदसूत्रा के नाम निम्नलिखित हैं—
(१) व्यवसाय सूत्र (२) बहुत्वत्प सूत्र (३) दशाद्गुनम्बन्ध सूत्र (४) निशीथ सूत्र (५) महानिशीथ सूत्र (६) जितकल्प सूत्र ।

चार मूलसूत्र—इनके नाम निम्नलिखित हैं—(१) उत्तराध्ययन सूत्र (२) दशवै कालिक सूत्र (३) आवश्यक सूत्र (४) आकनियुति सूत्र ।

विविध

एस श्रेणी म बहुत ने ग्रन्थ आत है परतु उनम सबसे अधिक महत्वपूर्ण नदिसूत्र और अनुयोगद्वार हैं । इनम बहुत प्रकार क विषया का समावेश है । जन भिक्षुआ का जिन विषया का भी परिचान था, वे प्राय सभी इनम आ गए हैं ।

बौद्ध साहित्य

विनय पिटक के तीन भाग है—(१) सुत विभाग (२) खग्नक और (३) परिवार । सुतविभाग दा भागा म विभक्त है भिक्षुविभाग और भिक्षुनीविभाग । खग्नक के अतगत दा ग्रन्थ हैं—महावग्ग और चल्लुवग्ग । विनय पिटक का मार परिवार है और उसम प्रश्नोत्तर रूप मे बौद्ध भिक्षुआ के नियम व कर्तव्य दिए गए हैं । सुत पिटक—एस पिटक क अतगत पाच निकाय है—(१) दीघ निकाय (२) मज्जिम निकाय (३) अगुतर निकाय (४) सयुक्त निकाय और (५) खुद्दकनिकाय । दापनिकाय क तान खण्ड है और उनम कुस मिलाकर ३४ दीर्घावार सुत या सूत्र हैं । इनम सबसे अधिक प्रसिद्ध महापरिनिस्वानसुत है । मज्जिम निकाय म बुज मिलाकर मध्य आवार क १२५ सुत है । अगुतरनिकाय के कुल सुता की संख्या २३०० है जिन्हें ११ खण्डा म विभक्त किया गया है । सयुक्तनिकाय म ५६ सुत हैं जिह पाच वग्गा (वर्गों) म बाटा गया है । खुद्दकनिकाय के अतगत १५ विविध पुस्तक है जिनके नाम निम्नलिखित हैं—खुद्दक पाठ, धम्मपद उदान ऋत्तिवुत्तक सुतपिपात विमानवत्थु थेरगाथा थेरीगाथा जानक निहम पहिमभिदा, अपदान बुद्धबन्ध और चरियापिटक । इनम ५७० क लगभग कथायें दी गई हैं जिन्हें महात्मा बुद्ध के पूव जन्मा की कथाआ क रूप म लिखा गया है । अभि धम्म पिटक—इस पिटक म बौद्ध धम का दार्शनिक विवेचन और आध्यात्मवित्तन सम्मिलित है । इसके अतगत मात ग्रन्थ हैं—(१) धम्मसगनि (२) विभाग, (३) धातु कथा (४) पुत्र पजति (५) कथावत्थु (६) यमक और (७) पट्टान । बौद्ध धम के निम साहित्य का हमन ऊपर परिचय दिया है वह पालि भाषा म है । ●

यू० पी० एग्रो

एग्रो व उनत कृषि यत्न जसे विभिन्न धान्य कृषि व धान्य घाटाव धान्य पाक टिलर कटीबटर विदेशी डिस्क वाल डिस्क पैरा घोर डिस्क पाउ गाड वम पम्पाइजर ड्रिल (शक्ति चालित) स्टोरेज बिन ३ से ५ टन व भार की क्षमता वाला ट्रान्मिटर घाटि कृषि जगत म अपने गुण और मजबूती व लिए प्रसिद्ध है ।

- श्वेत प्राति का सपन बनाने व लिए एग्रो म अनुचित पत्र तथा कुत्रुत्र घाटाव निर्मित किए जात है । ये पीटिव एव उन्वकारि क है । एग्रो उन्नत किरण तथा रिमाना को राष्ट्रापट्टत बना से फमल कृण दिवाने का एव प्रमुख क है ।
- उत्तम मिचार्ड व लिए एग्रो द्वारा पपिग सेट बचो सगान तथा मरम्मा का उगम व्यवस्था है ।
- एग्रो विदशा ट्रक्टर का वितरण करता है ।
- एग्रो द्वारा हाई काबन स्टील से निर्मित जीटर ट्रक्टर व शपर पाउ भी रिमाना का उनकी वास्तविक आवश्यकतानुसार बच जान है ।
- एग्रो द्वारा पुराने ट्रक्टर का नवीनीकरण बाय भी होता है ।
- एग्रो द्वारा किसानों व खत जातने तथा धनाज को मढाई की सुविधाए भी स्यावक स्तर पर उपलब्ध है ।
- कम्बाइन हारवेस्टर तथा रीपर बाउ डर जैसे कृषि यंत्रा म फगत कढाई की व्यवस्था भी एग्रो द्वारा की जानी है ।
- ताज फला और सजिया से बन हुए एग्रो व वातल बाउ तथा डि वा बा घाघ पनाय तथा शुद्ध मसाले घर घर म पसंद किय जाते है ।
- एग्रो द्वारा संचालित स्वयं जीविकोपार्जन योजना बकार कृषि तथा इंजीनियरिंग म्नातका के लिए उन्नति का भवसर है । एग्रो प्रशिक्षण तथा आर्थिक सहायता प्रदान कर उन्हें एग्रो सेवा केन्द्रों की स्थापना तथा स्वावलम्बी होने हेतु प्रोत्साहित करता है ।
आप हमारी सेवाओं से लाभ उठाने व लिए सादर आमंत्रित है ।

विस्तृत जानकारी हेतु संपक करें

सचिव

यू० पी० स्टेट एग्रो इन्डस्ट्रियल कारपोरेशन लि०

२२ विधान सभा मार्ग लखनऊ ।

: ६ :

भारतीय विचारक

महापुरुष एव समाज-सुधारक

भारत ऋषि-मुनियों एव महापुरुषों का घमघ्राण देश है । विभिन्न कालों में अनेक ऋषि महात्मा, महापुरुषों एव समाज-सुधारकों ने नान्वितकता एव समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करके आध्यात्मिकता एव नतिकता का प्रचार प्रसार किया । इन महान पुरुषों के कारण ही भारत ने जगतगुरु पद प्राप्त किया ।

महर्षि वैदव्यास ये महर्षि पाराशरक पुत्र थे । उन्होंने वेद ज्ञान को संकलित किया इसलिए वेदव्यास कहलाये । बाद में उन्होंने पुराणों का संकलन किया । महाभारत के रचयिता भी वेदव्यास ही थे । वेदांत दर्शन की भाँति उन्होंने रचना की ।

मनु मनु ने ही 'मनुस्मृति' के रूप में मानव (व्यक्ति एव समाज) के लिए प्रथम आचार विचार संहिता की रचना की । मनु ने महर्षि भृगु में ज्ञान प्राप्त किया था । मनु स्मृति घमघ्राण एव समाजशास्त्र का मुख्य आधार है ।

महर्षि घातकवल्क्य मिथिला में महाराजा विदेह की सभा में गार्गी से उनका शास्त्राध्यय हुआ । उन्होंने जनपथ ब्राह्मण 'प्रतिज्ञामूत्र एव याज्ञवल्क्य स्मृति' की रचना की । उन्होंने व्याकरण, धनुर्वेद तथा आयुर्वेद पर भी कुछ ग्रंथ लिखे ।

आदि कवि वाल्मीकि 'मा निपाद प्रतिष्ठा त्वमगम आश्रयती ममा यत् श्रीऽचमियुनादेकमवधी काममाहितम् ।

आदि कवि के मुख से प्रथम उपयुक्त श्लोक व्यास द्वारा श्रीच पत्नी के जाड़े में से एक को मारे जाने पर निकला । वाल्मीकि प्रारम्भ में लूटमार व हिंसा करने वाले का पालन करते थे । एक बार घर वालों के इस उत्तर में कि 'लूट आप करते हैं अतः फल भी आप ही भागें हम क्या?' उनका जीवन बदल गया । वाल्मीकि ने पापों के प्रायश्चित्त के लिए तपस्या की । वे महर्षि बन गये । तपसा तट पर उनके आश्रम में श्री राम द्वारा निर्वासिता सीता रही, वही सब-कुछ हुए । उन्होंने सस्कृत में रामायण की रचना की ।

महर्षि पतञ्जलि पाणिनी के व्याकरण पर महामाध्य के अतिरिक्त उन्होंने वैदिक शास्त्र, व्याकरण शास्त्र एव योग शास्त्र की रचना की । आयुर्वेद शास्त्र के क्षेत्र में बड़ी चरक कहलाये । योग व तपस्या के बल पर उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अथाह ज्ञान प्राप्त किया ।

महावीर जनधर्म के २४वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर का जन्म वज्जि गणराज्य के शातृव राजकुल में हुआ था । ३० वर्ष की आयु में सिन्धु जाकर उन्होंने नेवर्ण पद प्राप्त

किया तथा धर्म का प्रचार किया। पावापुरी (बिहार) में धर्मप्रचार करते हुए ५२० ई० पू० में उनका निधन हुआ।

गौतम बुद्ध सुम्बिनी उद्यान में ५६७ ई० पू० महाराजा शुद्धोदन के घर सिद्धार्थ का जन्म हुआ। अचानक सामारिक माया के कुछ दृश्य देखकर वे गृहस्थी से विरक्त हो भाग निकले। गया में वट वृक्ष के नीचे तपस्या करने के बाद उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की। वे हिंसा व उच्च नीच की भावना के प्रबल विरोधी थे तथा समानता के पापक।

आज्ञ जगद्गुरु शंकराचार्य जिम समय भारत पर बौद्धों का प्रभाव बढ़ रहा था उस समय करल के एक नम्बूद्रीपात्र ब्राह्मण के घर में शंकर ने जन्म लिया। शंकर ने अल्पायु में ही वेद शास्त्रों का गहन अध्ययन करके सनातनधर्म की रक्षा के लिए नास्तिकता का शास्त्रार्थ की चुनौती दी। उन्होंने समस्त देश की यात्रा की तथा सनातनधर्म की पुनः स्थापना की। आचार्य शंकर ने पुरी द्वारका शृंगरी एवं बद्रीनाथ में अपने पीठ स्थापित करके एक एक शिष्य पर देश के चारों ओर धर्म प्रचार का भार सौंपा। उन्होंने अनेक शास्त्रों का भाष्य किया। उनके शास्त्रार्थों से पराजित होकर अनेक बौद्ध विद्वानों ने सनातनधर्म की शरण ग्रहण की। उनके अद्वैतवादा का न केवल भारत अपितु विदेशों में भी भारी प्रभाव पड़ा। आज भी उनके द्वारा स्थापित चारों पीठों पर उनके उत्तराधिकारियों के रूप में आचार्य अर्धस्थित हैं।

श्री रामानुजाचार्य श्री रामानुजाचार्य का जन्म दक्षिण भारत के तिरुचुर नामक ग्राम में हुआ। उन्होंने वाची में विद्या के शास्त्रों का अध्ययन किया तथा सम्पूर्ण भारत की यात्रा करके धर्म प्रचार किया। विशिष्टान्त मत का प्रचार किया तथा प्रस्थानत्रयी का भाष्य किया। आराम में श्री रंगनाथ मंदिर का विस्तार कराया। आचार्य रामानुज की परम्परा में अनेक अन्य उच्चकोटि के विद्वानों आचार्य हुए हैं।

श्री माधवाचार्य श्री माधवाचार्य का जन्म विष्णु सम्बत १२६५ में मद्रास के वेल्लि नामक ग्राम में हुआ था। उनका बचपन का नाम वासुदेव था। ११ वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने मयाम नगर धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर लिया तथा गीता का भाष्य किया। देश का भ्रमण करके उन्होंने भक्ति की धारा प्रवाहित की। उन्होंने द्वैत मत का प्रचार किया।

श्री निम्बार्काचार्य गोदावरी के तट पर वटपत्तन के निकट श्री अष्टमूर्ति के घर नियमान्त का जन्म हुआ। वे ही प्रायः चलकर निम्बार्काचार्य के नाम से विख्यात हुए। उन्होंने वेदांत सूत्रों पर बहान पारिजात सौरभ के नाम से भाष्य लिखा। श्रीमद्भागवत का प्रमुख धर्मग्रंथ मानकर उन्होंने दश में दत्तान्त सिद्धान्त का प्रचार किया।

श्री बल्लभाचार्य श्री बल्लभाचार्य का जन्म दक्षिण भारत के एक विद्वान तलग ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने ग्यारह वर्ष की आयु में ही वाशी में श्री माधवेन्द्रपुरी नामक शास्त्रज्ञ विद्वान में शास्त्राध्ययन किया। दश की धर्मप्रचार यात्रा की तथा पंडिता से शास्त्रार्थ किया। उन्होंने गण्डान सिद्धान्त की प्रतिष्ठापना की। वे पुष्टि मार्ग के सम्पापक थे।

श्री रामानुजाचार्य मुगलों के समय में पीड़ित हिन्दू जनता में भक्ति की भावना के द्वारा धार्मिकविश्राम उत्पन्न करने वाला आचार्य रामानुज का नाम प्रमुख है। मत कबीर नाम के आचार्य रामानुज से ही रामनाम का दावा भी था। उन्होंने शिव और वृष्णवादी के द्वेष का दूर किया तथा हिन्दू जनता में मुमनमान शांति के आचार्य का धर्मप्रवर्क सामना करने का भावना जगाने का। उन्होंने उच्च-नीच की भावना का अधम बताया तथा एकता के गमना का प्रचार किया।

चतुर्थ महाप्रभु जम बगाल के नदिया ग्राम म हुआ था। जम का नाम निमाई था। अल्पायु म ही पांडित्य प्राप्त कर लिया तथा तत्पश्चात् भक्ति की आरंभ प्रारंभ हुए। उन्होने श्रीमन्भागवत का ही गीता एव ब्रह्मसूत्र का भाष्य माना। भगवन्नाम सकीर्तन का वे मुक्ति का साधन मानत थे।

समथगुरु रामदास औरगजेव के अत्याचारा से क्रुस्त हिन्दू जनता म नवचतना उत्पन्न करन क लिए महाराष्ट्र म समथगुरु रामदास का जन्म हुआ था। बारह वष की धार तपस्या के पश्चात् श्री ममथ न ब्रह्मिनाथ से रामश्वरम तक की तीर्थ यात्रा की तथा अनन्व स्थाना पर भगवान राम व महावीर हनुमान के मंदिर स्थापित कराये। उन्होने श्री राम जयराम-जय-जय राम का महामन्त्र हिन्दू जनता को दिया तथा शिवाजी का भुगत साम्राज्य ध्वस्त करके हिन्दूराज्य स्थापित करने की प्रेरणा दी। 'दासबाध समथगुरु रामदास का प्रसिद्ध ग्रंथ ह।

सत तुकाराम उनका जन्म सम्बत् १६६५ म महाराष्ट्र म हुआ था। अल्पायु म ही वे भजन कीर्तन एव स्वाध्याय मे लीन रहन लगे। उन्होने प्रभु भक्ति क अनन्व पद रच। सत तुकाराम भगवान विठ्ठलनाथ के उपासक थे। कुछ कट्टरपथी ब्राह्मणा ने उन्हे शत्रु बता कर उनक विरुद्ध प्रचार किया किन्तु उन्होने यह सिद्ध कर दिखाया कि भगवान क मंदिर म कोई ऊच-नीच नहा ह, सब बराबर हैं। छत्रपति शिवाजी का समथगुरु रामदास म साक्षात् कार कराने वाल सत तुकाराम ही थे। उनके अभंग महाराष्ट्र म बहुत लोकप्रिय है।

सत ज्ञानेश्वर उनका जन्म भी महाराष्ट्र म ही हुआ था। उनका भी कट्टरपथी ब्राह्मणा ने अस्पृश्य बताकर घणा प्रकट की किन्तु उन्होने चमत्कार दिखाकर कट्टरपथिया का लज्जित कर दिया। १५ वष की आयु म ही ज्ञानेश्वरी गीताभाष्य कर लिया। सत ज्ञानेश्वर ऊच-नीच की भावना क प्रबल विरोधी थे।

सत एकनाथ पठण (महाराष्ट्र) म जन्म लेन क बाद केवल सात वष की आयु म ही उन्होने शूलभजन पवत पर भगवान श्रीकृष्ण की उपासना की। चतु श्लोकी भागवत पर आवी छल्ल म एक ग्रंथ लिखा। वे प्राणीमात्र म भगवान क दशन करत थे। गंगात्री स गंगाजल की कावर नकर रामेश्वरम् जात समय रास्त म प्यास से तटपन गधे का उन्होने गंगाजन पिना लिया साक्षात् रामेश्वरम् न प्रगट हाकर उन्हे दशन लिये। इसी प्रकार पित श्राद्ध क समय पाच भूखे चमारा का उन्होने भाजन कराया। इस पर ब्राह्मणा न भाजन करन म इन्कार कर दिया, किन्तु पितरा न साक्षात् प्रकट हाकर श्राद्ध भाजन ग्रहण किया। उन्होने भागवत एव एकादश स्कंध का भाष्य किया। रक्तिमणी स्वयंवर एव रामायण भी लिखा।

सत नामदेव छापी परिवार म जन्मे मन नामदेव की भक्ति स प्रभावित होकर अनन्व ब्राह्मणा का भी उनका शिष्यत्व स्वीकार करना पडा। पठरपुर मे विठ्ठल भगवान की उपासना की तथा घमडी ब्राह्मणा के मन को चूर करके भगवद-साक्षात्कार किया। सत ज्ञानेश्वर जी क साथ तीर्थयात्रा करके भगवन्नाम सकीर्तन का प्रचार किया। पञ्जाब जाकर वहा भी भक्ति की धारा प्रवाहित की। गुरुमुखा म नामदेव की 'जन्मसाखी' लिखी गई। गुरु ग्रंथ-माह्व म उनक पन् मिनत हैं।

गुरु गोरखनाथ वे नेपाल क सिद्ध मन मत्स्येन्द्रनाथ के प्रमुख शिष्य थे। उन्होने तप एव हठ्याग का उद्धार किया तथा सिद्धि प्राप्त की। उन्होने आनन्द, प्रमाद,

भाग तथा भक्तभाव की भावना का प्रबल विरोध करने तथा त्याग एवं योग को साधना का माग बताया। उनका नाथ सम्प्रदाय का भारत का अतिरिक्त नेपाल में भी प्रमुख स्थान है।

सन कबीरदास छुआछूत पाखंड एवं कुरीतिया पर तांत्र प्रहार करने वाले सत कबीरदास ने स्वामी रामानंद से राम-नाम की दीक्षा प्राप्त करके बपड़ा बुनन के साथ-साथ गुरु निम्न प्रारम्भ किया। दाग एवं पाखंड पर उन्होंने अपनी साखिया में तीव्र व्यंग्य किया तथा ब्राह्मण-रहित भक्ति का प्रचार किया। वे राम के उपासक थे। उनके दोहा में वेद रामायण व पुराणा का मार है।

गुरु नानकदेव मिय पय के सस्थापक सत नानकदेव का जन्म १४६९ ई० में पंजाब के तनखड़ी गांव में हुआ था। भक्तभाव एवं घणा को त्यागकर एक ईश्वर की आराधना का उन्होंने सन्देश दिया। तीर्थयात्रा के बन्धन व बलौचिस्तान होते हुए बगदाद इरान के धार तथा मक्का तक गये तथा ईश्वर भक्ति का प्रचार किया। ईश्वर की सर्वव्यापकता का उन्होंने अपने शिष्यवृत्तों में मिथ्य कर दिखाया। गुरु ग्रथसाहब में नानकदेव की अमर वाणिया का संग्रह है।

सत तुलसीदास मुगल के अत्याचारों से ब्रह्म हिंदू जनता में मयादा पुरपातम भगवान श्रीराम के तजस्वी जीवन चरित्र से आशा का मचार करने वाले गोस्वामी तुलसीदास का भारत के जनजीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने रामचरितमानस लिखकर जनता में धार्मिक धनता गान की तथा अत्याचारों से प्रबल मक्षय करने का साहस उत्पन्न किया। सन् १६३१ में गोस्वामाजी ने अयोध्या में रामचरितमानस लिखना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् काशी के श्रीमहादेव पर उनकी भक्ति एवं तपना दोनों चरिता रहा। गोस्वामाजी ने कवितावनी दासकता विनयपत्रिका जानकीमंगल पावतामंगल आदि की भी रचना की। उन्होंने ब्रज भाषा व अवधी में काव्य रिया।

राजा राममाहाराय बंगाल के राधानगर में सन् १७७६ ई० में उनका जन्म हुआ। फारुका पत्न के साथ वे मस्जिद पढ़ने के लिए काशी भेजे गये। उपनिषद् से एक ही ब्रह्म की प्रकृति प्राप्त करके उन्होंने बहुदेवतावाद का विरोध किया। वगवधम में प्राप्त कुरीतिया का उन्होंने खण्ड किया। हिंदू समाज में कुछ समय में मंत्रिया के साथ होने वाले अत्याचारों का उन्होंने विरोध किया। सन् १८०८ ई० में ब्रह्मसमाज की स्थापना की तथा सती प्रथा का विरोध करके विधवाओं का विरोध किया। वे स्वामी शिवा तथा स्त्री-मुखा के समानाधिकार के प्रबल समर्थक थे। उनका प्रथम से स्त्री शिवा का भारी प्रसार हुआ। अपने विचारों के प्रसारण के लिए सन् १८२३ ई० का वे उनका निधन हो गया।

स्वामी रामानंद सरस्वती सन् १८४६ ई० में काशीवाड़ के टकाग गांव में उन्होंने जन्म लिया। मधुरा में स्वामी विष्णुदास से शिवा प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने हिंदू समाज में अज्ञान कुरीतिया पर प्रहार करने का बाड़ा उठाया व रामसमाज का स्थापना का। उन्होंने मतिपुत्रा अवतारवादी मत के आडू अग्रगण्यता आदि का विरोध किया तथा काशी के कुरूपता मनापना पढ़िना में शांतिपत्रिका लिखा। वेद का गुरु भाष्य किया तथा मयाय प्रकाश के गान-निर्दिष्ट किया। गणपतिपत्रिका से उन्होंने अज्ञान धर्मिता मना का तजपूण खण्ड किया तथा अग्रगण्यता के अज्ञान का धर्म विरोध मिथ्य किया। स्वामाजी ने वेद विरोध का विरोध किया व विधवा विवाह का समर्थन। उन्होंने मयाय पत्न विन्नी का सप्ट

भापा का नाम दिया, गाहत्यावनी की भाग की तथा भारत की स्वाधीनता की ज्याति प्रज्ज्वलित की। उन्हें बड़े बार जान से मार डालने का प्रयास किया गया। जाधपुर में घोड़े से भोजन में विष दिये जान से १६ अक्तूबर १८८३ ई० को ६० वर्ष की आयु में इनका निधन हुआ गया।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस हुगली जिले के कामारपुर ग्राम में १८ फरवरी १८३६ ई० का श्री खुनाराम चट्टोपाध्याय के घर में बालक गदाधर का जन्म हुआ। इसी बालक में आगे चलकर मा काली के मंदिर के पुजारी के रूप में धर्म साधना प्रारम्भ की। काली उपासना के अतिरिक्त उन्होंने राम व कृष्ण के नाम का सकीर्तन किया। काली मा ने उन्हें साक्षात् दर्शन देकर मिद्ध सत बना दिया। वे अत्यन्त त्यागी व विरिक्त सत थे। नरेंद्र जमे नाम्निक् युवक को स्वामी विवेकानन्द बनाने वाले परमहंस ही थे। १५ अगस्त १८८६ ई० को वे ब्रह्मलीन हुए।

सत नारायण गुरु केरन के एक गांव में १८५४ ई० में एडवार (पिछडी) जाति में जन्म हुआ। उस समय पिछडी जाति के लोगों को अछूत मानकर उनसे दुर्व्यवहार किया जाता था तथा मंदिरों में नहीं जान दिया जाता था जिसके कारण पिछडी जाति के लोग धर्म परिवर्तन करने का वाद्य हो रहे थे। सत जी ने एडवार जाति के २० लाख व्यक्तियों में हिंदू धर्म को प्रति गौरव की भावना जागृत की तथा उनके लिये स्थान-स्थान पर नए मंदिर व विद्यालय बनवाए। उन्होंने अपने अनुयायियों का स्वधर्म पर मर मिटने तथा 'एक जाति, एक धर्म व एक भगवान' की प्रेरणा दी तथा धर्मांतरित होने से रक्षा। रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह करके उन्होंने हिंदू धर्म शास्त्रों की महत्ता का प्रचार किया।

लोकमान्य तिलक 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' के उद्घोषण वाले गंगाधर तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ ई० का रत्नागिरि में हुआ था। कमरी व मराठा के सम्पादक के रूप में उन्होंने जहाँ देश की स्वाधीनता की ज्याति जलाई वहाँ हिंदू धर्म की महत्ता, गारक्षा एवं भुवका में नतिकता उत्पन्न करने में भारी योगदान दिया। १९०२ ई० में जब अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार करके माडले जेल भेज दिया तो जेल में ही उन्होंने गाथा रचिस्य लिखा। ३१ जुलाई १९२० ई० को उनका निधन हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जालंधर जिले के तलवन गांव में १८५९ ई० में जन्म हुआ। काशी में शिक्षा-दीक्षा हुई। बरेली में स्वामी दयानन्द जी के मत्संग से प्रभावित होकर आयसमाज को जीवन समर्पित कर दिया। सस्कृत एवं बन्कि धर्म के प्रचार के लिए जालंधर व अन्य स्थानों पर क्या महाविद्यालयों की स्थापना कराई। गुरुकुल की स्थापना की। अंतिम समय तक गुरुकुल के प्रचार व प्रसार में लगे रहे। विधर्मी बनाये गये हिंदुओं का शुद्ध करके पुनर्बुद्धि धर्म में लाने के लिए शुद्धि आंदोलन चलाया। २३ दिसम्बर १९२६ ई० का अटुल रशीद नामक एक मताध्य व्यक्ति ने उनकी गानी मारकर हत्या कर दी।

महामना प० मदनमोहन मालवीय मालवीयजी का जन्म २५ दिसम्बर १८६१ ई० का तीर्थराज प्रयाग में हुआ था। वेन्द्र मनातनधर्मी थे। हिंदू सस्कृति का प्रचार एवं गारक्षा उनके मुख्य लक्ष्य थे। पुराणों पर उनकी दृष्ट आस्था थी। महामना ने भारतीय शिक्षा पद्धति व प्रसार के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। अस्पृश्यता का वे अधर्म मानते थे। स्त्री व अछूतों का उन्होंने मन्त्र व यज्ञोपवीत का अधिकार दिया तथा हरिजन मंदिर प्रवेश का धुला ममथन किया। समाज सुधार व शिक्षा प्रसार के साथ-साथ राष्ट्रीय आंदोलन में उन्होंने भाग लिया। अम्युदय का सम्पादन किया। नामाखाला के हत्याकांड के समाचारों से उन्हें

घ्राघात लगा व १२ नवम्बर १९४६ ई० को उनका निधन हो गया ।

स्वामी विवेकानन्द १२ जनवरी १८६३ ई० का बंगाली परिवार में उत्पन्न हुआ। बाल्य में अध्ययन करते समय नास्तिकता व भौतिकवाद में धारणा ली। जब एक दिन स्वामी रामकृष्ण परमहंस से भेंट व समय नरुद्र न कहा— यदि ईश्वर है तो क्या आप उस लिखा सकते हैं ? परमहंस ने हमसे हूए कहा दिया यह रहा ईश्वर वगैरे फिर क्या था नरुद्र परम आत्मिक बन गया व प्रायः चलकर स्वामी विवेकानन्द व नाम से विख्यात हुआ । सन् १८९३ ई० में शिवागा का विश्वधर्म परिषद् में भाग लेने व प्रतिनिधि व रूप में भाग लिया । तीन वर्षों तक उन्होंने अमेरिका में हिन्दू धर्म व भारत की महत्ता का प्रचार किया । स्वामी विवेकानन्द ने धोषणा की— आध्यात्मविद्या हिन्दूधर्म का ज्ञान व बिना विश्व अनाथ हो जायगा । स्वामी विवेकानन्द ने अस्पृश्यता शापण तथा ब्राह्मण पर प्रहार किये । दरिद्रनारायण की सेवा का उन्होंने सबसे बड़ा धर्म बताया । अमेरिका व ब्राइटन स्वाटजरलड आदि देशों में पहुंचकर हिन्दू धर्म का प्रचार किया । उन्होंने मानवतावादिया से कहा कि धर्म अनुभूति की वस्तु है तब की नहीं ।

योगीश्वर अरविन्द उनका जन्म १८७१ ई० में बंगाल में हुआ था । उन्होंने अपने राजस्वी लेखा व भाषणा द्वारा शिक्षित समुदाय में राष्ट्रीयता व अक्षुर उत्पन्न किये । उन्होंने आह्वान किया कि राष्ट्र माता है जगज्जननी का स्वरूप है वंशेभारतम् मातमात्र न होकर एक मन्त्र है । श्रातिकारियों से भी उनका सम्पर्क रहा । राष्ट्रभक्ति व आराधना में उन्हें जन की यातनाएँ सहन करनी पड़ी । जल में उन्होंने आध्यात्म माधना की व भगवान् श्रृष्टि का साक्षात्कार किया । पाणीचेरी में एक आश्रम की स्थापना की । १९५० में निधन हो गया ।

स्वामी रामतीर्थ उनका जन्म २२ अक्टूबर १८७३ ई० का दीपावली व दूसरे दिन पञ्जाब के मुरालीवान गाँव में हुआ था । प्रारम्भिक नाम तीर्थराम था । अल्पयम में ही धार्मिक रुचि उत्पन्न हो गयी किन्तु माय ही पत्नी में भी भारी रुचि रही तथा भद्रिक से एम० ए० तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । गणित में विशेष योग्यता प्राप्त की । रामतीर्थ भगवान् श्रृष्टि की भक्ति में तल्लीन रहते थे । हाने भारत में धर्म प्रचार व बाद जापान व अमेरिका में हिन्दू सभ्यता का प्रचार किया । पश्चात्य विद्वान् उनकी विद्वान्ता एवं वक्तव्य शक्ति से भारी प्रभावित हुए । सन् १९०६ ई० में २३ वर्ष की आयु में दीपावली व दिन उनका देहांत हो गया ।

महात्मा गांधी अंग्रेजों भारत छोड़ो के उदघोषक—महात्माजी उन समाज सुधारक महापुरुषों में से थे जिन्होंने हरिजनोद्धार का प्राथमिकता देकर अस्पृश्यतारूपी दानव के नाश का कर्म उठाया । उनका जन्म २ अक्टूबर १८६९ ई० का पारखेदर में हुआ था । उन्होंने ऊँच-नीच व भेदभाव के विरुद्ध जन आन्दोलन प्रारम्भ किया तथा स्वदेशी का प्रचार किया । स्वाधीनता आन्दोलन के साथ-साथ उन्होंने समाज सुधार आन्दोलन प्रारम्भ किये तथा सफलता प्राप्त की । गांधी जी रामभक्त थे तथा गीता रामायण के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी । रामनाम में वे अत्यन्त शक्ति मानते थे । धार्मिक सहिष्णुता के लिए व राजम कायरत रहे । उनके मन में राम रहाम में कोई भेद नहीं था । जाति-पाति के व बड़े विराधी थे तथा उन्होंने अपने आश्रम में अनेक हरिजन-ब्राह्मण विवाह कराकर जन्मगत जाति प्रथा का उन्मूलन किया । सत्य अहिंसा को व सबसे बड़ा अस्त्र मानते थे इसीलिए अंग्रेजों के विरुद्ध उन्होंने

हिंसा का कभी समयन नहीं किया तथा अहिंसात्मक 'सत्याग्रह' को माधन बनाया। ३० जनवरी १९४८ ई० को उनकी हत्या कर दी गई।

डा० हेडगेवार सन् १९४६ म वष प्रतिपदा के दिन नागपुर म श्री वलीराम पन्त के घर जन्म हुआ। बचपन म ही स्वाधीनता आंदानन म कूद पडे। सन १९२४ ई० म विजया दशमी के दिन हिंदू सगठन के लक्ष्य की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय स्वयमेवक सघ की स्थापना की। हिन्दू समाज म व्याप्त ऊच-नीच व अस्पश्यता की भावना को समाप्त करके मभी को एक सगठन-सूत्र म बाधने की दिशा मे प्रयत्न प्रारम्भ किया। हिंदू समाज म स्वराज्य के लिए जागति उत्पन्न की। अनुशासित जीवन को सफलता का प्रमुख साधन प्रतिपात्त किया। उनका मूलमन्त्र था— 'आपसी भेदभावा का समाप्त करके पूणरूपेण सगठित एव अनुशासित हाकर राष्ट्र व समाज की सेवा म सलग्न रहना।' सन १९४० ई० म उनका स्वगवाम हो गया।

आर्थिक श्रान्ति और प्रदेश की सुख-समृद्धि के लिए
उत्तर प्रदेश राज्य सहकार भूमि विकास बैंक लिमिटेड
 १० माल एवेयू, प्रधान कार्यालय लखनऊ
 द्वारा संचालित

सावधि जमा योजना

आपकी वचत अब आपको अधिक आर्थिक लाभ दे सकती है।

विशेष आकर्षण

- (१) जमा योजना कम से कम १००००० या १०००० के गुणक मे ही एरु वष एव दो वष के लिए धन लिया जायेगा।
- (२) जमा धन पर एक वष के लिए ७% तथा दो वष के लिए ७।१% का वार्षिक व्याज मिलेगा।
- (३) आप अपनी सुविधानुसार बैंक की किसी शाखा पर धन जमा कर सकते हैं।

इस अवसर का अवश्य लाभ उठाइये तथा प्रदेश की प्रगति म सहयोग प्रदान करें। विशेष जानकारी के लिए बक की निकटतम शाखा या बक मुख्यालय पर पधार कर अनुगृहीत करने की कपा करें।

श्रीमप्रकाश शर्मा
 सचिव

राधेकृष्ण गुप्त
 सभारति

३१ मार्च १९७३ को बक की आर्थिक स्थिति

(घनराशि लाख रु मे)

१ अश पूजी	६२१-६७
२ वायशील पूजी	१३६३३-७१
३ सदस्या पर लगा ऋण	११८५२-६७
४ कुल निर्मित ऋणपत्र (मूलधन एव व्याज राज्य सरकार द्वारा प्रत्याभूति)	१३२०१-३१
५ शाखाभा की सख्या	२०३
६ कुल विनरित ऋण	१३३७३-३०

हम अपने शुभ चि तको को सहकारी माध्यम से श्वेत त्राति द्वारा उनके स्वास्थ्य एव सुखद भविष्य के लिये स्वास्थ्यवधक पैस्चुराईज्ड दध, पीप्टिक घलका मक्खन और धी उनके आवश्यकतानुसार सुलभ कराने मे अग्रसरित हैं ।

कृपया सेवा करने का अवसर प्रदान करे ।

राम किशोर त्रिपाठी

अध्यक्ष

बी० एस० चौहान

सचिव

लखनऊ प्रोड्यूसर्स कोआपरेटिव मिल्क
यूनियन लि०, लखनऊ ।

फोन -

नापलिय

फैक्टरी

सेल्स

26642

25839

23172

भारतीय पर्व और त्यौहार

भारत में विभिन्न मतावलम्बियों द्वारा जो पर्व व त्यौहार मनाये जाते हैं उनका देश की ऋतु, सांस्कृतिक व इतिहास से अटूट सम्बन्ध है। ये पर्व और त्यौहार जन जीवन में नया उल्लास व उत्साह भरने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में महायुक्त मिश्र होते हैं। भारतीय पर्वों के पीछे धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ वैज्ञानिक पृष्ठभूमि भी विद्यमान है।

राष्ट्रीय त्यौहारों में दीपावली, होली, विजयादशमी एवं रक्षावधन चार प्रमुख हैं। धार्मिक दृष्टि से शिवरात्रि, कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, दुर्गापूजा आदि प्रमुख पर्व हैं। जन समाज महावीर-जयन्ती, बौद्ध समाज बुद्ध जयन्ती एवं सिख समाज गुरु नानक-जयन्ती पर्व विशेष उत्साह से मनाता है। मुसलमानों के त्यौहारों में बकरीद, मुहर्रम, इदुलफ़ितर एवं रमजान प्रमुख हैं। ईसाई त्रिसप्तत, इस्टर-डे, गुडफ्राइडे आदि त्यौहार मनाते हैं।

दीपावली भारत का यह विजयोत्सव कहा जाता है। यह पर्व कार्तिक अमावस्या (अक्तूबर-नवम्बर) को पड़ता है। सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से यह त्यौहार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की राक्षसराज रावण पर विजय के बाद लका से अयोध्या लौटने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस राष्ट्रीय पर्व के पीछे बानानिक पुट यह है कि वर्षों में मकानों में जो सील व कीड़े मकोड़े मच्छर आदि पदा हा जाते हैं उन्हें दूर करने के लिए दीपावली पर्व पर मकानों व दुकानों की सफाई सफेदी एवं राक्षसों का जाती है। पौराणिक दृष्टि से यह पर्व लक्ष्मी-पूजन का पर्व है। इस दिन विशेष रूप से व्यापारी समाज नया बहीखाता बनाने के लक्ष्य में पूजन करता है।

छठ (सूय पूजन) यह पर्व दीपावली के बाद कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर) मास के शुक्ल पक्ष में पष्ठी एवं सप्तमी दो दिनों तक मनाया जाता है इसलिए इसे 'पष्ठी-व्रत' भी कहते हैं। यह वास्तव में सूयपूजन का पर्व है। इसमें पष्ठी की संध्या एवं सप्तमी की प्रातः क्रमशः डबल और उगत सूय की, किसी तालाब, झील या नदी के किनारे नारियल, कल एवं पकवानों (गहुँ और गुड से बने) का अर्घ्य दिया जाता है। छठ, बिहार का सर्वप्रमुख पर्व है तथा यह उत्तर प्रदेश, नेपाल, बंगाल आदि में भी मनाया जाता है।

विजयादशमी विजयादशमी पर्व अश्विन शुक्ल १० (सितम्बर अक्तूबर) का होता है। इस त्यौहार का दशहरा के नाम से भी पुकारते हैं। इतिहास एवं सांस्कृतिक दृष्टि से यह दिन भगवान श्रीराम द्वारा अघम पर धम की व अमत्य पर सत्य की विजय के पर्व के रूप में देश के कोने-कोने में मनाया जाता है। विजयादशमी से कुछ दिन पूर्व समस्त देश के

ग्राम ग्राम नगर-नगर में रामलीलाएं प्रारम्भ हो जाती हैं। विजयादशमी के दिन रामलीलाग्राम में रावण के बड़े-बड़े पुतला को जलाया जाता है। इस दिन शस्त्रास्त्रों का पूजन किया जाता है। दशहरे के दिन में ही आसुरी प्रवृत्तियाँ पर दैविक प्रवृत्तियाँ की विजय का प्रतीकस्वरूप देश में शक्ति-पूजा का रूप में दुर्गापूजा महात्सव मनाया जाता है। इस दिन माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था। बंगाल महाराष्ट्र बिहार असम नेपाल बंगला देश आदि में दुर्गापूजा पर विशेष उत्सव आयोजित किये जाते हैं। असुर का दशहरा समस्त देश में प्रसिद्ध है। भारत के अतिरिक्त नेपाल, इंडोनेशिया मारीशस व अन्य देशों में भी विजयादशमी उत्सव धूमधाम में मनाया जाता है।

रक्षावधन यह भाई बहन के पवित्र प्रेम का पर्व है। यह श्रावण मास की पूर्णमासी (अश्विनी) के दिन मनाया जाता है। रक्षावधन के दिन समस्त हिन्दू समाज में बहनें अपने भाइयों की बलाई में रक्षामूर्त (राखी) बाँधती हैं। पौराणिक कथा के अनुसार महाराजा इंद्र के काल में राक्षस साधु-मता व ब्राह्मणों पर अमानवीय अत्याचार करते थे। ब्राह्मणों ने इंद्र के पास जाकर उनको राक्षसों के उन्मूलन की प्रेरणा दी और स्मरण रखने के लिए इंद्र के हाथ में धागा बाँधा। इंद्र ने प्रतिज्ञा का पालन करते हुए राक्षसों का वध कर डाला। उसी उपलक्ष्य में यह प्रारम्भ हुआ तथा ब्राह्मण आज भी क्षत्रियों को राखी बाँधते हैं।

सरस्वती पूजा (वसंत पंचमी) माघ मास (फरवरी माघ) के शुक्ल पक्ष में पंचमी के दिन यह पर्व मनाया जाता है। इस अवसर पर विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। समस्त भारत में छात्र छात्राएँ इस त्यौहार को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इस अवसर पर सरस्वती की प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं तथा पूजन के दूसरे दिन विसर्जित होकर जन में प्रवाहित कर दी जाती हैं। इस तिथि को वसंत का आगमन दिन भी मानते हैं। इस दिन अनेक स्थानों पर हकीमतराय बलिदान दिवस भी मनाते हैं।

होली यह उत्साह व आमोत्सव प्रसाद का प्रमुख पर्व है। यह फाल्गुनी पूर्णिमा (माघ) को होता है। हानी पर बिना भेदभाव के समस्त हिन्दू जन आपस में गले मिलते हैं। एक दूसरे पर रंग व गुत्तल डालकर आमोत्सव करते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार होली का प्रारम्भ हिरण्यकश्यप के समय में हुआ। अतीश्वरवाणी हिरण्यकश्यप पर उसने ही ईश्वर विश्वासा पुत्र भक्त प्रह्लाद की विजय का यह पर्व है। पुत्र की हत्या के अनेक प्रयत्नों में अग्रपत्न्य हाकर हिरण्यकश्यप ने अपना बहन हालिका की गाँव में बठाकर प्रह्लाद को आग में जताना चाहा। हालिका का आग में न जलना का बरतान था। ईश्वर की विचित्र लीला कि होलिका तो जलकर राख हो गई किंतु प्रह्लाद का बाल बाका न हुआ। होली को रात लकड़ियाँ व गारर उपना के एक बड़े ढेर में आग लगाकर उस आग में गहूँ की बानियाँ भूनने की प्रथा है। इस नववन्धि पर्व का नाम में पुकारते हैं। यह हिन्दुओं का पुराने वष की समाप्ति एवं नव वष का प्रारम्भ का पर्व है।

महावीर जयन्ती भारत में जन मानव नन्दिया का काफी सन्ध्या है। व जनधर्म का मर्यादक भगवान महावीर का जन्मदिन प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाते हैं। महावीर जयन्ती के दिन समस्त देश में जन मन्दिरों का सजाया जाता है। मन्दिरों में जन धर्म से संबंधित उपदेश होते हैं तथा भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित धर्मों पर अतिरिक्त नव धर्मों के सिद्धान्तों पर विचार प्रकाश होत है।

बुद्ध जयन्ती पर्व बुद्ध जयन्ती समारोह प्रतिवर्ष वैशाखी पूर्णिमा (मई) को मनाया जाता है। यह गौतम बुद्ध (राजकुमार सिद्धार्थ) का जन्म, ज्ञान प्राप्ति एवं महानिर्वाण दिवस है। बुद्ध विहार में लामा भगवान बुद्ध की शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हैं। बुद्ध मतावलम्बी व्रतादि धार्मिक कार्य करते हैं तथा बुद्ध भगवान की शिक्षाओं पर चलन का व्रत लेते हैं।

नानक जयन्ती सिख मत के सस्थापक गुरु नानकदेव की जयन्ती प्रतिवर्ष समस्त देश में धूमधाम से मनाई जाती है। नानक जयन्ती पर गुरुद्वारा का सजाया जाता है उन पर रोशनी की जाती है तथा 'गुरु ग्रन्थ साहब' का स्थान-स्थान पर पाठ किया जाता है। नानक जयन्ती के अतिरिक्त सिख समाज गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस, गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस आदि समारोह भी मनाता है। गुरु गोविन्दसिंह का जन्मदिन पर पटना स्थित हर-मंदिर में एक विशाल समारोह आयोजित किया जाता है।

पाँचल जनवरी के महीने में किसान बग तमिलनाडु ममूर एवं आंध्र में पागल त्यौहार मनाता है। पागल भूय वरुण और वायु का फल की मफलता के लिये धन्यवाद देने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस दिन बला व गाया का मजावर उनकी पूजा की जाती है। इन प्रदेशों में पागल त्यौहार तीस दिन तक मनाया जाता है।

भोगम यह त्यौहार केरल में सितम्बर में वर्षा समाप्त होते ही असुर राजा महाबली की स्मृति में मनाया जाता है। इस दिन वसती रंग के कपड़े पहनकर लाग उल्लास मनाते हैं।

गणेश चतुर्थी बुद्धि का देवता गणेश की पूजा का यह पर्व है। यह चतुर्थी (अगस्त सितम्बर) के दिन मनाया जाता है। महाराष्ट्र में गणेश पूजा का भारी महत्व है। इस दिन के एक माह पूर्व से गणेश पूजन प्रारम्भ होकर मति विसर्जन किया जाता है। महाराष्ट्र में श्री लोचमाय तिलक न राष्ट्रीय दिवस के रूप में गणेश चतुर्थी पर्व मनाना प्रारम्भ किया था। इस पर्व के माध्यम से स्वाधीनता के प्रचार में भारी योगदान मिला। प्रतिवर्ष गणेश चतुर्थी के दिन मुख्य देश को स्वाधीन कराने की प्रतिज्ञा लेते थे।

कृष्ण जन्माष्टमी यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिन का रूप में भाद्रपद का कृष्णपक्ष की अष्टमी (जुलाई अगस्त) को सम्पूर्ण देश में मनाया जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर ब्रज विशेषकर गोकुल, मथुरा व वृन्दावन में विशेष उत्सव आयोजित किये जाते हैं।

रामनवमी चतुर्दशी ९ का मर्यादा पुस्तोत्तम भगवान श्री राम के जन्मदिवस का उपलक्ष्य में रामनवमी पर्व भी समस्त देश में मनाया जाता है।

शिवरात्रि फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी (माघ) को समस्त देश में शिवरात्रि पर्व मनाया जाता है। शिवरात्रि (मन्दिरा) का सजाया जाता है व धार्मिक श्रद्धालु रात्रि जागरण कर भगवान शिव की आराधना करते हैं। आयसमाजी शिवरात्रि पर्व को बोध दिवस के रूप में मनाते हैं। आयसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का इसी दिन ज्ञान प्राप्त हुआ था। शिवरात्रि पर्व पर लोगों में विशेष दर्शनीय आयोजन किये जाते हैं। भारत का अतिरिक्त नेपाल में शिवरात्रि महान पर्व के रूप में मनाया जाता है। वहाँ भगवान पशुपतिनाथ की पूजा का लिये अनेक देशों का हिन्दू पढ़ते हैं। मारीशस में भी शिवरात्रि पर्व विशेष समारोह के साथ मनाया जाता है।

द्वारा स्थापित पीठ है। बहा शकराचाय जी ने तपस्या की थी। बद्रीनाथपुरी अलकनन्दा के पवित्र तट पर बसी हुई है। मन्दिर का पुजारी रावल कहलाता है तथा वह केरल का नम्बूद्रीपाद ब्राह्मण ही होता है। उत्तर भारत के मन्दिर में दक्षिण का पुजारी रखा जाना राष्ट्रीय धार्मिक व सांस्कृतिक एकता का जीता जागता उदाहरण है।

हस्तिनापुर (मेरठ) कुरुवंश की प्राचीन राजधानी था।

कुशीनगर (देवरिया) भगवान बुद्ध का निर्वाणस्थल।

हरिद्वार हरिद्वार उत्तर प्रदेश में स्थित प्रमुख तीर्थस्थल है। गंगा गोमुख से निकलने के बाद मगनी क्षेत्र में आई तथा उसी मगनी क्षेत्र में हरिद्वार बसा हुआ है।

हरिद्वार में पहाड़िया की तलहटी के किनारे गंगा बहती है तथा उसी पर हर की पौड़ी बना हुई है। हर की पौड़ी के बिल्कुल पास ही ब्रह्मकुंड है। पौराणिक कथा के अनुसार अमन मथन के समय देवताओं व असुरों के बीच छीना-चपटी में अमन की एक बूद ब्रह्मकुंड में गिरी थी। ब्रह्मकुंड में स्नान करना मुक्ति का साधन कहा गया है। सप्तऋषि आश्रम भीमगंगा तथा अथ अनेक दशनीय स्थल हैं। हरिद्वार की पहाड़िया में मनसा देवी व चंडी के मन्दिर हैं। हरिद्वार में कुम्भ का मेला भी लगता है। शिक्षा की दृष्टि से भी हरिद्वार का अपना विशेष महत्व है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा जवालापुर महाविद्यालय के माध्यम से संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। हरिद्वार के पाम ही ऋषिकेश एवं लक्ष्मण पूजा तीर्थ हैं। ऋषिकेश में गंगा तट पर स्वर्गाश्रम, गंगा आश्रम तथा अथ अनेक मठ मन्दिर व सत्संग भवन बने हुए हैं।

काशी (वाराणसी) वाराणसी को प्राचीन शास्त्रों में काशी के नाम से सम्बोधित किया गया है। काशी आशुतोष भगवान शिव की नगरी मानी जाती है। पुराणों में काशी तीन लोकों से चारी कहकर इसकी महत्ता प्रदर्शित की गयी है। काशी में भगवान श्री विश्वनाथ का अत्यंत प्राचीन व विशाल मन्दिर है। विश्वनाथ मन्दिर के एक भाग को धर्मार्थ बाणशाह धौरगजब ने ध्वस्त करके उस पर मस्जिद का निर्माण कराया था वह मस्जिद आज भी विद्यमान है। काशी शिक्षा का प्रमुख केंद्र है। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय संसार के प्रमुख विश्वविद्यालयों में गिना जाता है।

प्रयाग प्रयाग पुराणों व प्राचीन ग्रंथों में तीर्थराज' के नाम से पुकारा गया है। अग्नि पुराण में इसे प्रजापति की बंदी तथा प्रजापति का क्षेत्र कहा गया है। प्रयाग में गंगा यमुना व सरस्वती का संगम है। महाराजा हर्षवर्धन हर पांचवें वर्ष प्रयाग पहुँचकर अपने राजकीय का एक बहुत बड़ा भाग दान करते थे। प्रयाग में त्रिवर्गी विदु माधव सोमेश्वर भारद्वाज आश्रम नाम बामुनी प्रियवट शपजी एवं दशाश्वमेध घाट दशनीय स्थल हैं। राजनीतिक दृष्टि में भी प्रयाग का भारी महत्व है। पं० मातोलाल नेहरू का निवास स्थान आनन्द भवन स्वाधीनता आन्दोलन का एक केंद्र रहा। आज वह राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में दर्जनाय स्थल है।

राजापुर गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्मस्थान।

धावस्ती हिमानय की उपासना में गौतमबुद्ध की जन्मस्थली।

चित्रकूट उत्तर प्रदेश में त्रिनागरी में स्थित चित्रकूट एक पवित्र तीर्थस्थल है।

मदाकिनी नदी के तट पर बसी इम नगरी मे भगवान श्रीराम लक्ष्मण व सीता ने बनवास के समय काफी दिना तक विश्राम किया था । कहा जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास ने भी चित्रकूट म ही तपस्या की थी तथा उन्हें भगवान श्रीराम का माधात्कार हुआ था । चित्रकूट मे तुलसी मंदिर भी दशनीय है । मदाकिनी के पास ही कामदगिरी नामक एक चोटी है जिस पर भगवान राम ने तपस्या की थी । इस स्थल की परिश्रमा की जाती है । पास ही हनुमान गढी, सीता रमोयी आदि पवित्र स्थल हैं ।

अयोध्या जिला फँजाबाद स्थित श्री अयोध्याजी भगवान श्रीराम की जन्मस्थली के रूप म दशनीय स्थल है । अयोध्या म श्री राम का ऐतिहासिक व प्राचीन मंदिर है । सरयू नदी के घाट दशनीय हैं । अयोध्या नगरी कभी अपने वैभव के लिए बड़ी प्रसिद्ध थी किन्तु अब वहा पर प्राचीन खण्डहर ही विद्यमान हैं । अयोध्या सप्त पुरिया म से प्रथम पुरी मानी गयी है । भगवान श्री राम से पूव के भी सूयवशी राजाघ्रा की यह राजधानी रही । अयोध्या नगरी पर अनेक बार मुसलमान बादशाहों ने आक्रमण कर उसे ध्वस्त करने के प्रयान किये । श्रीराम के जन्म-स्थल को ताडकर उस पर मस्जिद बनाई गई ।

मथुरा-वृन्दावन भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली व सीता भूमि होने के कारण ब्रज क्षेत्र का तीर्थो म अग्रणी स्थान है । मथुरा, वृन्दावन, गोकुल गोवधन बरसाना आदि भगवान श्रीकृष्ण के कारण प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं । मथुरा यमुना के किनारे बसा हुआ प्राचीन नगर है । यहां द्वारिकाधीश जी की मूर्ति म कामती होरा जडा हुआ है । वृन्दावन मंदिर का नगर है । रगजी के मंदिर म एक विशाल सोन का खम्भा है जिस पर कला का सुंदर चित्रण है । बाकेबिहागी जो का मंदिर भी विशेष दशनीय है । वृन्दावन के पास ही श्रीकृष्ण की जन्मस्थली गाकुल ग्राम है । तीर्थयात्री वृन्दावन के बाद गोकुल व बरसाना की यात्रा करते हैं । देश के अनेक श्रद्धालु नर-नारी ब्रज के साडे ८४ कोस क्षेत्र की परिश्रमा करते हैं ।

आगरा मुगल बादशाह द्वारा निर्मित 'ताजमहल के कारण यह विश्वभर के पयटका का आकर्षण केन्द्र है । ताजमहल के अतिरिक्त आगरा किला सिव दरा, आसफजहा का मकबरा आदि मुगल शैली के उत्कृष्ट नमूने हैं ।

फतेहपुर सीकरी आगरा से ३२ कि० मी० दूर यह ऐतिहासिक स्थल है । अकबर द्वारा निर्मित शेख सलीम चिश्ती का मकबरा दशनीय है ।

लखनऊ उत्तरप्रदेश की राजधानी के साथ-साथ यह नगर मुस्लिम सभ्यता का प्रतीक है । इमामबाबा मुस्लिम शैली का अद्भुत नमूना है । यहां के नवाबा की शान शोकात के सम्बन्ध म अनेक किस्से प्रचलित हैं । लक्ष्मण टीला नामक स्थान के कारण इस नगर का नामकरण हुआ होगा ऐसा माना जाता है । गोमती नदी शहर के बीच से बहती है ।

मसूरी यह देश के प्रमुख पर्वतीय स्थला मे से एक है । इसे पर्वता की रानी' के नाम से पुकारते हैं । यह लगभग दो हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित अत्यन्त रमणीक स्थल है । गमिया के दिनों म पयटका के लिए यह स्वर्ग ममान है । पाम ही चकरीता नामक सुंदर पयटन स्थल है ।

नैनीताल यह एक सुंदर व आकर्षक शील के किनारे बसा हुआ पर्वतीय स्थल है । यह समुद्र तल से २२०० मीटर ऊंचा है । इसके पास ही रानीखेत एवं भीमताल नामक

सुन्दर नगरी है। अल्मोडा भी ननीताल के पास ही है। उत्तरप्रदेश में मसूरी, ननीताल एवं अल्मोडा पवतीय स्थल है।

बिहार

पटना यह चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक की राजधानी पाटलिपुत्र के ध्वसावशेषों पर स्थापित अत्यन्त प्राचीन नगर है। एक हजार वर्ष तक भारत की राजधानी रहा है। सिखा के अन्तिम गुरु गाविर्दसिंह के जन्मस्थल के कारण यह सिखा का तीर्थस्थल भी है। हर मन्दिर के दशनाथ सिख यात्री आते हैं। यह बिहार की राजधानी है।

नालन्दा गुप्त सम्राटों द्वारा स्थापित नालन्दा विश्वविद्यालय कभी ससार का सर्वाधिक विशाल व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। १० हजार छात्र एक साथ अध्ययन करते थे। चीनी विद्वान ह्यूएनसांग ने उसमें सात वर्ष रहकर अध्ययन किया था। १३वीं शताब्दी में मुस्लिम आक्राताओं ने उस ध्वस्त कर डाला। आज भी विश्वविद्यालय के ध्वसावशेषों के दशनाथ दश विदेशों के पर्यटक आते हैं।

बुद्ध गया यह गया से १० कि० मी० की दूरी पर है। इसी नगरी में भगवान बुद्ध ने बोधि वृक्ष के नीचे बैठकर आत्मज्ञान प्राप्त किया था। अशोक द्वारा निर्मित ५५ मीटर ऊँचा बुद्ध का मन्दिर दशनीय है। श्राद्ध संस्कार के लिये गया प्रसिद्ध है।

वशाली यह लिच्छवी राजवंश की राजधानी थी। इसे वभ्रव की नगरी माना जाता था। गौतम बुद्ध ने भी कुछ समय वशाली में व्यतीत किया था अतः अशोक ने उनकी स्मृति में एक स्मृतिचिह्न बनवाया। गुप्त सम्राटों के समय वशाली सभ्यता का एक महान केंद्र थी।

पावापुरी जनमत के सत्पावन भगवान तीर्थंकर महावीर की निर्वाण स्थली के रूप में पावापुरी जनिया का प्रमुख तीर्थस्थल है। जलमन्दिर तथा अथ जन मन्दिर दशनीय हैं।

पारसनाथ पर्वत २४वें जनतीर्थंकर पारसनाथ का निर्वाणस्थल होने के कारण यह जनिया का तीर्थस्थल है। अत्यन्त रमणीय होने के कारण पर्यटक भारी मण्ड्या में आते हैं। पहाड़ों पर पारसनाथजी के चरण चिह्न तथा मन्दिर हैं। यह हजारीबाग से लगभग ८० कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

रांची यह बिहार का पवतीय स्थल है। इस नगरी की प्राकृतिक रमणीयता सुन्दर पहाड़ियाँ तथा झरने पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। हिरनी चरना मोराचणी पहाड़ी प्राचीन रमणीय स्थल हैं। हेथी इजोनिर्वाण कारपारशन एवं अथ औद्योगिक संस्थानों के कारण इस नगरी ने भारी प्रगति की है।

राजगढ़ कभी वहा मगध सम्राट बिम्बिसार का शासन था। गौतम बुद्ध भी इसी नगरी में रहे। जननाथंकर वर्धमान महावीर ने भी १८ वर्ष राजगढ़ व नालन्दा में व्यतीत किये थे। यह बौद्ध जनिया तथा सानतनधर्मिया सभी का तीर्थस्थल है। मनिपार मठ सन्तानों गुना गम शरन का मन्त धाराए करण्डा तालाब बिम्बिसार जेल गूढबूट पर्वत प्राचीन दशनीय स्थल हैं। यह पटना से १०४ कि० मी० दूर है। जरासंध घोर कृष्ण का मन्थन पहाड़ हुआ था। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार हर चौथे वर्ष पढ़ने वाले अधिक मास (मतिमान) में सभा स्थापना यही बाम करत है त्रिमं उपलभ्य म एव नाम तक यहा

लाखों तीर्थयात्रियों का जमाव रहता है। यहाँ इस अवसर पर उष्ण जल के कुंडों में स्नान का महत्व है।

हजारीबाग-नेगनस पार्क घने जंगल से घिरा राष्ट्रीय उद्यान (नेशनल पार्क) पय-टका के लिए भारी मनोरंजन का केंद्र है। १८१ बग कि० मी० क्षेत्र के इस विशाल उद्यान में विभिन्न नस्लों के शेर, चीते, गंडे, हिरन जंगली जानवर, चिड़िया, तान, मोर आदि की बहुतायत है।

शेरशाह का मकबरा (सहसराम) बिहार के मुगल बादशाह शेरशाह का विशाल मकबरा मुस्लिम शिल्प का महान नमूना है। सोन नदी के किनारे बना यह मकबरा अत्यन्त विशाल व कलात्मक है।

सीतामढ़ी यह वही स्थान है जहाँ सीता जी का जन्म हुआ था। यह बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में है। अकाल पत्नियों की स्थिति में राजा जनक ने यहाँ हल चलाया था जहाँ पत्नी से एक कुम्भ निकला जिसमें सीता थी। राजा जनक की राजधानी यहाँ से २८ मील दूर जनकपुर में थी जो अब नेपाल में है। यहाँ जानकी नवमी का विशाल मेला लगता है।

मध्यप्रदेश

सांची (बिड़शा) यहाँ दो हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन स्तूप हैं। सम्राट अशोक के समय के हैं। स्तूपों के द्वारा पर जातक कथाओं के दृश्य अंकित हैं। स्तूपों के आस-पास प्राचीन बिहार व मंदिरों के भग्नावशेष बिखरे पड़े हैं। यह भोपाल से ६५ कि० मी० दूर है।

खजुराहो यहाँ के विश्वविख्यात मंदिर हिंदू स्थापत्यकला के अद्भुत नमूने हैं। मंदिरों की ऊँचाई को देखकर बड़े-बड़े विदेशी वैज्ञानिक भी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। खजुराहो की पर्यटकों की मूर्तियाँ बिल्कुल प्राणवान् जैसी दीखती हैं। देश विदेश के कलाकार इस भारतीय कला को देखकर भ्रम हो जाते हैं।

भोपाल मध्य प्रदेश राज्य की राजधानी है।

पंचमढ़ी यह मध्य प्रदेश का पर्वतीय स्थल है। रजत प्रपात जलावतरण, सुंदर-कुंड, पाण्डव गुफाएँ छोटा महादेव, धूतगढ़ और चौरागढ़ के पर्वत शिखर अत्यन्त दशनीय हैं। मध्य प्रदेश सरकार के कार्यालय गमिया में पंचमढ़ी में ही पहुँच जाते हैं। पंचमढ़ी बम्बई-कलकत्ता मुख्य रेलवे लाइन के पिपरिया रेलवे स्टेशन से ४८ कि० मी० दूर है।

उज्जैन उज्जैन को प्राचीन शास्त्रों में उज्जयिनी या अर्वातिका के नाम से सम्बोधित किया गया है। महाराजा विक्रमादित्य के समय में उज्जयिनी भारत की राजधानी थी। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक लिंग तथा ५१ शक्तिपीठों में से एक पीठ यहाँ प्रतिष्ठित है। उज्जैन में पवित्र क्षिप्रा नदी बहती है। क्षिप्रा की भगवान् विष्णु के शरीर से प्रगट नदी माना जाता है। क्षिप्रा तट पर पत्तों व आनंदक घाट बने हुए हैं। उज्जैन में १२ वर्ष में एक बार कुम्भ भी लगता है। महाकालेश्वर मंदिर यहाँ का सबसे प्रमुख व दशनीय मंदिर है।

सगरमर की घट्टानें जबलपुर से लगभग २६ कि० मी० दूर सगरमर की घट्टानें आरम्भ हो जाती हैं। सगरमर की पहाड़ियों के मध्य नर्मदा की किलकिल करती धारा

मनोरम दृश्य उपस्थित कर देती है। यह घाटी अत्यन्त मनोरम है। नमदा के तट से कुछ दूरी पर स्थित पहाड़ी पर कलचुरिवंश के समय का एक भव्य चौसठ योगिनी मंदिर है।

माडू यह प्रदेश का अत्यन्त रमणीय स्थल है। मालवा के सुलतान बाजबहादुर और रूपमती व प्रणय के प्रतीक एक भवन के छडहूर से इमकी विशालता का संकेत मिलता है। यह इमौरम ६६ कि० मी० की दूरी पर स्थित है।

शिवपुरी नर्मदा जलप्रपातों एवं तालाबों की नगरी शिवपुरी कभी ग्वालियर राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। राष्ट्रीय उद्यान के पास सत्या सागर तथा माधव सागर सीलें सोन्या का और बगती है। १८६ बग कि० मी० क्षेत्र के विशाल राष्ट्रीय उद्यान में गेर धोना रोछ नीलगाय हिरन एवं लकडबग्घे भारी संख्या में पाये जाते हैं।

ग्वालियर यहां का भव्य किला अकबर द्वारा सम्मानित फकीर मोस का मकबरा महान संगीतज्ञ तानमन की समाधि महारानी लक्ष्मीबाई की समाधि आदि दर्शनीय हैं।

इंदौर महारानी अक्षियाबाई होल्कर की राजधानी थी।

राजस्थान

जयपुर इस नगर की स्थापना महाराजा सवाई जयसिंह ने १७२८ में की थी। गुलाबी रंग का पत्थर से बनाया गया यह नगर हिंदू वास्तुशैली का अत्यन्त नमूना है। महाराजा का म्यूजियम हवामहल बाग एवं वेधशाला दर्शनीय हैं। यहां से १० कि० मी० दूर स्थित धामर भी ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थल है। यह राजस्थान की राजधानी है।

उदयपुर यह राजस्थान के अत्यन्त रमणीय स्थल में से एक है। इसकी स्थापना महाराजा उजयसिंह ने की थी। इसे झीला की नगरी भी कहा जाता है। पहाड़ियों के नीचे घाटपर्व झील है जिसमें पयटक नौका विहार करके आनंद प्राप्त करते हैं। महाराणा पलेस एवं महाराणा द्वारा निर्मित मन्दिर दर्शनीय हैं।

चित्तौड़गढ़ उदयपुर के निकट ही चित्तौड़ नामक ऐतिहासिक स्थल है। चित्तौड़ में एक विशाल किला है। चित्तौड़ सिमांतिया राजपूतों की राजधानी था तथा अलाउद्दीन खिलजी के शासन के समय में गढ़ में महारानी पद्मिनी आदि शासिकाओं ने पतिव्रत धर्म की रक्षा के लिए साहस (जोहर) किया था। किले में पद्मिनी पलम मीरा मंदिर विजय स्तम्भ आदि दर्शनीय हैं। महाराणा कुभा ने मुगल आक्रांताओं को पराजित करने के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ निर्मित कराया था। हल्दीघाटी के ऐतिहासिक स्थान के पास महाराणा प्रताप के बनेर घाट की समाधि बनी हुई है। उदयपुर के पास ही महाराणा प्रताप के धारणस्थ भगवान श्री कर्ण के ऐतिहासिक मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

भायडारा यह राजस्थान का प्रमुख तीर्थस्थल है। पुष्टामार्गीय वज्रवा के आराध्य भगवान विष्णु के का अत्यन्त प्राचीन व ऐतिहासिक प्रतिमा है। विशाल मन्दिर कला का अत्यन्त नमूना है।

श्री महादेव जो जन मन्त्राय का पवित्र साय स्थान है।

भाय पत्रत सनातिया एवं पयटका के लिए अत्यन्त रमणीय स्थान है। ग्रीष्म काल में इसकी धारण उत्सव होता है। यहां के शिवबाबा मन्दिर जन मन्त्राय में प्रमुख स्थान रखता है। यह मन्त्राय में निर्मित कराए गए हैं।

पुष्कर यह देश के प्रमुख तीर्थों में से है। यह अहमदाबाद दिल्ली मार्ग के बीच अजमेर के पास पड़ता है। पुष्कर में एक विशाल तालाब है जिसमें यात्री स्नान करने के बाद अपने पुरुखा का श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं। ब्रह्माजी एवं वाराह भगवान व अद्भुत मंदिर हैं। ब्रह्माजी की चार मुखवाली प्रतिमा कलात्मक व दर्शनाय है। पुष्कर में वृंदावन के रंगी के मंदिर की आकृति का रंगी का मंदिर भी है। जिज्ञान तालाब व अतिरिक्त ज्येष्ठ सरोवर, वनिष्ठ सरोवर व बृद्धा सरोवर भी हैं। इन सरोवरों में यात्री स्नान करते हैं।

अजमेर अजमेर स्थित दरगाह ख्वाजा साहब, भारतीय मुस्लिमों का प्रमुख तीर्थ-स्थल है। मुस्लिम सन्त मुहम्मदजीन चिश्ती का मकबरा भी यहीं है। अजमेर द्वारा चित्तौड़ से लाय गय दीपदान भी दरगाह में है तथा एक असाधारण आकार का गान है। समस्त सत्कार के कोने कोने के मुस्लिम श्रद्धालु अजमेर की दरगाह की तीर्थयात्रा के लिए एकत्रित होने हैं।

गुजरात

द्वारिकापुरी द्वारिकापुरी का भगवान श्रीकृष्ण न मथुरा वृंदावन से पश्चिम समुद्र तट पर जाकर बसाया था। पुराणा के अनुसार जब भगवान श्रीकृष्ण न राक्षस कम का वध कर लिया तो उनके श्वशुर जरामघ ने बदले की भावना में श्रीकृष्ण पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिये। युद्ध व शपथ से बचने के लिए एक बार श्रीकृष्ण व हृदय में ब्रज क्षेत्र छोड़कर दूर जाकर बसने की इच्छा उत्पन्न हुई और उन्होंने समुद्र तट पर जाकर एक नगरी बसाई। इसी नगरी का नाम आगे चलकर द्वारिकापुरी पड़ा। द्वारिकापुरी में समुद्र में गाम्भीरी नदी आकर मिलती है। यहाँ द्वारिकाधीश का विशाल मंदिर है जिसमें रणछाड़जी का मंदिर भी कहा जाता है। द्वारिका में अब भी बड़े बड़े विशाल व प्राचीन महल हैं। महल के दक्षिण में मत्स्यभामा और जामवन्ता के महल हैं तथा उत्तर की तरफ राधा और स्वमणी के महल हैं। ऐसी किंवदन्ता है कि यह महल श्रीकृष्ण ने निर्मित कराये थे। द्वारिका से २६ कि० मी० दूर स्थित भगवान श्रीकृष्ण के मित्र सुदामा जी के नाम पर सुदामापुरी बसी हुई है। सुदामापुरी में सुदामाजी व श्रीकृष्ण के मंदिर हैं। द्वारिका में प्रद्युम्न द्वारिकाधीश बलराम, दशकी आदि के भव्य व आकर्षक मंदिर हैं। मंदिर के किवाड़ों की चौखटों चादी क पत्थर से जड़ित हैं तथा आकर्षक हैं। आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य न चार पीठा में से एक पीठा शान्दापीठा के नाम से द्वारिका में स्थापित किया था।

सोमनाथ मंदिर समुद्रतट पर बंरावन में ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर स्थित है। इस मंदिर का महमूद गजनवी ने लूटा व तोड़ा। देश के स्वाधीन होने पर सरदार पटेल ने मंदिर का पुनरोद्धार कराया।

सूर्य मंदिर मोघरा यह मंदिर हिन्दू स्थापत्यकला का उत्कृष्ट नमूना है। मंदिर के सम्भे तथा छत आदि पर सुन्दर कलाकारी की गई है। इसमें सूर्य देवता की प्रतिमा है।

पालिताना के जन मंदिर यह जैनियों का प्रमुख तीर्थ है। इस मंदिर का नगर कहा जाता है। इसमें ८६३ भव्य व विशाल जन मंदिर हैं। जैनियों के अतिरिक्त पयटक भी भारी संख्या में इस नगर में आते हैं। प्रायः सभी मंदिर सगमरमर के बने हुए हैं। गिरनार के जन मंदिर भी दर्शनीय हैं।

गिर वन एशिया भर में एतना ही एसा वन है जहाँ शरा के झुण्ड मुक्त विचरण करत देखे जा सकत हैं। १२८० बग कि० मी० क्षेत्र के इस वन में लगभग ३०० शेर हैं। पयटक वारा व वसा में वन के बीच छेड़े हो जाते हैं तथा चारों ओर शेरों के झुण्ड उन्हें घेर लेते हैं।

साबरमती आश्रम महात्मा गांधी के वायदायक रूप में साबरमती आश्रम भी एक तीर्थस्थल व पयटन स्थान के रूप में आकर्षण का केन्द्र है।

टकारा धायमभाज के सत्यापक स्वामी दयानंद सरस्वती के जन्म स्थान के रूप में यह ऐतिहासिक स्थल है। प्रतिवर्ष यहाँ विशाल मेला लगता है।

अहमदाबाद अहमदाबाद की हिलती मानारों पयटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इन ऊँचों व विशाल मीनारों पर उत्कृष्ट शली की नारीगरा अंकित है। अहमदाबाद में ही शाहजहाँ का रोजा सिद्दी सत्यापक की जाली सरखज रोजा राज भवन आदि दशनीय हैं। यह गुजरात की राजधानी है।

पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर

अमृतसर यह सिंधु के पवित्र स्थान स्वर्ण मंदिर एवं तालाब तथा सनातनधर्मियों के दुर्गाना मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। स्वर्ण मंदिर तालाब के किनारे है। तालाब व मंदिर दोनों ही भय व आकर्षण हैं। जिनियावाता बाग जहाँ अमृतों ने नशस हत्याकांड किया था, पयटकों के लिए ऐतिहासिक स्थल है।

छड़ीगढ़ पंजाब व हरियाणा की राजधानी है।

ज्वालाजी ज्वालाजी हाशियारपुर से लगभग ८८ कि० मी० दूर एक पहाड़ी पर स्थित है। यह ५१ शक्तिपीठों में से एक पीठ है। यहाँ पर ज्वाला (ज्योति) के रूप में भगवती का स्थान है। महाराजा रणजीतसिंह ने मंदिर के ऊपरी भाग को स्वर्णपत्रों में मढ़वा कर अपना श्रद्धा का परिचय दिया था। ज्वालाजी से ४० कि० मी० दूर कागडा का प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ पर बख्शबरी देवी की पिण्डी है। कुछ ही दूरी पर चामुण्डीदेवी तथा बघनाथ महादेव के मंदिर हैं।

ननादेवी (हाशियारपुर) पहाड़ी पर भगवती ननादेवी का प्रसिद्ध मंदिर है। गुरु गुरुदेवों ननादेवी के उपासक थे।

शिमला यह हिमाचल प्रदेश का पवतीय स्थल है। शिमला के पास ही कागडा घाटी है। आत्मकाल में स्थित स्थान के पयटकों की भारी भीड़ रहती है।

धौनगर अहमद नगी के किनारे बसी हुई यह नगरी भारत का स्वयं मानी जाती है। इनामार बाग निगान बाग चरमशाही धार्मिक मुगल सम्राटों की स्मृति के केन्द्र है। पहलगाम इन स्थानों में से एक स्थान है। कश्मीर के सभी रमणीय स्थान दशों विश्वेशी पयटकों के लिए स्थल हैं।

धरनाथ धरनाथ में ऊँचाई पर धरनाथराजा का प्रसिद्ध मंदिर है। पौराणिक कथनानुसार स्थान प्रजापति के यज्ञ में भस्म हो गया था व विषाणु में पतना का यहाँ धरनाथ का मुकुट है। धरनाथ राजा के लिए धौनगर में माण्डवीय चरमशाह पहलगाम धरनाथ होना शुरू जाना पड़ता है। धरनाथराजा में ही भगवान शंकर ने कामदेव को भस्म किया था। ४१०० मंटर का ऊँचाई पर स्थित धरनाथ गुफा में पहलकर यात्री अपना जीवन

सफन मानते हैं। गुफा के पास ही भ्रमरगंगा है। भ्रमरगंगा म बर्फ का प्राकृतिक शिवलिंग भी है जिसे देखकर दशको को आश्चर्यचकित होना पड़ता है।

वैष्णवदेवी जम्मू प्रांत म ऊधमपुर जिले म त्रिकूट पर्वत के नीचे वैष्णवदेवी का पीठ विद्यमान है। वैष्णवदेवी के दशना के लिए प्रतिवर्ष प्राश्विन नवरात्र से दिसम्बर के अंत तक कई लाख यात्री भारत क कोने-कोने से आते हैं। १६ कि० मी० की कठिन वड़ाई को भी श्रद्धानु जन 'जयमाता की'—'जयमाता की' उद्घासो के साथ य ही पूरा कर नेते हैं। यात्रा के बीच बाणगंगा पडती है। पुराणा के अनुसार भगवती न बाण द्वारा पृथ्वी स जल निकाला था।

उडीसा

जगन्नाथपुरी पूर्वी समुद्र तट पर स्थित जगन्नाथपुरी भारत की अत्यंत प्राचीन नगरी व तीर्थस्थल है। पुराणा के अनुसार इस नगरी व मंदिर का स्वयं भगवान विश्वकर्मा न अपने हाथो से बनाया था। पुरी म भगवान जगन्नाथजी का एक विशाल मंदिर है। मंदिर म भगवान श्रीकृष्ण बलराम एव उनकी बहन सुभद्रा की लकड़ी की मूर्तिया हैं। यह भारत म पहला मंदिर है जिसमे श्रीकृष्ण के भाई बहिन की प्रतिमाएँ हैं। विशाल मंदिर के चारों ओर श्रेष्ठ वास्तुकला की परिचायक शक्तिया, मूर्तिया व रूप म चित्रित हैं। मंदिर मे गणेशजी, बटेरा महादेव, पट भगलादेवी, नृसिंह, विमलाक्षी देवी और सरस्वती देवी की आकषक प्रतिमाएँ हैं। मंदिर म दश की प्राय सभी पवित्र नदिया के नाम पर कुएँ भी हैं। प्रतिवर्ष जगन्नाथ जी की रथयात्रा निकाली जाती है जिमम देश व कोने बाने से लाखो व्यक्ति सम्मिलित होने हैं। भगवा की मूर्तिया को एक विशाल रथ म सजाकर निकाला जाता है। पुरी समुद्र तट पर बसी हुई है। समुद्र तट अत्यंत रमणीक है जिसम तीर्थयात्रा स्नान करते हैं। पुरी म आद्य जगन्गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठा म से एक गोवधन पीठ भी विद्यमान है।

भुवनेश्वर यहां लिपराज, मुकनेश्वर तथा परशुरामेश्वर मन्दिर हैं। भगवती पावती का भी दशनीय मंदिर है। पाम की गुफाआ मे कभी जन मुनिया ने तपस्या की थी। उडीसा की राजधानी है।

कोणाक मंदिर पुरी के निकट ७०० वर्ष पुराना कोणाक मंदिर है। पुराणो के अनुसार भुवन भास्कर स्वर्ण रथ पर मनुद्र से निकलने दिखाई दिये थे, उनको छाया पर ही मन्दिर का निर्माण किया गया।

बटक गत १३०० वर्षों स उत्कल की राजधानी रहा।

हरियाणा

कुश्लेत्र यह महाभारत युद्ध से सम्बन्धित ऐतिहासिक एव धार्मिक स्थल ह। यहां अनेक मंदिर तथा तालाब हैं। कुश्लेत्र तालाब विशाल तालाब है। ब्रह्मा, विष्णु महेश तथा भगवान कृष्ण के मंदिर हैं। इनके पास ज्यातिसर नामक स्थान है जहा श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश किया था। तीन मील दूर बाण गंगा है। इसके प्रतिरिक्त श्रवणनाथ मंदिर गीना भवन, आदि दशनीय स्थल हैं।

पानीपत पथोरारज चौहान व मोहम्मद गौरी के युद्ध के लिए यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल है। यहां सराठा व मुगला के युद्ध हुए थे।

पिजौर कालका से तीन मील पूर्व स्थित पिजौर उत्तर भारत का अद्वितीय मनोरम स्थल है। इसका सम्बन्ध पाडवों के १२ वष क वनवास काल से है। मुगल गाडन अत्यंत विशाल व मनारम है।

सोहना के गम धरने दिल्ली से ५६ कि० मी० दूर स्थित सोहना क गम धरने भी दृश्याय है। छात्र-धुजली व एवजीमा के रोगी धरने के पानी में स्नान करने आते हैं।

बलेसर यह हरियाणा का प्रमुख मनोरजन व श्रौडास्थल है। यहां मछली के शिकार तथा भूपर, हिरन, चीतल तथा अन्य जंगली जानवरों के शिकार के लिए लोग आते हैं। इसमें मार भा वनायत म है। यह यमुना नदी के किनार है।

महाराष्ट्र

बम्बई : यह समुद्र तट पर स्थित भारत के प्रमुख व विशाल नगरों में है। गेटवे ऑफ इंडिया पत्तारोपणघाटन विक्टोरिया गाडन हैरिंग गाडन मरिन ड्राइव, चौपाटी आदि बम्बई क रमणीय व दशनीय स्थल हैं। प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम भी पयटका के लिए आनयण का केंद्र है। इसका प्राचीन नाम मुम्बई है।

एलीफेंटा की गुफाएं ये विश्व प्रसिद्ध गुफाओं बम्बई के अपोलो वलरगाह से ६ कि० मी० का दूरी पर हैं। गुफाओं में त्रिमूर्ति भगवान शिव की प्रतिमा अत्यंत कलात्मक व शिल्प की दृष्टि में अद्भुत है।

अजन्ता-एलोरा की गुफाएं यह औरंगाबाद क पास ऐतिहासिक व दशनीय गुफाएं हैं। अजन्ता की गुफाओं में १७ मनातनधर्मों मंदिर १२ बौद्ध तथा ५ जैन मंदिरों का समावेश है। एक सीधी ८६ मीटर ऊंची चट्टान की काटकर मंदिर बनाये गये हैं। चट्टानों को घांवर लम्बी गुफा बनाई गई है। ये भित्तिचित्र विश्व की कला क उत्कृष्ट नमूने माने जाते हैं। एलोरा की गुफाओं में मनातनी बौद्ध व जनिया की एतता की प्रतीक हैं। गुफाओं ४३ हैं। कलागर्भित शिव का मंदिर अत्यंत शनीय है। इस ठाम चट्टान का काटकर बनाया गया है। गुफाओं की चारों ओर की मान कोठरियां में हिन्दू देवता प्रतिष्ठित हैं। इन गुफाओं का स्थले दश विघ्नेष क पयटक आते हैं।

पूना यह महाराष्ट्र का ऐतिहासिक नगर है। गनिवार बाहा जाजाभाता उद्यान पर्वती कगरीबाहा घाटि शनीय स्थल हैं। पूना से २५ कि० मा० दूर शिवाजी का महिगढ़ ऐतिहासिक स्थल है। दश क प्रमुख गिणा कला में इसकी गणना है।

प्रतापगढ़ यहां पर भा शिवाजी का विशाल किला है। इसी स्थान पर शिवाजी ने अकबरगघा का वध किया था।

महाबलेश्वर यह महाराष्ट्र का पवनय स्थल है। यहां श्रीकृष्णकान में शनि विघ्नेष क पर्वण मनारजन क लिए आते हैं।

नासिक यह शनि क प्रमुख धार्मिक सायस्थना में ग है। यहां कुम्भ मत्ता भी लगता है। यहां पवनय महाबलेश्वर घाटि स्थान है। भगवान श्री राम ने १४ वष वनवास क समय इस शनि में अज्ञान किया था। श्री राम क अज्ञान अज्ञानय मंदिर है।

असम

श्रीहरी (असम) यह असम का प्राचीन व सुन्दर नगर है। यह काच राजाघा

की राजधानी थी तथा इमका नाम प्रागज्योतिषपुर था। यहाँ कामाख्या मन्दिर, नवग्रह मन्दिर उमानादा मन्दिर, भुवनश्वरी मन्दिर आदि प्रसिद्ध स्थल हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे बना हुआ शुक्रेश्वर जनादन मन्दिर अत्यन्त रमणीक है। गोहाटी से १२ किलोमीटर दूर महर्षि बजिष्ठ का आश्रम है।

अगरतला त्रिपुरा की राजधानी।

चन्दुबी झील गोहाटी से ६४ किलोमीटर दूर खासी एव गारो पहाड़ियाँ में सुन्दर व आकर्षक चन्दुबी झील है। यहाँ मछली के शिकार की मुविधा है।

शिलांग यह असम की राजधानी तथा पर्वतीय स्थल है। यहाँ के झरना झीलो तथा पाकों की छटा अत्यन्त मनोरम है। हाथी चरना बहुत रमणीक है।

चेरापूजी यह समस्त विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है। ५०० इंच वर्षा प्रतिवर्ष हाती है। यहाँ रामकृष्ण आश्रम दशनीय है।

जोरहट यह चाय की नगरी है। यहाँ अनेक तबनीकी शिपा केन्द्र हैं। असम में इस नगर का बहुत महत्त्व है।

शिवसागर यहाँ असम का सबसे विशाल शिव मन्दिर है जो शिवसागर तालाब के किनारे बना हुआ है। इमका निर्माण ग्रहोम राजाशा ने कराया था।

तेजपुर राजा बलि की राजधानी रहा।

दक्षिण भारत

मद्रास तमिलनाडु की राजधानी मद्रास अत्यन्त सुन्दर विशाल व आकर्षक नगर है। दक्षिण भारत की सभ्यता का यह प्रमुख केन्द्र है। जहाँ यहाँ हिन्दू शली के अनेक विशाल मन्दिर हैं वहाँ ईसाइयों के अनेक विशाल व भव्य चर्च भी हैं। यहाँ का सेंटमेरी चर्च भारत के सबसे पुराने चर्चों में से है जो सन् १६८० ई० में बनाया गया था। नेशनल आर्ट गैलरी में नटराज एव राम परिवार की कलात्मक प्रतिमाएँ दशनीय हैं। मलिकार्जुन चैन्नानेश्वर भगवान कपलेश्वर पायसारथी आदि शैव एव वैष्णव मन्दिर हैं।

रामेश्वरम दक्षिण भारत में स्थित एक प्राचीन व मुन्दर तीर्थस्थल है। इस तीर्थ का सबध भगवान राम की लका विजय से बताया जाता है। भगवान श्री राम ने यहाँ शिव मन्दिर में पूजा की थी। रामेश्वरम दक्षिण में समुद्रतट पर स्थित है। रामेश्वरम में समुद्र तट पर एक विशाल पुल है। पहले यह ढाई मील लम्बा पुल पत्थर का बना हुआ था किन्तु अंग्रेजा ने अपने शासनकाल में कुशल इजीनियरों से पत्थर के पुल पर ही रेलवे पुल तैयार कराया। रामेश्वरम का विशाल व आकर्षक मन्दिर भारत की प्राचीन निर्माण एव स्थापत्यकला का अद्भुत नमूना है। मन्दिर के बरामदे में श्रीर अर्च भागा में सक्का ऊँचे-ऊँचे खम्भे लगे हुए हैं। खम्भों पर भारतीय कला कौशल का सुन्दर नाम है। मन्दिर का प्रवेश द्वार देखते ही बनता है। समुद्र तट पर अग्रस्त मुनि का एक आश्रम बना हुआ है। कहा जाता है कि इस स्थान पर अग्रस्त मुनि ने तपस्या की थी। रामेश्वरम में अनेक पवित्र कुण्ड हैं।

श्याकुमारी तपश्चया करती हुई श्रीकुमारीदेवी का मन्दिर। स्वामी विवेकानन्द की तपस्यास्थली। विवेकानन्द शिलास्मारक मध्य व दशनीय है।

रगम मन्दिर तिरुचिरापल्ली के निकट कावेरी के द्वीप का श्रीरगम कहते हैं। वहाँ

विष्णु भगवान का एक विशाल व दशनीय मंदिर है जिसमें एक हजार खम्भा से बना विशाल हाल है।

महाबलीपुरम यह मद्रास से ८८ कि० मी० की दूरी पर बंगाल की खाड़ी के तट पर है। मन्दिरों की मूर्तियां ठोस चट्टानों को काटकर तराशकर बनाई गई हैं। 'पाच रथ' महिषासुर मण्डप, कृष्ण मण्डपम अजुन तपस्या आदि दशनीय व कलात्मक मूर्तियां हैं।

चिदम्बरम यहा विश्वविख्यात नटराज शिव का विशाल व ऐतिहासिक मंदिर है। मंदिर की दीवारों पर नाटयशाला में वर्णित १०८ मुद्राओं का चित्रांकन किया गया है। यह मद्रास से २४० कि० मी० दूर है।

पांडीचेरी योगी अरविन्द का महान आश्रम।

मीनाषी मदुराई में मीनाक्षी का अत्यन्त दशनीय मंदिर है। मंदिर चारों ओर गोपुरम से घिरा हुआ है। मंदिर का हाल सहस्र स्तम्भों का है। यह द्रविड शिल्प का उत्कृष्ट नमूना है।

तंजौर यहा श्री बृहदेश्वर का विख्यात विशाल मंदिर है। यह चोल नरेशों की राजधानी थी।

कांचीपुरम यह पल्लवों की राजधानी थी। यह मंदिरों की नगरी है। यहा के वरणा राजा स्वामी मंदिर कलाशनाथ मंदिर एकम्बेश्वर मंदिर आदि दक्षिण भारतीय शिल्प व सुन्दर नमूने हैं। श्री शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित कामकोटी पीठ है।

कर्नाटक (मैसूर)

बंगलौर कर्नाटक की राजधानी बंगलौर देश के सुन्दर नगरों में से है। यहा का लाल वाग एशिया भर में अपनी विस्मय का एक है। इसे हैदरअली एक टीपू सुल्तान ने बनवाया था। बंगलौर के पास ही नदी हिल्स कोलार सोने की खानें शिवगंगा, चामराजा सागर आदि आकर्षक स्थल हैं। मैसूर का दशहरा समस्त विश्व में प्रसिद्ध है। चामुण्डी पहाड़ी पर देवी चामुण्डी का दशनीय मंदिर है।

बादावन गाडन मैसूर से केवल १६ कि० मी० की दूरी पर कर्णराजा सागर डेम के पास बादावन गाडन है। कावरी नदी के तट पर नौका विहार में अपूर्व आनन्द आता है।

बादीपुर का छोडा मैसूर जगती हाथियों के लिए प्रसिद्ध है। बादीपुर के जंगला में हाथियों को घेरकर पकड़ते हैं उसे छोडा कहते हैं। हाथियों के छोडे को देखने के लिए पय टर घान है।

शिवमथुम्म यहाँ के गगनचुम्बी तथा बडा चुम्बी झरने बहुत ही मनोरम दृश्य उत्पत्ति करते हैं। भगवान शिव का मन्दिर भी दशनीय है।

बसूर होयमान नरेशों द्वारा निर्मित चम्रा बगव मन्दिर शिल्पकला का बेजोड नमूना है। बसूर में १४ कि० मी० दूर होयगनश्वर शिव मन्दिर अत्यन्त दशनीय है।

भुगरी जगन्मूढ शंकराचार्य का प्राचीन श्री शारदा देवी का प्रयाग मन्दिर।

हैम्पी के खडहर यह विजयनगर साम्राज्य की राजधानी था। अब भी तुंगभद्रा नदी के दाहिने तट पर १६ कि० मा० के अन्दर प्राचीन नगर के खडहर बिखरे पडे हैं। इन परमाचार्यों को दख्खर नरिण भारत के एक महान साम्राज्य की विशालता का पता चलता

ह। हम्पी में पट्टाभिरामा मन्दिर विट्टल मन्दिर, नसिह मन्दिर आदि दशनीय हैं।

बीजापुर बगलौर से ६६४ कि० मी० दूर बीजापुर आदिलशाह राजवंश का प्राचीन नगर है। यहां की जामा मस्जिद, इब्राहिम रोजा, मोहम्मद आदिलशाह का मकबरा, गाल मुम्बद आदि मुगल शली के उत्कृष्ट नमूने हैं।

केरल

तिरुवनन्तपुरम (त्रिवेन्द्रम) यह रोम की तरह पहाड़ी पर बसा हुआ सुन्दर शहर है। नगर में अन्तन्तनाग मन्दिर पद्मनाभास्वामी मन्दिर चित्रालयम (आट गैलरी) चिडिया घर एव म्यूजियम दशनीय हैं।

कालडि (त्रिचूर) आद्य शकराचाम जी का जन्मस्थान।

त्रिवलोन त्रिवेन्द्रम से ७१ कि० मी० उत्तर में स्थित त्रिवलोन में ही सन् १३३० ई० में रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के मुखिया पोप का पहला प्रतिनिधि पहुंचा था। त्रिवलोन से त्रिवेन्द्रम तक नारियल के घन वृक्षा से घिरा जलमाग पयटको को नया अनुभव देता है।

अलेप्पी इसे नहरा के जाल के कारण भारत का वेनिस कहते हैं। काली मिच की खेती और नारियल की जटाया के सामान का निर्माण प्रमुख ध्ये हैं।

पेरियर सरमित वन भारत के वन्य जीवन की सर्वोत्तम ज्ञाकी इस वन में देखने का मिलती है। हाथी, हिरण जगली भैंसे और बाघ यहां स्वच्छंद विचरण करते दिखाई देते हैं।

कोचीन अठारह शताब्दी पहले चीन के व्यापारी कोचीन आते थे। यहां मूहदिया का प्राचीन मन्दिर और डच शासका द्वारा बनाया गया महल दशनीय हैं।

त्रिचूर कोचीन से ७४ कि० मी० दूर स्थित त्रिचूर केरल का सबसे फैशनेबल नगर समझा जाता है। रंगने वाले जीवों के कारण यहां का चिडियाघर प्रसिद्ध है।

आंध्र प्रदेश

तिरुपति यहां श्री बालाजी (श्री व्यक्टेस) का प्रख्यात मन्दिर है। अत्यन्त विशाल व प्राचीन इस मन्दिर की दक्षिण में भारी मायता है।

श्री शलम (कुनूल) यह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

सेपासी विजयनगर साम्राज्य कालीन कलात्मक मन्दिर है।

बालहस्ति (चित्तूर) यहां प्रख्यात शिव तीर्थ हैं।

हैदराबाद इसका प्राचीन नाम भाग्यनगर था। यह आंध्र प्रदेश की राजधानी है। यहां की चार मीनारों व सालारजग म्यूजियम दशनीय हैं।

दिल्ली

भारत की राजधानी होने के कारण दिल्ली का विशय महत्व है। यह सन् १९११ ई० से भारत की राजधानी है। यमुनातट पर बसा हुआ यह विशाल नगर पयटका के लिए सर्वाधिक आश्चर्य का केन्द्र है। लालकिला जामामस्जिद, हुमायू का मकबरा, पाहवा का किला, कुतुबमानार, बिरला मन्दिर, चिडियाघर नेहरू सप्रहालय गुडियाघर आदि दशनीय

भारत की शासन व्यवस्था

सविधान

स्वाधीन भारत का सविधान तयार करने के लिए १९४६ में सविधान सभा का निर्माण प्रख्यात विधिवेत्ता और स्वाधीनता सेनानी डा० सच्चिदानन्द सिंह की अध्यक्षता में किया गया था। उनके अस्वस्थ हो जाने के बाद देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद उसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

१९४६ के चुनाव से बनी प्रान्तीय सभाओं द्वारा चुने गए सदस्यों और केन्द्रीय सभा (असम्बली) के सदस्यों को मिलाकर निर्मित 'सविधान सभा' ने, २६ अगस्त, १९४७ को डा० भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में सात सदस्यों की एक समिति स्वाधीन भारत के सविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए बनायी गयी थी। सवश्री गोपालस्वामी आयंगर, अत्लादी कृष्णस्वामी अय्यर, कहेयालाल माणिकलाल मुशी, टी० टी० कृष्णमाचारी, मोहम्मद सादुल्ला, एन० माधव राव और डी० पी० खेतान उसमें सम्मिलित थे। समिति को सविधान का प्रारूप तैयार करने में कुल १४१ दिन लगे। उस पर सारे देश में सूक्ष्म विचार के लिए आठ महीने का समय दिया गया।

सविधान सभा ने ४ नवम्बर १९४८ को इस पर विचार प्रारम्भ किया और ११४ दिनों की बहस के बाद २६ नवम्बर, १९४९ को सविधान स्वीकार कर लिया। उसमें ३६५ अनुच्छेद व ६ अनुसूचियाँ थीं। २४ जनवरी, १९५० को प्रारम्भ हुए सविधान सभा के १२वें सत्र में डा० राजेन्द्र प्रसाद सर्वसम्मति से भारत सभ के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए। एक विशाल समारोह में भारत के सविधान की अधिकृत प्रतियाँ पर सविधान सभा के सदस्यों ने हस्ताक्षर किए और २६ जनवरी, १९५० में यह सविधान लागू हुआ।

सविधान का उद्देश्य भारत में सावभौमसत्ता सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना करना है। इसकी उद्देशिका में कहा गया है "हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बाधुता बढ़ाने के लिए दृढसंकल्प होकर अपनी इस सविधान सभा में इस सविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करत हैं।

राज्य और प्रदेश भारत राज्यों का सभ है। भारत में निम्नलिखित २१ राज्य हैं

(१) असम, (२) आंध्र (३) उत्तर प्रदेश (४) उड़ीसा, (५) केरल (६) जम्मू-कश्मीर*
 (७) गुजरात (८) नागालड (९) पंजाब (१०) प० बंगाल (११) बिहार,
 (१२) महाराष्ट्र (१३) तमिलनाडु (१४) मध्यप्रदेश (१५) कर्नाटक*, (१६) राजस्थान
 (१७) हरियाणा (१८) हिमाचल प्रदेश (१९) मेघालय (२०) त्रिपुरा और (२१) मणिपुर।

सब राज्य-क्षेत्र ६ हैं दिल्ली, लक्ष्य द्वीप समूह अडमान निकोबार द्वीप समूह, पांडीचेरी
 गांधी-दमन-दीव दादरा-नगर हवेली चंडीगढ़ मिजोराम और अरुणाचल। १९५६ ई० से
 पूर्व राज्य ४ श्रेणी में (क ख ग घ) विभक्त थे।

महालय राज्य और अरुणाचल एवं मिजोराम के क्षेत्र शासित क्षेत्र पूर्वोत्तर क्षेत्र
 (पुनगठन) अधिनियम १९७१ क द्वारा निर्मित किये गए।

संविधान की विशेषताएँ

(१) भारत का संविधान लिखित है। यह विश्व का बहुदतर संविधान है। इसमें
 मध्य तथा इराक़ की सरकारों का संगठन सरकार के विभिन्न अंगों की शक्ति और उनके
 प्रायः सम्बन्ध व्यक्ति के अधिकार आदि विषयों की विशेष व सूक्ष्मतर व्याख्या की गई है।
 इसमें २२ भागों में कुल ३६५ अनुच्छेद एवं ६ अनुसूचियाँ हैं।

(२) इसमें एक सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न गणराज्य के स्थापना की व्यवस्था की गई
 है। संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित अंतिम पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि यह
 संविधान संवसामुहारेण द्वारा निर्मित है तथा मावभौम शक्ति जनता के ही हाथों में है।
 सरकार का उद्भव प्रचणन जनता द्वारा होता है। यह जनता के नाम पर निर्दिष्ट तथा
 मर्यापित है अतः इसमें लासनात्रिक विशेषताएँ हैं। राज्य का प्रधान (राष्ट्रपति) निर्वाचित
 होता है इस कारण भारतीय संविधान व अनुसार गणराज्य की भी स्थापना हुई है।

(३) संविधान भारत के लिए एक सघात्मक शासन की व्यवस्था करता है परन्तु
 प्राणात्मिकता में यह एकात्मक सरकार का उपबन्ध करता है। संविधान में केन्द्र व राज्य
 सरकारों की शक्ति का स्पष्ट विभाजन किया गया है। इसमें शक्तियों की तीन सूचियाँ दी
 गई हैं। मध्य सूची में ६७ विषय हैं जिसमें सम्बन्ध में केवल सम संविधि निर्माण कर सकते
 हैं। राज्य-सूची में ६६ विषय हैं जिनमें अन्तरगत केवल विधान मण्डल ही कानून बना सकते
 हैं। इनके अतिरिक्त महत्वपूर्ण सूची में ६७ विषय स्थित हैं जिन पर दोनों ही कानून
 बना सकते हैं परन्तु केन्द्र व राज्य विधान मण्डल में गतिरोध उत्पन्न होने पर सम के मन
 का ही मान्यता दी जाती है।

(४) संविधान द्वारा कार्यवाहिका की विधान मण्डल व प्रति उत्तरदायी बनाया गया
 है। अतः सम राज्य प्रणाली का अन्तर्भाव है। संविधान व अन्तर्गत व संविधान-मन्त्रीय सम
 का अन्तर्भाव निर्दिष्ट है। राज्या व लिए दो मन्त्र परिषदें बनायीं गयीं। यह पूणन उनकी
 रचना व कार्यवाहिका अनुभव करने पर निर्भर है। व संविधान मन्त्र—मातृसभा व राज्यसभा
 हैं। राज्या में प्रत्येक दो मन्त्र हैं पर कुछ राज्या में विधान परिषदें का १९७०-७१ में समाप्त
 कर दिया गया।

* १९५६ ई० के अधिनियम जम्मू-कश्मीर राज्य का कुछ विशेषाधिकार प्रदान किए गए हैं।

* १९५६ ई० का नाम मधुर था।

(५) भारत के सभी नागरिकों को, बिना धर्म, नस्ल, जाति, लिंग अथवा जन्म-स्थान के भेद भाव के कुछ मूल अधिकार प्रदान किये गये हैं। सविधान मूल अधिकारों को सात समूहों में रखा गया है। नागरिक अधिकारों का संरक्षक सर्वोच्च न्यायालय को बनाया गया है। राज्या पर यह पाबन्दी है कि वह ऐसा कोई कानून न बनाये जिसके कारण नागरिक अधिकारों में कटौती हो।

(६) सविधान के चौथे भाग में अनुच्छेद ३८ से ५१ तक राज्य को कुछ आदेश दिये गये हैं जिन्हें राज्य की नीति के निर्देशक तत्व कहा जाता है। ये निर्देश राष्ट्र के प्रशासन में बुनियादी महत्व के माने गये हैं। इन आदेशों का अनुपालन राज्य की नतिक जिम्मेदारी है। सवधानिक नहीं क्योंकि न्यायालय के माध्यम से सरकार पर इन आदेशों के अनुपालन का दबाव नहीं डाला जा सकता। इन आदेशों में आर्थिक और प्रशासनिक सत्ता का विकेंद्रीकरण, नागरिकों को रोजी शिक्षा और कुछ मामलों में सरकारी सुरक्षा पाने का अधिकार दिये जाने समान नागरिक संहिता बनाने, न्यायपालिका और वायपालिका को पुन्यकरण का आदेश प्रमुख है।

(७) सविधान की व्याख्या करने, नागरिकों को न्याय दिलाने तथा केन्द्र व राज्यों के मध्य उत्पन्न विवादों आदि को निपटाने के लिए सविधान ने एक स्वतंत्र व निष्पक्ष न्यायपालिका की व्यवस्था की है।

(८) भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया है।

(९) इस सविधान में लचीले व कठोर गुणों का अद्भुत सम्मिश्रण है। न तो यह इस मात्रा में लचीला है कि वायपालिका के हाथों का खिलौना ही बन जाये और न ही इतना कठोर कि बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन ही न किया जा सके।

(१०) सचीय शासन प्रणाली में दुहरी नागरिकता के गुण भी होते हैं—नागरिक सम्पूर्ण सभ के साथ-साथ अपने राज्य का भी नागरिक होता है। परंतु भारत में एकल नागरिकता ही प्रदान की गई है। सभी भारतीय मात्र सभ के नागरिक हैं।

नागरिकता

भारतीय नागरिकता विषयक साफ प्रश्नों के दार में सविधान के भाग २ में (अनुच्छेद ५ से ११ तक) उपबन्ध किया गया है। इसके अनुसार एकल तथा समान नागरिकता की व्यवस्था की गई है।

सविधान के अनुच्छेद ५ के अनुसार सविधान लागू होने के दिन २६ जनवरी, १९५०, को प्रत्येक व्यक्ति जिसका भारत राज्य क्षेत्र में अथवा जिसका जन्म भारत राज्य क्षेत्र में हुआ था अथवा जिसके माता पिता में से किसी का जन्म भारत में हुआ था अथवा जो इसके लागू होने के ठीक पूर्व कम से कम ५ वर्ष तक भारत में सामान्यतः निवासी था, भारत का नागरिक होगा। उपरोक्त नियम के अतिरिक्त जो व्यक्ति १९ जुलाई, १९४८ से पूर्व पाकिस्तान से भारत में प्रव्रजन कर आया है वह भारत का नागरिक समझा जायेगा यदि वह अनुच्छेद का अर्थ शर्तों को पूरा करता है। विदेश में रहने वाले भारतीय मूल के लोग भी भारत के नागरिक हो सकते हैं, यदि वे भारत के विदेश स्थित राजनयिक या वाणिज्यिक प्रतिनिधियों के पास अपना नाम दर्ज करा दें। दिसम्बर, १९५५ में एक नागरिकता अधिनियम पारित किया गया जिसमें नागरिकता के अजन (प्राप्ति), हानि (छीनने), परिवर्तन आदि की शर्तें दी गई हैं।

मूल अधिकार

प्रत्येक लोकतंत्रीय शासन प्रणाली में कुछ ऐसे अधिकार होते हैं जिन्हें मौलिक समझा जाता है। इन अधिकारों का उद्देश्य समाज और व्यक्ति के हितों में संतुलन लाना होता है। संविधान के तीसरे अध्याय में (अनुच्छेद १२ से ३५ तक) ये अधिकार प्रदत्त किए गए हैं। हालांकि संविधान में जो मौलिक अधिकार दिए गए हैं कुल उतने ही अधिकार नहीं हैं। उच्चतम न्यायालय ने यह अधिकृत किया है कि संसद मूल अधिकारों को समाप्त नहीं कर सकती है। किन्तु संविधान में यह प्रावधान भी है कि राष्ट्रीय आपातकाल के समय मूल अधिकारों का बिलम्बित किया जा सकता है।

संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों का ७ वर्गों में बांटा गया है —

समता का अधिकार इसके अनुसार राज्य किसी व्यक्ति का भारत राज्य क्षेत्र में समता के अथवा विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा। विधि के समक्ष धर्म, मूलवश, जाति, लिंग, जन्मस्थान के आधार पर कोई भेदभाव न करने की एक राज्याधीन पदा पर नियुक्ति के संबंध में सबों के लिए समता की व्यवस्था है। साथ ही सावजनिक होटल, भोजनालय तथा सावजनिक मनोरंजन के स्थानों, सावजनिक कुआरों, तालाबों, स्नानघाटों, एक सावजनिक समागम स्थान का सभी नागरिक उपयोग करने के अधिकारी हैं।

स्वातंत्र्य अधिकार इसमें अन्तर्गत नागरिकों को वाक स्वातंत्र्य और अभिव्यक्ति, स्वातंत्र्य का शान्तिपूर्वक निरायुध सम्मेलन का संस्था या सभ बनाने का देश भर में सबके प्रवाच, धर्म-संचरण का किसी भी स्थान पर निवास का सम्पत्ति के अजन धारण और व्ययन का तथा कोई व्यक्ति उपजीविका, व्यापार या कारोबार करने का अधिकार प्राप्त है। अपराधों के लिए दोषसिद्धि के विषय में कतिपय संरक्षण दिए गए हैं। प्राण और दहिक स्वाधीनता भी संरक्षित है। कुछ अवस्थाओं में बंदीकरण और नजरबंदी से भी संरक्षण दिया गया है। किन्तु इन सभी अधिकारों पर युक्तियुक्त बंधन लगाए जा सकते हैं। युक्तियुक्तता का निर्णय विवाद उत्पन्न होने पर न्यायालय ही कर सकता है।

शोषण के विरुद्ध अधिकार इस अधिकार के द्वारा प्राणियों का व्यापार (जिसमें धनिक कार्यों के लिए स्त्रियों का व्यापार भी सम्मिलित है) एक बलपूर्वक काम कराना निषिद्ध कर दिया गया है। एसा करने वाले दंडित हो सकते हैं परंतु राज्य सावजनिक हित में अनिवार्य सेवा कर सकता है। १४ वर्ष से कम आयु के बच्चों का कारखाना, खाना एवं किसी अन्य महत्वपूर्ण नौकरी पर नहीं लगाया जा सकता।

धर्म स्वातंत्र्य का अधिकार इसमें अन्तर्गत सावजनिक व्यवस्था, स्वास्थ्य और नतिकता का उन्नयन न करने हुए व्यक्ति का किसी भी धर्म का मानने, पालन करने तथा उसका प्रचार करने का अधिकार प्राप्त है।

संस्कृति और शिक्षा सम्बंधी अधिकार नागरिकों के प्रत्येक वर्ग का अपना भाषा, लिपि अथवा संस्कृति बनाए रखने का अधिकार है। उस राज्य द्वारा पालित एक राज्य निधि में महापान पान बनाना, शिक्षा भी शिक्षा सम्बंधी प्रवृत्तियों के लिए धर्म, मूल, वर्ण, जाति अथवा भाषा के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। भाषायी अल्पसंख्यकों का अपनी शिक्षण सम्बंधी स्थानित करने का भी अधिकार है।

सम्पत्ति सम्बंधी अधिकार कोई भी व्यक्ति विधि के प्राधिकार के बिना अपना सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता। शिक्षा या व्यक्ति का सम्पत्ति का बिना प्रतिफल (मुद्दावजा) दिए

अधिग्रहीत नहीं किया जा सकता। पर संविधान के २५वें संशोधन के द्वारा मुद्रावला शब्द को हटाकर 'राशि बना दिया गया है।

संवैधानिक उपचारों का अधिकार डा० अम्बेडकर के शब्दों में यह अधिकार संविधान की आत्मा और हृदय है। इसने द्वारा नागरिकों को, मूल अधिकारों को लागू करवाने के लिए किसी सर्वोच्च न्यायालय या संसद द्वारा अधिकृत किसी अन्य न्यायालय में सेवा करने का अधिकार प्राप्त होता है। ये न्यायालय निर्देश, आदेश तथा समादेश पत्र जारी कर नागरिकों को प्रदत्त अधिकारों की सुरक्षा कर सकते हैं।

राज्य के निर्देशक तत्व

संविधान में कनिष्ठ सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था के सिद्धान्तों का सम्मिलित किया गया है जिसके अन्तर्गत धन और धन की प्राप्ति, राज्य की व्यवस्थापिका और न्यायपालिका दोनों में की गई है। इन सिद्धान्तों का उद्देश्य आर्थिक समता की प्राप्ति है। उसका विवरण इस प्रकार है —

(१) राज्य, सब कल्याण की उन्नति के हेतु ऐसी सामाजिक-व्यवस्था बनाएगा और उसका ऐसा संचालन करेगा, जिसमें समान रूप में सभी नर-नारी नागरिकों को जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो। समुदाय की भौतिक सम्पत्ति और साधनों का स्वामित्व और उस पर नियंत्रण इस प्रकार बँटा हो कि वह सामूहिक हित का साधन हो, आर्थिक प्रणाली ऐसी हो जिसमें धन और उत्पादन के साधन आम लोगों के हित के विरुद्ध केन्द्रित न हों, श्रमिकों की शक्ति एवं शक्ति की सुव्यवस्था का दुर्लभ भाग न हो और इन्हें विवश होकर ऐसा काम न करना पड़े जो उनकी शक्ति का अनुकूल न हो।

(२) राज्य आम पंचायतों का गठन करेगा जो उन्हें ऐसी शक्तियाँ एवं अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वायत्तशासन की ईवाइया के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हों।

(३) राज्य अपने आर्थिक मामलों के अनुसार मजदूरी का काम और शिक्षा पाने का समान अधिकार दिलाए और बेरोजगारी, बुढ़ापे, बीमारी या अपाहिजपन की अवस्था में सबको वित्तीय सहायता दे।

(४) राज्य काम की यथाचित और मानवाचित दशावस्था को सुनिश्चित करने तथा प्रमूनि सहायता के लिए उपबन्ध करेगा।

(५) राज्य श्रमिकों को काम, निर्वाह योग्य मजदूरी शिष्ट और उन्नत जीवन स्तर बनाने की दृष्टि से उपयुक्त कानून और व्यवस्था बनाने का विशेष रूप में प्रयास करेगा। इसमें साथ ही वह श्रमिकों का अवकाश के उपभागों की दृष्टि से सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवसर भी प्रदान करेगा।

(६) भारत के समस्त राज्य क्षेत्र में नागरिकों के लिए राज्य एक समान व्यवहार संहिता (मिजिल कोड) बनाने का प्रयास करेगा।

(७) राज्य, १४ वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने के लिए प्रबन्ध करने का प्रयास करेगा।

(८) राज्य, जनता के दुर्बलतर वर्गों विशेषकर अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा तथा अन्य-संबन्धी हितों की उन्नति करेगा तथा सामाजिक श्रेय एवं शोषण से उनकी रक्षा करेगा।

(९) राज्य नागरिकों का पौष्टिक आहार और जीवन स्तर का रक्षण करने तथा

सावजनिक स्वास्थ्य के सुधार के लिये भरसक प्रयास करेगा।

(१०) राज्य, कृषि और पशुपालन को आधुनिक और बनानिक प्रणालिया से सगठित करने का प्रयास करेगा तथा विशेषतः गाया, बछड़ा तथा भ्रय दुधारू और बाहक ढोरा की नस्ल के परिरक्षण और सबधन के लिए तथा उनके बध का प्रतिशोध करने के लिए अग्रसर हागा।

(११) राज्य राष्ट्रीय महत्व के स्मारको स्थाना एव सांस्कृतिक सम्पत्ति की रक्षा करेगा।

(१२) राज्य की लोक सेवाया म 'यायपालिका को कायपालिका स पृथक् करने के लिए राज्य अग्रसर होगा।

(१३) राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की उन्नति का राष्ट्रों के बीच 'याय और सम्मानपूण सबधा का बनाए रखन का अतरोष्ट्रीय विधि और सधि बंधना के प्रति आदर बताने का तथा अतरोष्ट्रीय विवादो को मध्यस्थता के द्वारा निबटारे के लिए प्रोत्साहन देने का प्रयास करेगा।

केन्द्रीय कार्यपालिका

साविधानिक संरचना म शीपस्थ व्यक्ति है—राष्ट्रपति। भारत सभ की कायपालिका शक्ति राष्ट्रपति म निहित है। राष्ट्रपति इसका प्रयोग सविधान के अनुसार स्वयं या अधीनस्थ पदाधिकारियों के द्वारा कर सकता है। राष्ट्रपति को उस सभ का प्रधान एव राज्यपाला की राया क प्रधान के रूप म मायता दी गई है। राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति प्रधानमंत्री और मन्त्रि मंडल का संयुक्त रूप ही केन्द्रीय सरकार से अभिहित होता है। इसी को भारत सरकार या केन्द्र सरकार कहते हैं। भारत सरकार की राजधानी दिल्ली म है जहा से २१ राज्य संबद्ध हैं तथा सघीय क्षेत्रा पर सीधा केन्द्र का शासन है।

राष्ट्रपति

भारत सभ का एक राष्ट्रपति होता है जिसम सभ की कायपालिका शक्ति निहित है। सनाधो का सर्वोच्च समादेश भी राष्ट्रपति म निहित है। राष्ट्रपति का निर्वाचन एव निर्वाचक मण्डल द्वारा अनुपाती प्रतिनिधित्व पद्धति के आधार पर एवल सत्रमण्ठीय मत द्वारा होता है। इस निर्वाचक मंडल म ससद के दाना सत्ना एव राज्य विधानसभाया के निर्वाचित सदस्य होते हैं।

राष्ट्रपति पद के लिए निम्नलिखित अहताए अनिवार्य है —(१) वह भारत का नागरिक हो (२) उसकी आयु पतीस बष हो चुकी हो (३) उसम लोकसभा के लिए सदस्य निर्वाचित हान की अहताए विद्यमान हा तथा (४) वह भारत सरकार अथवा किसी राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर आसीन न हो (उपराष्ट्रपति राज्यों के राज्यपाल तथा मन्त्रिमन् लाभकारी नहीं मान जाते)।

राष्ट्रपति का निर्वाचन ५ बषों के लिए होता है। मृत्यु त्यागपत्र या पन्त्याग की अवस्था म राष्ट्रपति का पद ५ साल के लिए ही भरा जाता है, न कि शेष काल के लिए। राष्ट्रपति को प्रतिमाह १० ००० ६० बतन और निशुल्क आवास प्राप्य है। वेतन के प्रतिरिक्त कई प्रकार के भत्त भी राष्ट्रपति का प्राप्त होते हैं। १९६२ म पारिल राष्ट्रपति पेंशन अधिनियम के अनुसार सबानिवर्ति हान के बाव उनके जीवन काल के लिए उनकी पेंशन १५ ००० २० और उनका निजी सचिवालय के लिए १० ००० ६० प्रति बष नियत की गई है। उम निशुल्क चिकित्सा

सुविधा भी प्राप्त होगी ।

सविधान के ६१वें अनुच्छेद में राष्ट्रपति को अपने पद से हटाये जाने की विधि का विवरण है। इसके अनुसार राष्ट्रपति पर 'महाभियोग' लाने के लिए ससद के किसी भी सदन में कोई भी सदस्य दोपारापण कर सकता है, यदि (क) महाभियोग के प्रस्ताव पर सदन के सदस्यों की कुल संख्या के कम से कम चौथाई भाग ने हस्ताक्षर किए हों, (ख) प्रस्ताव के लिए कम से कम १४ दिन पूर्व लिखित सूचना दी गई हो, (ग) वह प्रस्ताव सदन के कम से कम दो तिहाई बहुमत से पारित किया गया हो। इन सारी स्थितियों के बाद दूसरा सदन इन अभियोगों की जांच करेगा। जांच के समय राष्ट्रपति को स्वयं उपस्थित होना अथवा अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है। अगर इस जांच करने वाला सदन में दो तिहाई सदस्यों द्वारा अभियोग का प्रस्ताव पारित हो जाता है, तो राष्ट्रपति को पदच्युत किया जा सकता है। राष्ट्रपति किसी भी समय अपने पद से त्यागपत्र दे सकता है। त्यागपत्र की सूचना वह उपराष्ट्रपति को देगा, जिसकी सूचना वह लोकसभा को दे देगा।

राष्ट्रपति के अधिकार राष्ट्रपति के अधिकारों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है (१) **कायपालिका अधिकार** (क) कायपालिका व सभी काय राष्ट्रपति के नाम से किये जाते हैं। सरकार के सभी अधिकारी उसके अधीनस्थ अधिकारी हैं और वह काय सुविधा पूर्वक संचालन के लिए नियम बनाता है। (ख) **सैनिक अधिकार** भारत की सशस्त्र सेनाओं की सर्वोच्च कमान राष्ट्रपति का सौंपी गई है। वह स्थल सेना, जन सेना एवं वायु सेना का प्रधान है। (ग) **विदेशी मामलों तथा कूटनीतिक अधिकार** अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का प्रतिनिधित्व राष्ट्रपति करता है तथा राजदूतों एवं राजनयिक प्रतिनिधियों को नियुक्त करने का अधिकार उसे प्राप्त है। विदेशी राजनयिकों का स्वागत राष्ट्रपति करता है। सभी अन्तर्राष्ट्रीय संधियों राष्ट्रपति के नाम से की जाती हैं। (२) **संकटकालीन अधिकार** राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा कर सकता है यदि (क) भारत की सुरक्षा बाह्य आक्रमण या आतंरिक गड़बड़ी के कारण खतरे में पड़ जाय, (ख) किसी राज्य की सरकार सविधान के उपबन्धों के अनुसार नहीं चलायी जा सकती हो, (ग) वित्तीय स्थायित्व का खतरा हो जान की स्थिति उत्पन्न हो जाए। (३) **विधायन के अधिकार** राष्ट्रपति के द्वीय विधानमण्डल का एक भाग है। वह ससद को आहूत और सत्रावसान करता है। वह लोकसभा को भंग कर सकता है। सत्र के पहले दिन ससद में अभिभाषण देता है नये राज्यों को मायता देने की अथवा राज्यों की सीमाओं में परिवर्तन संबंधी सिफारिश करता है वित्तीय विधेयकों आदि की स्वीकृति देता है। विधेयकों को स्वीकार अथवा अस्वीकार करता है सत्रावसान की अवधि में किसी भी समय वह अध्यादेश की घोषणा कर सकता है। राज्यसभा में १२ सदस्यों को तथा लोकसभा में दो एंग्लो इंडियन सदस्यों को मनोनीत करता है। राष्ट्रपति की सिफारिश व बिना ससद में वित्तीय विधेयक पुरस्थापित नहीं किया जा सकता। राष्ट्रपति प्रत्येक वित्तीय वर्ष का अनुमानित आय-व्यय का विवरण ससद के समक्ष प्रस्तुत करने की स्वीकृति देता है। राष्ट्रपति को पूर्ण व निलम्बन निषेधाधिकार भी प्राप्त हैं। (४) **यायायिक अधिकार** राष्ट्रपति किसी भी अपराध के लिए दोषसिद्ध व्यक्ति के दंड को क्षमा कर सकता है तथा उसके दण्ड को स्थगित कर सकता है।

उपराष्ट्रपति

सविधान के अनुच्छेद ६३ में राष्ट्रपति के अलावा भारत के एक उपराष्ट्रपति का

उपबन्ध है। वह राष्ट्रपति के पश्चात् सर्वोच्च पदाधिनारा है। ससद क दोना सदन की सदस्यता वृद्धि म उपराष्ट्रपति का चुनाव अनुपाती प्रतिनिधित्व पद्धति के आधार पर एकल हस्तातरणीय मत द्वारा होता है। उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन अध्यक्ष है। उपराष्ट्रपति पद की पात्रता हेतु भारत का नागरिक ३५ वर्ष की आयु एवं राज्य सभा की सदस्यता प्राप्त करने की योग्यता होना आवश्यक है। इसका कार्यकाल ५ वर्ष है किन्तु इसके पूर्व भी यह त्यागपत्र दे सकता है। राज्यसभा का बहुमत से पारित प्रस्ताव एवं लोकसभा द्वारा उसकी स्वीकृति मिला जान पर उपराष्ट्रपति का अपने पद से हटाया जा सकता है। ऐसे प्रस्ताव की सूचना १४ दिन पूर्व देनी पड़ती है। राष्ट्रपति के अस्वस्थ होने या अनुपस्थिति म उप राष्ट्रपति ही राष्ट्रपति का कार्यभार संभालता है। राष्ट्रपति की आकस्मिक मृत्यु होने की स्थिति म नये राष्ट्रपति चुने जाने तक वह राष्ट्रपति का कार्य करता है। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति दोनों पद रिक्त होने पर भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश राष्ट्रपति का कार्य करेंगे और उसके अभाव म वरिष्ठतम न्यायाधीश यह कार्य करेंगे।

मंत्रिपरिषद् राष्ट्रपति को परामर्श और सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद् की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सिफारिश के अनुसार स्वयं राष्ट्रपति करते हैं। कार्यपालिका शक्ति वस्तुतः प्रधानमंत्री और उसके मंत्रिमंडल में ही सन्निहित है। राष्ट्रीय सरकार का सारा कार्य सम्भालन का उत्तरदायित्व मंत्रिपरिषद् पर ही है।

साधारणतः लोकसभा म जिस दल का बहुमत होता है उसके नेता का राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद् बनाने के लिए आहूत करता है। दल का नेता ही प्रधानमंत्री होता है। प्रधानमंत्री फिर अपने सहयोगी मंत्रियों को चुनता है। प्रधानमंत्री की सिफारिश पर राष्ट्रपति उनको मंत्री नियुक्त करता है और उनके विभाग निर्धारित करता है। मंत्रिपरिषद् सामूहिक रूप से ससद के प्रति उत्तरदायी होती है। पर राज्यसभा को मंत्रिपरिषद् के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव करने का कोई अधिकार नहीं है।

प्रधानमंत्री लोकसभा म बहुमत प्राप्त दल के नेता का राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाता है। सिद्धांततः जो अधिकार राष्ट्रपति को प्राप्त हैं उनका व्यवहार में प्रधानमंत्री ही साता है। प्रधानमंत्री अपने मंत्रिमंडल को बंधकों की अध्यक्षता करता है। विभिन्न मंत्रालयों के कार्यों म एकमूर्तता लाता है। सरकार के सब विभागों पर नियंत्रण और अधीक्षण रखता है। वह किसी भी मंत्री से त्यागपत्र मांग सकता है। प्रधानमंत्री के पद-त्याग पर सम्पूर्ण मंत्रिपरिषद् का पद त्याग माना जाता है। लोकसभा म यह सम्पूर्ण मंत्रिपरिषद् का प्रतिनिधित्व करता है। ससद के सम्मुख वह सरकार की नीति काय और निष्पत्ती का विश्लेषण करता है।

ससद

भारत म शासन का समन्वय पद्धति अपनाई गई है। कार्यपालिका शक्ति का प्रयोग मंत्रिपरिषद् करता है जो ससद के प्रति उत्तरदायी होती है। राष्ट्रपति का निर्वाचन परामर्श द्वारा है। सपाय ससद राष्ट्रपति राज्य सभा और लोकसभा को मिलाकर बनी है।

ससद की शक्ति और अधिकार राष्ट्रीय सूची म लिए गए ६६ और संघगत सूची के ४७ विषयों पर कानून बना सकती है। जो विषय राज्य को नहीं लिए गए हैं और संघवर्ती सूची के अन्तर्गत हैं वे भी ससद में निर्दिष्ट माने जाते हैं। साधारणतः राज्य के विषय ससद के विचार क्षेत्र में आते हैं। राज्य के लिए निर्धारित ६६ विषयों पर ससद सभी विधि बना सकती है।

जब राज्य विधानमंडल इस आशय का प्रस्ताव स्वीकार कर केन्द्रीय सरकार को दे। राष्ट्रीय या सावजनिक वित्त पर ससद का पूरा नियंत्रण है। ससद की अनुमति के बिना सरकार एक पैसा भी खर्च नहीं कर सकती। भारत सघ के मुशासन के लिए केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् लोक सभा के प्रति उत्तरदायी है। ससद राष्ट्रपति पर महाभियोग लगा सकती है। ससद 'याय-व्यवस्था' में हस्तक्षेप नहीं करती, लेकिन 'याय' की विशुद्धता और 'याय-दान' के काय को सतत जारी रखने पर ध्यान रखती है। लोकसभा मन्त्रिपरिषद् पर अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित कर सकती है और उसके पारित होने की दशा में मन्त्रिपरिषद् का त्यागपत्र देना हाता है। ससद का सविधान में सशोधन करने का भी अधिकार है। यह 'यायाधीशा' पर भी महाभियोग लगा सकती है। राष्ट्रपति शासनकाल में, यह राज्या के कानून बना सकती है। उनका बजट भी पास कर सकती है।

राज्यसभा सविधान में राज्यसभा के सदस्या की अधिकतम सख्या २५० नियत की गयी है। राष्ट्रपति द्वारा १२ सदस्य मनोनीत होते हैं। मनानयन साहित्य कला विज्ञान और समाज सेवा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त लोगो में से होता है। शेष राज्य के प्रतिनिधि होते हैं। इनका चुनाव राज्य की विधानसभामें प्रतिनिधियों द्वारा एकल हस्तातरणीय मत द्वारा सानुपाती प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार किया जाता है। ३० वष या इससे अधिक आयु का भारत का प्रत्येक नागरिक इसका उम्मीदवार हो सकता है। इसके सदस्य ६ वर्षों के लिए चुने जाते हैं जिसमें से एक तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वष बाद सवानिवृत्त हो जाते हैं। इसलिए यह सदन कभी भंग नहीं होता। उपराष्ट्रपति इस सदन का पदेन अध्यक्ष हाता है।

लोकसभा इसमें प्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति द्वारा जनता के चुने प्रतिनिधि रहते हैं। इसकी सदस्यता के लिए भारत के नागरिक का २५ वष या इससे अधिक आयु का होना आवश्यक सविधान की धारा ८१ के अनुसार इसकी अधिकतम सदस्य सख्या ५२५ है। इसमें ५०० से अधिक मतदाताओं द्वारा सीधे निर्वाचित होते हैं। अधिकतम २ एंग्लाइडियन राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा में स्वविवेकानुसार मनोनीत किये जा सकते हैं। केन्द्रशासित प्रदेशों से अधिकतम २५ प्रतिनिधि हाते हैं। साधारणतः लोकसभा का कायकाल ५ वष का होता है परन्तु राष्ट्रपति इसे इस अवधि के बीच में भी भंग कर सकता है। इसका अध्यक्ष सदस्यों द्वारा ही चुना जाता है जो परम्परानुसार निदलीय बन जाता है।

लोकसभा और राज्यसभा के मध्य सवध दोनों सदना का काय, विधि का निर्माण करना है। विधेयक दोनों सदनों से पारित होकर ही अधिनियम बन सकते हैं। दोनों सदनों में मतभेद की स्थिति में राष्ट्रपति सयुक्त बैठक बुला सकता है। अथ विधेयका के सवध में राज्य सभा का अधिकार केवल विचार करना भर है। मुख्य कायपालिका केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् है जो लोकसभा के प्रति उत्तरदायी है।

विषयो का वर्गीकरण

सविधान की सप्तम अनुसूची में विधियों के विषया को तीन सूचियों में विभक्त किया गया है। प्रथम सूची में सघीय विषय हैं, दूसरी में राज्य के विषय हैं। तीसरी सूची में शामिल विषया पर, सविधान के उपबन्धा के अधीन विधि बनाने के लिए केन्द्र व राज्य दोनों सशक्त हैं। इसे समवर्ती सूची कहते हैं।

सघीय सूची सुरक्षा, परराष्ट्र सचार डाक-तार, मुद्रा चलन, आयकर आदि मिलाकर

कुल ६७ राष्ट्रीय विषय हैं। राज्य सूची इंग्लैंड के प्राचीन विभिन्न स्थानीय स्वायत्तशासन प्रांतों के कल्याण कानून और व्यवस्था भूराजस्व या, राज्य व्यवस्था पुलिस जेल वृत्ति पंचायत राज और प्रत्येक पालिका प्रांत है। इन विषयों की कुल संख्या ६६ है। संघको सूची के ऐसे विषय हैं जिनमें वेद और राज्य दोनों को विधि निर्माण का अधिकार है। इनमें मुख्य हैं विचार तलाश धर्म-न्याय विवाहविधायन धर्म-भागदान सामाजिक सुरक्षा पौत्रासी और शीतली संहिता व्यापार और उद्योग समाचारण छायायता प्राधिकार नियंत्रण प्रांत। इन विषयों की संख्या कुल ४७ है।

उपरोक्त वर्गीकरण से छूटे अनुविधायक या उप विषय प्रत्येक विषय होने और व संघ सरकार के अधिकार में होंगे। संघ ही इन विषयों में नियंत्रण कर सकती है।

संघ-राज्य क्षेत्र

संविधान में जिन प्रांतों का गठन न किया गया था वे संघ में रखे गए थे और संविधान में दिए गए प्रांतों संशोधन (१९५६) के बाद वे संघ द्वारा प्रांतों में प्रकट किए गए हैं। इनकी कुल संख्या अब ६ है। संविधान के १४वें संशोधन के द्वारा अधिकांश राष्ट्रीय प्रयोग में विधानसभा की स्थापना की व्यवस्था १९६३ से की गई है। संघीय मंत्र मंत्रालय परिवर्तित करते हैं। लोकसभा में संघ राज्य क्षेत्र का प्रतिनिधित्व अधिकांश २५ है। संघीय सरकार सभा में मात्र और राज्यसभा में तीन प्रतिनिधि हैं। राज्य सभा में प्रादेशिक मंत्रालय और अधिकांश को एक-एक स्थान दिया गया है। अब संघ-प्रांतों का स्थापना की है।

अल्पसंख्यकों के संघों में विशेष उपबन्ध परिगणित वर्ग और जातीय के लिए संसद और राज्यों के विधान-मंडल में कुछ स्थान सुरक्षित हैं। संसद सभा में अल्पसंख्यकों समाज के दो प्रतिनिधि हैं। यदि राष्ट्रपति अनुभव करें कि उनका प्रतिनिधित्व पर्याप्त नहीं है तो मनोनीत कर सकते हैं। विधान सभाओं के लिए राज्यपालों को भी यही अधिकार प्राप्त है।

संविधान के लागू होने के दस साल बाद पिछड़े वर्ग और अल्पसंख्यकों के लिए स्थान सुरक्षित रखने की व्यवस्था समाप्त होनी थी। परन्तु १९६० में एक संशोधन कर वह अवधि १९८० तक बढ़ा दी गयी है।

भाषा

संविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार भारत संघ की भाषा मातृभाषा लिपि में लिखी हिन्दी है (सरकारी कामों में रोमन प्रकृत रहेगी)। हिन्दी को प्रशासनिक कार्य में योग्य बनाने के लिए संविधान लागू होने से १५ साल तक अंग्रेजी जारी रखने देने का उपबन्ध किया गया है तदनुसार २६ जनवरी १९६५ से संघ की भाषा हिन्दी घोषित की गई। १९६५ के बाद अंग्रेजी का व्यवहार समाप्त किया जाना था। परन्तु १९६३ में ही संविधान की धारा ३४३(३) के अधीन राज भाषा अधिनियम प्रस्तुत किया गया जिसके अनुसार १९६५ के बाद भी अंग्रेजी अनिश्चितकाल तक बनी रहेगी। उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों की कार्यवाही अंग्रेजी में जारी रह सकती है। विधायक और अधिनियम पहले के समान अंग्रेजी में बन सकते हैं। कानूनी तौर पर अंग्रेजी सह राजभाषा है परन्तु व्यवहार में वही राजभाषा है।

हिन्दी के अतिरिक्त अन्य १४ क्षेत्रीय भाषाएँ—असमिया बंगला उर्दू मराठी गुजराती, पंजाबी संस्कृत कश्मीरी तेलगु सिंधी तमिल, मलयालम कन्नड़ और उडिया का उल्लेख राष्ट्रीय भाषाएँ कहकर हुआ है।

निर्वाचन आयोग

यह एक स्थायी आयोग है। मसद, विधान-मंडल राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के निर्वाचन का नियंत्रण निर्वाचन आयोग करता है। इसकी नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं। इसका प्रधान मुख्य निर्वाचन आयुक्त होता है जो अपने पद से उसी प्रक्रिया द्वारा हटाया जा सकता है, जिन तरह उच्चतम न्यायालय का कोई 'यायाधीश। आयोग प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के निर्वाचन के लिए मतदाताओं की सूची तैयार कराता है। कोई भी व्यक्ति घम, वश जानि, लिंग आदि के कारण उसमें अपना नाम लिखाने के अधिकार में वंचित नहीं किया जा सकता। मतदाता सूची हर साल पुनरीक्षित की जाती है। चुनाव चिह्न का आवंटन और राजनीतिक दला को मान्यता प्रदान करने का अधिकार भी निर्वाचन आयोग को है।

वित्त आयोग

सविधान में राष्ट्रपति द्वारा वित्त आयोग की नियुक्ति की व्यवस्था है। यह आयोग हर पाचवें वर्ष नियुक्त किया जाता है। आयोग कुछ करा (आयकर, उत्पादन, शुल्क व कुछ निर्यात-करा आदि) के विषयों में केन्द्र और राज्या के मध्य वितरण के अनुपात के विषय में सिफारिश करता है। पहला वित्त आयोग १९५१ में, दूसरा १९५६ में तीसरा १९६० में, चौथा १९६४ में और पाचवा १९६९ में नियुक्त किया गया था। छठा वित्त आयोग श्री ब्रह्मानंद रेड्डी की अध्यक्षता में १९७२ में नियुक्त हुआ।

भारत की सचिव निधि

केन्द्र और राज्य क्रमश 'भारत की सचिव निधि' और राज्य की सचिव निधि का निर्माण करने के लिए बाध्य हैं। ससद और विधानसभाएँ जब तक विनियोग विधेयक पारित न करें और राष्ट्रपति उसकी स्वीकृति न दें तब तक सरकार इसमें से एक पसा भी व्यय करने की अधिकारी नहीं है। भारत और राज्या के लिए आकस्मिक निधि की स्थापना की गई है। विनियोग विधेयक पारित न होने तक इस निधि से सरकारें खच कर सकती हैं।

लोक सेवा आयोग

सविधान में एक सच लोक सेवा आयोग और राज्य के आयोगों की स्थापना का उपबन्ध है। दो या अधिक राज्य एक ही आयोग रखने के लिए सहमत हो सकते हैं। सदस्यों की नियुक्ति यथास्थिति राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा होती है। आयोग सेवाओं में नियुक्ति के लिए परीक्षाएँ संचालित करता है। सेवाओं में नियुक्ति, पदोन्नति पदावनति आदि के मामलों में आयोग से परामर्श करना आवश्यक है। सच लोक सेवा आयोग वार्षिक प्रतिवेदन राष्ट्रपति को प्रस्तुत करता है जो ससद के समक्ष रख दिया जाता है।

बजट

प्रत्येक वित्तीय वर्ष में राष्ट्रपति ससद के दोनों सदन के समक्ष उस वर्ष के लिए प्राक्कलित प्राप्तियाँ और व्यय का विवरण रखवाना है। इस वार्षिक वित्त विवरण कहा गया है। इसे ही बजट कहा जाता है। वार्षिक बजट में अनुमान होने पर भी वर्ष में अकल्पित आवश्यकताएँ उत्पन्न हो सकती हैं जैसे युद्ध बाढ़ अकाल आदि के कारण। इसके लिए पूर्व अनुमान का उपबन्ध किया गया है। बजट साल भर की आवश्यकता का

न पूरा करें तब ही पूरक अनुमान केंद्रीय सरकार समक्ष तथा राज्य सरकारों से प्राप्त गमापों में पेश करती है।

व्यापार और व्यवसाय संविधान भारत भर में नागरिकों का व्यापार वाणिज्य और समागम की स्वतंत्रता देता है। किन्तु राज्य और राज्यों के विधानमण्डलों को इनकी मर्यादित और प्रतिबंधित करने के लिए कानून बनाने का अधिकार दिया गया है। ये कानून किसी वस्तु की दुर्लभता होने की अवस्था में या राष्ट्रीय हितों में आवश्यकता होने पर बनाया जा सकता है। सामाजिक हित में व्यापार वाणिज्य पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। राज्य उपयुक्त उपबंधों को लागू करने के लिए एक परिषद् भी स्थापित कर सकती है।

क्षेत्रीय परिषदें ये संविधान के भाग नहीं हैं पर राज्य पुनर्गठन अधिनियम १९५६ के अंतर्गत हैं। दो या दो से अधिक राज्यों के प्रशासन में एकसूत्रता लाने के लिए पांच क्षेत्रीय परिषदें स्थापित की गई हैं। राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को दूर करने का काम भी ये करती हैं। साथ ही विघटनकारी शक्तियाँ के प्रभाव का मिटाना और भारत की एकता को दृढ़ करना भी इनका काम है। ये एक विशुद्ध परामर्शात्मक संस्था हैं। अधिक राज्यों से संबंधित एक-ही समस्याओं पर विचार करने वाली समिति है। परिषदें ये हैं—(१) उत्तराखण्ड—पंजाब, राजस्थान हिमाचल प्रदेश सिन्धी हरियाणा पंजाब और जम्मू-कश्मीर (२) मध्य क्षेत्र—उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश। (३) पूर्वी क्षेत्र—बिहार पश्चिमी बंगाल उड़ीसा असम मणिपुर त्रिपुरा और नागालैंड। (४) पश्चिमी क्षेत्र—गुजरात महाराष्ट्र गांधी दमन-दीव दादर और नगर हवेली। (५) दक्षिणी क्षेत्र—तमिलनाडु आंध्र कर्नाटक और पाण्डिचेरी। पूर्वी क्षेत्र को गत वर्ष पुनर्गठित कर पूर्वोत्तर क्षेत्र नामक एक नया क्षेत्र बनाया गया है।

क्षेत्रीय परिषद की रचना (१) राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत केंद्रीय मंत्री इसका पदेन अध्यक्ष होता है। (२) प्रत्येक सम्बंधित प्रदेश का मुख्यमंत्री और दो-तीन मंत्री भी परिषद में होते हैं। मंत्री राज्यपाल द्वारा मनोनीत किए जाते हैं। (३) जहाँ सभ राज्य क्षेत्र सम्मिलित होगा वहाँ राष्ट्रपति दो से अधिक व्यक्तियों को परिषद् में मनोनीत न करेगा।

क्षेत्रीय परिषद् में निम्नलिखित भी परामर्शदाता नियुक्त किए जाते हैं (क) राज्यों के मुख्य सचिव। (ख) योजना आयोग द्वारा मनोनीत व्यक्ति। (ग) राज्यों के विकास आयुक्त परिषद् के परामर्शदाता इसके विचार विमर्श में भाग लेने के अधिकारी हैं मत देने के नहीं।

क्षेत्रीय परिषद का काम प्रत्येक क्षेत्रीय परिषद एक परामर्शदाता संस्था होती है और राज्यों के पारस्परिक हितों के प्रश्नों पर विचार करती है। यह निम्न विषयों पर विचार और सिफारिश कर सकती है (क) आर्थिक और सामाजिक नियोजन सम्बंधी सामान्य हित के विषय। (ख) सीमा विवाद भाषाओं अल्पसंख्यक और अंतर्राज्य परिवहन से सम्बंधित विषय। (ग) राज्यों के पुनर्गठन से उत्पन्न कोई विषय।

क्षेत्रीय परिषद का उद्देश्य (१) देश में भावात्मक एकता का निर्माण करना। (२) उच्च प्रादेशिकता, आचलिकता भाषावाद और अन्य इसी प्रकार की प्रवृत्तियों पर रोक लगाना। (३) सामाजिक और आर्थिक मामलों में अधिक अच्छा सहयोग उत्पन्न करना। इस प्रकार समाज के कल्याण के लिए समरूप नीतियों को विकसित करना। (४) विकास की

मुख्य परिकल्पनाओं का मफन बनाने में परस्पर सहयोग करना। तदनुसार (क) मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश और राजस्थान मिल कर चम्बल घाटी के डाकुओं का सफाया कर रहे हैं। (ख) उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्र में एक सामान्य पुलिस रिजर्व फॉर्म बनाई गई है। (ग) रिहद परियोजना से उत्पन्न बिजली का मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बीच बितरण के प्रश्न का निपटारा क्षेत्रीय परिषद की जून १९६३ की बैठक में किया गया।

असम के आदिमजातीय क्षेत्र असम के आदिमजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के लिए एक विशेष व्यवस्था है। इसमें द्वारा कुछ स्वायत्तशासी जिला तथा प्रदेशों की व्यवस्था की गई है। राष्ट्रपति की आर स असम के राज्यपाल का इन क्षेत्रों का भार सौंपा गया है और इन जिला तथा प्रदेशों के लिए परिषदें बनाने का अधिकार दिया गया है। इन परिषदों को अपने अपने क्षेत्र के लिए नियम बनाने का अधिकार व कानून बनाने विवादा और मुख्य मुकदमा का सुनने और निपटान के लिए ग्राम-न्यायालय गठित करने जिला व प्रादेशिक कोष का प्रशासन करने और विद्यालय, औपघालय व बाजार आदि स्थापित करने आदि के अधिकार हैं। असम के राज्यपाल का स्वायत्तशासी जिला व प्रदेशों के प्रशासन का निरीक्षण करने और इस विषय में प्रतिवेदन देने के लिए आयोग नियुक्त करने का भी अधिकार है।

विशेष अधिकारी राष्ट्रपति अनुसूचित भाषायी अल्पसंख्यकों की शिकायतें दूर करने में मदद देने के लिए भी एक विशेष अधिकारी नियुक्त कर सकते हैं।

आचक्षिक समितियाँ १९५६ में राज्या के भाषावार पुनगठन के समय से ये समितियाँ पञ्जाब और आंध्र प्रदेश की भाषायी और सांस्कृतिक समस्याओं को हल करने के लिए बनाई गईं।

अन्तर्राज्य परिषद राष्ट्रपति निम्न बातों के लिए अन्तर्राज्य परिषद स्थापित कर सकते हैं, (१) राज्या में उत्पन्न विवादों के कारणों का जांच करने और उनके विषय में राय देने के लिए। जैम—कृष्णा-गोदावरी नदियों के पानी बितरण के बारे में उठे विवादों के हल के लिए गुनाटी समिति नियुक्त की गई थी। (२) राज्या और सभ के मध्य के सामान्य विषयों का जांच करने और उनको निपटान के लिए। (३) सभिय ढांचे को दृढ़ करने और इसकी इकाइयों के साथ कामका सम्बन्ध घनिष्ठ करने के लिए।

लोक लेखा समितियाँ संविधान में निहित है कि लेखा नियंत्रक महापरीक्षक अपना वार्षिक प्रतिवेदन राष्ट्रपति को देंगे। राष्ट्रपति उसका समर्थन सदन के सामने उपस्थित करेंगे। सन्तान की सदस्य संख्या चूंकि विशाल है अतः उनके सदस्यों की एक समिति इस प्रतिवेदन की परीक्षा करती है। यही लोक लेखा समिति है।

भाषायी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की व्यवस्था

(१) राज्य एकभाषी माना जायगा यदि जनसंख्या का ७० प्रतिशत से अधिक एक भाषा बोलने वाला हो। (२) यदि जनसंख्या का ३० प्रतिशत या इसमें अधिक भाग एक भिन्न भाषा बोलने वाला हो तो वह द्विभाषी राज्य माना जायगा। (३) राज्य पुनगठन आयोग ने सिफारिश की थी कि अखिल भारतीय संवामा में भविष्य में ५० प्रतिशत लोग राज्य से बाहर के भरती किए जायें। इस पर ध्यान रखा जाता है। (४) भाषिक अल्पसंख्यकों के हितों को प्राथमिकता स्तर पर उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी है।

यदि एक विद्यालय में ऐसे ४० और एक कक्षा में ऐसे १० छात्र हों, तो उन्हें उनकी भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। (५) राष्ट्रपति प्राथमिक स्तर पर प्रायुक्त नियुक्त कक्षा जो उन्हें वार्षिक रिपोर्ट देगा। (६) अल्पसंख्यकों के विद्यालय को राज्य भाषा देगा। राज्य में नौकरों के लिए अधिवास की इंतर्गत् हटा दी गयी है।

सघ की न्यायपालिका

भारतीय सविधान की सबसे बड़ी विशेषता है कि न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक् एवं स्वतंत्र रखा गया है। इसकी विस्तृत व्याख्या नीचे व्यवस्था अध्याय में है।

सविधान में सशोधन प्रक्रिया

सविधान के २०वें भाग के अनुच्छेद ३६८ में सविधान में सशोधन की प्रक्रिया बताया गया है। यदि ससद के दोनों सदन बहुमत से और उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई मत से सशोधन विधेयक पारित कर दें तो राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद, वह सशोधन विधान का अंग हो जायेगा। परन्तु यदि कोई सशोधन (क) अनुच्छेद ५४, ५५, ७३, १६२, २४१ (ख) भाग ५ के अध्याय ४ भाग ६ के अध्याय ५ या भाग ११ के अध्याय १ में अथवा (ग) सातवीं अनुसूची की सूचियाँ में से किसी में (घ) ससद में राज्या के प्रतिनिधित्व अथवा (ङ) इस अनुच्छेद (३६८) के उपबन्धों में कोई परिवर्तन करना चाहता है तो ऐसे उपबन्ध करने वाले विधेयक को राष्ट्रपति के समक्ष उपस्थित किये जाने के पूर्व राज्यों में से कम से कम आधे के विधान-मण्डलों से पारित सक्ल्यों द्वारा अनुसमय भी अपेक्षित होगा।

यहाँ यह उल्लेखनीय होगा कि उपरोक्त विषयों का साधारणतया राज्यों के अधिकारों शक्तियों एवं सविधान के सघात्मक रूप पर प्रभाव पड़ता है। सविधान के २४वें सशोधन के द्वारा ससद एवं आधे राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा पारित किसी सविधान सशोधन विधेयक पर सहमति व्यक्त करने का राष्ट्रपति का अधिकार समाप्त कर दिया गया है। इस सशोधन के द्वारा, सविधान के सशोधन का अधिकार देने वाला अनुच्छेद ३६८ का ही सशोधन किया गया है।

इस सशोधन के द्वारा नागरिकों के मौलिक अधिकारों में कटौती किये जाने पर अनुच्छेद १३ द्वारा लगायी गयी पाबन्दी का भी समाप्त कर दिया था।

जम्मू-काश्मीर राज्य के लिए सविधान में सशोधन की प्रक्रिया इस प्रकार है — ऐसा सशोधन जम्मू-काश्मीर राज्य के सम्बन्ध में तब तक प्रभावी न होगा जब तक कि वह अनुच्छेद ३७० की धारा (१) के अधीन राष्ट्रपति के आदेश द्वारा लागू न किया जाए।

सविधान में सशोधन

२६ जनवरी १९५० को भारतीय सविधान लागू हुआ। तब से अब तक ३१ सशोधन किए गए हैं।

प्रथम सशोधन (१९५१ ई०) इसके द्वारा अनुच्छेद १५, १६, ८५, ८७, १७४, १७६, ३४१, ३४२ और ३७२ में छोटे-मोटे परिवर्तन के अतिरिक्त दो नये अनुच्छेद ३१६

और ३१ ख जोड़े गये और आठवीं अनुसूची के बाद नवी अनुसूची जोड़ी गयी। इसकी मुख्य बातें हैं — भेदभाव का निषेध, विदेशों से मन्त्रीपूण सम्बन्ध बनाय रखने के हित में और बदनामी फैलाने या किसी अपराध के लिये भडकाने के सम्बन्ध में नागरिकों के भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर उचित प्रतिबंध लगाने की राज्य शक्ति को विस्तृत कर दिया गया। नवी अनुसूची में जमींदारी उन्मूलन सम्बन्धी विभिन्न राज्यों के १३ अधिनियमों को शामिल किया गया और कहा गया कि इनको किसी न्यायालय में मौलिक अधिकारों के हनन के नाम पर चुनौती नहीं दी जा सकती।

द्वितीय सशोधन (१९५२ ई०) इस सशोधन के द्वारा अनुच्छेद ८१(१)(ख) को सशोधित कर लोकसभा में प्रतिनिधित्व का नया मान नियत किया गया। मूल अनुच्छेद में यह उपबंध था कि लोकसभा में अधिक से अधिक ७५०,००० व्यक्तियों के लिए कम से कम एक सदस्य होगा और कम से कम ५ लाख व्यक्तियों के लिये १ से अधिक सदस्य नहीं होंगे। इस सशोधन के द्वारा जनसंख्या की ऊपरी सीमा हटा दी गई।

तृतीय सशोधन (१९५३ ई०) सातवीं अनुसूची में समवर्ती सूची की तृतीयवीं मद के स्थान पर एक नई मद रख दी गयी जिसमें खाद्य सामग्रियां, पशुओं के चारे कपास और जूट को ऐसा अतिरिक्त मदों के रूप में सम्मिलित किया गया, जिनका उत्पादन-संभरण यदि लोकहित में उपयोगी हो तो केन्द्र द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। इसमें आयातित वस्तुओं का नाम भी जोड़ दिया गया।

चतुर्थ सशोधन (१९५५ ई०) इसका सम्बन्ध केवल जमींदारी उन्मूलन कानूनों से था जो समाज कल्याण के उद्देश्य से बनाए गए कानूनों की शृंखला में सर्वप्रथम थे। संसद को या राज्य विधान मण्डल को यह अधिकार दिया गया कि वे व्यापार या वाणिज्य के किसी विशेष क्षेत्र में राज्य का एकाधिकार शुरू करने के लिए कानून बना सकते हैं। नवी अनुसूची में ७ नये अधिनियम शामिल किये गये। यह भी प्रावधान किया गया कि मुद्रावर्जनों को राशि की अनुपयुक्तता के आधार पर सरकार द्वारा अर्जित किसी सम्पत्ति की वधता को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

पंचम सशोधन (१९५५ ई०) इसके द्वारा राष्ट्रपति को समय सीमा नियत करने की शक्ति प्रदान की गई कि उस सीमा के अन्दर राज्य विधान मंडल किसी ऐसे प्रस्तावित केन्द्रीय कानून पर विचार प्रकट कर सकते हैं जिनका उन राज्यों के क्षेत्र और सीमाओं आदि पर प्रभाव पड़ता है।

षष्ठ सशोधन (१९५६ ई०) अंतरराज्यीय लेन-देन के सिलसिले में वस्तुओं की विक्री और खरीद पर करा से संबंधित है। इसके द्वारा केन्द्र को अंतरराज्यीय व्यापार या वाणिज्य के सिलसिले में ममाचारपत्रों से भिन्न कुछ अन्य वस्तुओं की विक्री और खरीद पर कर लगाने तथा उनका नियंत्रण करने का अधिकार प्राप्त हो गया।

सप्तम सशोधन (१९५६ ई०) इस अधिनियम के द्वारा राज्य की तीन श्रेणियां (क, ख, ग) ममाप्त कर सारे देश को १४ राज्यों और ६ केन्द्रशासित क्षेत्रों में पुनर्गठित कर दिया गया। राज्य पुनर्गठन के कारण भी यह सशोधन किया गया। इसी सशोधन के द्वारा विधान सभाओं की क्षेत्रीय समितियां तथा विद्वान मराठवाड़ा बाकी महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, कच्छ और ग्रेप गुजरात के लिए पृथक् विकास बोर्डों की स्थापना की गई। उच्च न्यायालय

यदि एव विद्यालय में ऐसे ४० और एव बक्षा में ऐसे १० छात्र हों, तो उन्हें उनकी भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। (५) राष्ट्रपति अल्पसंख्यक आयुक्त नियुक्त करेगा जो उन्हें वार्षिक रिपोर्ट देगा। (६) अल्पसंख्यक के विद्यालय को राज्य मायता देगा। राज्य में नौकरी के लिए अधिवास की शर्तें हटा दी गयी हैं।

संघ की न्यायपालिका

भारतीय संविधान की सबसे बड़ी विशेषता है कि न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक एव स्वतंत्र रखा गया है। इसकी विस्तृत व्याख्या न्याय व्यवस्था अध्याय में है।

संविधान में संशोधन प्रक्रिया

संविधान के २०वें भाग के अनुच्छेद ३६८ में संविधान में संशोधन की प्रक्रिया बतायी गयी है। यदि संसद के दोना सदन बहुमत से और उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई मत से संशोधन विधेयक पारित करे तो राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद वह संशोधन विधान का अंग हो जायेगा। परन्तु यदि कोई संशोधन (क) अनुच्छेद ५४, ५५, ७३, १६२, २४१ (ख) भाग ५ के अध्याय ४ भाग ६ के अध्याय ५ या भाग ११ के अध्याय १ में अथवा (ग) सातवीं अनुसूची की सूचियों में से किसी में (घ) संसद में राज्या के प्रतिनिधित्व अथवा (ङ) इस अनुच्छेद (३६८) के उपबन्धों में कोई परिवर्तन करना चाहता है तो ऐसे उपबन्ध करने वाले विधेयक को राष्ट्रपति के समक्ष उपस्थित किये जाने के पूर्व राज्या में से कम से कम आधा के विधान मण्डल से पारित सकल्या द्वारा अनुसमर्थन भी अपेक्षित होगा।

यहां यह उल्लेखनीय होगा कि उपरोक्त विषयों का साधारणतया राज्या के अधिकारों शक्ति तथा एव संविधान के सघात्मक रूप पर प्रभाव पड़ता है। संविधान के २४वें संशोधन के द्वारा संसद एव आधा राज्या के विधान मंडल द्वारा पारित किसी संविधान संशोधन विधेयक पर सहमति व्यक्त करने का राष्ट्रपति का अधिकार समाप्त कर दिया गया है। इस संशोधन के द्वारा संविधान के संशोधन का अधिकार देने वाला अनुच्छेद ३६८ का ही संशोधन किया गया है।

इस संशोधन के द्वारा नागरिका के मौलिक अधिकारों में बढोती किये जाने पर अनुच्छेद १३ द्वारा लगायी गयी पाबन्दी को भी समाप्त कर दिया था।

जम्मू-काश्मीर राज्य के लिए संविधान में संशोधन की प्रक्रिया इस प्रकार है — ऐसा संशोधन जम्मू-काश्मीर राज्य के सम्बन्ध में तब तक प्रभावी न होगा जब तक कि वह अनुच्छेद ३७० की धारा (१) के अधीन राष्ट्रपति के आदेश द्वारा लागू न किया जाए।

संविधान में संशोधन

२६ जनवरी १९५० को भारतीय संविधान लागू हुआ। तब से अब तक ३१ संशोधन किए गए हैं।

प्रथम संशोधन (१९५१ ई०) इसके द्वारा अनुच्छेद १५, १६, ८१, ८७, १७४, १७६, ३४१, ३४२ और ३७२ में छोटे-मोटे परिवर्तन के अतिरिक्त दो नये अनुच्छेद ३१क

और ३१ ख जोड़े गये और आठवी अनुसूची के बाद नवी अनुसूची जोड़ी गयी। इसकी मुख्य बातें हैं — भेदभाव का निषेध विदेशों से मत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने के हित में और बदनामी फलाने या किसी अपराध के लिये भडकाने के सम्बन्ध में नागरिकों के भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रतिबन्ध लगाने की राज्य शक्ति को विस्तृत कर दिया गया। नवी अनुसूची में जमींदारी उमूलन सम्बन्धी विभिन्न राज्यों के १३ अधिनियमों को शामिल किया गया और कहा गया कि इनको किसी 'यायालय में, मौलिक अधिकारों के हनन के नाम पर चुनौती नहीं दी जा सकती।

द्वितीय संशोधन (१९५२ ई०) इस संशोधन के द्वारा अनुच्छेद २१(१)(ख) को संशोधित कर लोकसभा में प्रतिनिधित्व का नया मान नियत किया गया। मूल अनुच्छेद में यह उपबन्ध था कि लोकसभा में अधिक से अधिक ७५०००० व्यक्तियों के लिए कम से कम एक सदस्य होगा और कम से कम ५ लाख व्यक्तियों के लिये १ से अधिक सदस्य नहीं होगा। इस संशोधन के द्वारा जनसंख्या की ऊपरी सीमा हटा दी गई।

तृतीय संशोधन (१९५३ ई०) सातवी अनुसूची में समवर्ती सूची की तैतीसवी मद के स्थान पर एक नई मद रख दी गयी जिसमें खाद्य सामग्रियों पशुओं के चारों कपास और जूट को ऐसी अतिरिक्त मदों के रूप में सम्मिलित किया गया जिनका उत्पादन-संभरण यदि लोकहित में उपयोगी हो तो केंद्र द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। इसमें आयातित वस्तुओं का नाम भी जोड़ दिया गया।

चतुर्थ संशोधन (१९५५ ई०) इसका सम्बन्ध केवल जमींदारी उमूलन कानूनों से था जो समाज कल्याण के उद्देश्य से बनाए गए कानूनों की शृंखला में सर्वप्रथम थे। संसद को राज्य विधान मण्डल को यह अधिकार दिया गया कि वे व्यापार या वाणिज्य के किसी विशेष क्षेत्र में राज्य का एकाधिकार शुरू करने के लिए कानून बना सकते हैं। नवी अनुसूची में ७ नव अधिनियम शामिल किये गये। यह भी प्रावधान किया गया कि मुद्रावर्जों की राशि अनुपयुक्तता के आधार पर सरकार द्वारा अर्जित किसी सम्पत्ति की वैधता को न्यायालय चुनौती नहीं दी जा सकती।

संशोधन (१९५५ ई०) इसके द्वारा राष्ट्रपति को समय सीमा नियत करने की गई नि-उम सीमा के अंदर राज्य विधान मंडल किसी ऐसे प्रस्तावित कर सकते हैं जिनका उन राज्यों के क्षेत्र और सीमाओं

अंतर्राज्यीय लेन-देन के सिलसिले में वस्तुओं की विक्री द्वारा केंद्र को अंतर्राज्यीय व्यापार या वाणिज्य वस्तुओं की विक्री और खरीद पर कर लगाने

के द्वारा राज्य की तीन श्रेणियाँ
६ क्षेत्रशासित क्षत्रा में पुनर्गठित कर
किया गया। इसी संशोधन के द्वारा
बाकी महाराष्ट्र संघ,
स्थापना की गई। उच्च न्यायालय

यदि एक विधानय म लेगे ४० और एक कानून म लेगे १० छान ह। सो उहाँ उनरी भाषा म गिना देने की व्यवस्था की जाती बाहिए । (५) राष्ट्रपति घणमन्त्र कानून निपुरा करेगा जो उहाँ बागिन रिपोट दगा । (६) घणमन्त्रा के विधानय को राय मान्या रेगा । राय म नौतरी के लिए अधियाग की शर्त हटा दी गयी है ।

सघ की न्यायपालिका

भारतीय सविधान की सबसे बड़ी विशेषता है कि न्यायपालिका का कार्यपालिका म पृथक एक स्वतंत्र रखा गया है । इसकी विस्तृत व्याख्या न्याय व्यवस्था अध्याय म है ।

सविधान मे सशोधन प्रक्रिया

सविधान क २०वें भाग के अनुच्छेद ३६८ म सविधान म सगाथा की प्रक्रिया बताया गयी है । यदि ससद के दाना सदन बहुमत स और उपस्थित सभ्या क दस तिहाई मा से सशोधन विधेयक पारित कर दें तो राष्ट्रपति क हस्ताक्षर क बाबू यह सशोधन विधान का प्रग हो जायेगा । परन्तु यदि कोई सशोधन (क) अनुच्छेद ५४ ५५ ७३ १६२ २४१ (ख) भाग ५ के अध्याय ४ भाग ६ के अध्याय ५ या भाग ११ के अध्याय १ म अथवा (ग) सातवी अनुसूची की सूचिया म से किसी म (घ) सभ म राया क प्रतिनिधिय अथवा (ङ) इस अनुच्छेद (३६८) के उपबन्धा म कोई परिवर्तन करना चाहता है ता एस उपबन्ध करने वाले विधेयक को राष्ट्रपति के समक्ष उपस्थित किये जाने क पूव राया म से कम से कम आधा के विधान-मण्डला से पारित सबत्वा द्वारा अनुसमथन भी अपंगित होगा ।

यहा यह उल्लेखनीय होगा कि उपरोक्त विषयो का साधारणतया राज्या के अधिकारा शक्तियो एव सविधान के सघात्मक रूप पर प्रभाव पडता है । सविधान के २४वें सशोधन के द्वारा ससद एव आधे राया के विधान मंडला द्वारा पारित किसी सविधान सगाथन विधेयक पर सहमति व्यक्त करने का राष्ट्रपति का अधिकार समाप्त कर दिया गया है । इस सशोधन के द्वारा सविधान के सशोधन का अधिकार देने वाला अनुच्छेद ३६८ का ही सशोधन किया गया है ।

इस सशोधन के द्वारा नागरिको के मौलिक अधिकारो मे कटीती किये जाने पर अनुच्छेद १३ द्वारा लगायी गयी पाबन्दी को भी समाप्त कर दिया था ।

जम्मू-काश्मीर राज्य के लिए सविधान मे सशोधन की प्रक्रिया इस प्रकार है — 'ऐसा सशोधन जम्मू-काश्मीर राज्य के सम्बन्ध मे तब तक प्रभावी न होगा जब तक कि वह अनुच्छेद ३७० की धारा (१) के अधीन राष्ट्रपति के आदेश द्वारा लागू न किया जाए ।

सविधान में सशोधन

२६ जनवरी १९५० को भारतीय सविधान लागू हुआ । तब से अब तक ३१ सशोधन किए गए हैं ।

प्रथम सशोधन (१९५१ ई०) इसके द्वारा अनुच्छेद १५ १६ ८५ ८७ १७४ १७६, ३४१ ३४२ और ३७२ म छोटे-मोटे परिवर्तन के अतिरिक्त दो नये अनुच्छेद ३१क

और ३१ ख जोड़े गये और आठवी अनुसूची के बाद नवी अनुसूची जोड़ी गयी। इसकी मुख्य बातें हैं — भेदभाव का निषेध विदेश से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाम रखने के हित में और बदनामी फलाने या किसी अपराध के लिये भड़काने के सम्बन्ध में नागरिका के भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर उचित प्रतिबन्ध लगाने की राज्य शक्ति को विस्तृत कर दिया गया। नवी अनुसूची में जमींदारी उन्मूलन सम्बन्धी विभिन्न राज्या के १३ अधिनियमों का शामिल किया गया और कहा गया कि इनको किसी न्यायालय में मौलिक अधिकारों के हनन के नाम पर चुनौती नहीं दी जा सकती।

द्वितीय सशोधन (१९५२ ई०) इस सशोधन के द्वारा अनुच्छेद ८१(१)(ख) को सशोधित कर लोकसभा में प्रतिनिधित्व का नया मान नियत किया गया। मूल अनुच्छेद में यह उपबन्ध था कि लोकसभा में अधिक से अधिक ७५०००० व्यक्तियों के लिए कम से कम एक सदस्य होगा और कम से कम ५ लाख व्यक्तियों के लिये १ से अधिक सदस्य नहीं होगा। इस सशोधन के द्वारा जनसंख्या की ऊपरी सीमा हटा दी गई।

तृतीय सशोधन (१९५३ ई०) सातवी अनुसूची में समवर्ती सूची की तैतीसवी मद के स्थान पर एक नई मद रख दी गयी, जिसमें खाद्य सामग्रियों पशुओं के चारों, कपास और जूट की ऐसी अतिरिक्त मदों के रूप में सम्मिलित किया गया, जिनका उत्पादन-संभरण यदि लोकहित में उपयोगी हो तो केंद्र द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। इसमें आयातित वस्तुओं का नाम भी जोड़ दिया गया।

चतुर्थ सशोधन (१९५५ ई०) इसका सम्बन्ध केवल जमींदारी उन्मूलन कानूनों से था, जो समाज कल्याण के उद्देश्य से बनाए गए कानूनों की शृंखला में सर्वप्रथम थे। इसमें जो राज्य विधान मण्डल का यह अधिकार दिया गया कि वे व्यापार या वाणिज्य के किसी विशेष क्षेत्र में राज्य का एकाधिकार शुरू करने के लिए कानून बना सकते हैं। नवी अनुसूची में ७ नये अधिनियम शामिल किये गये। यह भी प्रावधान किया गया कि मुद्रावर्जों की राशि की अनुपयुक्तता के आधार पर सरकार द्वारा अर्जित किसी सम्पत्ति की वधता को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।

पंचम सशोधन (१९५५ ई०) इसके द्वारा राष्ट्रपति को समय सीमा नियत करने की शक्ति प्रदान की गई कि उस सीमा के अन्दर राज्य विधान मंडल किसी ऐसे प्रस्तावित केंद्रीय कानून पर विचार प्रकट कर सकते हैं जिनका उन राज्यों के क्षेत्र और सीमाओं आदि पर प्रभाव पड़ता है।

षष्ठ सशोधन (१९५६ ई०) अंतर्राज्यीय लेन-देन के मिलसिले में वस्तुओं की विन्नी और खरीद पर करो से सशोधित है। इसके द्वारा केन्द्र को अंतर्राज्यीय व्यापार या वाणिज्य के मिलसिले में समाचारपत्रों से भिन्न कुछ अन्य वस्तुओं की विन्नी और खरीद पर कर लगान तथा उनका नियंत्रण करने का अधिकार प्राप्त हो गया।

सप्तम सशोधन (१९५६ ई०) इस अधिनियम के द्वारा राज्य की तीन श्रेणियाँ (क, ख, ग) समाप्त कर सारे देश को १४ राज्या और ६ केंद्रशासित क्षेत्रों में पुनर्गठित कर दिया गया। राज्य पुनर्गठन के कारण भी यह सशोधन किया गया। इसी सशोधन के द्वारा विधान सभाओं की क्षेत्रीय समितियाँ तथा विदम्ब मराठवाड़ा बाकी महाराष्ट्र सौराष्ट्र, कच्छ और शेष गुजरात के लिए पृथक् विकास बोर्डों की स्थापना की गई। उच्च न्यायालयों

की अधिवास्तिता का विस्तार इसी सशोधन के द्वारा किया गया।

अष्टम सशोधन (१९५६ ई०) इसने द्वारा अनुमूचित जानिया एवं अनुमूचित जन-जातिया के लिए सीटा का धारक्षण और लोन गभा तथा राय्या की विधान गुमाआ म एग्लो इडियना का प्रतिनिधित्व २६ जनवरी १९६० म १० वर्षों के लिए बना किया गया।

नवम सशोधन (१९६० ई०) इस अधिनियम द्वारा सविधान का पटना अनुमूची म इस प्रकार सशोधन किया गया ताकि १९५८ और १९५६ म भारत और पाकिस्तान की सरकारों के मध्य ममनीत व अनुसार कुछ म भाग को पाकिस्तान का हस्तानगत किया जा सके।

दशम सशोधन (१९६१ ई०) इस अधिनियम द्वारा दानर और नागर हटना व स्वतंत्र क्षेत्रों को भारतीय सघ म मिला लिया गया और राष्ट्रपति का विनियम बनाने की शक्ति के अधीन उनके प्रशासन की व्यवस्था की गई।

ग्यारहवा सशोधन (१९६१ ई०) इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के निर्वाचन को इस आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती कि उचित निर्वाचक मण्डल म कोई स्थान रिक्त था। इसमें द्वारा यह भी व्यवस्था की गई कि उपराष्ट्रपति का निर्वाचन एक निर्वाचक मण्डल द्वारा किया जायगा जिसमें समस्त व दोना मदना व सदस्य होंगे।

बारहवा सशोधन (१९६२ ई०) इस सशोधन व द्वारा पुनर्गठन म मुक्त कराया गया गोवा दमन दीव को भारत के व द्रशासित प्रदेशों म सम्मिलित कर लिया गया। यह विधेयक संवसम्मति से पारित हुआ।

तेरहवा सशोधन (१९६० ई०) यह सशोधन इसलिए किया गया जिसमें कि भारत सरकार और नागा पिपुल्स कॅवेंशन के मध्य हुए एक समझौते के अनुसार एक पथक (नागालड) राज्य के निर्माण के लिए भाग प्रशस्त हो जाये।

चौदहवा सशोधन (१९६२ ई०) इसके द्वारा व्यवस्था की गई (क) व द्रशासित प्रदेशों के लिए विधान मण्डल और मंत्रिपरिषदें बनाई जाए (ख) पास व अधिकार से मुक्त पांडिचरी कारीकरम माही और यमन को व द्रशासित प्रदेश बना दिया जाय (ग) गोवा दमन और दीव को एक अलग व द्रशासित प्रदेश बना दिया जाये जिसका एक पथक विधान मण्डल हो।

पंद्रहवा सशोधन (१९६३ ई०) (क) इस सशोधन द्वारा सरकारी कर्मचारियों का वधानिक कार्यवाही के विषय में अधिकार केवल एक जाच तक ही सीमित कर दिया गया (ख) राष्ट्रपति को यह शक्ति प्रदान की गई कि सदेह की स्थिति म वह सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की सही आयु का निश्चय भारत के मुख्य न्यायाधीश व परामश से कर सकता है (ग) उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की सेवा निवृत्ति की आयु ६० से बढ़ाकर ६२ वर्ष कर दी गई।

सोलहवा सशोधन (१९६३ ई०) इसके द्वारा राज्य सरकारों का षण के विघटनकारी तत्वा पर प्रतिबंध लगाने का अधिकार दिया गया। साथ ही राजनीतिक दलों द्वारा देश से अलग हान की मांग को निर्वाचन का प्रश्न बनाने से रोका गया। इसके अतिरिक्त संसद एवं राज्य विधान मण्डलों के उम्मीदवारों के द्र तथा राय्या के मंत्रियों संसत्सदस्या एवं विधायकों

सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक का भारत की प्रभुसत्ता और अखंडता का बनाय रखन की शपथ लेना आवश्यक बना दिया गया।

सत्रहवा सशोधन (१९६४-६५ ई०) इस सशोधन द्वारा सरकार को त्रिना बाजार भाव से मुआवजा दिए उम भूमि का अधिग्रहण करने से राक दिया गया है जिस पर कोई व्यक्ति स्वयं खेती कर रहा है या जो (उस समय लागू) भूमि रख सकने की अधिकतम सीमा के अन्दर जमीन रखता हो। इसके द्वारा सविधान की नवम सूची में ४३ नये अधिनियम जोड़ दिए गये।

अठारहवा सशोधन (१९६६ ई०) यह सशोधन पंजाब का भाषा के आधार पर पुनर्गठन करने में सुविधा लाने की दृष्टि से किया गया। इसी सशोधन के द्वारा पंजाब का कुछ क्षेत्र हिमाचल में मिलान तथा चंडीगढ़ को केंद्रशासित प्रदेश बना देने का अधिकार सरकार का प्रदान किया गया।

उन्नीसवा सशोधन (१९६६ ई०) इस सशोधन के द्वारा निर्वाचन याचिकाओं की सुनवाई सीधे उच्च न्यायालय में और उसकी अपील उच्चतम न्यायालय में करने की व्यवस्था की गयी।

बीसवा सशोधन (१९६६ ई०) यह सशोधन उच्च न्यायाधिकारियों द्वारा जिनकी नियुक्तिया उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रभावहीन घोषित कर दी गई थी की गई नियुक्तिया तनातियो स्थानान्तरण नियमा डिग्रिया सजाओ तथा आदेशों को बध बनाने के लिए किया गया था।

इक्कीसवा सशोधन (१९६६ ई०) इसके द्वारा मिथी भाषा को सविधान की आठवी सूची में शामिल कर उस १४ राजभाषाओं में स्थान दिया गया।

बाईसवा सशोधन (१९६६ ई०) इसके द्वारा असम राज्य के अतगत जनजातीय क्षेत्रों का एक स्वायत्त राज्य और इस राज्य के लिए एक स्थानीय विधान मण्डल या मंत्रिपरिषद या दाना बनाने का उपबन्ध अनुच्छेद २४४ का अन्त स्थापित करके किया गया।

तेईसवा सशोधन (१९६६ ई०) इससे अनुच्छेद ३३०, ३३२ या ३३३ का सशोधन किया गया और अनुसूचित जातियों अनुसूचित जनजातियों तथा एम्सो इन्डियन कम्युनिटी के प्रतिनिधित्व के लिए नाम निर्देशित करने की मर्यादा और दस बंध बढ़ाई गयी।

चौबीसवा सशोधन (१९७१ ई०) इसके द्वारा सदन को सविधान की समस्त धाराओं को सशोधन करने का अधिकार मिला है। उल्लेखनीय है कि सर्वोच्च न्यायालय ने १९६८ में एक नियम यह दिया था कि सदन का नागरिकों के मौलिक अधिकारों में बाधोती करने का अधिकार नहीं है। यह सशोधन उसी अधिकार की प्राप्ति के लिए किया गया है। इसके द्वारा किसी विधेयक पर सहमति व्यक्त करना राष्ट्रपति के लिय अनिवार्य कर दिया गया है।

पच्चीसवा सशोधन (१९७१ ई०) इसके द्वारा सदन का विधि द्वारा जनहित में निजी सम्पत्ति के अधिग्रहण का असम अधिकार दिया गया है। इसमें मुआवजे देना अनिवार्य नहीं रह गया। जो भी राशि दी जायेगी, उसके विरोध में न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकता। इस सशोधन में यह प्रावधान भी है कि राज्य निजी सम्पत्ति के अधिग्रहण सम्बन्धी विधि निर्माण से पूर्व दस विषय में राष्ट्रपति की सम्मति ले।

छत्वीसवां सशोधन (१९७१) इस सशोधन द्वारा सविधान म अनुच्छेदा २६१ व ३६२ को लुप्त कर नये अनुच्छेद ३६३ (क) का प्रवेश किया गया। इसके द्वारा भूतपूर्व राजाओं के विविधों व विशेषाधिकारों को तत्काल समाप्त कर दिया गया।

सत्ताईसवा सशोधन (१९७१ ई०) इसके द्वारा अनुच्छेद २३६ (क) और २४० में सशोधन किया गया तथा दो नये अनुच्छेद २३६ (ख) और ३७१(ग) का समावेश किया गया। इसके द्वारा ससद और राष्ट्रपति को मिजोराम और अरुणाचल समेत उन सभी क्षेत्र शासित क्षेत्रों में विधान मडल बनने तक नियम-कानून बनाने या वहाँ के प्रशासक को इसके लिए अधिकारी नियुक्त करने का अधिकार दिया गया है।

अट्ठाईसवा सशोधन (१९७२ ई०) इसके द्वारा एक नये अनुच्छेद ३१२ (क) का सविधान म प्रवेश हुआ अनुच्छेद ३१४ लुप्त कर दिया गया। इनके अतगत ससद को कुछ प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारियों की सेवा शर्तों म परिवर्तन तथा सेवा समाप्ति का अधिकार दिया गया। इसी सशोधन के अनुसार भारतीय नागरिक सेवा अधिकारिया (आई० सी० एस०) के विशेषाधिकार समाप्त कर दिये गये।

उनतीसवा सशोधन (१९७२ ई०) इसके द्वारा सविधान की नवम अनुसूची में केरल के भूमि सुधार सम्बन्धी दो और अधिनियम शामिल करके सरक्षित भूमि सुधार कानूना की संख्या ६६ कर दी गयी।

तीसवा सशोधन (१९७२ ई०) इस सशोधन द्वारा अनुच्छेद १३३ म परिवर्तन किया गया है। इस सशोधन स पूर्व २० ००० रुपये अथवा इससे अधिक राशि के दीवानी विवादा पर ही उच्चतम न्यायालय में अपील की जा सकती थी। परन्तु अब सम्पत्ति क मूल्य पर दृष्टिपात न करते हुए मामले के सवधानिक महत्व के आधार पर उच्चतम न्यायालय म सुनवाई हो सकती है।

राज्य

राज्यपाल राज्य की कार्यपालिका का प्रमुख राज्यपाल कहलाता है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति साधारणतः पांच वर्ष के लिए करता है। इनको ५५०० २० मासिक वेतन मिलता है। इसके अतिरिक्त अय भत्त और विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। भारत का नागरिक और ३५ वर्ष या इससे अधिक आयु का व्यक्ति ही राज्यपाल होने का पात्र हो सकता है। राज्यपाल ससद या विसा विधान मडल का सन्स्य नहीं हो सकता। वह अय कोई सरकारी पद भी नहीं ले सकता। राज्यपाल का हटाने के लिए किसी महाभियोग का नियम नहीं है। परन्तु उसका बना रहना राष्ट्रपति की इच्छा पर निर्भर है। राज्यपाल राज्य म केन्द्रीय मन्त्रार का प्रतिनिधि होता है। वह राज्य क मन्त्रिमडल की सलाह पर कार्य करता है। राज्य म राज्यपाल का वही स्थान है जो केंद्र म राष्ट्रपति का।

राज्यपाल के कर्तव्य और अधिकार काई अध विधेयक (बिल) राज्यपाल की पूर्व अनुमति के बिना विधान मभा म उपस्थित नहीं हो सकता। राज्यपाल विधानमभा और विधान-परिषद (जिन राज्या म हैं) को समुक्त बैठक का प्रतिवर्ष उद्घाटन करता है। विधान मडल द्वारा पारित प्रत्येक विधेयक पर राज्यपाल की सहमति आवश्यक है। इसके बिना विधेयक अधिनियम नहीं हो सकता। विधानमडल के अवसानकाल म राज्यपाल अद्यादेश जारी कर सकता है। विधानमभा का अधिवेशन बुलाना और उनका विस्तारित करना उसका

कत्तव्य है। सविधान का राज्य म ठीक-ठीक पालन होता है यह देखना भी राज्यपाल का कत्तव्य है। राज्य का शासन सविधान के अनुरूप नहीं चल रहा है या नहीं चलाया जा सकता, राज्यपाल स इस आशय की रिपोर्ट प्राप्त होने पर ही राष्ट्रपति किसी राज्य म राष्ट्रपति शासन लागू करते हैं।

मन्त्रिमंडल सविधान के १६३ अनुच्छेद म राज्यपाल को सहायता और परामश देने के लिए एक मन्त्रिमंडल की व्यवस्था की गई है। इसका नेता मुख्यमंत्री कहलाता है। विधानसभा मे जिस दल का बहुमत होता है, उसी के नेता को राज्यपाल साधारणत मुख्यमन्त्री पद पर नियुक्त करता है। अथ मंत्रिया की नियुक्ति मुख्यमंत्री के परामश स राज्यपाल करता है। मन्त्रिमंडल सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होता है। मन्त्रिमंडल के सदस्या की सख्या मुख्यमंत्री की इच्छा पर निर्भर है। इस विषय म कोई नियम नहा है। मुख्यमंत्री प्राय अपनी सरकार का स्थिर रखन की दृष्टि से मंत्रिया की सख्या निश्चित करता है। विधान सभा और विधान परिषद के सदस्या की सख्या ही इसका कुछ-कुछ नियंत्रण करती है। राज्य की आय भी एक सीमा तक इस पर प्रतिबन्ध लगाती है। प्रशासन आयोग ने सिफारिश की है कि मंत्रिया की सख्या विधायका की सख्या से ११ प्रतिशत स अधिक नहीं होनी चाहिए।

राज्य विधान मंडल प्रत्येक राज्य मे विधानमंडल है। विधानमंडल म दो सदन होते हैं। प्रत्यक्ष रूप स निर्वाचित सदन विधानसभा है और अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित सदन विधान परिषद है। कई राज्या मे केवल विधानसभा है।

विधान सभा विधानसभा के सदस्य प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा निर्वाचित होते हैं। प्रत्येक सदस्य साधारणतया ७५ ००० लोग का प्रतिनिधित्व करता है। सदस्यो की सख्या ५०० से अधिक और ६० से कम नहीं हो सकती। इसम हरिजनो और आदिवासिया के लिए कुछ स्थान सुरक्षित रहते हैं। विधानसभा अपने सदस्या मे से किसी सदस्य को अध्यक्ष और उपाध्यक्ष चुनती है। इसका कार्यकाल साधारणत पाच साल है। विधानसभा का सदस्य वही व्यक्ति हो सकता है जो (१) भारत का नागरिक हो, (२) २५ साल से कम आयु का न हो, और (३) उन सब अहताओ से युक्त हो जो ससद निर्धारित करे। आवश्यक होने पर राज्यपाल विधानसभा म एग्लो इंडियन समाज के प्रतिनिधि का नामजद कर सकता है।

विधान परिषद इसके सदस्या की सख्या विधानसभा के सदस्या की कुल सख्या की एक तिहाई से अधिक नहीं होनी चाहिए लेकिन ४० से कम भी न होनी चाहिए। परिषद के एक तिहाई सदस्य स्थानीय सस्याओ द्वारा तथा एक तिहाई विधानसभा के सदस्या द्वारा चुन जात हैं। १/१२ सदस्य विश्वविद्यालय के स्नातको द्वारा चुने जात हैं। चुनने का अधिकार उसी को है जो तीन साल पुराना स्नातक हो। १/१२ सदस्य शिक्षक प्रतिनिधि हात हैं। इनका कम से कम माध्यमिक विद्यालय या उससे ऊपर की शिक्षण-सस्याओ मे तीन साल शिक्षक रहना आवश्यक होता है। १/१२ सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत हाते हैं। साहित्य, विज्ञान या समाज सेवा के लिए विख्यात लोग म से इनका मनानयन होता है। अथ विधेयक सीधे विधान-परिषद मे उपस्थित नहीं किया जा सकता। विधानसभा द्वारा पारित अथ विधेयका पर १४ दिना के भीतर उसमे सशोधन व परिवर्तन का सुयाव देन भर का अधिकार विधान परिषद को है। आंध्र, बिहार महाराष्ट्र तमिलनाडु, मसूर, पंजाब, उत्तर

प्रदेश और पश्चिम बंगाल में अब तक का सदन थे किंतु अब पंजाब में परिषद समाप्त हो गई है। उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल में परिषदें समाप्त करने का प्रस्ताव पारित हो चुका है।

राज्य की यायपालिका संविधान के अंतर्गत प्रत्येक राज्य में उच्च न्यायालय का प्रावधान है। इस संबंध में विस्तृत वृणन याय-व्यवस्था में है।

संघ और राज्यों का परस्पर सम्बन्ध

संविधान के अनुच्छेद २४५ से २६३ तक केंद्र और राज्यों के सम्बन्धों की विस्तृत व्याख्या की गई है। इन संबंधों को तीन वर्गों में बाटा जा सकता है।

विधायी विधि बनाने की तीन सूचियां बनाई गई हैं। संघ सूची समवर्ती सूची और राज्य सूची। संसद संघ सूची में दिए गए ६७ विषयों पर अनयत विधि बना सकती है। ४७ विषयों में संघ और राज्य दोनों विधियां बना सकते हैं। राज्य कोई विधि संघविधि के प्रतिकूल या विपरीत या विरोधी नहीं बना सकते। राज्यों के विधानमंडल ६६ विषयों में विधि बना सकते हैं। राष्ट्रीय हित में राज्य सूची में अंकित विषयों पर भी संसद को विधि बनाने का अधिकार है—जबकि राज्य सभा के दांतिहाई सदस्य इसकी स्वीकृति दे दें। आपातकाल में भी यह अधिकार संसद को प्राप्त हो जाता है। संसद सारे देश के लिए कानून बनाता है राज्य विधानमंडल केवल अपने क्षेत्र के लिए। केंद्र का बनाया कोई कानून इस आधार पर अवध नहीं ठहराया जा सकता कि उससे प्रादेशिक सीमा का अतिक्रमण होता है। केंद्र को ताना सूचियां के अतिरिक्त कुछ विषयों पर भी कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है। केंद्रीय सरकार राज्य सरकारों का संचार साधनों के निर्माण और उनके सार सभाल का आदेश दे सकती है। वह किसी भी राज्य को राष्ट्रीय पथ और जल मार्ग का राष्ट्रीय जल मार्ग घोषित कर सकती है। केंद्रीय सरकार सतत में आवागमन के साधनों का निर्माण कर सकती है। राष्ट्रपति राज्य सरकारों का उसकी सहमति से केंद्रीय सरकार का कुछ कार्य भार वहन करने के लिए कह सकते हैं। युद्ध और अतिरिक्त अशांति के समय राष्ट्रपति राज्यों को विशेष आदेश दे सकते हैं।

प्रशासनिक केंद्रीय और राज्यों की कार्यपालिका का अधिकार-क्षेत्र उन सब विषयों तक विस्तृत है जो समवर्ती सूची में दजे हैं। कुछ बातों में राज्यों का केंद्र के निर्देशों का पालन करना होता है। अनुच्छेद २६१ के अनुसार भारत में केंद्रीय तथा राज्य सरकारों के भावजनिक अधिनियमों अभिनयों तथा याचिका कारवाहियों के प्रति पूरा विश्वास प्रगट किया जाता है।

वित्तीय प्राधिकार और वित्तीय ऋण से राज्य बहुत कुछ केंद्र पर निर्भर करते हैं। राज्य केंद्र में अनुदान का आशा करते हैं। आयकर और उत्पादन शुल्क की आय में अधिक भाग प्राप्त होना चाहते हैं। केंद्र से राज्यों का वित्त मात्रा में वित्तीय और प्राधिकार महापता प्राप्त होना उनकी आवश्यकता है। वित्त प्रायोग द्वारा किया जाता है। यह प्रायोग राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त होता है।

स्वायत्त शासन

म्यानाय काय स्वयत्त के लिए जो व्यवस्था का गई है उस स्वयत्त शासन कहते हैं। इसे दो वर्गों में बांटा गया है—ग्राम और ग्रामाण। यह नगरों की म्यानाय

व्यवस्था नगर निगम और मध्यम तथा छोटे नगरों का व्यवस्था नगरपालिकाओं व माध्यम स की जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों का स्वायत्त शासन पंचायतों व माध्यम स हान लगा है। निगम नगरनिगम के अध्यक्ष को महापौर कहते हैं। नगरनिगम का प्रशासन कार्य (क) निगम की सामान्य परिषद (ख) परिषद की स्थायी समिति तथा (ग) आयुक्त अथवा कार्यकारी अधिकारी द्वारा संचालित होता है। इसकी कार्यपालिका शक्ति आयुक्त में निहित होती है। नगरपालिकाएँ जिन नगरपालिकाओं व अध्यक्ष का निर्वाचन होता है उनका कार्य भी समितियों द्वारा ही संचालित होता है। इसका संचालन कार्यकारी अधिकारी द्वारा होता है। जिला स्वायत्त शासन जिला भर की व्यवस्था व जिला जिला को कई प्रखण्डों में बांटा गया है। जिनमें अन्तर्गत कई ग्राम होते हैं। इन प्रखण्डों का कुछ अधिकार और कर्तव्य भी सौंप गए हैं। दो एक राज्यों का छोड़कर शेष प्रदेशों में पंचायतीराज लागू किए गए हैं।

ग्राम पंचायतें ग्रामवासियों स्वयं पंचायत का चुनाव करते हैं। इन पंचायतों पर कृषि उत्पादन ग्रामीण उद्योगों सड़कों शूलिया तालाबों तथा कुओं का देखभाल सफाई जनविकासी आदि का दायित्व है। कहीं-कहीं शिक्षा तथा राजस्व वसूली की व्यवस्था भी ग्राम पंचायतों के अधीन है। इस समय देश में २,१७,००० ग्राम पंचायतें ३५,०० प्रखण्ड पंचायतें और २४० जिला पंचायतें काम कर रही हैं। कई राज्यों में पंचायतों का छ माह तक ढूँढ़ दान का भी अधिकार सौंपा गया है। इन पंचायतों द्वारा किए गए अनेक नियमों की सर्वोच्च 'यायालय व मुख्य 'यायाधीश श्री भुवनशंकरप्रसाद मिश्रा और श्री एम० आर० दाम न प्रशासकों की हैं।



ST SERVES THE RURAL POPULACE



In Maharashtra today 93% of the rural population is brought within 8 kilometres of ST services. By providing the masses with economical and comfortable passenger transport ST has transformed the rural scene in the State.

For the comfort of its passengers ST has provided many facilities like 302 bus stations, 1494 pickup sheds, 84 cloak rooms, 10 retiring rooms, 992 refreshment rooms & tea stalls, 431 other stalls for eatables & drinks, provision of drinking water etc. The number of these facilities is always on the increase because ST's effort to serve the people has an ever widening scope.



**MAHARASHTRA STATE ROAD
TRANSPORT CORPORATION**
MAHARASHTRA YAMATUK BHAYAN BOMBAY 8

सिन्दिया आपके लिए समय के जरिये संपत्ति बनाती है



SUSTA 5-5507-2200

प्राचीन काल में समुद्रीय व्यापार से भारत को अपार सम्पत्ति मिलती थी। आज सिन्दिया क जहाज इस प्राचीन व्यापार और परंपरा को निवाहते आ रहे हैं सिन्दिया अपने तेज और आधुनिक जहाजी बेड़े के जरिये भारतीय विदेशी व्यापार तथा तटस्थ व्यापार की साम्रता, सुरक्षा और निष्ठापन क साथ सेवा कर रही है।

विदेशी सेवाएँ

- भारत- पाकिस्तान-यू के -कारिनेथ
- भारत- सोवियत रूस
- भारत- यू एस ए. (अटलांटिक व गल्फ पोर्ट्स)
- भारत- पूर्वी कनाडा-मैत्र लेक्स
- भारत- पैसिफिक (बाया पूर्व)
- भारत- सलुक अरब गणतन्त्र
- भारत- एशियाटिक-पूर्वी भूमध्य सागरीय बंदरगाह
- भारत- पश्चिम एशिया (गल्फ)
- तटीय सेवाएँ
- भारत- पाकिस्तान-बर्मा-सीमोन

सिन्दिया
स्थापना 1919

दि सिन्दिया स्टीम नेविगेशन कम्पनी लिमिटेड

सिन्दिया हाउस वेस्ट इस्टेड बार्डी-5 टेलिफोन 210211 (4 लाइन) 7 मक 2202
 कलकत्ता 11 वेतकी मुभाष रोड कलकत्ता 1 टेलिफोन 210212 (4 लाइन) टेलिफैक्स 000
 4 ओर बाग नवरी नवी दिल्ली टेलिफोन 811225 टेलिफैक्स 811
 सिंगर के सभी प्रमुख बंदरगाहों में एजन्ट

भारत की न्याय व्यवस्था

भारत की आधुनिक न्याय व्यवस्था सोपान क्रम में बनी है। उच्चतम न्यायालय इसके शिखर पर है। इसके नीचे प्रत्येक राज्य में एक उच्च न्यायालय है जो राज्य में सिविल और दण्डिक मामला में अपील और पुनरीक्षण का सर्वोच्च न्यायालय है। सबसे नीचे अधीनस्थ न्यायालय आते हैं। उच्च न्यायालय के नीचे के न्यायालयों की विधि मायता और अधिकारिता सम्बन्धित राज्य के अधिनियमों पर आधारित है। यह होत हुए भी सम्पूर्ण देश में न्यायालयों के गठन के बारे में आधारभूत एकरूपता है। प्रत्येक राज्य जिलों में विभाजित है। प्रत्येक जिले में एक जिला न्यायालय है, जो मूल अधिकारिता वाला मुख्य सिविल न्यायालय है। जिला न्यायालय के अधीन कुछ निचले न्यायालय कार्य करते हैं जिनका नाम और अधिकारिता प्रत्येक राज्य में भिन्न भिन्न है। जिला न्यायालय जिले के निचले न्यायालयों में उन सभी वादों में अपील सुनते हैं जिनका मूल्य पांच हजार रुपये तक है। कुछ राज्यों में यह सीमा दस हजार रुपये तक बढ़ा दी गई है। इस शक्ति से अधिक की अपीलें जिला न्यायालय का न जाकर सीधे उच्च न्यायालय को जाती हैं। उच्च न्यायालय का मुख्य कार्य अधीनस्थ न्यायालयों का अपील सुनना और कुछ विशेष कानूनों के अधीन मूल मामलों का सजा करना होता है। ये विशेष कानून हैं जैसे भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम भूमि अधिनियम आदि। इनके अतिरिक्त लघुवाद न्यायालय हैं जिनकी अधिकारिता पांच सौ रुपये से लेकर एक हजार रुपये तक होती है। साधारणतया जिला न्यायालय उच्च न्यायालय के अधीन होता है और इसके नीचे का प्रत्येक सिविल न्यायालय उच्च न्यायालय और जिला न्यायालय के अधीन होता है। जिनके न्यायालयों के काम का नियंत्रण और अधीक्षण का भार जिला न्यायाधीशों के कंधों पर होता है।

दण्डिक अधिकारिता के क्षेत्र में, जिला न्यायालय सब न्यायालयों के रूप में भी कार्य करता है। इसके अतिरिक्त बहुत से मजिस्ट्रेटों के न्यायालय होते हैं। दण्डिक न्यायालय दंड प्रक्रिया संहिता के उपबन्धों के अधीन कार्य करते हैं। भारत के संविधान ने उच्च न्यायालयों को राज्य में स्थित सभी न्यायालयों और अधिकारियों पर अधीक्षण करने की शक्ति प्रदान की है। उच्च न्यायालयों के अधीनस्थ न्यायालयों पर अधीक्षण के लिए समुचित प्रशासनिक और न्यायिक शक्तियाँ प्राप्त हैं।

ग्राम पंचायत

ग्राम पंचायतें भारत की अति प्राचीन पारम्परिक संस्थाएँ हैं। १९०७ में भारत में विक्री-द्विकरण पर राय दान के लिए जो रायल कमीशन नियुक्त हुआ था उसने यह सिफारिश

‘यायाधीश तथा अधिवक्ता से अधिवक्ता’ ७ अथवा ‘यायाधीशों की व्यवस्था की गई थी, परन्तु १९५६ के सुप्रीम कोर्ट एक्ट न अथवा ‘यायाधीशों की सीमा १० कर ली। बढने हुए काम को देखकर अब सख्या मुख्य ‘यायाधीश समेत १४ कर दी गई है। आवश्यकता होने पर तत्पर्य ‘यायाधीशों की नियुक्ति का उपबन्ध है जिस मुख्य ‘यायाधीश राष्ट्रपति की पूव महमति से किसी भी उच्च ‘यायालय के विधिवत् ग्रहता प्राप्त् ‘यायाधीशों में म ग्ग निरिचित समय के लिए कर सकता है।

‘यायाधीशों की ग्रहताए, नियुक्ति एवं धतन (क) भारत का नागरिक हाना चाहिए (ख) कम से कम ५ वष किसी उच्च ‘यायालय का ‘यायाधीश रहा हो या कम से कम १० वष तक किसी उच्च ‘यायालय में अधिवक्ता रहा हो या राष्ट्रपति की राय में वह एक पारलत विधिवेत्ता हो। उच्चतम ‘यायालय के ‘यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। उच्चतम ‘यायालय का ‘यायाधीश ६५ वष की आयु तक अपन ५८ पर बना रह सकता है। इससे पूव भी वह राष्ट्रपति को सम्बोधित कर त्यागपत्र दे सकता है। अग्रमर्भता या सिद्ध अभियोगों के कारण वह पदच्युत् भी किया जा सकता है। प्रधान ‘यायाधीश का वेतन ५ ००० ०० मासिक तथा अथवा ‘यायाधीशों का ४ ००० ०० मासिक सविधान द्वारा नियत है। इसमें परिवर्तन सविधान में सशोधन लाकर ही किया जा सकता है।

उच्चतम ‘यायालय की अधिकारिता सविधान के अनुच्छेत् १२९ में इसे अभिनेय ‘यायालय कहा गया है जिसे अपने अथवमान के लिए दंड देने का शक्ति सहित ‘यायालय की सब शक्तिया प्राप्त् है। उच्चतम ‘यायालय की अधिकारिता को तीन भागों में बाट सकते हैं—(क) प्रारम्भिक (२) अपील तथा (३) परामशदात्।

प्रारम्भिक अधिकारिता भारत सरकार तथा एक अथवा अधिक राज्या के बीच के विवाद, राज्या के बीच आपसी विवाद वेद तथा राज्या के बीच अथवा परस्पर राज्या के बीच के विवाद चाहे तथ्य पर आधारित हो या कानून पर। मौलिक अधिकारों को लागू करने के लिए रिट जारी करने का अधिकार भी इसे प्राप्त् है परन्तु यह उच्च ‘यायालय के अन्तर्गत अधिकार में भी आता है। राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के चुनाव के विरुद्ध किसी याचिका पर विचार केवल उच्चतम ‘यायालय में ही हो सकता है।

अपील अधिकारिता इसके कई रूप हैं—संवधानिक मामले—किसी वाद में उच्च ‘यायालय द्वारा दिये गए निणय डित्री अथवा अतिम आदेश की अपील उच्चतम ‘यायालय में की जा सकती है यदि विवाद किसी विधान या सविधान को व्याख्या से संबधित है। दीवानी मामले यदि उच्च ‘यायालय प्रमाणित करता हो कि वाद अपील के योग्य है। दांडिक मामले यदि उच्च ‘यायालय ने निम्न ‘यायालय से किसी मुकदमे को मगाकर या निम्न ‘यायालय द्वारा दिये गए किसी निणय को रद्द करके अभियुक्त को मृत्युदंड का आदेश दिया है या मामल को अपात-याग्य होने का प्रमाण पत्र दिया है। विशेष इजाजत उच्चतम न्यायालय अपने विवेक से किसी भी मामले पर अपील की विशेष इजाजत दे सकता है परन्तु सनिक अधि कारिता में बढि कर सकती है। उच्चतम ‘यायालय को अपने निणय अथवा निर्देश के पुनरीक्षण करने का भी अधिकार है।

परामशदात् अधिकारिता यदि किसी समय राष्ट्रपति को प्रतीत हो कि विधि अथवा तथ्य संबंधी ऐसे प्रश्न पदा हो गये हैं जिन पर उच्चतम ‘यायालय का मत प्राप्त् करना

वाछनीय है तो वह इसके समर्थ रख सकता है। उच्चतम न्यायालय उसकी उचित सुनवाई करके अपना अभिमत राष्ट्रपति को भेज देगा।

उच्च न्यायालय

सविधान के अनुच्छेद २१४ में प्रत्येक राज्य में एक उच्च न्यायालय की स्थापना की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक उच्च न्यायालय को अभिलेख न्यायालय माना गया है जिस अपने अबमान के लिए दण्ड देने के अधिकार सहित न्यायालय के सभी अधिकार प्राप्त हैं। प्रत्येक राज्य के न्याय प्रशासन में सबसे ऊपर उच्च न्यायालय होते हैं। दो या अधिक राज्यों का मिलकर एक ही उच्च न्यायालय हो सकता है। इस समय पंजाब और हरियाणा का तथा असम और नागालैंड का संयुक्त उच्च न्यायालय है। केन्द्र राज्य क्षेत्रों में उच्च न्यायालय केवल दिल्ली में ही है। उच्च न्यायालय का मुख्य स्थान एक स्थल पर होते हुए भी उसकी न्यायपीठ अथवा स्थान पर हो सकती है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की न्यायपीठ लखनऊ में भी है। महाराष्ट्र की न्यायपीठ बम्बई के अतिरिक्त नागपुर में भी है। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की जबलपुर के अलावा भ्वाणियर और इंदौर में न्यायपीठ हैं।

इस समय भारत में १८ उच्च न्यायालय हैं। कलकत्ता उच्च न्यायालय की अधि कारिता अद्यतन और निकोबार को १९५३ में विस्तारित की गई है। केरल की अधि कारिता में लक्षद्वीप द्वीप सम्मिलित है। गोवा, दमन, दीव, पाट्टा और नगर हवेली महाराष्ट्र उच्च न्यायालय के अन्तर्गत आते हैं।

दिल्ली में उच्च न्यायालय १९६६ में स्थापित किया गया।

उच्च न्यायालय का गठन प्रत्येक उच्च न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीश राष्ट्रपति द्वारा समय-समय पर आवश्यकतानुसार निर्धारित संख्या में नियुक्त होते हैं। उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति भारत के मुख्य न्यायाधीश एवं उस राज्य के राज्यपाल की सलाह से करता है। अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति में उक्त रीति के अतिरिक्त राज्य के मुख्य न्यायाधीश से भी परामर्श लिया जाता है। इसके अतिरिक्त बच्चे हुए काम को निपटाने एवं किसी न्यायाधीश की अनुपस्थिति में अपर न्यायाधीशों एवं वायवाहक न्यायाधीशों की नियुक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सहित कोई भी न्यायाधीश ६२ साल की आयु तक ही अपने पद पर काम कर सकता है। इन्हें अपने पद से हटाये जाने की विधि भी वही है जो उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीशों के लिए है। इन पदों के लिए व्यक्ति को भारत का नागरिक होना किसी राज्य के न्यायिक पद पर कम से कम दस वर्ष तक काम का अनुभव या उच्च न्यायालयों में १० वर्ष तक अधिवक्ता के रूप में काम का अनुभव होना अनिवार्य है। मुख्य न्यायाधीश को प्रतिमास ४,००० रु० तथा न्यायाधीशों को ३,५०० रु० वेतनस्वरूप देने की व्यवस्था है। साथ ही इन्हें भत्ते, पेंशन आदि पाने का अधिकार है। यह भत्ते तथा पेंशन ससद तक चरती हैं। इनके पद स्थानान्तरणीय हैं।

राज्य क्षेत्रीय अधि कारिता जहाँ ससद द्वारा दो राज्यों के लिए एक उच्च न्यायालय स्थापित किया गया है या जहाँ उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र बढ़ाकर सघीय प्रदेश तक किया गया है उसे छाड़कर किसी भी राज्य के उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र राज्य क्षेत्र तक सीमित होगा।

मूल अधि कारिता कलकत्ता बम्बई और मद्रास के उच्च न्यायालयों को छोड़कर

अथ उच्च न्यायालय को केवल नौकाधिकरण प्रोवेट अवाहिक तथा न्यायालय के अद्वयमान के मामला से मूल अधिकारिता प्राप्त है। उक्त तीन प्रसीद्धी नगरा व उच्च न्यायालयो का इन नगरा के अन्तर शुरू हुए मामलो म सिविल व दाण्डिक—गाना प्रकार की मूल अधिकारिता प्राप्त है। इनम स बम्बई और मद्रास के उच्च न्यायालयो की दाण्डिक अधिकारिता सत्र न्यायालयो का सीपी गई है। सिविल मामला के लिए नगर सिविल न्यायालय का स्थापना भी हुई है परंतु अधिक मूल्या वाल मुकदम की सुनवाई उच्च न्यायालय के अधीन है।

अपीली अधिकारिता उच्च न्यायालय की अपीली अधिकारिता सिविल तथा दाण्डिक दोना मामला म है। दीवानी मामला म दो अपीलें हाती है। उच्च न्यायालय की अधिकारिता—(क) मूल दाण्डिक अधिकारिता का प्रयोग करत हुए इसी उच्च न्यायालय के (ख) किसी मूल न्यायाधीश या अपर सत्र न्यायाधीश क (ग) जिन मामला से किसी अभियुक्त को चार वर्षों की जेल की सजा दी गई है। उनम किसी सहायक मूल न्यायाधीश या विशेष रूप से शक्तिप्राप्त मजिस्ट्रेट के (घ) किसी प्रजीडेसी मजिस्ट्रेट के या (च) भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४४क की किसी सजा व मामले म किसी जिला मजिस्ट्रेट क निणया की अपीला क लिए है।

अधीक्षण की शक्ति उच्च न्यायालय का यह अधिकार न्यायक है। इस अधिकार म पुनरीत्यात्मक शत्राधिकार घोर अत्याय या अधिकारिता का प्रयोग न करने या दुरुपयोग करने व मामल म हस्तक्षेप करने का अधिकार भी सम्मिलित है।

अनुच्छल २२६ सविधान का अत्यंत महत्व का अनुच्छल ह। इस रिट अधिकारिता कहत है। उच्च न्यायालय किसी भी न्यायिक न्यायिक कृप या प्रशासनिक प्राधिकारा को उपयुक्त परिस्थिति म आवश्यक रिट जारी कर सकता है। यह रिट राज्य शत्र म स्थित व्यक्ति व विरुद्ध जारी की जा सकती है। मशाधन म पूव केद्रीय सरकार व विरुद्ध केवल पजाब उच्च न्यायालय रिट जारी कर सकता था।

उच्च न्यायालयो का क्षेत्र

नाम	स्थापना	राज्य क्षेत्रीय अधिकारिता	स्थान
१ पत्रकता	१८६२	५० वगान अद्वयमान निकारा डीप समूह	कलकता
२ बम्बई	१८६२	महाराष्ट्र	बम्बई (नागपुर म न्यायपीठ)
इलाहाबाद	१८८६	उत्तर प्रदेश	इलाहाबाद (लखनऊ म न्यायपीठ)
४ मसूर	१८८४	उत्तर	बंगलौर
५ पटना	१९१६	बिहार	पटना
६ जम्मू-कश्मीर	१९५३	जम्मू-कश्मीर	श्रीनगर जम्मू
७ पजाब व हरियाणा	१९५७	पजाब व हरियाणा	लुधियाना
८ अमम व नागानड	१९४८	अमम व नागानड	गानाडी
९ उडुपी	१९५८	उडुपी	कटक
१० करन	१९४८	करन मकानेव मित काय व अमानेव डान समूह	गानाकुनम

११ राजस्थान	१९४९	राजस्थान	जाधपुर
१२ आंध्र प्रदेश	१९५४	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद
१३ मध्य प्रदेश	१९५६	मध्य प्रदेश	जबलपुर (इंदौर व ग्वािनियर म 'यायपीठ)
१४ गुजरात	१९६०	गुजरात	अहमदाबाद
१५ दिल्ली	१९६६	दिल्ली, हिमाचल प्रदेश	दिल्ली
१६ मद्रास		तमिऱनाडू, पाडिचेरी	मद्रास

उच्च 'यायालया का अपन 'यायक्षत्र व सभी 'यायालया का निरीक्षण करन का अधिकार ह ।

विधि की भाषा

अभी तक सम्पूर्ण देश म 'यायालया का काय मुख्यत अंग्रजा म ही चल रहा ह । इस कारण जनसाधारण व लिए विधि का समझना असभव है । हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाभा की अंग्रजा के स्थान पर प्रतिस्थापित करन की दृष्टि से राजभाषा (विधायी) आयोग गठित किया गया है । यह आयोग एक मानक विधि शब्दावली का निर्माण कर रहा है और विधिया का हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाभा म अनुवाद कर रहा है ।

सा १९७२ म पहली बार पटना उच्च 'यायालय व दा 'यायाधीशा न हिन्दी म निणय दकर 'यायालया म हिन्दी के प्रयोग का माग प्रशस्त किया है ।



उत्तर भारत का औद्योगिक नगर

शामली

आपको नये उद्योग के लिए प्रेरित करता है
क्योकि

शामली मे ६ मण्डिया, १ चीनी मिल, ए० डी० बी इडस्ट्रीज, आस रोलिंग मिल्स तथा अनेक लघु उद्योग काय मे लगे हैं । यह नगर हरियाणा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगरों से सडक द्वारा सम्पक स्थापित किए हुए है ।

नगर मे जल बल योजना लागू है । आप भी नये कनक्शन लेकर स्वच्छ स्वाद जल सेवन कीजिए । नगरपालिका द्वारा निर्धारित करों का भुगतान कर सहयोग कीजिए ।

एम० जेड० हसन
अधिशासी अधिकारी

रमेशचद्र गुप्ता
अध्यक्ष

नगरपालिका, शामली (उत्तर प्रदेश)

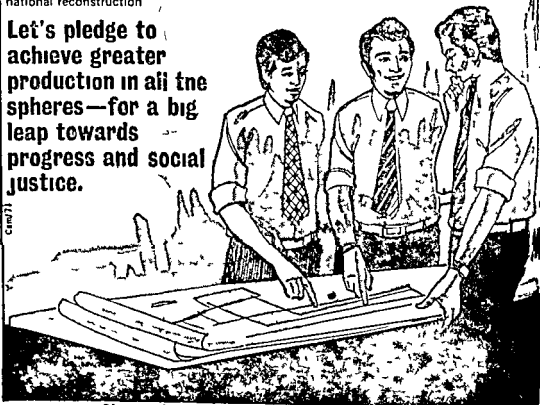
**You can become great
only when your nation is great!
-And a nation's greatness rests
on the achievements of its youth**

**Much blood has been shed to
make our country free.
Today's youth must strive to
make the country great.**

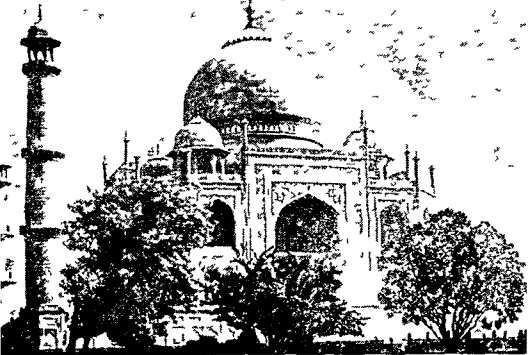
The young generation must play its
dynamic role in building up
this great nation

Maharashtra's youth will always be in
the forefront in the urgent task of
national reconstruction

**Let's pledge to
achieve greater
production in all the
spheres—for a big
leap towards
progress and social
justice.**



Directorate General of Information and Public Relations Maharashtra.



The flawless memory of a monarch's love
**scarred and disfigured
by sheer vandalism!**

Its the same sad story of sheer vandalism all over the country. Monuments of elegance and antiquity are scarred and defaced with juvenile name scratching. The Taj is not spared. Its inlaid tile is gouged out, its pure white surface scratched and damaged. Nature fares no better. Lovely gardens are denuded of trees and left littered with garbage. Beautiful beaches are turned into refuse dumps.

Yet these monuments and gardens and beaches are part of our priceless heritage, heritage that unites us as Indians, heirs to a magnificent tradition of beauty and art. A heritage that draws thousands of visitors to our country, brings in valuable foreign exchange and generates employment and prosperity even in remote rural areas.

Isn't it time we took pride in this heritage and did everything possible to preserve it? The tourist and archeological departments are doing what they can. Government action alone is not enough. We must each one of us prevent the defacement of monuments. Discourage the littering and misuse of gardens and beaches. And it is important to instill in our young a sense of pride in this heritage and the passion to protect it. For let us not forget, unless we care enough, our magnificent heritage may be destroyed.

**You have a beautiful heritage
You must preserve it.**

Released by
India Tourism Development Corporation for
Department of Tourism
Government of India

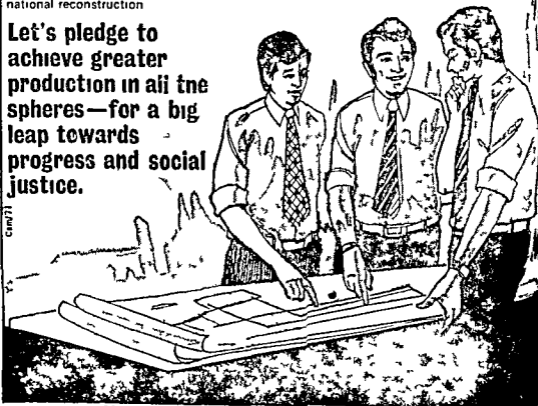
**You can become great
only when your nation is great!
-And a nation's greatness rests
on the achievements of its youth**

**Much blood has been shed to
make our country free.
Today's youth must strive to
make the country great.**

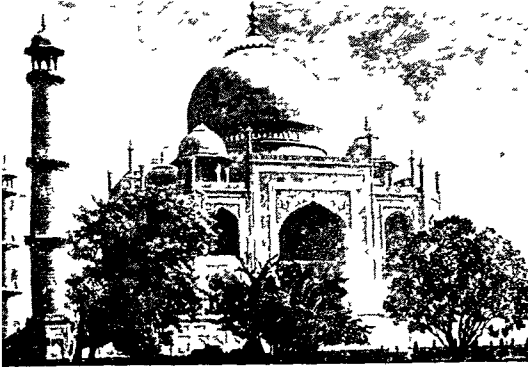
The young generation must play its
dynamic role in building up
this great nation

Maharashtra's youth will always be in
the forefront in the urgent task of
national reconstruction

**Let's pledge to
achieve greater
production in all the
spheres—for a big
leap towards
progress and social
justice.**



Directorate General of Information and Public Relations Maharashtra.



The flawless memory of a monarch's love ..
**scarred and disfigured
by sheer vandalism!**

Its the same sad story of sheer
dalism all over the country Monuments
are elegance and antiquity are scarred
defaced with juvenile name scratching
in the Taj is not spared Its inlaid
rble is gouged out its pure white surface
atched and damaged Nature fares no
ter Lovely gardens are denuded of
wers and left littered with garbage
autiful beaches are turned into refuse
mps

Yet these monuments and gardens and
aches are part of our priceless heritage
heritage that unites us as Indians heirs to
nagnificent tradition of beauty and art
t asset that draws thousands of visitors to
r country brings in valuable foreign
change and generates employment and
osperity even in remote rural areas

Isn't it time we took pride in this
heritage and did everything possible
preserve it? The tourist and archeolo
departments are doing what they can
Government action alone is not enough
must each one of us prevent the de
of monuments Discourage the litteru
misuse of gardens and beaches And
important instil in our young a sense
pride in this heritage and the passio
protect it For let us not forget unless
we care enough our magnificent her
may be destroyed

**You have a beautiful heritage
You must preserve it.**

Released by
India Tourism Development Corporation
Department of Tourism
Government of India.

With best compliments from —

SARAF INDUSTRIES

Manufacturers and Exporters of

**“Parrot” Brand G I Buckets, Steel Ghamellas
& other light engineering products**

Winner of the



**Intercontinental Trade Fair Award
(Gold Medal)**



Works

**Delhi
Bahadurgarh (Haryana)**

Office

**Saraf Bhavan,
34, Pusa Road,
NEW DELHI-110005**

Phones { 564359
562833

भारत की रक्षा व्यवस्था

स्वाधीनता के तुरन्त बाद से ही भारत की प्रभुसत्ता व अखंडता व अपहरण का प्रयास प्रारम्भ कर दिया गया। सबसे पहले पाकिस्तान न कश्मीर के एक भाग पर निलज्जता पूर्ण आक्रमण करके उसके एक हिस्स पर बलात् कब्जा कर लिया। उसके बाद पाकिस्तान ने भारत को अपना शत्रु न० १ घोषित करने बराबर छुट पुट हमले जारी रखे।

पाकिस्तान व बाद पड़ोसी दश चीन न देश के विकास को अवरोध करने के लिए शत्रुता की नीति अपनाई। भारत अपनी तटस्थता की नीति के अतगन सभी पड़ोसी देशों में मित्रता का इच्छुक था। चीन का भी वह अपना मित्र मानता था किन्तु चीन ने अचानक सन् १९६० में भारत पर खुला आक्रमण कर दिया। चीन के इस आक्रमण का हमने दृढ़ता के साथ सामना किया, किन्तु इस आक्रमण के फलस्वरूप हम अपनी रक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ करने का निर्णय लेना पडा।

पाकिस्तान न छुट पुट हमला के बाद सन १९६४ में फिर स शेष कश्मीर पर बलात् कब्जा करने का पडयत्न रचा। उसने हजारा घुमपठिया को छिपे रूप से कश्मीर में भेजकर तोड फोड की विध्वसात्मक गतिविधिया, प्रारम्भ कर दी। कश्मीर की रक्षा के लिए सना व जवान सतक थे अत उहने सम्भावित खतरे का भान लिया और पाकिस्तानी विध्वसकारिया का पडयन्त्र असफल कर दिया। पडयत्न असफल हो जाने पर १९६५ में पाकिस्तान ने खुला आक्रमण कर लिया जिसका हमारी सना ने डटकर जवाब दिया। तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के कुशल नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान को बुरी तरह से पराजित किया। पाकिस्तान ने इस युद्ध में अमेरिका से लिये पटन टैका व अन्य आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया किन्तु भारतीय सैनिकों ने पटन टैका को बुरी तरह से ध्वस्त करके लाहौर के बर्फी व इच्छोगिल नहर के किनारे तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। भारत की नीति शांति व मित्रता की नीति है अत रूस के बीच में पडने से उसने ताशकंद में हुए समझौते को मान लिया और जीते हुए अभी स्थान पाकिस्तान को वापस कर लिये।

भारत द्वारा सदैव शांति व मित्रता के लिये भूमिका तैयार करने के प्रयास के बावजूद पाकिस्तान ने हमें भारत के प्रति शत्रुतापूर्ण व आनामक रवैया ही बनाए रखा। ताशकंद समझौते का उल्लंघन कर उसने भारत की सामा का अनक वार अतिक्रमण किया तथा युद्ध के समय जून भारतीय माज सामान वापस नहीं किया।

पूर्वी बंगाल में पाकिस्तान ने २५ मार्च १९७१ को भीषण नरसंहार प्रारंभ कराकर

तथा वही विगतकर धान्यकृषक हिन्दुओं का सम्मोहन कर उन्हें भारत का धारण है। भारत में स्वतन्त्र एक करोड़ शरणार्थी का पहुँच तथा उग्र भाग्य व समाज धार्मिक भगवान् सम्मोहन यही है। पाकिस्तान के उद्घाटन ही नहीं परितु पूर्वी बंगाल का पश्चात् की धार में न कवल भारत विराधी अभिप्राय बनाया परितु पनेक स्थानों पर भारतीय गीमा में गानाबारी भी प्रारम्भ कर दी।

पाक आक्रमण व बंगला देश की मुक्ति

बंगला देश की स्वतन्त्र सरकार न बंगला देश को पाकिस्तान व भारत में मुक्त कराने के लिए शुना मध्य छद्म किया। मुक्तिवादिनी बराबर पाकिस्ताना भाग में तोड़ भाग करी।

३ नवम्बर १९७१ को पाकिस्तान ने भारत पर धमकाव दिया हुआ समाप्त कर दिया। भारतीय गना ने आक्रमण का इतर उत्तर दिया। पूर्वी व पश्चिमी गेजा क्षण में भारतीय सना व सभी धना ने पाकिस्तान की धार कथ किया। पूर्वी गण में मजिदवादिनी क साथ भारतीय गना पाकिस्तानिया का शुद्धी कर्तु कर बाड़ा। ६ नवम्बर १९७१ को भारत ने बंगला देश का मायना करी। धन १९ नवम्बर का भारतीय सना नेडाका पर धारिकार कर लगभग एक साथ पाकिस्तानी मजिदवाय आगरी का धार्मिकमरण व विप मजदूर किया।

१७ नवम्बर का प्रधानमंत्री श्रीमती इरिा गोधा न पश्चिमा क्षण में भी युद्धविराम की घोषणा कर विश्व स सम्म एक धार्मिक उपरिचय किया। उद्घाटन घोषणा की— भारत किसी भी देश की एक इक भूमि भी हथियान का धारणा नही रखता।

इस युद्ध में भारतीय सना १ बंगला देश को मुक्त कराने के अनिश्चित पश्चिमी क्षेत्र में भी पाकिस्तान का भारी पराजय दी।

२ जुलाई १९७० का सम्मोहन मिमसा सम्मोहन व सन्नात का है पाकिस्तान न पुन भारत को धमकिया दनी प्रारम्भ कर दा। उसका यह सम्मोहन व कार्यचयन में बाधक रहा तथा उमने अपन वचन को टुकराकर बंगला देश का मायना करी स इतर कर दिया।

पाकिस्तान के असहयोगपूर्ण व गलत यह व बायजू भारत सम्मोहन व पालन के लिये बराबर प्रयत्नशील रहा। श्री भुडा बराबर धमकी दन रहे किन्तु भारत ने फिर भी मजिदवाय रवया अपनाय रखा। भारत का एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमण्डल सम्मोहन में धारि बाधा का दूर करने व उद्देश्य स श्री पी० एन० हसर व नेतृत्व में अगस्त १९७३ में पाकिस्तान गया किन्तु पाकिस्तान के प्रतिकूल यह व कारण उसे निराशा वापस सौटना पडा। उसके बाद अगस्त व अतिम सप्ताह में पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल दिल्ली धाया और भारत ने सभी बाधाका को दूर कर पाकिस्तानी युद्धबंदी वापस करने की घोषणा कर सम्मोहन का माग प्रशस्त किया।

भारत ने तुरन्त पाकिस्तानी युद्धबंदी वापस करने प्रारम्भ कर दिया किन्तु फिर भी पाकिस्तान का यह अभी तक द्वेषपूर्ण व प्रानामक ही बना हुआ है। नवम्बर १९७३ में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री भुडे ने पाक अधिभूत कश्मीर का दौरा कर पुन कश्मीर पर आक्रमण की धमकी देकर हमारी आभाषा पर पानी फर दिया।

भारत के १५ हजार किलोमीटर सीमात क्षण में स काफी क्षेत्र चीन व पाकिस्तान के साथ लगता है। भारत के विरुद्ध चीन व पाकिस्तान के मठबधन व कारण यह यतया और भी कश्मीर है। चान ति वन में उड लाख से अधिक सनिक लगाए हुए है। एसी स्थिति में देश की सुरक्षा व अखंडता के लिय रक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ करना आवश्यक

व स्वाभाविक है। पाचवी पंचवर्षीय योजना में नई रक्षा योजना की भी व्यवस्था इसी गंभीरता को देखकर की गई है। भारत रक्षा सवध्री माधना में आत्म निर्भर होने की दिशा में तजी से बढ़ रहा है।

भारत के सर्वोच्च सेनाध्यक्ष

राष्ट्रपति	डा० राजेंद्रप्रसाद	१९५०
राष्ट्रपति	डा० एस० राधाकृष्णन	१९६२
राष्ट्रपति	डा० जाकिरहुसन	१९६७
राष्ट्रपति	डा० वी० वी० गिरि	१९६९ में

११७

भारत के थल सेनाध्यक्ष

जनरल सर आर० एम० लाकट	१९४८
जनरल एफ० आर० आर० बुचर	१९४८
जनरल के० एम० करियप्पा	१९४९
जनरल महाराज राजेंद्रसिंह	१९५३
जनरल एस० एम० श्रीनाथेश	१९५५
जनरल के० एस० यिमीया	१९५७
जनरल पी० एन० थापर	१९६१
जनरल जे० एन० चौधरी	१९६३
जनरल पी० कुमारमंगलम्	१९६६
जनरल एम० एच० एफ० जे० मानवशा	१९६९
जनरल गोपाल गुप्ताय बबूर	१९७२ से

भारत के जल सेनाध्यक्ष

वाइस एडमिरल सर एडवड परी	१९४८
वाइस एडमिरल सर सा० टी० एम० पिजे	१९४१
वाइस एडमिरल सर एस० एच० कार्लिन	१९४५
वाइस एडमिरल आर० डी० बटारी	१९४८
वाइस एडमिरल वी० एस० सामन	१९६२
एडमिरल ए० व० चटर्जी	१९६६
एडमिरल एम० एम० नगा	१९७०
एडमिरल सुरेंद्रनाथ बाहूती	१९७३ में

भारत के वायु सेनाध्यक्ष

एयर मार्शल रोनाल्ड इवाना थरमन	१९४८
एयर मार्शल जी० ई० गिफ्त	१९४१
एयर मार्शल एम० मुन्त्रा	१९५४
एयर चीफ मार्शल धरमसिंह	१९६५
एयर चीफ मार्शल पी० सी० शाल	१९६९
एयर चीफ मार्शल धी० पी० महरा	१९७३ में

रक्षा मन्त्रालय

देश की सुरक्षा का दायित्व रक्षा मंत्रालय पर है। गैरसैनिक प्रशासन तथा कार्य मंत्रालय पर नियंत्रण रखने का दायित्व मंत्रालय की शाखा शाखाओं के मुख्यालय के प्रतिरक्षा प्रतिरक्षा मंत्रालय पर भी है। मंत्रालय ही शाखा की शाखा शाखाओं की गतिविधियाँ तथा उनके विभाग में गामजम्बू रखने, सरकार द्वारा निर्धारित नीति नियंत्रण मामला में सीना मुख्यालय को प्रवर्तन करना तथा उन्हें कार्यान्वित करने का कार्य करता है। रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत ही रक्षा उपाय विभाग और रक्षापूर्ति विभाग भी सम्मिलित हैं।

सेनाओं का संगठन

सीना सेनाओं का दायित्व सुरक्षा मंत्रालय का है पर शाखा का वास्तविक प्रवर्तन प्रवर्तन प्रधान या अध्यक्ष का प्रवर्तन होता है। शीघ्र प्रवर्तन दी रक्षा के मुख्यालय में निर्यात में हैं। प्रवर्तनी प्रवर्तनी शाखाओं की गतिविधि का नियंत्रण करती करती है। शाखा शाखाओं के प्रवर्तना से बने मण्डल और उसके विस्तार का ही काम शीघ्र प्रवर्तन दी रक्षा है।

स्वयं सेना

इसका एक अध्यक्ष या प्रधान होता है जो स्वयं सेनाध्यक्ष कहलाता है। इसकी सहायता के लिए उप सेनाध्यक्ष तथा चार प्रतिनिधित्व स्थापना प्रवर्तन होता है। प्रवर्तना प्रवर्तना डिप्टी चीफ आफ आर्मी स्टाफ एडजुटेंट जनरल क्वार्टर मास्टर जनरल आफ आर्मीमें बहू जाते हैं। इनके प्रतिरक्षा शाखा मुख्यालय में ही सैनिक गतिविधि तथा प्रवर्तन पर ही प्रवर्तना (मुख्य अभियंता) प्रवर्तन है। स्वयं सेना की विभिन्न निम्न शाखाएँ हैं।

जनरल स्टाफ ब्रांच इनमें दो प्रायः (१) स्वयं सेना का संगठन व कार्य नियंत्रण सैनिक कार्य, जामुमी प्रशिक्षण युद्ध कौशल का विकास और सैनिक सर्वोपयोग व इजीनियरिंग स्टाफ के मामलों। इसका निपटारा उप सेनाध्यक्ष करती है। (२) साम्य धर्म काम हथियार व साज सामान धुना तथा तस्बधी नीति का समन्वय। ये प्रायः डिप्टी चीफ आफ आर्मी स्टाफ करती हैं। इनके विभिन्न कार्यों के नियम ११ निदेशावली है।

एडजुटेंट जनरल ब्रांच यह जन शक्ति भर्ती छुट्टी वेतन, भत्ता व पशन तथा सेना की अर्थ शर्तों व अनुशासनिक कार्य एवं कल्याण स्वास्थ्य तथा सैनिक बानन व कार्य देखती है।

क्वार्टर मास्टर जनरल ब्रांच कर्मचारियों भण्डार तथा साज सामान का संचालन, भण्डार निर्माण खाद्य पदार्थ चारा तथा ईंधन का निरीक्षण व संप्रवर्तन सैनिक फार्म रिमा उण्ट तथा पशु चिकित्सा सेवाएँ सैनिक डाक-सेवा धर्म तथा कटीन सेवाएँ (इनके निदेशालय) तथा निर्माण कार्यों के तकनीकी निरीक्षण इसके अंतर्गत आते हैं।

मास्टर जनरल आफ आर्मीमेंस ब्रांच इसके अधीन तीन निदेशालय हैं—आर्मीमेंस सेवा, रक्षा सामग्री का अजन विकास संगठन तथा विजली व मकेनिकल इजीनियर्स। इसका मुख्य कार्य सैन्य सामग्रियों की आपूर्ति तथा सभी मकेनिकल तथा इलक्ट्रिकल सैनिक सामग्रियों की निगरानी मरम्मत और रख रखाव है। नौसेना तथा वायुसेना के काम के साधारण सामान भी इसमें शामिल हैं।

मिलिटरी सेक्रेटरी ब्रांच यह सैनिक अधिकारियों के व्यक्तिगत अभिलेख (रिवाइड)

रखती है तथा उनके पदस्थापन, स्थानांतरण, पदोन्नति तथा कायनिवृत्ति आदि के लिए उत्तरदायी है।

इंजीनियर इन चीफ ब्राच इंजीनियर इन चीफ 'कोर आफ इंजीनियर्स' का प्रधान हाता है तथा तीना सेनाध्यक्षो व आर्डिनेंस फ़वटरियो व महानिदेशक का इंजीनियरिंग सबधी मामला म राय देता है। इसके अधीन अनेक निदेशालय है।

नौसेना

इसका प्रधान नौसेनाध्यक्ष या चीफ आफ नेवल स्टाफ है। इमने नीचे पाच 'प्रिंसिपल स्टाफ अफसर' है—उनके काय विषय ये है

- (१) वाइस चीफ आफ नेवल स्टाफ सत्रियाए योजनाए, हथियार सबधी नीति, नौसेना जासूसी, नौमचार व्यवस्था सामुद्रिक सर्वेक्षण तथा नौसेना सचिवालय।
- (२) चीफ आफ पर्सनेल भर्ती सेना के नियम व शर्तें प्रशिक्षण नौसेना के सैनिक व कामिका के कल्याण, अनुशासन, शिक्षा, चिकित्सा नौसेना के वधानिक मामले।
- (३) चीफ आफ मेटीरियल जहाजा, हथियार और साज-सामान, नौसेना डाकघाड और हथियारा की व्यवस्था, शस्त्रो की देखभाल तथा नौसेना इंजीनियरिंग काय।
- (४) असिस्टंट चीफ आफ नेवल स्टाफ नौसेना की हवाई शाखा, पनडुब्बी शाखा तथा नौसैनिक शिक्षा।
- (५) चीफ आफ लाजिस्टिक असैनिक कमचारी सिविल इंजीनियरिंग, रसद तथा आपूर्ति।

नौसेना का प्रशासन

प्रशासकीय सुविधाआ के लिए भारतीय नौसेना निम्नांकित तीन भागा म विभाजित है

वेस्टन नेवल कमांड यह कमांड वाइस एडमिरल की अधीनता म तथा जामनगर से लेकर गोवा तक के समुद्र तट और अरब सागर म स्थित हमारी भू सम्पदा की रक्षा के लिए उत्तरदायी है। इस तट पर स्थित नौ सैनिक प्रशिक्षण तथा अन्य सस्थान भी इस कमांड व अंतगत हैं।

ईस्टन नेवल कमांड हमार पूर्वी समुद्र तट तथा बंगाल की खाडी मे स्थित हमारी भू-सम्पदा की रक्षा का दायित्व इस कमांड पर है। रियर एडमिरल के अधीन काम करन वाला इस कमांड पर ही पूर्वी समुद्र तट स्थित प्रशिक्षण व अन्य सस्थाना के सुचारु सचालन का जिम्मेदारी है।

सदन नेवल एरिया यह एरिया कोमोडोर के मातहत है तथा गोवा के दक्षिण से लेकर देश के दक्षिणी छोर तक सार पश्चिमी तट की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है। कोचीन तथा अन्य स्थाना मे स्थित दीक्षा सस्थाए भी इसी एरिया के अधीन है।

वायु सेना

इसका प्रधान वायुसेनाध्यक्ष या चीफ आफ एयर स्टाफ है जिसकी सहायता के लिए चार प्रिंसिपल स्टाफ अफसर हैं—वाइस चीफ एयर-स्टाफ (उप वायुसेनाध्यक्ष) डिप्टी चीफ आफ एयर स्टाफ (प्रति वायुसेनाध्यक्ष), एयर अफसर मटर्नस (वायुसेना पत्राधिकारी, सधारण) तथा एयर अफसर एडमिनिस्ट्रेशन (वायुसेना पत्राधिकारी प्रशासन)। वायुसेना मुख्यालय की तीन मुख्य शाखाएँ हैं

(१) वायुसेना कर्मचारी वगैर शाखा (एयर स्टाफ ब्रांच) नीति तथा योजना, प्रशिक्षण सकेतक शिक्षा सहायक और सुरक्षित तथा नियंत्रित वास्तु उप वायुसेनाध्यक्ष व अंतर्गत है। सत्रियाण उडान सुरक्षा जामूसी तथा मौसम विज्ञान व वायु प्रतिवायु-सेनाध्यक्ष देखत है।

(२) वायु सेना प्रशासन के प्रभावी पत्राधिकारी इसके अधीन प्रशासन शाखा है। वायु भर्ती अनुशासन सेना के नियम व अंतर्गत नियुक्ति पदोन्नति वरुणाण वायु चिकित्सा लेखा-वजत और निर्माण।

(३) सधारण शाखा यह वायुसेना सधारण के प्रभार पत्राधिकारी व अधीन है। काम—वायुयानों की देखभाल, हथियारों व अन्य साज सामानों का भंडार रखना वायुयानों का सग्रह।

वायुसेना कमान इसकी ५ कमान है—पश्चिमी व द्रीय पूर्वी प्रशिक्षण तथा अनु रक्षण कमान। कुछ विरचनाएँ वायुसेना मुख्यालय के नीचे काम करती हैं।

भारतीय सेना की परम्परा बहुत पुरानी और अत्यंत उज्ज्वल है। दश रक्षा व साधारण काम के अतिरिक्त हमने कुछ अन्य काम भी हैं (१) देश में शांति और व्यवस्था को कायम रखने में मदद देना। जब स्थिति पुलिस के वश में नहीं रहे तब आंतरिक विद्रोहों का दमन करना भी इसका काम है। के द्रीय सरकार की देश में शांति और व्यवस्था रखने की जिम्मेदारी है इसको वह सेना के ही सहारे पूरी करती है। (२) इनके सिवाय यह प्राकृतिक विपत्तियों जैसे भूकम्प, बाढ़, आधी अकाल में मलकी अधिकारियों की मदद करती है। असाधारण स्थिति में सेना नागरिक कामों में मदद करती है जबकि नागरिक प्रशासन असमर्थ हो जाता है। (३) यह आकाशीय फोटोग्राफी सर्व करती है। इससे विकास योजनाओं जल और विद्युत परियोजनाओं के निर्माण में और उनका स्थान चुनने में सहायता मिलती है। (४) जंगलों को साफ करने और भूमि को कृषि योग्य बनाने में मदद देती है। सेना ने अपनी छावनीयों की जमीन में खेती करके अन्न-सकट को दूर करने में भारी मदद पहुँचाई है। (५) विषम शांति की रक्षा में यह अंतर्राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करती है।

देश से बाहर भारतीय सेना ब्रिटिश शासन के समय ब्रिटिश शासन के विस्तार और उसकी रक्षा के लिये भारत से बाहर जाती थी और इसका खर्च भी ब्रिटिश खजाने से नहीं अपितु भारतीय जनता से लिया जाता था। भारतीय सेना अब भी शांति स्थापना हेतु बाहर जाती है। इस लिंगा में भारतीय सेना के काम सबविदित हैं

(१) कोरिया-युद्ध विराम संधि को भारतीय सेना ने त्रियांत्रित कराया

(२) वियतनाम लाओस व कम्बोडिया में अंतर्राष्ट्रीय अधीक्षण और नियंत्रण का काम

भारतीय सेना न किया। (३) १६ नवम्बर १९५५ वा भारत की सेना सयुक्त राष्ट्र सभ की मदद के लिए बाहर भेजी गई। मिस्र में सयुक्त राष्ट्र की इमर्जेंसी फोर्स में भारतीय सेना का एक दस्ता भी था। (४) १९५८ में लबनान में सयुक्त राष्ट्र सभ के परवेक्षण दल में भारतीय सेना के ७० अफसरा न भाग लिया। (५) इससे पहले कागा में शांति स्थापित करने का अंतर्राष्ट्रीय काय में सयुक्त राष्ट्र की महायत्ना में ७०० सैनिक गये। फिर कागा में युद्ध के भयकर होने पर तोपखाने के साथ एक त्रिग्रेड माच १९६१ में गया। कागा में ही भारतीय हवाई सैनिकों का साथ ६ इटरनेक्टर वेनवेरा जेट विमान भेजे गये। चीनी आक्रमण के बाद अप्रैल १९६३ में त्रिग्रेड ग्रुप और कुछ प्रशासकीय वग को वापस बुला लिया गया। इसका बाद शेष रहा भाग भी कागा से वापस बुला लिया गया। (६) सेना के अफसरा का एक छाटा दस्ता यमन भेजा गया। (७) दिसम्बर १९७१ में बंगला देश की मुक्तिवाहिनी के साथ मिलकर भारतीय सेना न बंगला देश को पाकिस्तान के खूनी शासन से मुक्त कराया।

शांति स्थापना पश्चिमी और अफ्रिका-पूर्व एशिया में शांति बनाये रखने का काम भारतीय सेना ने समय-समय पर सफलतापूर्वक किया है। २५ वर्ष के जीवन में पांच बार उनको अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना का काम में योग देना पड़ा है।

तीनों प्रगति की ओर

थल सेना

दिसम्बर १९७१ के भारत-पाक युद्ध के बाद थल सेना की विविध यूनिटों तथा फार्मेशनों के संगठन का पुनरीक्षण किया गया। उसके फलस्वरूप यूनिटों तथा फार्मेशनों का पुनर्गठन करके उन्हें सुव्यवस्थित रूप दिया जा रहा है ताकि थल सेना की सामरिक क्षमता और अधिक बढ़ सके। किन्तु इसका सब रका की कुल नफरी अधिकतम अधिकृत जनबल सीमा के भीतर ही है अर्थात् = २६ लाख।

थल सेना के संगठनात्मक ढांचे में एक बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि पिछली पश्चिमी कमान को विभक्त करके दो कमान बनाई गई है—पश्चिमी कमान तथा उत्तरी कमान। पिछली पश्चिमी कमान जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान राज्या में तथा पाकिस्तान तथा चीन से लगने वाली १६०० मील लम्बी सीमा की रक्षा के लिए उत्तरवापी थी। विशाल रूप में फैले हुए इस कमान के अधीन ऐसे भूभाग थे जो एक-दूसरे से प्राकृतिक घरातल और जलवायु की दृष्टि से बिल्कुल भिन्न थे और यही कारण था कि उसकी रक्षा के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की रक्षात्मक व्यवस्था करनी पड़ती थी। इससे कई प्रशासनिक कठिनाइयां पैदा होती थीं। इस कमान में सम्मिलित सभी फार्मेशनों का ठीक प्रशिक्षण तथा प्रशासन एक सैनिक कमांडर और एक कमान मुख्यालय की सामर्थ्य से बाहर भी था। इसलिए इस दो कमानों में विभक्त करने का निर्णय किया गया—उत्तरी कमान तथा पश्चिमी कमान। जम्मू-कश्मीर राज्य और उसके लगे हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब के कुछ भागों में पाकिस्तान तथा चीन से लगने वाली भारतीय सीमा की रक्षा का दायित्व उत्तरी कमान को सौंपा गया है। पिछली पश्चिमी कमान के शेष क्षेत्रों की रक्षा का दायित्व नई पश्चिमी कमान पर डाला गया है।

प्रशिक्षण

यत सेना में प्रशिक्षण व्यवस्था इस प्रकार बनाई गई है जिसमें कि सभी यूनिट तथा फार्मेंशन किसी भी प्रकार के क्षेत्र तथा जलवायु में दिन और रात में किसी भी समय युद्ध में भिड़ सकें। शस्त्रा तथा उपकरणों के अधिकधिक परिष्कार के कारण प्रशिक्षण के मिदता तथा सक्त्पनाओं की लगातार समीक्षा आवश्यक है।

दिसम्बर १९७१ की सत्रियाओं का विश्लेषण किया गया ताकि यत सेना की युद्ध क्षमता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण सत्रियाओं में फेर बटन किया जाए। यत सेना/वायु सेना के पारस्परिक सहयोग के सिलसिले में १९७१ की सत्रियाओं की समीक्षा के आधार पर यत सेना और वायु सेना की वर्तमान कार्य विधियां तथा संचार व्यवस्था में और भी अधिक सुधार लाने के लिए दोनों सेनाओं के सयुक्त अभ्यास हुए।

नौसेना

दिसम्बर १९७१ के भारत-पाक युद्ध से मिली शिक्षाओं और उस युद्ध के बाद हिन्द महासागर में उत्पन्न स्थिति को ध्यान में रखते हुए नौसेना के जहाजों के बड़े के आधुनिकीकरण और उसके आधुनिकीकरण की पूर्व योजनाओं का १९७२-७३ में पुनरीक्षण किया गया। युद्ध में भारतीय नौसेना ने अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी—दोनों में ही जाकर अपना काम किया और जो जिम्मेदारी इस सौंपी गई थी उसे इसने पूरा कर दिखाया। इससे हम अपने नौसैनिक जहाजों की युद्ध-क्षमता और उनके उपकरणों तथा शस्त्रों की कार्य क्षमता का मूल्यांकन करने का भी अवसर मिला और उनमें जो कमियां थीं वे भी हमारे सामने आईं। उन मूल्यांकन के आधार पर नौसेना की सतत् रूप से चलती रहने वाली १९७०-७५ की योजना में नौसेना की पुनर्सज्जा सम्बन्धी योजनाओं और प्राथमिकताओं में पुनः सामंजस्य स्थापित किया जा रहा है।

नौसेना मुख्यालय और नौसैनिक कमानों के गठन का भी पुनरीक्षण किया गया है। नौसेना मुख्यालय में उच्च स्तर पर अधिक महत्वपूर्ण निदेश दिए जाने की व्यवस्था के लिए और स्थानीय कमान स्तरों पर अपेक्षाकृत अधिक पहल शक्ति से काम करने के लिए सार ढांचे में कुछ परिवर्तन के लिए प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। अपने समुद्री तटों की कारणरूप से रक्षा करने की व्यवस्था में और सुधार करने के लिए स्थानीय नौसेना कमानों और स्थानीय सावजनिक अधिकारियों के साथ साथ स्थानीय जनता के मध्य समुचित सहयोग की आवश्यकता को भी ध्यान में रखने की जरूरत है।

नौसैनिक सत्रियाओं की टेक्नोलॉजी में और बड़े भी विशेष कर संचार और शस्त्र प्रणालियों के क्षेत्र में तीव्रता से हो रही प्रगति का अपनी समुद्री सुरक्षा और अपने राष्ट्र के साथ अपने समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन किया जा रहा है। नौसेना के जहाजों के बड़े में पुराने जहाजों के स्थान पर नए जहाजों को एक सुव्यवस्थित कार्यक्रमानुसार लाने और अपनी नौसेना की सामरिक क्षमताएं बढ़ाने की सम्भावनाओं पर भी विचार किया जा रहा है।

हिन्द महासागर

हिन्द महासागर का भारत की रक्षा से निवृत्त का सम्बन्ध है और भारत हिन्द

महासागर क्षेत्र को बड़ी शक्तिया की प्रतिद्विद्धता से दूर रखकर उस शांति क्षेत्र बनाए रखने का आकांक्षी रहा है।

हिन्द महासागर के तटवर्ती सभी देश इस महासागर में शान्तिपूर्ण वातावरण बनाये रखने का पक्ष में हैं। आस्ट्रेलिया व चीन न भी इसी पक्ष का समर्थन किया है किन्तु इस बारे में कुछ प्रतिबन्धन परिस्थितिया भी पत्न हुई हैं। दिसम्बर १९७१ में भारत पाक संघर्ष के दौरान प्रमरीका के सातवें नौसैनिक बंटे के हिन्द महासागर में प्रवेश करने से कुछ आशंकाएँ हाँ गई हैं। सत्तार की प्रमुख नीतिनामा में पारस्परिक स्पर्धा और हिन्द महासागर के तट से दूर के देशों के इस महासागर में नौसैनिक ग्रह स्थापित करने के प्रयास चिन्ता के विषय है।

फरवरी १९७३ में इस्राइल के अरब देशों के युद्ध के दौरान हिन्द महासागर में प्रमरीकी नौसैनिक बंटे का उपस्थिति से भारत का चिन्तित हाना स्वाभाविक ही था। भारत सरकार ने इस पर प्रकट रूप में चिन्ता व्यक्त की। विदेश मंत्री सरदार स्वर्णमिह ने १२ नवम्बर १९७३ का ससद में स्पष्ट कहा। ऐसी प्रतिद्विद्धता तटवर्ती देशों के लिए जिनमें से अधिकांश हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र रखने के इच्छुक हैं समस्या पैदा करती है। भारत सरकार ने सयुक्त राष्ट्र महासभा के १६ दिसम्बर १९७१ के प्रस्ताव का दखना के साथ समर्थन दिया है। इस प्रस्ताव में हिन्द महासागर को भविष्य में शांति क्षेत्र घोषित किया है तथा बड़ी शक्तियों को हिन्द महासागर में अपनी सेनाओं की उपस्थिति में और विस्तार को रोकने के लिए कहा गया है। विभिन्न देशों की सरकारों ने मिलकर सयुक्त राष्ट्र तथा संयुक्त राष्ट्र सभों पर इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिये हैं। इस सदन में हिन्द महासागर में किसी भी बड़ी नौसैनिक शक्ति की उपस्थिति में विस्तार पर हम चिन्ता हानि है।

वायु सेना

भारतीय वायु सेना में कुल ४५ स्क्वाड्रन हैं। यह आंशिक रूप में आधुनिक पराध्वनिक विमानों से युक्त है और इनके पीछे एक वैमानिकी उद्योग कार्य कर रहा है जो मिग २१, नट-एच० एफ० २४ एच० एस० ७४८ विमान और अलूट हैलिकाप्टर तैयार करता है।

विमानों के आवरहालिग तथा अनुरक्षण की सुविधाएँ और अच्छी बना दी गई है। एम०आई० ८ हैलिकाप्टर प्राप्त करके हैलिकाप्टर स्तन का सुदृढ़ किया गया है। पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में जो क्षति हुई उसकी पूर्ति करने के लिए उपकरणों की प्राप्ति एवं उत्पादन के लिए कारवाई प्रारम्भ कर दी गई है।

भारतीय वायु सेना की आधुनिकीकरण प्रक्रिया सतत रूप से चलती रहती है। अधिक दूर तक मार करने वाले और अधिक तीव्र प्रहार करने वाले विमानों की आवश्यकता बहुत महसूस हो रही है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उपयुक्त प्रकार के विमान प्राप्त करने पर विचार किया जा रहा है। विकसित देशों के वैमानिक उद्योगों के सहयोग से उन्हें प्राप्त किए जाने की सम्भावनाओं पर विचार किया जा रहा है। रूस, ब्रिटेन तथा फ्रांस के वैमानिक उद्योगों से इस बारे में कई प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। भारत से भेजे गए विशेषज्ञ-दला ने इन प्रस्तावों का अध्ययन किया है और अब उनका प्रारम्भिक मूल्यांकन किया जा रहा है।

३१ दिसम्बर, १९७२ तक राष्ट्रीय बजेट कोर म भर्ती किए गए कडेटा की सख्या निम्नलिखित थी

यूनिट का प्रकार	सीनियर डिवीजन	जूनियर डिवीजन
१	२	३
सेना स्कध	४,७५,६१०	५,१८,८६२
नौ सेना स्कध	११,०२७	४६,८५४
वायु सेना स्कध	१०,१६४	५०,०६५
बालिका डिवीजन	५८ २२१	६५५,२४
	योग	५,५५,०५२
		६ ८१,०६५

सम्मान और पुरस्कार

२७ जनवरी १९७२ से लेकर २६ जनवरी, १९७३ तक राष्ट्रपति ने निम्नलिखित शोध पुरस्कार और अन्य अलकरण प्रदान किए जिनम सनिक कारवाई क लिए १ फरवरी १९७२ के पश्चात प्रदान किए गए कुछ पुरस्कार भी शामिल है।

शौर्य पुरस्कार

कीर्ति चक्र	५
वीर चक्र	७०
शौर्य चक्र	४५

अन्य अलकरण (सशस्त्र सेना कार्मिको को प्रदत्त)

परम विगिण्ट सेवा मडल	१३
अति विगिण्ट सेवा मडल	७१
सना मेडल	६६
नौसेना मडल	२२
नौसेना मेडल का बार	१
वायु सेना मडल	३७
वायु सेना मेडल का बार	३
विगिण्ट सेवा मडल	१२२

जनरल मानेकशा की फोल्ड माशल रंक मे पदोन्नति

भारतीय सेना के इतिहास म यह पहला अवसर है जबकि फोल्ड माशल का रक चलाया गया है। जनरल मानकशा एम०सी० को उनकी विगिण्ट सेवाओ के लिए पहली जनवरी १९७३ स भारतीय सेना म फोल्ड माशल का रक निया गया।

शिक्षा

भारतीय सविधान के अनुसार शिक्षा का मुख्य दायित्व राया पर ह किंतु केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय को राज्या के निर्देशाथ व्यापक राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्धारित करने के अनिर्दिक्त कुछ विशिष्ट दायित्वा को निभाना हाता है—(१) केन्द्रीय विश्वविद्यालया (अलीगढ मुस्लिम, बनारस हिंदू, दिल्ली जवाहरलाल नेहरू एव विश्वभारती) तथा विश्व विद्यालय स्तरीय सस्थाना का सचालन, (२) शिक्षा के विभिन्न स्तरा तथा सस्थाना म तालमेल एव मानिक रक्षण (३) हिंदी का सवधन, प्रचार एव प्रसार, (४) शैक्षणिक याजना बनाना (५) राष्ट्रीय स्तर पर खेलकूद एव साम्प्रतिक कायजमा का आयोजन (६) सर्वेक्षण काय (अर्थात् भारत सर्वेक्षण पुरातत्व सर्वेक्षण मानविकीय सर्वेक्षण वनस्पतीय सर्वेक्षण एव प्राणिकीय सर्वेक्षण आदि सस्थाधा का सचालन) (७) भारत इतर देशा के साथ शैक्षणिक समन्वये करना आदि ।

चतुय पचवर्षीय योजना (१९६६ ७४) के लिए निर्धारित ८ अरब २३ करोड ६० म स शिक्षा पर मावजनिक क्षेत्र की निश्चित कुल राशि का ५२ प्रतिशत व्यय किया जाएगा ।

यद्यपि १९६६ ७४ की वार्षिक योजनाधा के दौरान शिक्षा क लिए निर्धारित ४८ प्रतिशत राशि से इम वार अधिक धन की व्यवस्था की गयी है । चौथी योजना के ८ अरब २३ करोड ६० म से ५ अरब ५२ करोड ८० राज्य क्षेत्र के लिए और शेष २ अरब ७१ करोड ६० केंद्रीय व केन्द्र प्रायाजित क्षेत्र के लिए निर्धारित किये गए हैं ।

शिक्षा विभाग का १९७२ ७३ और १९७३ ७४ के लिए कुल वजट व्यवस्था

रूपे लाखा म

धोर	वजट ७२ ७३	परिशाधित ७२ ७३	वजट ७३ ७४
शिक्षा विभाग का मन्त्रिवालय			
और अय राजस्व षधा	०४४ ०४	२३५ ३६	२६५ ७८
सामाय शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा क विस्तार के लिए व्यवस्था (बेराजगाय शिक्षित ममचारिया क त्रिण रोजगार)	१२ ३८२ ३६	१३,५८० ६४	१२ ०५८ ०३
कुल	१२ ६२६ ४३	१३ ८१६ ३३	१२ ५२३ ८१

प्रारम्भिक शिक्षा का विस्तार

१९७१-७२ के अंतिम महीना में प्रारम्भ की गई और १९७०-७३ में जारी रखा गई इस केन्द्रीय योजना में अधीन भारत सरकार ने प्रारम्भिक शिक्षा का क्षेत्र में राज्य सरकारों और स्थानीय प्रशासन को शत प्रतिशत आधार पर सहायता दी। इसमें अधीन केन्द्रीय सरकार ने १९७१-७२ और १९७२-७३ के दौरान ६०,००० अध्यापक और इतनी ही निरीक्षक व कक्षा के कमरे, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें और मध्यम-हूँ भोजन की व्यवस्था की। १९७३-७४ के दौरान ३०,००० प्रतिदिन अध्यापक तथा इतनी ही अन्य सहायता दिए जाने की सम्भावना है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी परियोजना

इस परियोजना के अन्तर्गत दिल्ली में एक शैक्षिक प्रौद्योगिकी केंद्र की स्थापना की जा रही है। पाठ्यवर्षों का विकास, फिल्मों, रेडियो और टेलीविजन प्रसारण तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए मूल लिपियाँ तैयार करने का प्रस्ताव इसमें शामिल है। इन कार्यक्रमों तथा १६ मिली-मीटर अध्यापन फिल्मों का तैयार करने के लिए प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था होगी। विभिन्न राज्यों में क्रमिक तरीके से शैक्षिक प्रौद्योगिकी कक्षा की स्थापना की जा रही है।

उच्च शिक्षा

एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जिसका मुख्यालय शिवांग में होगा की स्थापना शीघ्र किये जाने की आशा है। उक्त विश्वविद्यालय उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की जनता की उच्च शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जिसका विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (सशोधन) अधिनियम १९७२ के अनुसार पुनर्गठन किया गया है अपने कार्यक्रमों की गति का जारा रखा और विश्वविद्यालयों के स्तरों में सुधार करने तथा अनुसंधान कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रारम्भ किये गये कार्यक्रमों का और विकास किया।

तकनीकी शिक्षा

तकनीकी शिक्षा का कार्यक्रम में सुधार करना मूल कार्यक्रम है। सरकार अध्यापकों की व्यावसायी क्षमता में, विशेष रूप से उन अध्यापकों के लिए जो मास्टर अध्यापक डॉक्टर की उपाधियाँ के लिए तैयारी कर रहे हैं सुधार लाने के लिए परिवर्तित कार्यक्रमों में पर्याप्त संतोषजनक प्रगति हुई है।

१९७३ में बहुत-सी संस्थाओं में डिप्लोमा तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की व्यावहारिक विषय-सामग्री में सुधार करने के लिए रूपांतरण पाठ्यक्रमों (सेण्डविच कोर्सेज) के कार्यक्रमों का विस्तार किया गया है। राज्य सरकारों के साथ चर्चों के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा के पुनर्गठन या पार्लियामेंट शिक्षा हेतु अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित की गयी विशेषण समिति की प्रमुख सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए एक कारवाई योजना बनाई गई है।

मौजूदा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में सहायता देने के अलावा, केन्द्रीय सरकार ने और अधिक संस्थानों को अनुदान की स्वीकृति दे दी है जिससे कि वे स्नातकोत्तर इंजीनियरी

शिक्षा तथा अनुसंधान बोर्ड की सिफारिशों के अनुसार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को लागू कर सकें।

भाषाएँ

सरकार, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के समबित्त विकास के लिए, जिसमें संस्कृत भी शामिल है, राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम चला रही है।

केन्द्रीय भारतीय भाषा-संस्थान, मसूर ने विभिन्न भाषायी प्रवाहों के सभी अनुसंधान तथा उपलब्धि के सामान्यक्रम को एक साथ लाने के लिए अपने विभिन्न कार्यक्रमों को जारी रखा।

भाषाओं के क्षेत्र में उन सभी कार्यक्रमों को, जिन्हें प्रारम्भिक वर्षों में शुरू किया गया था, आलाचय प्रवृद्धि के दौरान जारी रखा गया।

सांस्कृतिक कार्य

भारत-बंगला देश सांस्कृतिक करार पर ३० दिसम्बर, १९७२ को ढाका में हस्ताक्षर किए गए। इसमें संस्कृति, कला और शिक्षा के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग की, जिसमें विज्ञान तथा टक्नोलॉजी के क्षेत्रों के शैक्षणिक कार्यक्रम भी शामिल हैं, व्यवस्था की गई है। वर्ष के दौरान जमनी और मारीशस के साथ भी सांस्कृतिक करारों पर हस्ताक्षर किए गए। २० देशों के साथ सांस्कृतिक करारों निष्पादित करने के प्रस्तावों के बारे में बातचीत चल रही है।

विभिन्न देशों के सांस्कृतिक शिष्टमण्डल भारत के दौरे पर आते रहे और साथ ही भारत के शिष्टमण्डल भी बाहर के विभिन्न देशों में भेजे गए।

तीन राष्ट्रीय अकादमियों के कार्य की समीक्षा के लिए 'यायमूर्ति जी० डी० खोसला की अध्यक्षता में नियुक्त पुनरीक्षण समिति ने अपनी रिपोर्ट इस वर्ष प्रस्तुत कर दी।

आलोच्य प्रवृद्धि के दौरान मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में सग्रहालया और पुस्तकालयों ने अपने सामान्य कार्यक्रमों को जारी रखा।

स्कूल शिक्षा

सरकार पाचवी आयोजना के अंतर्गत विशेष रूप से ६ से ११ वर्ष की आयु के बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में संवैधानिक निर्देशों को पूरा करने के लिए सबसे अधिक महत्त्व देती है। इस सम्बन्ध में शिक्षित चेतोउगारा और प्राथमिक शिक्षा के प्रसार की योजना के अंतर्गत ४४ करोड़ रुपये के बजट विनिर्धान के साथ १९७१-७२ वर्ष के उत्तरार्ध में ठोस प्रयास शुरू किए गए थे। राज्या और सशक्तित क्षेत्रों के लिए ३०,००० अतिरिक्त प्राथमिक स्कूल अध्यापक ०४० सहायक स्कूल निरीक्षक और १,००० कार्य अनुभव अध्यापक स्वीकृत किए गए थे। १९७२-७३ वर्ष में इन ही अध्यापकों और निरीक्षकों की स्वीकृति की गई और ३० करोड़ रुपये की बजट-व्यवस्था भी की गई। आशा की जाती है कि १९७१-७२ और १९७२-७३ में निर्मित तथा भरे गए पन्ना का जारी रखने के अलावा १९७३-७४ में इन ही और अध्यापक नियत किए जाएंगे। इस प्रकार राज्य आयोजनाओं में शामिल किए गए अध्यापकों की संख्या के अलावा प्राथमिक योजना के अंतर्गत कुल अनिश्चित २०,००० स्कूल अध्यापक नियुक्त किए जाने का आशा है। राज्या और

सध शासित प्रदेशों में प्रतिरिक्त अभ्यापक इस आधार पर बाट दिए गये कि २/३ अध्यापकों को उन राज्यों को दिया गया जो ६ से ११ वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के न्यूनतम दाखिले के संबंध में पिछड़े हुए माने जाते हैं और बाकी के १/३ को शेष राज्यों और सध शासित प्रदेशों को दिया गया।

एक बात के लिए बत प्रयत्न किए जा रहे हैं कि पंचवर्षीय योजना के अंत तक ६ से ११ वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों के शत प्रतिशत दाखिले करा दिए जायें। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए मंत्रालय में एक अलग यूनिट खोला गया है।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित महापुरुषों की शताब्दिया

भगवान बुद्ध का परिनिर्वाण वर्ष		१९५६
श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर	जन्मशताब्दी	८ मई १९६१
मिर्जा गालिब	जन्मशताब्दी	फरवरी १९६९
महात्मा गांधी	जन्मशताब्दी	२ अक्टूबर १९६९
गुरु नानकदेव का पाचवी	जन्मशताब्दी	२३ नवम्बर १९६९
दशमघु बिसतरजनदास	जन्मशताब्दी	५ नवम्बर १९७०
श्रीनवघु एड्डूज	जन्मशताब्दी	१२ फरवरी १९७१
राजा राममाहन्तराय	जन्मशताब्दी	२२ मई १९७२
योगीराज भरविंद घाय	जन्मशताब्दी	१५ अगस्त १९७२
निकोलोम कोपरनिकस	जन्मशताब्दी	१९ फरवरी १९७३

भारत के विश्वविद्यालय

१ आगरा विश्वविद्यालय आगरा। स्थापना १९२७ शिक्षा एक परीक्षा का माध्यम
द्वितीय वर्ष का प्रथम महाविद्यालय ३ सम्बन्धित महाविद्यालय ६०।

२ आंध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय (राजेन्द्रनगर) तिलकुशा सोमजोगुडा
स्थापना १९६४ निवासीय।

३ आंध्र विश्वविद्यालय बालटेयर। स्था० १९२६ मा० इगलिश महाविद्यालय ६
स० ५६ प्राच्य महाविद्यालय २२।

४ अन्तमलाई विश्वविद्यालय, अन्तमलाईनगर। स्था० १९२९ मा० इगलिश,
निवासीय, अध्यापन विभाग २६।

५ अमरगढ़ मस्लिम विश्वविद्यालय, अमरगढ़, स्था० १९२२ निवासीय अध्यापन
वि० ४४ अग १।

६ अरुणप्रतापसिंह विश्वविद्यालय, राधा (म० प्र०)। स्था० १९६८ म० द्विती
तथा इगलिश अग १० म० २५।

७ अन्तम कृषि विश्वविद्यालय जागहट। स्था० १९७०।

८ इन्दिरा जन्म समीन विश्वविद्यालय, अरुणगढ़ (म० प्र०) स्था० १९६४ मा०
इगलिश द्वितीय मराठी अग ३ म० महाविद्यालय १८।

९ इंदौर विश्वविद्यालय स्था० १९६६ मा० इगलिश अग १० अग १० वि०

१, अगभूत महाविद्यालय ६, सवेधित महाविद्यालय १५ ।

१० इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, स्या० १८८७, मायता १९२१, निवासीय, अध्या० वि० २३, अ० महा १, सरकारी महाविद्यालय ३ ।

११ उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पतनगर (नैनीताल), स्या० १९६०, निवासीय, मा० इंगलिश, अ० महा० ५ ।

१२ उत्तर बंग विश्वविद्यालय, राजाराममोहनपुर (दार्जिलिंग), स्या० १९६२, मा० बंगला, इंगलिश, अ० वि० ११, स० महा० १७ ।

१३ उदयपुर विश्वविद्यालय, प्रतापनगर, (उदयपुर), स्या० १९६२, मा० इंगलिश हिन्दी, अध्या० वि० १, अ० महा० ६, सहकारी महाविद्यालय ७ ।

१४ उत्कल विश्वविद्यालय धाणीविहार, भुवनेश्वर स्या० १९४३, मा० इंगलिश, अध्या० वि० १५, विश्व० महा० ३, स० महा० ४१ ।

१५ उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, स्या० १९२८, मायता (१९४७ १९५०) मा० इंगलिश, वैलगु हिन्दुस्तानी (देवनागरी अथवा अरबी निरि दाना म), विश्वविद्यालय महाविद्यालय १५ स० महा० ५३ ।

१६ उड़ीसा कृषि एव तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, स्या० १९६२, मा० इंगलिश निवासीय, अध्या० वि० २, अगभूत महाविद्यालय ५ ।

१७ वर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड १, स्या० १९४९, मा० इंगलिश, अ० महा०, ४, स० ७६ ।

१८ वलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, स्या० १८५७, मायता १९५६, मा० इंगलिश वि० महा० ६, स० १९६ ।

१९ वलयाणी विश्वविद्यालय, वलयाणी (५० व०), स्या० १९६०, निवासीय माध्यम इंगलिश, सवाय ३ ।

२० कानपुर विश्वविद्यालय सर्वोदयनगर कानपुर स्या० १९६६, मा० हिन्दी, इंगलिश, स० महा० ४८ ।

२१ कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा स्या० १९६१ मा० इंगलिश, हिन्दी, संस्कृत मथिला बंगला, अ० वि० ९ अ० महा० ३ स० महा २० ।

२२ कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट, स्थापना १९७० ।

२३ कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर ।

२४ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र, स्या० १९५६ मा० इंगलिश, हिन्दी पजाबी, अध्या० वि० १६, अ० महा० २, मायता दत्त महाविद्यालय २ निवासीय ।

२५ केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम स्या० १९३७, मायता १९५७, मा० इंगलिश, अध्या० वि० २१, स० महा०, ९

२६ गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, धनवतरी मंदिर जामनगर, स्या० १९६६ मा० गुजराती, हिन्दी, अध्या० वि० ४ अ० महा० १ स० महा० १ ।

२७ गुजरात विश्वविद्यालय, नवरगपुर अहमदाबाद स्या० १९४९ मा० हिन्दी, गुजराती, इंगलिश अध्या० वि० ४, स० महा० १०३ ।

२८ गुप्त नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर स्या० १९७० ।

- २६ गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, म्या० १९५७ मा० इंगलिश हिन्दी
ग्रन्था० विभाग २२ अ० महा० १, स० महा० ४७ ।
- ३० गोहाटी विश्वविद्यालय, गोहाटी, स्था० १९४८, मा० इंगलिश, ग्रन्था० वि०
२३ अ० महा० १, स० महा० ७३ ।
- ३१ जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर, स्था० १९५७ मा० हिन्दी, इंगलिश, ग्रन्था०
वि० १० अ० महा० १ स० महा० २४ ।
- ३२ जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (तवी) स्था० १९४८, मा० इंगलिश, ग्रन्था० वि०
१६ स० महा० २६ प्राच्य विद्या सम्मान १० ।
- ३३ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली स्था० १९६६ सम्बन्धित
संस्थान २ ।
- ३४ जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर स्था० १९६४, मा० इंगलिश
हिन्दी निवासीय ।
- ३५ जादवपुर विश्वविद्यालय, जादवपुर (कलकत्ता) स्था० १९५५ मा० इंगलिश,
सकाय ३ स० महा० १ ।
- ३६ जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर स्था० १९६४ । मा० इंगलिश हिन्दी
ग्रन्था० वि० २ अ० महा० ८ स० महा० २४ ।
- ३७ जोधपुर विश्वविद्यालय जाधपुर स्था० १९६२ निवासीय मा० हिन्दी
इंगलिश ग्रन्थापन सकाय ६ वि० महा० २ स० महा० २ ।
- ३८ दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत स्था० १९६७, मा० गुजराती हिन्दी,
इंगलिश स० महा० २६ ।
- ३९ दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली स्था० १९२२ मायता १९५२ मा० इंगलिश,
ग्रन्था० वि० ३० अ० महा० ३४ स० महा० ११ ।
- ४० डिवरूगढ विश्वविद्यालय डिवरूगढ स्था० १९६५ मा० इंगलिश ग्रन्था०
वि० १ स० महा० ३४ ।
- ४१ नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर स्था० १९०३ मा० हिन्दी इंगलिश मराठी
ग्रन्था० वि० २३ अ० महा० ३ स० महा० ६२ ।
- ४२ पटना विश्वविद्यालय पटना स्था० १९१७ मायता १९६२ मा० इंगलिश
हिन्दी निवासाय ग्रन्था० वि० ४३ अग० महा० १० ।
- ४३ पूना विश्वविद्यालय पूना स्था० १९४६ मा० मराठी इंगलिश ग्रन्था० वि०
२० अग० महा० १४ स० महा० ३८ ।
- ४४ पंजाब कृषि विश्वविद्यालय बुधियाना स्था० १९६२ निवासीय मा० इंगलिश
अग० महा० ८ ।
- ४५ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ स्था० १९४७ मा० इंगलिश उर्दू पंजाबी
हिन्दी ग्रन्था० वि० ३८ अ० महा० १० ।
- ४६ पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला स्था० १९६२ मा० पंजाबी इंगलिश हिन्दी
ग्रन्था० वि० १६ स० महा० वि० १० ।
- ४७ बंगलौर विश्वविद्यालय बंगलौर स्था० १९६४ ग्रन्था० विभाग १२, अग०
महा० २८ ।

४८ बगलौर कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, मालेश्वरम बगलौर स्था० १९६४
निवासीय ।

४९ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, स्था० १९१६, निवासीय, मा०
इंगलिश, हिन्दी, अध्यापन सभाय १२ स० महावि० ४ ।

५० बरहामपुर विश्वविद्यालय, बरहामपुर स्था० १९६७, मा० इंगलिश आध्या०
विभाग ४ स० महावि० ४ ।

५१ बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर, स्था० १९५२, मायता १९६० मा०
इंगलिश, हिन्दी आध्या० विभाग १६ अग० महावि० ५ स० महावि० ४६ ।

५२ बदवान विश्वविद्यालय, बदवान (५० ब०), स्था० १९६० मा० इंगलिश
बगला आध्या० वि० ३, स० महा० वि० ४२ ।

५३ बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई स्था० १८५७ मायता (१९०४, २८) १९५३
मा० इंगलिश ।

५४ भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल ।

५५ भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर स्था० १९६० मा० इंगलिश हिन्दी,
आध्या० वि० १७ विश्वविद्यालय महावि० ३ स० महावि० ४६ ।

५६ भगध विश्वविद्यालय, बाघ गया (बिहार), स्था० १९६२ मा० हिन्दी, उर्दू
बगला उडिया इंगलिश आध्या० वि० १५ अ० महावि० २ महावि० ३७ ।

५७ मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास स्था० १८५७ मायता (१९०४ २३ २९)
१९६६, मा० इंगलिश तमिल, आध्या० वि० ३४, स० महावि० ११४ प्राच्यविद्यालय
महावि० १८ ।

५८ मदुराई विश्वविद्यालय मदुराई स्था० १९६६ मा० तमिल इंगलिश आध्या०
वि० २४ स० महा० ३८ ।

५९ महात्मा फूले कृषि विद्यापीठ, पूना ।

६० मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, म्या १९५८ मा० मराठी इंगलिश,
आध्या० वि० १ स० महा० ३८ ।

६१ महाराष्ट्र कृषि विद्यापीठ, बुरली, बम्बई स्था० १९६८ मा० इंगलिश आध्या०
वि० २०, अग० महावि० ९, स० महावि० २ ।

६२ महाराजा सयाजीराव, विश्वविद्यालय, बडोदा म्या० १९६८ निवासीय, मा०
इंगलिश, सकाय १० स० महावि० ५ ।

६३ मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ (उ० प्र०) स्था० १९६६ मा० हिन्दी, इंगलिश,
अ० महावि० १, स० महावि० ५४ ।

६४ भमूर विश्वविद्यालय, भमूर म्या० १९१६ मा० इंगलिश कन्नड आध्या० वि०
१, विश्वविद्यालय महा० वि० ३ स० महावि० ४७ ।

६५ रविराकर विश्वविद्यालय, रायपुर (म० प्र०) म्या० १९६४, मा० इंगलिश
हिन्दी आध्या० वि० १ अ० महावि० १० स० महावि० ३५ ।

६६ रांची विश्वविद्यालय, रांची (बिहार) म्या० १९६० मा० हिन्दी, इंगलिश
आध्या० वि० १६ महावि० ४ स० महावि० ३८ ।

६७ रबीन्द्र भारती, बनारस, स्या० १९६२, मा० बंगला, इंगलिश, अष्ट्या० वि० ५ मं० महावि० २३ ।

६८ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, स्या० १९४७, मा० हिन्दी, इंगलिश, अष्ट्या० वि० २७ विश्व महावि० ४, स० महावि० ९१ ।

६९ रङ्गी विश्वविद्यालय, रङ्गी उ० प्र०, स्या० १९४९, निवासीय, अष्ट्या०, विभाग १२ ।

७० सप्रनऊ विश्वविद्यालय, सप्रनऊ, स्या० १९२१, निवासीय मा० हिन्दी इंगलिश अष्ट्या० विभाग ४४ स० महावि० २ सहायरी महावि० १५ ।

७१ वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, स्या० १९५८ मा० संस्कृत हिन्दी अष्ट्या० वि० २४ स० महावि० ११९ ।

७२ विश्व विश्वविद्यालय, उज्जैन स्या० १९५७ मा० हिन्दी इंगलिश, अष्ट्या० वि० ११ अग महावि० २८ स० महावि० २० ।

७३ विश्व भारती, शान्ति निकेतन, स्या० १९२१ मायता १९५१ निवासीय, मा० बंगला इंगलिश, स० महा० ८ ।

७४ श्री बेंकटवर विश्वविद्यालय, तिरुपति, स्या० १९६४, मा० इंगलिश, विश्व० महावि० २ मं० महावि० ३० प्राच्यविद्या० महा० वि० ६ ।

७५ शिवाजी विश्वविद्यालय, कोहापुर स्या० १९६२ मा० मराठी इंगलिश अष्ट्या० वि० ११ सातकातर ब० ५ मं० महावि० २३ ।

७६ गम्बलपुर विश्वविद्यालय, कुन्दराज गम्बलपुर स्या० १९६७ मा० हिन्दी इंगलिश अष्ट्या० वि० २ स० महावि० १ मं० महावि० २३ ।

७७ सरदार वल्ल विश्वविद्यालय वल्लभविद्यालय (मुजरात) स्या० १९५५, मा० मराठी हिन्दी इंगलिश अष्ट्या० वि० १४ मं० महावि० १३ ।

७८ सागर विश्वविद्यालय, सागर (मं० प्र०) स्या० १९६६, मा० हिन्दी इंगलिश अष्ट्या० वि० ११ मं० महावि० ६५ ।

७९ सोराण्ड विश्वविद्यालय, राजका स्या० १९६५ मा० मुजराता हिन्दी, इंगलिश मं० महावि० ८० ।

८० स० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय, बम्बई स्या० १९५१ मा० हिन्दी मुजराता मराठी इंगलिश अष्ट्या० वि० १ स० महावि० ७ मं० महावि० १० ।

८१ हरिद्वार हिन्दू विश्वविद्यालय हरिद्वार स्या० १९७० निवासीय पत्राक्ष हिन्दी विश्वविद्यालय के पत्राक्ष-हिन्दी ।

८२ विश्वविद्यालय (समस्त) स्या० १९५१ निवासीय अष्ट्या० वि० ११ स० महावि० ७ मं० महावि० १० ।

८३ विश्वविद्यालय (समस्त) स्या० १९५१ निवासीय अष्ट्या० वि० ११ स० महावि० ७ मं० महावि० १० ।

८४ विश्वविद्यालय (समस्त) स्या० १९५१ निवासीय अष्ट्या० वि० ११ स० महावि० ७ मं० महावि० १० ।

८५ विश्वविद्यालय (समस्त) स्या० १९५१ निवासीय अष्ट्या० वि० ११ स० महावि० ७ मं० महावि० १० ।

- (८) टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान बम्बई ।
- (९) बिरला तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानो ।
- (१०) भारतीय अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विद्यालय, समूह हाउस नई दिल्ली ।
- (११) भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ।
- (१२) भारतीय खान विद्यालय, धनबाद ।
- (१३) भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर ।
- (१४) राष्ट्रीय महत्व के संस्थान
 - (१) अब्दुल भारतीय औद्योगिक विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ।
 - (२) औद्योगिक शिक्षण एवं अनुसंधान स्नातकोत्तर संस्थान, चण्डीगढ़ ।
 - (३) भारतीय आकिका संस्थान कलकत्ता ।
 - (४) भारतीय तकनीकी संस्थान कानपुर ।
 - (५) भारतीय तकनीकी संस्थान, खडगपुर ।
 - (६) भारतीय तकनीकी संस्थान, हीजबास, नई दिल्ली ।
 - (७) भारतीय तकनीकी संस्थान, बम्बई ।
 - (८) भारतीय तकनीकी संस्थान, मद्रास ।
 - (९) हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (इलाहाबाद) ।

भारतीय भाषाएँ

संविधान में १४ भाषाओं को 'राष्ट्रीय भाषाएँ' स्वीकार किया गया है। ये हैं असमिया, बंगला, गुजराती, हिन्दी, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल, संस्कृत और सिंधी।

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित की गई संविधान ने इसे 'राजभाषा' कहा। अब यह राजभाषा भी नहीं, सम्पन्न भाषा (लिंगलैंग्वेज) कही जाती है। हिन्दी विश्व के अनेक स्थानों में बोली जाती है।

संविधान के अनुच्छेद ३४३ के अंतर्गत उपबंध है कि देवनागरी में लिखी हिन्दी भारत सभ की भाषा होगी किंतु सरकारी व्यवहार में रोमन अक्षर होंगे।

हिन्दी भारत में गंगा-यमुना के बीच के क्षेत्र—मध्यप्रदेश में संस्कृत पाली तथा शौरसेनी प्राकृत भाषा विभिन्न युगों में थी। आगे चलकर इस प्रदेश में शौरसेनी अपभ्रंश का प्रचार हुआ। कालांतर में बोलचाल का शौरसेनी का अपभ्रंश हिन्दी के रूप में परिणत हुआ। १४वीं सदी में उत्तरी भारत के मुसलमान विजेता दक्षिण भारत में जाने लगे और १६वां सदी में गोलकुण्डा और बीजापुर तक दिल्ली की शाही भाषा की बोली के आधार पर एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा का विकास हुआ जो लखनौ कही जाती है। बाद में यह भाषा लौटकर दिल्ली पहुँची। १७वां सदी के अंत में इस नई भाषा में भिन्नता प्रकट करने के लिए दिल्ली की बोली को हिन्दुस्तानी नाम दिया गया। १९वीं सदी के प्रारम्भ में यह खड़ी बोली कहलाई। कालांतर में यह हिन्दी के रूप में विकसित हुई। हिन्दी का मूल आधार मरठ विजयनर की बोली है। डा० उदयनारायण तिवारी ने हिन्दी की यह परिभाषा की है—ब्रज भाषा और हिन्दुभाषा द्वारा प्रयुक्त दिल्ली की वह बोली जिसमें फारसी का प्रभाव नहीं था तथा जो नागरीलिपि में लिखी जाती थी। हिन्दी के छह प्रमुख रूप और बोलियाँ हैं—ब्रज, अवधी, ग्रामीण खड़ी बोली हिन्दुस्तानी, साहित्यिक हिन्दी तथा उर्दू। एक मत यह

भी है कि हिंदी कम से कम १९९ विभिन्न बातियाँ कम मत रायी भाषा है।

गुजराती यह गुजरात प्रदेश की भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है तथा भाषा भी हिंदी से काफी मिलती-जुलती है।

पंजाबी यह पंजाब क्षेत्र की भाषा है। इसका निर्माण सिध्द गुरुदास ने किया था। इसकी लिपि गुरुमुखी है।

कश्मीरी जम्मू कश्मीर में इसका प्रयोग होता है।

असमिया यह असम प्रदेश की भाषा है।

संस्कृत संस्कृत भारतीय भाषाओं की जननी मानी जाती है। भारत के सभी धर्म शास्त्र व प्राचीन ग्रंथ संस्कृत में ही हैं। वेद, उपनिषद् गीता पुराण तथा धर्म ग्रंथ भी संस्कृत में ही हैं। संस्कृत साहित्य धर्मग्रन्थ समृद्ध व प्राचीन है।

मलयालम यह केरल प्रदेश की भाषा है, इसका केरल में ६५४ प्रतिशत साग प्रयोग करते हैं।

कन्नड यह कर्नाटक के ६५१७ प्रतिशत लोग का भाषा है।

उडिया यह उड़ीसा राज्य की जनभाषा है। उगारा प्रयाग उडाग की ८२३१ प्रतिशत जनता करते है।

तमिल यह तमिलनाडु (मद्रास) क्षेत्र की भाषा है। इसका साहित्य समृद्ध है।

उर्दू यह किसी बग विशेष एव क्षेत्र की भाषा नहीं है। वाक्य रचना और व्याकरण इसका हिंदी के समान ही है। यह अरबी फारसी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी है।

बंगला यह बंगला देश और ५० बंगाल की भाषा है। बोलने वालों की संख्या ८ करोड़ ८० लाख बताई जाती है। आज का बंगला साहित्य काफी समृद्ध है।

तेलगू यह आंध्र प्रदेश की भाषा है। इसका दो रूप है प्राचीन व धर्मार्थी। प्राचीन तेलगू में संस्कृत शब्दों की बहुलता है।

मराठी यह महाराष्ट्र की भाषा है। इसका साहित्य काफी समृद्ध है।

अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी शिक्षा

शिक्षा मंत्रालय पिछले कई वर्षों से हिंदी के विकास और उन्नति से संबंधित विविध योजनाएँ कार्यान्वित करता रहा है।

राज भाषा नीति के पूरी तरह से कार्यान्वयन तथा उससे संबंधित सविधिक आवश्यकताओं के बारे में गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए प्रशासकीय आदेशों की यह मंत्रालय अपने सलग्न तथा अधीन कार्यालयों के साथ-साथ अपने अधीन अधिकारियों तथा विभिन्न अनुभागों को नियमित रूप से पालन किए जाने के लिए मंत्रालय नियमित रूप से निगरानी रखता है।

हिन्दी में पत्राचार

प्रशासकीय आदेशों के अधीन जनता से तथा राज्य सरकारों से हिंदी में प्राप्त सभा पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाते हैं।

द्विभाषिक नीति के अनुसार, केन्द्रीय सरकार का प्रत्येक कमचारी अपने अपना सरकारी कार्य हिन्दी अथवा अंग्रेजी में करने के लिए स्वतंत्र है। किन्तु मंत्रालय और उसके सलग्न तथा अधीन कार्यालयों के सभी अधिकारियों और कमचारियों से अपने अपने हिन्दी

जानने वाले कमचारियों को टिप्पणी और सरल मसौदा में हिन्दी प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समय-समय पर अनुरोध किया जाता है। ऐसे अनुभागों की संख्या २५ है जहाँ पर हिन्दी का कार्य साधक जानकारी रखने वाले कमचारियों की संख्या ८० प्रतिशत से अधिक है। ऐसे अनुभागों की संख्या १७ है जहाँ पर टिप्पणी तथा मसौदा लेखन में हिन्दी का प्रयोग आंशिक रूप से किया जाता है।

हिन्दी जानने वाले वरिष्ठ अधिकारियों से कम से कम अपनी छोटी-छोटी टिप्पणियाँ और सरल मसौदा में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए समय-समय पर अनुरोध किया जाता है। हिन्दी में टिप्पणियाँ तथा मसौदा तैयार करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की सहायता के लिए दा हिन्दी आशुलिपिका की सवाग्रा का विशेष रूप से प्रबंध किया गया है।

अतिरिक्त हिन्दी टाइपराइटरों की व्यवस्था

इस समय, मंत्रालय में ४३ हिन्दी टाइपराइटर हैं। दिन-प्रतिदिन हिन्दी का कार्य बढ़ने के कारण और अधिक हिन्दी टाइपराइटर प्राप्त करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

मंत्रालय के अब तक ११४ फार्मों तथा सहिताग्रा का हिन्दी में अनुवाद किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त २४ और फार्मों तथा नियमों के दो सेटों का अनुवाद हो रहा है।

अधिनियमों का अनुवाद

जहाँ तक इस मंत्रालय के अधिनियमों का संबंध है तीन अधिनियमों अर्थात् प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थानों तथा पुरावशेष अधिनियम, कापीराइट अधिनियम तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय अधिनियम का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा चुका है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अधिनियम का हिन्दी अनुवाद का मुद्रण किया जा रहा है। तीन और अधिनियम बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय अधिनियम तथा विश्व भारती अधिनियम का अनुवाद किया जा रहा है।

राज भाषा कार्यान्वयन समिति

मंत्रालय और सलग्न तथा अधीनस्थ कार्यालयों में राज भाषा कार्यान्वयन समितियाँ स्थापित की गई हैं। इन समितियों की हर चौथे महीने बैठकें होती हैं जिनमें सरकारी कामकाज में हिन्दी की प्रगति का पुनरीक्षण किया जाता है। इन बैठकों के कार्यवत्त गृह मंत्रालय को सूचना के लिए भेज दिए जाते हैं।

इस बात पर विशेष रूप से ध्यान रखा जाएगा कि हिन्दी भाषी राज्यों से प्राप्त पत्रों के उत्तर अवश्य ही हिन्दी में दिए जाते हैं तथा इसी तरह जो परिपत्र सामान्य सूचना के हाथों में भी दिभाषा में जारी किए जाते हैं।

कमचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण

उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में जिन कमचारियों ने हिन्दी एक विषय के रूप में ली थी या गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण की हो ऐसे अधिकारियों तथा स्टाफ के बारे में हाल ही में किए गए पुनरीक्षण के फलस्वरूप यह पता चला कि उपयुक्त दोनों श्रेणियों में आने वाले अधिकारियों तथा कमचारियों की संख्या ५५३ है तथा उन्हें हिन्दी का कार्यसाधक जान है। जनवरी १९७३ में शुरू विभिन्न हिन्दी अध्यापन कक्षाओं में १३ व्यक्ति नियुक्त किए गए थे। इस बात का विशेष रूप से ध्यान में रखा जाता है कि

जिन व्यक्तियों को नियुक्त किया गया है वे बक्ष्यामा में नियमित रूप से जाते रहें।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग का पुनरीक्षण करने के लिए विभिन्न प्रभागों के शाखा अधिकारियों की समय-समय पर बैठकें होती हैं तथा हिन्दी काय के लिए अधिकारियों को प्रस्ताव कमचारी नियोजन एन्क (एग० आई० यू०) को भेजा गया है।

संस्कृत का विकास

लगभग ६०० स्वच्छित संस्कृत संगठना या संस्कृत के प्रचार तथा विकास के निम्ने जिनमें १७ मुख्य भी शामिल हैं १७८० लाख रुपये के अनुमानित हुए। इनमें प्रतिवर्ष १४५० लाख रुपये से अधिक के राष्ट्रीय सहायता, राज्य सरकारों तथा क्षेत्रीय शासन प्रणालियों को संस्कृत की क्षेत्रीय प्रायोजित योजनाओं के लिए दी गई। इनमें विभिन्नानुष्ठाओं में रहने वाले ६०० अध्ययनार्थी दी गई सहायता हार्द तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरों को दी गई २५०० छात्रवृत्तियाँ, माध्यमिक स्तरों में संस्कृत अध्यापकों की नियुक्तियाँ संस्कृत पाठशाळाओं में आधुनिक विषयों के अध्यापकों की नियुक्तियाँ और संस्कृत के प्रचार तथा विकास के लिए राज्य सरकार की योजनाओं को कार्यान्वयन करने के लिए दी गई सहायता भी शामिल है।

छात्रवृत्तियाँ

संस्कृत अध्ययन की प्रोत्साहन के लिए विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ इस वर्ष जारी रही। इस वर्ष के दौरान २०० रुपये प्रतिमास की ८० नई अनुसंधान छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं और जो छात्रवृत्तियाँ गत वर्षों में दी गई थी वे भी जारी रहा। इस तरह ५० नई छात्रवृत्तियाँ आचार्य तथा ४० छात्रवृत्तियाँ छात्रों की परीक्षाओं के लिए दी गई थी। १६५ छात्रवृत्तियाँ बी० ए०/बी० एम० ए० और बी० पी० एच० डी० के लिए भी दी गईं। इन सभी छात्रवृत्तियों पर एक वर्ष का कुल खर्च ८ लाख रुपये होता है।

साहित्य अकादमी

भारतीय साहित्य के विकास की दृष्टि से सन १९५४ में साहित्य अकादमी की स्थापना की गई थी। समस्त भारतीय साहित्य की प्रामाणिक ग्रंथ सूची का संकलन करने की दिशा में अकादमी ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में अकादमी ने छ सौ से अधिक ग्रंथ प्रकाशित किये हैं। कालिदास रचित कुमार सभवा (विक्रमोर्वशीय) तथा मेघदूत पाठ के शुद्ध संस्करण तथा हिन्दी संस्कृत, तेलगु बान्ठ मराठी, भलपालम सिंधी आदि विभिन्न भाषाओं के विशिष्ट साहित्य का अनुवाद व प्रकाशन अकादमी की सफलता का परिचायक है। सन १९६१ में अकादमी ने भारतीय लेखकों का परिचय ग्रंथ प्रकाशित किया जिसमें हजारों भारतीय लेखकों के सम्बन्ध में जानकारी दी गई। रूसी हिन्दी भाषा कोष ने भी काफी लोकप्रियता अर्जित की। अकादमी की ओर से कई भारतीय तथा विदेशी विशिष्ट साहित्यिक ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। अकादमी की ओर से प्रतिवर्ष भारतीय भाषाओं के ग्रंथों पर पुरस्कार भी प्रदान किये जाते हैं। अकादमी की ओर से अग्रजों त्रमासिक इण्डियन लिटरेचर तथा संस्कृत में अकादमिक 'संस्कृत प्रतिभा' पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं। अकादमी ने आधुनिक भारतीय लेखकों के व्यक्तित्व और वृत्तित्व पर भारतीय साहित्य के निर्माता' ग्रंथमाला भी प्रकाशित करती आरम्भ की है। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहित्य के भारतीय भाषाओं में सुन्दर ढंग से

अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। मौलाना आजाद की कुछ कृतियाँ को उद्भूत म प्रकाशित करने की योजना पर काम प्रारम्भ हो चुका है।

अकादमी नं १६७३ म स्वाधीनता प्राप्ति के बाद अब तक का भारतीय साहित्य ' पुस्तक प्रकाशित की।

साहित्य अकादमी वार्षिक पुरस्कार-१९७३

क्रमांक	भाषा	शोधक	लेखक	पुस्तक किस किस की है।
१	हिन्दी	आलाक पत्र	टा० हजारीप्रसाद द्विवेदी	नख सग्रह
२	कन्नड	अरलू वरलू	वी० सीनारमया	कविता सग्रह
३	गुजराती	कवि नी श्रद्धा	उमाशंकर जाशी	आलाचनात्मक लेख
४	मलयालम	बलि दशनम	एककथम	कविता
५	मराठी	बाजल माया	जी० ए० कुतकर्णी	बहानी सग्रह
६	मणिपुरी	इफाल अमामुग मागी इसिम नमिस्टकी फिभाम	पाछा	उपयाम
७	मथिली	नका बजारा	ब्रजकिशोर बमा	उपयाम
८	उडिया	ममुद्र स्तान	गुरुप्रसाद माहती	कविता
९	पजाबी	कल, आजत भलर	हरचरनमिह	नाटक
१०	निधी	प्यार जी प्यास	गोविंद मल्ही	उपयाम
११	संस्कृत	श्री निलक यशाणक	एम०एम० अणे	महानाव्य
१२	तमिल	बेरेककूनीर	राजम कृष्णन	उपयाम
१३	तलुगू	मतालू मनावुडु	सी० नारायण रड्डी	कविता सग्रह

ललित कला अकादमी

पण्डित, स्थापत्य कला और चित्र कला के विकास की दृष्टि से ललितकला अकादमी का १९५४ म गठन किया गया। यह विभिन्न राज्या और क्षेत्रों की अकादेमिया के साथ काम म भी सहयोग देती है। यह प्रति वर्ष अखिल भारतीय स्तर पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित करती है जिसमें विजेताओं को पुरस्कार दिये जाते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (नेशनल बुक ट्रस्ट)

सरकार ने उच्चकोटि के साहित्य को विभिन्न भाषाओं म प्रकाशित करके उस उचित मूल्य पर जनसाधारण तक पहुंचान के लिये राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की १९५७ म स्थापना की थी। न्यास अब तक लगभग तीन सौ पुस्तक प्रकाशित कर चुका है। एक प्रादेशिक भाषा से दूसरी प्रादेशिक भाषा में अनुवाद हुए ग्रंथों ने विशेष स्थान प्राप्त किया है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार

भारतीय भाषाओं के उच्चकोटि के साहित्यकारों को पुरस्कृत करने की दृष्टि से भारतीय ज्ञानपीठ ने १९६६ से प्रतिवर्ष एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रारम्भ कर सराहनीय

नाय किया है।

अब तक निम्न साहित्यकारों का यह पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है

१९६६	जि० शंकर कुम्प ओटवकुपल' (बासुरी काव्य)	मलयालम
१९६७	ताराशंकर वद्यापाध्याय गणदेवता (उप-यास)	बंगला
१९६८	{ उमाशंकर जोशी 'निशीथ' (कविता संग्रह) के०वी० पुट्टप्पा रामायणदशनम' (कविता संग्रह)	गुजराती कन्नड
१९६९	सुमित्रानन्दन पंत चिदवरा (कविता संग्रह)	हिंदी
१९७०	रघुपतिसहाय 'किराक' गोरखपुरी गुल-नग्मा (कविता-संग्रह)	उर्दू
१९७१	डा० विश्वनाथ सत्यनारायण रामायण कल्पवक्षम' (महाकाव्य)	तेलुगू
१९७२	विष्णु द स्मृति सत्ता भविष्यत (काव्य संग्रह)	बंगला
१९७३	रामधारीसिंह तिनकर उवशी' (काव्य)	हिंदी

स्वतंत्र भारत में शिक्षा

१ प्राथमिक विद्यालयों में अब १९४७ में १ करोड़ ४१ लाख विद्यार्थियों की अपेक्षा ६ करोड़ ३१ लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं (कक्षा १ से ५ तक)। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या में ३५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

२ कक्षा ६ से ८ तक के विद्यार्थियों की संख्या १९४७ में २० लाख से बढ़कर १९७२ में १ करोड़ ४९ लाख हो गई है। इस प्रकार से इस स्तर के विद्यार्थियों की संख्या में ६५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

३ कक्षा ९ से ११ तक के विद्यार्थियों की संख्या १९४७ में साठे आठ लाख में बढ़कर १९७२ में ८४ लाख हो गई अर्थात् ९०० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

४ जब भारत आजात हुआ तब विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाने वाले छात्रों की संख्या २ लाख ५६ हजार थी। अब इनकी संख्या ९०० प्रतिशत बढ़कर २५ लाख ४० हजार हो गई है।

५ सड़कों के अनुपात में लड़कियों का प्रतिशत ६ से ११ वर्ष में आयु वर्ग में १९४७ में ३५ से बढ़कर १९७२ में ६० हो गया। ११-१४ वर्ष आयु वर्ग में १८ से बढ़कर ३७ हो गया। १६-१७ वर्ष आयु वर्ग में १२ से बढ़कर २८ हो गया और विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में यह प्रतिशत ८ से बढ़कर १८ हो गया।

६ शिक्षा पर हानि वाला व्यय भी १९५० में १ अरब १८ करोड़ ४० लाख से बढ़कर १९६८-६९ में साठे अरब हो गया अर्थात् इनमें ६४० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

शिक्षा संस्थाएँ एवं अध्यापक

१९७३ में उपरोक्त आंकड़ों के अनुसार भारत में शिक्षण संस्थाएँ व अध्यापकों की संख्या निम्न प्रकार है —

१ विश्वविद्यालय	८६
२ विश्वविद्यालय समान संस्थान	१०
३ विश्वविद्यालयों में सम्बद्ध कालेज	३६०४
४ माध्यमिक विद्यालय	३५७७३
५ उच्चतर प्राथमिक विद्यालय	८८,५६७

६ लोवर प्राथमिक विद्यालय	४,०४,४१८
अध्यापक	
१ विश्वविद्यालय तथा सम्बद्ध कालेजा के }	१ २८,६२४
२ माध्यमिक विद्यालय	५ ८७,४३३
३ उच्चतर प्राथमिक विद्यालया के	६ २६,४६५
४ लोवर प्राथमिक विद्यालया के	११ ११,८१६

*

YOU BENEFIT IN MORE WAYS
WHEN YOU BANK WITH
VIJAYA BANK
VIJAYA BANK LIMITED

J

Regd Office

Light House Hill Road
Mangalore ३

Admn Office

Race Course Road,
Bangalore 1

M SUNDER RAM SHETTY
CHAIRMAN

SAVOUR SUPERB SAGAR GHEE & BUTTER



Pat 15



Sagar Ghee is the favorite of millions of people who admire its pure, fresh, and tasty. Sagar at breakfast, lunch and supper. Sagar Butter is guaranteed pure by Agmark guarantee.

Sagar Ghee is now already a household name. It is pure and fresh with granular structure & taste is unique, the original reassuring taste of pure home made ghee, full of energy and vitality. Sagar Ghee reminds us of that long forgotten taste of purity. Sagar Ghee is pure ghee with a Special Agmark guarantee.

SAGAR
Ghee & Butter
Make you
healthy
Make you
wealthy

MEHSANA
DISTRICT
CO-OP. MILK
PRODUCERS
UNION LTD.
Dudhsagar Dairy,
Mehsana (India)

जन-स्वास्थ्य

एक एक करके जैसे ही योजनाएँ बनती गईं, वैसे ही उनके स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर किये जाने वाले खर्च में लगातार बढ़ोतरी होती गई। स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिये पहली योजना में ६० करोड़ ३० लाख रुपये, दूसरी योजना में १४६ करोड़ रुपये, तीसरी योजना में २०६ करोड़ ५० लाख रुपये और वार्षिक योजनाओं में तीन वर्षों में (१९६६-६९) में १४० करोड़ ११ लाख रुपये की व्यवस्था की गई थी। चौथी पंचवर्षीय योजना में स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिये ४३५ करोड़ ३ लाख रुपये की व्यवस्था की गई है। यह सब हाते हुए भी, चौथी योजना में स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिये जो परिव्यय रखा गया है वह सरकारी क्षेत्र में १५,६०,२३४ करोड़ रुपये के कुल परिव्यय का केवल २७३ प्रतिशत है।

राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम

यह कार्यक्रम १९५८ में प्रारम्भ हुआ तथा इसके १९७५ तक पूरा होने की सम्भावना है।

इस कार्यक्रम के चार अंग हैं : प्रारम्भिक—जिसमें इस रोग से लड़ने के लिये अनुमान एव सर्वेक्षण तयार किये गये हैं। आक्रामक—दो तीन वर्षों तक कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव होता है तथा बच्चे सक्रमण के उपचार की व्यवस्था की जाती है। समेकन—इसमें यदि कहीं सक्रमण की अवस्था हो तो उसका पता लगाकर उस दूर करने की व्यवस्था की जाती है। अनुरक्षण—इस चरण में मलेरिया की पुनरावृत्ति रोकने की सतकता बरती जाती है।

१९६३-६५ में बीमारी के पुनः जोर पकड़ने का कारण कई क्षेत्रों में समेकन चरण में आक्रामक चरण में वापिस आना पड़ा।

मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अतगत दश की सारी जनसंख्या के लिए ३६३ २५ एकक काय कर रहे हैं तथा प्रत्येक एकक के अतगत १३ लाख तक आबादी है।

राष्ट्रीय चेन्नक उन्मूलन कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अतगत १४ वर्ष तक की अवस्था वाले इस रोग के लिये विशेष संवेदनशील बच्चा को टीका लगाने पर विशेष बल दिया जाता है। त्रिवर्षीय कार्यक्रम की समाप्ति तक श्रमिक घुमंतु एवं अनेक बच्चे टीका लगाने से छूट गये। अब चौथी योजना में विशेष रूप से टीका लगाने के प्रयास किये जा रहे हैं। १९७२ में ४ करोड़ २२ लाख प्राथमिक शैक्षिक तंत्र में ६ करोड़ टीके बाजारों में लगाये गये।

चौथी योजना में ग्रह तथा जिला स्तर पर कमचारिया की सख्या बढ़ाने का विचार है ताकि प्रत्येक नवजात शिशु एवं सबदाशील बच्चे को प्रति तीन घण्टा टाका लगाया जा सके ।

चौथी योजना में राष्ट्रीय चन्द्र उमूलन कार्यक्रम, जो कि अतिसंक्रामक राष्ट्रीय सहायता की योजना है के लिए १५२० करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है ।

वेवसीन का उत्पादन

भारत सरकार ने वेवसीन की आवश्यकता में आत्मनिर्भर बनने के लिए हैराबाद, पट्टा डायर बलगाम और गिडी में बक्कीन उत्पादन के केंद्र खोले हैं । इनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर विचार किया जा रहा है ताकि चौथी योजना के अंतर्गत आत्मनिर्भरता का लक्ष्य पूरा हो सके । १९७२ में (जनवरी से दिसम्बर) ३ करोड़ ६८ लाख १२ हजार मात्रा का उत्पादन किया गया ।

राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम

भारत देश में ३२ करोड़ व्यक्ति कुष्ठ रोग की छूट के अन्तर्गत क्षय मरीज हुए हैं । देश में प्रति हजार ४० व्यक्तियों पर कुष्ठ का प्रभाव हो जाता है । २५ लाख व्यक्ति कुष्ठ से पीड़ित हैं जिनमें से ५ से ६ लाख व्यक्ति रोग छूट की श्रेणी में आते हैं । कुष्ठ पीड़िताओं में से लगभग आधे व्यक्ति तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश में हैं । महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, पूर्वी उत्तर प्रदेश और मसूर के कुछ हिस्सों में भी यह रोग थोड़ी बहुत मात्रा में है ।

कुष्ठ रोग नियंत्रण कार्यक्रम १९५५ में केन्द्रीय सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रारम्भ किया गया । इस समय २० राज्या तथा सभी क्षेत्रों में चलाया जा रहा है । इस कार्यक्रम के अंतर्गत २३८ नियंत्रक एकक और १४७६ सर्वेक्षण, परीक्षा और उपचार केंद्र चल रहे हैं । केन्द्रीय कुष्ठ शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चिगलपेठ तथा चिकित्सा कालेज नागपुर में चिकित्सा अधिकारी तथा कमचारियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है ।

क्षय रोग

१९७१ में पूरे हुए सर्वेक्षण के अनुसार देश में प्रति हजार १७ व्यक्ति क्षय रोग से पीड़ित हैं । यह रोग विशेषकर शहरी समस्या है ।

बी० सी० जी० का टीका अभियान अन्तर्राष्ट्रीय क्षय निरोधक अभियान के अंतर्गत १९४६ में टीका अभियान प्रारम्भ हुआ । बाद में इस काम में अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्था और यूनीसैफ से मदद मिली । १९४६ से १९७३ तक ३४ करोड़ १२ लाख लोगों की परीक्षा की गई और १५ करोड़ २० लाख लोगों को टीका लगाया गया । २० वर्ष तक की आयु के ६२० करोड़ व्यक्तियों को बिना जांच किये टीके लगाये गये इसमें १४७७ लाख नवजात शिशु भी सम्मिलित हैं ।

बंगलौर में स्थापित राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान में अनुसंधान कार्य हो रहा है । भद्रास तथा मन्नापल्ली में भी अनुसंधान संस्थान स्थापित किये गये हैं । देश में ५३२ टी० बी० निवृत्त हैं ।

यौन रोग नियंत्रण कार्यक्रम

पन्द्रह मान पढ़े अनुमान लगाया गया था कि भारत में सिफिलिस (उपश्ल) से

पाच प्रतिशत लोग पीडित हैं। इसी प्रतिशत में मनारिया (मुजाब) में ग्रस्त लोग हैं। आंध्र, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ जिला में 'पाव' (फफाता) रोग फैला हुआ है। विश्व स्वास्थ्य मण्डल ने १९४९ में हिमाचल प्रदेश में एक प्रदर्शन मण्डली की स्थापना की थी। इसने विस्तृत सर्वेक्षण और सामूहिक उपचार कार्यक्रम चलाया तथा राज्या द्वारा भेजी गई मडलिया की प्रशिक्षण दिया। अनुमान किया जाता है कि यह बीमारी प्राप्त आकड़ा से भी अधिक व्यापक है। देश में ३०५ से अधिक यौन रोग उपचारानय ह।

यौन रोग प्रशिक्षण केन्द्र, सफरदरजग अस्पताल नई दिल्ली में रति रोग की आधुनिकतम चिकित्सा या महामारी विज्ञान का प्रशिक्षण दिया जाता है। १९७३ के दौरान केन्द्रीय सहायता से स्थापित १८६ रति रोग क्लिनिक में १९७,४२९ रोगियों का देखा गया और उनका उपचार किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय सगरोधन

यह केन्द्रीय विषय है। कलकत्ता, विशाखापत्तनम मद्रास बाचीन बम्बई और काटलाक ६ प्रमुख बन्दरगाहा तथा बम्बई (साताक्रम), कलकत्ता (दमदम) मद्रास (मीनाम्बरम) तिरुचिरापल्ली व दिल्ली (पालम) के ५ अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का सगरोधन—प्रशासन केन्द्रीय सरकार के नियंत्रण में है। अन्तर्राष्ट्रीय यातायात वान छोटे बन्दरगाहा पर भी भारतीय पत्तन स्वास्थ्य नियम १९६५ लागू होते हैं। प्रशासन के अतगन विमान अड्डा और बन्दरगाहा पर पर्यावरणिक सफाई व मच्छर व कुत्त प्राणी विरोधी उपाय की व्यवस्था है। नागरिका की चिकित्सा सुविधाएँ भी हैं। नाविका की प्रवेशपूर्व सामयिक परीक्षा की एक योजना चल रही है। बन्दरगाहा और अन्तर्राष्ट्रीय वायुयान अड्डा पर पत्तन स्वास्थ्य समि निया हैं। हज यात्रा व गंगासागर मेले के अवसर पर सगरोधन की व्यवस्था का भार भी प्रशासन पर है।

मानसिक स्वास्थ्य

अखिल भारतीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान, बंगलौर यह संस्थान शिक्षण और अनुसंधान का स्नातकोत्तर संस्थान है। यह मनोवैज्ञानिक चिकित्सा डिप्लोमा (डी० पी० एम०) चिकित्सा एवं सामाजिक मनोविज्ञान डिप्लोमा (डी० एम० एड एस० पी०) मनोविज्ञान उपचर्या डिप्लोमा (डी० पी० एन०) के अतिरिक्त मनोविज्ञान चिकित्सा में एम० डी० तथा नैदानिक मनोविज्ञान में पी० एच० डी० पाठ्यक्रम का संचालन कर रहा है। इस संस्थान में अब तक १३९ मनोविकार चिकित्सक १८५ नैदानिक मनोवैज्ञानिक तथा ३५७ मनो विकारो ननों को प्रशिक्षण दिया गया।

मानसिक रोग चिकित्सालय रांची इस अस्पताल में चिकित्सा व आधुनिकतम साधन है। इसकी स्थापना ५० वर्ष पूर्व हुई थी। इस चिकित्सा के अतगत डी० पी० एम० तथा डी० एम० एण्ड एस० पी० पाठ्यक्रम चालू हैं। १९६८-६९ में मनोविज्ञान में पी० एच० डी० तथा मनोविकार सामाजिक कार्य में डिप्लोमा कोर्स के प्रशिक्षण कोर्सों को रांची विश्वविद्यालय के मरण में प्रारम्भ करने की स्वीकृति दे दी गई है। अनुसंधान के क्षेत्र में बन्द्रे के त्रिपय मानसिक स्वास्थ्य पहलुओं तथा अधिा सम्बन्धी अनुसंधान कार्य किए।

केन्द्रीय स्वास्थ्य योजना का विशेषतः विभाग इस योजना के अधीन सफरदरजग अस्पताल तथा विनिगडन अस्पताल नई दिल्ली में मनोविकार विज्ञान याज्ञनाएँ चल रही हैं।

कैंसर अनुसंधान

धमाध्य रोग कैंसर का चिकित्सा केंद्र में मध्यम अनुसंधान कार्य जारी है। कैंसर चिकित्सा के तीन प्रमुख अनुसंधान केंद्र हैं—विस्तारजन शल्य चिकित्सा केंद्र, कैंसर कैंसर अनुसंधान संस्थान तथा एम० पी० शाह कैंसर संस्थान, पटना।

हृदय रोग रक्ष

स्वास्थ्य और परिवार नियंत्रण मंत्रालय द्वारा ११ अक्टूबर १९७३ को दिल्ली में आयोजित भारतीय चिकित्सा संस्थान में पारित संस्थापना पत्र संस्थापना प्राथमिक हृदय रोगी परिचर्या रक्षक का उद्घाटन किया।

इस संस्थापना के दौरान पठने वाले रोगियों का चिकित्सा कार्य परिचर्या का जागरण। ठीक समय पर रोग का निदान करके और हृदय का धक्का मारकर पर बराबर निगाह रखने से बहुत से लोगों की जान बचाना संभव हुआ है।

इस परिचर्या का नाम प्रिन्स के निजी चिकित्सक स्टीव डी० प्रयाग का नाम पर रखा गया है। इसका स्थापना उनकी विधवा पत्नी म प्रयाग नाम माय रंग के दान की रकम से की गयी है।

दान की राशि में से तीन हजार रुपये की राशि प्रेषण रखा गया है जिसका उपयोग दश विशेष के प्रयाग हृदय रोग रोगियों का प्रयोगस्थान चिकित्सा या शोध कार्य के लिए बुलाने में किया जाएगा।

श्रीपथ नियंत्रण

केंद्रीय श्रीपथ नियंत्रण मण्डल पर दश में आयोजित श्रीपथियों के गुण परिणाम सुरक्षा तथा प्रभावतादक्षता की दृष्टि से नई दबाव का जान बरने तथा उनका अनुमादन करने श्रीपथियों के लिये मानक का निर्धारण करने तथा श्रीपथ अधिनियम के उपबंधों की क्रियाविति के लिए नियम बनाने और अन्ततः राज्य श्रीपथ नियंत्रण मण्डलों की गतिविधियों में ताल मेल गठान का आयोजन है। केंद्रीय श्रीपथ नियंत्रण मण्डल श्रीपथ अधिनियम के प्रशासन से सम्बंधित मामलों में रायों की तकनीकी सहायता भी देता है। केंद्रीय श्रीपथ नियंत्रण मण्डल के अध्यक्ष कलकत्ता मंत्रालय और राजियाबाद में क्षेत्रीय कार्यालय है।

प्रायातित श्रीपथियों पर नियंत्रण बम्बई कलकत्ता मद्रास और कोचीन में सीमा शुल्क भवना में क्षेत्रीय श्रीपथ नियंत्रण कार्यालय स्थापित किए गये हैं। नियंत्रण अधिकांरी प्रायातित श्रीपथियों के लेबला पर अंकित विवरण का जांच करने हैं और जब वषा प्रावश्यकता हो नमने भी भरते हैं जिन्हें परीक्षण के लिये केंद्रीय श्रीपथ प्रयोगशाला कलकत्ता को भेज दिया जाता है। जो श्रीपथियां विहित मानक के अनुकूल नहीं पाई जाती अथवा जिनमें कोई और ऐसा दोष हाता है जिन्हें दूर न किया जा सके उनको या तो उत्पादन देश को पुनः नियात कर दिया जाता है या नष्ट कर दिया जाता है।

भारतीय भोजन संहिता भारतीय भोजन महिता का दूसरा संस्करण जन १९६८ से प्रयाग में लाया जान लगा है जिसमें मटिकन प्रविष्टि में आजकल काम आने वाली श्रीपथियों के ८८४ मोनोग्राफ है। इनमें जो श्रीपथियां अंकित हैं श्रीपथ और अमराग कानून के अंतर्गत उनके लिए यही एकमात्र मानक पुस्तक है।

अग्निवायु शोधयि समिति अग्निवायु शोधयि का तथा समय-समय पर शोधयि का निर्माण और आवात के लिए दिन दिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी इसकी मूचना तयार करने में भारत सरकार का सलाह दे रहे के लिए माच १९६६ में अग्निवायु शोधयि समिति का गठन किया गया था। इसमें चिन्मा की विभिन्न शाखाओं से लिए गये विशेषज्ञ हैं और स्वास्थ्य सवाभा के महानिदेशक इसके अध्यक्ष हैं।

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, बसीली इसकी स्थापना १९०५ में हुई। यह आन्व (पागन कुत्ते का काटने में उपान रोग), टी० बी० हैजा विपराध, टिटनिम, टोकमाइड सिपेरिया, एटीटोनिम और इपनुएजा का टीन तयार करता है। संस्थान में पीत ज्वर बक्मीन भी बनती हैं। संस्थान के अतगत राष्ट्रीय सदभ प्रयागशाला है जो टिटनस व डिप्थरिया के राष्ट्रीय मानक तयार करती है। संस्थान के अतगत राष्ट्रीय बंर टाइप कलचर का राष्ट्रीय मग्रहण केन्द्र, राष्ट्रीय अणुविषाणु केन्द्र रधिर छाया चित्र का बाह्य प्रतिपरीक्षण का क्षेत्रीय व केन्द्रीय इपनुएजा केन्द्र हैं। संस्थान द्वारा शिक्षण व परिशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया जाता है।

बी० सी० जी० बक्मीन प्रयोगशाला गण्डी मद्रास इसका स्थापना १९४८ में हुई। यह इस समय भारत का सबसे बड़ा बक्मीन उत्पादन केन्द्र है। यह सभी राज्या बी० सी० जी० अभियान में लगी अय भारतीय संस्थाओं तथा अफगानिस्तान और लका की सरकारों को बी० सी० जी० बक्मीन तथा ट्यूबरकुलीन और बर्मा तथा मलयेशिया में चल रही मूनीसप समर्थन संस्थाओं का बक्मीन देती है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान

१९७० में भारत सरकार ने भारतीय भेषज तथा होम्योपथी में अन्वेषण के लिए एक स्वायत्तशासी केन्द्रीय परिषद का गठन किया। इसका गठन का उद्देश्य आयुर्वेद यूनाना एक होम्योपथी भेषज प्रणाली तथा योग में वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारम्भ करना तथा उनका समन्वय करना है। इस समिति में २५ सदस्य हैं जिनमें ६ सरकारी १३ गवर्नरकारी तथा ३ समन्वय सदस्य हैं।

आयुर्वेदिक अध्ययन तथा अनुसंधान संस्थान जामनगर इसका प्रशासन एक शासी निकाय के हाथ में है जिसमें भारत सरकार गुजरात सरकार तथा मुलात्र कुवर आयुर्वेदिक सानादटी के प्रतिनिधि हैं।

संस्थान का शिक्षण विभाग स्नातकोत्तर, प्रशिक्षण (एच० पी० ए०) डिग्री काम बी० ए० एम० एम० शुद्ध आयुर्वेदिक डिग्री काम (डी० एस० ए० बी०) आदि का प्रशिक्षण करता है। संस्थान का २३० पलगा का अस्पताल है जिसमें प्रतिमास औसतन २११४ अतरय तथा २८५८ बहिरंग रोगियों का इलाज किया जाता है। संस्थान की अपनी शोध निर्माण शाला भी है। संस्थान आयुर्वेदलोक नामक एक व्रमासिक भी प्रकाशित करता है।

केन्द्रीय आयुर्वेद, अनुसंधान परिषद आयुर्वेद के विकास विशेषकर उनके विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिक खोज के सम्बन्ध में भारत सरकार का मन्त्रणा देता है। इसके अतगत विभिन्न शोधालय अनुसंधान याजना चल रही है। १९६७-६८ में इसका पुनर्गठन किया गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भारतीय चिकित्सा शास्त्र का स्नातकोत्तर प्रशिक्षण व अनुसंधान केन्द्र है। हरिद्वार स्थित आयुर्वेद वनीपधि सर्वेक्षण यूनिट वनीपधि सर्वेक्षण करता है। रानीखेत में भी ऐसी यनिटें खाली गई हैं। पूना के निकट जवाहरलाल नेहरू

आयुर्वेदिक बनोपधि उद्यान तथा औपधि मग्रहानय औपधीय पौधे लगाता है। वेद्रीय शुद्धायुर्वेदिक परिपत्र शुद्ध आयुर्वेदिक याजना आदि का प्रस्ताता ह। आयुर्वेदिक भेषज सहिता समिति भी काय कर रही है। कवत्सधाम ए० एम० वार्द० एस० ममिति लानावाला वम्बई म जीएण श्वास नली शाध और श्वसनी अस्यमा (श्वास) क योगिक उपचार पर परीक्षण चल रहा है।

होमियोपथी हामियोपथी सलाहकार समिति होमियोपथी के विकाम और अनुसधान क सम्बध म भारत सरकार का सलाह देती है। होमियोपथी की एकरूप पढाई के लिए अनुसधान उप समिति क प्रविधि उप समिति बनी है। ग्रामा म होमियोपथी क प्रसार के लिए भी उप-समिति ह। एक होमियोपथिक भेषज समिति ह।

चौथी योजना

स्वास्थ्य कायक्रमा क लिए चौथी पचवर्षीय आयोजन में ४३३ ५३ लाख रुपये का परिव्यय रखा गया ह। इसमें जन पूति और सफाई तथा परिवार नियोजन का परिव्यय सम्मिलित नहा है। केद्रीय राया और सध शासित क्षेत्रा के बीच इस परिव्यय का वितरण इस प्रकार है —

	रुपये लाख में
विशुद्ध केद्रीय क्षत्र	५३ ५० ००
केद्रीय पुरोनिधानित क्षत्र	१७६ ५० ००
राया क्षत्र	१८४ २५ ००
सध शासित क्षत्र	१६ २८ ००
योग	४३३ ५३ ००

वार्षिक योजना १६७२-७३

१६७२ ७३ म स्वास्थ्य कायक्रमा क लिए ८७८३ ०० लाख रुपये की व्यवस्था की गई ह। केद्रीय राया और सध शासित क्षत्रा क बीच इस परिव्यय का वितरण इस प्रकार है।

	रुपये लाख में
	१६७२ ७३
	आयाजन
	परिव्यय
विशुद्ध कद्रीय	१००१ ०८
कद्रीय पुरानिधानित	३००८ ३२
राया एवं सध शासित	८७८७ ६०
योग	८७८३ ००

कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की १९७१-७२ के अंत तक भौतिक उपलब्धियाँ का ब्यौरा इस प्रकार है —

मद	१९७१-७२
पलग	२६६,८२५
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	५१८३
मैडिकल कालेज	६८
वार्षिक प्रवेश	१२०००
दंत कालेज	१५
वार्षिक प्रवेश	६८०

बजट

१९७२-७३ के लिए स्वास्थ्य विभाग का बजट इस प्रकार है —

राजस्व	६२१८७५००० रु०
पूँजी	३२७८११,००० रु०

एलोपैथिक चिकित्सा प्रणाली की शिक्षा देने वाले मेडिकल कालेज

प्रदेश	स्थान (मेडिकल)	स्थान (दंत)
गोध्र	विशाखापत्तनम गुण्टूर कुरनूल काकीनाड शैदरावाद २ (गांधी व उस्मानिया)	वारंगल तिरुपति शैदरावाद
प्रसम	डिब्रूगंज गाहाटी, सिलचर	
बिहार	पटना, दरभंगा रांची जमशेदपुर	पटना
गुजरात	अहमदाबाद २ (बी० जी० व म्युनिमिपन) वडोदा जामनगर, सुरत	अहमदाबाद
जम्भू-कश्मीर	श्रीनगर	
केरल	त्रिवेन्द्रम, काट्टियम, अलेप्पी कालाकट	त्रिवेन्द्रम
मध्य प्रदेश	ग्वालियर भापान, रीवा इंदौर रामपुर जबलपुर	
तमिऱनाडू	मद्रास २ (मेडिकल स्टेशनल मेडिकल) वेल्लार, मडुराई क्तिनपाक	मद्रास
महाराष्ट्र	बम्बई ३ (प्राष्ट जी० एम० टी० एन०) पूना ० (बी० आर्द० ग्रामट फार्सेज) नागर हास्पिटल औरगावाट मिरज शोलापुर, नागपुर ०	बम्बई २
बनारस	मणिपाल, (मगलौर) बगनौर हुगली मुलबग, बेलगाव	बगनौर, मणिपाल मगलौर
उत्तरास	कटक बुढ़िया (मम्बलपुर) बरहामपुर	
पजाय	अमृतनर पटियाला लुधियाना ० (त्रिश्चयन दयानद)	अमृतनर

हरियाणा	रोहतक	
राजस्थान	जयपुर, उज्जयपुर	
उत्तर प्रदेश	लखनऊ आगरा वानपुर, वाराणसी २	लखनऊ
	(बालेज ग्राफ मेडिकल साइंस व हिंदू विश्वविद्यालय) इनाहाबाद अलीगढ़, मरठ २	
प० बंगाल	कलकत्ता ४ (मडिकल आर० जी० वार कलकत्ता इंस्टीच्यूट नीलरतन सरकार) बाकुडा	
दिल्ली	नई दिल्ली ३ (लडी हाउसिंग ए० आई० आई० एम० एम० सी० मीलाना आजाद)	
गोवा	पजिम	
पाण्डिचेरी	पाण्डिचेरी	
हिमाचल प्रदेश—शिमला		

आयुर्वेदिक महाविद्यालय

आयुर्वेद (भारतीय भेषज) की शिक्षा देने वाला विद्यालय देश भर में पने हुए है। यहाँ उन आयुर्वेदिक महाविद्यालयों के स्थान लिये जा रहे हैं जिनको सरकारी मायता किसी न किसी रूप में प्राप्त है —

आंध्र	हैदराबाद विजयवाडा गण्टूर वारंगल ।
असम	शलकुवाडी (गाहाटी) ।
बिहार	पटना मधुबनी बगुसराय भागलपुर मोतिहारी (अम्पारन) ।
गुजरात	सूरत बडोदा नडियाद जामनगर भावनगर उत्तराखण्ड अहमदाबाद ।
जम्मू कश्मीर	श्रीनगर ।
केरल	त्रिक्कूर त्रिपुनीट्टा शोरनपुर २ कोट्टक माधव कुनूर ।
मध्य प्रदेश	रायपुर २ भ्वालियर इंदौर २ उज्जैन बरहानपुर रीवा जबलपुर ।
तमिलनाडु	मलयपुर (मद्रास) ।
महाराष्ट्र	बम्बई नांदेड पना अहमदनगर नागपुर नामिक अमरावती अकोला जालना सातारा सांगली ।
कर्नाटक	मसूर बीजापुर हुबली बेलगाव बन्नारी उन्मी कुशनगी बगनौर बडकेहल गडग नारगा ।
उड़ीसा	पुरी ।
पंजाब	पठियाना जालंधर बरनाना ।
हरियाणा	रोहतक ।
राजस्थान	जयपुर उज्जयपुर बीकानेर सरदारशहर पिलानी सीकर ।
उत्तरप्रदेश	लखनऊ २ वाराणसी ३ पीलीभीत हरिद्वार शासी मरठ देहरादून बाग मधुरा २ चमोला (उत्तराखण्ड) वानपुर बरेली ।
पश्चिमी बंगाल	कलकत्ता ३ ।
दिल्ली	दिल्ली २ ।

तिब्बिया कालेज

हैदराबाद, पटना, दिल्ली, श्रीनगर, लखनऊ, इलाहाबाद, अलीगढ़, महारनपुर, वाराणसी ।

खाद्य पोषक तत्व

भारतीय चिकित्सा शोध परिषद की पाषण परामर्श समिति भोजन की पोषिकता बढ़ाने के लिए अनुसंधान की योजनाएँ तैयार करती है। गभवती स्त्रियाँ छात्रा तथा मजदूरों जैसे वर्गों के लिए पोषिक खाद्य-पदार्थ उपलब्ध कराने का प्रयास किए जा रहे हैं। समुक्त राष्ट्रमण्डल के बालकोष तथा अन्य संगठनों से प्राप्त दुग्ध चूण विभिन्न राज्यों में स्वास्थ्य कक्षाओं के माध्यम से १४ वर्ष से कम आयु के बच्चों तथा गभवती महिलाओं को दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु आदि पश्चिम बंगाल में अपोषण के रोगों का उपचारार्थ १२ छात्रा घर कायदत हैं।

खाद्य पदार्थों में मिलावट

खाद्य पदार्थों में मिलावट एक जघन्य अपराध है। दूध से बने पदार्थों की तल तथा मसाला में मिलावट तभी संभव रही है। मिलावट को रोकने के लिए बनाये गये खाद्य अपशिष्ट निवारण अधिनियम का सख्ती से पालन किया जाता है। मानवा की केन्द्रीय समिति की मसूर में हुई बढक में खाद्याना तथा गेहूँ में तैयार अन्य वस्तुओं में आईसोमरी चीनी को उबालकर बनाई हुई मिठाइयाँ और चावल तथा मानवा तथा दूध और दूध से बने पदार्थों के नमूने लेने के तरीके पर विचार विमर्श हुआ।

वर्ष १९७० में स्वास्थ्य सेवाओं के महानिदेशक कार्यालय में एक केन्द्रीय खाद्याना में मिलावट की रोकथाम नामक एकक स्थापित किया गया है। यह एकक दिल्ली में मिलावट का सर्वेक्षण कर रही है।

परिवार-नियोजन

परिवार नियोजन कार्यक्रम के लिए चौथी योजना का मध्यम वर्ष १९७२-७३, समकाल पुनर्मूल्यांकन और नए फील्ड तकनीकों के प्रयोग करने का वर्ष रहा है। अब तक की सफलताओं को देखने से पता चलता है कि इस वर्ष में नसबन्धी कराने वाला या प्रचलित गभ निरोधक खासतौर से निरोध के उपभोक्ताओं की संख्या के साथ साथ परिवार नियोजन के विभिन्न तरीकों के अपनाने वालों की कुल संख्या अब तक के किसी भी वर्ष की संख्या से सर्वाधिक रहेगी। निम्नलिखित आंकड़े उल्लेखनीय हैं—

तरीका	१९७२-७३		१९७१-७२	
	अप्रैल-नवम्बर १९७२	वही अवधि (अप्रैल निसम्बर) १९७१	पूण वर्ष १९७२	
१	२	३	४	
नसबन्धी	१,०४५,१५५	१,०६६,६२१	२,१७२,६६१	
गर्भाशयी गभनिरोधक	२३१,६५७	२७७,०२०	४८१,१६३	
प्रचलित गभनिरोधक उपयोगकर्ता	२,०६७,७५३	२,२८२,६४२	२,६५३,८२४	

परिवार नियोजन व कायक्रम प्रारम्भ होने से २६ फरवरी १९७३ तक कुल आबादी में लगभग एक करोड़ की वृद्धि रोकने में सफलता मिली है।

अप्रैल १९७२ से नवम्बर १९७२ तक देश भर में परिवार नियोजन के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करने वालों की संख्या ४६७२६७७ हो गई। इस वर्ष परिवार नियोजन सम्बंधी २१७३ लाख आपरेशन किए गए जबकि पिछले वर्ष ११८२०३८ आपरेशन किये गए थे और इस प्रकार आपरेशन कराने वालों में ६८४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आपरेशन कराने वालों में एक चौथाई सच्चा महिलाओं की है।

एक कायक्रम के चालू होने से नवम्बर १९७२ तक देश भर में परिवार नियोजन सम्बंधी १०१४६१५५ आपरेशन किये जा चुके हैं।

अप्रैल १९७२ में गणपति को छुट्टी देने सम्बंधी विधायक पारित कर गण से मुक्ति पान की मांगों को नई सुविधा प्रदान की गई। इसका भी परिवार नियोजन व क्षेत्र में प्रभाव पड़ने की सम्भावना है।

पाचवीं योजना

१९५१ में हमारे देश में जहाँ मनुष्य की औसत उम्र केवल ३२ वर्ष थी वहाँ १९७३ में यह ५० वर्ष हो गई। इसी तरह १९५०-५१ में अस्पताल में पलंगों की संख्या जहाँ १३०००० थी वहाँ १९७२-७३ में यह २८१६०० हो गई है। तब से यह रही आबादी में वास्तविक अस्पताली पलंगों और आबादी का अनुपात ०.३२ से बढ़कर ०.४६ प्रति हजार हो गया है। इसी दौरान में मडिकल कालेजों की संख्या ३० से बढ़कर ३०० से ऊपर हो गई है और आज उनमें हर साल लगभग १२ हजार छात्रों को दाखिला दिया जा रहा है। मलेरिया पर जो अभी दस साल पहले तक एक खतरनाक बीमारी थी अब देश में ५६ पीसिंग इन्फेक्शन में वाबू पा लिया गया है। चेचक और हैजा अब पहले जैसे घातक रोग नहीं रहते हैं भले ही कुछ-कुछ इन्फेक्शन में अब भी मौजूद हैं। हालांकि यह काफी शानदार गतिवृत्ति है फिर भी हर एक हजार आबादी में दो अस्पतालों में एक पलंग और हर तीन हजार आबादी में दो डॉक्टरों का जो लक्ष्य रखा गया था उसमें अभी तक वृद्धि के लिए अभी हम बहुत लम्बा रास्ता तय करना है।

पाचवीं पाचवीं योजना में गांधी में स्वास्थ्य सुविधाएँ जुटाने पर अधिक जोर दिया गया है ताकि गांधी और ग्रामीणों में एक समानता का बंधन बनाया जा सके। गांधी योजना में स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर लगभग ३६३६९ करोड़ रुपये खर्च होगा। पाचवीं योजना में स्वास्थ्य योजना पर ६६० करोड़ रुपये का खर्च खर्च करने का विचार है। पाचवीं योजना का विकास का यह है कि हमें एक-एक गाँव में निम्नम नीडम प्राथमिक दिया गया है जो इस प्रकार होगा -

(क) लगभग ८० गाँवों में १ लाख तक का आबादी वाले हर गाँव में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र।

(ख) हर १० गाँवों में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र।

(ग) हर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में एक डॉक्टरों की सेवा करके तीन तक तक सेवा प्रदान की जाएगी।

(घ) हर प्राइमरी हेल्थ सेंटरों में १२ हजार रुपये तथा हर मध्य सेंटर में २ हजार रुपये की कीमत की दवाइयाँ का इंतजाम करना और

(ङ) प्राइमरी हेल्थ सेंटरों, मध्य सेंटरों और उनमें स्टाफ क्वार्टर बनाने में जो कमी रह गई है उसे पूरा करना ।

हमारे पास गावाँ में लगभग ५,२०० प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और २८,८४० उप केंद्र हैं । पाचवी योजना में हम यह देखना चाहें कि इन प्राइमरी हेल्थ सेंटरों में २२ डाक्टर और उनके साथ हमारा पूरा स्टाफ तैयार कर दिया जाए । हम समय-समय पर इन मध्य-सेंटरों में केवल ११ सहायक नर्स मिडवाइफ हैं । पाचवी योजना के लिए सरकार यह विचार कर रही है कि हर मध्य सेंटर का २ मंटी-परपज वकरा का एक सेट जिसमें एक स्त्री और एक पुरुष हों, दे दिया जाए ।

इस समय मनेरिया चेचक, टाय्फोइड, फाइलरिया कुष्ठ, ट्यूबर्कुलस, हैजा और परिवार नियोजन जैसे अधिकतर केंद्र प्रायोजित कार्यक्रम अलग-अलग स्वतंत्र कार्यक्रमों के रूप में चले हुए हैं और इन कार्यक्रमों में हर एक में अलग-अलग स्टाफ है । पाचवी योजना के दौरान मनेरिया, ट्यूबर्कुलस, चेचक और परिवार नियोजन कार्यक्रमों में काम कर रहे स्टाफ को एक साथ मिला देने का विचार है । पीएनए पर मंटी परपज वकरा हागा जा लागा का मिली-जुली स्वास्थ्य सेवाएँ देगा ।

चुने हुए लगभग १२५३ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का तीस फलगा वाला देहाती अस्पताल बन जाने से गावाँ में लोगों को उनके दरवाजा पर ही अस्पताल की सुविधाएँ मिल जाएगी । इन अस्पतालों के काम मजदूरी और दूसरे महत्वपूर्ण विभागों के लिए खाम-खाम किस्म का अधिकांश डाक्टरों की मांग सामान्य रहेगा ।

HARYANA

TOWARDS

WIDER HORIZONS NOBLER GOALS

I am happy to say that during the past five years our efforts to resolve the various pressing problems in the shortest possible time have met with significant success. We have taken rapid strides in various fields like agriculture irrigation power, roads transport etc. An infrastructure for a sound economy has been created. We are now in a position to push up development work at a fast speed.

Our Prime Minister Smt Indira Gandhi has undertaken the onerous task of eradicating want and unemployment and to bring about a socialist order of society based on economic equality and social justice. The people and Government of Haryana have responded to her call with enthusiasm and pledged to make determined efforts to achieve the goal.

BANSI LAL

CHIEF MINISTER HARYANA

With compliments of

GOVT OF SIKKIM

FRUIT PRESERVATION FACTORY—SINGTAM
SIKKIM

Manufacturers of

SIKKIM SUPREME

Fruit Products

Biggest Selling In

India—Nepal & Sikkim

SIKKIM SUPREME

O R A N G E J U I C E

Which Is Also Catered To

AIR—INDIA INDIAN AIRLINES &
12 INTERNATIONAL AIRLINES

Also 30 Varieties of

Most Delicious Fruit Products

SIKKIM SUPREME

- × Orange Juice Concentrate × Orange Segments
- × Orange Marmalade × Orange Squash × Pineapple Juice
- × Pineapple Slices × Pineapple Jam × Mango Juice
- × Mango Pulp × Mango Slices × Mango Jam
- × Mango Squash × Lemon Squash
- × Lime Juice Cordial × Tomato Juice
- × Grapefruit Juice × Fruit Punch
- × Apple Juice × Guava Nectar
- × Apple Slices × Apple Jam
- × Plum Tinned × Pears Tinned
- × Fruit Cocktail × Jelly Crystals
- × Mixed Fruit Jam × Guava Slices
- × Plum Jam × Guava Jelly
- × Peach Jam

परिवहन तथा पर्यटन

वायु परिवहन

पिछले २५ वर्षों में विमान और टेक्नालाजी के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति हुई है। लेकिन वायु परिवहन के क्षेत्र में जो असाधारण विकास हुआ है वह वही बढ चढ कर है। अनुमान है १९७२ में ३१५९२४५ लोग न हवाई जहाज से यात्रा की। यह विश्व की कुल जनसंख्या का १०वा भाग है।

भारत में १९५३ में विमान परिवहन सेवाओं के राष्ट्रीयकरण से तब उड़ान के किलोमीटर दुगुने से भी अधिक हो गये हैं और वहन किये गये यात्रियों में छ गुना से भी अधिक वृद्धि हुई है। इण्डियन एयर लाइन्स और एयर इण्डिया इन दोनों कारपोरेशनों द्वारा प्रस्तुत की गयी वहन क्षमता पिछले १२ वर्षों में निगुने से भी अधिक हो गयी है अर्थात् १९५९ में १९७७५८ हजार टन किलोमीटर से बढ़कर १९७२ में अनुमानत ८३८०८८ हजार टन किलोमीटर हो गयी।

एअर इंडिया और इंडियन एअर लाइन्स का विमान बेड़ा

३१ दिसम्बर १९७२ के अंत में एअर इंडिया के विमान बेड़े में ९ बोइंग ७०७ जेट विमान तथा चार बोइंग ७४७ जम्बो जेट विमान थे। यह भारत इंग्लैंड अमरीका माग पर दो जम्बो जेट चला रही है। अब अंतर्राष्ट्रीय एअर लाइन्स से एअर इंडिया पूर्णरूप से बराबरी कर सकती है।

दिसम्बर १९७२ के अंत में इण्डियन एअर लाइन्स के विमान बेड़े में ७ डकोटा ६ वाइकाउट ९ फोकर फ्रंजिप ७ कारवेल १, एच० एम० ७४८ विमान तथा ७ बोइंग ७३७ विमान थे। अंतर्देशीय यात्रियों की संख्या २२ लाख से भी अधिक हो जाने के कारण इण्डियन एअर लाइन्स ने आरम्भ के लिए कम्प्यूटर प्रणाली अपनाई है।

अनुसूचित विमान परिवहन

इन दोनों कारपोरेशनों के अतिरिक्त १९ पलाइग क्लबों १० विमान परिचालकों के पास, ३१ दिसम्बर १९७२ तक अनुसूचित विमान सेवाओं के परिचालन के लिए परमिट थे। वर्ष १९७२ के दौरान अनुसूचित परिचालना पर पिछले वर्ष के उड़ान के मुकाबले लगभग १३७७७ घंटा और ६३६८१ हजार किलोमीटरों की उड़ान का गई।

पलाइग क्लब

३१ दिसम्बर १९७२ का भारत में २५ उपादान प्राप्त पलाइग क्लब थे। इस वर्ष इन पलाइग क्लबों ने कुल ३५१७१ घंटा की उड़ान का तथा १३६८१ हजार किलोमीटरों का उपादान एक

धनुसूचित विमान सेवाओं के विकास का रक

वर्ष	उड़ान व घट	उड़ान दिनों	वाहिन यात्री	वाहित माल (टना म)	वाहित डाक (टना म)	उपलब्ध क्षमता (टन)	उड़ान राजस्व (टन)
		माटरा म				किलोमीटर)	किनामीटर)
१९५६	१३१ ३६७	६८१७	७३६ १६०	३३ ५०४	६ ८२५	१६७ ७५८	१२५ २७७
१९६०	१३३ ६६८	६१ ६२६	८५५,२०३	३० २०६	५ ८१७	२६२ ८६६	१४६ ०६७
१९६१	१२८ ६५०	६६ ३८०	८७३ ६६१	६० ०७०	७ ५३४	३१३ ६६४	१७० २४६
१९६२	१३१ ७०५	६६ २०६	१ ०३२ ६०७	३७ ७०६	८ १५८	३५८ १२७	१६१ ७३७
१९६३	१२६ ३०५	५६ ६०५	१ १७६ ३३०	३७ ७४६	६ १०१	३६६ ६३३	२२० २६०
१९६४	१२६ ५५२	६६ ०२५	१ ३८८ ७५३	३२ ५१६	६ ६७७	४४६ ७२५	२५५,६०७
१९६५	१२० ६५२	५७ ६८६	१ ४१५ ७८५	२६ ३३५	१० ५२५	४६५ ५८५	२६२ ०६५
१९६७	१२६ २५७	६६ ७८२	१ ५५८ ६१६	२१ २५६	१० ५१२	६७६ ५६६	२७२ २०५
१९६८	१३१ १४६	५६ ०८७	१ ८२६ ६८६	२३ ६६३	११,१८५	५६०,६०६	३१६ ५०७
१९६९	१३५ ६२५	६० ०४७	२ १०८ २२६	२५ ३६६	११ ६६१	६३६ ३४६	३५३ २६३
१९७०	१५० ६८३	६६ ५५६	२ ६६० ४०६	३१ ६१५	१० १६२	७०२,२१६	६०८,०५७
१९७१	१६७ ७२८	६५ ६६१	२ ६७१ ६००	३२ ६३७	११ ८६६	७०६ २३०	६३८ ६८८
१९७२	१२७ ७७२	५६ ३४६	२ ५४६,५६६	३३ ५३३	११ ६६२	७६७ ४१०	५५० ८८३
		६३ ६८१	३ १५६ २,६५	३६ ६४५	१५,६३१	८३८ ०८८	४८५,६७१

* प्राक्कलित

आर्थिक सहायता के रूप में १६,३४ ५४७ रुपये प्रदान किए गये।

ग्लाइडिंग क्लब

सरकारी ग्लाइडिंग क्लब के भारत में १३ उपादान प्राप्त ग्लाइडिंग क्लब हैं। इस वर्ष (७२-७३) इन क्लबों ने २५०३६ उड़ानों की और इन्हें उपादान एवं आर्थिक सहायता के रूप में ८,०१ ३०० रु० प्रदान किए गए।

असैनिक हवाई अड्डे

असैनिक उड्डयन विभाग के अधीन ६५ हवाई अड्डे हैं। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता एवं मद्रास में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा के प्रबंध के लिए ७० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास के हवाई अड्डा पर आवश्यक प्रबंध कार्यों के लिए भारतीय अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण' स्थापित करने का प्रस्ताव लोक सभा में पारित कर दिया है। सरकार की अनुमति से यह प्राधिकरण अथवा ऐसे हवाई अड्डा का प्रबंध भी कर सकेगा जहां से अंतर्राष्ट्रीय विमान सेवाएं गुजरती हैं। अथवा हवाई अड्डा के सुधार के लिए ११५ करोड़ रुपये की राशि निश्चित की गयी है। यह राशि १६५१ से १६६६ तक के १८ वर्षों में खर्च की गई राशि के बराबर है।

महत्वपूर्ण विकास

वायुयानों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में तेजी से कार्य हो रहा है। महत्वपूर्ण शिल्पीय परिवर्तन किए जा रहे हैं। इण्डियन एयर लाइन्स न देश के भीतर विमान यात्रा के लिये बोइंग ७३७ विमानों का बड़ा बनाया है।

अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पर राडार यंत्र लगाए गए और यान उतारने के लिए कैटेगरी ११ यंत्र लगाए गए।

दुर्घटनाएं

वर्ष १९७२ के दौरान ४६ बड़ी दुर्घटनाएं हुईं जिनमें भारत में पंजीकृत ४४ विमानों और विदेशों में पंजीकृत २ विमानों घटने हुए जिनके परिणामस्वरूप ६ विमानकर्मी वन के संख्या की तथा १८ यात्रियों की मृत्यु हुई।

मोहन कुमारमगलम की मृत्यु

वर्ष १९७३ के अंतगत चार बड़ी विमान दुर्घटनाएं हुईं। एक जापानी विमान की दिल्ली में दुर्घटनाग्रस्त हो जाने में काफी व्यक्तियों की जान गई।

३१ मई १९७३ को दिल्ली में हुई एक भीषण विमान दुर्घटना में केन्द्रीय इस्पात मंत्री श्री मोहन कुमारमगलम मजदूर नेता श्री सनीश लुम्बा तथा अन्य ४६ व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी।

१६ नवम्बर १९७३ की रात को पश्चिमी जर्मनी का बाइंग ७०७ टिप्पला में दुर्घटनाग्रस्त होकर लुप्त हो गया किन्तु सभी यात्री बच गये।

रेल

भारतीय रेल का विस्तार की दृष्टि से ममार में दूसरा स्थान है। रेलगाड़ियों से

प्रतिदिन ६० लाख व्यक्ति यात्रा करते हैं तथा माइ पाच लाख मोट्रिक टन से अधिक माल ढोया जाता है। दश में ७ हजार से भी अधिक रेलवे स्टेशन हैं जिन पर प्रतिदिन लगभग १० हजार रेलगाडियां चल रही हैं। रेलवे का प्रतिघण ८ करोड़ करोड़ रुपये की मायहानी है।

भारत में सबसे पहला रेलगाडी १६ अप्रैल १८५३ का बम्बई से घाना तक ३२ किलोमीटर चली। इसका माय तजो से षेण में साइना का जाल बिछाया गया। भारत में तीन किस्म की रेलवे हैं—ब्रॉड गेज मीटर गेज एवं नराल गेज। अधिकांश रेलवे ब्रॉड गेज ५ फुट ६ इंच चौड हैं।

रेल क्षेत्र भारत की ३७ रेल प्रणालियों ६ रेल क्षेत्रों में विभक्ता है (१) उत्तर क्षेत्र मीमान (मुख्यालय—लिली), (२) उत्तर पूव क्षेत्र (मुख्यालय—गोरखपुर) (३) उत्तर पूव मीमान क्षेत्र (मुख्यालय—मालीगाव—गोहाटी) (४) पश्चिम क्षेत्र (मुख्यालय—बम्बई) (५) पूर्वी क्षेत्र (मुख्यालय—कलकत्ता) (६) मध्यक्षेत्र (मुख्यालय—बम्बई) (७) शिण क्षेत्र (मुख्यालय—मद्रास) (८) दक्षिण-पूव क्षेत्र (मुख्यालय—कलकत्ता) तथा (९) शिण मध्य क्षेत्र (मुख्यालय—सिकंदराबाद प्राध)।

चौथी योजना (१९६६ ७० से १९७२ ७३) रेलवे की चौथी याजना क बुनियादी उद्देश्य इस प्रकार हैं

१ योजना अवधि में प्रत्याशित माल और कार्चिग यातायात क निय पूरी ध्यवस्था करता और

२ धन की उपलब्धता को देखत हुए उपस्वर और काम करने की परिपाटी के सम्बन्ध में रेल प्रणाली को अधिकधिक आधुनिक बनाना ताकि परिवहन तन्त्र की कार्य कुशलता बनाई जा सक और लागत को कम किया जा सके।

चौथी योजना में रेलवे का परिव्यय

(करोड रुपये)

	योजना परिव्यय	मूल्य हासति निधि से	कुल
रेल डिब्बे	३६७	२२३	६२०
कार्यशालाएं	२८	२	३०
मशीनरी तथा सप्ल	७	८	१५
पथ नवीकरण	—	२००	२००
पुल का कार्य	८	२०	२८
लाइन क्षमता कार्य	२७५	४०	३१५
सकेन-व्यवस्था तथा सुरक्षा	२७	१३	४०
त्रिजलीकरण	८१	१	८२
धन्य बिजली कार्य	४	८	१२
नई लाइनें	८३	—	८३
कमचारियां का कल्याण	१३	२	१५
कमचारियां के लिए क्वाटर	२७	३	३०
उपयोगकर्ताओं की सुविधाएं	२०	—	२०

अग्र निदिष्ट काय	५	५	१०
सडक काय	१०	—	१०
तालिका	१५	—	१५
महानगरीय परिवहन	५०	—	५०
	१०५०	५२५	१५७५

१९७३ ७४ म प्रारम्भिक माल यातायात लगभग २६४७ लाख मीटरिक टन होगा जबकि १९७२ ७३ म २ लाख ५५ हजार मीटरिक टन था। अतः अधिक विवास वाले क्षेत्र तथा अधिक यातायात क्षमता वाले क्षेत्रों में मीटर लाइन का बड़ी लाइन में बदलने के कार्यक्रम में तत्परी की जायेगी।

उपयुक्त कार्यक्रम में गर उप नगरीय सेवाओं के निय सवारी गाडी किलामीटर में लगभग २० प्रतिशत वृद्धि करने का लक्ष्य है। उप-नगरीय तथा अग्र काचिग यातायात में प्रत्याशित वृद्धि के लिए भी व्यवस्था की गई है। बम्बई कलकत्ता, मद्रास तथा दिल्ली इन महानगरों में पर्याप्त परिवहन सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिए ५० करोड रुपये की व्यवस्था की गई है। चौथी योजना में रेलवे विकास कार्यक्रम के १०५० करोड रुपये के परिव्यय की व्यवस्था की गई है। इनमें रेलवे के मूल्य ह्रास आरम्भित निधि से व्यय होने वाला ५२५ करोड रुपये की राशि सम्मिलित नहीं है।

विद्युत चालित रेलें

अब तक ३६२८ किलोमीटर माग के लिए विजली की रेल चलाई गई है। इसके अलावा १७०० किलामीटर माग के लिए स्वीकृति मिल चुकी है। इस समय टूडला से दिल्ली विहार में मावरमती पासकुरा से हल्दिया किरणदूल से बाल्देयर और मद्रास से विजयवाडा के माग पर काय चल रहा है।

रेल मंत्रालय की यह नीति है कि कलकत्ता दिल्ली बम्बई और मद्रास जैसे महानगरों को जोड़ने वाले सभी प्रमुख मार्गों पर विद्युत चालित रेलें चलाई जाए क्यकि इन मार्गों पर काफी यातायात रहता है।

बम्बई कलकत्ता और मद्रास के उपनगरों में यातायात के लिए विजली की गाडियां चलाई जा रही हैं। इनकी गति काफी तेज हाती है और दोना दिशाओं में चालक कोष्ठ हाते हैं। विजली की गाडी में इजन वाले डिब्बे में भी यात्रियों के लिए स्थान होता है। इस प्रकार ये गाडियां काफी सवारीयों डोती हैं।

विजली के इजिन और यात्री तथा माल डिब्बे अब देश में ही तैयार किये जाते हैं। ताना प्रकार के इजिन डी सी और ए सी—दोनों प्रकार की विजली वाले क्षेत्रों में चलाये जा सकत है। दाना प्रकार की विजली में चलने वाला एक इजिन चित्तरजन के इजिन बनाने के कारखाने में बनाया जा रहा है।

ए सी विजली वाले इजिन पहले शुरू में बाहर में मगाए गए थ। परंतु अब चित्तरजन कारखाने में बनाने लगे गए हैं। इस समय चल रहे ५२६ ए-सी और १०६ डी-सी विजली वाले इजिनों में से २३६ इजिन बाहर से मगाए गए हैं। इनमें से पांच इजिन पुर्न जोड़ने भारत में ही तयार किये गये हैं। अब २६० ए सी इजिन देश में ही तयार किये गये हैं।

चौथी योजना के अंतर्गत डीजलीकरण कार्यक्रम १९२०० माग किलामीटर से लगभग २०००० माग किलामीटर तक फलान का विचार है। विद्युतीकरण कार्यक्रम २६००० माग किलामीटर से लगभग ४००० माग किलोमीटर तक फलान का लक्ष्य है। अधिक घन व वात मार्गों का विद्युतीकरण या डीजलीकरण किये जान का प्रस्ताव है। चौथा योजना में दीर्घकालीन कार्यक्रम के रूप में १५०० किलामीटर लाइन का बड़ी लाइन में बदलने का कार्यक्रम भी है। १००० किलोमीटर तक दुहरी लाइन विछान का भी लक्ष्य है।

तेज चलने वाली गाड़िया १९२६ से दिल्ली हावडा के बीच राजधानी एक्सप्रेस चालू का गद है। यह भारत में सबसे तेज चलने वाली गाडा है जिसकी रफ्तार १२६ किलोमीटर प्रति घण्टा है। आगामी वर्ष १६० किलोमीटर प्रति घण्टा की रफ्तार से गाडी चलाने का है। दिल्ली बम्बई के बीच राजधानी एक्सप्रेस चलाई गई है। भारत की तेज चलने वाली प्रसिद्ध रजगाडिया में दक्कन क्वीन पनाइंग क्वीन दिल्ली मद्रास ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस पत्रियारभन ताज एक्सप्रेस आदि प्रमुख है।

सन् १९३३ के दौरान १०० किलामीटर प्रतिघण्टा या उससे अधिक तेज रफ्तार से चलने वाली रजगाडिया के लिए प्रमुख रेल मार्ग पर १५ हजार किलोमीटर रेल पटरिया में सुधार किया गया है। इसमें दिल्ली हावडा तथा गई दिल्ली बम्बई राजधानी गाडिया क्रमश १३० तथा १२० किलामीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से चल सकेंगी। कुछ मल तथा एक्सप्रेस गाडिया भा १०० से ११० किलामीटर प्रति घण्टे की गति से चल रही है।

छापी लाइन पर चलने वाली गाडिया की वर्तमान ३५ किलामीटर प्रति घण्टा की रफ्तार का १०० किलामीटर तक बढ़ाने के लिए प्रयत्न किए जा रहे है।

तेज गति की रजगाडिया के लिए प्रमुख रेल पथों में सुधार ट्रंक रिकाडिंग कार को गढ़ापना में किया जा रहा है। इन कारों का निर्माण भारतीय रेल द्वारा स्वयं किया जा रहा है।

१६० किलोमीटर प्रति घण्टा तक की रफ्तार वाला गाडिया तथा पटरिया में गड़बड़ी तथा कर्मियों का पना लगाने के लिए उपकरण मंगाए जा रहे हैं।

पूना स्थित ट्रंक टैनाताजा उच्च मध्यम में रेल इंजीनियरी की तेज गति से रेल गाडिया चलाने तथा रजगाडिया का आधुनिकीकरण करने का प्रति रण किया जाता है। रेल इंजीनियरी का रेल मार्ग टैनाताजा का नवीनतम गतिविधिया के अनुसार ६० हजार किलोमीटर से अधिक वर्ष रेल मार्गों का रख रखाव करता जाता है।

घरने की जमीन रेल का मराठी गाडिया में धार की जमीन का उपपयोग रजने के लिए किया जा एक रेल उपकरण लगाया जाएगा।

रेल उपकरण में ट्रान्स्मिशन का पना रेल जाणगा कि घंटे का हजार याचा गद है। मास है १० से २० मिनट के बीच रेल पर इगता घंटे घंटे आग रजने हा जाएगा। तब घाट ता ट्रान्स्मिशन गाडा पना मरता है।

भारत में रेल के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में मानव संसाधन तय उपकरण बनाया है। रेल मार्गों के दौरान रेल चलाने रखा है। रेल समय मुख्य मानने के कारण इतना पर इतना पराणत कर रहा है। रेलों का विभिन्न क्षेत्रों में चलने वाला रजगाडिया पर इतना पराणत कर रहा है।

इसके अतिरिक्त रजगाडिया में अन्तर्गत क्षेत्रों में अन्तर्गत रजगाडिया के अन्तर्गत

द्वारा खतरे की जमीर का दुरूपयोग किए जाने से रैनगाडिया के आन जाने में असाधारण विनम्ब होना है।

१९७३ वष के पहले छह महाना में खतरे की जमीर खीचे जाने की १,४१,००० घटनाए हुई थी, जबकि पिछले वष इसी अवधि में ऐसी ६६ १६^३ घटनाए हुई थी।

मृतकों को मुआवजा

नवम्बर १९७३ में ससद द्वारा एक विधेयक पारित किया गया है जिसके अनुसार रेल दुषटना का शिकार होनेवाले व्यक्तियों को देय क्षतिपूर्ति की राशि २० ००० रुपये से बढ़ाकर ५०,००० रुपये कर देने के लिए भारतीय रेल अधिनियम में संशोधन कर दिया गया है।

हडतालो से भारी क्षति

पिछले एक वष के दौरान हडताला आर लुधटनाआ के कारण रेलों का लगभग १३ ०० करोड़ रुपये की हानि होने का अनुमान है। इसमें से ८७५ करोड़ रुपये की हानि घण्ट, १९७३ को लाको रनिंग कमचारिया की हडताल के कारण हुई।

रेल इंजन तथा सवारी डिब्बे रेल इंजना तथा डिब्बा के निमाण में चितरजन का रेल इंजन कारखाना, वाराणसी का डीजन रेल इंजन कारखाना तथा परम्बर (मद्रास) का जाडहीन सवारी डिब्बा कारखाना निरंतर प्रगति कर रहे हैं। चितरजन के कारखाने में प्रतिवष भाप से चलन वान २०० इंजन तयार हात हैं। इसी कारखाने में सन १९६१ से विजला से चलन वाने इंजना का निमाण प्रारम्भ हुआ। अब तक लगभग २०० इंजन बन चुके हैं। वाराणसी के डीजन इंजन कारखाने में आयात किये गये पुर्जों को जाडकर इंजन बनाये जाते हैं। इस कारखाने का लक्ष्य २५० इंजन प्रति वष बनाने का है। सरकारी सहायना प्राप्त टाटा इंजीनियरिंग एण्ड लाकोमोटिव वकम में मीटर लाइन के ६५ इंजन प्रति वष बनाये जाते हैं। रेलों की मान डिब्बा सम्बन्धी आवश्यकता अधिकांशतः गर-सरकारी क्षेत्र के उत्पादन से पूरी होती है जिनकी वनमान वार्षिक क्षमता लगभग २ हजार माल डिब्बा की है।

रेल यान

रेल इंजन वाष्प १० ०४६ डीजल ६६६ विद्युत ५१३ कुल ११ ५५५।

रेल डिब्बे सवारी ३० ७ ० विद्युत चालित १/६३ माल (चार पहिया वाल)

८८१८६।

शाहदरा सहरनपुर के बीच बड़ी लाइन प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने २ अक्तूबर १९७३ का शाहदरा और सहरनपुर के बीच नई रेल लाइन के निर्माण काय का उदघाटन किया।

उत्तर प्रदेश में उत्तरी रेलवे की १६१ किलोमीटर की इस बड़ी लाइन पर १७ करोड़ ४० लाख रुपये खर्च होने का अनुमान है। इस परियोजना के १९७८-७९ तक पूरी होने की आशा है। इस भाग पर कुल ३० स्टेशन होंगे तथा प्रतिदिन १५ यात्री व मानगाडिया चलाई जायेंगी।

पांचवीं योजना में रेल

भारतीय रेलों का १९७८-७९ में भी अपना उत्तरदायित्व निभाने में गमय बनाये

रखने के उद्देश्य से पाचवा योजना में रेलों के लिए २३५० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। आशा है कि योजना के अन्तिम वर्षों में रेलों का ३० करोड़ टन भार वहन करना होगा।

पाचवी योजनावधि में रेलों में यात्रियों की संख्या में प्रतिशत ४ प्रतिशत की वृद्धि दर का अनुमान है। इसके अतिरिक्त चार महानगरों में महानगरों में रेल यातायात व्यवस्था के लिए २०० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

प्रस्तावित वित्तीय व्यवस्था में ६८ प्रतिशत राशि रेल लाइनों द्वारा बरतनी और नई रेल लाइनों में तथा पहिले आदि खरीदने पर व्यय की जायेगी। पहिले रेल डिब्बे आदि खरीदने के लिये ६०० करोड़ रुपये और रेल लाइनों के विस्तार के लिए ५०० करोड़ रुपये की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है।

पाचवी योजनावधि में मान तथा यात्रा यातायात वहन में रेलों का समर्थन बनाने के लिए १३०० रेल इंजन १ लाख माल डिब्बे लगभग ७५०० यात्री डिब्बे १०५० रिजला यूनिटें तथा पचास रेल कार और प्राप्त करने का प्रस्ताव है।

पाचवी योजना के दौरान १८०० किलोमीटर रेल मार्ग का विद्युतीकरण करने का प्रस्ताव है। रेल लाइनों और पुनः मजबूत किए जाएंगे जिससे कि भारी सामान ढान वाली मालगाड़ियां उनसे होकर गुजर सकें। पाचवी योजना में पुलों के लिए ६० करोड़ रुपये की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है। मशीनों आदि के लिए ४० करोड़ रुपये और मिगनल तथा सुरक्षा संबंधी प्रबंध के लिए ११० करोड़ रुपये की व्यवस्था है।

रेल कमचारियों के लिए भवनों बनाने के लिए ४० करोड़ रुपये तथा कमचारों के लिये २० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

कलकत्ता बम्बई दिल्ली और मद्रास में महानगरीय रेल परिव्याजना के लिए तथा ग्रहमन्वादा बंगलौर हदरावादा सिकन्दरावादा कानपुर तथा पूना में टुतगाभा परिवहन व्यवस्था के अध्ययन के लिए २०० करोड़ रुपये की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है। रेलों के लिए ३३० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है। इसके अलावा यात्रियों की सुविधाओं पर खर्च के लिए २० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

सड़क परिवहन

देश के आर्थिक विकास और प्रगति के लिए सड़क का अच्छा ढाना अत्यावश्यक है। देश में इस समय ८३१ लाख किलोमीटर सड़कें हैं। इसके अलावा सामुदायिक विकास आदि द्वारा निर्मित लगभग ५ लाख किलोमीटर कच्ची सड़कें भी हैं। स्वतन्त्रता के बाद गत २५ वर्षों में सड़क विकास में हुई भारी प्रगति का बावजूद भी सड़क व्यवस्था अभी अपूर्ण है।

केंद्रीय क्षेत्र की सड़क पर पाचवा योजना में सड़क विकास पर १५३० करोड़ रुपये व्यय किए जायेंगे। इसमें १००० करोड़ रुपये की वह राशि भी शामिल है जो उच्च प्राथमिकता वाली योजनाओं पर व्यय की जायेंगी।

पाचवा योजना में ७८०० कि० मा० सड़कों को चार हिस्सा में बांटा जाएगा। साथ ही समस्त २४००० किलोमीटर नये राजमार्गों को इतना चौड़ा किया जाएगा कि उनमें गाड़ियां एक साथ आ जा सकें।

मोटर गाड़ियां भारत में स्वाधीन ढान के समय देश में कुल २११ ६४६ मोटर

गाडिया, जिनमें माटर माइकिलें आटो रिक्शा, प्रांबेट कारें, जीपें, सावजनिक मोटर गाडिया टक आदि शामिल थीं। जबकि इस समय देश में लगभग १४ लाख माटर गाडिया है। इनमें से बस और टक लगभग ४ लाख है। देश में मोटर गाडिया बनाने के उद्योग ने तजी से प्रगति की है।

सडक निर्माण काय पाचवी योजना अवधि में सडक विकास कायक्रम पर १७ अरब ६८ करोड रुपये व्यय किए जाएंगे। इसमें से ७ अरब १८ करोड रुपये केन्द्रीय क्षेत्र में और शेष राज्या तथा सघशामित क्षेत्र में व्यय किए जाएंगे।

केन्द्रीय क्षेत्र की राशि स दिल्ली परिवहन निगम २००० बसें खरीद सकेगा। इनमें से ७५० बस पुरानी बसा की बदली के लिए आवश्यक हागी।

राज्या का आवंटित राशि में से यह सभव हागा कि १९७३ ७४ के अत तक साडे चार लाख किलामीटर सडका क स्थान पर पाचवी याजना के अत तक ५ लाख किलामीटर सडक बनाई जा सके। नई बनन वाली सडका में से अधिकाश ग्रामीण क्षेत्रों में बनाई जाएगी।

नई सडकें १९७२ ७३ के दौरान देश में ७७ हजार किलोमीटर लम्बी नई सडकें बनाई गईं। इन्हें मिलाकर सडका की कुल लम्बाई १३ ३१ लाख किलामीटर हा गई ह। इसमें राज्य लाव निमाण विभागों, स्थानीय सगठना तथा सामुदायिक विकास खडा के अत गन बनाई गई सडक भी शामिल है।

जलमार्ग परिवहन

जलमार्गों में गंगा ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदिया गोगवरी, कृष्णा तथा उनकी सहायक नहरें आध केरन उडीमा आदि की नहरें उल्लेखनीय हैं। देश भर में नौका परिवहन योग्य जलमार्गों की लम्बाई लगभग १५ हजार किलोमीटर ह। केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के सहयोग में गंगा ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदिया के जल परिवहन के विकास क लिए १९५२ में गंगा-ब्रह्मपुत्र जल परिवहन मडल की स्थापना की गई थी। मडल को १९६७ में अतदेशीय जल परिवहन के निदेशालय में मिला दिया गया है। लगभग ड्वाई हजार किला मीटर लम्बी नदियों में यत्चालित छाटी नौकाए तथा ५७०० किलामीटर लम्बे नदी मार्गों में बडी नौकाए चल सक्ती है।

अतदेशीय जल परिवहन का विकास सविधान के अनुसार जल परिवहन राज्या का विषय है घन इसका विकास इस बात पर निर्भर करता है कि राज्य सरकारें इनमें नितीनी रचि लती ह।

भारत में अतदेशीय जल परिवहन के विकास की पर्याप्त सम्भावनाए है। आवागमन का यह सबसे प्राचीन सस्ता और उपयोगी साधन है। मूल्या का स्थिर रखने के लिए और माल भाडे को कम करने के लिए सरकार की परिवहन नीति में जल परिवहन पर भी उचित ध्यान दिया गया है। इसके विकास में उसके द्वारा छोए जाने वाले मान क भाडे का दर कम की जा सकेगी।

गाघ्रा केरन और आध प्रदेश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां अतदेशीय जल परिवहन का पयाप्त विकास किया जा सक्ता है और यह महत्वपूर्ण भूमिका प्रदा कर सक्ता है। गाघ्रा में प्रतिवष लगभग ८० लाख टन लोह अयस्क खाना में मुर्गाब यन्त्रगाह तक जन माग में

होया जाता है। करन म जनमार्गों से लगभग १५ लाख यात्री प्रतिवर्ष यात्रा करते हैं और २० लाख टन माल ढोना जाता है। आंध्र प्रदेश म कृष्णा और गोदावरी की नहरा तथा तमिऴनाडु म बर्किचम नहर म जन परिवहन की सुविधायें मौजूद ह। गंगा नदी म भी अतर्देशीय जल परिवहन क विकास की पर्याप्त सम्भावनाए ह।

जहाजों का आधुनिकीकरण

अन्तर्देशीय जन परिवहन का परा फायदा उठाने क लिए जहाजों का आधुनिकीकरण आवश्यक है। हमारे अधिकांश जलमार्ग उद्योग ह और उनसे जहाज नहीं चलाए जा सकत। इसक लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न जलमार्गों का चरणबद्ध विकास करने के लिए काय प्रम प्रारम्भ किए जाए। नौकाया और नौशाया म नवे मान की क्षतिपूर्ति के लिए बाम की व्यवस्था म जन परिवहन का बढावा मिलगा। राज्य सरकारा को तरुनीकी सलाह देने और विभिन्न राया क ाम संगठना म समन्वय बनाए रखने के लिए केन्द्र ने केंद्रीय अतर्देशीय परिवहन मण्डल का स्थापना की ह।

बदरगाह भारत म जहा मुख्य ८ बदरगाह हैं बहा समुद्र तट पर लगभग २२५ छोटे बदरगाह हैं। बड बदरगाह कनकता काचीन बम्बई मद्रास मारमाओ तथा विशाखापट्टनम म है।

१९७१-७२ म बडे बदरगाहा म परिवहन ५६२ लाख मीट्रिक टन था जिसक १६७३ ७४ म ६०० लाख मीट्रिक टन हा जान का आशा है।

चौथी योजना म जनयाना क अजन क लिए १२५ करोड रुपए की व्यवस्था की गई है। चौथी योजना क अंत तर नौ परिवहन टन भार लगभग ३५ लाख कुन पजीवृत टन भार तक पहचने का अनुमान है।

जहाजरानी निगम निगम क पाम विभिन्न प्रकार क ५२ जहाज हैं। निगम की सहायक कम्पना मुगन राशन लि० क पास हज यात्रियों क लिए ३ मवारी मान जहाज तथा एक टकर है। सरकारी अत्र को कम्पनिया क अनिखित ३० अथ जहाजरानी कम्पनिया देज म कायल है।

पाचवीं योजना मे जहाजरानी

पाचवा पाचवर्षीय योजना म १९७०-७६ तर भारताय जहाजरानी की कुल टुनाई क्षमता ६६ लाख टन तक हा जान का आशा है। पाचवा योजना म जहाज घराने क लिए जहाजरानी विराम निगम ममिति को २ अरब ४३ करोड रुपए दिए जाएंग। इनक अढावा प्रति ११ मुकियाया क विस्तार और नाविका क क्वाण कायकमा क लिए ६ करोड २० की व्यवस्था है।

प्रमुख बदरगाहा क विराम क लिए अरब ८ करोड रुपय का व्यवस्था का गयी है। छोटे बदरगाहा क विराम क लिए ४६ करोड रुपय व्यय किए जाएंग।

पयटन

पयटन विंगा मय अखित करन तथा अन्तर्राष्ट्रीय मोटार उद्योग करन का एक प्रमय क अन्तरगत मानत है। पयटन मानत का एक ताभ्यायक उद्योग है। स्वाधीनता क

बल् से भारत के पयटन म भारी अभिवृद्धि हुई ह। पयटन उद्योग के विकास के लिए टूरिस्ट टेक्निक ब्रांच की स्थापना की गई। दिल्ली बम्बई कनकता व मद्रास म प्रादेशिक पयटन कार्यालय हैं तथा जयपुर आगरा जम्म कोचीन, श्रीरगावाड एव वाराणसी म पयटन उप-कार्यालय है।

पयटन व्यवसाय पयटन संगठन का मुख्य उद्देश्य भारत म विदेशी पयटका का अधिक मात्रा म आकर्षित करना ह।

भारत म आन वाले पयटका की संख्या म इस वष बढ़ि हुई। गत वष के २००६६५ पयटका की तुलना म वष १९७० में ३४० ६१० पयटक भागत आय और डम प्रकार १३६ प्रतिशत की बढ़ि रही।

देश तथा विदेशा म सफा प्रचार तथा जनसंपर्क कार्यक्रमों के कारण पयटका की दश में पयटन सुविधाएँ सवधी भाग रही ह।

१९७० म पयटन विभाग तथा भारत पयटन विकास निगम ने दश में पयटन उद्योग के ढांचे का मजबूत बनाने के लिए अनेक प्रयास किये है।

केंद्रीय क्षेत्र में पयटन के लिए २५ करोड़ रुपये की मूल योजना परिव्यय था— जिसम १४२ करोड़ रुपये पयटन विभाग के लिए और १०७७ करोड़ रुपये (योजना बनाने के पश्चात अंशक तथा जनसंपर्क होटला के लिए आवंटित २ करोड़ रुपये को छोड़कर) भारत पयटन विकास निगम के लिए रखे गए थे। योजना पर किए गए मध्यावधि विचार के अंतगत १९७१ में विविध स्कीमा के लिए निर्यात का पुन आवंटन करना आवश्यक हो गया। कुछ स्कीमा का या तो स्थगित कर दिया गया या छोड़ लिया गया और इस प्रकार जिन निधिया से बचत हुई उन्हें अन्य योजनाओं तथा युवा होम्सला वय-पशुशरण-म्यला विविध स्थाना पर पयटन परिवहन की व्यवस्था और गुणमग प्रयाजना के लिए स्थानांतरित कर लिया गया क्योंकि इन परियोजनाओं का पयटन आकर्षण से अधिक सवधित पाया गया। योजना आयोग ने पयटन विभाग की योजनाओं के लिए ७८ करोड़ रुपये की अतिरिक्त निधिया की व्यवस्था के लिए स्वीकृति दी। इस प्रकार चौथी योजना के लिए केंद्रीय क्षेत्र में पयटन के लिए कुल याजनागत परिव्यय बढ़ा कर ३४८ करोड़ रुपये कर दिया गया।

विकास योजनाएँ

समेकित विकास प्रायोजनाएँ—भारत का लक्ष्य बना कर आन वाले पयटका को अधिक संख्या म आकर्षित करने के उद्देश्य से तयार की गई हैं क्योंकि हिमालय पर स्कीइंग करना एक बहुत बड़ा आकर्षण है और गुणमग पयटन ही एक लोकप्रिय शीष्मवालीन विहार-स्थल है अतः इस शीष्म एव गीत दाना ही प्रतुष्ठा के लिए उपयुगी विहार-स्थल बनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण समेकित विकास प्रायोजना हाथ म ली गयी है। परियोजना के अंग के रूप में यहाँ एक २००० मीटर लम्बे व्यासगामी रज्जुमाग लगाने के प्रस्ताव का अनुमान कर लिया गया है। स्वीकृत प्रगतिभक्त स्तून न जिनसे जनवरी १९६६ म कार्य प्रारंभ किया था स्वामी और पयतागण में १६ प्रतिशत का प्रगतिपण पूरा कर लिया है।

नावातम का एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर व समुद्रतटीय विहार-स्थान व रूप में विकास किया जा रहा है। ८० कुटीरों पुरी एक चालू हो चुकी हैं तथा एक १०० कमरा वाला हाटल एक समुद्रतटीय सेवा केंद्र एक योग व मानिष केंद्र और एक घ्रापन एयर पियटर का निर्माण काय प्रगति पर है।

समुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम व अतगत एक समुद्रतटीय विहार स्थान विकास सर्वेक्षण दल और आगे विकास व निष्पत्ती के लिए नावातम का तथा गावा और महाबन्निपुरम व समुद्र तटा का सर्वेक्षण कर रहा है।

होटल

सरकार द्वारा दिय गये विभिन्न प्रोत्साहना व परिणामस्वरूप हाटन निवेश के क्षेत्र में जा रचि उत्पन्न हुई है वह बराबर बढ़ती रही और कई गर-सरकारी सम्पत्तियां न जो हाटल क्षेत्र में पहली बार प्रविष्ट हो रही हैं होटन स्थापना करने व संबंध में विभाग स बराबर सम्पर्क बनाया हुआ है। विदेशी पर्यटकों व निष्पत्ती का दृष्टि से १९७२ में कुल ३६ नई होटन प्रायोजनाएं अनुमानित की गीं। इनमें बहुत सी प्रायोजनाएं निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं।

पूर्व अनुमानित योजनाएं प्रगतिशालता के साथ परी की जा चुकी हैं और वर्तमान स्थिति यह है कि १७८ स्वीकृत होटन चल रहे हैं जिनमें १०६७५ वक्सा की व्यवस्था है ८५ नई प्रायोजनाओं के परा होते ही वर्तमान होटन आवास व्यवस्था में ६०७३ वक्सा की और बढ़ि हो जाएगी। ये नई प्रायोजनाएं बम्बई वनवक्ता दिल्ली मणस आगरा औरंगा बाद बगलौर कोचीन चण्डीगड हैदराबाद जयपुर छजुराहो लखनऊ पूना पटना श्रीनगर वाराणसी मगलौर विजयवाडा भावनगर गोहाटी रामपुर जोरहाट राजामुंद्री बडोला मेरम तिष्ठति सिलीगुडी भरतपुर भुवनेश्वर गोवा इ और खामम वनून कुल्लु मनाली और ऋषिकेश में स्थित ह।

इन प्रायोजनाओं में से कुछ निजी क्षेत्र में और अन्य सावजनिक क्षेत्र में (भारत पर्यटन विकास निगम और एयर इंडिया की प्रयोजनाओं) पूरा हो जाने व वात भी चौथी पंचवर्षीय योजना व अंत तक ५७१२ वक्सा की बनी रहगी जबकि उस वय ८००००० पर्यटकों के आगमन की आशा है।

विदेशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या तथा उनसे अर्जित विदेशी मुद्रा

	आगमन	प्रतिशत बढ़ि	रु० करोड में
१९६७	१७६५६५	१२५	२५२
१९६८	१८८८२०	५२	२६४
१९६९	२४६७२८	२९६	३३१
१९७०	२८०८२१	१८८	३८०
१९७१	३००६६५	७२	४०४
१९७२	३८२६५०	१३६	४८३
१९७२*	४०००००	१६६	५७०

* अनुमानित

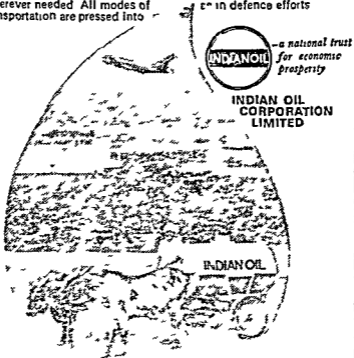
Reaching petroleum products wherever needed

With a nation wide storage and distribution network Indianoil maintains an uninterrupted flow of petroleum products to serve the nation

With more than 200 installations bulk depots and aviation fuel stations and over 3000 petrol/diesel stations Indianoil ensures that products are delivered wherever needed. All modes of transportation are pressed into

service—coastal tankers, pipe lines, rail tank wagons, tank trucks and tank carts.

Indianoil marketed about 14 million kilolitres of products during 1971-72 thus meeting nearly 55 per cent of petroleum product requirements of the country—serving the nation in its development plans as well as in defence efforts.



The Planning & Development Division

(A Division of the Fertilizer Corporation of India Ltd)
OFFERS INDIGENOUS DEVELOPED KNOW HOW IN
FERTILIZERS AND HEAVY CHEMICALS

CATALYSTS AND CHEMICALS

- * Supply of complete range of catalysts for the Fertilizer Industry manufactured in our own Plants
- * Supply of Ammonium Bi carbonate and other Chemicals

RESEARCH AND DEVELOPMENT

- * Services of our Modern Physical and Chemical Research Laboratories for the Fertilizer Industry
- * Expertise on Scientific Farm Management

PLANNING

- * Pre operational Planning and Execution of Projects

ENGINEERING

- * Detailed Engineering for the Fertilizer and Heavy Chemical Industry

INDUSTRIAL MANAGEMENT

- * Thorough In Plant Training at all levels

OUR PRODUCTS & SERVICES ARE BACKED BY YEARS OF
FUNDAMENTAL RESEARCH AND COMMERCIAL EXPERIENCE

For Details Please Contact

PLANNING & DEVELOPMENT DIVISION

C I F T Buildings (Pin No 828122)

P O Sindri, Dist Dhanbad,

BIHAR

Tele No 60110 60160 60260
Jharia (3 Lines)

Gram PLANDEV
Sindri

डाक-तार, संचार

डाक-तार विभाग भाग्य का दूमरा सबसे बड़ा सरकारी संस्थान है। डाक तार टेलीफोन तथा बेतार संचार सेवाओं के विनाम अनुरक्षण तथा विस्तार का दायित्व डाक तार बोर्ड पर है।

डाक सेवाएँ

डाकघर दिसम्बर १९७२ के अंत तक १७३८ नए डाकघर खोल गए परिणामतः देश भर में डाकघरों की कुल संख्या १ १३ २३२ हो गई। अंत सीमा क्षेत्रों में रक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए प्रति डाकघर २५०० रुपये तक का वार्षिक घाटा होने पर भी डाकघर खोले जा रहे हैं। छ रात्रि डाकघर भी खोल गये।

अन्य मुख्य कार्यक्रम

पत्रबम पत्र बमों द्वारा उत्पन्न भय से विभाग पूर्णतया सचेत रहा। बम्बई और पटियाला डाकघरों में इस प्रकार के दो पत्र बमों का विस्फोट हुआ। पत्र बमों का पता लगाने और उनका निपटारा करने के लिए अटार्नाईस अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया है तथा सभी मकलों में अथवा डाक-तार अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए उनकी सेवाओं का प्रयोग किया जा रहा है।

तृतीय एशियाई अंतर्राष्ट्रीय मेला, १९७२ विभाग में तृतीय एशियाई अंतर्राष्ट्रीय मेला १९७२ में भाग लिया। संचार स्टाल पर काफी भीड़ रही। इस अवसर पर दो स्मारक डाक टिकट निकाले गए।

विनकोड १५ अगस्त १९७२ को डाक सूचक संख्या कोड चालू किया गया। यह छ अक्षरों का कोड है जिससे प्रत्येक विभागीय वितरण डाकघर का पता चलता है। इससे डाक छगई के लिए यह तयार सूचना भिज जाती है कि डाक-वस्तु किस भाग पर जानी है। प्रथम अक्षर क्षेत्र का सूचन करता है दूसरा अक्षर उप-क्षेत्र को और प्रथम तीन अक्षरों को एक साथ लेने पर के क्षेत्र छगई जिनकी सूचना मिलती है। अंतिम तीन अक्षर इस जिनके द्वारा सेवा किए जाने वाले क्षेत्र में खास वितरण डाकघर को सूचित करते हैं।

एजेंसी काय दिसम्बर १९७२ के अंत तक २१ ४०७ पालिसिया से ६३ करोड़ रुपये की आय हुई। १ जून ७२ में गैर चिकित्सा बीमा की एक नई योजना डाक जीवन बीमा में चालू की गई।

यद्यत् बैंक जमाकर्ता अब एक से अधिक बचत-बैंक खाते खोल सकते हैं। एक समिति

व्यवहार से क्षमता को २००० टन से ४००० टन करने का प्रस्ताव भी आया है। कारखानों को आधुनिक बनाने के लिए कलकत्ता के लिए कुल ३६ करोड़ रुपये और जबनपुर के लिए २६ करोड़ रुपये खर्च करने की योजना बना ली गई है।

नवम्बर १९७२ तक तीन कारखानों का उत्पादन ४७१४ लाख रुपये था। जर्मनी व ७०-७३ के लिए ८१००० लाख रुपये का लक्ष्य था।

निजी शाखा एक्सचेंज की बड़ी हुई भाग को पूरा करने के लिए अगले वर्ष के दौरान निजी शाखा एक्सचेंज का बड़ी संख्या में निर्माण करने के लिए कार्रवाई शुरू कर दी गई है। १३ सड़कतरंग बुजों का जो कार्यक्रम बनाया गया था उसका अनिश्चित ७०-७३ में अनिश्चित ४ सड़कतरंग बुज बनाने की भी कार्रवाई शुरू कर दी है।

वित्तीय परिणाम

वर्ष १९७२-७३ के लिए बजट और सशोधित प्राक्कलन तथा १९७३-७४ के लिए बजट स्थिति निम्न प्रकार है —

(करोड़ रुपये में)

व्योरे	बजट	सशोधित	बजट
	प्राक्कलन	प्राक्कलन	प्राक्कलन
	१९७२-७३	१९७२-७३	१९७३-७४
१	२	३	४
राजस्व प्राप्ति	३१०००	३२२७५	३६२००
कायकारी व्यय (शुद्ध)	६४८८	२६५५८	२६३०१
शुद्ध प्राप्ति	६५१२	५७२१	६८६६
सामान्य राजस्व का लाभान्वित	१६०८	१७२२	१७७०
व्यय	२६०८	३६६६	५१२६
निम्नलिखित को विनियोजन			
राजस्व आरक्षण निधि	४०४	०४६	५२६
पूजी आरक्षण निधि	२५००	३६५०	४६००

१ अप्रैल १९७२ को डाक-तार संचार विभाग का पूंजीगत परिवर्धन ५५०१३ करोड़ रुपये था। राजस्व आरक्षण निधि ६४५ करोड़ रु० और पूंजी आरक्षण निधि ३५६२ करोड़ रुपये थी। वरन् ये धन अनुसूची आइटम ६७००६ करोड़ रु० ७२५ करोड़ रु० और ६८२६ करोड़ रुपये होने का अनुमान है।

पांचवीं योजना में डाक-तार-संचार

पांचवां योजना के दौरान दूर-संचार व डाक-तार सेवाओं का विकास के लिए १० अरब ८७ करोड़ रु० का व्यवस्था का प्रस्ताव है जिसमें से १० अरब ३० करोड़ रु० दूर-संचार मंत्रालय व विकास के लिए तथा ५७ करोड़ रु० डाक-तार मंत्रालय के विकास के लिए है। प्रस्तावित व्यवस्था का अधिकांश लगभग ६ अरब रु० योजना के दौरान विरहित हानि या अनिश्चित साधना से प्राप्त किया जाएगा।

इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज और विदेश संचार सेवा समेत संचार सेवाओं के लिए कुल मिलाकर ११ अरब ७६ करोड़ ४० का व्यवस्था होगी।

व्यापक विकास कार्यक्रम के वादबजूद भी, अनुमान है पाचवी योजना में ४५ करोड़ ४० की विदेशी मुद्रा की आवश्यकता पड़ेगी जो चौथी योजना से ३ करोड़ ४० कम है।

लगभग ३०० स्टेशनों के साथ सीधी टेलीफोन सेवा आरंभ किए जाने का लक्ष्य है। टेलीफोन लगाने के लिए पाचवी योजना के अंत में प्रतीक्षा अवधि १३ वर्ष रह जाएगी। योजना के आरंभ में यह अवधि २५ वर्ष आती गई है। लगभग ७००० नए तारघर और ३० नए टेलीफोन केंद्र भी खोले जाएंगे। योजना के दौरान लगभग ३१००० नए डाकघर खोले जाएंगे।

विभाग में हिन्दी की प्रगति

राष्ट्रपति के २७ अप्रैल १९६० के आदेशानुसार जिन कमचारियों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य है उनके तार विभाग में उनकी संख्या ३१ मार्च १९७३ का २६४ लाख था। इनमें प्रशासनिक श्रेणी के कमचारियों की संख्या २५ हजार है और प्रचालन श्रेणी के कमचारियों की २२८ लाख। प्रशासनिक कमचारियों में २३५०० हिन्दी का अप्रशिक्षित ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं और बाकी का हिन्दी सिखाने का प्रबंध किया जा रहा है। प्रचालन कमचारियों में १३० लाख हिन्दी सीख चुके हैं और बाकी ९९ हजार को हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था की जा रहा है।

प्रचालन कमचारियों का निजी प्रयत्न से प्रबंध प्रवीण और प्राण की परीक्षाएं पास करने पर अब डिप्लोमा १९६८ से क्रमशः २५०, २५० रुपये और ३०० रुपये की राशि एकमुश्त में पुरस्कार-स्वरूप दी जाती है। इसके फलस्वरूप कमचारियों में हिन्दी सीखने का उत्साह बढ़ा है विशेषकर महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, कर्नाल और तमिलनाडु संघों में। दक्षिण के सभी, खासकर तमिलनाडु संघों में स्थानीय हिन्दी सेवा समस्याओं के महसूस से यह योजना पर्याप्त सफल रही है।

हिन्दी वैकल्पिक माध्यम

डाक तार विभाग ने अपनी सभी विभागीय परीक्षाओं में अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी का वैकल्पिक माध्यम स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार का आदेश जारी करने वाला डाक तार महामंत्र पहला केन्द्रीय विभाग है। इसके अतिरिक्त विभागीय परीक्षाओं के प्रश्न पत्र को द्विभाषिक रूप में जारी करने की व्यवस्था भी की जा रही है।

देवनागरी तार सेवा

डाक तार विभाग किसी भी भारतीय भाषा का देवनागरी लिपि में लिखा तार स्वीकार करता है। इस सेवा का प्रारम्भ १ जून १९४९ को सिर्फ पांच मार्गों पर हुआ था।

इस सेवा का विस्तार निरंतर होता जा रहा है। अब यह सेवा प्रायः सभी संघों में उपलब्ध है। दिसंबर १९७३ के अंत तक कुल १०३५० तारघर हैं। इनमें से लगभग ६००० तारघरों में देवनागरी तार भेजने और ग्रहण करने का प्रयत्न है। १९४९-५० में देवनागरी तार का स्वरूप २/७० तारों बुकिंग हुई थी जबकि १९७२-७३ में यह संख्या १११२५६ तक पहुँच चुकी थी।

डाक-तार विभाग सभी तारघरों में शांति में भी देवनागरी तार सेवा उपलब्ध

कराना चाहता है। इस माग में सबसे बड़ी बाधा देवनागरी में शिक्षित टेलीग्राफिस्टों की कमी रही है। विभागीय टेलीग्राफिस्ट शीघ्र से शीघ्र देवनागरी का प्रशिक्षण प्राप्त कर लें इसके लिए अनेक प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। देवनागरी मोस का प्रशिक्षण प्राप्त करने पर टेलीग्राफिस्टों का एक स्थायी बतन बढ़ी जाती है। इसी प्रकार, देवनागरी टेलीप्रिंटर की परीक्षा पास कर लेने पर एक स्थायी बतन—बढ़ी जाती है। सन १९६३-६४ में देवनागरी मोस में प्रशिक्षित टेलीग्राफिस्टों की संख्या ४२४५ थी, १९७१-७२ में यह संख्या ८८५५ हो गई।

हिन्दी सलाहकार समिति

विभाग में हिन्दी के प्रयोग का बढावा देने के लिए एक हिन्दी सलाहकार समिति गठित हुई है। समिति की पहली बैठक ३० अक्तूबर १९७३ को तत्कालीन सचिव मंत्री श्री हमवतीनन्दन बहुगुणा की अध्यक्षता में हुई थी।

अन्तर्राष्ट्रीय डाक-टिकट प्रदर्शनी इंडिपेक्स-७३

भारत में दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी अर्थात् इंडिपेक्स १४ नवम्बर से २३ नवम्बर १९७३ तक नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

पहली अन्तर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी १९५४ में भारत के पहले डाक टिकट जारी करने की शताब्दी के अवसर पर हुई थी। उसके बाद से डाक टिकट संपूर्ण से शौक लगातार बढ़ता रहा है और इस शौक ने देश में एक गौरवपूर्ण स्थान बना लिया है।

इस रवि की और प्रोत्साहित करने तथा देश विदेश में डाक टिकट संप्रहर्षिताओं को व्यापक अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से इस अन्तर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनी कला विज्ञान और उद्योग की कृतियाँ का सुनियोजित प्रदर्शन थी जिससे कि जनता कि रचि बढाई जा सके व्यापार का प्रोत्साहन दिया जा सके और प्रगति या किन्ही अन्य गतिविधियों की व्यापक जानकारी प्रदान की जा सक।

शुरू की प्रदर्शनियाँ ललित कला का प्रदर्शनियाँ थी। १९६२ में पेरिस की रायल अकादमी ऑफ पेंटिंग एण्ड स्केपचर ने पहली कला प्रदर्शनी आयोजित की।

उसके बाद से बहुत-सी कला प्रदर्शनियाँ हुई हैं लेकिन पुरानी प्रदर्शनियाँ में से एक मई १८५१ का हाइड पाक के क्रिस्टल पलेट में रायल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स द्वारा आयोजित प्रदर्शनी से नये युग का सूत्रपात हुआ। इसके तुरंत बाद १८५३ में 'ययाक सिटी' में क्रिस्टल पलेट का प्रदर्शनी हुई।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ के बाद व्यापार बढाने के उद्देश्य से व्यापार भले आयोजित किए जाने लगे। जहाँ प्रदर्शनियाँ की कोई निश्चित अवधि नहीं होती आमतौर पर व्यापार भले एक निश्चित अवधि के बाद उसी स्थान पर और बड़े बड़े की मौसम में लगाए जाते हैं। हाल ही में एक बढते बढा व्यापार भला तीसरा एशियाई अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भला नई दिल्ली में हुआ था।

डाक टिकट के क्षेत्र में महत्त्वपूर्णता का कदम और महत्त्वय बढ जानने से निजी महत्त्वपूर्णता का डाक टिकट महत्त्व का प्रदर्शन करने की आवश्यकता अनुभव की गई और इन तरह डाक टिकट प्रदर्शनियाँ का शुभप्रारंभ हुआ। शुरू में ये प्रदर्शनियाँ संस्थाओं और

कनबो के सदस्यो तक सीमित थी लेकिन जल्दी ही ये राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जान लगी ।

पहली डाक टिकट जारी करने की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर पहली अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी लंदन में १८६० में हुई । १८६७ में लंदन में एक और डाक टिकट प्रदर्शनी हुई और २२ वर्ष बाद जल्दी ही १९०० में पेरिस १९०१ में हेंग १८०६ में लंदन, १९०६ में एमस्टर्डम १९१० में बर्न १९११ में वियना और १९१२ में लंदन में प्रदर्शनिया हुई । अमेरिका में पहली अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी १९१३ में हुई ।

आजकल प्रतिवर्ष तीन चार अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनिया किसी न किसी देश में होती रहती हैं । इसी वर्ष अंतर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनिया म्यनिख और पोलड में हुई हैं और इंडिपेक्स ७३ नई दिल्ली में ।

इंडिपेक्स ७३ के आयोजन का कार्य १९७१ में शुरू हुआ था । विख्यात डाक टिकट संग्रहकर्ताओं को विभिन्न देशों में इंडिपेक्स ७३ के कमिश्नरों का काम मापा गया । उनके अमूल्य सहायक के शानदार परिणाम निकले और प्रदर्शनी में १२५ देशों ने अपने सरकारों सहित प्रदर्शित किये । ऐंसे बहुत से संग्रह इस प्रदर्शनी में रखे गए जिन्हें स्वर्ण पदक मिल चुके हैं । इनमें इतानबी संग्रहकर्ता मिलानी के इंग बी पास्ती का भारत का डाक टिकटों का संग्रह भी प्रदर्शित किया गया । ईरान के श्री समद खुशींद ने ईरान के डाक टिकट प्रदर्शनी में रखे । डगलैट के डाक्टर रिडेल और उनकी पत्नी ने चीन की विदेशी डाक सेवा का इतिहास प्रस्तुत किया । स्पेन के श्री जी० रायन हगरी के डाक टिकटों का संग्रह इस प्रदर्शनी में देखने योग्य था ।

दगलैट का महारानी ने इंडिपेक्स ७३ के अघिकारियों का यह आमंत्रण सहित स्वीकार कर लिया कि उनके डाक टिकटों का शाही संग्रह के विद्यालय भारत भाग की कुछ अंशक इस प्रदर्शनी में पेश की जाए । यह एक मुख्य आकर्षण था । रायल फिलेटेलिक सोसायटी लंदन, क्लेक्टस क्लब आफ यूनाइटेड और अन्य बहुत से संग्रहालयों ने भी अपने बहुमूल्य संग्रह इस प्रदर्शनी में भेजे ।

भारत के डाक-तार विभाग ने भी इस प्रदर्शनी में अपने संग्रह की कुछ अमूल्य निधि प्रदर्शनी के लिए रखी इनमें से कुछ डाक टिकटें ऐसी थीं जो इसमें पहल कभी नहीं दिखाई गयी थी । इन डाक टिकटों में स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के बाद की डाक टिकटों की रूपरेखा उनके रंग का परीक्षण प्रूप और जारी की गई टिकटों था ।

Punjab's March Towards Prosperity

The people of Punjab have taken long strides on road to progress in different fields. Some of our achievements are —

- * 640 kms of Guru Gobind Singh Marg completed
- * 6626 villages electrified
- * All villages will be linked by road by March 1974
- * Over 26 40 lakh tonnes wheat contributed in Central Pool so far
- * Over 91 percent children of age group 6-11 enrolled for primary education
- * 1 84 000 landless rural people given free house sites
- * Over 2 000 ordinary tube wells and 714 deep tube wells sunk
- * 1 000 medium and small industrial units registered
- * Rural water supply schemes for 3 100 villages being pushed vigorously
- * Ropar District covered by Medical Manthem Scheme Programme is being launched in other districts also

We pledge ourselves to serve the country with greater zeal and enthusiasm

Inserted by

**Director, Information & Publicity
Punjab**

Many People Say

We Build Statues of Snow
And Weep to See Them Melt

But, We at Steelsworth

'We Build Statues of Steel
So There is no Fortuity for Weeping
to See Them Melt

We are Manufacturers of —

Pressed Steel Tanks

Oil Tankers

Tubular Electric Poles

Fluid Storage Tanks

Structures for Industrial
Buildings, Bridges Etc

Steel Doors & Windows
Trailers

Tubular Structure

Water Treatment Plant etc



Steelsworth Pvt. Limited

G S ROAD GAUHATI 5 (ASSAM)

Phone 5321 5322 & 4896

Telex STEEL GH 2 0

Cable STEELWORTH

**For All your enquiries
of
Coal & Coke**



Please contact —

M/S. Gupta & Company

**P 774A Block P
New Alipur**

CALCUTTA-700053

Phones 45 8106 45 9884

Grams SUKOLAGENT

With Best Compliments from

MACFARLANE PAINTS

18 Radhanath Chowdhury Road
Calcutta 15

Makers of

VILAC & VALA Paints
since 1919

Branches at **BOMBAY**
&
DELHI

Agents for South India
M/S BINNY LIMITED
MADRAS

SAVE HALF THE COOKING
TIME EVERYDAY

FOR MARKED QUALITY

buy

SOHNAMARKFED
DEHYDRATED VEGETABLES

For Instant Cooking

dehydrated onion slices/powder

dehydrated potato chips/cubes

dehydrated peas * dehydrated bhindi

dehydrated mustard spinach (Saag)

dehydrated chillies & powdered spices

MARKFED CANNERIES

JULLUNDUR CITY (INDIA) Post Box 122

S L KAPUR IAS
ADMINISTRATOR

A S POONI IAS
MANAGING DIRECTOR

**THE PUNJAB STATE COOPERATIVE SUPPLY
AND MARKETING FEDERATION LIMITED**

Post Box 67 Sector 17 E CHANDIGARH

SO BIG! SO SMALL!



We mean Big
business yet we are
small enough to
reach the
doorsteps of village
agriculturists
co operative banks
serve the urban and
rural population
alike through
a network of
over 1000 offices
in the state



**THE MAHARASHTRA STATE
CO-OPERATIVE BANK LTD**

9 Bakehouse lane fort Bombay-1

UJWALA 2 70

With the Compliments of

ARJAN DASS & SONS

135 Girish Road
P O Belurmah

HOWRAH

समाज-कल्याण

भारत में अनवरत सत्रह वर्षों तक विदेशी शासन तान क कारण समाज क प्रथम वर्ग की समान उत्पत्ति की घोर विवेक ध्यान न्ना दिया गया । पिछड़े वर्गों विशपकर अनु सूचित जनजाति एव आदिम जातिया र कल्याण क लिय ठास कदम उठाने, गराव विकलाग और अमहाय व्यक्तिया क जीवन निवाह की व्यवस्था की याचना बनाने समाज म व्याप्त कुरीतिया को दूर कर सामाजिक सुरक्षा क लिये जनता म जागान उत्पन्न करने की दृष्टि म भारत सरकार ने समाज कल्याण विभाग का गठन किया । १९६८ म सामाजिक समाज कल्याण पिछड़ा वर्ग कल्याण तथा श्रमिक कल्याण आदि क लिए जिम सामाजिक सुरक्षा विभाग की स्थापना का निश्चय किया गया था उमका नाम वरन्तर समाज कल्याण विभाग रखा गया और महिलाओं बालका विकलागा तथा गरीब व्यक्तिया सम्ब धी जिम्मेदारिया भी उसे सौंपी गयी । १९६६ ई० म श्रमिक कल्याण को श्रम और राजगार मन्त्रालय का स्थानांतरित कर दिया गया । इस विभाग ने गन वर्षों म समाज कल्याण क लिए प्रगसनीय काय किये ह ।

समाज कल्याण के स्वयंसेवी संगठन

समाज कल्याण के लिये काम करने वाली विभिन्न गर सरकारी संस्थाओं को भी भारत सरकार अनुदान देकर प्रात्साहित करती है । वर्ष १९७१-७२ म भारत सरकार न इन संस्थाओं का लगभग २४८० लाख रुपये अनुदान दिया । इनम हरिजन सेवक सघ दिल्ली भारतीय दलित लीग इश्वरशरण आश्रम दलाहाबाद भारतीय आदिम जाति सेवक सघ, नई दिल्ली सर्वे टम आफ इण्डिया सासाइटी पूना भारतीय रेडक्रास सामाइटी नई दिल्ली अखिल भारतीय बरबड वनामिस फरेंजन दिल्ली आश्र प्रवेश गार्मि जाति सेवक सघ रामकृष्ण मिशन आश्रम के विभिन्न प्रदेश म स्थित केन्द्र हिन्दू स्वापस सेवक समाज नई दिल्ली भारतीय घुमंतुजन (खानाप्रदाश) सेवक सघ दिल्ली शैक्षणिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण मन्त्र धी राष्ट्रीय परिषद नई दिल्ली आदि प्रमुख है ।

पहला एशियाई सम्मेलन

अंतर्राष्ट्रीय समाज कल्याण सम्मेलन तथा समाज कल्याण मंत्रिया का प्रथम एशियाई सम्मेलन १९७० म फिनिपीन की राजधानी मनोना म हुआ । इसम विश्व के प्राय सभी देशा क समान कल्याण मंत्रिया ने भाग लिया । इस सम्मेलन म विश्व के विभिन्न देशा म चल रहे समाज कल्याण के कार्यक्रमों तथा विभिन्न राष्ट्रीय अनुभवों

का विश्लेषण हुआ जिससे समाज कल्याण तथा भावा वापसना का निर्धारण करा न गहाया मिली ।

पिछडे वर्गों के लिए कल्याण कायक्रम

देश की कुल जनसंख्या में १/५ से अधिक जागण कनुगुनित जातिया तथा कनुसूचित आदि जातिया की है । इनके अतिरिक्त गानाकण आदि कण ग गानाकण तथा कनसूचित जातिया भी हैं । पिछडे वर्ग क सामाजिक शक्ति तथा आर्थिक शक्ति का बढ़ाने के लिए विशेष योजनाएं तालू की गयी हैं । इनका उद्देश्य विभिन्न शक्ति का सामाजिक कार्यक्रमों की सहायता करना है । संविधान क अनुच्छेद ४६ में निम्न है कि राज्य जनता के दुर्बलतर विभागों विशेषतया कनुसूचित जातिया तथा कनुगुनित आदि जातिया क शक्ति तथा अर्थ सम्बन्धी हिता की विशेष सावधानी से उपनि करेगा तथा सामाजिक आर्थिक तथा सर प्रकारों के शोषण से उनका संरक्षण करेगा । कनुसूचित वर्गों की योजना के आरम्भ तर केंद्र और राज्यो ने पिछडा वर्ग कल्याण क लिए ३७५ ०० करोड रुपये व्यय किए ।

योजना आयोग ने पिछडा वर्ग कल्याण के लिये प्रथम पंचवर्षीय योजना में २६ ०० करोड रुपये दूसरी योजना में ७८ ०० करोड रुपये तीसरी योजना में १०२ ०० करोड रुपये खर्च किए । चतुर्थ योजना में इस कार्य क लिये १८२ करोड रुपये की व्यवस्था की है । इससे अतिरिक्त गर-योजना बजट में ३५ करोड रुपये की व्यवस्था थी । राज्य सरकारें अलग से पिछडा वर्ग कल्याण के लिये अपने गर योजना बजटों में लगभग ३० करोड रुपये वार्षिक की व्यवस्था रखती हैं । चौथी पंचवर्षीय योजना में भी इसे जारी रखन का सुचाव है ।

अनुसूचित जातियों के लोगो व कवीलो की सख्या

	अनुसूचित जातियों के लोग	अनुसूचित कवीलो
भारत	६ ४५ ११ ११४	२ ६८ ८३ ४७०
राज्य		
आंध्र प्रदेश	४६ ७३ ६१६	१३ २४ ३६८
असम	६ ३१ ७५६	२० ६८ ३६४
बिहार	६५ ३६ ४७५	४२ ०४ ७७०
गुजरात	१२ ६७ २५५	२७ ५४ ४४६
जम्मू कश्मीर	२ ६८ ५३०	—
केरल	१४ २२ ०५७	२ ०७ ६६६
मध्य प्रदेश	४२ ५३ ०२४	६६ ७८ ४१०
तमिलनाडु	६० ७२ ५३६	२ ५३ ६४६
महाराष्ट्र	२२ २६ ६१४	२३ ६७ १५६
कर्नाटक	३१ १७ ३३२	१ ६२ ०६६
नागालड	१६२	३ ४३ ६६७
उड़ीसा	२७ ६३ ८५८	४२ २३ ७५७
पंजाब	८१ ३६ १०६	१४,१३२
राजस्थान	३३ ५६ ६४०	२३ ०६ ४४४

उत्तर प्रदेश	१५५ १७ २४५	—
प० बंगाल	६६,५०,७२६	२०,६३ ८८३
संघीय प्रदेश व अन्य क्षेत्र		
अटमान व निकाबार द्वीप	—	१४ ११२
दादरा व नगर हवेली	६८५	५१ २६१
दिल्ली	३,४१ ५५५	—
हिमाचल प्रदेश	३ ६६ ६१६	१ ०८ १६४
लक्षद्वीप मिनीकाय व अमनदीवी द्वीपसमूह	—	२३ ३६१
मणिपुर	१३ ३७६	२ ४८ ०६४
नेफा	—	५ ०४२
पाडिचेरी	५६ ८६१	—
त्रिपुरा	१ १६ ७२५	३ ६० ०७०

यह वर्गीकरण जम और जाति व आधार पर किया गया है ।

भंगियो की स्थिति में सुधार

इस परियोजना का उद्देश्य इन धंधा का नगरपालिकाओं के अधीन लिया जाना है तथा यत्नीकरण जारी करना है ताकि विपदा को मिर पर ढाने की प्रथा का धीरे धीरे समाप्त किया जाए और भंगिया के सामाजिक स्तर को ऊंचा उठाया जाये । जिन नगरपालिकाओं की आबादी १ लाख से अधिक है उन्हें इस योजना पर हुए खर्च का ५० प्रतिशत तथा जिन नगरपालिकाओं की आबादी १ लाख से कम है उन्हें खर्च का ७५ प्रतिशत सहायता के रूप में दिया जाता है । चतुर्थ योजना में इस पर ३०० ०० लाख रुपये व्यय करने की व्यवस्था की गई है । गांधी जयंती २ अक्टूबर १९७२ से अनेक स्थानों पर मिर पर मला ढाने की प्रथा समाप्त करने की घोषणा की गई ।

अनुसूचित खानाबदोष आदिम जातियों का कल्याण

इन वर्गों के कल्याण की परियोजनाएं अब भी केंद्र द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम में शामिल हैं । इन विमुक्त जातियों के पुनर्वास तथा उनके बच्चा का अपराधी सगति में दूर करने के लिए आश्रम स्कूल तथा संस्कार केंद्र खोले गये हैं ताकि उन्हें परम्परागत समाज विरोधी प्रवृत्तियों से बचाया जा सके । शिक्षा के साथ कृषि लघु मिर्चाई पशुपालन मुर्गीपालन कुत्तर उद्योग आवास आदि की व्यवस्था के लिए समुचित सहयोग प्रदान करना भी इस योजना के अंतर्गत है । चतुर्थ योजना में इन जातियों के कल्याण हेतु ४५० ०० लाख रुपये का नियतन था । वर्ष १९७२-७३ के लिए ६८ ०१ लाख रुपये की व्यवस्था है ।

नौकरियाँ सरकारी नौकरियाँ में भी अनुसूचित वर्ग के लिए कुछ स्थान सुरक्षित हैं । खुली प्रतिस्पर्धा के आधार पर १२-१/२ प्रतिशत रिक्त स्थान पूरे किये जाते हैं । १६-२/३ प्रतिशत रिक्त स्थान अर्ध राति से भरे जाते हैं । अनुसूचित वर्ग के लिए सुरक्षित स्थानों का लिये ही उपयुक्त विधियाँ का अनुसरण किया जाता है । यथा—ट्रिडिंग एंड मिनिस्ट्रेटिव सर्विस की प्रतिस्पर्धा परीक्षा में इस वर्ग का सफल व्यक्ति ही सुरक्षित स्थान पायेगा । यदि परीक्षा में कोई उत्तीर्ण न होगा तब ये रिक्त स्थान सामान्य वर्ग से पूरे किये जाएंगे ।

आदिवासी विकास खंड

इस अंतर्गत उन क्षेत्रों का तीव्र विकास किया जाता है जिनका अर्थ स्थाना स कुछ अंतर्गत रहा हो और परिस्थितिवश जिनकी कुछ अशक्तताएँ हैं। ये खण्ड उन क्षेत्रों में स्थापित किए गए जिनमें निम्नलिखित बात थी। कुल आबादी २५,००० आदिवासियों की कम-से कम आबादी ६६-२/३ प्रतिशत क्षेत्रफल १५०,२०० वर्गमील तथा एक सामान्य प्रशासनिक एकाई के रूप में चलाए जाने की क्षमता। तीसरी योजना में ४१५ खण्ड आरंभ किए गए। वर्ष १९७२-७३ के अंत में ५२३ आदिवासी विकास खण्ड काम कर रहे थे। कर्नाटक पश्चिम बंगाल उत्तर प्रदेश में आदिवासी विकास खण्ड नहीं हैं लेकिन इन क्षेत्रों की योजनाएँ भी आदिवासी विकास खंडा जसी हैं।

अस्पृश्यता निवारण

संविधान के अनुच्छेद १७ के अंतर्गत देश से अस्पृश्यता के निवारण की व्यवस्था है। अस्पृश्यता उन्मूलन अधिनियम १ जून १९५५ से अमल में है। इस अधिनियम के अंतर्गत इसमें उन्मूलनकर्ता को दण्ड देने की व्यवस्था है। अधिनियम के अनुसार किसी को सावजनिक स्थानों जैसे दुकानें मंदिर धर्मशालाएँ होटल आदि में जाने एवं स्कूल कालज या नौकरा में प्रवेश के लिए इस कारण से रूक नहीं किया जा सकता कि वह हरिजन वर्ग का है। इनका सामाजिक बहिष्कार दण्डनीय है।

केंद्रीय सरकार १९५४ से अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन को वित्तीय सहायता दे रही है। जनता का ध्यान इस आरंभ करने के लिए हरिजन दिवस हरिजन सप्ताह मनाए जाते हैं। इनमें सरकारी और गैर सरकारी दोनों संगठन काम कर रहे हैं। केंद्रीय सरकार द्वारा अस्पृश्यता सम्बन्धी दण्ड विधान का और भी कठोर किया जा रहा है।

सामान्य समाज कल्याण

समाज कल्याण विभाग के सामान्य समाज कल्याण प्रभाग के कार्य इस प्रकार हैं— गमकित परिवार और बाल कल्याण महिषा कल्याण शारीरिक तथा मानसिक तौर पर विकलांग व्यक्तियों का कल्याण सामाजिक संरक्षण विस्थापित व्यक्तियों का पुनर्वास धनमदान प्रशिक्षण तथा समाज कल्याण प्रशासन।

मद्य निषेध

तीसरी योजना में मद्य निषेध का स्वेच्छाप्रति समाज कल्याण अनुमोदन का रूप दिया गया। १९५७ में मद्य निषेध विषय का गृह मंत्रालय में समाज कल्याण विभाग का स्थानांतरित किया गया। दूसरी और तीसरी योजनाओं में मद्य निषेध का राष्ट्रीय नीति घोषित किया गया। भारत सरकार ने राज्य सरकारों द्वारा मद्य निषेध लागू करने पर हानि बाल राजस्व घाट का ५० प्रतिशत पूरा करने का प्रस्ताव काफी समय से रखा है। जिससे भी राज्य ने इनका उपयोग नहीं किया। भारत सरकार ने इस प्रस्ताव का पुनः दाहराया किया है और राज्य सरकारों को प्रशिक्षण हानि पूर्ण चाहता है। चौथी योजना में मद्य निषेध प्रचार के लिए १० लाख रुपये रखे गए हैं।

मद्य निषेध में प्रगति मंगराष्ट्र तथा गुजरात में पूर्ण मद्य निषेध लागू है। प्रथम के कामकाज स्थापना तथा नौगव जिला में तथा माध्य के बरतूल कटप अंतर्पुर चित्तूर

गुट्टर दृष्ट्या, ननरु गोदावरी, श्रीकाकुतम तथा विशाखापतनम जिला म भी मद्यनिषेध लागू ह । केरल और उडीमा म भी मद्यनिषेध लागू था किन्तु समाप्त कर दिया गया । अनक राज्या मे मद्यनिषेध सलाहकार मटल गठित किए गए हैं ।

अपगों को शिक्षा तथा सेवा

नेत्रहीना बहुरा विकलागा तथा मन्दमति व्यक्तिया के लिए शिक्षा प्रशिक्षण तथा पुनर्वास की व्यवस्था की जाती ह । अनुमान ह कि देश म इस प्रकार क एक कराड स अधिक अपग व्यक्ति ह । १९३१ की जनगणना क साथ एमे व्यक्तिया की भी गणना की गई थी । शिक्षा तथा स्वास्थ्य के केन्द्रीय परिषदा की सयुक्त समिति की १९५८ की भारत म ननरहीनता रिपोर्ट के अनुसार देश मे नेत्रहीना की मख्या २० लाख थी । हाल क सर्वेक्षण के अनुसार यह ४० लाख म भी अधिक हा सकती ह । बहुरे व्यक्तिया की सख्या का अनुमान १० और १६ लाख क बीच है । विकलाग व्यक्तियों की सख्या नेत्रहीना से अधिक होने का अनुमान ह । मन्दमति बच्चा की सख्या १५ से १८ लाख तक हागी ।

नेत्रहीन

नेत्रहीना क लिए इस समय दश म १२६ स्कूल तथा प्रशिक्षण केंद्र ह । इनमें व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती ह । इनम म अधिकतर सस्थाए अभिकरणा द्वारा चलायी जाती हैं पर सम्बन्धित राज्य सरकारा से उन्हें सहायता मिलती ह ।

राष्ट्रीय अंध केंद्र, देहरादून नेत्रहीना क लिए स्थापित प्रयाजनाग्रा म यह एक प्रमुख राष्ट्रीय केंद्र है । इसका उद्देश्य नेत्रहीना क लिए सेवाए उपलब्ध कराना ह ।

बयस्क नेत्रहीनों के लिए प्रशिक्षण केंद्र केंद्र सरकार की ओर स दूसरी स्थापना जनवरी १९५० म हुई । यह नेत्रहीना क लिए दश की सबसे बड़ी सस्था है । इसम १५० पुरुष तथा ५५ स्त्रिया क प्रशिक्षण की व्यवस्था ह । कुटीर उद्योग तथा सरल अभियांत्रिक व्यवसाया म प्रशिक्षण की व्यवस्था ह । इसके साथ ब्रेल लिपि टनन तथा मगीत म प्रशिक्षण दिया जाता ह । प्रशिक्षणार्थिया क लिए भाजन निवाम तथा शिक्षा मुफ्त ह । केंद्र न प्रशिक्षित नेत्रहीन व्यक्तिया के लिए राजगार सम्बन्धा सर्वेक्षण करन के भी प्रयत्न किए । ऋषिकेश म हिन्दुस्तान एण्टीवायाटिक्स म नेत्रहीना के लिए राजगार की सभावनाए है । गत कुछ वर्षों म केंद्र म हल्का अभियांत्रिकी प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया जा रहा ह ।

केंद्रीय ब्रेल प्रेस देहरादून इसकी स्थापना १९५१ मे हुई । इसम सभी मुख्य भारतीय भाषाओं मे विशयकर हिन्दी में ब्रेल लिपि में साहित्य तयार किया जाता है । एक हिन्दी व्रमासिक पत्रिका भी यहां स प्रकाशित की जाती है । प्रेम म तयार साहित्य नेत्रहीना की सम्याग्रा को रियायता मूल्य पर दिया जाता है ।

ब्रेल साधनों की निर्माणशाला यह १९५८ म स्थापित हुई । यह नेत्रहीना का शिक्षा क लिए आवश्यक साधन तयार करन क लिए है । सयुक्त राष्ट्र निःशुल्क वापस क अग्रान साथे एक विशेषन की सहायता स इसका विकास किया जाता रहा ह । यहां पर निम्नित उपकरणों का एगिया तथा अकीका क अनक दंगा में इस थप नियान किया गया ।

नेत्रहीन बालका का आन्तर स्कूल यह १९५६ म स्त्री म खारा गया । यह माध्यमिक आवागाम स्कूल ह । देश क सभी भागा से नेत्रहीन बालक इसम लिए जात है ।

शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। बच्चा में तकनीकी काम की रुचि बढ़ाने के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम शुरू किया गया है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय यह १९५१ में दिल्ली में स्थापित हुआ। सारे देश में नेत्रहीना का ब्रह्म साहित्य मुफ्त पढ़ने का देता है। प्रतिमास औसतन १३५० पुस्तकें पढ़ने को दी गई। १९७२-७३ में इसमें ३६ सौ पुस्तकों की बढ़ि हुई।

छात्रवृत्तियाँ यह योजना १९५२-५३ में शुरू हुई। इससे अधीन १६ से ३० साल तक के नेत्रहीन छात्रों को ऊँची शिक्षा या तकनीकी या व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। १९७२-७३ में १९२ नेत्रहीन छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दी गईं। विशेष काम दिलाऊँ दफ्तरों द्वारा ५७ अर्थ-युक्तियों को काम दिलाया गया।

बहरे

देश में इस समय बहरे के लिए ७१ संस्थाएँ हैं। इनमें से अधिकांश स्वच्छिन्न अभि-करण चलाते हैं जिन्हें कुछ सरकारी सहायता मिलती है। अधिकांश स्कूलों में बहरे को प्रारम्भिक शिक्षा तथा कपड़ा सीने व बुना कालीन बनाने लोहारगिरी छपाई और जिल्द-साजी आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

व्यस्क बहरे के लिए प्रशिक्षण केन्द्र, हैदराबाद इस केन्द्र में ६० प्रशिक्षार्थियों के लिए स्थान है। १६ साल से २५ साल की आयु के बहरे लड़कों को इजीनियरिंग व्यवसाय में प्रशिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष ५१ प्रशिक्षार्थियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा किया।

विकलांग

अत्यंत विकलांग व्यक्तियों के लिए अभी देश में २५ विशेष संस्थाएँ हैं। इनमें प्रारम्भिक शिक्षा व साथ भौतिक चिकित्सा और व्यावसायिक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था है। इनमें से अधिकांश संस्थाओं को राज्य सरकारों से सहायता मिलती है। विकलांगों के लिए छात्रवृत्तियाँ देने की भी व्यवस्था है। इसके अधीन १२ से ३० साल तक की आयु के विकलांग छात्रों का ७वीं कक्षा के बाद साधारण शिक्षा तथा तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। १९७२-७३ में १२१७ विकलांगों को छात्रवृत्ति दी गई। ७१३ विकलांगों का काम दिया गया।

वैश्यावृत्ति उन्मूलन

अल्पवयस्क महिलाओं का वैश्यावृत्ति आदि से बचाने के लिए महिला तथा वाणिज्यिक जननिक व्यापार समन अधिनियम १९५६ समन राधा तथा सध कक्षा में लागू है। इस अधिनियम के अनुसार दत्त महिलाओं के लिए रक्षा सदन की व्यवस्था है।

मिक्षावृत्ति उन्मूलन

देश में बिना काम किए मांग कर खान की बर्तनी हुई प्रवृत्ति पर नियंत्रण के लिए विनाय अधिनियम बनाया गया है। बिहार गुजरात असम आंध्र तमिलनाडु वरस महा राष्ट्र पश्चिम बंगाल जम्मू-कश्मीर में भिक्षावृत्ति उन्मूलन कानून लागू हैं। दिल्ली में भी भिक्षावृत्ति विरोधी उपाय लागू हैं। मध्य प्रदेश और राजस्थान में इस संबंध में कानून उठाया गया है। भिक्षावृत्ति के लिए बच्चा के अन्वेषण की राश्याम के लिए भारतीय दंड संहिता अधिनियम १९५८ के अनुसार कठ दण्ड का व्यवस्था है।

वाल सुधार केन्द्र

पुनर्गति व कारण अपराधा की ओर प्रवृत्त बालका व सुधार के लिए देश में लगभग १६० बाल अपराधा सुधारण केंद्र कार्यरत हैं। बाल अधिनियम के अन्तर्गत बालका सबंध में ८३ क्लॉन्गों ३ क्लॉन्ग बोर्ड ११३ अपराधी सन्तान १२४ बाल सन्तान तथा स्कुला की व्यवस्था है।

जेलों में कल्याण कार्य

कलिया के पुनर्गम में सहायता करने तथा कलिया व उनके परिवारों को बीच मपक स्थापित करके व उद्देश्य में जेलों में कल्याण अधिकारी नियुक्त किये गये हैं। इस समय ५४ कल्याण अधिकारियों नियुक्त हैं। ये कलिया की रिहाई व धारा उन्हें रोजगार पर लगाने के विषय में योजनाएँ बनाते हैं तथा सुझाव देते हैं। कलिया के सुधार के लिए करने महाराष्ट्र बर्नाटव एव कलिया में राज्य सलाहकार मंडल प्रस्थापित किये गये हैं।

केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद्

इसका मुख्य काम समाज कल्याण की गतिविधियों का विस्तार तथा विकास है। समाज-कल्याण की समस्याओं की आवश्यकता का सर्वेक्षण सहायक अभिज्ञानों के कार्यक्रमों का मूल्यांकन, केन्द्रीय सरकार तथा प्रदेश सरकारों और सहायता प्राप्त समाज कल्याण की गतिविधियों का समन्वय स्वीच्छित्क सन्ध्याओं का प्रोत्साहन देना (विशेषकर जहाँ इनका अभाव हो) तथा अछूतों काय कर रही सन्ध्याओं व प्रतिष्ठानों का वित्तीय सहायता देना आदि कार्य करते हैं। वित्तीय सहायता के लिए परिषद् ने कुछ शर्तों निर्धारित की हैं। परिषद् भारत सरकार के एक विभाग की भाँति काम करती है। राज्या में प्रदेश समाज कल्याण परिषद् हैं। मिनीवाय और अमीन दीव द्वीप समूह में ये नहीं हैं। प्रदेश परिषद् के माध्यम से और सिफारिश व साथ स्वच्छित्क समाज-कल्याण सन्ध्याएँ केन्द्रीय परिषद् को अनुदान के लिए आवेदन करती हैं। १९६१ में अनुदान देने का कार्यक्रम विकेंद्रित किया गया और प्रदेश परिषद् को एक सीमा तक एव वर्षीय अनुदान देने का अधिकार दिया गया। स्वच्छित्क सन्ध्याओं को एक वर्षीय अनुदान प्रदेश सरकारों के माध्यम से तथा अन्य अनुदान सीधे दिये जाते हैं।

संगठन केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद् में सरकार के सचिव के अतिरिक्त अन्य प्रशासनिक अधिकारी प्रशासन अनुदान परियोजनाएँ आदि देखते हैं। निरीक्षण अधिकारी अनुदान प्राप्त स्वच्छित्क सन्ध्याओं के कार्य व बहीखाता की जाँच करते हैं। प्रदेश परिषद् व प्रशासनिक व्यय का आधा राज्य सरकार तथा आधा केन्द्रीय परिषद् वहन करती है।

हर ग्रामीण परियोजना में २५ से ३० गाँव तथा नगरीय २० ००० की आबादी है। परियोजनाओं के अन्तर्गत बालवाडों मात व शिशु स्वास्थ्य सेवा महिलाओं को सामाजिक शिक्षा देना व साक्षर करना वना व शिक्षा केन्द्र तथा मजदूरों की गतिविधियाँ हैं।

कल्याण प्रसार केन्द्र पहले बड़ा आरम्भ किया गया जहाँ सामुदायिक विकास केन्द्र नहीं थे। बाद में इन्हें केवल उन्हीं क्षत्रों में चयन का निष्पत्ति किया गया जहाँ सामुदायिक विकास प्रखंड हैं।

सामुदायिक विनास प्रखंडा में चर्चा रही प्रत्येक परिवारों में १० बच्चे हैं। प्रत्येक परिवारों में १०० गांव और ६०००० या ७००००० तक की आबादी है।

कल्याण विस्तार परियोजनाएँ (शहरी) इनका उद्देश्य शहर की गंगा बस्ता में बच्चाओं की योजनाओं का विस्तार करना है। इसमें अलग-अलग शिशु गृहों में बालबालिकाओं का निवास, प्रसूति के बाद परामर्श सेवा देना तथा शिशु स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना का कार्य है। भारतीय बाल-कल्याण परिषद योजना का समर्थन करती है। बच्चों के लिए १५ दिन के भ्रमणों में शिविर लगाए जाते हैं। बाल कल्याण योजना का कार्यक्रमों का प्रशिक्षण की व्यवस्था है। कार्यक्रमों के लिए मासिक साहित्य है। परिषद की दो पत्रिकाएँ भी हैं—'सामाजिक कल्याण' तथा 'समाज कल्याण'। इसके विभागात्मक सभी क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कर प्रत्येक परिषद कार्यक्रमों तक पहुंचाए जाते हैं।

भारतीय बाल कल्याण परिषद यह नई दिल्ली में है तथा स्वच्छासवी संस्था है। इसकी शाखाएँ लगभग सभी प्रदेशों में हैं जिन्हें राज्य बाल कल्याण परिषद कहा जाता है। यह संस्था जनेवा स्थित अंतर्राष्ट्रीय बाल कल्याण संघ से सम्बद्ध है।

परिषद के मुख्य कार्यक्रमों में बाल-सेविका प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बालिकाओं के लिए प्रवक्ता गृहों में बच्चों के अंतर्राष्ट्रीय शिविरों में भारतीय बालिकाओं के भाग लेने की व्यवस्था बाल दिवस का आयोजन विशेष साहस का कार्य करने वाले बालिकाओं की राष्ट्रीय पुरस्कार मध्य प्रदेश में आदिवासी बालिकाओं के कल्याण हेतु संस्थान विचार गोष्ठियाँ सम्मेलन। परिषद की इन कार्यों के लिए वित्तीय सहायता भी मिलती है।

बाल सेविका प्रशिक्षण योजना इस परिषद् कार्यान्वित करती है। तासरी योजना में बाल सेविकाओं के प्रशिक्षण हेतु २० प्रशिक्षण केंद्रों के लिए ३० लाख रुपये का व्यवस्था थी।

रात्रि विधामगह (रत्नसेरा) विभिन्न केंद्रों में २६ रात्रि विधामगह हैं। यह उन मजदूरों के लिए है जो बिना आवास के हैं।

महिला समाज-कल्याण

पाठ्यक्रम इसके अंतर्गत १८ वर्ष से ३० वर्ष की आयु तक की साक्षर महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे माध्यमिक या मटिक स्तर तक शिक्षा पाकर नर्स या दाई बन सकें और अपनी राजी रोटी कमा सकें।

सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम इसका उद्देश्य स्त्रियों को कार्य और आजीविका की सुविधाएँ प्राप्त कराना है। इसके लिये केंद्रीय समाज-कल्याण परिषद कार्यालय और उद्योग मंत्रालय तथा उनके अधीनस्थ संस्थाओं और औद्योगिक परिषदों की तकनीकी सहायता से उत्पादन केंद्रों की व्यवस्था करती है।

पौष्टिक आहार कार्यक्रम

समाज कल्याण विभाग वर्ष १९७०-७१ से कमजोर वर्ग के परिवारों के स्कूल-पूर्व बच्चों का पूरक पौष्टिक आहार प्रदान करने के लिए दो योजनाएँ चला रहा है। इनमें से एक विशेष कार्यक्रम तो आदिवासी क्षेत्रों तथा शहरों की गरीबों की बस्तियों में राज्य सरकारों के माध्यम से चलाया जा रहा है और दूसरा कार्यक्रम स्वच्छिक समाज कल्याण संस्थाओं द्वारा चलाए जाने वाली बालवाडियाँ तथा दिवस देखरेख केंद्रों के माध्यम से।

भारत सरकार ने दश में पौष्टिक आहार की वृद्धि की दिशा में अनेक लघु और दीर्घकालीन उपाय अपनाये हैं। जहाँ तक पौष्टिक आहार की कमी की बात है, हमने सबसे अधिक शिकार छोटे छोटे बच्चों और गभवती स्त्रियाँ होती हैं, ये देश की आबादी का लगभग पाँचवाँ भाग अर्थात् १२ करोड़ है। इनमें से लगभग आधे तो अत्यंत गरीब परिवार के हैं तथा इनकी पौष्टिक आवश्यकताओं के लिए विशेष उपायों की आवश्यकता है।

विशेष पौष्टिक आहार कार्यक्रम हमारे देश के ससाधनों को ध्यान में रखते हुए यह सुगम नहीं कि पूरक तौर पर इतनी बड़ी संख्या में लोगों के लिए पौष्टिक आहार की व्यवस्था की जाय। प्रधानमंत्री ने ससद में बजट पेश करते हुए कहा कि आबादी के कमजोर वर्गों के लिए नये बंद उठाये जायेंगे जिसके अंतर्गत आदिवासी क्षेत्रों और बड़े शहरों की गरीब वस्तियों में ३ वर्ष से कम आयु के छोटे बच्चों के लिए पूरक पौष्टिक आहार की व्यवस्था की जायेगी। इस कार्यक्रम के लिये समाज कल्याण विभाग के बजट प्रावधान में केंद्रीय क्षेत्र की गर योजना व्यवस्था में ४ करोड़ २० लाख रखे गए। यह योजना राज्य सरकारों और सघ क्षेत्र प्रशासकों के द्वारा कार्यान्वित की जाती है और सारा व्यय भारत सरकार से सहायक अनुदान के रूप में मिलता है।

PUNJAB AGRICULTURAL UNIVERSITY PUBLICATIONS

	Rs
Package Practices for Rabi Crop—1973 74	1 00
Maize Cultivation in Punjab	1 10
Gram Cultivation	1 50
Barley Cultivation	1 00
Cultivation of Fodder Crops	1 25
Tomato Cultivation	0 50
Ginger Cultivation	0 60
Cultivation of Chilli	1 00
Cultivation of Root Crops	1 00
Kitchen Gardening	1 00
Seed Production of Veg Crops	2 00
Pear Cultivation	0 70
Cultivation of Phalsa	1 00
Mandarin Oranges	2 00
Litchi Cultivation	2 00
Citrus Cultivation	3 00
Melon Cultivation in Punjab	1 00
Hill Soil Treatment	0 50
Reclamation of Alkali Soils	0 80
Common Infectious Diseases of Poultry	1 00
Harmful Birds and Their Control	0 70
Insecticidal Toxicity and Their Treatment in Livestock	1 20
Tractor Maintenance	2 50
Tubewells	2 00
Soyabean	1 50

Kindly send your money order to

BUSINESS MANAGER
PUNJAB AGRICULTURAL UNIVERSITY
LUDHIANA

Distillers of Essential Oil & Manufacturers of Perfumes

- * Citriodora Oil
- * Vetivert Oil
- * Sandalwood Oil
- * Ginger Oil
- * Cardamom Oil
- * Lemongrass Oil
- * O det (Detergent Liquid)
- * ODODET (a perfumed cleaning agent)
- * Car shampo (for car cleaning)
- * Soap p iste (for manufacturing soaps)
- * All type of perfumery compounds

NEW PRATAP CHEMICALS INDIA

Vellody Buildings
Kallai Road
CALICUT 2
(Kerala)

Our Heartiest Deepavali Greetings

SANGLI URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD
HARBHAT ROAD SANGLI

(Estd 1935)

Authorised Capital	Rs 15 00,000
Paid up Capital	Rs 9 02 000
Reserve & other funds	Rs 17 18 327
Deposits	Rs 3 40 48 000
Advances	Rs 2 50 31 000

Banking with its Eleven branches

M N KARLEKAR
Advocate
CHAIRMAN

L Y LAGOO
B A LL B
MANAGER

लखनऊ शहर की बाढ़ से सुरक्षा

वर्ष १९६० एव १९७१ में बाढ़ की विभीषिका से सत्रस्त लखनऊ शहर को भुलाया नहीं जा सकता। भविष्य में शहर को बाढ़ के प्रकोप में बचाने लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने गामती नदी के दाना किनारे में लगभग १६ कि० मी० लम्बे बाघा को बनाने का कार्य हाथ में लिया है। इन बाघा के निमाण से कई समस्यायें भी उत्पन्न होगी—शहर के नाला की व्यवस्था अस्त-व्यस्त होना इनमें प्रमुख है।

स्वायत्त शासन अभियान विभाग बाढ़ के समय में शहर में एक्त्र वषा के तथा अय पानी का नष्टी में विस्तारण करने के लिए याजना कार्यावित कर रहा है जिस पर ६७ कराड खपा व्यय होना अनुमान है।

प्रमुख उद्देश्य

- १ नदी पर निर्मित जनकल सस्थान के बतमान इन्टेक कार्यों की सुरक्षा के कारण शहर की जल सम्पूनि व्यवस्था पर बाढ़ के पानी का कुप्रभाव नहीं पडेगा।
- २ मिम गोमती क ६ ट्रास गामती के दो एव कुक्ल वषे के दो नाला को बडे नाला से मिला लिया जायगा जिमसे एक सुव्यवस्थित डेनेज प्रणाली की व्यवस्था सभव हो सते।
- ३ जी० एच० कनाल के समाना तर बिछे हुये सीवर सुरक्षित रहेंगे और इम केनाल की अन्तिम छोर पर प्रतिवष वाटरल होने से बचाया जा सकेगा।
- ४ १८ बडे नाले जो विस्तार क्षेत्रपन के तल की ग्रहण करत हैं अन्तिम छोर पर बद कर लिये जायगे ताकि बाढ़ के समय में नदी का पानी उनसे लोटकर शहर में वापिन न आ सकें। एक्त्र जल का बाढ़ के समय में स्याई पणिग स्टेशना पर लगाय गय विशाल पपा द्वारा पप कर क गोमता में डाल दिया जायगा। इसी प्रकार ११ अय छोटे नाला का जल चलने फिरने पपा द्वारा निष्कासित किया जायगा।

स्वायत्त शासन अभियान विभाग,

(एल० एस० जी० ई० डी०) उत्तरप्रदेश लखनऊ

बहेड़ी गन्ना विकास समिति लि०

बहेड़ी (जिला बरेली) उ० प्र०

अपन २१००० स अधिक मदस्या की सेवा उनके गन्ना उत्पादन और विनय करन हेतु गत ३६ वर्षों से करती आ रही है।

उन्नतिशील गन्ना बीज, कीटनाशक दवाइयाँ, कृषियंत्र एव पूण मात्रा में उर्वरक तथा अन्य खादों सदस्यों को मुलभ करने में सदा से प्रयत्नशील है।

इसके अनिर्वित उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु अपना डिग्री कालेज गन्ना उत्पादक महाविद्यालय, बहेड़ी के नाम से खोल दिया है।

सुयोग, सुशिक्षित प्रवक्ताओं द्वारा घ० ए० प्रथम व द्वितीय वर्षों की बक्षाए अगस्त १९७३ से आरम्भ हो गई हैं।

दिनांक ८ ९७३ को माननीय श्री के० सी० पंत राज्य गृह मंत्री भारत सरकार के कर कमलों द्वारा डिग्री कालेज के भव्य भवन का शिलापान हो चुका है।

अम्बाप्रसाद

बहेड़ी महकारी गन्ना विकास समिति लि०
बहेड़ी (बरेली)

ग्राम पवा
टनम 346

पोस्ट { कार्यालय 5654 542439
फैक्ट्री 57061 53671
विभाग 56410 48196

शुभ कामनाओं सहित

केडिया वनस्पति प्रा० लि०

फैक्टरी -
19 2 226 मिरलाम टक रोड
हैदराबाद

मुख्य कार्यालय
15-2 673 विशागज
हैदराबाद-500012 [प्रा० प्र०]

टेलीफोन 64728

सगठन में शामिल है

रजिस्ट्रेशन न० 41/1966

राजस्थान खाद्य पदार्थ व्यापार सघ

(राजस्थान खाद्यान व्यापारियों की एकमात्र संस्था)

नई ब्रनाज मंड़ी चादपेल बाजार

जयपुर

*

अध्यक्ष

जम्बूकुमार जैन

सूत्री

राधेश्याम रावत

सहसूत्री

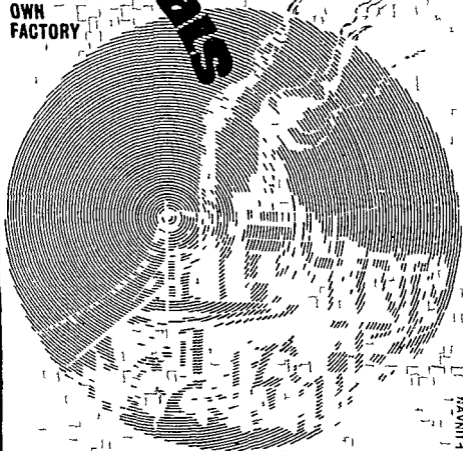
गोरधनदास सोनी

THE SMOKE
THAT

SPIRES

COULD BE
FROM YOUR
OWN
FACTORY

GIC
WOULD DO IT
FOR YOU



MAVNIIT-72



**GUJARAT INDUSTRIAL INVESTMENT
CORPORATION LTD**

NATRAJ CHAMBERS
ASHRAM ROAD AHMEDABAD 9

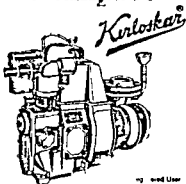


You can easily take this **LKA Pumpset** wherever you have water

- Light weight
- Two persons can easily carry it on base frame
- One can easily move it on trolley
- Small in size, big in performance drives a 3' X 3 pump
- Easy to start anywhere any time in any weather
- It can pump 72 000 litres per hour

Contact your nearest **KIRLOSKAR** distributor today for full details

KIRLOSKAR OIL ENGINES LIMITED,
13 LAXMANRAO KIRLOSKAR ROAD KIRKEE PODNA 411003 (INDIA)



10 and 12 HP
LKA Engine Ltd. Patent 5

PRATIDHA, 232A, ENG

सिंचाई और बिजली

हमने अपनी पंचवर्षीय योजनाओं में जिन आर्थिक विकास की कल्पना की है, वह इस बात पर निर्भर है कि हम अपने कृषि उत्पादन में खाद्यान्ना और वाणिज्यिक फसला दोनों में निरन्तर वृद्धि करें। केवल यही महत्व की बात नहीं है कि खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त की जाये अपितु यह बात भी है कि कृषि उत्पादों के निर्यात से अधिकाधिक विदेशी मुद्रा अर्जन की जाये। सिंचाई परियोजनाएँ ग्रामीण जनता और प्रशिक्षित तकनीकी व्यक्तियों को लाभदायक रोजगार देने के लिए भी अवसर प्रदान करती हैं।

जलस्रोत भारत का सनही जनस्रोत १६५० लाख हैक्टेयर है। इसमें से ५६० लाख हैक्टेयर पानी का उपयोग सिंचाई के लिए होना है। देश की १६२५ लाख हैक्टेयर कृषि भूमि में ६०० लाख हैक्टेयर भूमि को ही इस समय सिंचाई का लाभ प्राप्त है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के आरम्भ से जिन ५७६ बहुत एवं मध्यम सिंचाई परियोजनाओं को हाथ में ले लिया गया है उनमें से ३६३ परियोजनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं। कुछ निमाणाधीन परियोजनाओं से भी आंशिक लाभ प्राप्त होने लगे हैं। प्रथम योजना के आरम्भ से लेकर अब तक बहुत और मध्यम सिंचाई परियोजनाओं में १०८ लाख हैक्टेयर की अतिरिक्त सिंचाई शक्यता प्राप्त कर ली गई है। इस प्रकार पिछले २० वर्षों में बहुत और मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के अंतर्गत यह शक्यता दो गुनी हो गई है। हाथ में ली गई परियोजनाओं के पूर्ण हो जाने में ८८ लाख हैक्टेयर सिंचाई शक्यता और प्राप्त हो जायेगी।

योजनाओं के अंतर्गत मध्यम एवं बहुत सिंचाई योजनाओं पर व्यय प्राप्त सिंचाई क्षमता एवं उपयोगिता की प्रगति इस प्रकार है—

के अन्त तक	व्यय (करोड़ रुपया में)	कुल क्षेत्र शक्यता	(१० लाख हैक्टेयर) समुपयोजना
प्रथम योजना	३००	२६	१३
द्वितीय योजना	३८०	४६	३४
तृतीय योजना	५७६	६६	५५
१९६६-६७	१३४	७४	६१
१९६७-६८	१३०	८८	६८
१९६८-६९	१६३	८५	७१
१९६९-७०	१८०	९०	७५
१९७०-७१	२००	९४	७९
१९७१-७२	२४७	१००	८४
जाड़	२३१२		

१९७१-८१ की दशाब्दी के समाप्त होने पर बढ़ना हुई जागृत्या की ग्राह्यता और ग्राम्य कृषि उपजा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बृहत् तथा मध्यम सिंचाई परियोजनाओं से सिंचाई की सुविधाओं को बढ़ाना पड़गा और गतिविधि इजीनियरी पहलुओं और पलायन के कारण एक दीर्घकालीन भविष्यप्रभावी योजना की आवश्यकता होगी ताकि विस्तृत अनुसंधानों के लिए और परियोजना की सामयिक ग्याह्यता के लिए अधिकतम कायदाही यह सुनिश्चित करने के लिए की जा सके कि यह आवश्यकतानुसार पूरी की जायें। तदनुसार १९७१-८१ की अवधि के लिए एक दशाब्दी योजना तयार की गई है। यह योजना इस आधार पर तयार की गई कि जनसंख्या दशाब्दी के अंत तक लगभग ६५० मिलियन हो जायगी और ५५ मिलियन मेट्रिक टन की अतिरिक्त ग्राह्यता आवश्यकताएं उत्पन्न हो जाएगी। इसमें म बीजा की मुश्किलें हुई किस्मा, गमुल्लत कृषि पद्धतियां प्राप्ति में २६ मिलियन मेट्रिक टन की प्राप्ति होने की सम्भावना है। १९७१-७४ की अवधि में मिचिन क्षेत्रों के लक्ष्यानुसार विस्तार से ६ मिलियन मेट्रिक टन की सम्भावना है। अनुमान है कि शेष २० मिलियन मेट्रिक टन में से १२ मिलियन मेट्रिक टन की उपज वृद्ध और मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के अंतर्गत उत्पन्न अतिरिक्त सिंचाई सुविधाओं में प्राप्त हो जायगी। इनके लिए लगभग ८ मिलियन हेक्टेयर (२० मिलियन एकड़) अतिरिक्त मिचिन क्षेत्रों की आवश्यकता है। इनका क्षेत्र और बढ़ाने के लिए २२५० करोड़ रुपये व्यय करने पड़गा। जिन स्त्रोतों को अनुसंधान करके इस उद्देश्य के लिए चुन लिया गया है उनकी सूची तयार कर ली गई है।

विद्युत खपत विद्युत की प्रति व्यक्ति खपत किसी भी राष्ट्र की प्रगति और वहां के लोगो के रहने सहने के स्तर के लिये एक सामान्य मानक मानी जाती है। कृषि और उद्योग का द्रुत विकास पर्याप्त और विश्वमनीय विद्युत सम्भरण पर निर्भर होता है। इन लिये अर्थ-व्यवस्था के सभी सक्टरों में विद्युत की मांगा को पूरा करने के काम का सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। गत दो दशकों में विद्युत विकास में बहुत तरक्की हुई है। दश में कुल प्रतिष्ठापित विद्युत जनन क्षमता १९५०-५१ के अंत में केवल २३ मिलियन किलोवाट ही थी। दिसम्बर १९७३ तक यह बढ़कर १७५ मिलियन किलोवाट हो गई है। १९५०-५१ में विद्युत की प्रति व्यक्ति खपत १८ यूनिट थी जो कि १९७२-७३ में बढ़कर ६६ यूनिट हो गई। चतुर्थ योजना में २३ मिलियन किलोवाट के लक्ष्य को प्राप्त करने की परिकल्पना की गई है। इसमें पुराने और अप्रचलित सयंत्रों की ०.४ मिलियन किलोवाट विजली को शामिल नहीं किया गया है।

चालू दशाब्दी के अंत (अर्थात् १९८०-८१) तक कम से कम २५० यूनिट के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रति व्यक्ति खपत को बढ़ाने के लिए लगातार कोशिश करते रहने की आवश्यकता है। तदनुसार विद्युत विकास के लिए एक दशाब्दी योजना तयार की गई है जिसमें १९८०-८१ के अंत तक ५२ मिलियन किलोवाट की प्रतिष्ठापित विद्युत जनन क्षमता का विकास परिकल्पित है। इस योजना का तयार करते समय देश के विभिन्न क्षेत्रों के समुचित विकास को ध्यान में रखा गया है।

विजली की मांगा को समय पर पूरा करने के लिए अतिरिक्त उत्पादन सुविधाओं का प्रबंध के लिये काम पहले ही आरम्भ करना पड़ता है। अंत १९७२-७३ की अवधि के पांच वर्षों के दौरान अतिरिक्त विद्युत जनन क्षमता के प्रतिष्ठापन के संवधन अध्ययन

किये गये हैं। इससे यह पता चलता है कि १९७६ ७७ के अंत तक १७७ मिलियन किलो वाट की अतिरिक्त विद्युत-जनन क्षमता की आवश्यकता होगी। इसमें से ८५ मिलियन किलोवाट उन स्कीमा से आनी है जिन पर इस समय काम हो रहा है और जो १९७२ ७३ से १९७६ ७७ के दौरान ५ वर्षों में चालू होन वाली परियोजनाओं से प्रत्याशित हैं। विकसित म्यला पर विस्तार के रूप में आरम्भ की जा सकने वाली स्कीमा से ५५ मिलियन किलोवाट और परिकल्पित है। शेष ३७ मिलियन किलोवाट नई उत्पादन स्कीमा से पूरा करने का प्रस्ताव है। इस कार्यक्रम के लिए अनुय योजना के शेष दो वर्षों के दौरान ५६० करोड़ रुपये और १९७४ ७५—१९७६ ७७ की अवधि के लिये १५४० करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी।

विजली का भीषण सकट

१९७० ७३ का वर्ष विजली की दृष्टि से सकट का वर्ष रहा। विजली की कमी का कारण देश के अनेक उद्योग तो ठप्प रहे ही साथ ही हरित क्रांति के भाग में भी भीषण बाधा आ खड़ी हुई।

प० बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु एवं गुजरात भारत के कुल औद्योगिक उत्पादन का ६० प्रतिशत उत्पन्न करत है। विजली की कमी से ये चार राज्य ही मुख्य रूप से प्रभावित रहे।

महाराष्ट्र में १६ प्रतिशत कमी की गई है। गुजरात को ६३६ मेगावाट की जरूरत होती है मगर उसे सप्लाई ७२५ मेगावाट की थी। इस प्रकार बहा के औद्योगिक क्षेत्र का लगभग १५० करोड़ रुपये प्रति सप्ताह का घाटा हो रहा है। प० बंगाल में १५ प्रतिशत कटौती की गई है। इस प्रकार औद्योगिक उत्पादन में लगभग १५८ प्रतिशत की गिरावट आ गई है।

पाण्डिचेरी में अगस्त कटौती ७० प्रतिशत की गई है तो हरियाणा में ५५ प्रतिशत है। हरियाणा के नव निर्मित औद्योगिक क्षेत्र (फरीदाबाद) को इन कटौती में भारी घससा लगा है। उड़ीसा का ६० मेगावाट की कमी का तब सामना करना पडा जब ६२५ मेगा वाट शक्ति का तलचर बिजलीघर एकदम टूट गया। अमेरिकी सहयोग से बने इस स्टेशन को ३० करोड़ रुपये की हानि का भी सामना करना पडा।

पंजाब में विजली की ४० प्रतिशत कटौती से चावल का उत्पादन ४५० लाख टन एवं गेहू का ६०० लाख टन गिर गया। इसमें किसानों का लगभग १०५ करोड़ रुपये का घाटा उठाना पडा।

जिन राज्यों में खपत कम एवं विजली ज्यादा थी वे भी कमी महसूस कर रहे हैं। कर्नाटक के पास १९७० ७१ में २६७ करोड़ किलोवाट विजली ज्यादा थी मगर १९७२ ७३ में २५ प्रतिशत की कमी कर दी गई। उसे २७ करोड़ रुपये का घाटा उठाना पडा। बिहार के पास १९७० ७१ में ११७ ८० करोड़ किलोवाट फाउन्ट विजली थी, मगर बहा भी कटौती में भारी असंतोष पैदा किया है। स्वयं तमिलनाडु के पास १५८८० करोड़ कि वा ज्यादा विजली थी मगर आज वह सबसे ज्यादा बिजली के अभाव से ग्रस्त राज्य है। मध्य प्रदेश, दिल्ली केरल एवं हिमाचल प्रदेश के पास विजली की कमी नहा है मगर ये राज्य अन्य राज्यों को विजली की सप्लाई कर रहे हैं फलत कुछ कटौती का मामला जनता को करना पड रहा है। राज्यों में बिजली में हुई कटौती की हानि मात्र, १९७३ तक लगभग

१,००० करोड़ रुपए आकी गई थी। जून १९७३ तक यह क्षति बढ़ कर १,३०० करोड़ रुपए हो गई है। जानकार क्षेत्रों का अनुमान है कि बिजली कटौती के प्रभावा का गहराई स अध्ययन किया जाए तो यह राशि २००० करोड़ रुपए से कम नहीं हो सकती।

फंडेशन ग्राफ इण्डियन चम्बर ग्राफ कामस एण्ड इण्डस्ट्री के अनुसार बिजली कटौती से केवल उद्योगों को २० करोड़ रुपए प्रति माह घाटा हो रहा है। जूट उद्योग को १० करोड़ की हानि हो चुकी है। हिंदुस्तान स्टील्स में अब तक ८० हजार टन का उत्पादन कम हुआ है। बिजली सप्लाई ने भारत के निर्यात व्यापार को भी प्रभावित किया है। अन्न आयात के निषेध के पीछे बिजली की कमी भी एक कारण है।

सबसे जल्दी दूर नहीं होगा योजना मंत्रालय के अनुसार भारत से बिजली सबसे जल्दी दूर होने वाला नहीं है। लगभग पांच वर्षों तक बिजली की कमी रहेगी। १९७८-७९ तक ४१० लाख किलोवाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। इसका अर्थ हुआ कि पांच वर्षों में उत्पादन क्षमता २१८ लाख किलोवाट बढ़ानी होगी क्योंकि इस समय उत्पादन क्षमता १९७ लाख मेगावाट ही है जबकि लक्ष्य २३० लाख किलोवाट था। इस प्रकार १९७३ तक ही ३३ लाख किलोवाट की कमी थी।

वास्तव में बिजली का सप्लाई तो प्रथम पंचवर्षीय योजना से ही है। प्रथम योजना का लक्ष्य १४ लाख किलोवाट था जबकि उत्पादन सिर्फ ११ लाख किलोवाट ही हो पाया। इस प्रकार २० प्रतिशत कमी रही। दूसरी योजना में यह कमी बढ़कर ३६ प्रतिशत हो गई। तीसरी योजना में हम लक्ष्य का सिर्फ ६५ प्रतिशत ही प्राप्त कर पाए।

१९६६-७२ की तीन वार्षिक योजनाओं में यह कमी सबसे ज्यादा ३८ प्रतिशत रही। १९५० में प्रति व्यक्ति मांग जहाँ १८ कि वा थी १९७२ में यह बढ़कर ६३ कि वा हो गई मगर १९७२ में बिजली उत्पादन में वृद्धि केवल ७२ प्रतिशत ही हुई जबकि मांग २७ प्रतिशत थी। इस प्रकार देश में बिजली की कमी तो प्रारम्भ से ही थी।

विद्युत् उत्पादन के विभिन्न साधन भारत में बिजली का उत्पादन पानी की बल परमाणु शक्ति साधना से होता है। पानी से उत्पादित होने वाली बिजली के लिए जल विद्युत केन्द्र स्थापित किए जाते हैं उनकी संख्या देश में ७६ है। उनकी २,७८ ८२० कि वा बिजली उत्पादन की क्षमता है। मगर यह साधन पूणतः प्रकृति पर निर्भर है। यही कारण है कि जिस वर्ष भी मानसून न आए या कम अथवा देर से आए सारी बिजली व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाती है। हमारी बाघ परियोजनाओं में कमी है। वे वर्षों का पानी जमाग्न समय तक नहीं रोक सकती। भाखड़ा एवं रिहद बाघ में घराबी व समाचार मिलते ही रहते हैं। इस प्रकार पानी द्वारा बिजली उत्पादन योजनाएँ उचित सुधार किए बिना निर्भर भाग्य नहीं।

बिजली उत्पादन का दूसरा साधन कोयला है तापविद्युत केन्द्रों में वह प्रयुक्त होता है। भारत में ६७ थर्मल स्टेशन या तापविद्युत केन्द्र हैं। इस समय कोयले का स्टॉक १३० करोड़ टन है जो कि बहुत पर्याप्त है। मगर तापविद्युत केन्द्रों (थर्मल स्टेशनों) को ज्यादा प्राप्ताहन नहीं दिया गया।

परमाणु उपयोग की महत्ता

बिजली उत्पादन का एकमात्र सामर्थ्यपूर्ण एवं शक्तिशाली उपाय परमाणु उपयोग है। हालांकि परमाणु स्टेशन का निर्माण में १० वर्ष लगते हैं दूसरे इन पर खर्च भी ज्यादा

होता है मगर भारत के लिए यही लाभदायक है। भारत के पास ४० हजार टन यूरेनियम एवं ५० हजार टन थियरेटिन का विशाल भण्डार है जो विश्व में सर्वाधिक है।

डा० भाभा ने १९५६ में बिजली उत्पादन के लिए परमाणु उपयोग की बात कही थी। डा बिन्नम साराभाई ने भी परमाणु उपयोग पर बल दिया था।

पाचवीं योजना के दौरान निर्माणाधीन प्रोजेक्ट

राज्य	निर्माणाधीन प्रोजेक्ट में बिजली उत्पादन मेगावाट	अनुमानित खर्च करोड़ रुपए	स्वीकृत पूंजी करोड़ रुपए	स्वीकृत प्रोजेक्ट जिन पर निर्माण होना है	अनुमानित खर्च करोड़ रुपए
पंजाब	४८७	१६५ ४३	२२ ८५	—	—
हरियाणा	३६१	१०० ६७	२३ ४३	—	—
राजस्थान	२७२	७१ ५१	११ ७२	—	—
जम्मू-कश्मीर	६६	४८ २८	२१ ८७	—	—
हिमाचल	६०	१५ ००	२ ६२	—	—
उत्तर प्रदेश	१२६५	१२४ ६०	१२१ ३७	—	—
गुजरात	५८५	१०० ६४	६२ १८	२४० मेगावाट	२३ ३८
मध्य प्रदेश	३६०	५५ १६	५४ ७६	१०७	१७ ३६
महाराष्ट्र	७००	११५ ५८	३५ ३०	१२५	१७ ८४
आंध्र प्रदेश	४००	७७ ५०	४२ ०६	१००	८ ३८
केरल	३६०	८० ००	५ ४०	४७०	३१ ६६
कर्नाटक	३५६	४६ २४	१६ ५८	५५	८ ८६
तमिलनाडु	१४५	२३ ४४	४ ६२	२१०	३३ १७
बिहार	३५०	६४ ५०	१० ६४	११०	१४ ५६
उड़ीसा	२४०	३२ ३७	१ ७७	२२०	३६ ४०
पश्चिम बंगाल	२४०	३८ ६६	२२ ७२	२००	३० ३५
असम	६०	६ २४	५ ०२	—	—
त्रिपुरा	१०	११ ५०	२ ६३	—	—
केन्द्रीय क्षेत्र	१२१५	३५३ ४०	१८६ ६१	२३५	२६ ८७
पूरा भारत	७६२५	१४४४ १५	६१४ ७८	२१६२	२७० ०६

कुल यूनिट शक्ति बढ़ि एवं प्रोजेक्ट = ३६

ग्राम विद्युतीकरण ग्राम विद्युतीकरण को उच्च प्राथमिकता दी गई है। पंच सेटा के ऊर्जन से कृषि के लिये घरानल गत जल सप्ताघना के समुपयोजना में तेजी लाने के कार्य को भी प्राथमिकता दी गई है। ग्राम विद्युतीकरण की प्रगति में जिसमें १६६६-६७ के दौरान बड़ी तेजी ला दी गई थी चतुर्थ योजना अवधि के दौरान और भी तेजी ला दी गई है। चतुर्थ योजना के आरम्भ में विद्युतीकरण ७४००० ग्रामों और १० ८८ लाख पम्पों के प्रति दिसम्बर १६७२ के अंत तक कुल १ १८ लाख ग्राम विद्युतीकृत और १८ ०२ लाख पम्प-नलकूप ऊर्जित किये गये जिसमें देश की लगभग ४० प्रतिशत ग्रामाण जनता को लाभ

हुआ। हरियाणा पाटवारी और शिमला व सय राज्य क्षण न यह अंग प्राप्त किया है कि उहाण अणत सभी ग्रामा म विजना पठना दी है। ग्राम विद्युतीकरण कायक्रम म तजी लाने के लिय १६६६ म स्थापित करत इन्डिस्ट्रियलन कापीरेशन न सिम्बर १६७२ के अत तक १०० करोड रुपय लागत की १७० स्कीम स्वीकार करत इग शिमा म अत्युत्तम शुद्धता की है। इन स्वामा म १५८८/ ग्रामा का विद्युताकरण २ उलाय पपसटा वा ऊजन और ३८००० लघु उद्योगा और वृषि उद्योगा का विजना व बननशन देना परिवल्लित है। इनम स ७६ स्कीम गिष्टइ द्वारा व लिय है जिनक लिय रियायता शर्ती पर अण दिये गये हैं। इगन अनिरिया निगम न पाव ग्राम विद्युता गठनारी गण्टाग्राम की स्कीम स्वीकार का है जिगम ७२६ ग्रामा व विद्युताकरण २७६०० पपा व ऊजन और १५५० लघु उद्योगा और वृषि उद्योगा व लिय बननशन दा व लिय १००० करोड रुपय की ऋण सहायता की परिवल्लपना की गई है।

पहन स विद्युतीकृत ग्रामा व अदर और उनक भागगाता की हरिजन वस्त्रिया म बिजली देन म राज्य विद्युत बोर्डों की सहायता करत व लिय सिम्बर १६७१ स एक स्कीम चालू की गई है। यह देखा गया है कि विद्युताकृत ग्रामा म ता परलू और सडवा की रोगनी की सुविधा है लकिन धन की कमो व कारण हरिजा वस्त्रिया म यह सुविधा नहीं दी गइ है। इस स्कीम व अनुसार, जा कि करत इन्डिस्ट्रियलन कापीरेशन द्वारा चलाई जायगी राज्य बिजली बोर्डों को पूजीगत कार्यो व लिए ऋण सहायता दा जाएगा। राज्य सरकारें स्थानीय पचायता अथवा ग्राम प्राधिनकरणा द्वारा ऊर्जा सबधी बिला की अनायगी की व्यवस्था करगी। चतुष योजना की शेष अर्बधि म ५ करोड रुपय वा अनुमानित लागत पर २०००० हरिजन वस्त्रिया म बिजली लगाने का प्रस्ताव है।

अद्यपि ग्राम विद्युतीकरण के क्षत्र म काफी उपलब्धिया हुई है फिर भी ग्रामी काफी कुछ करत है। ग्रामीण जनता म आशा आकाक्षा जागा है और इस समय अथ व्यवस्था उत्तति की और उन्मुख हो रही है। यह आवश्यक है कि गति मे तजी लाई जाय और एक भारी कामक्रम हाथ म लिया जाय। यह वाछनीय समझा गया है कि १६७१ ८१ की अर्बधि व लिय एक दशादी योजना तयार की जाय और लक्ष्य निर्धारित किये जायें। तदनुसार, एक याजना तयार की गई है जिसम ४८७ लाख पपा के ऊजन की परिवल्लपना की गइ है ताकि मात्र १६८१ तक कुल मिलाकर ६५ लाख पपा को ऊर्जित किया जा सक। वसा प्रकार ग्रामो व विद्युतीकरण क लिये २३३ लाख ग्रामा व लक्ष्य की परिवल्लपना की गई है जिससे ३४ लाख ग्राम विद्युतीकृत हो जायग। यह सप्या देश व कुल ग्रामा का ६० प्रतिशत है। अनुमान लगाया गया है कि १६७१ ७६ की अर्बधि के दौरान ८३० करोड रुपय और १६७६ ८१ अर्बधि म १८४० करोड रुपये व परिश्रम की आवश्यकता होगी।

१६७२ ७३ की उपलब्धिया इस वष के दौरान सिचाई और विद्युत व विकास म प्रत्याशित लक्ष्य तथा उपलब्धिया नीच दी गई हैं

	लक्ष्य	प्रत्याशित उपलब्धिया
सिचाई शक्यता	११२ मिलियन हेक्टयर	००६ मिलियन हेक्टयर
विद्युत	१५ मिलियन किलो वाट	१० मिलियन किलो वाट

परिव्यय

चौथी याजना म सरकारी क्षेत्र व परिव्यय का विवरण निम्न प्रकार ह—

(करोड रुपए म)	राज्य	सघराज्य क्षेत्र	केंद्र	केंद्र संचालित	याग
(१) उत्पादन जारी स्कीम	७६७ ७३	२३ ८०	२१० १०	—	१०३१ २२
नई स्कीम	१६५ ८६	—	६५ ००	—	२१० ८६
(२) पारेपण द्वार वितरण	६७७ ८६	३८ ७१	६ ००	२२	७६८ ३७
(३) ग्राम विद्युतीकरण	२७८ ३४	७ ८८	११० ००	—	४३५ ६२
(४) अनुसंधान और विविध	१२ ८४	५ ६८	२६ ८२	—	२८ ६४
याग	१६३२ ५८	७२ ६	४२४ ७२	२२	२४५४ ६७



THE ANDHRA PRADESH STATE CO OPERATIVE
BANK LTD
HYDERABAD

(A SCHEDULED BANK)

Head Office Troop Bazar Hyderabad

Branches in

Hyderabad

1 Vidyanagar

2 Malakpet

3 Narayanguda

Financial Particulars as on 30th June 1973

(Rs in lakhs)

Share Capital and Reserves

576 47

Deposits

1671 41

Advances

2595 87

Resources

3214 98

KASU VENGALA REDDY

PRE IDENT

P N SRIVASTAVA

MANAGING DIRECTOR

जैसे एक बूट से सागर बनता है वैसे ही
प्रतिदिन एक रुपया बचत से आप अपना
स्वयं का एक घर प्राप्त कर सकते हैं।
जनता की आवासिक-समस्या के समाधान हेतु प्रस्तुत
उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद्

की

रुपया प्रतिदिन पर मकान" योजना
में सम्मिलित होकर लाभ उठाइये।
यह योजना समाज के अधिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के व्यक्तियों के लिये है,
जिनकी मासिक आय रु० ३५०/ से अधिक नहीं है।

योजना के वर्तमान स्थान

आगरा इलाहाबाद, लखनऊ, मेरठ देहरादून, बरेली सहारनपुर
मुरादाबाद गोरखपुर अलीगढ़ व रायबरेली।

विवरण और निर्धारित आवेदन पत्र के लिये रु० १/ पोस्टल ऑर्डर/
मनीऑर्डर द्वारा निम्न पते पर भेजें —

सम्पत्ति प्रबन्ध विभाग

उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद्
१०४ महात्मा गांधी मार्ग लखनऊ।

कार्यालय निदेशक पर्यटन

उत्तर प्रदेश

हिमाच्छादिन हिमाचल में हनुमान दशम्यो प्राकृतिक सौंदर्य के मनोरम स्थल
ननीताल ऋषिकेश मसूरी अल्मोडा देहरादून हरिद्वार बन्नीनाथ, वेदरनाथ एवं
काबॅट नेशनल पार्क तथा—

ऐतिहासिक भवना वास्तुकला तथा सांस्कृतिक केन्द्र

मथुरा आगरा वाराणसी लखनऊ इलाहाबाद एवं चित्रकूट के भ्रमण योग्य स्थल हैं।
मसूरी और ननीताल में शरदोत्सव मनाया जाता है।

वाराणसी अयोध्या (फजाबाद) इलाहाबाद और चित्रकूट (बादा) में दशहरे के दिना
रामलीला अनुपम ढंग से मनायी जाती है।

वाराणसी तथा आगरा में समाजित भ्रमण का आनन्द लीजिए तथा इलाहाबाद
आगरा, वाराणसी अयोध्या लखनऊ हरिद्वार मुनि की रैती एवं श्रीनगर में आधुनिक
साज सज्जा वाले पर्यटक आवास गृहों में ठहरने की सुविधा का लाभ उठावें।

विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिये कृपया निम्नलिखित पर्यटक कार्यालयों से
सम्पर्क स्थापित करें —

ननीताल रानीखेत नाठगोदाम अल्मोडा हरिद्वार मुनि की रैती पीडी (गडवाल)
कोटद्वार, श्रीनगर (गडवाल) देहरादून मसूरी ऋषिकेश, आगरा वाराणसी इलाहाबाद
लखनऊ, अयोध्या एवं चन्द्रलोक भवन 36-जनपथ नई दिल्ली।

निदेशक पर्यटन उत्तरप्रदेश द्वारा प्रसारित

भारतीय कृषि

भारत के राष्ट्रीय जीवन में खेती का अत्यधिक महत्व है। कृषि प्रधान देशों में भारत का स्थान अग्र-यन्तम है। भारत की राष्ट्रीय आय में खेती का भाग सबसे बड़ा है। यह ५० प्रतिशत राष्ट्रीय आय देती है। ७० प्रतिशत भारतीय आजीविका के लिए भूमि पर निर्भर है। भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर नहीं है किन्तु इस ओर तजी से बढ़ रहा है।

मूंगफली और चाय के उत्पादन में भारत का स्थान पहला है। लाखों क उत्पादन में भारत का एकाधिकार है। चावल जूट गन्ना राई तिल और रैडी-बीज के उत्पादन में भारत का स्थान दूसरा है।

भूमि का उपयोग भारत की कुल भूमि ३२ ६८ करोड़ हेक्टर है। इसमें से ३० ५६ करोड़ हेक्टर अर्थात् ९३ ५ प्रतिशत भूमि की जानकारी सक्लित हो सकी है। कृषि योग्य भूमि १६ ४२ करोड़ हेक्टर है। इस समय १५ ८० करोड़ हेक्टर भूमि में खेती होती है।

कृषि योग्य भूमि में से कुल ३ ६५ करोड़ हेक्टर भूमि में मिचाई होती है। भूमि की साधारण जोत ५ हेक्टर की है।

मिट्टी कृषि-योग्य भूमि की मिट्टी चार किस्म की है (१) कछारी व बलूही व जलाठ (२) लाल (३) काली और (४) ककरीली या मखयारी।

ककरीली या मखयारी जमीन में हूमन की मात्रा तो बहुत अधिक होती है किन्तु इसमें अत्यधिक रासायनिक तत्वों का अभाव होता है। ककरीली या पयरीली जमीन मध्य भारत अरुण और पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट के माय-साय पाई जाती है। कछारी या बलूही भूमि अत्यधिक उपजाऊ होती है। गंगा व सम्पूर्ण मैदान में इसी किस्म की मिट्टी पाई जाती है। यह प्रायद्वीप के किनारे की पट्टी पर पाई जाती है। दक्षिण पट्टार में पश्चिमी भाग में शालापुर नागपुर और बम्बई काली मिट्टी व क्षेत्र में है।

प्रमुख फसलें भारत में फसल की दो मौसम मुख्य हैं। एक खरीफ का फसल और दूसरी रबी की। खरीफ की फसल साधारणतः दशहर के बाद दिवाली तक बट कर घर में आ जाती है। रबी की फसल बसाख व एक पखवार के बाद बट कर बाजार में पहुंच जाती है। खरीफ का फसलें धान ज्वार बाजरा मकई कपास गन्ना तिल और मूंगफली। दाल भी इसी समय होती हैं। रबी की मुख्य फसलें हैं गेहूँ चना जौ राई और सरसों।

उपज भारत में प्रति एकड़ उपज कम है। साधारणतः चावल प्रति एकड़ ६००

विनाशग्राम पत्र होता है। गेहू की उपज ३३० कि० प्रा० है। समस्त अन्न धाया की उपज का निया जाय तो औसत २५० कि० गा० ही आती है। अग्रे उपज चार प्रकार की हैं (१) अनाज धान या चावल गहू जो बाजरा दालें चना गन्ना और मसाल। जान की कुन जमान म म तीन चौथाई म अनाज की खता होनी है (२) तिलहन तीसी राई सरसा और तिन रवा क बीज मूगफली और नारियल (३) रेशों कपास जूट सन और पन्कम (४) औषध व पेय जम पान्म मिनकोना तम्बाकू चाय और काफी।

विभिन्न फसलो की स्थिति

(लाख हक्टर म)

फसल	आधार स्तर १९६८-६९	१९७३ ७४ क निम्न चौथा याजना का तय	१९७० ७१ (वास्तविक)	क्षेत्र व्याप्ति १९७१ ७२	१९७२ ७३
चावल	५६०	१०१०	१५६	७४१	६००
मसाल	४०	१२०	६६	६४	५०
ज्वार	७०	२००	८०	६६	११०
बाजरा	७०	५८०	५०१	१७८	३००
गहू	६८०	७७०	६६८	७६७	८५०
कुल	६८०	५००	१५८	१७६६	२५१०

राष्ट्रानों का उत्पादन (लाख मी० टन)

वर्ष	धान	गन्ना	अन्ध प्रनात्र	कुल प्रनात्र	कुल गन्ने	कुल गायान
१९६७-६८	७९	१६४	८६	८३०	१११	६४१
१९६८-६९	६८	१८७	११	८	१०६	६६०
१९६९-७०	६०६	०१	७३	८७८	११७	६६१
१९७०-७१	६	-	२०६	६६९	११८	१०८६
१९७१-७२	६७	५५४	६६	६३६	१११	१०६७

फसल उत्पादन में गिरावट

१९७१-७२ में एक वर्ष का निम्न म मौसम का कारण अतिरिक्त अन्न क काला अग्रे उत्पादन का ६९ लाख १. अनाज का उत्पादन १९६९-७० में ६६ करोड़ मसाल ७९६ करोड़ १९७०-७१ में १०८६ करोड़ मसाल ७९७ करोड़ १९७१-७२ में १०६७ करोड़ मसाल ७९८ करोड़ १९७२-७३ में १०६७ करोड़ मसाल ७९९ करोड़ १९७३-७४ में १०६७ करोड़ मसाल ८०० करोड़

था पर वह १९७१-७२ में ३५ प्रतिशत कम हाकर १० करोड़ मीटरी टन के स्तर पर आ गया। माटे अनाज में जो मुख्यतः वषा-भाषित हालता में और अन्न अथवा मूंग और चन्दा जमीन पर उगाये जाते हैं पिछले साल की तुलना में ६ लाख मीटरी टन की कमी आयी। दूसरा और गेहूँ का उत्पादन जो पिछले साल में २३ करोड़ मीटरी टन था और आगे बढ़कर २६ करोड़ मीटरी टन के नये उन्मुखनीय स्तर पर पहुँच गया। चावल का उत्पादन भी ५ लाख मीटरी टन बढ़कर ४ करोड़ मीटरी टन के स्तर पर पहुँच गया।

वाणिज्यिक फसलों के मामले में कपास का उत्पादन बढ़कर ६५ करोड़ ३० लाख गांठ के उन्मुखनीय स्तर पर पहुँच गया और उमम पिछले साल की तुलना में ४५ प्रतिशत की बढ़ि हुई और पिछले सर्वोत्तम स्तर वाले वर्ष १९२६-६५ की तुलना में १६ प्रतिशत की बढ़ि हुई।

पटसन का उत्पादन ५७ करोड़ १० लाख गांठ रहा और इस तरह उमम पिछले साल की तुलना में १५ प्रतिशत की बढ़ि हुई। इसकी तुलना में पांच प्रमुख तिलहन (नामन मूंगफली तारिया और सरसा, निल अन्नम और अरडी) का उत्पादन पिछले साल के ६३ लाख मीटरी टन के उन्मुखनीय उत्पादन से गिरकर ६३ लाख मीटरी टन रह गया। गन्ना का उत्पादन भी १ करोड़ ७१ करोड़ ३ करोड़ मीटरी टन (गुड के अनुसार) के स्तर से बढ़कर १ करोड़ १७ करोड़ मीटरी टन हो गया।

१९७२-७३ के दौरान खरीफ के मौसम में हुए नुकसान का पूरा करन और रबी और गर्मी की फसल का उत्पादन बचाने की दृष्टि से एक आपात कृषि उत्पादन कार्यक्रम हाथ में लिया गया। राय का केंद्रीय महापता के रूप में इस कार्यक्रम के तहत १५२ करोड़ रु० के दोषकारी ऋण का अनुमादन किया गया जो मुख्यतः लघु मिर्चाई के विकास के लिए था। इत्यादि यह था कि शीघ्र ही पत्र दान बानी याजनाया का अमल में लाया जाये, जिनमें चालू फसल वाले साल में ही उत्पादन बचाने में मदद मिले। राज्या द्वारा हाथ में लिये गये कार्यक्रम में ये चीजें शामिल थीं— लगभग १ करोड़ ५ लाख ननकूपा पपसटा का उजा-चालित करना, लगभग २००० गृह राज्य ननकूपा का निर्माण लगभग ६५००० उयले ननकूपा का निर्माण और ५००० से ज्यादा उठाऊ मिर्चाई परियाजनाया का वायाचयन और माय ही नन्दिया धाराया अर्थात् पर भांड बाधा जसी दूसरी मिर्चाई याजनाए इनके अलावा थीं जिनसे तत्काल लाभ प्राप्त किये जा सकें। बीजा उबरका और कीटनाशिया जसे कृषि आदाना की खरीद और वितरण के लिए राज्या का अत्यन्तनीय ऋण दान के तहत केंद्रीय बजट में जो ६० करोड़ रु० की व्यवस्था थी उमें बढ़कर १०० करोड़ रु० कर दिया गया।

ज्यादा उपज वाली किस्में

खाद्यान का उत्पादन बचाने के लिए ज्यादा उपज वाली किस्मों की खेती एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। लक्ष्य था कि ज्यादा उपज वाली किस्मों की खेती २ करोड़ हैक्टर क्षेत्र में की जाये और आगे है कि हम इस लक्ष्य से आगे निकल जायेंगे। ज्यादा उपज वाली गेहूँ कम जाखिम वाली फसल मिड है रहा है क्योंकि कीटा का भारी खतरा उम नहीं होता और माय ही विक-द्रावित जन प्रबंध पद्धति में काम चल जाता है। फसलवर्धन ध्यापि और बनी हुई उत्पादना दाना ही बात। में काफी उन्मुखनीय प्रगति की गयी है। इसकी तुलना में चावल उबार बाहरा और भक्का की ज्यादा उपज वाली किस्मों का ज्यादा जाखिम वाला फसल माना जाती है जिन पर पानी की कमी-बना से बरा धमर पड़ता है और कुछ मामला

म बीमारिया और कीट उनको ज्यादा घरते ह। साथ ही किस्म क आधार पर विपणन की भी दिक्कतें हाती है। उनसे मामले म प्रगति अपगया कम रही है। अच्छी किस्म विकसित करने और ज्यादा अच्छी काय विधिया का लाकप्रिय बनाने के लिये अनुसंधान और विकास के प्रयास बढाये जा रहे है।

दलहनो का उत्पादन पिछले कुछ सालो से दलहना का उत्पादन स्थिर रह गया था। राज्य सरकारा क दलहन उत्पादन बढाने सबधी प्रयासा म उनको मदद देने क लिये खरीफ १९७२ से एक केन्द्र प्रायोजित योजना हाथ म ली गयी है। इस योजना के अधीन अल्प अवधि वाले और सुधरी किस्मा वाले बीज के प्रदर्शन और बधन के लिये तथा दलहन की फसला म काम आने वाले वनस्पति रक्षक रसायना और राइझोबियम के उपयोग क लिए आर्थिक सहायता दी जा रही है। दलहना की ज्यादा उपज वाली और अल्प अवधि वाली किस्मा का विकसित करने के लिये अनुसंधान के काम को तेज किया जा रहा है।

वाणिज्यिक फसलें तिलहन कपाम पटसन तम्बाकू और दूसरी वाणिज्यिक फसला क उत्पादन को बढाने के लिए इस वष अनेक उपाय किये गये। १९७२ ७३ के चालू वष म मूंगफली पना करने वाले कई महत्वपूर्ण राज्या म व्यापक सूखा पड जाने के कारण उसके उत्पादन को कुछ क्षति पहुची है। मूंगफली का उत्पादन बढाने के लिए लगभग ५ २ लाख हेक्टर सिंचित क्षेत्र गर्मी की मूंगफली फसल क अधीन लाने के लिए उपाय किये गये है। तारिया और सरसा के अधीन आने वाल क्षेत्र का बढाने क लिए और २ ७५ लाख हेक्टर क सरसा की फसल वाले इलाका म वनस्पति रक्षण के उपाय करके उसका उत्पादन बढाने क लिए भी कदम उठाये गये है। आन्ध्र प्रदेश कर्नाटक और तमिलनाडु के १ ८० लाख हेक्टर क्षेत्र म सूरजमुखी के विकास और मध्य प्रदेश महाराष्ट्र गुजरात और उत्तर प्रदेश के ३६००० हेक्टर क्षेत्र म सोयाबीन के विकास का काम भी केन्द्र प्रायोजित योजनाआ क अधीन हाल म लिया गया है। बिनाले के तल और धान भूसी के तेल का ज्यादा उपयोग बढाने क लिए राजकापीय प्रास्ताहना की व्यवस्था की गयी है। बक्षमूलक तिलहना के सग्रह और उपयोग का भी बढाया जा रहा है।

वाणिज्यिक फसलो का उत्पादन

गत पाच वर्षों क दौरान प्रमुख वाणिज्यिक फसला के उत्पादन की स्थिति इस प्रकार है।

क्रि.सं.	वर्ष	१९६७ ६८ ^१	१९६८ ६९ ^२	१९६९ ७० ^३	१९७० ७१	१९७१ ७२ ^४
निहलन ^१	लाख बीटरी टन	८३	६८	७७	९३	८३
गन्ना	(गुड क रूप म)	९८	१२८	१३८	१३०	११७
कपाम लाख गांठ	(प्रत्येक १८० कि० ग्रा० का)	५५	५१	५३	५५	६५
पटसन		६३	२९	५७	५९	५७

१ आंशिक रूप स सशाधित अनुमान।

२ अन्तिम अनुमान।

३ ४ म मूंगफली तारिया सरसा तिल अलसी और घग्डी शामिल है।

गन्ना क्षेत्र और उत्पादन के आर्थिक अनुमाना के अनुसार १९७२-७३ में गन्ने वाले क्षेत्र पिछले साल की तुलना में ५३ प्रतिशत अधिक हैं। फिर भी देश में अनेक हिस्सा में सूखे के कारण गन्ने के उत्पादन में मामूली सी ही वृद्धि हो सकेगी। १९७३-७४ में देश के उपोष्ण कन्निघ क्षेत्र में उसका उत्पादन बढ़ाने की दृष्टि से एक आपात उत्पादन कार्यक्रम हाथ में लिया गया।

अन्य वाणिज्यिक फसलें कपास का उत्पादन ६५३ लाख गांठों के नये शिखर स्तर पर पहुँच गया और इसमें पिछले साल की तुलना में ४४ प्रतिशत की और पिछले शिखर वर्ष १९६४-६५ की तुलना में १४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। चालू साल में इस फसल पर खाम कर कपास उगाने वाले कई क्षेत्रों में सूखे की स्थिति के कारण उलटा अमर पड़ा है। फिर भी सघन कपास जिला कार्यक्रम और कपास की ज्यादा उपज वाली किस्मों का प्रचार-प्रसार वाले इलाकों को बचाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के फलस्वरूप कपास उत्पादन की स्थिति कुछ मिलाकर संतोषजनक है।

१९७१-७२ में पटसन का उत्पादन ५७१ लाख गांठों रहा जो पिछले साल की तुलना में १५७ प्रतिशत अधिक था। पर १९७२-७३ में यह कम होकर ३८७ लाख गांठों रह गया है अर्थात् १४३ प्रतिशत की कमी आयी है जिसका मुख्य कारण पटसन उगाने वाले अधिकांश क्षेत्रों में सूखा या कम या अनिश्चित वर्षा का होना है। पटसन के लिये २ क्षेत्र प्रायोजित योजनाएँ अर्थात् (१) सघन पटसन जिला कार्यक्रम और (२) विभिन्न पटसन पैदा करने वाले क्षेत्रों में पटसन और मन्ता दोनों के ऊपर यूरिया का हवाई छिड़काव चालू है।

तम्बाकू का उत्पादन १९७१-७२ में ४०६ लाख मीटरी टन के शिखर स्तर पर पहुँच गया और इस तरह उसमें १३१ प्रतिशत की वृद्धि पिछले साल की तुलना में हुई।

केला अखरोट नारियल काजू और लाख की विकास योजनाएँ भी अमल में लायी जा रही हैं।

लघु सिंचाई

अनुमान है कि १९७२-७३ में लघु सिंचाई के विकास के लिये सांख्यिक उद्योग क्षेत्र में रखे गये लगभग १०७७८ करोड़ रुपये का परिव्यय और १३० करोड़ ८० क लगभग का सत्यागत वित्त काम में लाया गया। इसके अनिश्चित केन्द्रीय सरकार ने आपात कृषि उत्पादन कार्यक्रम के अर्धीन १५० करोड़ ८० की स्वीकृति दी जिसमें से अधिकांश विभिन्न लघु सिंचाई योजनाओं के विकास पर पहले ही खर्च किया गया है। फलस्वरूप अनिश्चित सिंचाई सुविधायें लगभग १३८० लाख हेक्टर क्षेत्र में सामान्य लघु सिंचाई कार्यक्रमों के अर्धीन और अनिश्चित १० लाख से ज्यादा हेक्टर क्षेत्र में आपात कृषि उत्पादन कार्यक्रम के अर्धीन उपलब्ध कर दी गईं। एमो सभी भूजल योजनाओं की तकनीकी परिनरीक्षा के लिए माग-दण्ड मिद्वान्त बना लिये गये हैं जिन योजनाओं का वित्तपोषण सामान्य योजना की निधि और कृषि पुनर्वित्त निगम की निधि से किया जाना है। भारत में भूजल सर्वेक्षण की भूजल शाखा को १ अगस्त १९७२ से केन्द्रीय भूजल बोर्ड के साथ मिला दिया गया है। इस तरह अब यह बोर्ड भूजल खोज, मूल्यांकन विकास और प्रबंधन सभी पहलुओं पर काम करने वाला राष्ट्रीय स्तर का एकमात्र एकीकृत संगठन बन गया है।

सिचाई साधनों की उपलब्धियाँ

(हजार म)

क्रम संख्या मंत्र	निम्नलिखित वर्षों के अंत में उपलब्धियाँ			
	१९६५-६६	१९६८-६९	१९७१-७२	१९७२-७३
१ छुटे हुए	५ ११९	५ ६९५	६ १९०	९३८०
२ विद्युत पम्पसेट	५१३	१ ०८९	१ ९००	२०७९
३ निजी नलकूप	९३	२६६	५९८	७१८
४ राजवाय नलकूप	१२	१५	१७	१८

इन आकड़ा में आपात कृषि उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त उपलब्धियाँ शामिल नहीं हैं। अद्यतन उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार इस कार्यक्रम के अंतर्गत ५३००० से अधिक उथल नलकूप २६८०० पम्पसेट और १५७० गहरे नलकूप लगाये गये हैं तथा ४००० से अधिक उठाऊ सिचाई योजनाय क्रियावित की गई हैं। इनके अतिरिक्त लगभग १२६९०० नलकूपा व पम्पसेटा को ऊर्जाचालित किया गया है।

उर्वरक

१९७२-७३ में उर्वरक की खपत १९७१-७२ के स्तर से ज्यादा नहीं हुई। इसका मुख्य कारण अशत धरेलू उत्पादन में हुई कमी और अशत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पर्याप्त रूप से उर्वरक उपलब्ध न होने की वजह से पूर्ति के मामले में कुछ बाधाएँ पैदा हो जाना है। उपलब्ध पूर्तियाँ से सर्वोत्तम प्रतिफल प्राप्त करने के लिये आयातित और स्थानीय रूप से उत्पादित उर्वरक की समन्वित पूर्ति के लिए राज्य सरकारों रेलवे और उर्वरक निर्माताओं से परामर्श करत हुए व्यवस्था की गयी। उर्वरक की मात्रा डालने के समय और यथोचित मिश्रण के बारे में विमानों का सलाह दी गई ताकि उपलब्ध पूर्तियाँ से वययामम्भव सर्वोत्तम प्रतिफल प्राप्त कर सकें।

बीज

१९७२-७३ में मूल्या पीटित क्षेत्रों में आपात कृषि उत्पादन कार्यक्रम का अमल में आने के लिये १.३५ लाख मीटरी टन की मात्रा तक गेहूँ के बीज की अतिरिक्त जम्हरत का पूरा करने के लिये विविध व्यवस्था की गयी। बीज अधिनियम १९६६ में य उपलब्ध करने के लिये मगाधन किया गया (क) एक केंद्र बीज प्रमाणन बोर्ड का स्थापना करना जो बीज प्रमाणन के मामलों में केंद्र और राज्य सरकारों को सलाह देगा (ख) प्रमाणन के लिये प्रस्तुत किए गये बीजा के उच्चतर मानक निश्चित करना और (ग) पर्यटन से बीजा का बीज अधिनियम के अंतर् में गामित करना।

वनस्पति रक्षण

१९७०-७३ में वनस्पति रक्षण उपायों में ५ करोड़ पैकटों के कुल क्षेत्र को नाम पट्टा। राज्य सरकारों की योजनाओं अधिनियम १९६८ का लागू करने हेतु प्रशासनिक तंत्र

स्थापित करने की दिशा में कदम उठा रही हैं। बीटनाशिया के निर्माण, आयात और वित्री के लाइसेंसों के लिये आवेदन प्राप्त हो रहे हैं।

अन्य कार्यक्रम

५५ वहु फसल परियोजनाओं के अधीन १९७२-७३ में ३३७५० किमाना को ९५१ प्रशिक्षण शिविरों के जरिये प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही इन परियोजनाओं के अधीन १०५६ विज्ञान प्रदर्शनियाँ और ९६८ अनुकूलन अनुसंधान जाच आयोजित की गईं।

बारानी भूमि कृषि विकास की अग्रगामी परियोजनाओं की प्रगति बताने के लिए बाय विधि सम्बन्धी कई परिवर्तन किये गए हैं। अनुसंधान केन्द्रों और अग्रगामी परियोजनाओं के बीच अच्छा सम्बन्ध बनाने के लिए ध्यान दिया जा रहा है।

रविस्तान विकास के द्वार में सम्बन्धित राज्य सरकारों से अनुरोध किया गया है कि चालू परियोजनाओं के लिए शुरू किये जा रहे कामों के लिए धन की जरूरत का और साथ ही पाचवी पंचवर्षीय योजना काल में इन अभिगम के अनुसार नये कार्यक्रम लेने के लिए धन की जरूरत का निर्धारण करें।

संस्थागत वित्त प्रबन्ध

सरकारी संस्थाओं द्वारा दिए जाने वाले अल्पकालीन और मध्यकालीन ऋण १९७२-७३ में बढ़कर ६६० करोड़ रुपये के स्तर पर पहुँच गये जबकि १९७१-७२ के सहायिता वष में यह अनुमानित स्तर ६०१ करोड़ रुपये था। सहकारी भूमि विकास-बचक वका द्वारा दिये गये दीर्घकालीन नये ऋणों की रकम १९७१-७२ में १७८ करोड़ रुपये थी जबकि १९७२-७३ में १६० करोड़ रुपये हो गई। कृषि विकास व वित्त पापण के क्षेत्र में कृषि पुनर्वित्त निगम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ३० जून, १९७१ तक कृषि पुनर्वित्त निगम से २४६ करोड़ रुपये की आवृत्तियाँ वाली ४५८ योजनाएँ मजूर की गई थीं। २० जून, १९७२ तक यह स्तर आगे बढ़कर ७११ योजनाएँ हो गया। उनके लिए निगम की आवृत्तियाँ ३५१ करोड़ रुपये थीं। १९७२-७३ में अंतरराष्ट्रीय विकास सच (विश्व बैंक) की फाम विकास सम्बन्धी ऋण परियोजनाय महाराष्ट्र (३४ ६६ करोड़ रुपये) और कर्नाटक (५१ २८ करोड़ रुपये) के लिए मजूर की गई थी। लघु और सीमांत कृषकों और खेतिहर मजदूरों को ऋण प्रदान करने की सेवाओं सम्बन्धी अतिरिक्त प्रतिवेदन में राष्ट्रीय कृषि आयोग ने अनेक सिफारिशों का है। कृषक सेवा संस्थाय बनाने की सिफारिश की गई है। कुछ चुने हुए क्षेत्रों में राज्य सरकारों से परामर्श करके हुए ऐसी संस्थाएँ प्रायोगिक आधार पर बनाने का विचार है। ऐसी दो संस्थाएँ कर्नाटक के दक्षिण कनारा में स्थापित की जा रही हैं।

कमजोर वर्ग के लिए विशेष कार्यक्रम और रोजगार

लघु कृषक विकास अभिकरण की समस्त ४६ परियोजनाएँ चल रही हैं। इन परियोजनाओं के अधीन लगभग २२ ६ लाख लघु किसानों (जिसमें ६ २ लाख सीमांत कृषक शामिल हैं) का लिया गया है और लगभग १० लाख किसानों को सहकारिता के अधीन लाया गया है। इन अभिकरणों ने ३३ ६८ करोड़ रुपये के अल्पकालीन और मध्यकालीन ऋणों तथा १६ ४६ करोड़ रुपये के दीर्घकालीन ऋणों की सहकारी संस्थाओं से व्यवस्था करवाने में मदद की है। लगभग ४८ ३ हजार खात कृषक नल कृष १२ ६ हजार पम्पसेट इन अभिकरण

परियोजनाओं के अधीन स्थापित किये गए हैं। सीमांत कृषक और खेतिहर मजदूरों की ४१ परियोजनाओं के अधीन लगभग १० ८ लाख लोगों को लिया गया है। सीमांत कृषक और खेतिहर मजदूर अभिकरणों ने ४ १२ करोड़ रुपये के अल्पकालीन और मध्य कालीन ऋणों और १ ५६ करोड़ रुपये के दीर्घकालीन ऋणों की व्यवस्था सहकारी संस्थाओं के जरिए इन लोगों के लिए कराई है। लगभग ५२५० खात कूप नल कूप और २४४२ पम्पसट इस योजना के अधीन स्थापित किये गये हैं और लगभग १३ ३ हजार दुधारू पशुओं की व्यवस्था की गई है।

सूखा प्रवण क्षेत्र कार्यक्रम के अधीन मुख्य प्राप्ति कृषि मजदूरों के लिए रोजगार की व्यवस्था करने पर किया जा रहा है जिसके लिए मध्यम लघु सिंचाई मृदा संरक्षण वनीकरण सड़कें आदि की सघन और उत्पादक योजनाएं संगठित की गई हैं।

अप्रैल और दिसम्बर १९७२ के बीच १५५ कृषि यंत्र सर्विस केंद्र स्थापित किये गये और इस तरह उनकी कुल संख्या २५० हो गई। ऐसे केंद्रों की स्थापना को प्रोत्साहित करने के लिए ट्रेक्टर परीक्षण और प्रशिक्षण केंद्र बुदनी और हिमालय इन उपक्रमों के प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रहे हैं।

आंध्र प्रदेश बिहार मध्य प्रदेश और उड़ीसा के राज्यों में वनजाति विकास के लिए ६ अग्रगामी परियोजनाएं हाल में ली गई हैं। १९७२ ७३ में ४३ योजनाएं के लिए वजेट व्यवस्था २ करोड़ रुपये थी। इस योजना के अधीन ३० हजार जनजाति वालों को लिया गया और इनको कृषि और बागवानी विकास कार्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है।

कृषि अनुसंधान

बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों के लिए अनुकूल चावल की किस्मा का पहचानने में प्रगति की गई है। वर्षा पीड़ित कम उर्वर क्षेत्रों के लिए उपयुक्त गहू की तीन नयी किस्मा और जो सक्कर बाजरा ज्वार और रागी की कुछ सुधरी किस्मा का भी विकास किया गया है। अनुसंधान के आधार पर कपास तिलहन तम्बाकू और कुछ सज्जिया और फसल की नयी किस्मा की खेती के लिये सिफारिश की गई है। उनको निम्न किये गया है। बाराली और अंधारानी क्षेत्रों के लिये उपयुक्त फसलों की किस्मा लवण और क्षार वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्मों और रंगिस्तानी हालत के लिए उपयुक्त पेडा की जातियां की खोज की जा रही है। हैरावाद में अंध रूख उष्ण कटिबंध का एक अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान स्थापित किया गया है। यह ज्वार अरहर और चना के सुधार केंद्र के रूप में काम करेगा और बाराली और अंध बाराली उष्ण कटिबंध में फसलों की खेती की पद्धतियों के सुधारे संस्था के विकास और प्रदर्शन का संवर्धन करेगा।

कृषि शिक्षा

महाराष्ट्र सरकार ने दो नए कृषि विश्वविद्यालय स्थापित किये हैं। हिमाचल प्रदेश में वन अनुसंधान और प्रमत्त में चाय अनुसंधान का काम कृषि विश्वविद्यालयों को सौंपा गया है। स्नातक पाठ्यक्रमों में छोटी जान की प्रौद्योगिकी पर काफी जोर दिया जा रहा है। दम कृषि विज्ञान केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव किया गया है ६ बहु फसल के क्षेत्र और एक एक डेरा बागवानी बागवानी खेती और कृषि इंजीनियरी में। यह केंद्र १९७३ ७४ के

अतः तत्काल स्थापित हो जायेंगे। अनुसन्धान के लिए छात्रवृत्तियाँ और अधि छात्रवृत्तियाँ की सख्या बढ़ाई गई है।

कृषि विपणन और निर्यात सवर्द्धन

दश म विनियमित बाजारों की सख्या जून १९७० म २७१६ तक पहुँच गया थी जिनमें मिनम्बर १९७१ म इनकी सख्या २३५६ थी। विनियमित बाजारों की कमियों का पता लगाने और बाजार इलाका का विकास करने और कुशल विपणन के लिए अग्रय सुविधाओं की व्यवस्था करने के मन्त्रालय म प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए अप्रैल और नवम्बर १९७२ क मध्य २६८ विनियमित बाजारों का सर्वेक्षण किया गया था। अंतरराष्ट्रीय विकास संध (विश्व बैंक) म बाजार विकास परियोजनाओं के लिए ऋण देना प्रारम्भ कर दिया है।

प्रमुख कृषि जिल्ला के निर्यात का मूल्य १९७१-७२ म ३४३ करोड़ रुपये तक बढ़ गया जिनमें गन्ना बप यह राशि ३२६ करोड़ रुपये थी।

भूमि सुधार

जुलाई १९७३ म आयोजित मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन म भूमि की उच्चतम सीमा के स्तर उच्चतम सीमा लागू करने की इकाई नए बानूना का बनाने की लक्ष्य अवधि अधिशेष भूमि के वितरण आदि के सम्बन्ध म मार्गदर्शी सिद्धान्त निर्धारित कर दिए थे। सक्षम म यह निश्चय किया गया है कि एक परिवार की जोत उन क्षेत्रों म जहाँ कि सिंचाई की निश्चित व्यवस्था है और साल म दो फसलें प्राप्त की जा सकती हैं, १० से १८ एकड़ के मध्य रखी जायें उन क्षेत्रों म जहाँ कि सिंचाई की सुविधाएँ हैं और बप म एक फसल प्राप्त की जा सके वहाँ २७ एकड़ की उच्चतम सीमा रखी जायें और अग्र प्रकार की सभी श्रेणियों की भूमियाँ के लिए उच्चतम सीमा ५४ एकड़ रखी जाए। उच्चतम सीमा लागू करने की इकाई ५ सदस्यों का परिवार निश्चित किया गया है जिसम पति, पत्नी और अवयस्क बच्चे सम्मिलित हैं।

बंगाल, पश्चिम बंगाल तमिलनाडु और असम के उच्चतम सीमा बानून अब मोटे तौर पर राष्ट्रीय मार्गदर्शी सिद्धान्त के अनुसार हो गये हैं। मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश बिहार हरियाणा और पंजाब म आवश्यक बानून बना लिए गए हैं। उत्तर प्रदेश, राजस्थान महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश म सम्बन्धित विधान मंडल द्वारा उच्चतम सीमा बानून पार कर दिए गए हैं। जम्मू और कश्मीर म भूमि सुधार (मशासन) अधिनियम १९७२ लागू कर दिया गया है। शेष राज्य अपन उच्चतम सीमा बानूना म मशासन के लिए कदम उठा रहे हैं।

आंध्र प्रदेश पश्चिम बंगाल उत्तर प्रदेश बिहार और अग्र कुछ राज्यासंध क्षेत्रों म पट्टेद्वारा भूमिहीन श्रमिकों के हितों के लिए अग्र बंध भूमि सुधारों का गति म तर्जो लाने के लिए भी बानून बनाये गये हैं।

पशुपालन

पालपाट (करन) पूछ (जम्मू तथा कश्मीर) और भिवानी (हरियाणा) म तान नई मघन पर विकास परियोजनाएँ प्रारम्भ की गई थी। २० नए आंग्र ग्राम एनाक भी स्थापित किए गए थे। मूरतग (थारपारकर नस्ल के लिए) अकनेसर (सुरती भसा के लिए) और चिपचिमा (सात मिथी नस्ल के लिए) म केन्द्रीय पशु प्रजनन पार्कों की स्थापना

का निष्ठा म काफी प्रगति हुई है। दागाण पामा की स्थापना क निष्ठा स्वीकृति मी गई है। जाम एक गौरी पशुधन क निष्ठा कारागुप्त (उड़ीसा) म घोर दूगरा मुर्गी भेगा क निष्ठा प्रस्तावना (समिन्नाह) म स्थापित किया जायेगा। मुक्त रिज्जो मुक्त म ३६६ वि २० पशुधन का प्रदान किया गया। मरर प्रजा की गति म मत्री सा। क निष्ठा पास रिज्जो म न कथा का भी स्थापना की जा रही है। टामाच स्थिररमैय घोर पतिवमा तम।। क म्पना म पशु प्रजनन परियोजनायें कार्याय की जा रहा है। चारा रिज्जो कायम का गठना २३ क निष्ठा विभिन्न राज्या म चार क बाजा का उत्पादन करन क निष्ठा पास स्थापित किया जा रहा है। झालाय वष क दोरात रिज्जो स्थित कर्णिय भद्र प्रजा पाम क निष्ठा धारुतिना म बाराहल नरन की १०३३ भद्र प्राप्त हुई है। धाध प्रश कर्णिक घोर तम्मु घोर कर्णा म तीन घोर भद्र प्रजा पामों पर काय स्थापन मर पर मत्री म प्रगति कर रहा है। उमर प्रश घोर राजम्पान म एम दा पामों की स्थापना क निष्ठा प्रस्ताव कर दिया गया है।

डेरी उद्योग

ममत्त डरा सयरा की दूध सामान की घोषा दीजि शमा। जा गत वष २६ माघ रिज्जो प्रति दिन था १६७३ म बज्जर २६ माघ रिज्जो म हा गई है। प्रस्ताव वष क मोरन ७ प्रतिरिक्त तरन दुग्ध सयरा घोर दा दुग्ध उत्पाद कार्याना का स्थापना का म। वष १६७२ ७३ क मत्त तव ७७ तरन दुग्ध सयरा ११ दुग्ध उत्पाद कार्याना घोर ६६ दुग्ध याजनाया सामीण डरी कर्णा का मितकर डरा एका की कुन मग्ना १२० हा गई है। रिज्जो म दूमरी डेरी की स्थापना क लिये धावम्पत कायवाट प्रारम्भ कर हा गया है। राट्टा वृषि मायाग न लघु घोर सामात वृषका घोर वृषि-श्रमिवा क माध्यम म दुग्ध उत्पादन विपन्न प्रपन अतरिम प्रनिवेदन म अनक सिपारिणों प्रस्तुत की हैं। इन प्रस्तावों पर याजना मायाग क परामश स विचार किया जा रहा है।

चीनी

चीनी की सामाय स्थिति दश म लगातार दूगर वष १६७१ ७२ म भा चाना क उत्पादन म गिरावट प्रान क कारण चीनी की स्थिति कठिन बना रही। एम झलावा पिछन वष का अपभावन कम स्टॉक वचन क कारण चानी वष १६७१ ७२ (फरवरी १६७१ सितम्बर १६७२) क दौरान कुल उपलब्धता पिछन तान वर्षों म सबसे कम थी। इम परिणामस्वरूप खुल बाजार म चीनी क मूया म पयाप्त बढि हुई। यह सुनिश्चित करन क निष्ठा कि घरलू उपभावनाया का उनकी चीनी विपयक जरूरता का उचित भाग उचित मूर्य पर मिलता रहे सरकार न अत्यावश्यक वस्तु अधिनियम क उपबधा क अधीन पटना जुलाई १६७२ म चीनी (मूल्य निधारण) आश १६७२ जारी कर इन प्रबधा का माविधिक आधार पर जारी रखा। इम माविधिक आशिन नियन्त्रण प्रणाली लागू कर दी। १६७२ ७३ क चीनी मौसम क प्रारम्भ स लबी चीनी की मात्रा बढाकर मासिक निम्नित का ७० प्रति शत कर दा गई थी।

चीनी का उत्पादन, उपत तथा मूल्य पिछल वष का १६ १ लाख मी० टन चीनी क वच जान आर ३१ १ लाख मी० टन क उत्पादन स १६७१ ७२ (फरवरी सितम्बर) के दौरान कुल उपलब्धता ४५ २ लाख मी० टन थी जबकि १६७० ७१ म ५६ ३ लाख मा० टन चीनी उपलब्ध था। १६७१ ७२ के दौरान चीनी कारखाना म आतरिक उपत क निष्ठा

३७ ८० लाख मी० टन चीनी ली गई थी जबकि १९७० ७१ म ४० २५ लाख मी० टन चीनी ली गई थी । १९७१ ७२ व दौरान चीनी का निर्यात बवल १ ४४ लाख मी० टन हुआ जबकि १९७० ७१ म ३ ६५ लाख मी० टन चीनी निर्यात की गई थी ।

(लाख मीटरी टन)

चीनी का उत्पादन, उपत और स्टॉक

	१९७० ७१	१९७१ ७२
पिछल मीसम का शेष स्टॉक	२० ६०	१८ १०
उत्पादन	३७ ४०	३१ १२
कुल उपलब्धता	५८ ३०	४९ २२
घपन	४० २५	३७ ८०
निर्यात	३ ६५	१ ४६
शेष स्टॉक	१८ १०	५ ६८

चीनी की मर्यादा जटिल हान के कारण १९७२ ७३ म खुल बाजार म चीनी क मूल्य म उल्लसनाय वृद्धि हुई । छ महत्वपूर्ण कट्टा, अयात हापुड, वानपुर वनकत्ता मद्रास बम्बई और दिल्ली म मूल्य अक्टूबर १९७१ म जा रि १८५ २०८ रुपये प्रति क्विंटल के बीच चल रहे थे बढकर मितम्बर १९७२ तक ३५८ ४०५ रुपये प्रति क्विंटल तक पहुच गए । जनवरी १९७२ म स्वच्छित वितरण की याजना लागू की गई । इस याजना के अधीन उद्योग मासिक निमुक्ति का ६० प्रतिशत १५० रुपये प्रति क्विंटल (उत्पादन शुच रहित) के निधारित मूल्य पर मरवार व। घरलू उपभाजनामा म वितरण करन और तात्कालिक जम्हरन पूरी करन क लिए देन क लिए सहमत हा गया था । स्वच्छित याजना के ३० जून १९७२ का समाप्त हान स मरवार न प्रत्यावश्यक वस्तु अधिनियम के अधीन पहली जुलाई, १९७२ स चीनी (मूल्य निधारण) आदेश १९७२ जारी कर साविधिक आशिक नियन्त्रण लागू कर इन प्रजघा का जारी रखा । चालू बष क दौरान चीनी क उत्पादन म कुछ सुधार हान की प्रत्याशा स खुल बाजार म चीनी के मूल्य म अक्टूबर दिसम्बर १९७२ क दौरान स्थिरता से नरमी की प्रवृति देखी गई । दिसम्बर, १९७२ के अन्त म चीनी के मूल्य ३५४ ३८१ रुपये के बीच चल रहे थे ।

चीनी उद्योग मे विस्तार चीनी उद्योग की चीनी उत्पादन की वार्षिक स्थापित क्षमता १९७०-७१ म ३७ लाख मी० टन म बढकर १९७१ ७२ के पिराई मीसम के दौरान ३६ १६ लाख मा० टन हो गई ।

चीनी पञ्चवर्षीय याजना म यह ब्यवस्था की गई थी कि १९७३ ७८ तक चीनी का उत्पादन ८७ लाख मी० टन के स्तर तक पहुच जाएगा । इस लक्ष्य को अगत मीजूदा यूनितड का विस्तार कर और अगत नई चीनी फक्ट्रिया मुम्पतया सरकारी क्षेत्र म स्थापित कर प्राप्त करना था । चीनी पञ्चवर्षीय योजना लक्ष्य क प्रति ५३ नई चीनी फक्ट्रिया (४६ सहकारी सहित) स्थापित करन और २७ मीजूदा यूनितड म विस्तार करने के लिए याइसम जारी किए गए । इस म चीनी उत्पादन की वार्षिक लाइसेंसशुदा क्षमता बढकर ५३ १७ मी० टन हा गई । चीनी की आतरिज खपत म वृद्धि हाने के कारण लाइसेंस क्षमता को बढाकर ५६ ०० लाख मी० टन कर दिया गया है ।

नई चीनी फक्ट्रिया लगान म आने वाली इडिनाश्या का पता लगाया गया ह आर

उन पर काबू पाने के लिए कायवाही शुरु कर दी गई है।

राष्ट्रीय कृषि आयोग

१९७१-७२ में राष्ट्रीय कृषि आयोग ने उर्वरक वितरण अच्छे विस्म क बीजा का बंधन और वितरण कृषि अनुसंधान क कुछ पक्ष विस्तार और प्रशिक्षण लघु और सीमांत किसानों और खतिहर मजदूरों के लिए ऋण सवायें लघु और सीमांत किसानों और खतिहर मजदूरों के जरिये दुग्ध उत्पादन और कृषि विश्वविद्यालयों में कृषि अनुसंधान क प्रभागों की स्थापना के सम्बन्ध में छ अंतरिम प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। इनमें अन्तर्गत आयोग ने अगस्त १९७२ में मदा सर्वेक्षण और भारत का मूदा मानचित्र, आलू क बीज भूमिहीन खतिहर मजदूरों के लिए बनाना क स्थान और उत्पादन मानव निर्मित वन विषय पर अंतरिम प्रतिवेदन प्रस्तुत किये। इन प्रतिवेदनों की जाच मन्त्रालय के सम्बन्धित वरिष्ठ अधिकारियों की अध्यक्षता में बनाय गय कायकारी दला द्वारा की गई है। १३ मार्च १९७३ को आयोग ने नीचे लिख विषय पर चार और अंतरिम प्रतिवेदन मन्त्रालय को प्रस्तुत किये (क) सिंचाई पद्धति का आधुनिक और समाप्य क्षेत्रों का एकीकृत विकास (ख) अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं के संगठनात्मक पहलू, (ग) जिस विकास परियोजना और निष्कालना का संगठन और उनके कृत्य, और (घ) समग्र ग्राम विकास कार्यक्रम। इन प्रतिवेदनों की जाच का काम भी शुरु कर दिया गया है।

राष्ट्रीय बीज निगम

राष्ट्रीय बीज निगम की स्थापना १९६३-६४ में की गई थी। अपने गत १० वर्षों में कायकाल में निगम ने अनेक रचनात्मक पय उठाये जिसमें हलिल क्रांति का माय प्रशस्तन हुआ।

१९६३-६४ में निगम ने नदीकोटपुर जिला बनूल (आंध्र प्रदेश) में बाज फाम कायम किया।

१९६४-६५—दूसरा फाउंडेशन बीज फाम हेमपुर जिला ननीतान (उ० प्र०) में कायम किया। अमरिक्की सहायता काय जसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों का मदद से सक्कर मक्का क बीजा का लाकप्रिय बनाने क लिए प्रदशन अभियान चलाया। निगम क काय वर्तमान राज्य सरकारों के कमचारियों और बीज उद्योग क प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण का कायक्रम चलाया।

१९६५-६६—भारत में बाज प्रामसिय सफाई और ग्रडिंग मशीन तयार करने क लिए उनक प्रोटोटाइप क विकास का काम शुरु किया। सक्कर ज्वार और बाजरा के फाउंडेशन क प्रमाणित बीजा का उत्पादन किया।

१९६६-६७—टाइचुग नेटिव १ संधान की बीनी किस्मा के बीजा का बडे पमाने पर गुणन शुरु किया। अधिक उपज देने वाली किस्मा क बीजा के फाउंडेशन बीज तयार करने क लिए कदम उठाए।

१९६७-६८—निगम ने स्नोबाल फूलगाभी क बीज पदा किए। बाज परीक्षण प्रयाग शाला कायम का जिस अंतरराष्ट्रीय बीज परीक्षण संध से मायता मिली।

१९६८-६९ गृह का नवानतम किस्मा क बीजा का बडे पमाने पर उत्पादन शुरु किया। 'राष्ट्र मध बाज सहायता काय' द्वारा चलाए पायाहार कायक्रम के लिए सजिमा क बीजा

का उत्पादन चालू किया।

१९६६-७०—मीड एकट, १९६६ के अंतगत बीज प्रमाणीकरण मानक तैयार करने में भारत सरकार की महायत्ता की। कई व्यापारिक फमला के बीजा का उत्पादन शुरू किया। मदाना में पहली बार झालू के बीजा का प्रमाणीकरण उनका गुणन, वितरण और एडि के बमी वाले क्षेत्रों में झालू के बीजा का उत्पादन किया।

१९७०-७१—हिमालय क्षेत्र में चुकंदर के बीजा का उत्पादन शुरू किया। बीज प्रामे सिंग भंडारण और विपणन-संबंधी पुस्तिका का अंतरराष्ट्रीय सहयोग से प्रकाशन किया।

१९७१-७२—देश में पहली बार चुकंदर के बीजा का उत्पादन किया जो अत्र तत्र विदेशों से मगाए जाते थे।

१९७२-७३-१०० फीमदी देसी तकनीक से बना एशिया का सबसे बड़ा बीज प्रोसेसिंग प्लांट कायम किया जिसमें बीज उत्पादकता यंत्र निर्माताओं और बीजा के ग्रेडिंग सफाई व प्रोसेसिंग में लगे लोगों को मदद मिलेगी। मंज जिला कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) में मजिया के फाउन्डेशन बीजा का काम कायम किया।

पिछले १० साल में कई समस्याएँ उठीं पर उनका समाधान कार्पोरेशन ने भारतीय कृषि अनुसंधान मन्त्रालय अन्तर्राष्ट्रीय एग्रेसिबो कृषि विश्वविद्यालयों राज्या के कृषि विभागों प्रगतिशील किसानों बीज उत्पादकों और यंत्र निर्माताओं की मदद से किया।

इस समय १३० बीज प्रोसेसिंग प्लांट चालू हैं। स्टावल पूनगामी चुकंदर और मूरजमुखी के बीजा का देश में ही उत्पादन किया जाने लगा है जो पहले विदेशों से मगाए जाते थे।

निगम ने मक्का के सकर बीजा के उत्पादन से काम शुरू किया। बाद में अनुसंधान से अग्र फमला के सकर निकाले गए जिनका उत्पादन भी निगम ने किया। सकर पवार और सकर बाजरा के बीजा का उत्पादन प्रारम्भ हुआ। सजिया चारे और रोजे की फसला व बीजा का भी उत्पादन हुआ। कार्पोरेशन इस समय ७० फमला के २१० किस्मा व बीज तैयार कर रहा है। ८००० प्रमाणित बीज उत्पादक वैज्ञानिक ढंग से बीजा का उत्पादन कर रहे हैं। १९६३-६४ में कार्पोरेशन की आमदनी ५ लाख ८० थी जो १९७२-७३ में ६॥ करोड़ २० हो गई।

निगम और बीज उद्योग ने वैज्ञानिक अनुसंधान का फल किसानों के लक्ष्यों ला दिया है। न सिर्फ अच्छे बीजा के उत्पादन को जानकारों का प्रसार किया है उन्हें उचित प्रकार उनका प्रयोग भी सभव बना दिया है। निगम के देश भर में ६०० विक्री केंद्र हैं।

शीत भंडारण

शीत भंडारण प्रदेश के अन्तर्गत फल, दूध डेरी उत्पाद अन्न मछली में जो अनुसंधान आदि जैसी जिज्ञा का भण्डारण करने वाले ८५ पर मीटर का या उससे अधिक की क्षमता वाले समस्त शीत भंडारण को कृषि विपणन सलाहकार से लाभम लेना अनिवार्य है। अक्टूबर १९७२ में इनकी संख्या १३६० तक बढ़ गई थी जबकि सन १९७१ के अंत में इनकी संख्या १३१० थी। अक्टूबर, १९७२ में स्थापित शीत भंडारण क्षमता १६ ७६ लाख मीटरों तक बढ़ गई थी जबकि १९७१ में स्थापित शीत भंडारण क्षमता १५ ०६ लाख मीटरों तक थी। शीत भंडारण के पम्पबन्ध में सूचना पत्रक और तकनीकी साहित्य प्रकाशित करने के अतिरिक्त नए उद्यमियों का तकनीकी और वाणिज्यिक मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया है।

(१९७०-७१ स १९७२-७३) के दौरान विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों को दिये गये अनुदान को दर्शाने वाला विवरण

क्रम	विश्वविद्यालय का नाम	१९७०-७१ रुपये	१९७१-७२ रुपये	१९७२-७३ रुपये
१	गाविन्धन राठौस पट्ट कृषि तथा तकनीकी विश्वविद्यालय पलनगर	५६०००००	५९४०००	६७४२०००
२	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना	६२७५२००	८८०६,०००	६०६३६००
३	उदयपुर विश्वविद्यालय उदयपुर	२०२२३७२	२७११०००	३६६००००
४	उड़ीसा कृषि तथा तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	२५८३०००	३६२५०००	३०८८०००
५	झारखण्ड प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय हैदराबाद	१२५००००	—	६६३६,१००
६	जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर	४४६६०००	५८०३०००	५४६००००
७	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय हैबल	३४३२०००	६६५७०००	६२६६०००
८	कल्याणी विश्वविद्यालय कल्याणी	—	१६०००००	६३२०००
९	महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ राहठी	४२६५०००	२३०४०००	६४८३०००
१०	असम कृषि विश्वविद्यालय जारहुट	२४८६७६२	४५००००	३२००,०००
११	हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार	३६८१०००	७५१६,०००	६८२३०००
१२	पंजाबराज कृषि विद्यापीठ अकोला	२७५००००	२५३५,०००	२६६७०००
१३	राजद्र कृषि विश्वविद्यालय पटना, बिहार	१००००००	२४८२०००	१६०००००
१४	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबेत्तूर	—	४३२,०००	१०२८०००
१५	हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (कृषि कम्पनक्स) सालन (हमाचल प्रदेश)	—	४०४,०००	१२००,०००
१६	बरस कृषि विश्वविद्यालय मन्थूथी	—	—	६०००००
१७	गुजरात कृषि विश्वविद्यालय ग्रहमदाबाद	—	—	२००००००
१८	चौध सभेलेन क लिये कृषि विश्वविद्यालयों की सस्था ।	—	—	३००००
		३६६४४३३४	५१५४२०००	६,६२३४७००

कुल

निर्यात सबद्धेन

भारत के निर्यात व्यापार में कृषि पण्यो का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वर्ष १९७१-७२ के दौरान ३४३ करोड़ रुपए तक के कृषि पण्यो का निर्यात किया गया था, जबकि १९७०-७१ में यह राशि ३२६ करोड़ रुपए थी। इस प्रकार निर्यात में ५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि मुख्यतः मछली और मछली उत्पादों अर्थात् तम्बाकू, काजू की गिरी, कच्ची पटमन, कच्ची कपाम, चीनी, गुलाब की तकड़ी और चण्डा के कारण हुई है।

१९७२ के दौरान अनुमानत २३-२६ करोड़ रुपये (लाभन तथा भाडा) के मूल्य में कुल ४४५.५ हजार मी० टन खाद्यान्ना का आयात हुआ था जबकि १९७१ में २०५४ हजार मी० टन और १९७० में ३६३०.५ हजार मी० टन खाद्यान्ना का आयात हुआ था। १९७२ के दौरान विभिन्न देशों में आयात किए गए खाद्यान्ना का अनाजवार व्यौरा और १९७१ और १९७० में आयात की गई कुल मात्रा नीचे दी जाती है —

खाद्यान्नों का आयात

(हजार मी० टन)

वर्ष	देश	गेहूँ	चावल	जाड़
१९७२	ऑस्ट्रेलिया	२३ २	—	२३ २
	कनाडा	२२० १	—	२२० १
	संयुक्त राज्य अमेरिका	७१ २	—	७१ २
	संयुक्त अरब गणराज्य	—	६६ ६	६६ ६
	थाईलैण्ड	—	६१ १	६१ १
	कुल आयात	३१४ ५	१२७ ०	४४१ ५
१९७१	कुल आयात	१८१४ ०	२४० ०	२०५४ ०
१९७०	कुल आयात	३४२४ ७	२०५ ८	३६३० ५

भारतीय खाद्य निगम

भारतीय खाद्य निगम खाद्यान्ना की अधिप्राप्ति, आयात वितरण, संचयन, संचालन और उनकी बिक्री करने के लिए केन्द्रीय सरकार की एकमात्र एजन्सी है। निगम अग्र विविध प्रकार के कार्य भी कर रहा है जिनमें उर्वरकों का सम्भारना, धान कटना, और पीप्टिविद्यधायित खाद्य पदार्थों का उत्पादन करना। १९७१-७२ के दौरान निगम की सेवाओं का उपयोग शरणार्थी सहायता के लिए पुनर्वासि विभाग को गेहूँ की सप्लाई करने के अलावा चीनी, नमक, तेल, खाने के तेल, त्रिफालाई आदि जैसी अग्र अत्यावश्यक वस्तुएँ सप्लाई करने के लिए भी किया गया। १९७२-७३ के दौरान निगम का लक्ष्य चीनी के थोक वितरण का कार्य भी साधा गया था। अतः निगम अग्र में न केवल खाद्यान्ना के प्रवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है बल्कि अग्र बहुत से कार्यों को करने, जोकि उन्हे समय पर सौंपे गए हैं के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

निगम ने १९७१-७२ की फसल में लगभग ७७-४५ लाख मी० टन खाद्यान्ना खरीदे थे। अधिप्राप्ति का जिम्मेवार थोरा निम्न प्रकार है —

भारतीय खाद्य निगम द्वारा अधिप्राप्ति

(हजार मी० टन में)

घरीफ अनाज	घरीफ विगमन मोगम (नव १९७१ स अगस्त १९७२)	रबी अनाज	रबी विगमन मोगम (अप्रैल १९७२ स अगस्त १९७३)
-----------	---	----------	---

१	२	३	४
चावल तथा चावल के हिस्सा स धान	२ ५१७ २	गहू गे	४ ६७७ ८ ७ ८
मक्का	१५० ४	जवा	६५ ५
बाजरा	१ ६	दालें	५ ६
दालें तथा अन्य अनाज	१७ ६		
कुल	२ ६८६ ८	जोड़	५ ०५७ ८

चालू घरीफ मौसम में निगम ने फरवरी १९७३ में अनाज तथा अनाज १५ २० लाख मी० टन खावत और अनाज १ ३१ लाख मी० टन मोट अनाज दालें और अनाजों की अधिप्राप्ति की है।

१९७३ के दौरान केन्द्रीय पूल स अनाजों की कुल निर्यात अनाज १०० लाख मी० टन स थोड़ी अधिच थी। जनवरी फरवरी १९७३ के दौरान वास्तविक निर्यात अनाज १५ लाख मी० टन हुई थी। मात्र, १९७३ में प्रत्याशित निर्यात ७ लाख मी० टन गई।

निगम ने १९७२ के दौरान ७ ३१ करोड़ रुपये के मूल्य के ८३ हजार मी० टन अनाज बेचे थे। इसी प्रकार निगम ने जनवरी फरवरी १९७३ के दौरान ५५ लाख रुपये के मूल्य के ६ हजार मी० टन अनाज बेचे।

१९७२ ७३ (माच १९७३ तक) के दौरान निगम ने अनाज के भोजन कार्यक्रम के अधीन स्कूल के बच्चों में मुफ्त वितरण करने के लिए लगभग १२ ८१२ मी० टन अनाज तैयार किया। ३१ माच, १९७३ के बीच लगभग ५०० मी० टन अनाज तैयार हुआ।

निगम ने अनाज और अनाजों में ५३ ५७६ मी० टन पोस्टिव अनाज १६ माच १९७३ तक तैयार किया था।

relax the beautiful way on

Swastik FOAM

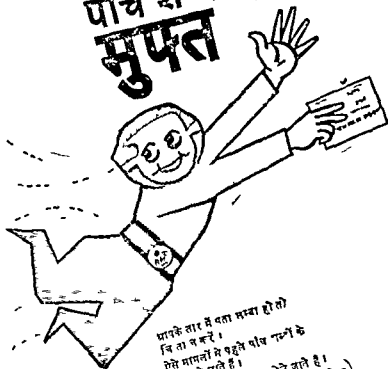


Swastik Foam the light luxurious cushioning material has more pore per area to give you cool airy comfort It is supple yet firm to support your body right through its use Easy to wash Swastik Foam is available as readymade mattresses pillows bolsters and back rests or by the metre for divans lounging chairs and car seats

Swastik FOAM *for the rest of your life*


SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD
KHADKI PUNE 411003

तार पते में पाँच शब्द मुफ्त



आपके तार में पता सम्बा हो तो
 बि ता न करें ।
 ऐसे मामलों में पहले पाँच शब्दों के
 पते लिखे जाते हैं ।
 बा के पाँच शब्द मुफ्त भेजे जाते हैं ।
 पत में दस से अधिक शब्दों हो तो अतिरिक्त
 शब्दों के लिये पते लिखे जाते हैं ।
 रूपया पते में बाहर के नाम के बा
 पिनकोड सम्बा आवश्यक लिखिये ।
 इसके कोई पते नहीं लिखे जाते ।
 माद रलिये डीक और पूरा पता
 लिखने से तार जल्दी पहुँचता है ।

**IMPORT
SUBSTITUTE
GADRE KEYS**



ALL TYPES AS
PER SPECIFICATION

GADRE BROTHERS MADHAVNAGAR
PHONE NO 2318 GRAM SEWA

औद्योगिक पीतक पॉलिमर लवण
करिता



भिडे अँड सन्स प्रा लि
विजाचीनगर सांगली (महाराष्ट्र)

उच्चम सिमेन्ट पाईप मशीनरी
१० मी मी ते १२ मी मी पाईप
करिता



भिडे अँड सन्स प्रा लि
सांगली (महाराष्ट्र)

5% 25.64%

देखिये
यह कैसे सच है

आप 7-वर्षीय
राष्ट्रीय वचत पत्रों
(द्वितीय घोर तताय निगम)
पर इतना ब्याज कमाते हैं

आपका वार्षिक दुगला धाया है	₹ 15 000	₹ 30 000	₹ 50 000	₹ 70 000
5 भावकर मुक्त प्रत्यक्ष ब्याजकर है भारतीय —	5.95%	7.18%	12.73%	25.64%

कर-मुक्त

राष्ट्रीय वचत पत्रों
से पूंजी लगाइये



राष्ट्रीय वचत संगठन
(भारत सरकार)

सहकारिता

दश व आर्थिक पुनर्गठन व अन्य क्षेत्रों का भाति हमने स्वाधीनता के बाद सहकारिता आन्दोलन के क्षेत्र में भी छत्तीस वर्ष पूरे कर लिये हैं। ये छत्तीस वर्ष सहकारिता आन्दोलन के लिए और अधिक महत्वपूर्ण मित्र हुए हैं। इस अवधि की सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि देश ने यह पाया कि इस आन्दोलन का सफल बनाया जाए। इस अवधि में सहकारिता आन्दोलन में अपने आपको मजबूत बनाने और अपना विस्तार करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। १९०४ के सहकारी अधिनियम के बाद के लगभग पचास वर्षों में भारत में सहकारिता का स्वरूप बहुत ही सीमित और नगण्य-सा था। इसके प्रभाव और कार्य में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई थी। उस समय सहकारिता आन्दोलन का एक बहुत सीमित ध्येय था और वह यह था कि गरीब खेतिहरों का मद करना। लेकिन इस सीमित कार्य का पेशाना ग्रामीण समस्या का सुलझाने की दृष्टि से कोई विशेष प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

१९५० के बाद के वर्षों में यह आन्दोलन खूब फला फूला और अब इसका कार्य मात्र ऋण देना ही नहीं रह गया है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा १९५१ में ग्रामीण ऋण सर्वेक्षण के लिये नियुक्त का गइ समिति एक ऐसा पहला प्रयत्न था जिसके द्वारा आर्थिक आयाजन के एक साधन के रूप में इस आन्दोलन की सम्भावनाओं का उपयोग किया गया। इस समिति ने ग्रामीण ऋण विभिन्न स्तरों पर राज्य की सहायता और हाट व्यवस्था तथा विधायन के माध्यम से ऋण का सम्बन्ध जाड़न की एक एकीकृत योजना का समर्थन किया और उसने इस बात पर भी ज़ार दिया कि सहकारिता आन्दोलन का सफल बनाने के लिए प्रशिक्षित कर्मचारी नियुक्त किए जान चाहिए।

सहकारी विकास योजना का एक प्रमुख सभ्य है ऐसी योजनाओं का स्वरूप तयार करना जिनके अंतर्गत अधिक से अधिक लोगों का रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकें तथा विशेष कर समाज के कमजोर वर्ग की आय के साधन मिल सकें। सहकारिता के अंतर्गत कृषि ऋण का सुविधाएं और पंजी निवेश विपणन कृषि उत्पाद की प्रक्रिया भंडारण तथा उपभोक्ता वस्तुओं का वितरण आदि सम्मिलित हैं।

गत १० दशकों में सहकारी समितियों की वार्षिक वित्तीय में २२ गुनी वृद्धि हुई है याना कुल वार्षिक वित्तीय २७६ करोड़ रु० से बढ़कर अब ६००० करोड़ रु० से भी अधिक हो चुकी है। इस तरह का आश्चर्यजनक वृद्धि का प्रमुख कारण संस्था की आन्तरिक क्षमता तथा संस्था का आर्थिक वृद्धि में योगदान देने का दृढ़ संकल्प रहा है। *म समय दश में लगभग तीन लाख

पच्चीस हजार सहकारी संस्थाएँ हैं तथा उनमें लगभग ५ करोड़ २० हजार व्यक्ति काम में लगे हैं। उन्हें लगभग ७२४ करोड़ ₹० वेतन दिया जाता है।

ऋणदात्री सहकारी समितियाँ

सहकारी समितियों की ऋण क्षमता तथा ऋण पद्धतियों की हमेशा समीक्षा की जाती रही है कि इनमें अधिक लागत को राजगार के अवसर मिल सकें। इन सहकारी समितियों द्वारा छोटे और सीमान्त किसानों, खेतिहर मजदूरों और जनजातों के लोगों का कुछ सहायक धन दिए जाय ताकि वे अपनी खेती की आय के अलावा थोड़ी आय और कर सकें। नीतियों का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है कि छोटे और सीमान्त किसानों का अधिक लाभ मिल सके। इसके लिए सहकारी विभाग ने सहकारी वक्ता राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम तथा कृषक विकास एजेंसी और सीमान्त किसान कृषि श्रमिक एजेंसियों की वित्तीय सहायता में कुछ उद्योग मूर्गीपालन और मछली उद्योग आदि चालू किये हैं। राज्य और राष्ट्रीय स्तर के विपणन संघों ने राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की सहायता से तकनीकी और प्रशासनिक कार्य छोले हैं जो सहकारी समितियों को व्यापार और प्रचार-प्रसार के आधुनिक तरीकों को जानकारी कराते हैं।

विपणन कार्य

१९७१-७२ में ३००० कृषि विपणन सहकारी संस्थाओं में लगभग ७६० करोड़ ₹० मूल्य के कृषि उत्पादों का विपणन किया। इसके अतिरिक्त इन सहकारी संस्थाओं में लगभग ३०० करोड़ ₹० मूल्य के खाद का वितरण किया है। यह कुल खाद वितरण का ६० प्रतिशत रहा। इसके अतिरिक्त ७५ करोड़ ₹० मूल्य के अन्य कृषि निवेशों का भी वितरण किया। विपणन सहकारी समितियों में लगभग ११५ करोड़ ₹० मूल्य की उपभोक्ता वस्तुओं का ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण भी किया।

सहकारी संसाधन इकाइयों ने अपना सामूहिक जिम्मेदारियों पर ध्यान देते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था की बहुमुखी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ३१ दिसम्बर १९७० तक सहकारी क्षेत्र में १७६७ कृषि संसाधन इकाइयाँ थीं, इनमें से १४३६ अर्थात् ८१ प्रतिशत चालू की जा चुकी है। इन इकाइयों का वार्षिक व्यवसाय अनुमानित ६५० करोड़ ₹० रहा है।

शहरी उपभोक्ता सहकारी समितियाँ

सहकारी आन्दोलन बड़ी तेजी से शहरी क्षेत्रों में भी फैलता जा रहा है। १९७१-७२ में उपभोक्ता सहकारी समितियों की २००० शाखाओं में लगभग २५० करोड़ ₹० मूल्य का माल बचा। उन सहकारी समितियों में उपभोक्ता उद्योग भी चालू किया। ऐसी ६० इकाइयाँ न उत्पादन भी शुरू कर दिया है तथा अन्य ६० इकाइयों की स्थापना का विभिन्न स्थितियों में है। इनमें से अर्धवाश इकाइयों में ममाला पीमन आटा पीमन आटा-चक्की कच्चा वारीक करने वक्ता और टलरिंग संबंधी काम होत हैं।

सहकारी क्षेत्रों में सामूहिक उपभोग के सामानों का उत्पादन तथा वितरण भलीभांति हो सकता है। सहकारिता के आधार पर अनक उद्योगों का चालू करने के लिए प्रोत्साहन दिया जा सकता है इनमें मजदूर छोटे उद्योगपतियों और विभिन्न इंजीनियरों को विभिन्न औद्योगिक और उपभोक्ता सामानों का तैयार करने का उपयुक्त अवसर मिलेगा।

५० समय दश म लगभग ४८ हजार औद्योगिक सहकारी समितिया चल रही है तथा इनम कुल ३४ लाख व्यक्ति लगे हुए है। अब मध्यम और छोटे स्तर की अनन्य औद्योगिक सहकारी समितिया चालू की जा रही है। बैरल म एक स्कूटर कारखाना मार बडौला म एक पालीस्टर तंतुया वर परिणजना का चालू किया जाता इस दिशा म उन्नतनीय प्रगति का उत्तम उदाहरण ह।

शहरी क्षेत्रा म सहकार्य आवास सबधी कार्याकलाप सहकारी विभाग व उत्तम उदाहरण है। इस समय शहरी क्षेत्रा म लगभग ४७६ ८६ करो १० भूख्य की सहकारी आवास याजनाए चालू ह। जून १९७३ तक दश म राज्य स्तर की १६ तथा १८ ०५० प्राथमिक सहकारी आवास सामादनिया थी।

सहकारी विकास की विभिन्न स्तरा की विशेष और त्वरित आवश्यकताया का देखन हुए एव विस्तृत और सुनियोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलान की याचना बनाइ गई ताकि कम विकाम व लिए प्रशिक्षित कार्मिका का उपलब्ध कराया जा सक। निसम्बर १९७२ तक देश व १४ प्रशिक्षण कालेजा तथा ६६ प्रशिक्षण केन्द्रा म लगभग १ लाख २२ हजार विभिन्न स्तर व अधिकारिया तथा ५१ लाख २० हजार गर अधिकारिया का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

सहकारिता द्वारा रोजगार

उपभोक्ता भण्डार सुपर बाजार तथा विभागीय उपभोक्ता भण्डार म कुल मिलाकर २० हजार स ज्यादा लाग का रोजगार मिला है। राज्या म उपभोक्ता सहकारी आन्दोलन व अन्तगत ३७ नई याजनाए चलान का काम हो रहा ह। योजनाए आंध्र हरियाणा महार, असम उड़ीसा महाराष्ट्र, कनाटक, गुजरात तमिलनाडु प० बंगाल तथा उत्तरप्रदेश म चलाई जायेंगी। इनके अन्तगत ६ लाख स ऊपर की आबादी वाल शहरा म बडे बडे सुपर बाजार तथा दो स चार लाख की आबादी वाले नगरा म छोटे छोटे उपभोक्ता बाजार बनाये जायेंगे। इनमें १०३९ पडे लिखे तथा १६५० साभरा का काम मिला। इनमें इजी नियरा का भी रोजगार मिलन व अवसर है।

औद्योगिक सहकारी समितिया म १० लाख ३२ हजार व्यक्तिया का रोजगार मिला हुआ है। इनम ८ लाख युनकरा की तथा शेष अन्य उद्योगा की सहकारिया हैं। इसी प्रकार का श्रमिक सहकारी समितिया म एक लाख ५५ हजार व्यक्ति लगे हुये है। इनम स अधि बाण आदिवासी श्रमिक ह।

४४० लाख व्यक्ति सहकारी क्षेत्र के मछली पालन म उद्धमरत हैं। देश भर म २८२ लाख राग भवन सड़क, पुल आदि के निर्माण काय म लगे हुये हैं। यातायात सहकारी समितिया म लगभग ५ हजार सवा निवृत्ति फौजिया का रोजगार मिला हुआ है तथा ४७ हजार अन्य लोग भी लगे हुये हैं।

देश भर म १ हजार द्विप सहकारी समितिया हैं तथा इनक ६० हजार विमान मदस्य है। सहकारी क्षेत्र म १४९ दूध मण्डाल सघ हैं। मिचाइ का काय भी सहकारी क्षेत्र म चनाया जा रहा ह। महाराष्ट्र म तीन हजार तथा आंध्र म ४२१ सिचाइ के सामूहिक द्यूबवल तथा कुए हैं।

दश भर म एक लाख ६० हजार ७८० सहकारी समितिया हैं। इनम पूर समय काम करने वाल ५२ ८८९ सचिव तथा अशकालीन ६३ ११३ सचिवो का काम मिला हुआ ह।

पाचवीं योजना मे सहकारी समितिया

१९७३ के प्रारम्भ में १९६३-६४ की योजना में सहकारी समितियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें पाचवीं पंचवर्षीय योजना में सहकारी समितियों का प्रति दृष्टिकोण पर विचार किया गया जिसमें मुख्य रूप से सहकारी समितियों का विकास में विशेष ध्यान देने को दूर करना और यह सुनिश्चित करना कि सहकारी समितियाँ छात्र विद्यालयों और समाज के निचले वर्गों को पर्याप्त और तात्कालिक सेवाएं प्रदान करें। इसके लिए राष्ट्रीय और राज्य सरकारों द्वारा १९६६-६७ के परिषद की सिफारिशों का मर्द। पाचवीं पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य में १९७०-७१ तक प्रति वर्ष १२०० करोड़ रु० के प्रत्यक्ष निवेश और ३५० करोड़ रु० और ११०० करोड़ रु० के प्रत्यक्ष निवेश और दीर्घकालीन ऋण भी शामिल है। १९७०-७१ तक १२०० करोड़ रु० मूल्य के कृषि योजना का वितरण किया जाएगा जिनमें चौबीसवां योजना के अन्तिम वर्ष में ५५० करोड़ रु० के प्रादान का वितरण लक्ष्य था।

कृषि ऋण देने के लिए सहकारी समितियाँ और वाणिज्य बैंकों के बीच प्रभावकारी समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया गया और कृषि ऋण प्रदान करने के लिए वाणिज्य बैंकों द्वारा किए गए प्रयासों की सहायता की गई। इस बात पर बल दिया गया कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक दान दान तथा चीनी और मानव बंधु जैसी आवश्यक वस्तुओं का वितरण उपभोक्ता सहकारी समितियों के माध्यम से होना चाहिए। सम्मेलन में इस बात का भी आग्रह किया कि तेजी से चीनी के थोर वितरण का कार्य भी उपभोक्ता सहकारी समितियों का सौंप दिया जाए। यह भी सिफारिश की गई कि उबरक निर्माताओं का अपने उत्पादन का पर्याप्त अंश सहकारी समितियों के माध्यम से वितरित करने के लिए नियत करना चाहिए।

देश में कृषि विकास के उत्पादन विपणन ससाधन और भण्डारण के काम में लगाई गई सहकारी समितियों की सहायता के लिए राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम ने १३ करोड़ रु० के परिषद की स्वीकृति प्रदान कर दी है और तदनुसार कार्यक्रमों का निर्धारण कर दिया गया है।

देश में कृषि सहकारी समितियों के विकास के लिए बीस योजनाओं का कार्यान्वित करने के अतिरिक्त राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम जिसके ऊपर सहकारिता का सम्पूर्ण कार्यभार है १९७३-७४ में पांच नई परियोजनाओं को और कार्यान्वित करेगा। सहकारी क्षेत्र में मध्यम प्रकार की चीनी फ़ैक्ट्रियों की स्थापना करने और नाशिकीटमारा का देवाई छिड़काव करने कृषि मशीनरी का निर्माण उन्नत बीजा का बड़े पैमाने पर उत्पादन ससाधन और भण्डारण और पालिस्टर फ़िनामट धाग का उत्पादन करने के लिए निगम वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।

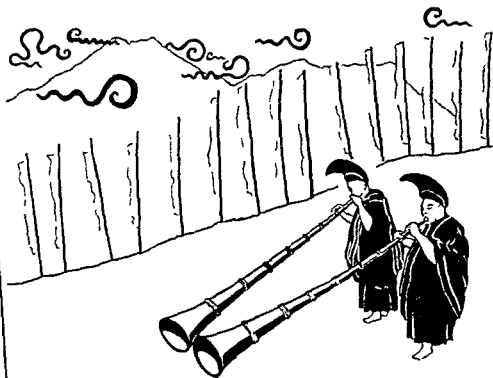
इस कार्यक्रम में जनजातीय क्षेत्रों में सहकारी विपणन और ससाधन का विकास पूर्वी क्षेत्र में सहकारी विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ करने उत्तर प्रदेश में सहकारी डेरी-उद्योग की पुनः स्थापना करने पश्चिमी क्षेत्र में फलों के सहकारी विपणन का विकास करने और दक्षिण सहकारी उबरक एक्का की स्थापना करने जैसी कुछ महत्वपूर्ण योजनाएँ शामिल हैं।

कृषि में सफलता प्राप्त करने की तकनीकों में बीज ससाधन उद्योग का भारी महत्व है और कारण कार्यक्रम के अन्तर्गत सहकारी क्षेत्र में उन्नत बीजा के उत्पादन ससाधन भण्डारण और विपणन पर अधिक बल दिया गया है।

PLANNING A HOLIDAY ?

MAKE IT SIKKIM THIS TIME
FOR YOUR HOLIDAY IN THE HILLS
YOU CAN'T DO BETTER THAN

GANGTOK



SET AGAINST THE TOWERING,
SNOW-CAPPED KHANGCHENDZONGA RANGE,
MORE THAN FIVE THOUSAND FEET
ABOVE SEA LEVEL
IF YOU WOULD LIKE TO LEARN OF OUR WAY OF LIFE,
OUR ROBEDL AMAS AND OUR MONASTERIES,
OUR ORCHIDS
OR EVEN JUST HOW TO GET HERE,
WE WOULD BE MOST HAPPY
TO RECEIVE YOUR ENQUIRIES
ADDRESSED TO

THE TOURIST DEPARTMENT
GOVERNMENT OF SIKKIM, GANGTOK



**SUCH
PERFUMED
FRESHNESS**

found only in

**MYSORE
SANDAL
SOAP**

*Natural & perfumed Mysore
Sandal Soap containing pure
Sandalwood oil wraps you
all day long in its delightful
fragrance*

*You will lose its fragrant
luxury*



GOVT. SOAP FACTORY
BANGALORE

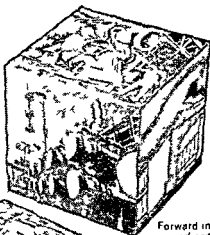


If your
Industry
manufactures
best quality
products,
you want
best quality
raw-material

GMDC

OFFERS
BEST QUALITY

FLUORSPAR
in Metallurgical &
Acid Grades



Forward inquiries
and orders to

**GUJARAT MINERAL
DEVELOPMENT
CORPORATION
LIMITED**

G A C U d e h g

5th Floor

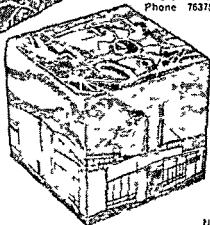
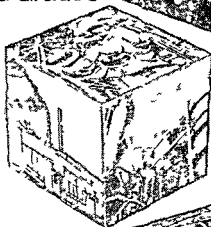
Natraj Theatre Building

Ashram Road

Ahmedabad 9

Gram MINCORP

Phone 76375-76 77



SILICA SAND

in Various
mesh sizes

**AND
BAUXITE**

in
Various Grades

मध्य प्रदेश वित्त निगम

(राज्य वित्त निगम अधिनियम १९५१ के अधीन निगमित)

शिव विलास पैलेस, इन्दौर

- निगम नये उद्योगों को एवं वर्तमान उद्योगों को विस्तार करने अथवा आधुनिकीकरण अथवा नवीनीकरण करने के लिये लम्बी और मध्यम अवधि के लिये आवश्यक शर्तों पर वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- ऋण निम्नतम रु० १०,०००/- से अधिकतम रु० ३०,००,०००/ तक प्रदान किये जाते हैं।
- विच्छेद जिलों में लघु उद्योगों को विशेष सुविधाएँ जैसे कम माजिन, व्याज की रियायती दर, लम्बी अवधि के बाद ऋण की विरत देय होना और इसी प्रकार की अन्य सुविधाएँ।
- बेरोजगार इंजीनियरिंग स्नातकों एवं भूतपूर्व सैनिकों को भी विशेष शर्तों पर ऋण उपलब्ध है।
- होटल तथा यातायात उद्योग तथा वकशाप्त को भी ऋण की पात्रता है।
- आय०डी०ए० लाईन आफ क्रेडिट के अंतर्गत मशीनरी आयात करने को भी ऋण उपलब्ध है।

विस्तृत जानकारी के लिये कृपया सम्पर्क साधिय

प्रबंध संचालक

शाखाएँ

रायपुर	७।१४, महात्मा गांधी मार्ग
जबलपुर	२३३७, राईट टाऊन
भोपाल	१४५, मालवीय नगर
ग्वालियर	जल विहार, मोती महल
सतना	रीवा रोड, सविट हाऊस के सामने

जे० बी० मंधाराम

के

जे० बी० ग्लूकोज

जे० बी० साल्टो

बिस्कुट और स्वीट्स



शक्तिदायक और पौष्टिक तत्वों से भरपूर हैं।

जे. बी. मंधाराम एण्ड कंपनी प्रा. लि.

ग्वालियर-४७४००५

स्थापित वर्ष १९४६ ५०

फोन २५६३४

उत्तर प्रदेशीय सहकारी गन्ना समिति संघ लि०, लखनऊ,

१२, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ

प्रदेश का १३८ सहकारी गन्ना समितियाँ की सर्वोत्तम गस्त्या । यन्त्रा साथ व मन्त्र्य समितिमा के लगभग २२ लाख गन्ना उत्पादन की क्रय विपणन मन्त्र्य धी समस्यामा का समाधान करने हुए तथा कृषि उत्पादन व गन्ने की पैदावार बढ़ाने हेतु सभी आवश्यक माघना का मुलभ करने म सतत प्रयत्नशील हैं ।

लघु सिंचाई साधना को बढ़ावा देना, घाटा का उपयोग बढ़ाने हेतु घाट भंगारा का निर्माण, विभिन्न प्रकार के उबरक, घाटा व कौटनामक पदार्थों का प्रयोग अननिमित्त बीजा का वितरण आदि कार्यों को सुविधाजनक बनाते हुए कार्यान्वित करना मघ का मुख्य कार्य है ।

आधुनिकतम मशीना से मुक्त गन्ना साथ प्रस मदस्य समितियाँ की मुद्रण आवश्यकतामा की पूर्ति करता है ।



MSSIDC

महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास निगम

कच्चा माल, विश्वा पर मशीनो की पूर्ति उत्पादित माल की वित्री तथा निर्यात आयात पिछडे हुवे क्षेत्रा के लिये एकात्म विकास कार्यक्रम, आदि सेवामा को लेकर प्रतिवष महाराष्ट्र के लगभग बारह हजार लघु उद्योगो तक पहुंचने वाला देश का अग्रणी लघु उद्योग निगम उद्यमशीलता को बढ़ावा देने हेतु निम्न पत्रिकाएं प्रकाशित करता है

1 लघु उद्योग-भराठी मासिक पत्रिका वार्षिक शुल्क रु० 6

2 MSSIDC NEWS BULLETIN अग्रजी पाक्षिक-वार्षिक शुल्क रु० 6

इसके अलावा

PERSPECTIVE SERIES के अतगत छह अग्रजी पुस्तिकाएं (कुल मूल्य रु० ३५०) तथा ORIENTATION SERIES के अतगत तीन अग्रजी पुस्तिकाएं (कुल मू० ३००) भी विक्री के लिये उपलब्ध है ।

कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें —

जनता संपक अधिकारी

महाराष्ट्र लघु उद्योग विकास निगम

कृपानिधि बलाड इस्टेट बम्बई 1 टेलिफोन 261121

समाचारपत्र एवं प्रसारण

आधुनिक काल के सामूहिक वनपत्र जगत में भारत ने २६ जनवरी १९६० को प्रवेश किया। 'नमस्तिन बंगाल गजट' प्रकाशित हुआ था। बंगाल गजट और वनकत्ता जनरल एडवर्टाइजर को मूल प्रतिष्ठा भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय वनकत्ता में सुरक्षित हैं। बंगाल गजट का बाद में अन्तर्ग्रहण किया।

भारतीय भाषाभाषा क पत्रों का जन्म राजनीतिक आवश्यकता का चक्र हुआ। अंग्रेज इनके विरुद्ध थे। अतः भारतीय भाषाभाषा क समाचारपत्रों का जीवित रहने के लिए भयंकर संघर्ष करना पड़ा। उन्हें अपमान सहना पड़ा दण्ड भागना पड़ा और भारी बर्तन देना पड़े। पत्रों पर नियंत्रण करने के लिए १९७६ में भाषाई समाचारपत्र अधिनियम (बर्ना क्यूलर प्रेस एक्ट) बनाया गया। इंडियन स्टेट्स एक्ट १९२२, आफिशियल मिस्ट्रेट्स एक्ट १९२३ इंडियन प्रेस (इंफरजेंसी पावर्स) एक्ट १९३१ फोरन रगुलेशन एक्ट १९३२ इंडियन प्रोटेक्शन एक्ट १९३० और इंडियन प्रोटेक्शन एक्ट १९३४ बनाये गए। हुमर महापुत्र के समय सरकार ने पत्रों के साथ सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से केन्द्र में समाचारपत्र परामर्शागत समिति (प्रेस एडवाइजरी कमेटी) स्थापित की। पत्रों का इससे सहायक र की सुविधा प्राप्त हो गई। सरकार ने इसकी शक्ति को माना। मार्च १९६७ में समाचारपत्र कानून जांच समिति (प्रेस लाज इन्क्वायरी कमेटी) की स्थापना की गई। प्रेस सम्बन्धी सम्मन् कानूनों की छानबीन करने का कार्य इसको सौंपा गया। इसको उचित मिफारिशें करने के लिए भी कहा गया। मई १९४६ में अनेक घण्टिन और अवाछनीय कानून रद्द हो गए।

कागज का संकट

वर्ष १९७३ के दौरान समाचारपत्रों का अखबारों कागज के भीषण अभाव के संकट से ग्रस्त होना पड़ा तथा समाचारपत्रों के इतिहास में पहली बार अनेक समाचार पत्र कागज के अभाव के कारण जहाँ बंद हो गये वहाँ सभी प्रमुख समाचारपत्रों का अपना पल्लु कम करने का बाध्य होना पड़ा। 'नवभारत गन्धर्व व हिन्दुस्तान' जन्म दैनिक पत्रों का अठ के बजाय चार पल्लु कर देने पड़े। कुछ पत्रों का साप्ताहिक अखबार तक रखने को बाध्य होना पड़ा।

सरकार ने कागज के निर्धारित वाट में से ३० प्रतिशत की कटौती की जिसे कारण पत्रों के प्रसार पर भी प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

भारत में अखबारों कागज की कुल खपत में समय लगभग २ २०,००० टन है। इनमें से ४० ००० टन कागज मध्य प्रदेश के नेपा का सरकारी मिल उत्पादन करती है तथा शेष बाहर के देशों से आयात किया जाता है। पिछले २० वर्षों में भी अधिक समय से नेपा की मिल

म यह उत्पादन लगभग इसी मात्रा में हो रहा है। यद्यपि विन्शास अखबारों कागज व प्रायात करने पर हर वर्ष करोड़ों रुपये की बहुमूल्य विन्शास मुद्रा खर्च की जा रही है परन्तु ऐग म अखबारों कागज का उत्पादन बढ़ाने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक कार्य ध्यात नहीं किया गया।

जहाँ तक अखबारों कागज व प्रायात का सम्बन्ध है कुछ समय पहले तक बताया हम सबसे अधिक अखबारों कागज सप्लाई करना था। परन्तु साक्षिण सच व गाय हमारा बढ़ते हुए सम्बन्ध के कारण उसका बड़ा भाग हमने उगम एग्रीकल्चर प्रारम्भ कर दिया। १९७३-७४ व वर्ष में हम विन्शास कागज का जो प्रायात करेंगे उगम अनुसार बताया गया ६० ००० टन साक्षिण स्त ५० ००० टन एग्रीकल्चर व ग्रीकल्चर १३ ००० टन, बगला दस से २० ००० टन तथा ७ ००० टन व लगभग पूर्वी यूरोप व देशों से होगा। इस प्रकार गज मिनाकर (अगर वायदे व अनुसार कागज मिला) तो १५० ००० टन अखबारों कागज की व्यवस्था होगी। फिर भी ५० से लेकर ६० हजार टन की कमी रहेगी। इन्धियन एण्ड ईस्टर्न यूज पर सासाइटी व एक प्रतिनिधिमंडल ने अगस्त १९७३ व दौरान कागज का उपनिधि व उद्देश्य स श्री के० नरेन्द्र के नतृत्व में साक्षिण सच बनाया स्वीडन तथा अमेरिका की यात्रा की तथा विदेशों से कागज प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। विन्शास कागज प्रायात प्रारम्भ हो गया।

संसद की सावजनिक उद्यम समिति ने २१ अगस्त १९७३ का अपनी ४५वा रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत करत हुये कहा कि वह लगातार इस बात पर जोर देती प्रायी है कि देश व भीतर वासी अच्छी विन्शास का अखबारों कागज मुहैया करन के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम तैयार किया जाय जिससे इसकी मांग पूरी की जा सक और प्रायात पर निर्भर रहने से बचा जा सक।

रिपोर्ट में कहा गया है कि समिति निजी और सावजनिक दोनों क्षेत्रों में पशगी योजनाओं और उसकी तामील पर जोर देती रही है जिससे पर्याप्त मात्रा में और होड से सवने वाली कीमता पर कागज तैयार किया जा सक। मगर सरकार समिति को जो प्राश्नागन देनी रही है उस उसने पूरा नहीं किया।

समिति ने बताया है कि इस देश में कुल २ २० लाख मीट्रिक टन अखबारों कागज की मांग है और नया मिल इसका सिर्फ १८ प्रतिशत कागज तैयार करती है। बाकी का प्रायात करना पडता है। १९७१-७२ में २३ २० करोड रुपये का अखबारों कागज विदेशों से मगाना पडा।

कुल मिलाकर इस समय ८ ५ लाख मीट्रिक टन कागज की मांग है और प्राशा की जाती है कि पाचवी योजना के अंत तक यह १३ ३ लाख मीट्रिक टन पहुच जायगी। इस समय देश में सिर्फ लगभग ७ ४ लाख मीट्रिक टन कागज बनता है।

समिति ने यह प्राशा व्यक्त की है कि पाचवी योजना के नियोजन और तजी से कार्यान्वयन के जरिए मांग और उत्पादन के बीच की खाई काफी हद तक पाटी जा सनेगी।

अखबारों कागज की मांग और पूर्ति

(हजार टन)

सन्	कुल पूर्ति	अनुमानित मांग
१९५१-५२	५० ५	७५ ०
१९६०-६१	६७ ६	१२० ०
१९७३-७४	१६३ १	२५० ०

कागज के मूल्य में वृद्धि

पिछले कुछ समय से कागज की कीमता में भारी वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए १९६६-७० में आयातित अखबारी कागज का मूल्य औसतन १३३६ रुपये प्रति टन था जिसमें १९७३ में वह २,३०० रुपये प्रति टन जा पहुँचा। नेपा कारखाने में बनने वाला देशी कागज इसी अवधि में १,२२८ रुपये प्रति टन से बढ़ कर १८०० रुपये प्रति टन हो गया। छपाई का सफेद कागज १९६६-७० के दौरान २,००० रु० प्रति टन सरलता से मिल जाता था वह अब दुगने भाव पर यानी ४००० रुपये प्रति टन पर भी मुश्किल से मिल रहा था। अनुमान लगाया जा रहा है कि अगले वर्ष यानी १९७४-७५ में आयातित अखबारी कागज २६०० रुपये प्रति टन और नेपा कागज २४०० रुपये टन हो जायेगा। छपाई का कागज ४५०० रुपये टन तक पहुँच सकता है। उल्लेखनीय बात यह है कि १९६६ में रुपये के अवमूल्यन से पूर्व आयात किया हुआ कागज लगभग ८०० रुपये टन मिलता था। इस प्रकार सात वर्षों के बीच इसकी कीमतें तिगुनी से भी ज्यादा हो गयी हैं।

भारतीय पत्रों की आयु इस समय देश में १८ समाचारपत्र ऐसे हैं जो अपनी आयु १०० वर्ष पूरा कर चुके हैं। इनमें ६ दैनिक हैं। इस समय चारू पत्रों में सबसे पुराना समाचारपत्र गुजराती का 'सुबह समाचार' है जिसका प्रकाशन १८२२ में प्रारम्भ हुआ तथा १८५५ में यह दैनिक हो गया। अंग्रेजी के टाइम्स आफ इंडिया का प्रकाशन १८३८ में प्रारम्भ हुआ जो कि १८५० में दैनिक बन गया। अन्य दो प्रमुख दैनिक जाम ए जमशेद (गुजराती) बम्बई (१८३२) तथा पायनियर (अंग्रेजी) लखनऊ (१८६५) हैं।

दैनिक समाचारपत्रों के प्रकाशन के मामले में १९७१ में भी भारत का स्थान सप्ताह में दूसरा रहा। १९७१ के अन्त में देश में १२,२१८ समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे थे जबकि १९७० में इनकी संख्या ११,०३६ थी। इस प्रकार १९७१ में ११,८२२ समाचारपत्र और प्रकाशित हान लगे तथा पिछले पाँच वर्षों में समाचारपत्रों की संख्या ४३,१२ बनी।

हिन्दी के सबसे अधिक समाचारपत्र

देश में सबसे अधिक समाचारपत्र हिन्दी में प्रकाशित किए जा रहे हैं जिनकी संख्या ३,११६ है। हिन्दी के बाद सबसे अधिक समाचारपत्र २,३६० अंग्रेजी में और इसके बाद १,००५ उर्दू में प्रकाशित हो रहे थे। दैनिक समाचारपत्रों की दृष्टि से भी हिन्दी में सबसे अधिक, अर्थात् २,२२ दैनिक समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे थे। भारत में अंग्रेजी के ७८ मराठी के ७७ और उर्दू के १०२ दैनिक समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

साप्ताहिक पत्रिकाओं की दृष्टि से भी हिन्दी का स्थान सर्वोपरि है। हिन्दी में १,३६४ साप्ताहिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही थीं।

संख्या की दृष्टि से भी हिन्दी समाचार पत्रों में संख्या सबसे अधिक बनी। आलोच्य वर्ष में हिन्दी के ४२२ और समाचारपत्र प्रकाशित हो लगे, जबकि अंग्रेजी समाचारपत्रों की संख्या १४३ और उर्दू समाचारपत्रों की संख्या १०७ बनी।

प्रसार संख्या १९७१ के दौरान समाचारपत्रों का प्रसार संख्या भी बढ़ी।

१९७१ में दैनिक समाचारपत्रों की अपेक्षा साप्ताहिक पत्रिकाओं का प्रसार संख्या अधिक थी। दैनिक समाचारपत्रों का प्रसार संख्या ६१ लाख थी और साप्ताहिक पत्रों का प्रसार संख्या ८०.७ लाख थी।

अंग्रेजी, हिन्दी और तमिल समाचारपत्रों की प्रसार संख्या सबसे अधिक थी। इनकी प्रसार संख्या क्रमशः ७० ०३ लाख, ६० ४३ लाख और ३५ ६९ लाख थी।

सबसे अधिक बित्री वाले दैनिक देश में सबसे अधिक बिचन वाले पांच दैनिक समाचार पत्र हैं। इनके नाम हैं आनन्द बाजार पत्रिका-बंगला, मलयालम मनोरमा-मलयालम मुगातर-बंगला, नवभारत टाइम्स-हिन्दी तथा लोकसत्ता-मराठी।

प्रातः के अनुसार पत्रों की संख्या-१९७१

राज्य	दैनिक	साप्ताहिक	अन्य	कुल १९७०	कुल १९७१
महाराष्ट्र	१२०	१९६	१,२०६	१,७०६	१,८४५
उत्तर प्रदेश	१२६	७७२	७८४	१,४७३	१,६८२
दिल्ली	३१	२२४	१,०८६	१,२४२	१,३४१
पंजाब	३१	२३६	१,०२३	१,२०४	१,२६३
तमिलनाडु	१०४	११६	७३४	८७०	९५७
आन्ध्र प्रदेश	३४	२०६	३६८	५८७	६३८
राजस्थान	३२	३०२	३३१	५७२	६६५
केरल	६३	६०	४८०	५६६	६३३
गुजरात	४३	१४४	३६०	५२७	५४७
मध्य प्रदेश	६६	२७०	१८६	४६७	५२८
पंजाब	३३	१६७	२६३	४६३	४६३
कर्नाटक	६२	१३४	२६५	३६८	४६२
बिहार	१०	१०८	१५०	२२५	२६८
हरियाणा	६	८३	१११	१६६	२००
उड़ीसा	७	२२	१०६	११६	१३५
असम	७	४१	७३	११०	१२१
जम्मू-कश्मीर	१८	७६	२६	१०२	१२३
चण्डीगढ़	५	३५	७०	६५	११०
हिमाचल प्रदेश	—	२७	४१	५४	६८
मणिपुर	६	२	३२	३७	४३
पाण्डिचेरी	—	४	३२	३२	३६
गोवा	६	६	२०	३२	३५
त्रिपुरा	४	६	२	१४	१५
नागालैंड	—	२	२	४	४
अरुणाचल	१	२	२	४	५
कुल	८२१	३ ६०८	७ ७२१	११ ०३६	१२ २१८

समाचारपत्रों की सख्या (१९६६ म १९७१ तक)

वर्ष	दैनिक	ग्रह-माप्ताहिक तथा पामिक	साप्ताहिक	अथ	कुल
१९६६	५६९	५२	२४०३	१६३६	८६४०
१९६७	५८८	५८	२६९७	५९७२	९३१५
१९६८	६३६	५१	२८९२	६४४०	१००१९
१९६९	६५०	५२	२९७२	६००६	१०२८१
१९७०	६६१	६०	२१६२	७११९	११००६
१९७१	८२१	६८	३६०८	७७०१	१५२१८

दैनिक पत्रा म त्रिदिवसीय पत्र भी सम्मिलित है।

भाषा और अवधि के अनुसार समाचारपत्रों की सख्या (१९७१)

भाषा	दैनिक	साप्ताहिक	अथ	कुल १९७१	कुल १९७०
१ अंग्रेजी	७८	३०५	२००७	२३९०	२२६७
२ हिन्दी	२२२	१३९६	१५८०	३११६	२६९४
३ असमी	२	१०	२९	४१	३८
४ बंगला	१५	१७०	५७५	७६०	७०७
५ गुजराती	४३	१६६	६०५	५९६	५७७
६ कन्नड	३९	९४	१५२	२८५	२४७
७ मलयालम	६०	७८	३६३	४८१	४३२
८ मराठी	७७	२७५	३८९	७४१	६८०
९ उडिया	७	१७	९३	११७	१०३
१० पञ्जाबी	१८	१०३	१३८	२५९	२३६
११ संस्कृत	१	२	२१	२४	२७
१२ सिंधी	४	३१	६३	९८	७२
१३ तमिल	९७	८९	६०९	८१५	५२१
१४ तेलुगू	१७	१०२	२६७	३८६	३६१
१५ उर्दू	१०२	४६८	६३५	१००५	८९८
१६ त्रिभाषी	२४	२४९	६८२	९५५	८६३
१७ बहुभाषी	४	६६	१६७	२१७	१९९
१८ अथ	११	२९	११०	१५०	१३६

दैनिका म द्विदिवसीय एव त्रिदिवसीय शामिल हैं।

सर्वाधिक प्रसार सख्या वाले समाचारपत्र

	१९७१
दैनिक—ग्रान्द बाजार पत्रिका (धमना)	३,०८ ३१६
साप्ताहिक—कुमुदम (तमिल) मद्रास	३ ७४ ३७३
मासिक म सवप्रथम स्थान कत्याण (गारखपुर) का रहा जिसकी प्रसार सख्या १६२ ३८६ रही ।	

१९७१ म एक लाख से अधिक प्रसार सख्या वान दैनिक २०, साप्ताहिक १२ तथा त्रय नियतकालिक १० थ ।

देश के चार महानगरा से निक्लने वाल समाचारपत्रा की प्रसार सख्या कुल पत्रा की प्रसार सख्या के ५५ ७ प्रतिशत है ।

भाषानुसार समाचारपत्र प्रसार सख्या-१९७१

(हजार म)

भाषा	दैनिक	साप्ताहिक	त्रय	१९७०	१९७१ कुल
अंग्रेजी	२२१६	१३०६	३४७५	७१ ७३	७० ०३
हिन्दी	१५१६	१७६६	२७३१	५८,५२	६०,४३
असमी	—	४६	१६	१०६	६८
बंगला	५६७	३१६	५८३	१३ ८८	१४ ६६
गुजराती	६८३	४४८	६५२	१६ २४	१७ ८३
कन्नड	३१४	२४७	२८१	८ ४४	८ ४२
मलयालम	११११	७६८	६३१	२२ ६५	२५ १०
मराठी	६१०	४३४	६८६	१६ २०	२० ३०
उडिया	६०	१६	६२	२ २४	१ ६८
पजाबी	७३	१७५	१६७	३,६६	४४५
संस्कृत	१	—	१०	१३	११
सिन्धी	२१	४३	३१	१ २६	६५
तमिल	६०८	१४०६	१२७४	३३ ८३	३५ ६१
तलुगू	२३७	३५७	४३५	१० ५७	१० ७६
उदू	३७६	४३१	५६०	१४ ५५	१३ ६७
द्विभाषी	३५	२०६	५६०	८ ६४	८३१
बहुभाषी	—	३७	१४६	१ ६०	१ ८६
त्रय	५	२४	६२	८७	६१
कुल	६० ६६	८०,६५	१,२३ ५४	२ ६३ ०३	२ ६६,१६

एक लाख से अधिक प्रसार सख्या वाले दैनिक पत्र

	१९७१	१९७०
१ (बंगला) आनन्द बाजार पत्रिका (कलकत्ता)	३०८ ३१६	२,८८ ५४७
२ (मलयालम) मलयालम मनोरमा (कोट्टायम)	२११ ०५०	१,६३,१२२
३ (बंगला) युगान्तर (कलकत्ता)	२१० ८६६	१,८६ १४३
४ (अंग्रेजी) हिन्दू (मद्रास)	१४१ ३७६	१ ३३ ७०१
५ (अंग्रेजी) टाइम्स आफ इंडिया (बम्बई)	१ ५६ ६०४	१ ५२ ५८२
६ (मराठी) लोकमत्ता (बम्बई)	१,६० ०८४	१,५२ ८७०
७ (अंग्रेजी) स्टेटमैन (कलकत्ता)	१ ४५ १२३	१ ४० ५८८
८ (हिंदी) नवभारत टाइम्स (दिल्ली)	१ ८२ ३००	१,५२ २६३
९ (अंग्रेजी) हिन्दुस्तान टाइम्स (दिल्ली)	१ ४६ ५६६	१ ४० ६१८
१० (मलयालम) केरल कौमुदी (तिरुवेन्द्रम)	१ ४२ ३१७	१ ३७ ०७१
११ (मलयालम) मातभूमि (एर्नाकुलम)	१ ४०,२७१	१,२२ ८४४
१२ (हिन्दी) हिन्दुस्तान (दिल्ली)	१,५४ १६१	१,२८,६२७
१३ (अंग्रेजी) अमृतबाजार पत्रिका (कलकत्ता)	१ १६ ११८	१ १२ ६८६
१४ (तमिल) थाथी (मद्रास)	१ ४४ १३६	१ ०३ ०४५
१५ (मलयालम) मातभूमि (कालीकट)	१ २५,५७१	१ २८ ६८२
१६ (तमिल) दिनमाण (मदुराई)	१ ११,११०	१ ०३,७६८
१७ (मराठी) सकाल (पूना)	१ ००,७८६	१ ०० ७००
१८ (मराठी) महाराष्ट्र टाइम्स (बम्बई)	१ १४ ७८६	१ १३ ३०३
१९ (अंग्रेजी) इंडियन एक्सप्रेस (बम्बई)	१ ०३ २००	१,०४ ४३०
२० (गुजराती) सदेश (अहमदाबाद)	१ ०२ ०४६	६८ ६६६
२१ (अंग्रेजी) टिन्डून (चंडीगढ़)	१,०५ १५३	६३ ८४६
२२ (मलयालम) मलयालम मनोरमा (कालीकट)	१,०६ ६२४	६५ ३८२

एक लाख से अधिक प्रसार सख्या के एकाधिक संस्करण वाले दैनिक

१ (अंग्रेजी) इंडियन एक्सप्रेस (अहमदाबाद बंगलौर बम्बई दिल्ली मद्रास मदुराई तथा विजयवाडा)	४,६२ ००६	४,४८ ०१८
२ (तमिल) थाथी (मद्रास, मदुराई कोयम्बटूर, त्रिचुरापल्ली तिरुनवेली तथा वेतलार)	३ ८६,५८१	२,६८,०१०
३ (मलयालम) मातभूमि (काचीन, कालीकट)	२,६५ ८४२	२,४४ ४८६
४ (मलयालम) मलयालम मनोरमा (कालीकट कोट्टायम)	३,१७,६७४	२ ८८ ६६६
५ (अंग्रेजी) टाइम्स आफ इंडिया (अहमदाबाद, बम्बई दिल्ली)	२ ६२ ३०२	२,४४,७८१
६ (हिंदी) नवभारत टाइम्स (दिल्ली, बम्बई)	२५०,१५२	२,११,५५६

७ (अंग्रेजी) स्टेटसमन (दिल्ली कलकत्ता)	१९३,५२२	१ ८५ ६०२
८ (तमिल) दिनमणि (मद्रास मदुराई)	१६७,१६१	१ ५३ ३४६
९ (अंग्रेजी) हिंदू (मद्रास कोयम्बटूर)	२०१ ३५७	१ ८१ ०८६
१० (तनगू) आर्य प्रभा (बंगलौर विजयवाडा)	१ १७ ४६०	१ ०६ १४०
११ (गुजराती) सदेश (अहमदाबाद बडोला)	१ ०२ ४६	१ २१ ३६१
१२ (मराठी) सवाल (बम्बई, पूना)	१०० ७८४	१ १५ २६६

समाचार समितियाँ

२००० म गमय भारत म प्रमुख रूप म चार समाचार समितियाँ बनिक् समाचार पत्रा को समाचार उपलब्ध करा रही है। ये है—पी० टी० आई० हिन्दुस्थान समाचार य० एन० आई० और समाचार भारती। इनके अतिरिक्त देश म कुल २६ भारतीय एवं १६ विदेशी समाचार समितियाँ की सेवाएँ भी पत्रा को उपलब्ध है।

प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पी० टी० आई०) यह अंग्रेजी म सबसे पुरानी अखिल भारतीय समाचार एजेंसी है। स्वामी के० सी० राय द्वारा स्थापित एसासियेटेड प्रेस के स्थान पर इसकी १९४७ मे स्थापना हुई। १९६८ म इसमें कुछ सुधार किये गये। विदेशी समाचारपत्रा के लिए इसका सम्बन्ध रायटर (ब्रिटिश) ए० एफ० पी० (फ्रान्स) तथा ए० पी० (अमेरिका) से है।

पी० टी० आई० का स्वामित्व पत्र-मालिका तक सीमित है। एशिया म इस समय इसके मुकाबले की दूसरी समाचार एजेंसी नहीं है। समाचारपत्रा के अतिरिक्त आकाशवाणी भी इसमें समाचार लेती है।

यूनाइटेड यूज ऑफ इंडिया (यू० एन० आई०) इसकी स्थापना १९५६ म हुई। इसका स्वामित्व भी पत्र मालिका तक सीमित है। आकाशवाणी भी इसकी सेवा लेता है। यह विदेशी समाचार सेवा जर्मनी की डी० पी० ए० अमेरिका की य० पी० आई० तथा रूस की तास से लेती है।

हिन्दुस्थान समाचार कायकर्ताओं के सहकारी स्वामित्व की यह बहुभाषी समाचार समिति है। यह हिन्दी उर्दू अंग्रेजी उडिया मलयालम मराठी गुजराती बंगला असमी कन्नड़ पंजाबी आदि विभिन्न भाषाओं म सवाद भेजन का कार्य करती है। १९४८ म बम्बई म इसकी स्थापना हुई थी। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को टैनीप्रिंटर सयत पर स्थान दिवान का श्रेय इसी का प्राप्त है। १९५७ म यह सहकारी समिति म परिणित कर दी गई। यह संचार की आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न है। सारे देश म आज विभिन्न भाषाओं के लगभग एक सौ पचीस समाचार पत्र इसके ग्राहक हैं और देश म इसके एक हजार से भी अधिक सवात्कताओं का जाल बिछा हुआ है। आकाशवाणी के राष्ट्रीय प्रसारण के अतिरिक्त क्षेत्रीय प्रसारण के लिए आकाशवाणी के विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों को इसकी सेवाएँ उपलब्ध है। इसमें प्रसंग लेख माना के अन्तर्गत विभिन्न पत्रा का लेख सेवाएँ दना प्रारम्भ किया है जा युगवाता नाम से प्रसारित हो रही हैं। नेपाल की राष्ट्रीय सवाद समिति से समाचारों के आसानी आदान-प्रदान की व्यवस्था है।

समाचार भारती एक पब्लिक लिमिटेड कम्पनी के रूप म इसकी स्थापना हुई। इसमें लगभग ६६ प्रतिशत अंश (शेयर) का स्वामित्व राज्य सरकार का है। इसमें

१९६७ में काय प्रारम्भ किया। यह भी बहुभाषी समाचार समिति है तथा हिन्दी मराठी गुजराती, तमिल में सवाए दे रही है। इसकी सेवाएँ आकाशवाणी का उपलब्ध हैं।

अथ भारतीय ममितियाँ हैं—इण्डिया प्रेम एजेंसी एमोसिएटेड यूज सर्विस (हैदराबाद), इंडिया न्यूज एण्ड फीचर इलायम (नई दिल्ली)।

प्रमुख अन्तराष्ट्रीय एजेंसियाँ इस प्रकार हैं

(१) रायटर (२) एमोसिएटेड प्रेस आफ अमेरिका, (३) एजसी फ्रांस प्रेम (४) तास यूज एजेंसी। (५) यूनाइटेड प्रेम इंटरनशनल, (६) नियर एण्ड फार ईस्ट यूज (एशिया) लि० (७) डुटश एजेंगट्र प्रेम (वेस्ट जर्मन नेशनल यज एजेंसी) (८) टेलीग्राफश एजेंसिजा नावा (जनजूगा), (९) युगोस्लाविया इत्यादि। कुछ विदेशी एजेंसियाँ भारत को विश्व समाचार देती हैं और भारत के समाचार अपने देश के ग्राहक पत्रों को भेजती हैं।

प्रेस परिषद्

भारत सरकार ने प्रेस परिषद् अधिनियम (१९६५) के अन्तर्गत ४ जुलाई १९६६ का प्रेम परिषद् की स्थापना की। इस परिषद् का उद्देश्य भारत में पत्र स्वतंत्रता की रक्षा करना एवं समाचार-पत्रों के स्तर को सुधारना है। यह समाचारपत्रों और पत्रकारों के लिए समाचार संहिता तैयार करने में सहायता देगी।

जांच

माच ८ दिसम्बर १९७२ के दौरान समाचारपत्र परिषद् को धारा १३ के अधीन समाचारपत्रों और नियतकालिक पत्रों के विरुद्ध ८६ शिकायतें मिलीं जबकि २७ शिकायतें १९७१ से भी पड़ी हुई थीं। समाचारपत्र परिषद् ४० मामलों में जांच जारी नहीं रख सकी (ये मामले बंद कर दिए गए) क्योंकि या तो ये मामले परिषद् के कार्य क्षेत्र के बाहर थे या उनके बारे में मायालय फ-मना कर चुका था या शिकायत करने वाला म पूरा विवरण नहीं मिला था या कहने पर भी औपचारिक रूप से शिकायत दर्ज नहीं कराई गई थी। अथ मामलों पर कोई कार्यवाही नहीं की गई क्योंकि मामलों बहुत पुराने थे।

कुल मिलाकर परिषद् ने १६ शिकायतों पर विचार किया। इन १६ शिकायतों में ६ शिकायतें रद्द कर दी गई थीं। विचार के लिए अनुमानित शिकायतों में न एक उत्तरदायी सम्पादक की भत्सना की गई जबकि अथ सम्पादकों का चेतावनी दी गई। इनमें से ४ शिकायतें साम्प्रदायिक लेखा के बारे में ६ अश्लीलता के बारे में तथा बाकी विभिन्न प्रकार की पत्रकारिता की गलतियों के बारे में थीं।

समाचारपत्रों के लिए आचार संहिता

परिषद् ने दिसम्बर १९७१ के पहले सप्ताह में आपातकालीन स्थिति के दौरान भारतीय समाचारपत्रों और सवाद समितियों के सम्पादकों तथा सवादपत्राग्राहकों के लिए आचार संहिता तैयार की जिसे उनको किसी गलती के कारण दण्ड का सुरक्षा पत्र कोई आच न आ जाए।

समाचारपत्रों की आर्थिक स्थिति के बारे में तय एकत्र करने के लिए गठित समिति ने सभी दैनिक समाचार पत्रों को एक प्रस्तावली भेजी जिसमें उनमें १९६७ से १९७२ तक का पांच साल का अवधि में अपनी आय और व्यय के बारे में जानकारी देने के लिए

वहा गया है। समाचार पत्रों से १९७० से ७४ तक के अगल तीन वर्षों की उनकी अनुमानित आय और व्यय के बारे में भी जानकारी मांगी गई है।

दूर-दर्शन

तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में बम्बई (पूना में रिले की सुविधाएँ), श्रीनगर मद्रास, बलकता और लखनऊ (बानपुर में रिले की सुविधाएँ) दूरदर्शन केन्द्र स्थापित किए जायेंगे और साथ ही दिल्ली के वर्तमान दूरदर्शन केन्द्र की शक्ति बढ़ाई जायगी। अगस्त में १९७३ में एक दूरदर्शन प्रेषण केन्द्र स्थापित हो गया है। कन्नडा केन्द्र का क्षेत्र और बनाने के लिए दुर्गापुर और आसनसोल में भी रिले प्रेषित लगाने का विचार है। दिल्ली में एक ऊँची मीनार बन जाने से अब दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र के कायनम ४० की बजाय ६० किलोमीटर की दूरी पर भी दिखाई देने लगे हैं। मसूरी में भी एक प्रेषण मीनार बनकर दिल्ली के केन्द्र के प्रसारण को बढ़ाने की योजना है।

प्रचार

इस साल १६ क्षेत्रीय प्रचार यूनिटें बनाई गईं। अब इनको कुल सन्ध्या १९६ हो गई है। इन क्षेत्रीय यूनिटों ने मन्त्रालय के अन्य प्रचार विभागों, राज्य सरकार एजेंसियाँ सरकारी क्षेत्र के उपग्रामों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर काफी प्रचार काम किया। महत्वपूर्ण मेला और उत्सवों के अवसर पर प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए गये।

फिल्म डिवीजन

फिल्म डिवीजन हर वर्ष २०० से अधिक फिल्म तयार करता है। इनमें से ६० बसचित्र ५२ समाचार चित्र (राष्ट्रीय), ५२ भत्रीय समाचार चित्र और ६ विशेष समाचार चित्र होते हैं।

१५ भाषाओं में तयार फिल्म डिवीजन के समाचार चित्रों में देश विदेश के समाचार होते हैं। ये फिल्मों देश के ७५०० से ज्यादा गिनेमापनों और प्रशस्ती-पाडियाँ द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं। इस समय हम सन्ध्या ४६६ प्रिंट प्रदर्शन के लिए जागे किए जाने हैं जबकि पिछले वर्ष के प्रारम्भ में उनकी सन्ध्या ४३० थी।

१९७२-७३ के दौरान फिल्म डिवीजन ने ८१ फिल्मों का निर्माण किया।

प्रकाशन विभाग

विभाग द्वारा १९७२ वर्ष में कुल ६२ पुस्तकें और पुस्तिकाएँ निकाली गईं जिनमें से ३७ अंग्रेजी में, २४ हिन्दी में और ३१ अन्य भारतीय भाषाओं में थीं।

अपने प्रकाशन की विदेशों में बिक्री बनाने का अभियान का भाग के रूप में प्रकाशन विभाग ने १९७० में सीधे ही अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मंच और प्रकाशिकाओं में भाग लेना शुरू कर लिया।

भारतीय अर्थ-व्यवस्था

भारत में राष्ट्रीय वित्त तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—(१) भारत सरकार का वित्त (२) राज्य सरकारों का वित्त, (३) स्थानीय सस्थाओं का वित्त। संविधान ने निधि जमा करने का अधिकार विभक्त कर रखा है। केंद्रीय सरकार के समान राज्य सरकारों को भी कर लगाने का अधिकार है। जो धनराशि प्राप्त होती है चाहे वह निधि सग्रह से हो कर सग्रह से प्राप्त हो या बाजार स ऋण लेने में वह समेकित निधि में जमा होती है। इस समेकित निधि से कोई राशि संसद की स्वीकृति के बिना नहीं ली जा सकती। दूसरा धन 'सावजनिक लेखा' में जमा होता है। इस खच करने के लिए संसद की स्वीकृति आवश्यक नहीं है। आकस्मिक व्यय के लिए भारत की आकस्मिक निधि स्थापित की गई है। राज्यों में भी वस प्रकार तीन धन विभाग हैं।

संसद एवं विधान सभाओं के वित्तीय नियम ठीक ठीक व्यवहार में आते हैं या नहीं, इसे देखने का काम महालेखा परीक्षक का है। विनियोग की गई राशि बटनी नहीं चाहिए। सरकार जो खच करे, उस पर उसको विधि मण्डल या संसद की स्वीकृति लेनी चाहिए। रेलवे का बजट केंद्रीय बजट से अलग रहता है। रेलवे के द्वारा सरकार को अपनी आय में स कितना भाग दे, यह हर तीन वर्ष बाद निश्चित किया जाता है। साधारणतः रेलवे में लगी सरकार की पूंजी का मामूली ब्याज ही रेलवे देती है यह ६ प्रतिशत से कम होता है। इनका नाम लाभांश (डिविडेंड) रखा गया है।

वित्त मंत्रालय

भारत सरकार का वित्त प्रबंध और सम्पूर्ण वित्तीय व्यवहार के लिए वित्त मंत्रालय उत्तरदायी है। प्रबंधक मंत्रालयों के सहयोग से एक यह मंत्रालय भारत सरकार के सभी व्यय का नियन्त्रण करता है। सरकारी कर व ऋण-नीति का नियमन भी यही करता है। वक-व्यवस्था और मुद्रा सम्बन्धी समस्याओं का निपटारा यही करता है तथा सम्बन्धित मंत्रालयों के सहयोग से देश की मुद्रा का नियमन और उचित उपयोग की व्यवस्था करता है। प्रतिभूमि सविदा (विनियमन) अधिनियम १९५६ के शासन तथा शेयर बाजारों के विनियमन से सम्बन्धित कार्य अथ विभाग को सौंप दिया गया। सरकारी उद्यम कार्यालय (ब्यूरो ऑफ पब्लिक इण्टरप्राइजेज) जो पहले समन्वय के विभाग के अधीन था २४ जनवरी, १९६६ से वित्त मंत्रिमंडल सचिवालय (मंत्रिमंडल कार्य विभाग) के अधीन कर दिया गया।

व्यय, धन और समन्वय विभाग अलग धनग मन्त्रियों के अधीन हैं। राजस्व और

बीमा तथा सरकारी उद्यम कार्यालय का एक ही गचिव है। हर विभाग क अधीन धनक गगठन है।

वित्त मंत्रालय क अतगत अभी तान विभाग है—राजस्व और बीमा विभाग व्यय विभाग, तथा ग्रथ विभाग।

राजस्व व बीमा विभाग यह सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करा की व्यवस्था और बीमा के मामला क लिए उत्तरदायी है। राजस्व-नौति के विषय म सरकार को सलाह देने का महत्वपूर्ण काय इसी का है। स्वण नियंत्रण विनियम का प्रशासन भी एसी के प्रधान है।

१९७२ ७३ म ये प्रत्यक्ष कर रू—आय-कर सम्पत्ति-कर अति-कर (अधिलाभ-कर) मतक सम्पत्ति शुल्क और दान-कर। अप्रत्यक्ष कर हैं सधीय उत्पादन शुल्क सीमा शुल्क केन्द्रीय उत्पादन शुल्क एवं अतिरिक्त सीमा शुल्क।

व्यय विभाग इसक अधीन ये प्रभाग है—प्रतिष्ठापन प्रभाग असनिक व्यय प्रभाग, रक्षा प्रभाग कमचारी निरीक्षण एकर लागत लेखा पथ, आयोजना वित्त प्रभाग तथा सरकारी उद्यम कार्यालय। जून १९६७ म वित्त मंत्रालय के समवय विभाग को व्यय विभाग क माय मिला दिया गया।

अय विभाग बजट तयार करता है। विदेशी मुद्रा सम्बन्धी आवश्यकताया और साधना की जाच करता है। विभाग म य प्रभाग है—बजट प्रभाग बाह्य वित्त और विदेशी महायता प्रभाग आंतरिक वित्त प्रभाग अय प्रभाग तथा प्रशासन प्रभाग।

बजट

बजट प्रभाग रलवे-बजट का छाकर भारत सरकार का वार्षिक बजट तयार करता है। अधिक व्यय हा जाने पर अनुपूर्क बजट व अतिरिक्त अनुदान भी यही तयार करता है।

हर वित्तीय वष म फरवरी मास के अतिम दिना म केन्द्रीय सरकार का बजट लोक सभा म वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। इसम अगत वित्तीय वष की आय-व्यय का अनुमान बताया जाता है और व्यय की स्वीकृति मागी जाती है। घाटे को पूरा करने क निय नये कर लगाये भी जात है हटाये भी जाने है या उनकी दर कम की जाती है। यह वार्षिक वित्ताय वक्तव्य कहा जाता है। बजट पर पहल सधारण बहस होती है। समन बाद अन्त्य मंत्रालय की माग पेश की जाती है। इस प्रकार समकित निधि मे व्यय करने क लिय राशि निवानी जाता है। इसक बाद विनियोग अधिनियम पेश किया जाता है। ससद यह हर वष पारित करता है। कर प्रस्ताव एक पथक विधेयक पेश किय जात है। यह वित्त विधेयक क नाम म प्रसिद्ध है।

आय व्यय केन्द्रीय सरकार का आय व खान है—उत्पादन शुल्क सीमा शुल्क निगम-कर आय-कर मत सम्पत्ति शुल्क और टनसान की आय। रनव और डाक-नार स इसका अगणन मिकता है। राष्ट्रीय निमाण विभाग क कायों तथा सरकारी उद्योग स भी कर्ताय सरकार का कुछ आय हाता है।

राया का आय क मुख्य सान है—(१) जिन्ना तथा अय कर और शुल्क (२) विभागा म आय (३) राया क उद्योगा म आय (४) केन्द्राय सरकार स प्राप्त अग भाग तथा (५) केन्द्र म मिला अनुदान।

स्वानीय सम्पदा का आय क मुख्य सान है—(१) चुगा सम्पत्ति कर पण्ड-कर,

उत्त सेवाश्रमा का शुल्क लाइसेंस फीम, जल कर, विजली कर साइकिल-कर तथा सरकार से प्राप्त अनुदान ।

केन्द्रीय सरकार का व्यय तीन भागों में विभक्त है—मुरक्षा-व्यय नागरिक या मुल्की व्यय और पूजीगत व्यय या निर्माण-व्यय ।

मुल्की या नागरिक व्यय के अन्तर्गत व्यय की निम्न मर्दें आती हैं

नागरिक प्रशासन ऋण सेवाएँ विस्थापित पुनर्वास छात्र-महापिता आदि । पूजीगत व्यय की मर्दें हैं—औद्योगिक विनास । इसके लिए पथक पूजीगत बजट तयार किया जाता है । पूजीगत बजट के व्यय की मुख्य मर्दें हैं—रेलवे, डाक-गार नदी घाटी परिवहन-नाम उद्यम । यह व्यय म्यायी कज अग्रिम (एडवांस) और राज्या को कज देकर किया जाता है ।

केन्द्र से राज्यों के साधनों का हस्तान्तरण भारत के सभ शासन की एक नई विधि पता है कि केन्द्र सरकार अपने वित्तीय साधना का कुछ भाग राज्या को देती है । राज्या केन्द्र को नहीं देते । वित्तीय साधना का स्रोत केन्द्र है और आर्थिक ऋण से राज्या केन्द्र पर आश्रित हैं । राज्या केन्द्रीय सरकार की आय का कुछ अंश ही नहीं पाते वनिक सविधिक और धन्य प्रकार के अनुदान विभिन्न योजनाओं के लिए कज और पुनर्वास-व्यय भी पाते हैं ।

कर जांच आयोग

हर साल सरकार का व्यय बढ़ रहा है । इसलिए राष्ट्र की कर देने की क्षमता का और अधिक उपयोग कर नियोजित व्यय को पूरा करने के लिए इसकी आवश्यकता को ध्यान में रखकर जांच आयोग की नियुक्ति की गई । इसकी राय यह है कि विद्यमान साधना के आधार पर निर्भर भारत की कर-वृद्धि देश के कर योग्य साधना का पूणत लाभ नहीं उठाती अतः इमने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करा का आधार बनाने की सिफारिश की और करा की दरों में पुनः समायोजन करने की सलाह दी । १९५६ से कर-जांच समीक्षण की सिफारिशें क्रियावित्त हो रही हैं ।

वित्त आयोग

भारत के सविधान के अनुच्छेद २८० में कहा गया है कि राष्ट्रपति सविधान के नामू होने के दो बंध बाद और इसके अनन्तर हर पांच साल बाद या उससे पहले एक वित्त आयोग नियुक्त करे । इमना कार्य निम्न विषया में सिफारिश करना होगा

- (क) आय-कर से प्राप्त विशुद्ध आय के केन्द्र और राज्या में वितरण का आधार
- (ख) अय केन्द्रीय करा—जस सधीय उत्पादन शुल्क से प्राप्त विभाजनीय आय का वितरण
- (ग) जूट और जूट से बन भाल के निर्यात पर लगाए गये निर्यात कर के बदले असम विहार, उजामा और पश्चिमी बंगाल का लिया जाने वाला भाग
- (घ) भारत सरकार की समकित निधि से राज्या को अनुदान देने का आधारभूत मिद्दान्त
- (ङ) वृषि भूमि के अनिदिक्त सम्पत्ति कर की आय के वितरण का मिद्दान्त ।

वित्त आयोग की परम्परा का धारम्भ माटफाड सुधार योजना के धारम्भ के साथ हुआ क्योंकि इण्डियन एक्ट १९१७ प्राता का स्वायत्त शासन देता था । अतः प्राता का शासन चलाने के लिए आय-साधन देने की आवश्यकता हुई । मगान आवश्यकता और स्थाय

ड्यूटी की आय पूरी नहीं मानी गई। भारत के स्वाधीन होने के बाद नया संविधान लागू होने से पहले श्री देशमुख और श्री गाडगिल ने आय वितरण का आधार बनाए। विधान लागू होने पर पहला वित्त आयोग श्री मतीशचन्द्र नियोगी की अध्यक्षता में दूसरा श्री के० सयानम तीसरा श्री ए० के० चन्द्र चौथा डा० पी० वी० राजमनार, ५वां श्री महावार त्यागी तथा छठा श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी की अध्यक्षता में नियुक्त हुआ।

पहला आयोग यह नवम्बर, १९५१ में नियुक्त किया गया। इसने सिफारिश की कि (१) आयकर से प्राप्त विभूक्त आय का ५० की जगह ५५ प्रतिशत भाग राज्या को दिया जाए। (२) उत्पादन शुल्क में से तम्बाकू (सिगरेट, सिगार आदि) नियासलाई और वनस्पति के तयार वस्तुएँ राज्यों में वितरण के लिए सर्वोत्तम हैं। (३) इन पर लगाएँ शुल्क से प्राप्त आय का ४० प्रतिशत भाग राज्या में वितरित किया जाये। (४) निर्यात कर के बाद एक निश्चित राशि अनुदान महायता में दी जाये। (५) आय विभक्त के अनुदान राज्या की आवश्यकता का विचार करके दिये जायें। अनुदान कायम रहे। (६) राष्ट्रीय महत्व के विशेष भार जैसे देश विभाजन के कारण राज्या पर आय का बोध अनुदान देने का उचित कारण माना जाना चाहिए। पिछड़े राज्या को केन्द्र अनुदान सहायता दे।

दूसरा आयोग दूसरा वित्त आयोग जून १९५६ में नियुक्त हुआ और इसने अपनी रिपोर्ट सितम्बर १९५७ में दी। इसने विभाजनीय आय के वितरण के आधारभूत सिद्धांत बताते और राज्या को अनुदान देने का आधारभूत सिद्धांत निश्चित किया। इसने केंद्रीय सरकार और राज्यों के बीच हुए करारों में परिवर्तन करने की भी सिफारिश की। आयोग की सिफारिशों के फलस्वरूप केंद्र से ९५ करोड़ रुपये के बटने १४० करोड़ रुपया राज्या को मिलने लगा।

तीसरा आयोग यह २ दिसम्बर १९६० को नियुक्त हुआ और इसने अपनी रिपोर्ट १४ दिसम्बर १९६१ में दी। करोड़ और शुल्क में आय का जो भाग इसमें निश्चित किया वह दिया गया। आयकर राज्यों का अंश बढ़ाकर ६० प्रतिशत कर दिया गया और उत्पादन शुल्क की तीन वस्तुओं की जगह १२ वस्तुओं की आय में राज्या को हिस्सा देने की सिफारिश की। इसने मृत सम्पत्ति शुल्क में भी राज्य को भागीदार बनाया। रेलवे यात्री कर में से अंश के बदले राज्यों को निश्चित राशि देने की व्यवस्था की। ६ वस्तुओं पर से विनी कर हटाकर उन्हें उत्पादन शुल्क में सम्मिलित करने और उनमें प्राप्त आय राज्या को देने की सलाह दी। सहायता अनुदान देने के बारे में उसने कहा कि यह संविधान के अनुच्छेद २७३ के अधीन दिया जाये। एक को छोड़कर सरकार ने आयोग की सब बात मान ली।

चौथा आयोग यह डा० पी० वी० राजमनार की अध्यक्षता में मई १९६४ में नियुक्त हुआ। इस आयोग को अनुच्छेद ३६० में प्रदत्त कार्यों का अनिश्चित और कुछ विषय भी परामर्श देने के लिए सौंपे गये। नये विषय थे (१) अनु० २७५ के अधीन राज्या का लिये जाने वाले सहायता अनुदान का नियामक सिद्धांत और स्टेट ड्यूटी की आय का राज्या में वितरण का आधारभूत सिद्धांत। (२) रेलवे यात्री कर का बदल राज्यों को दी जाने वाली निश्चित राशि में परिवर्तन करने की आवश्यकता। (३) चीना बंधा और तम्बाकू पर विनीकर के अनिश्चित उत्पादन शुल्क लगाने से प्राप्त आय के वितरण का नियामक नियमों में परिवर्तन की आवश्यकता। (४) निर्यात की वस्तुओं पर राज्य विनीकर और केंद्रीय उत्पादन शुल्क इन दोनों में प्रभाव। इसमें अनिश्चित आयोग ने यह

भी विचार किया कि केन्द्रीय उत्पादन शुल्क की आय में से राज्या को जो अंश दिया जाना है उसमें क्या कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता है क्योंकि राज्या ने विनो-कर बना लिया है। आयोग ने १९६१ में सरकार को रिपोर्ट दे दी। १९६६-६७ का बजट इसी के अनुसार बना। इसने आय-कर की आय ७० प्रतिशत राज्या को दे देने की निपारिण की। साथ ही अनुदान में राज्या को ७० करोड़ रुपये अधिक देने के लिए वहां। इसने अतिरिक्त सघीय उत्पादन शुल्क की आय में से राज्या को ६७ करोड़ रुपया और दिलाया।

पाचवां आयोग १५ मार्च, १९६८ से पाचवें वित्त आयोग का नियुक्ति श्री महावीर त्यागी की अध्यक्षता में की गई। आयोग ने १ अप्रैल, १९६९ से आरम्भ होने वाले ५ वर्षों के लिए अपना प्रतिवेदन ३१ जुलाई, १९६९ को प्रस्तुत कर दिया। इसमें राज्या को अधिक आर्थिक सहायता देने के सुपाव दिये गए। आयोग के विचाराय १० विषय रखे गए जिनमें (१) संविधान के अनुच्छेद २६६ में उल्लिखित उन कर और शुल्कों में जिन्हें विनहाल नामू नहीं किया गया राजस्व जुटाने की गुजाइश (२) राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध राजस्व सीता से अतिरिक्त राजस्व जुटाने की गुजाइश, (३) राज्य सरकार द्वारा रिजर्व बैंक से जमा से अधिक रकम (ओवर-ड्राफ्ट) निबालने की समस्या का हल भी सम्मिलित है।

पाचवें आयोग की निपारिण के अनुसार राज्या का मगरित की जाने वाली रकम कुन मिलाकर ४२६६ करोड़ रुपया बढ़ेगी, जबकि चौथे आयोग द्वारा, २८८६ करोड़ रुपए की निपारिण की गई थी। इसके अलावा राज्या को उन कर में भी हिस्सा मिलेगा जो अपने चार वर्षों में केन्द्र द्वारा लगाए जा सकते हैं। इन सब के अतिरिक्त भी कुछ कर से प्राप्त होने वाली रकम का पूरा हिस्सा नहीं लगाया है। योजना आयोग, केन्द्र और राज्य सरकारों के प्रतिनिधि बातचीत कर निणय लेंगे।

आयोग ने निपारिण की है कि विभाज्य धनराशि में अग्रिम कर को शामिल करने के बाद भी आय कर में राज्या का हिस्सा ७५ प्रतिशत रहेगा। लेकिन अब राज्या के हिस्से की रकम का वितरण ६० प्रतिशत जनसंख्या के आधार पर और १० प्रतिशत कर निर्धारण के आधार के आधार पर करने की निपारिण के अनुसार केन्द्रीय उत्पादन शुल्क में राज्या का हिस्सा २० प्रतिशत बना रहेगा लेकिन १९७२-७३ और १९७३-७४ में विणय उत्पादन शुल्क की रकम को विभाज्य धनराशि में सम्मिलित किया जाएगा।

१९६९ से १९७४ के दौरान राज्या को महायक अनुदानों के रूप में ६३८ करोड़ रुपये का अंतरण किया जाएगा। नागालैंड जम्मू व कश्मीर जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों को महायक अनुदानों के रूप में अधिक धन मिलेगा।

छठा आयोग १९७२ में श्री ब्रह्मानंद रेड्डी की अध्यक्षता में गठित किया गया। १९७३ में उसने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी।

१९७२-७३ में अर्थ-व्यवस्था पर जा दबाव पड़े, के बावजूद तक १९७१-७२ में वस्तुगा के उत्पादन की अपथाहत असतोषजनक वृद्धि के सूचक हैं। कृषि उत्पादन में जिसमें १९७०-७१ में ७.३ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी १९७१-७२ में १.७ प्रतिशत की कमी हो गई, अनाज का उत्पादन जो १९७०-७१ में १०.८४ करोड़ मेट्रिक टन था १९७१-७२ में कम हो कर १०.४७ करोड़ मेट्रिक टन हो गया। वय में औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक में कवल ४.५ प्रतिशत की वृद्धि हुई। वस्तुगा के उत्पादन की मगर गति के

चुने हुए आर्थिक निदेशक

१९६९-७० १९७०-७१ १९७१-७२ १९७२-७३

(पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत परिवर्तन)

१ स्थिर मूल्य पर राष्ट्रीय आय	७३	४६	१५	स	१५	स
			२०	तर+	२०	तय+
२ कृषि उत्पादन	६७	७३	-१	७		
३ मूल्य उत्पादन	५८	६०	-३	५		
४ औद्योगिक उत्पादन	६६	२५	४	५	७	०++
५ उत्पादन विजला	१४३	८६	८	८	११	२++
६ धातु मूल्य	३७	५५	४	०	८	८***
७ मुद्रा उपलब्धि	१०८	१११	१२	६	१२	३
८ आयत	-१७	३३	१०	६	-७	८*
९ निर्यात	४१	८६	४	७**	२३	१*
१० रत्ना द्वारा ढाया गया भाल	२५	-०७	४	६	५	६*

+अनुमानित ।

*अप्रैल-नवम्बर, १९७१ की तुलना में अप्रैल-नवम्बर १९७२ का अनुमान ।

**हमम बगला देश को किये गये ३८ करोड़ रुपये का निर्यात शामिल है ।

***अप्रैल दिमम्बर, १९७१ की तुलना में अप्रैल दिमम्बर १९७२

++अप्रैल अगस्त, १९७१ की तुलना में अप्रैल अगस्त १९७२ का अनुमान ।

१४ जनवरी, १९७२ की तुलना में १२ जनवरी, १९७३ का अनुमान ।

राष्ट्रीय आय

१९७०-७१ में भारत की राष्ट्रीय आय में ४६ प्रतिशत की वृद्धि हुई । किन्तु वस्तुओं के उत्पादन में मंद गति से वृद्धि होने के परिणामस्वरूप १९७१-७२ में राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर में तेजी से कमी हो गई । जहाँ तक १९७२-७३ का सम्बन्ध है औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि की दर पिछले वर्ष की तुलना में ऊँची रही लेकिन कृषि उत्पादन की प्रवृत्ति काफी अनिश्चित रही है । कुछ स्थूल अनुमानों से यह पता चलता है कि १९७२-७३ में अर्थ-व्यवस्था का विकास की दर लगभग १९७१-७२ की दर के बराबर थी ।

इसमें सादह नही कि १९७१-७२ और १९७२-७३ में कुल मिलाकर आयाज विनाम वी टर असन्तोपजनक रही है। अतः भारत जस दश में जहा देश की राष्ट्रिय आय का लगभग आधा भाग वृषि से प्राप्त होता है मौसमा हालात जस अनियंत्रणीय तत्वा व परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय में हाने वाले उतार चढाव कोई सामान्य बात नहा ह।

भारत में आयाजन का मुख्य बाय देश के आयाज ढाचे में धीरे धीरे विविधना लाकर और वर्षा पर वृषि की निर्भरता को घटा कर इन उतार चढावा व विन्नाग को कम करना है। विकास सम्बन्धी क्रियाकलापा की बन्ती हुई गति के परिणामस्वरूप हाल के वर्षों में कुछ वृषि जय वस्तुमा व उत्पादन में उतार चढाव कम हा गये ह। किन्तु चाल वष की घटनाय इस बात की बड़ी खतावनी है कि मौसग के प्रतिबूल हान की स्थिति में अथ-व्यवस्था अत्र भी काफी कमजोर हो सवती है।

निवेश और बचतें

निवेश की दर जा चालू बाजार मूल्या पर शुद्ध आंतरिक उत्पाद की तुलना में शुद्ध निवेश का अनुपात हाती है १९६५-६६ में १३.४ प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी। बाद के चार वर्षों में निवेश की दर बराबर कम हाती रही। किन्तु १९७०-७१ से इस दर में वृद्धि जान लगी। रिजर्व बक के अनुमाना के अनुसार यह अनुपात १९६६-७० के ६.३ प्रतिशत से बढ़ कर १९७०-७१ में १०.५ प्रतिशत और १९७१-७२ में ११.५ प्रतिशत हा गया।

इस समय १९७२-७३ में निवेश की दर व निश्चित अनुमाना के वार में कुछ कहना कठिन है। उपलब्ध अप्रत्यक्ष संकेता से इस अनुमान का समर्थन होता है कि १९७२-७३ में निवेश की दर १९७१-७२ में प्राप्त ११.५ प्रतिशत के स्तर से कुछ उची थी।

१९७२-७३ की वार्षिक आयाजना में सरकारी क्षेत्र के विकास परियय में २६ प्रतिशत की वृद्धि की परिवर्तना का गई है। सरकारी निवेश में वनात्तरी से जिमका पता आयाजना परिव्यय में की जान वाली वृद्धि से चलता है अथव्यवस्था के विभिन्न धना में गर-सरकारी निवेशा का प्रोत्साहन मिलन की आशा है। पूजीगत वस्तु समिति द्वारा दी गई अनुमतिया की रकम में जो १९७०-७१ में ६६.७ करोड रुपय की थी १९७१-७२ में बाडा वृद्धि हुई और यह रकम ११३.२ करोड रुपय हा गई। चालू वित्तीय वष के पहले नौ महीना में दी गई अनुमतिया की रकम भी पिछले वित्तीय वष की उसी अवधि की रकम की तुलना में अधिक प्रतीत होती ह। पूजीगत वस्तुमा के निय आयात जाइसम जारा बिय जाने और उनके वास्तविक आयात के समय में काफी अंतर होना है। किन्तु १९७१-७२ और १९७२-७३ के पूजीगत वस्तु लाइससा की प्रवृत्ति के अनुसार ऐसा मान लना युक्तिगत प्रतीत होना ह कि चालू वष में गर-सरकारी निवेश का बहुअंश जो आयातित उपकरण पर निर्भर करता ह १९७१-७२ के अंश की तुलना में सम्भवत कम नहा होगा। पूजा निगमा सम्बन्धी आकडा से अपसाहित एक अधिक उत्साहवधक चित्र सामने आता है। गर-सरकारा कम्पनिया द्वारा जुटाई गई पूजी में १९७१-७२ में बमी हो जान के बाद १९७२-७३ की पहला छमाही में नौ कम्पनिया द्वारा ५.२ करोड रुपय की पूजा जुगाई गई

जब कि १९७१-७२ में इसी अवधि में ३१ करोड़ रुपये की पूंजी जुटाई गई थी।

दश की विनाम सम्बन्धी आवश्यकताओं की तुलना में निवेश को चालू दर स्पष्ट रूप से १९६० में शुरू होने वाले दशक के पहले वर्षों में प्राप्त निवेश की दर की तुलना में भी यह काफी कम है। १९७३-७४ में अर्थ-व्यवस्था का मुख्य वायु उत्पन्न निवेश में पर्याप्त वृद्धि करना है।

निवेश की किसी दर विशेष से सम्बद्ध उत्पादन क्षमता अनिवाप्य माध्यामिक आवंटन का प्रक्रिया की वायुशक्ति पर निर्भर करती है जिसमें क्षेत्र, परिवारनामा और प्रौद्योगिकी का कुशलतापूर्ण चयन शामिल है। सरकारी क्षेत्र में उद्योगों की मुख्य परियोजनाओं के सभी प्रस्तावों की जांच करने के लिए एक सरकारी बोर्ड (पब्लिक इन्वेंटमेंट बोर्ड) की स्थापना की गई है। इससे परियोजनाओं के मूल्यांकन की किस्म का सुधार और परियोजना प्रस्तावों का तयार करने और सरकार द्वारा उसके अनुदान के बीच समयान्तर को कम करने में सहायता मिलेगी।

हान के वर्षों में कई उद्योगों में क्षमता के लगाने में अग्रगण्य रहने के कारण उत्पादन के स्तर पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा है। पर्याप्त मांग के अभाव में मशीनें बनाने वाले कई उद्योगों में निरन्तर उपलब्ध क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जा रहा है। अर्थ के उद्योगों में संगठनात्मक प्रवृत्तियों में वृद्धि होने, सयंत्र के अप्रधान अनुसंधान और तनावपूर्ण श्रमिक प्रवृत्तियों सम्बन्धी कारण उपलब्ध क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जा रहा है। कुछ अर्थ उद्योगों में उपयोगी लक्ष्य इस्पात और त्रिजली जैसी महत्वपूर्ण वस्तुओं की कमी के कारण पर्याप्त मात्रा में क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हो सका है। किन्तु व्याप्त जैसे बच्चे माल का पूर्ण में सुधार होने और मांग का प्रवृत्ति के बन्धन के परिणामस्वरूप कुशल मिलाकर भारत के उद्योगों का क्षमता के उपयोग के स्तर में १९७३ में सुधार हुआ प्रतीत होता है।

आंतरिक बचत की दर का चालू बाजार मूल्य पर शुद्ध आन्तरिक उत्पादन का तुलना में शुद्ध आन्तरिक बचत के अनुपात में मापी जाती है १९६५-६६ में अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच गई थी जब इसका दर ११.१ प्रतिशत का अनुमान लगाया गया था। अगले दो वर्षों में बचत दर कम हो गई। किन्तु १९६५-६६ से यह दर वृद्धि की ओर प्रवृत्त हो गई। रिजर्व बैंक के हान के अनुमान के अनुसार बचत-दर जो १९६५-६६ में ८.२ प्रतिशत थी, वह वर्ष १९६६-७० में ८.६ प्रतिशत १९७०-७१ में ९.४ प्रतिशत और १९७१-७२ में १०.० प्रतिशत हो गई। यद्यपि इस समय १९७२-७३ में बचत-दर के निश्चित अनुमानों के बारे में बताना सम्भव नहीं, किन्तु वित्तीय परिणामशक्ति में वृद्धि पर आधारित सूचना में ऐसा पता चलता है कि यह दर १९७१-७२ की दर से कुछ ऊँची हो सकती है। किन्तु हाल के वर्षों में बचत की जा दर प्राप्त की गई है वह १९६०-७१ शुरू होने वाले दशक के पहले वर्षों में प्राप्त की गई दर से कई विशेष अधिक ऊँची नहीं है।

औद्योगिक उत्पादन

१९६६-७० में औद्योगिक उत्पादन में ६.६ प्रतिशत की और १९७०-७१ में ७.५ प्रतिशत की वृद्धि हुई। १९७१-७२ में विकास की दर ४.५ प्रतिशत थी। १९७२-७३ के पहले पांच महीने में औद्योगिक उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई। जनवरी अगस्त १९७२ में औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक में अगस्त अगस्त १९७१ के तदनुसृत स्तर की तुलना में ७.० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

१९७२ में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि में कई उद्योगों का योगदान था। किन्तु यह वृद्धि मुख्यतः वस्त्रों के उत्पादन में हुई बहुत अधिक वृद्धि के कारण थी। औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक में वस्त्रों के उत्पादन का अंश २७ प्रतिशत है। जनवरी अगस्त १९७२ में धातु और उद्योग, रसायन धातु भिन्न धातु पदार्थों, खनिज वस्तुओं का अंश भी मशीनों से अधिक मशीनों और परिवहन उपकरणों के उत्पादन में उच्चतम वृद्धि हुई। इसके विपरीत खाद्य उद्योग और धातु उत्पादन के उत्पादन में कम वृद्धि हुई।

अनुमान है कि इस वर्ष औद्योगिक उत्पादन में ७ प्रतिशत की वृद्धि होगी जबकि १९७१ में २.६ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। १९७२-७३ के वित्तीय वर्ष के लिए वृद्धि की दर के ७ प्रतिशत से कुछ कम होने का सम्भावना है। १९७३ के शुरू में महानाभ विजला की गम्भीर कमी की आशंका औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि के माग में काले आदल की तरह छाई हुई है। इसके अनिश्चित रूपों की असंतोषजनक प्रगति से वृद्धि पर आधारित उद्योगों की विकास दर पर कुछ बुरा प्रभाव पड़ सकता है। वनस्पति तिलहन की कमी से पहले ही वनस्पति उद्योग की अनिश्चित क्षमता में वृद्धि हो गई है। औद्योगिक अर्थशास्त्र में काफी मात्रा में काम के इस वर्ष काम में लाये जाने के परिणामस्वरूप १९७२-७३ में अच्छे माल की उपलब्धि के कारण वस्त्रों के उत्पादन में कम होने की आशंका नहीं है। किन्तु खरीफ की फसल के कुछ भाग का हानि हो जाने के कारण किसानों तथा मूल्या में वृद्धि हो जाने के परिणामस्वरूप कुछ शहरी वर्गों की खर्च क्षमता कम हो जाने से वस्त्रों और टिकाऊ किस्म की अन्य उपभोग्य वस्तुओं की माग पर प्रति कूल प्रभाव पड़ सकता है।

मूल्या की प्रवृत्ति

अगला दशक सम्बन्ध में सरकारी खर्च के अन्तर्गत हुए दबाव के होत हुए भी दिसम्बर १९७२ तक धातु मूल्या के सूचकांक में उल्लेखनीय स्थिरता बनी रही। जून, १९७२ और दिसम्बर १९७२ के बीच मूल्या के सामान्य स्तर में केवल एक प्रतिशत की वृद्धि हुई। किन्तु १९७३ में कई महीने से मूल्या में असाधारण वृद्धि हुई है। दिसम्बर, १९७३ में धातु मूल्या का सूचकांक दिसम्बर १९७२ के स्तर से १३.७ प्रतिशत ऊंचा था। १९७३ में मूल्या के सूचकांक में वृद्धि का औसत ७.८ प्रतिशत था जबकि १९७२ में यह ६ प्रतिशत से कम था।

मई १९७२ से मूल्या में जो तनी से वृद्धि हुई है वह जनता के लिए अवश्य ही परेशानी का कारण है। ऐसा इसलिए भी है कि अनाज वनस्पति तला और चीनी जसा रोजमर्रा के महत्वपूर्ण दुनियाँ की आवश्यकताओं के मूल्या में तनी में वृद्धि हुई है। अनाज में चावल और गहूँ के मूल्या की अपेक्षा माटे अनाज के दाम बहुत अधिक बढ़ गए हैं।

१९७३ में मूल्या की वृद्धि मुख्यतः अनाज वनस्पति तला और चीनी के उत्पादन में कमी होने के कारण हुई। १९७१ में सरकार के बढ़ते हुए परिव्यय के परिणामस्वरूप अनिश्चित माग के एक अंश का १९७२ में अन्तर्गत कर दिया जाने तथा १९७२ में सरकारी परिव्यय में अंतरावृद्धि होने से जिसका वित्त पोषण अंतर्गत रिजर्व बैंक से ऋण प्राप्त करके किया गया है समग्र माग और पूर्ति में अमनुत्पन्न और बढ़ गया। पहले तो जुलाई १९७२ में मानवृत्त के अनाज में दर होने और बाद में खरीफ के उत्पादन में हानि के अन्तर्गत कर लिए गए वजना से उत्पन्न सट्टेबाजी के बाजारों ने भी इस अमनुत्पन्न का अनाज

म अपनी भूमिका प्रण को। ग्रान वाली रवी की फल की उत्साहजनक सम्भावनाओं से प्रमो वा मनावृत्ति में उत्पन्न दबाव घट जाना चाहिए। किन्तु ईश्वर ज्ञान का ध्यान म रखन हुए कि १९७३-७४ म ग्रनाज का उत्पादन १९७२-७३ क उत्पादन की तुलना म कम होगा, मूल्या क मन्व्य म किमी प्रकार क आत्ममत्ताप की बाई गुणाई नही ह।

राजस्व और मुद्रा सम्बन्धी नीतिया

शरणार्थियों के आगमन, पाकिस्तान क गाय युद्ध और दश क कई भागा म प्राकृतिक विपत्तिया क कारण १९७१-७२ में सरकारी वित्तव्यवस्था पर भार दबाव पडा। अनिश्चित करारधान क माध्यम से अमूल्य स्तर पर जुटाए गए माधना क वावजूद क्रीय सरकार और राज्य सरकार क वजट सम्बन्धी त्रियाकलापा म कुल मितार ७३८ करोड रुपये का वजट सम्बन्धी घाटा हुआ जा किमी एक वष म हान वाले धाटे की तुलना म सबसे अधिक ह।

वर्तमान स्थिति की एन उत्साहवधक बात यह ह कि राज्य सरकार भारतीय रिजर्व बैंक से अनधिकृत प्रोवरड्राफ्ट न लेने पर महमत हा गई है। साथ ही भारत सरकार न प्रकाश प्रोवरड्राफ्ट का चुकाने म राज्या का दो जान वाली सहायता की सीमाएं भी बढा दी हैं जिनके अन्तगत राज्य कुछ समय क लिए अर्थोपाय अग्रिम प्राप्त कर सकते हैं। बालू वष का राजस्व सम्बन्धी एक और उल्लेखनीय घटना छटे वित्त आयाग की नियुक्ति है जिसके विचारणीय विषय पहल क विषया की अपना अधिन व्यापक है। आयाग का राज्या के समाधान म सम्पूर्ण आयाजना भिन्न अन्तर (गप) का मूल्यांकन करने और अर्थ धाता के साथ-साथ केन्द्र की आवश्यकताओं का ध्यान म रखत हुए राज्या की श्रृण सम्बन्धी स्थिति की समीक्षा करने के लिए कहा गया है।

१९७१-७२ और १९७२-७३ म वजट सम्बन्धी अनिश्चित परिस्थिति का जनता क पाम उपलब्ध मुद्रा पर गम्भार स्फीतिकारी प्रभाव पडा। इसमें १९७१-७२ म १२.६ प्रतिशत की वृद्धि हा गई जबकि १९७०-७१ म ११.१ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। १९७२ म जनता के पाम उपलब्ध मुद्रा म ११.० प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि इसकी तुलना म १९७१ म १३.३ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। बैंक म जमा रकमा और बैंक द्वारा दिए गए ऋणा से यह पता चलता ह कि १९७१ और १९७२ के दाना वर्षों म मुद्रा उपलब्धि म वृद्धि मुख्य रूप म सरकार क वजट सम्बन्धी त्रियाकलापा क परिणामस्वरूप हुई और अतः वाणिज्यिक क्षेत्र का लिए गए मुद्र वष ऋण म का स्फीतिकारी शक्ति नहा थी।

सामायत किमी एक वष म मुद्रा उपलब्धि म ७ से ८ प्रतिशत तक की वृद्धि से मूल्या क स्तर पर बाई बडा दबाव रही पडना चाहिए यदि इन वृद्धि क साथ-साथ वास्तविक उत्पादन म वृद्धि ५ प्रतिशत का भी वृद्धि हा। किन्तु दुभाग्य से हम मामले म मुद्रा उपलब्धि म हुई अधिक वृद्धि के साथ-साथ ग्रनाज का उत्पादन कम हो गया। चूंकि ग्रनाज क मूल्य सामायत हमारा अर्थ-व्यवस्था क मूल्य सम्बन्धी ढांचे की मुख्य धुरी होत है इसलिए मूल्य स्थिति और विगड गई ह। किन्तु यदि १९७१-७२ और १९७२-७३ की घटनाओं का मूल्यांकन किया जाय तो उसमें हम बात का अवश्य ध्यान लिया जाना चाहिए कि इन वर्षों म जो अनिश्चित परिस्थिति लिए गए के अधिकतर अनिश्चित थे। यदि विकास सम्बन्धी व्यय म कटौती कर ली जाती ता उससे बचत हुए विकास और राज गार के नए अवसरों क निमाण क अत्यावश्यक काम म आर कठिनाइया पदा हा जाती।

इसी प्रकार सूखा राहत कार्यों पर किए जाने वाले व्यय में अनुचित कमी करने से परिहाय मानवीय कष्ट बढ़ जाते और आय तथा उपभोग में विभाजन में विद्यमान असमानताएं और बढ़ जाती। यद्यपि खर्च में बृद्धि करना अनिवाय था लेकिन समस्त अतिरिक्त परिब्ययों की अतिरिक्त बचत से व्यवस्था करना सम्भव नहीं था, खास तौर पर १९७१-७२ में बड़े पैमाने पर लगाए गए बचत के बाद जब पूरे एक बचत में लगभग ५०० करोड़ रुपये की अनुमानित प्राप्ति के लिए अतिरिक्त बचत लगाए गए थे। अतः १९७१-७२ और १९७२-७३ में जसी अर्थ-व्यवस्था थी उसमें घाटे की वित्त व्यवस्था पर निर्भर रहने में निवाय और कार्य चारा नहीं था।

१९७१-७२ और १९७२-७३ दोनों वर्षों में ऋण-नीति का मुख्य कार्य बजट की शर्त से काम करने वाली मुद्रा बाहुल्यकारण प्रवृत्तियों को नियंत्रित करना था। जब व्यवस्था में विद्यमान नकदी या नकदी जसी अतिरिक्त परिसम्पत्तियों की व्यवस्था से बाहर निकालने के लिए प्रयत्न किए गए। यदि ये अतिरिक्त परिसम्पत्तियाँ इस व्यवस्था में रहतीं तो इनसे अर्थ-व्यवस्था में मुद्रास्फीतिकारी दबाव और बढ़ जाता। सामान्य एवं चयनात्मक दोनों प्रकार के ऋण सम्बन्धी नियंत्रणों में उत्पादन की वास्तविक आवश्यकताओं का प्रभावित किए बिना, समय पर बल दिया गया है।

१९७२-७३ में व्यस्त मौसम की ऋण सम्बन्धी नीति में नकदी या नकदी जसी परिसम्पत्ति का सांविधिक अनुपात में (२६ से ३० प्रतिशत तक) और नकदी या नकदी जसी परिसम्पत्ति का शुद्ध यूनितम अनुपात में (३६ से ३६ प्रतिशत तक) का बचाव द्वारा रिजर्व बैंक से लिए गए पुनर्वित्त की लागत का खेतक है बृद्धि किए जाने की व्यवस्था है। अनाज, तिलहन और वनस्पति तला के बढ़ते बचाव द्वारा दिए जाने वाले अग्रिमों पर लगाए गए प्रतिरोध और कड़े कर लिए गए हैं। किंतु इस बात की सुनिश्चित व्यवस्था करने के लिए कि उत्पादक और अब तक उपक्षित क्षेत्रों की वास्तविक आवश्यकताएं पर्याप्त रूप से पूरी होतीं रहें रिजर्व बैंक ने प्राथमिकता प्राप्त धन को बचाव द्वारा दिए जाने वाले ऋणों के सम्बन्ध में बैंक दर रियायती दर पर पुनर्वित्त व्यवस्था सम्बन्धी अपनाने के साथ ही परिचालन नहीं किया है।

चालू व्यस्त मौसम में अब तक (२७ अक्टूबर १९७२ से १० जनवरी १९७३ तक) बचाव द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्रों को लिए गए ऋणों में ३३१ करोड़ रुपये की बृद्धि हुई जबकि पिछले व्यस्त मौसम का इसी अवधि में १६० करोड़ रुपये की बृद्धि हुई थी। यदि ग्रान्त्वामी के लिए लिए गए बैंक ऋणों को हिसाब में न लिया जाए तो बचाव द्वारा दत्त अग्रिमों में वाणिज्यिक क्षेत्रों को लिए गए ऋणों की रकम अधिक बढेगी है। इस अवधि में ४२१ करोड़ रुपये का बृद्धि हुई जबकि १९७१-७२ का इसी अवधि में १८८ करोड़ रुपये की बृद्धि हुई थी।

चालू मौसम में अर्थात् २७ अक्टूबर १९७२ से १२ जनवरी १९७३ तक की अवधि में जमा रकम में भी अधिक बृद्धि हुई अर्थात् १९७१-७२ की इसी अवधि में २.० करोड़ रुपये की तुलना में २.७१ करोड़ रुपये जमा हुए। बचाव की नकदी जमा परिसम्पत्ति सम्बन्धी स्थिति पर अभी तक किसी प्रकार का दबाव पड़ने का कोई प्रमाण नहीं है। २१ जनवरी १९७२ का ऋणजमा का अनुपात ६७.२ प्रतिशत था जो १९७२ की इसी अवधि में ७३.५ प्रतिशत का अनुपात में कम था।

मुद्रा सम्बन्धी घटनाएँ और ऋण नीति

पिछन कुछ वर्षों के दौरान जनता के पास मुद्रा उपलब्धि में तज़ो से वृद्धि हो रही है। वृद्धि की वार्षिक दर १९६६-७० में १०.८ प्रतिशत थी जबकि १९७०-७१ में ११.१ प्रतिशत और १९७१-७२ में १२.६ प्रतिशत हो गई है। इसके साथ-साथ, वास्तविक राष्ट्रीय उत्पादन की वृद्धि की गति धीमी हो गई है। इस वृद्धि की वार्षिक दर जो १९६६-७० में ७.३ प्रतिशत थी, घट कर १९७०-७१ में ६.६ प्रतिशत हो गई और १९७१-७२ में यह दर दो प्रतिशत और घट गई। इस परिणामस्वरूप धन-व्यवस्था में कुल मांग और कुल उपनिधि का असंतुलन और ज्यादा बन गया है।

इन वर्षों के मुद्रा संबंधी घटनाएँ और विश्लेषण से पता चलता है कि जहां १९६६-७० में मुद्रा विस्तार की मुख्य प्रवृत्ति देश के शोधन शेष संबंधी लेनदेन और वाणिज्यिक क्षेत्र को लिए गए शुद्ध बैंक ऋण में वृद्धि से उत्पन्न हुई थी, वहां १९७०-७१ में इस विस्तार का कारण सरकारी और वाणिज्यिक दोनों क्षेत्रों के लिए गए शुद्ध बैंक ऋण में वास्तविक वृद्धि होना था। साथ ही लेनदेन का मुवावज़ारी प्रभाव पड़ा। परन्तु १९७१-७२ में सरकार का दिया गया शुद्ध बैंक ऋण मुद्रा उपलब्धि में वृद्धि का मुख्य कारण था। वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए गए बैंक ऋण में शुद्ध वृद्धि पिछले वर्षों में हुई वृद्धि से अपेक्षा कम थी। इसके अलावा विदेशी मुद्रा की शुद्ध परिमम्पत्तियाँ में वृद्धि के परिणामस्वरूप भी मुद्रा उपलब्धि में कुछ वृद्धि हुई।

१९७२-७३ के वित्तीय वर्ष की शुरुआत की मुद्रा संबंधी स्थिति से पता चलता है कि सरकार का दिया गया शुद्ध बैंक ऋण विस्तार का मुख्य कारण है। ३१ मार्च १९७२ और १२ जनवरी, १९७३ के बीच सरकार का दिया गए शुद्ध बैंक ऋण में, पिछले वर्ष की इसी अवधि में हुई ७६७ करोड़ रुपये की तुलना में ६८० करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। दूसरी ओर इसी अवधि में वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए गए शुद्ध बैंक ऋण में ४८७ करोड़ रुपये का कमी हो गई है जो १९७१-७२ में इसी अवधि में हुए १८० करोड़ रुपये का कमी से काफी अधिक थी। वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए गए शुद्ध बैंक ऋण में कमी और इसी अवधि में भारतीय रिज़र्व बैंक की शुद्ध विदेशी मुद्रा परिमम्पत्तियाँ में ७६ करोड़ रुपये (इसके मुकाबले पिछले वर्ष ७३ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई थी) की गिरावट से बचक प्रणाली के सरकारी क्षेत्र के साथ हुए लेनदेन के विस्तारप्रभाव प्रभाव का कम करके सहायता मिली है। इसके परिणामस्वरूप, ३१ मार्च १९७२ और १२ जनवरी १९७३ के बीच जनता के पास मुद्रा उपलब्धि में वृद्धि पिछले वर्ष की इसी अवधि (६११ करोड़ रुपये) के मुकाबले मामूली सी अधिक (६२५ करोड़ रुपये) थी और वृद्धि की यह दर इस अवधि में ७.७ प्रतिशत बढ़ती है जबकि १९७१-७२ की तुलना में अवधि में ८.५ प्रतिशत वृद्धि हुई थी। फिर भी १४ जनवरी १९७२ के स्तर के मुकाबले १२ जनवरी, १९७३ का मुद्रा उपलब्धि का स्तर (८७५६ करोड़ रुपये) १२.३ प्रतिशत अधिक था।

मौसमी घटबढ़

१९७१-७२ के व्यस्त मौसम में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए गए कुल ऋण में ३५५ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई जबकि १९७०-७१ के व्यस्त मौसम में २६४ करोड़ रुपये और १९६६-७० के व्यस्त मौसम में ५६३ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई थी। १९७१-७२ के व्यस्त मौसम में ऋण में अपेक्षाकृत कम वृद्धि का कारण अंशतः अन्त

बसुली के लिए अब अग्रिमा म ७१ करोड रुपये की बनी होना है। इन अग्रिमा की निवास्त कर १९७१-७२ के व्यस्त मौसम के दौरान वाणिज्यिक बक ऋण म विस्तार की रकम ४२६ करोड रुपये बठती है और यद्यपि यह रकम पिछले व्यस्त मौसम म तदनु रूप ऋण विस्तार की ३२४ करोड रुपये की रकम से अधिक् है तथापि १९६९-७० के व्यस्त मौसम म ऋण विस्तार की ५६० करोड रुपये की रकम से फिर भी काफी कम है। दूसरी ओर अब की जमा रकमा म वद्धि होती रही। १९७१-७२ म सकल बक जमा म ६२४ करोड रुपये की वद्धि हुई जबकि इससे पहले वष म ४३५ करोड रुपये की वद्धि हुई थी। नवदी और नवदी जैसी परिसम्पत्ति की स्थिति म सुधार होने के परिणाम स्वरूप वाणिज्यिक बक सरकारी और अय अनुमोदित प्रतिभूतिया म २४० करोड रुपये (पिछले वष के ११६ करोड रुपये के मुकाबले) का निवेश कर सके थे और बका द्वारा भारताय जिरब बक से लिए गए अग्रिमा का उच्चतम स्तर केवल २५२ करोड रुपये तक ही पहुच सका जबकि १९७०-७१ के व्यस्त मौसम मे उच्चतम स्तर ४४३ करोड रुपये तक पहुच गया था। १९७१-७२ के व्यस्त मौसम के अंत म (अर्थात् अप्रैल १९७२ व अंत म) ऋण-जमा का अनुपात ७२ ० प्रतिशत था और निवेश जमा का अनुपात ३१ ४७ प्रतिशत था इससे पिछले व्यस्त मौसम के अंत म य अनुपात क्रमश ७८ ०१ प्रतिशत और २९ ६० प्रतिशत थे। वाणिज्यिक बका द्वारा भारतीय रिजर्व बक से १९७१-७२ के व्यस्त मौसम के अंत तक २३ करोड रुपये के ऋण लिए गए थे जबकि एक वष पहले ऋणा की रकम १९१ करोड रुपये थी।

अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के आकडों मे मौसमी घटबढ (करोड रुपया मे)

	व्यस्त मौसम		मदा मौसम		
	१९७०-७१	१९७१-७२	१९७०	१९७१	१९७२
			(अप्रैल से अप्रैल तक)	(अप्रैल से अप्रैल तक)	(अप्रैल से अप्रैल तक)*
१ बका द्वारा दिया गया कुल ऋण जिनम मे	३९४	३५५	२२६	१६३	३२
(क) अन्न बगुली अग्रिम	७०	-७१	३५	१५६	-१
(ख) अय अग्रिम	३२४	४२६	१९१	७	३३
२ कुल जमा	४३५	६२४	४४८	६२४	६५०
(क) माग दय जमा	१९०	३१०	१७४	२०२	२२८
(ख) सावधि जमा	२४५	३१४	२७४	४२२	४२२
३ सरकारा धार अय अनुमानित प्रतिभूतिया म निवेश	११६	४६०	१८८	२५४	६२५
४ भारताय रिजर्व बक से ऋण	६०	४	-८६	-१७२	-१६

* धर्नात्म

मुद्रा उपलब्धि में घटबढ़

(करोड़ रुपये में)

	१९७० -७१	१९७१ -७२	१९७१ -७२	१९७२ -७३
	३१ मार्च से ३१ मार्च तक	३१ मार्च से ३१ मार्च तक	३१ मार्च म १४ जनवरी तक	३१ मार्च मे १२ जनवरी तक
	१			२
ग्र जनता के पास मुद्रा उपलब्धि (क+ख)	७१६	६३०	६११	६२५
(क) जनता के पास मुद्रा (करोमी)	३६२	४२३	३६७	२७२
(ख) जनता की जमा रकम	३५७	२०७	२४४	३५३
आ मुद्रा उपलब्धि में घटबढ़ पदा करने वाली मुख्य बातें				
१ बैंक द्वारा सरकार का दिया गया शुद्ध ऋण (क+ख)	५१५	६७३	७४७	६८०
(क) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सरकार को ऋण	३३२	६७१**	६४८**	४८०
(ख) बैंकों के पास सरकारी प्रतिभूतियाँ	१८३	००२	२९९	२००
२ बैंक द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र को लिया गया शुद्ध ऋण (क+ख)	३४६	७३	-१८०	-६८७
(क) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र को लिया गया ऋण	५०	१००	६६	-२३
(ख) बैंक द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र को दिया गया शुद्ध ऋण (1-11)	२९६	-२७	-२४६	-४६६
(1) बैंक द्वारा अग्रिम और उनके पाम गर सरकारी प्रतिभूतियाँ	८१८	६८६	६४६	३६५
(11) बैंक के पाम सावधि जमा	५०२	७१६	६६०	८१६
३ भारतीय रिजर्व बैंक की शुद्ध मुद्रा परिसम्पत्ति**	-४७	७८	७३	-७६

* इसमें वितावों में समायाजित की गई १७५ करोड़ रुपये की रकम शामिल है।

** भारतीय रिजर्व बैंक की शुद्ध विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियाँ म घटबढ़ बैंक की विदेशी मुद्रा (अर्थात् सोना और विदेशी मुद्रा) का धारिता की क्षमता है जिस में बैंक के मुद्रा भी विदेशी मुद्रा की दलालियाँ (अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि से नन्देन) म घटबढ़ का घटा दिया गया है।

सरकारी क्षेत्र के बकों की प्रगति

शाखा विस्तार के कार्य में जो वृद्धि हुई है वह विचार करने में उद्देश्यपूर्ण है। वर्षों की शाखाओं की संख्या जो ३० जून १९६६ को ८०६० थी बढ़कर ३० जून १९७२ को १३६०० हो गयी। यह तीन बकों में बंटी होती है ३३८ शाखाएँ में ६४०३ शाखाएँ (८६१ प्रतिशत) सरकारी क्षेत्र के क्षेत्रों में होती हैं। एकात्मिकता के तहत विचार के तहत १९६६ के बाद में भारत में घोषित ६२००० की जमानत के नीचे एक बँक कायदा का ३१ १९७२ में घोषित ६००० जमानत के नीचे एक बँक कायदा का गया। शाखा विस्तार का कार्य उन शाखाओं में घटित करने के तहत जहाँ बँकों का शाखाएँ घटाया गया कम था और यह प्रसार क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रमुख क्षेत्रों में घटाया गया था। दूर दूर के क्षेत्रों में शाखाओं के लिए जून १९६६ और जून १९७२ के बीच की अवधि में घण्टा में प्रति दिन-वार्षिक घोषित जमानत १६८००० में कम होकर ६८००० बिलियन में २०७०००० में १०६०००० तक और बँक में ११६०००० में ६००००० बिलियन में ६६७०००० में १७८००००, तागावत में २०४०००० में १०३०००० उदाहरण में १२०००० में ११६०००० और विपुल में २३६०००० में १३००००० हो गयी। एकात्मिकता तथा शाखाओं को घटाने तथा में और घटने के क्षेत्रों में शाखाओं में घटा जा रहा था। शाखा विस्तार के तहत शाखाओं के परिवर्तन के तहत शाखाओं के घटाने में शामिल क्षेत्रों की शाखाओं का प्रतिशत जो १६ जून १९६६ में २८ था बढ़कर मार्च १९७२ के बाद में ३५ हो गया। प्रमुख प्रकार जून १९६६ के बाद में जून १९७२ के बाद की अवधि में शाखा विस्तार का ६३८ प्रतिशत कायदा के तहत रखा गया है। सरकारी क्षेत्र के बँकों में मुख्य कायदा के अधिकारियों के साथ विचार के लिए की जनता १९७३ में हुई बैठक में शाखा विस्तार का प्रगति पर विचार किया गया। बैठक में यह फैसला किया गया कि सरकारी क्षेत्र के प्रत्येक बँक का वित्तीय मातृका तैयार करने चाहिए। विभिन्न प्रयोगों की बँक में अधिकारियों का वित्तीय मातृका और प्रत्येक बँक की क्षमता का ध्यान में रखते हुए उचित योजनाओं को समर्थित करना होगा। विभिन्न प्रणालियों के तहत व्यापक रूप में एकीकृत योजना के तहत विभिन्न राज्य सरकार और सघीय राज्य क्षेत्रों की सरकार उन बँकों में आवश्यक आधारभूत सेवा प्रस्तुत करने योग्य हो सकेगी जहाँ शाखाएँ खोली जायेंगी।

बँकों के राष्ट्रीयकरण के बाद में बँक की जमा रकमा में वृद्धि की रणनीति में जो विशेष तर्जियाँ आयी हैं वह अभी तक सफल नहीं हैं। अभी अनुसूचित वाणिज्यिक बँकों की समूची जमा राशियाँ में वृद्धि की वाणिज्यिक दर जो मध्य जुलाई में मध्य जुलाई तक जो १९६६-७० में १६५ प्रतिशत थी बढ़कर १९७०-७१ में १७६ प्रतिशत और १९७१-७२ में और बढ़कर २१६ प्रतिशत तक पहुँच गयी। सरकारी क्षेत्र के बँकों की जमा रकमा में इस अवधि में क्रमशः १५३ प्रतिशत १७५ प्रतिशत और २२५ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

प्रत्येक उपेक्षित क्षेत्रों (अर्थात् कृषि लघु उद्योग मछली पकड़ने का नगर सुदूर व्यापार और छोटे-यापारी व्यावसायिक और आत्मनिर्वाहक व्यक्ति और शिक्षा) की सरकारी क्षेत्र के उका द्वारा दिया गया ऋणा में हाल के आकड़ा से वृद्धि की दर में ह्रास होने का पता चलता है। इस प्रकार कृषि और अन्य उपेक्षित क्षेत्रों को उधार दिये जाने से

१९७२-७३ में विदेशी सहायता

(करोड़ रुपया में)

अप्रैल निसम्बर के दौरान किए गए महायाना करार			
देश	परियोजना- भित्त सहायता जिसमे ऋण संबधी राहत शामिल है	परियोजना महायता	जोड
१	२	३	४
स्वोच्छ्रितिया			
१ आस्ट्रिया	१ ८०		१ ८०
२ बेल्जियम	३ ७५		३ ७५
३ बर्माडा	३८ ८८	२ ८६	३७ ७७
४ फ्रांस	१६ २०	१६ ५०	२२ ७०
५ पश्चिमी जर्मनी	४५ २०	१८ ०८	६३ २८
६ इटली	५ ६०		५ ६०
७ जापान			
८ नारिडलड	१५ ७१		१५ ७५
९ स्वाडन	२८ ६०	७ ५०	६६ ०६
१० ब्रिटेन	६६ ४०	३१ ५०	९७ ९०
११ मयूक्त राज्य अमरिका			१६ ५०
१२ अन्तर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण			
१३ अन्तर्राष्ट्रीय विकास सघ	५६ ००	८७ ४०	१४३ ४०
जोड	२६८ ६६	१६३ ८७	४३२ ५३

घ—उपयोग

महायाना की किस्म	मुक्तिकरण
जोड	६२६
जिसमे—	३०३
(i) परियोजना भित्त सहायता	३१४
(ii) परियोजनागत सहायता	
(iii) पी० एल० ४८० के अन्तगत अन्न महायाना	
(iv) पी० एल० ४८० के अन्तगत अन्न मे भित्त सहायता	
(v) अन्न अन्न सहायता	६

सम्बन्धित ऋण खाता की सहायता म काफी अधिक बृद्धि अर्थात् जून, १९६६ की २,८२ ००३ से जून, १९७० म ६,२८ १६७ और जून १९७१ म बढ कर ११ ८८ ७१८ हो गयी और जून १९७२ म और बढ कर १४,२३,५३० हा गयी। अब तक उपेक्षित क्षेत्रों को बका द्वारा न्ये जाने वाले अग्रिमों के सम्बन्ध मे भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति पायी गयी। इन बक अग्रिमों की राशि जून, १९६६ और जून १९७० के बीच की अवधि मे लगभग ७५ प्रतिशत—४३६ करोड रुपये से ७६१ करोड रुपये—बढ गयी और अगले दो वर्षों म क्रमश १७ ६ प्रतिशत और १६ ८ प्रतिशत बढ गयी और जून १९७२ म यह राशि १ ०४८ करोड रुपये थी।

विदेशी सहायता

१९६७-६८ से ही विदेशी सहायता पर हमारी निर्भरता धीरे धीरे कम होनी जा रही है। अन्न के मामले म उत्तरोत्तर अधिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और कई प्रकार की निर्मित मध्यवर्ती वस्तुओं तथा उपकरणों के उत्पादन म वृद्धि होने के कारण विदेशी सहायता की राशि जो १९६७-६८ म ११६६ करोड रुपया थी घटकर १९७१-७२ म केवल ८३४ करोड रुपया रह गयी तथा इसी अवधि म प्राप्त सहायता के अतगत वित्तपोषित खाद्य आयात की राशि ३८७ करोड रुपये से घट कर १४४ करोड रुपया हो गयी। निस्संदेह १९७१-७२ म विदेशी सहायता के उपयोग मे उस समय बढि हुई थी जब प्राप्त होने वाली सहायता की शुद्ध राशि म १४ करोड रुपये की वृद्धि होने के बावजूद वह ३५५ करोड रुपय हो गयी। लेकिन ऐसा होना विदेशी साधना पर उत्तरोत्तर कम निर्भर रहने की प्रवृत्ति के छोडा सा प्रतिक्ल अवश्य है। वास्तव म मुख्यतः परियोजना सहायता का अपेक्षाकृत अधिक उपयोग किये जाने के कारण विदेशी सहायता सम्बन्धी साधना का छोडा सा ज्यादा उपयोग हुआ किन्तु परियोजना भिन्न सहायता की राशि म सीमान्तिक वृद्धि हुई। अनुमान है कि अशत इस निष्पत्ति के कारण कि विदेशी सहायता लेना बन्द कर दिया जाय चाल वित्तीय वर्ष मे विदेशी सहायता की राशि तभी से घट कर ६२६ करोड रुपये हो जायगी।

भारत की १९७२-७३ की सहायता सम्बन्धी आवश्यकताओं का अनुमान लगाने के लिए भारत सहायता सच का जो बटन हुई थी उसम यह निष्पत्ति निकाला गया था कि भारत के विकास कार्यक्रमों के लिए अतिरिक्त साधना के रूप म कुल मिला कर १३ ५०० लाख डॉलर की आवश्यकता होगी जिसम परियोजना भिन्न सहायता की ७ ००० लाख डॉलर की राशि भी शामिल है। किन्तु इस वर्ष अब तक कुल मिलाकर केवल लगभग ६००० डॉलर की सहायता के लिए बतार किये गये हैं।

चूँकि अन्तर्गत अधिक बडी शर्तों पर लिय गये पिछले ऋणों का परिणाम तथा यात्र की अभावगिया के कारण विदेशी मुद्रा सम्बन्धी साधना की उत्तरागत बडी हुई राशियाँ गमाय हो गयी अतः विदेशी सहायता की राशि जो १९६७-६८ म ८६३ करोड रुपये थी घट कर १९७१-७२ म केवल ३५५ करोड रुपय रह गयी। अनुमान है कि १९७२-७३ म विदेशी सहायता का शुद्ध अन्तरण १२३ करोड रुपय म अधिक रहा होगा।

विकास सम्बन्धी हमारे दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि आंतरिक साधना और योजना पर अन्तर्गत अधिक निर्भर रना जाए। एक और जहाँ विदेशी सहायता का स्वागत किया गया है वहाँ दूसरा धार हम बात की मुनिरिक्त व्यवस्था करने का हर प्रयास किया गया है कि विदेशी सहायता पर निर्भर रहना हमारे राष्ट्रीय आर्थिक जीवन का ब्यापक अंग न बन। विदेशी सहायता और अनुदानों की राशियाँ म म ऋण पोषण सम्बन्धी अभावगिया की राशि घटाने के बावजूद ऋण और अनुदानों का राशि इसी वर्ष म निवेश सम्बन्धी

कुन परिव्यय के ३० प्रतिशत स ज्यादा नही हुई । इसके अतिरिक्त अभी हाल तक वर्षों में विदेशी वित्त पर हमारी निर्भरता म तजी स कमी हुई है । १९७१-७२ म, कुल निवेशित राशि म, शुद्ध विदेशी सहायता का अंश केवल १३ प्रतिशत था और १९७३-७४ म अघात चौथी प्रायाजना की अवधि के अन्त म यह प्रतिशत, और घट कर लगभग ८ प्रतिशत हा जायगा । यह परिव्ययता की गयी है कि पाचवी प्रायाजना का अवधि के अन्त मे विदेशी स प्राप्त होने वाले शुद्ध माघना पर हमारी निर्भरता विल्कुल समाप्त हो जायगी और उसके बाद यदि कोई विदेशी सहायता प्राप्त हागी ता वह ऋण-परिशोधन और व्याज की अन्वयगिया के सम्बन्ध म विदेशा मे भेजे जान बाल साधना से प्रतिमन्तुलित हो जायगी । विदेशी सहायता की प्राप्ति म अनिश्चितताए बनी रहन के कारण आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का उद्देश्य जो स्वत वाछनीय है, और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है ।

विदेशी सहायता की प्राप्ति सकल और शुद्ध

(कराडा रुपया म)

	१९६८-	१९६९-	१९७०-	१९७१-	१९७२-
	६९	७०	७१	७२	७३
	(अनुमानित)				
सकल भुगतान जिसमे	९०३	८५६	७९१	८३४	६२६
(क) पी० एल० ४८० खाद्य	१३१	१२८	५७	११२	
(ख) पी० एल० ४८० खाद्य मित्र	२७	८२	३२		
(ग) अन्य खाद्य सहायता	५५	१९	३६	३२	९
कुल ऋण परिशोधन	३७५	४१२	४५०	४७९	५०३
(क) ऋण परिशोधन	२३६	२६८	२९०	२९९	३१४
(ख) व्याज की अन्वयगिया	१३९	१४४	१६०	१८०	१८९
सहायता की शुद्ध राशि	५२८	४४४	३४१	३५५	१२३

विदेशी ऋण परिशोधन

(करोड रुपया म)

	ऋण परिशोधन सम्बन्धी अदाय गिया	व्याज सम्बन्धी अन्वयगिया	कुल ऋण परिशोधन
१	२	३	४
पहली योजना	१०५	१३३	२३८
दूसरी योजना	५५२	६६२	११९६
तीसरी योजना	२०५६	२३७०	४४२६
१९६६-६७	१५९७	११४८	२७४५
१९६७-६८	२१०७	१२२३	३३३०
१९६८-६९	२३६७	१३८८	३७५०
१९६९-७०	२६८५	१४४०	४१२५
१९७०-७१	२८५५	१६०५	४४६०
१९७१-७२	२९८२	१८००	४७८२
१९७२-७३	३१४२	१८८६	५०२८

नीपण महगाई

महगाई प्रतिवप तेजी स वृत्ती जा रही ह। १९६१ म लेकर सन १९७१ क दम वर्षों क दौरान मभी जीवनापयोगी वस्तुआ के मूल्या म लगभग शत प्रतिशत तक वद्धि हुई ह। किन्तु १९७१ म १९७३ के दो वर्षों के दौरान तो बहुत मो वस्तुआ के मूल्य म दुगुनी म भी अधिक की वद्धि हो गई है।

१९६१ से लेकर १९७१ तक राष्ट्रीय आय ४ ५ प्रतिशत की दर स बढ़ी और सन १९७२ ७३ तक राष्ट्रीय आय की औसत वद्धि पिछले वर्षों मे घट कर ३ ५ प्रतिशत हो गयी और महगाई की आमत वद्धि पिछले वर्षों स बढ़ कर १२ प्रतिशत हा गयी। महगाई वद्धि के पीछे भारत-यात्र युद्ध अन्व कारण म स एक कारण है तैकिन महगाई वद्धि के आत्मविक कारण दूसर हैं। संपूर्ण देश म कानाधन की एक समानान्तर व्यवस्था चल रही ह। वाचू समिति क अनुसार इन समय दश म १५ अरब रुपये कालाधन क रूप म है मगर कुछ दूसरे अर्थशास्त्रिया के अनुसार हम समय दश म ७० ७२ अरब रुपये कालाधन क रूप म है। काला धन से सानी अर्थव्यवस्था छिन्न भिन्न हुई ह। सरकार न कालाधन क वृत्त हुए प्रभाव का राकन क लिए जो कदम उठाया वह सफल नहीं हुआ कयाकि हर वष धाने की अर्थव्यवस्था का पूरा करन क लिए सरकार न बाहरी दशा से कज लिया, असमान आय वाला के ऊपर समान कर लगाया और मुद्रा प्रसार किया। सन १९५०-५१ म १२३६ करोड रुपय का नोट प्रचलन म था और उस समय ६७०० करोड रुपया का नोट प्रचलन म ह। मुद्रा प्रसार म सरकार न कमी नहीं की। सन १९७२-७३ म अनुमान ह कि सरकार को १२०० करोड के नये नोट छापने पडे।

सरकार की मुद्रा प्रसार नाति स यह स्पष्ट ह कि सरकारी याजनाय उत्पादन बतान म असफल हा रही हैं और सरकारी फिजूलखर्ची बढ रहा है।

विभिन्न वर्षों मे जीवनापयोगी चीजों का बाजार भाव

(प्रति किला)

वस्तु	१९६१	१९७१	१९७२	जनवरी १९७६
गेहूँ	० ६०	० ८५	० ९५	१ ६०
चावल	० ७५	१ ६०	१ ७५-६ ००	२ ०५ स ३ ६०
धाना	१ २३	२ ५५	४ ००	६ ६५
दमा घी	८ ००	१६ ००	१६ ००	२० ००
मरमा का तन	२ २५	६ ५०	७ ००	१० ००
वनस्पति घा	१ १०	६ ००	४ ४५	७ ८०
अरहर की तन	० ७५	१ ००	२ ८८	२ ८०
मिट्टी का तन	० ४०	० ६०	० ७५	८१ फिर

थोक मूल्यों के सूचक अंक (आधार १९६१-६२=१००)

वर्ष	खाद्य वस्तुएँ				निमित्त वस्तुएँ				
	जाड	अन्न	शराब और तम्बाकू	इधम शक्ति और रोशनी	घोषो निक कच्चा माल	रामा यन्त्र पदाय उपकरण	जाड	मध्य वती वस्तुएँ	गभी वस्तुएँ
१९६१-६२	४१३	१४८	२४	६१	१२१	०७	२६४	५७	१०००
१९६२-६३	३	६	५	६	७	६	१०	११	१०

वर्षान्तरित वर्षों के अंतिम मन्दाह

१९६४-६६	१४८	१४६	१३३	१३१	१४४	१३३	१२०	१३०	१०७	५
१९६६-६७	१८२	२०८	१३३	१३६	१६६	१५१	१३०	१४८	१०८	६
१९६७-६८	१७३	२०७	१६७	१४७	१४१	१६२	१३२	१४६	१०७	३
१९६८-६९	१८२	१६३	२१६	१४३	१७२	१७७	१३३	१४६	१२८	१
१९६९-७०	२०१	२१४	१८८	१६०	१८६	१६३	१६०	१७६	१४०	७
१९७०-७१	१६४	२००	१८४	१६३	१६१	१८६	१६०	१८४	१४४	६
१९७१-७२	१६८	२२३	२०६	१७८	१७६	१६६	१७३	२०८	१६४	३

भारत में कर व्यवस्था

भारत में केंद्रीय करा को दो विभागा में बाटा जा सकता है

(१) प्रत्यक्ष कर आयकर सम्पत्ति कर अति कर, मन सम्पत्ति शुल्क और दान कर ।

(२) अप्रत्यक्ष कर सधीय उत्पादन शुल्क सीमा शुल्क केंद्रीय उत्पादन शुल्क एवं अतिरिक्त सीमा शुल्क ।

इन करा क अतिरिक्त राज्य सरकारा तथा स्थानीय स्वायत्त मन्थाभा द्वारा भी कर लगाए जाते है ।

१९६१-६२ में भारत में गण्टीय आय से करा का अनुपात १० ८ प्रतिशत था । १९६५-६६ में यह बढ़कर १३ ८ प्रतिशत हो गया तथा १९७२-७३ में यह १९ प्रतिशत तक बढ़ गया ।

केंद्रीय सरकार का करा से आय १९६५-६६ में १०५१ करोड रुपये थी जा कि १९७१-७२ में २०५७ करोड हो गई । १९७२-७३ में करा से आय २८१३ करोड रुपये होन का अनुमान है । भारत में कृषि पर सबसे कम कर है । गत चष कई राज्या में कृषि कर के अन्तगत छोटी जोता का कर मुक्त किया गया । अब केंद्र द्वारा कृषि सम्पत्ति कर लगाया गया है ।

करा में प्रमुख आयकर है जिसका नगर निवामिया से दैनन्दिन सीधा सम्बन्ध आता है । भारत में व्यक्तिगत आय पर कर की दरें विश्व भर में सबसे अधिक हैं । अधिक आय पर अधिकतम ८८ १२ प्रतिशत तक कर चसून किया जाता है । १० हजार २० वार्षिक तक का आय पर भारत में ६ ९ प्रतिशत तक कर वसूल किया जाता है । कम्पनिया का आय कर एक अधिकर देना पडता है । १९७०-७१ में आय कर क दाय में परिवर्तन कर लिया गया तथा एक से अधिक आधिन सतान वाले अथवा विवाहित व्यक्ति को आय में दो जाने वाली आयकर की छूट, समाप्त कर दी गई ।

हर व्यक्ति या हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब या अरजिस्ट्रीकृत फम की या अय व्यक्तिगतम या व्यक्ति निकाय की, चाहे वह निगमित हा या नहा या आयकर अधिनियम की धारा २ क खड (३१) के उपखड (७) में निर्दिष्ट हर कृत्रिम विधिक व्यक्ति की श्णा में जा एमी दशा न हा जिसमें इस भाग का कोई अय परा लागू हाता है —

आय कर की दरें

- | | |
|---|---|
| (१) जहा कुल आय ५ ००० २० में अधिक नहीं है । | कुछ नहा, |
| (२) जहा कुल आय ५ ००० २० में अधिक है किन्तु १०,००० २० में अधिन नहीं है | उस रकम का १० प्रतिशत जितना कि कुल आय ५ ००० में अधिक है |
| (३) जहा कुल आय १० ००० २० में अधिक है किन्तु १५ ००० २० में अधिक नहा है | ५०० २० तथा उस रकम का १० प्रतिशत जितना कि कुल आय १०,००० २० में अधिक है |

- (४) जहा कुल आय १५,००० रु० स अधिक है किंतु २० ००० रु० स अधिक नहीं है। १,३५० रु० तथा उस रकम का २३ प्रतिशत जितनी कि कुल आय १५ ००० रु० स अधिक है।
- (५) जहा कुल आय २० ००० रु० स अधिक है किंतु २५ ००० रु० स अधिक नहीं ह। २ ५०० रु० तथा उस रकम का ३० प्रतिशत जितनी कि कुल आय २०,००० रु० से अधिक है।
- (६) जहा कुल आय २५ ००० रु० स अधिक है किंतु ३० ००० रु० स अधिक नहीं ह। ४ ००० रु० तथा उस रकम का ६० प्रतिशत जितनी कि कुल आय २५ ००० रु० स अधिक है।
- (७) जहा कुल आय ३० ००० रु० स अधिक है किंतु ४० ००० रु० स अधिक नहीं ह। ६ ००० रु० तथा उस रकम का ५० प्रतिशत जितनी कि कुल आय ३० ००० रु० से अधिक है।
- (८) जहा कुल आय ४० ००० रु० स अधिक है किंतु ६० ००० रु० स अधिक नहीं है। ११ ००० रु० तथा उस रकम का ६० प्रतिशत जितनी कि कुल आय ६० ००० रु० से अधिक है।
- (९) जहा कुल आय ६० ००० रु० से अधिक है किंतु ८० ००० रु० से अधिक नहीं है। २३ ००० रु० तथा उस रकम का ७० प्रतिशत जितनी कि कुल आय ६० ००० से अधिक है।
- (१०) जहा कुल आय ८० ००० रु० से अधिक है किंतु १ ०० ००० रु० स अधिक नहीं है। ३७ ००० रु० तथा उस रकम का ७५ प्रतिशत जितनी कि कुल आय ८०,००० रु० स अधिक है।
- (११) जहा कुल आय १ ०० ००० रु० स अधिक है किंतु २ ०० ००० रु० स अधिक नहीं है। ५२ ००० तथा उस रकम का ८० प्रतिशत जितनी कि कुल आय १ ०० ००० रु० स अधिक है।
- (१२) जहा कुल आय २ ००,००० रु० स अधिक है। १ ३२ ००० रु० तथा उस रकम का ८५ प्रतिशत जितनी कि कुल आय २ ०० ००० रु० से अधिक है।

परन्तु हम धरा क प्रयोजना के लिए एस हिंदू अविभक्त कुटुम्ब की दशा म जो १९७१ के अधिन के प्रथम दिन प्रारम्भ हाने वाल निधारण वष स सुसंगत पूव वष क दौरान किमी समय निर्मात्रिगत दा शर्तों म स कोई भी पूरा कर द अथात —

(क) उमक कम स कम दा मन्स्य एम है जो विभाजन का गवा करन के हकदार हैं और अटारह वष म कम आय के नहीं है अथवा।

(ख) उमक कम म कम दा मन्स्य एम है जो विभाजन का गवा करन क हकदार हैं और जो एक दूसर क पारपरिक वशज नहीं हैं और जो कुटुम्ब के किमी आय जीवित मन्स्य क पारपरिक वशज नहीं है—

(१) ३ ००० रु० ग अधिक का कुल आय पर कोई आयकर मन्स्य नहीं हागा

(२) जहा कुल आय ३ ००० रु० म अधिक हा किंतु ३ ६६० रु० स अधिक नहीं हा उम पर मन्स्य आयकर उम रकम क ६० प्रतिशत से अधिक नहीं हागा जिनकी कि कुल आय ३ ००० रु० स अधिक हा।

भारतीय रुपये का विदेशी विनिमय मूल्य

देश	भारतीय रुपये	विदेशी मुद्रा
१ म० रा० अमरिका	१०० ₹०	१२ ३० डालर
२ कनाडा	१०० ₹०	१२ ४४ कैनडियन डॉलर
३ ब्रिटेन	१०० ₹०	५ ५० पौंड
४ पश्चिमी जर्मनी	१०० ₹०	६६ ६६ मार्क
५ फ्रांस	१०० ₹०	७३ ४० फ्रक
६ बेल्जियम	१०० ₹०	६५७ ८० फ्रक
७ इटली	१०० ₹०	८३०० ३६ लीरा
८ नीदरलैंड	१०० ₹०	६७ ११ गिनडर
९ डनमार्क	१०० ₹०	६६ ७७ डेन्मार्क क्रोनर
१० नावें	१०० ₹०	६४ ५१ क्रोनर
११ स्वीडन	१०० ₹०	६८ ७० क्रोनर
१२ स्विट्जरलैंड	१०० ₹०	२४ २१ फ्रक
१३ आस्ट्रेलिया	१०० ₹०	११ ७० आस्ट्रेलियन डॉलर
१४ हांगकांग	१०० ₹०	८० ३० हांगकांग डॉलर
१५ मलयेशिया	१०० ₹०	६० ५० मलयेशियन डॉलर
१६ सिंगापुर	१०० ₹०	६० ५० सिंगापुर डॉलर
१७ लक्शा	१०० ₹०	७८ ७० लक्शा क २०
१८ जापान	१०० ₹०	४७६१ ३० येन
१९ न्यूजीलैंड	१०० ₹०	११ ७० न्यूजीलैंड डॉलर
२० ईराक	१०० ₹०	४ ७६ दीनार
२१ उगांडा	१०० ₹०	६६ ६० शिलिंग
२२ कीनिया	१०० ₹०	६४ ६० शिलिंग
२३ तंजानिया	१०० ₹०	६४ ६० शिलिंग
२४ दक्षिणी अफ्रीका	१०० ₹०	६ ५३ रंड

उत्तर-प्रदेश

स्वतन्त्रता संग्राम का अग्रदूत—संस्कृतिक पुनरुत्थान का अग्रदूत स्रोत
चिरनूतन हस्तशिल्प के लिये विख्यात भूमि सुधार में अग्रणी

- हदबंदी कानून बनाने में प्रथम (१९६०)
- छोटा जौती का लगान समाप्त करने में प्रथम (१९७०)
- हदबंदी आरम्भ करने में प्रथम (१९५२)
- जमींदारी खत्म करने में प्रथम (१९५२)
- पचायत राज प्रथा स्थापित करने में प्रथम (१९४९)
- कश प्रोग्राम में वरिष्ठता पाने में प्रथम (१९७१-७२)

सामाजिक—सुरक्षा—कार्यों में अग्रणी

- वृद्धावस्था पंशन आरम्भ करने में अग्रणी (१९५७)
- जेल-सुधार और वान अपराधिया की देखभाल में अग्रणी (१९५७)
- कुटीर एवं लघु उद्योगों के लिये मजदूरी के लिये
- पूनर्गम मजदूरी अधिनियम बनाने में अग्रणी (१९५८)

शिक्षा—सुधार में अग्रणी—

मातृभाषा की उच्चतर शिक्षा का माध्यम स्वीकार करने में प्रथम। सभी शिक्षकों को पेंशन, भविष्यनिधि और प्रेरुटी का विलम्ब देने में प्रथम। ममस्त विश्वविद्यालय के लिये समान सविधि लागू करने में प्रथम। शिक्षित बेकारों के लिये औद्योगिक समूहों की स्थापना से स्वयं सेवा योजित करने में प्रथम (१९७३)

अगले चरण

आधुनिकीकरण तथा औद्योगिककरण—

सन १९६० में रजिस्टर्ड फक्टोरियों की संख्या २६७ थी, जो बढ़कर सन १९७२ में ४१५८ हो गयी।

सन १९६० में कामरत फक्टोरियों की संख्या २५२८ थी, जो बढ़कर सन १९७२ में ३९७९ हो गयी।

सन १९६० में काम में लगे श्रमिकों की संख्या का अनुमानित दैनिक औसत २८०००० था, जो सन १९७२ में बढ़कर ३६५००० हो गया।

याजनाविधि के आरम्भ में राजकीय मिशन माधना का क्षमता ३० लाख हेक्टर पर निर्धारित करने की था, जो बढ़कर ३१ मार्च १९७३ का ६० लाख हेक्टर तक पहुँचेगी।

अल्पताओं और दवाखानों की संख्या सन १९६० में १३६८ थी, जो सन १९७१ में बढ़कर २०८ हो गयी।

डिप्टी कानून की संख्या जो सन १९६० में ५१ में १२८ था, बढ़कर सन १९७० में ७१ में २६३ हो गया।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या जो १९६० में ६१ में १७७१ थी, सन १९७१ में बढ़कर ३५१९ हो गयी।

स्वतंत्रता के प्रथम २५ वर्षों में हुई प्रगति के चरण चिह्न हैं—

नरार्ई भूमि—सुधार रहु चुक और शांति मीमं काख्यान शारदा—सागर माला टीना काष्ठापरिधि पुगर तथा बिट्टम मिन्न—फक्टोरिया संस्वन विश्वविद्यालय मद्रिकन और स्त्रीनिर्देशक बानेन शक्तिवावा और मिर्जापुर के औद्योगिक संस्थान।

आयोजन

१९४७ अगस्त में देश स्वतंत्र हान के साथ ही जन जीवन के आर्थिक विकास हेतु एक सुनियोजित आर्थिक विकास की प्रणाली निर्धारित करने की आवश्यकता अनुभव की गई। इस की पंचवर्षीय योजनाओं से प्रेरित होकर भारत में भी आयोजन का युग प्रारम्भ हुआ। माघ १९५० में भारत सरकार ने योजना आयोग का गठन किया जिसका उद्देश्य 'जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना तथा उसे समृद्ध एवं अधिक विविधतापूर्ण जीवन के लिए नए अवसर प्रदान करने हेतु विकास की एक प्रक्रिया प्रारम्भ करना था।' इसका उद्देश्य ३० वर्ष की अवधि में प्रतिव्यक्ति आय को दुगुना करना था।

स्वदेशी साधनों पर निर्भरता

१९७३ ७४ वर्ष के दौरान केन्द्र, राज्या तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए ४ ३६४ करोड़ रुपए के कुल योजना-व्यय का अनुमान लगाया गया है जो १९७२ ७३ के लिए ३ ९७३ करोड़ रु० के कुल व्यय से लगभग १० प्रतिशत अधिक है।

वार्षिक योजना के इस बढ हुए व्यय की वित्त-व्यवस्था करने के लिए बजट में घरेलू साधनों पर अधिक निर्भरता पर जोर दिया गया है। इसके लिए केन्द्र तथा राज्य नए साधनों से पर्याप्त मात्रा में वित्त जुटाने का प्रयास करेंगे। सावजनिक क्षेत्र सम्बन्धी सामूचे योजना व्यय का लगभग ८८ प्रतिशत इन साधनों में जुटाया जाएगा जबकि १९७३ ७४ के मूल अनुमानों में इसका अनुपात ८६ प्रतिशत था। १९७३ ७४ में घाटे की बजट व्यवस्था का स्तर उचित रखा गया है।

१९७३ ७४ के अनुमानों में राजस्व प्राप्ति की सामान्य वृद्धि को भी ध्यान में रखा गया है तथा गर-योजना व्यय में न्यूनतम वृद्धि का प्रयास किया गया है। रक्षा सम्बन्धी व्यय के लिए पिछले वर्ष के बराबर १९७३ ७४ में १ ६०० करोड़ रु० की व्यवस्था की गई है। राज्या को प्राकृतिक आपदाओं से राहत देने के लिए ४० करोड़ रु० के अनुदान की व्यवस्था की गई है जबकि पिछले वर्ष यह राशि ८० करोड़ रु० थी। बंगलादेश के लिए २५ करोड़ रु० के अनुदान की व्यवस्था की गयी है।

१९७३ ७४ के दौरान पिछले वर्ष से ६६ करोड़ रु० अधिक ब्याज लिए जान का अनुमान है। इसका मुख्य कारण कर्जों की बढ़ती हुई मात्रा है। सरकारी एजेंसियों के माध्यम से खाद्यान्न के सग्रहण और वितरण की सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए १३०

करने में योजना से प्राप्त अनुभवों को ध्यान रखा गया है ।

पाँचवीं योजना की नीति व लक्ष्य

पाचवी पंचवर्षीय योजना व ठाम लक्ष्या का निर्धारण भारतीय प्रघव्यवस्था व दीध बालीन परिप्र य तथा गरीबी हटाने और आर्थिक रूप से आरमतिभर हाने के दा उद्देश्या व आधार पर किया गया है । पाचवी पंचवर्षीय योजना भारतीय प्रघव्यवस्था व लिए १९७१-७५ से १९८५-८६ तक की लम्बी अवधि की परिपेक्ष्य योजना व अग रूप में है ।

गरीबी हटाने तथा आत्म निर्भर हाने की बुनियादी उद्देश्या की प्रति व लिए यह आवश्यक है कि पाचवी योजना व दौरान विकास दर बढ़े, आय का बहतर वितरण हो तथा देसी बचत की दर में तीव्र वृद्धि हो । पाचवी योजना में ५.५ प्रतिशत की विकास दर का लक्ष्य है तथा इन लक्ष्या की प्राप्ति के लिए अधिक कायकुशलता के साथ साथ पूजा भी अधिक लगानी होगी ।

नीति विषयक सिद्धान्त

- (क) निजी क्षेत्र समेत विभिन्न क्षेत्रों के लिए निर्धारित पूजा व्यवस्था का उचित आवंटन तथा उपयोग,
- (ख) सामाजिक दृष्टि से तरजीह वाले क्षेत्रों में निजी पूजा लगाने तथा सामाजिक दृष्टि से कम लाभकारी क्षेत्रों में निजी पूजा न लगाने व उद्देश्य से किए गए उपाय,
- (ग) ऐसे मस्यागत मुद्धार जिनसे जन उत्पादन शक्तियाँ को बल मिलेगा जो उत्पादन का स्तर बढ़ाने और अतिरिक्त उत्पादन के लक्ष्या के अनेगाहृत समान वितरण में सहायक होगी,
- (घ) वित्तीय तथा मुद्रा सम्बन्धी उपाय जो मुद्रास्फीति हुए वगर विकास प्रक्रिया में सहायक होंगे ।

साधन जुटाने की नीति

पाचवी पंचवर्षीय योजना के लिए वित्त व्यवस्था करने की नीति गर मुद्रास्फीतिकारी विकास पर आधारित है । अत वित्त व्यवस्था इस ढग से की जाएगी कि व्यापक उपभोग के लिए वृत्ति उत्पादना जस मजूरी माल में वाछित वृद्धि हो सक तथा इस्पात कोयला तल सोमट, उबरक वित्तुत जस प्रमुख क्षेत्रों का वरित विकास हो सक ।

साधन जुटाने के प्रमुख स्रोत कराधान ऋण तथा सावजनिक प्रतिष्ठानों का सम्बन्ध में मूल नीति है । समेष में सावजनिक बचत में वृद्धि करना साधन जुटाने की नीति की आधार शिला है । इसका अर्थ होगा—अधिक प्रत्यक्ष कर लगाना विशेषकर शहरी सम्पत्ति पर । इनमें भूमि का समाजीकरण गर आवश्यक एवं विलास सामग्री पर उत्पादन शुल्क की विभेदक पद्धति तथा वृत्ति पर प्रत्यक्ष कर प्रणाली से करा का आधार व्यापक करना शामिल है जो उत्पादकता में वृद्धि तथा आय के आधार पर सगन है । इसी प्रकार गर निगमित प्रतिष्ठानों से कर बमूल करने तथा कर वमूली व्यवस्था व प्रणाली को सुधारने व लिए उपयुक्त उपाय ढूढने होंगे ।

घ्राय वितरण सम्बन्धी नीति

देश की जनसंख्या के निम्नतम ३० प्रतिशत की खपत के स्तर में वृद्धि करना पावनी योजना का एक बुनियादी उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रमुख रूप से अतिरिक्त राजगार अथवा उत्पन्न करने पर जोर दिया जाएगा, जो काफी हद तक पूजा निवेश परिव्यय की प्रति यूनिट के अनुसार अतिरिक्त उत्पादक राजगार के अथवा अथवा अधिकाधिक बनाने पर निर्भर करेगा।

कृषि योजना के अंतर्गत कुछ विशेष कार्यक्रम तयार किए गए हैं जिनमें इस बात को ध्यान में रखा गया है कि हमारी जनसंख्या का निम्नतम ३० प्रतिशत या अधिकांश पिछड़े वर्ग और पिछड़े क्षेत्रों का है। छोटे व सीमित किसानों का उत्पादन आधार बढाने पर इन सभी कार्यक्रमों में विशेष जोर दिया गया है। भूमि सुधार का नाग करने से भी घ्राय में काफी वृद्धि की जा सकती है। इसके लिए, कृषि सम्बन्धी आवश्यक सामग्रियों के वितरण के अर्थ के रूप में ही भूमि सुधार किए जा सकते हैं। काश्तकारों सम्बन्धी परिस्थितियों में सधार लाने तथा ऋण गन्तता कम करने के उपायों से उत्पादन बढेगा तथा बटाईदारी और छोटे काश्तकारों में घ्राय का वितरण बेहतर होगा।

कृषि में, डेरी मूर्गीपालन जन्म सम्बद्ध उद्योगों विभिन्न कार्यक्रमों से होने वाले लाभ के समुचित वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

संगठित धात्र में घ्राय वितरण का, उत्पादन और उसमें मजदूरी का हिस्सा बनाकर सुधारा जा सकता है। इसके लिए आवश्यक होगा कि सम्पत्ति के स्वामी के उपभोग की कीमत पर से मजदूरी हिस्सा बनाया जाए। नौकरी पेशावर्ग का उपभोग स्तर बनाए रखने के लिए सावजनिक वितरण प्रणाली से वाञ्छित वस्तुओं की सप्लाई जरूरी है। यह भी आवश्यक है कि वितरण की लागत कम से कम रखी जाए। इस प्रकार सावजनिक वितरण प्रणाली व्यापार में सट्टेबाजी की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने तथा उत्पादन की निरंतर वृद्धि में योगदान दे सकेगी।

जनसंख्या के निम्नतम ३० प्रतिशत के उपभोग के लिए वितरण व्यवस्था सुधारने में राष्ट्रीय पूनतम आवश्यकता कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इन कार्यक्रमों से सामाजिक सेवाओं की स्थिति भी बेहतर होगी।

विकास परिचय का स्वरूप

पाचवी योजना के लिए १३,४११ करोड़ रु० की व्यवस्था की गई है। इस कुल व्यवस्था में से ३७,२१० करोड़ रु० सावजनिक क्षेत्रों के लिए तथा १६,१६१ करोड़ रु० निजी धात्र के लिए हैं। सावजनिक क्षेत्रों के लिए निर्धारित राशि में से ३१,६७० करोड़ रु० पूजा निवेश के लिए हैं तथा ५,५९० करोड़ रु० चानू परिव्यय के लिए। निम्न तालिका सावजनिक क्षेत्रों की प्रस्तावित व्यवस्था के बारे में है

(करोड़ रुपये)

विकास में	केंद्र	राज्य	सघ शासित क्षेत्र	जाड
	१	२	३	४
१ कृषि	१६८६	२७१७	६७	४७३०
२ मिचार्	१८०	२५११	२६	२६८१

३	विजली	७३८	५३४३	१०६	६१६०
४	खान तथा उत्पन्ना	८१८०	७४२	१७	८६३६
५	निर्माण	२५	—	—	२५
६	परिवहन तथा संचार	५७२७	१०६७	६१	७११५
७	व्यापार तथा भंडारण	१६४	११	—	२०५
८	आवास तथा स्थावर संपदा	२३७	३३८	२५	६००
९	बकिंग तथा बीमा	६०	—	—	६०
१०	जन प्रशासन तथा रक्षा	६०	३०	८	६८
११	अन्य सेवाएँ	१६५३	३५८०	२५७	५७६०
अन्य सेवाएँ					
१	शिक्षा	४८४	११५५	८७	१७२६
२	स्वास्थ्य	२५३	५१७	२६	७६६
३	परिवार नियोजन	५१६	—	—	५१६
४	पोषाहार	७०	३३०	—	४००
५	शहरी विकास	२५२	२७२	१६	५४३
६	जलपूर्ति	१६	६२८	८२	१०२२
७	समाज कल्याण	२००	२६	३	२२६
८	पिछड़े वर्गों का कल्याण	५५	१६७	८	२२६
९	श्रम कल्याण	१५	३८	८	५७
१०	विविध	६२	१५१	३२	२७५
११	विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी	६१६	—	—	४१६
१२	पवतीय तथा जनजातीय क्षेत्र	—	५००	—	५००
१३	विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी या प्रज्ञित किए जाने वाले प्रति- रिक्त वकल्पिक ससाधना के लिए निर्धारित धनराशि म अनुमानित कटौती कम करना	१३२	—	—	१३२
जोड़		१६५७७	१७०७३	६००	३७२५०

पाचवों योजना के लिए उत्पादक क्षेत्रों द्वारा अनुमानित वित्तीय साधन

(१६७२-७३ के मूल्या पर कराड ६० में)

१	वर्तमान विकास परिषदा के लिए बजट में व्यवस्था	५८५०
२	परलू बचत	६५१३०
	(क) सावजनिक क्षेत्र	१४३३६
	(१) केंद्रीय और राज्य बजट	८३४८
	(२) केंद्रीय और राज्य बजट का वित्तिय साधन	

(ख) वित्तीय सत्याप	७३६
(१) रिजर्व बैंक आफ इंडिया	४६१
(२) श्रम	२७८
(ग) निजी क्षेत्र	३०,०५४
(१) निजी निगमित गर वित्तीय क्षेत्र	६१३६
(२) ऋण न देने वाली सहकारी सत्याप	१६६
(३) घरलू क्षेत्र	२५७४७
३ विदेशी वचत भवधी ड्राफ्ट	०६३१
(क) चालू खान व भुगतान सतुलन व घाटे का पूरा करने के लिए नयी विधिया का शुद्ध प्रग्लर्वाह	२०३१
(ख) टयाज स थापस मिलने वाली राशि तथा पी० एल-६८० ऋण एव जमा राशि पर रु० म ऋण परिशोधन भुगतान	२००
कुल	५३६११

सावजनिक वचत सावजनिक निपटान योग्य आय और व्यय पर निर्भर करती है।

सावजनिक निपटान योग्य आय का वृद्धि के लिए इनम वृद्धि की जाएगी

- (१) सरकारी सम्पत्तियों और प्रतिष्ठानों से कुल आय (२) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर (३) निजी क्षेत्र की शुद्ध चालू हस्तांतरण तथा अनुदान में कमी से सरकार का गर वित्तीय और गर-याजना खच १६७३ ७६ के ६०२५ करोड़ रुपए में बढ़कर १६७८ ७६ म ८३३१ करोड़ रुपए हो जाएगा।

औसत सरकारी वचन की दर जो १६७२ ७३ म सरकारी निपटान योग्य आय का ११२ प्रतिशत थी, बढ़कर १६७८ ७६ म २२८ प्रतिशत हो जाएगी। सावजनिक निगमित वचत १६७३ ७४ की ६३४ करोड़ रुपए से बढ़कर १६७८ ७६ म १०३६ करोड़ रुपए हो जाने का अनुमान है।

इस समय सरकारी क्षेत्र काफी बड़ा है इसलिए सहकारी समितियों की कुशलता से चलाने की ओर ध्यान देना आवश्यक है ताकि दली वचता में इनका समुचित योगदान मिल सके। सरकारी वचत १६७३ ७६ की ५० करोड़ रुपए से बढ़कर १६७८ ७६ म ६८ करोड़ रुपए हो जाने की संभावना है।

अतिरिक्त वित्तीय साधन

पाचवा यात्रा के लिए सावजनिक क्षेत्र द्वारा अतिरिक्त मांगना संजुगई जान वाली राशि ६८४० करोड़ रुपए है—४००० करोड़ रुपए केन्द्र म और २५५० करोड़ रुपए राज्य म। केन्द्र व अतिरिक्त मांग हांग—(१) रत डाक-तार और श्रम सावजनिक प्रतिष्ठानों की मूल्य नीति म संगोपन ताकि वे आय और पूंजी निवेश की मतायजनन दर प्राप्त कर सकें, (२) वन्द्रीय आय और सम्पत्ति कर के आधार का थापक बनाना (३) अनुमान राशि म जमा (४) शहरी सम्पत्ति कर म वृद्धि, (५) वस्तुधारा पर कर म वृद्धि जिनम न केवल अतिरिक्त राजस्व मिलेगा, बल्कि समाज व समृद्धि वग का उपभोग भी निपटित

होगा। राज्य (१) कृषि पर प्रत्यक्ष कर म वृद्धि (२) मिर्चाई की दर म वद्धि और (३) बिजली शुल्का मे वद्धि करके प्रतिरिक्त साधन जुटाएग।

प्रतिरिक्त साधन जुटाने के लिए जो नीति सुचायी गई है, उसका न बवल अधिक साधा उपलब्ध हाग बल्कि आत्म निर्भरता मन्व स्यायित्क तथा आय और उपभोग की असमानताआ मे कमी लाने जसे योजना के लक्ष्य भी पूरे हागे।

निजी क्षेत्र म योजना के लिए १६ १६१ करोड रुपए क साधना का अनुमान है जिसम से १०,२१६ करोड रुपए भौतिक परिसम्पत्तियाम म लगने वाली पूजी है और ५,९४५ करोड रुपए निगमित और सहकारी क्षेत्र म निवेश के लिए हैं।

भुगतान सन्तुलन

भुगतान सन्तुलन के अनुमाना म हाल म इस्पात पेट्रोलियम जय पदायों अखवारी कागज और उवरका आदि के आयात मूल्यो मे तेजी से हुई वृद्धि और ऋण सेवा के बढ़त हुए भार को ध्यान म रखा गया है। भुगतान सन्तुलन के लिए मुख्य मायनाए इस प्रकार हैं -

- (१) देश म उपलब्धि के अनुसार अग्र-व्यवस्था के लिए ऊर्जा के आधार को नया स्वरूप प्रदान करना।
- (२) अनावश्यक उपभोग की वस्तुआ के आयात पर प्रतिबन्ध।
- (३) खाद्य अग्रव्यवस्था का कृशत प्रबन्ध।
- (४) गैर-परम्परागत वस्तुआ के निर्यात को बढ़ाने के लिए उचित और जोरदार प्रयास।
- (५) विदेशी मुद्रा की कमी की कुल ४००० करोड रुपए की सहायता से आपूर्ति जो रियायती दर पर उपलब्ध होगी। ऋण-सेवा का कुल भार २५५७ करोड रुपए होगा और इस प्रकार शुद्ध सहायता १ ४५१ करोड रुपए की है।

निर्यात १६७३ ७४ के २ ००० करोड रुपए स बढ़कर १६७८ ७६ म २ ६८० करोड रुपए का हो जाने का अनुमान है। निर्यात की समुक्त विकास दर ७ ६ प्रतिशत होगी जो चौथी योजना म वास्तव म प्राप्त दर जितनी ही है। इन्जिनियरिंग सामान कपडा, समुद्री-उत्पादना और चमडे के सामान के निर्यात से होने वाली आय म बहुत अधिक आय होने का अनुमान है।

१ ६७८ ७६ तक आयात के ३ १०० कराड रुपए तक हो जान का अनुमान है। इसम खाद्यान्न के आयात की व्यवस्था शामिल नहीं है। पाचवा योजना के दौरान आयात की प्रमुख वस्तुए हागा—पेट्रोलियम जय पदाय धातु के सामान इस्पात उवरक आदि। इन वस्तुआ के आयात प्रतिस्थापन क प्रयास चल रह हैं। पेट्रोलियम जय पदाय का आयात प्रतिस्थापन करन क लिए (१) कोयल का अधिक उपयोग करना होगा और (२) पन बिजली के विकास की गति का तज करना होगा।

राष्ट्रीय न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम

पाचवी यात्रना म उन्निधित राष्ट्रीय न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम म सभी क्षत्रा के लिए सामाजिक उपयोग अनु पर्याप्त साधना का व्यवस्था करने का प्रयास किया गया है। इस कार्यक्रम म प्रारम्भित शिक्षा आमीण स्वास्थ्य पापाहार पयजल मराना क लिए भूषड, गन्नी बमिया क मुधार, गावा म सडक बनान और गावा म बिजली लगान से

अधिन वायत्रमा पर विशेष ध्यान दिया गया है। यूननम आवश्यकता वायत्रम पिछड़े
 जा व निए विशेष महत्व का हागा।

भूमि सुधार

पाचवा योजना की भूमि सुधार मबधी नीति म ठाम वायत्रमा, कार्यावयन मबधी
 ववस्था के सुधार और जनता के सहयाग पर जोर दिया जाएगा।

यह जरूरी है कि निश्चित श्रवधि के वायत्रमा के अनुसार वतमान पट्टेदारी कानूना
 और बटाईदारा का भूमि का स्वामित्व देने व कानूना की लुटिया दूर करने व लिए तुरन्त कानून
 माने व उपाय किए जाए। कार्यावित किए जाने वाल कयत्रमा म पट्टेदारी सबधी रिवाड
 पार करने और रखन तथा भूमि चक्रवन्दी व व्यापक वायत्रम को प्राथमिकता दी जाणी।
 सी प्रकार वायत्रमा व त्रियावयन की व्यवस्था म भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए जाएगे।

सिंचाई

सिंचाई यानता व दो प्रमुख उद्देश्य हागे (१) सूखा वाने क्षेत्रा की आवश्यकता
 को ध्यान म रखते हुए सिंचाई की सम्भाव्य क्षमता म काफी वद्धि करना (२) सम्भावित
 वृष्टि के उपयोग म सुधार और अधिकतम उत्पादकता के लिए जल और भूमि का सशम
 वध। पाचवी योजना म बडी और मझाली सिंचाई परियोजनामा के लिये २४०१ कराड
 पए का परिचय है तथा ६२ लाख हकटयर भूमि की सिंचाई का लक्ष्य रखा गया है।

पाचवा योजना म लघु सिंचाई परियोजनामा द्वारा ६० लाख हकटयर भूमि का सिंचित
 क्षेत्र बनाने की योजना है। इसका कुल परिचय ८१० करोड रुपए हागा। इसम भूमि जल
 विकास सबिस सिंचाई और लिफ्ट सिंचाई भी सम्मिलित हांगे। भूमि जल के उचित नियमन
 नियंत्रण और प्रवध के लिए कई राया म आवश्यक अधिनियम भी जरूरी हागे।

विजली

१९७८-७९ म रिजनी की मप्लाड के लिए २ करोड ३० लाख बिलोवाट स्थापित
 क्षमता की जरूरत पडेगी। पाचवी याजना म १ करोड ६५ लाख ५० हजार किलावाट का
 प्रतिरिक्त क्षमता का प्रस्ताव है। पाचवा याजना म १५ लाख पाम्पग मटा का विजली दी
 जायेगा तथा १ लाख १० हजार गावा का बिद्युतीकरण हागा। पाचवी पचवर्षीय याजना म
 कुल ६१६० कराड १० का वित्तीय परिचय हागा।

उद्योग और खनिज

उद्योग और खनिज के क्षेत्र म ८२ प्रतिशत वार्षिक विकास दर का लक्ष्य रखा
 गया है। याजना म निम्नलिखित बात पर जोर दिया गया है (१) प्रमुख क्षेत्र उद्योगा का
 तजी म विकास (२) जन-माधारण के उपभोग की वस्तुधा की मप्लाट (३) निर्यात म
 वृद्धि के लिए अतिरिक्त शमता बनाना (४) ग्रामीण और लघु उद्योगा का प्रोमाहन तथा
 (५) आयागिक लुटि स पिछड़े क्षेत्रा का विकास। नादसेम दन की नीति विश्वी
 पूजी निवेश और तकनीकी सहयाग नीति मय और ऋण-नीति ऊर्जा विधान और तक
 नीकी नीति आदि के लिए उपयुक्त नीतिया का निर्धारण किया गया है। पाचवी याजना
 म- उद्योग और खनिज शत्र के लिए १२५२६ कराड १० का परिचय रखा गया है।
 रनम से गर-मश्वारी उपा मश्वारी क्षेत्रा के लिए ५२०० करोड १० हाग।

ग्रामीण और लघु उद्योग

पाचवी योजना मे एक व्यापक नीति यह रखा गई है कि ग्रामीण और लघु उद्योग के विकास कार्यक्रमों में अधिक से अधिक विस्तार के लिए दृष्ट विभिन्न रूपों में महायोजना और सुविधाएँ दी जाएँ। सावजनिक क्षेत्र में इन कार्यक्रमों के लिए लगभग ६११ करोड़ रु० परिव्यय की व्यवस्था है। इसके प्रतिरिक्त सहायगत वित्त सहित गर-सरकारी साता से लगभग १०२० करोड़ रु० का पूँजी निवेश का अनुमान है। पाचवी योजना में परामर्श सेवाएँ, तकनीकी सुधार, सहकारी समितियाँ जैसे अनेक कार्यक्रम भी चालू किए जायेंगे।

परिवहन

पाचवी योजना में परिवहन व्यवस्था के विभिन्न अंगों का समन्वित और व्यवस्थित विकास पर मुख्य रूप से जोर दिया गया है ताकि परिवहन व्यवस्था सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखी जा सके और इसके विभिन्न अंगों का समन्वित विकास एक दूसरे पर निर्भर हो और एक दूसरे के पूरक बनें। सावजनिक क्षेत्र में कुल परिव्यय ५,६६१ करोड़ रु० का है। इसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है

(करोड़ रु० में)

विकास का मद	केन्द्र	केन्द्र प्रायोजित	राज्य	केन्द्र शासित प्रदेश	योग
१ रेल	२५५०	—	—	—	२५५०
२, सड़क	६२०	६४	६६१	७३	१७६८
३ सड़क परिवहन	२६	—	२५६	३	२८५
४ बन्दरगाह	३२०	१०	१६	३	३५२
५ जहाजरानी	२५८	—	—	२	२६०
६ अन्तर्देशीय जल परिवहन	४८	१४	६	२	७०
७ प्रकाश स्तम्भ	१२	—	—	—	१२
८ नागरिक विमान सेवा	३६१	—	२	१	३६४
कुल	४२२५	११८	१२६४	८४	५६६१

शिक्षा

योजना में चार मुख्य बातों पर जोर दिया गया है (१) शिक्षा के अवसरों में समानता, (२) शिक्षा पद्धति तथा विकास की आवश्यकता और रोजगार अवसरों में अधिक निकट संबंध (३) शिक्षा के स्तर में सुधार और (४) सामाजिक तथा आर्थिक विकास के कार्यों में छात्रों सहित शिक्षा-समुदाय को लगाना। तकनीकी शिक्षाओं को सुव्यवस्थित किया जायगा तथा योजनाबद्धि में उच्च स्तर में भी सुधार लाया जायगा। पाचवी योजना में शिक्षा का ऐसा अवसर उपलब्ध कराने का प्रस्ताव रखा गया है जिससे अल्पतया समाज के पिछड़े और कमजोर वर्ग को लाभ पहुँचे। पाचवी योजना में शिक्षा के लिए १७२६ करोड़ रु० परिव्यय की व्यवस्था है। प्रस्तावित परिव्यय का ६३ प्रतिशत प्रारम्भिक शिक्षा पर व्यय

होगा और यह पाचवी योजना की एक प्रमुख बात होगी। दोपहर के भोजन-कार्यक्रम के प्रस्तावित विस्तार होने पर प्रारम्भिक शिक्षा में महत्वपूर्ण विस्तार की सम्भावना है।

स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और पोषाहार

पाचवी योजना का प्रमुख लक्ष्य समाज के कमजोर वर्ग शिक्षा, गभवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए परिवार नियोजन तथा पोषाहार कार्यक्रम के साथ-साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी यूनितम सुविधाएँ देना है। पाचवी योजनावधि में (१) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा उपलब्ध कराना, (२) क्षेत्रीय असमानताओं को ठीक करना, (३) सत्रामक रागों के उन्मूलन और नियंत्रण तथा (४) शिक्षा के स्तर में सुधार और स्वास्थ्य कर्मचारियों के प्रशिक्षण आदि पर जोर दिया जायेगा। यह समझा गया है कि ममवित स्वास्थ्य कार्यक्रम के लिए बहुत उद्देश्यीय स्वास्थ्य इकाइयों की आवश्यकता है और इन उद्देश्यों की सफलता के लिए अर्ध चिन्तित कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना भी जरूरी होगा। पाचवी पाचवर्षीय योजना में ७६६ करोड़ रु० का परिश्रय रखा गया है। इसमें से ५४३ करोड़ रु० राज्य और केन्द्रशासित प्रदेशों की योजनाओं पर व्यय किया जायेगा।

पाचवी योजनावधि में पोषाहार कार्यक्रम के विस्तार का प्रस्ताव है। पाचवी योजना में १ करोड़ ६५ लाख व्यक्तियों को दोपहर का भोजन देने का तथा एक करोड़ व्यक्तियों को विशय पोषाहार देने का कार्यक्रम रखा गया है। पाचवी योजना में पोषाहार के लिए ४०५ करोड़ रु० का परिव्यय रखा गया है।

शहरी विकास तथा आवास

पाचवी योजना में इस क्षेत्र में प्रमुख लक्ष्य होगा (१) शहरी क्षेत्रों में नागरिक सेवाएँ प्रारम्भ करना (२) महानगरों की समस्याओं का बढ पैमाने पर सामना करने के लिए प्रयत्न करना (३) छोटे शहरों में विकास का प्रोत्साहन देना तथा शहरीकरण के बढत हुए दबाव को रोकने के लिए नए शहरी क्षेत्रों को स्थापित करना और महानगरों में सम्बद्ध परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सहायता देना। शहरी नियोजन की सबसे गम्भीर समस्या है—शहरी भूमि के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि। इस सम्बन्ध में शहरी भूमि नीति का निर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक है। पाचवी योजना में ५७८ करोड़ रुपये परिव्यय का प्रस्ताव है।

आवासों की बढ़ती हुई मांग और भवन निर्माण-सामग्रियों के बढ़ते हुए मूल्यों के कारण उनकी अनुपलब्धता का ध्यान में रखते हुए पाचवी योजना में आवास क्षेत्र में निम्न लिखित समस्याओं का ध्यान में रखा गया है (१) वर्तमान आवासीय समस्याओं की स्थिति में सुधार (२) ४० लाख भूमिहीन मजदूरों के लिए आवास भूखण्ड (३) समाज के कुछ कमजोर वर्गों के लोगों को रियायती दर पर मकान देने की योजना को आगे भी चाल रखना और (४) सम्थागत मण्डलों की सहायता में विस्तार।

आवास क्षेत्र के लिए कुल ५८० करोड़ रु० का परिव्यय है। इसमें से रायपुर और केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए ३४३ करोड़ रु० होगा।

पिछड़े यगों का विकास

पाचवाँ याजना म पिछड़े यगों क विकास का याजना का मन्त्र स य है—मग वग क लागे क जायत-मर म सुधार लागे तथा गरीबी घोर जन जाति क लागे तथा म्रप क्षत्रा के विभाग मर क छ रर का रम कर्ना । गरीबी घोर जात्रा तीव गरी के विभाग के लिए एर मग रर विभाग योजना गुप्त का जायगा । अनुभूति जाति क लागे की जमाने वग पर विभरना कम करने क लिए द्रम वग क ब्ययगाया म विभिन्न गरी घोर उमर प्राधुनिकीकरण का काम भी पूरा रिया जायगा । सम्पुर्णता का उभूत करी घोर म कामधधा क यरीकरण क प्रयाग म गरी लागे जायगी । पांचवाँ याजना म पिछड़े वग क लिए जो कायक्रम चालू रिए जायेंगे उर पर राज्य क्षत्र म १७० कराड ६० तथा कर्तीय क्षेत्र म ८५ करोड २० ही राशि निर्धारित की गई है । इमर प्रतिरित्त पहली घोर जन जातीय क्षत्रा क विकास क लिए ४०० कराड २० का प्रावधान है ।

समाज कल्याण

पाचवाँ याजना म समाज कल्याण की भावा का विस्तन रूप रिया गया है घोर कल्याण तथा विराम सेवाका का मिलान का मन्त्र रखा गया है । समाज कल्याण क लिए निर्धारित २२६ कराड रुपए परिषय म स २०० करोड रुपए केन्द्रीय क्षत्र म होगा ।

विज्ञान और टेक्नोलाजी

विज्ञान और टेक्नोलाजी याजना का मुख्य लक्ष्य म्रध-व्ययस्था के मुख्य क्षत्रा का म्रत्मनिभर बनाना है । विज्ञान और टेक्नोलाजी कायक्रम का पहल-पहल योजना म स्थान दिया गया है । योग्यता और साम्य वाके क्षत्रा का गति प्रदात करना तथा डिजाइत परामश प्राकृतिक माधना के मल्याकन जमे महत्वपूर्ण क्षत्रा की तुटिया दूर करना इसका उद्देश्य है ।

उपयोग प्रधान विज्ञान और टेक्नोलाजी याजना म उत्पादनकर्ता तथा टेक्नोलाजी क उपभोक्ता के बीच सम्पक कायम करने पर जार दिया गया है । इसी प्रकार विस्तन समठन तथा प्रबध सबधी परिवतन करने का प्रस्ताव रखा गया है ।

विज्ञान और टेक्नोलाजी के लिए कुल १०३३ कराड रुपए वित्तीय परिषय रखा गया है ।

Gram UNIQUE
G P O Box No 195

Phone 66077

N. K. ELECTRICALS

Office

D-53, Hathi Babu Marg, Bani Park, Jaipur-6

Works

Plot 228B, Vishwakarma Industrial Area Chomu Road, Jaipur

Products

- CEILING FANS
- ELECTRIC MOTORS
- PUMPING SETS
- ROOM COOLERS
- ELECTRICAL TOOLS
- ELECTRIC GOODS
- G L S LAMPS

With Best Compliments From

KANOI UDYOG

The Eastern Manufacturing Company Ltd

and

The Gillapukri Tea & Seed Company Ltd

and

Sri Mahamaya Investments Private Limited

9 Brabourne Road 3rd Floor

CALCUTTA 1

Phones { 22 8301 (6 lines)
46 9813
46 2450
46 2446

Gram GIESLED

Sri Mahamaya Mining & Industries Private Limited

Devi Bhawan,

10 Bhawani Singh Marg

JAIPUR-1 (Raj)

Phone 67423
66966

Gram MANMADES

भारत में सहकारी सिद्धान्तों के अनुसार चलती
प्रथम समाचार-संस्था

हिन्दुस्थान समाचार

की

राजकोट नागरिक सहकारी बैंक लि

के सभी सहकारी मित्रों का अभिनन्दन

राजकोट नागरिक सहकारी बैंक लि०, राजकोट,

ने

भारत भर में कार्य करने वाले सभी सहकारी बैंकों में
प्रथम स्थान ग्रहण करके २१वें वर्ष में प्रवेश किया है।

स्थापना २१ ६-१९५३

नाथ पूजा	₹०	१ ३७ ०० ०००	स अघिव
अधिकृत शंकर पूजा	₹०	१७ ०० ०००	स अघिव
रिजर्व एव अग्रय षड	₹०	२८ ०० ०००	म अघिव
डिपोजिट	₹०	४५६ ०० ०००	स अघिव
एडवांस	₹०	२ ७५ ०० ०००	स अघिव

रजि० ऑफिस नागरिक भवन न० १ डबलरभाई रोड, राजकोट

- शाखाएं -

- | | |
|---|---|
| १ उद्योगभगर शाखा
दूरभाष क्र० २४८४१ | २ सरदार वी० पी० गेड शाखा
दूरभाष क्र० २५३६६ |
| ३ जकशन प्लोट शाखा
दूरभाष क्र० २६४७६ | ४ बेडीपारा शाखा डिलक्स सिनेमा के पास
दूरभाष क्र० २५३५६ |
| ५ डा० यातिफ रोड शाखा
जागनाथ मंदिर के पास | ६ बीकानेर शाखा (राजकोट जिला)
चावडी चौक दूरभाष २६७ |

तथा तुरत ही जिला स्तर पर जेतपुर मे

एव राजकोट मे मोवाईल शाखा शुरू होने वाली है।

कातिलाल ला भट्ट
मैनेजिंग डायरेक्टर

अरविंद र० मणीभार
चेयरमैन



a big name in the Power game

From modest beginnings HE has grown into a huge dynamic and vigorous organisation. Today HE is a name to be reckoned with in the field of Heavy Electrical equipment for generating, transmitting and utilizing power.

At HE teams of skilled engineers and technicians operate through specialised self contained research and production units. These units are geared to meet specific demands for all types and sizes of heavy electrical equipment required in any part of the world.

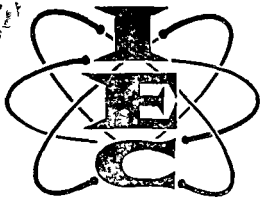
Here is our range

- Water Turbines and matching generators upto 200 MW
- Steam Turbines Turbo Generators and Condensers
- Transformers of unit ratings upto 400 MVA and for voltage upto 400 kV
- High Voltage switchgear upto 220 kV
- AC and DC Motors upto largest sizes envisaged
- Control gear and Control panels
- Electric and Diesel Electric Traction Equipment
- Rectifiers and Capacitors
- Voltage Transformers (Electro Magnetic and Capacitor types) and Current Transformers for voltages upto 400 kV

HEAVY ELECTRICALS (INDIA) LTD. BHOPAL

(A Government of India Undertaking)

HEAVY ELECTRICALS (INDIA) LTD. BHOPAL



» In the forefront of Automation «

the ¹st
preference of ELEC EQUIPMENT
MANUFACTURERS & USERS



□ SWITCHES OF ALL
TYPES



□ RELAYS

□ CAPACITORS

□ TERMINAL BLOCKS
& STRIPS



Exports to 15 countries

**INDIAN
ENGINEERING CO**

P B 18551 World Naka Bombay-400018, Ph. 379544 & 374565.
Also at: Calcutta-Delhi Madras-Bangalore-Hyderabad.

WE HELP YOU
TO REACH
YOUR
CUSTOMER
OVERSEAS



With a fleet of modern

- Cargo Vessels
- Bulk Carriers
- Tankers
- Ore-Bulk-Oil Carriers

**The Shipping
Corporation
Of India Ltd**

Steelcrete House
Dinshaw Wacha Road Bombay 2
Branches at Calcutta and Bombay
Agents at all principal ports of the v

उद्योग

औद्योगिक उत्पादन

औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि की दर जो १९६६ में ७.५ प्रतिशत थी कम होकर १९७० में ३.१ प्रतिशत हो गयी और उसके बाद और कम होकर १९७१ में २.६ प्रतिशत हो गयी। १९७२ में इस निराशाजनक प्रवृत्ति की दिशा कुछ बदल गयी। १९७२ में औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक में १९७१ की इसी अवधि की तुलना में ७.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। किन्तु १९७३ में औद्योगिक उत्पादन में पुनः गिरावट आई। दिसम्बर १९७२ की तुलना में जनवरी १९७३ में उत्पादन तेजी से गिरा और इसका सूचकांक २११ से घटकर २०२.२ हो गया।

औद्योगिक उत्पादन (स्थूल) के सामान्य सूचकांक अंक (आधार १९६० = १००)

महीना	१९७०	१९७१	१९७२
जनवरी	१८६६	१८८४	१९६६
फरवरी	१७५२	१७८७	१९६७
मार्च	१८८५	१९२४	२०८०
अप्रैल	१८१७	१८३६	१९०३
मई	१७६८	१७६०	१९४
जून	१७६०	१८२७	१९७२
जुलाई	१८००	१८७३	१९८१
अगस्त	१७५१	१८३१	२००१
सितम्बर	१७८६	१८५०	
अक्टूबर	१७३०	१८२०	
नवम्बर	१८२५	१८६७	
दिसम्बर	१९२६	२०१६	
जनवरी दिसम्बर	१८०८	१८६१	
जनवरी अगस्त	१८०४	(+२६)	
		१८६१	
		(+२२)	१९८१
			(+७६)

टिप्पणी: बायटका में दिये गये आंकड़े पिछली अवधि की तुलना में हुए प्रतिशत परिवर्तन का बोधक हैं।

विभिन्न क्षेत्रों का कार्य-निष्पादन

१९७२ में औद्योगिक उत्पादन की विशेषता यह थी कि १९७१ में बपड़े और परि-
वहन उपकरणों के उत्पादन में बमी की जो प्रवृत्ति आया थी, वह विपरीत दिशा की ओर
मुड़ गयी। परिवहन उपकरणों के उत्पादन में सुधार होना विशेष रूप में उल्लेखनीय है
क्योंकि यह सुधार उत्पादन में पिछले छ वर्षों में बमी हाते रहने के बाद हुआ है। फिर
भी जनवरी से अगस्त १९७२ तक की अवधि का समूह सूचकांक ११३ १९६५ वर्ष के
अनुमानित सूचकांक से बहुत कम है जो २०५ था। जसाकि सुविदित है, हम दीर्घावधि
माग की बमी से प्रभावित होने वाली मुख्य वस्तु की रेलवे वाहन लेकिन हम उद्योग की
अब देश के अन्दर उपयोग के लिए और निर्यात के लिए भी भारी सख्या में आर्डर प्राप्त हुए
हैं और इसमें उत्पादन को और अधिक बढ़ाने में सहायता मिलगी।

१९७२ में बपड़े के उत्पादन में जो भारी सुधार हुआ, वह स्पष्टतः बपास और
बच्चे जूट की पूर्ति में वृद्धि होने के कारण हुआ है। सरकार द्वारा बहुत सी रणनीति
बपड़ा मिलों को अपने हाथ में ले लिया जाना और तदनुसार उनका फिर से खोला जाना
तथा विदेशों में पटसन की वस्तुओं की भारी माग होना भी इस सुधार के महत्वपूर्ण
कारण थे।

१९७२ में खाद्य वस्तुओं, पेयों और तम्बाकू, लकड़ी और काक से बनी वस्तुओं और
धातुओं से बनी वस्तुओं का उत्पादन १९७१ की इसी अवधि में हुए उत्पादन के स्तर की
तुलना में कम हुआ। खाद्य उद्योगों के समूह में चाय के बाद चीनी का भारतवर्ष सबसे अधिक
(३५८ प्रतिशत) है और इस अवधि में इसके उत्पादन में २० प्रतिशत की जो बमी हुई
वह अन्य वस्तुओं के उत्पादन में हुई वृद्धि से प्रति-संतुलित नहीं हो सकी। धातु उत्पादन के
समूह के उत्पादन में हुई बमी चिंता का कारण है। १९७० में इस समूह के उत्पादन में
कमी होने के बाद १९७१ में इसके उत्पादन में सुधार हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है कि
तार के रस्सों जैसी कुछ वस्तुओं की पर्याप्त माग न होने के कारण और मशीनों पेंचों और
लकड़ी के पेंचों जैसी कुछ अन्य वस्तुओं के मामला में उत्पादन क्षमता सम्बन्धी रूकावटों के
कारण इस वस्तु समूह के उत्पादन में और वृद्धि नहीं हो रही है।

१९७२ में रसायनों के क्षेत्र में औद्योगिक उत्पादन में प्रमुख भूमिका बढ़ी। इसके
उत्पादन में १९७१ की इसी अवधि के उत्पादन की तुलना में २० प्रतिशत की वृद्धि हुई।
विद्युत और औद्योगिक एंकोहल, केलिशियम कार्बाइड साबुन गार्द बिरजक चूण, तरल
क्लोरीन आक्सीजन गैस और उबरको (नाइट्रोजन और फास्फोरस दोनों) के उत्पादन में १०
प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई। विद्युत और औद्योगिक एंकोहल का उत्पादन लगभग दुगुना
हो गया और उबरको के उत्पादन में १५ प्रतिशत की वृद्धि हुई। लेकिन रसायन और मध्य-
वर्ती पदार्थों के उत्पादन में बमी हुई जबकि गंधक के तेजाब कार्बोस्टिक सोडा और सोडा ऐश
जैसे कुछ बुनियादी रसायनों के मामले में मामूली-सी वृद्धि हुई। कार्बोस्टिक सोडा और सोडा
ऐश के मामले में मौजूदा क्षमता का पूरा उपयोग किया गया है और इस समय यह बात इन
वस्तुओं का उपयोग करने वाले उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि का अवरोध कर रही है। जिन
अन्य मामलों में क्षमता के कारण उत्पादन में वृद्धि के माग में रूकावट पड़ रही है वे हैं
बिजली कार्बाइड और सिलिकेट अपमाजक (डीट्रेंट)। सरकार ने सिलिकेट अपमाजक

को उन उद्योगों की सूची में शामिल कर दिया जिनकी क्षमता को औद्योगिक लाइसेंस प्राप्त करने की सामान्य औपचारिकताओं का पूरा किये बिना ही दुगुना किया जा सकता है।

यद्यपि बिजली की मशीना के उत्पादन में १९७२ में वृद्धि होती रही लेकिन वृद्धि की दर १९७१ की अपेक्षा काफी कम थी। यद्यपि सूखे सेला बिजली व लम्पा, बिजली के पधा, एल्यूमिनियम के बेबला आदि की स्थिति में सुधार प्रतीत होता है लेकिन घरा में लगाये जान वाले मोटरों और ताबों के खुले सवाहका का उत्पादन काफी कम हुआ। बिजली की मोटरों के उत्पादन में, जो १९७१ में कम हा गया था कोई सुधार नहीं हुआ। बिजली की मोटरों का उत्पादन १९७१ में ज़िम निम्न स्तर पर पहुँच गया था, उममें वृद्धि नहीं हुई।

पेट्रोलियम उत्पादों और कागज उत्पादन के मामले में, १९७२ में उत्पादन में वृद्धि हुई, लेकिन मध्यम हाल की प्रवृत्तियाँ अधिक अनुकूल नहीं हैं और हो सकता है कि समूचे बंध का उत्पादन १९७१ की तुलना में कम रहे। उत्पादन को प्रभावित करने का मुख्य कारण पेट्रोलियम उद्योग के मामले में कच्चे तेल के आयात से सम्बंधित समस्याएँ और कागज उद्योग के मामले में क्षमता सम्बंधी रुकावटें हैं।

क्षमता का उपयोग

१९७३ के पूर्वार्द्ध में औद्योगिक उत्पादन में सुधार होने का एक महत्वपूर्ण कारण क्षमता का बेहतर उपयोग किया जाना था। लेकिन रेलवे वैनो खनन मशीना, लम्पा की ढली वस्तुओं और भारी ढाँचा जैसे कई उद्योगों में अभी भी क्षमता का बहुत कम उपयोग किया जा रहा है।

औद्योगिक लाइसेंस नीति

महत्वपूर्ण उद्योगों में उत्पादन क्षमता के पूरा उपयोग व विस्तार के जरिये औद्योगिक उत्पादन का बढ़ाने के लिए प्रास्तावित देने के उद्देश्य से सरकार ने जनवरी, १९७२ में यह फसला किया कि मौजूदा क्षमता के १०० प्रतिशत तक की अनिश्चित निर्माण क्षमता की स्थापना के लिए औद्योगिक लाइसेंस की औपचारिकता के बिना स्वीकृति दे दी जाएगी बशर्ते कि यह वृद्धि पूंजीगत वस्तुओं के आयात के बिना की जाए। जिन उद्योगों के बारे में यह फसला किया गया था उनकी मध्या शुरू में ५४ थी लेकिन बाद में इस सूची में ११ और उद्योगों को शामिल किया गया। लेकिन, अपेक्षाकृत बड़े औद्योगिक गृहों से सम्बंधित फर्मों और विदेशी प्रभुत्व वाली कंपनियों को, अपनी क्षमता में स्वतंत्र वृद्धि करने का लाभ प्राप्त नहीं किया गया था। उनका मामला की जांच उनकी पारंपरिक आधार पर की जानी थी और इस प्रयोजन के लिए 'विशेष काय दल' (टास्क फोर्स) स्थापित किया गया था।

यद्यपि उत्तरीकरण की इस नयी नीति के सम्बंध में उद्योगों की प्रारम्भिक प्रतिक्रिया बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं थी और इस संबंध में बहुत थोड़े अनुरोध प्राप्त हुए थे लेकिन बंध के उत्तरवर्ती भाग में स्थिति में सुधार हुआ, जब अन्य उद्योगों के साथ साथ धातुकर्मिक उद्योगों, वायलरों और भाग उत्पादक संयंत्रों प्राथमिक सूचकांक बिजली व उपकरणों आदि के लिए क्षमता में काफी विस्तार करने की स्वीकृति दी गयी।

काय दल को बड़े औद्योगिक गृहों और विदेशी प्रभुत्व वाली कंपनियों से निश्चय

१९७२ के अंत तक २६७ आवेदनपत्र प्राप्त हुए। सरकार न उनमें से ८६ का स्वीकृति दी और १०२ को अस्वीकार किया, शेष विभिन्न प्रकृमा पर विचाराधीन हैं। कायल ने जिन वस्तुओं का लिए अनिश्चित धमता की स्थापना की स्वीकृति दी उनमें शामिल हैं कुछ प्रकार की मशीन, प्रक्रिया नियंत्रण उपकरण बपडा उद्योग सबधी उपकरण इलक्ट्रानिक उपकरण बाल और रोलर बयरिंग स्विच गीवर रागन और अनमल, विभिन्न रसायन और माटर गाडिया व हिस्म और महायक उपकरण प्रशासकीय और प्रयागशाला सबधी काच आदि।

नई लाइसेंस नीति

चालू बप की एक महत्वपूर्ण घटना थी सरकार द्वारा २ फरवरी १९७३ को सशाधित औद्योगिक लाइसेंस नीति की घोषणा का किया जाना। आवश्यक अनिश्चितता को दूर करन व लिए सरकार न एम उद्योगों की एक सभेकित सूची प्रकाशित की है जिनमें आवेदन कर्ताओं क साथ-साथ अपेक्षाकृत बडे औद्योगिक गृह और विदेशी कम्पनिया की शाखाए और सहायक कम्पनिया भाग ले सकती हैं। इस सूची म ये उद्योग शामिल ह के अनि महत्वपूर्ण उद्योग जा भविष्य म राष्ट्रीय अथव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है वे उद्योग जिनका इन अतिमहत्वपूर्ण उद्योगों के साथ सीधा सम्बन्ध है। दीर्घाधिक निर्मित धमता वाल उद्योग इस सूची म शामिल उन मदा को जा औद्योगिक नीति सम्बन्धी सन्ध १९५६ की अनुसूची व व अंतगत सरकारी क्षेत्र मे निर्माण के लिए अथवा समय समय पर अधिमूचित किय गए अनुसार लघु उद्योगों के क्षेत्र म उत्पादन के लिए आरम्भित ह। इस सूची की प्रयोज्यता स बाहर रखा जायगा। इसके साथ साथ अपेक्षाकृत बडे औद्योगिक गृहों की परिभाषा की जसी कि वह १९७० की औद्योगिक लाइसेंस नीति म दी गयी है सशाधित किया गया है ताकि उस एकाधिकार और प्रतिवधात्मक व्यापार पद्धति अधिनियम, १९६६ म दी गयी परिभाषा व अनुरूप बनाया जाय। इस प्रकार इसके बाद औद्योगिक लाइसेंस नीति के प्रयोजन के लिए अपेक्षाकृत बडे औद्योगिक गृहों का अर्थ ऐसे उपक्रम होगा, जिनकी परि सम्पत्तिया उनसे सम्बद्ध उपक्रमों की परिसम्पत्तिया सहित २० करोड ६० से कम न ह। बडे उपक्रमों को उन क्षेत्रों म दाखिल होने मे रोकन के लिए जो मुख्यत छोटे दरमियाने और नये उद्यमकर्ताओं के लिए रखे गये हैं यह निश्चय किया गया है कि लाइसेंस देने से सम्बन्धित उपवधा स छट का सीमा जो अब स्थिर परिसम्पत्तिया के रूप म एक करोड रुपये तक व सारभूत विस्तार और नये उपक्रमों पर लागू होती है उन मौजूदा लाइसेंस प्राप्त और पजीयत उपक्रमों पर लागू नहा होगी जिनका स्थिर परिसम्पत्तिया ५ करोड २० से अधिक की है।

लघु उद्योगों व क्षेत्र व लिए आरक्षण की मौजूदा नीति जारी रखी जाएगी और इस प्रकार के आरक्षण के क्षेत्र का लघु उद्योगों के क्षेत्र के काय निष्पादन और निहित धमताओं के अनुरूप विस्तार करने का विचार है। प्रत्येक मामल म धलम से सयुक्त क्षेत्र के एका की स्थापना करने का समयन करत हुए नई नीति म विशिष्ट रूप स यह घोषणा की गयी है कि अपेक्षाकृत बडे औद्योगिक गृहों प्रभुत्व प्राप्त उपक्रमों और विदेशी कम्पनियों का सयुक्त धलम का घाट करन उन क्षेत्रों में प्रवेश करने नही दिया जायगा जिनसे उनको धमता बाहर रखा गया है। सरकार इस बात की सुनिश्चन व्यवस्था करेगी कि सयुक्त

क्षेत्र के सभी एकका म नोटिया प्रवर्ध और वाय-संचालन के मागणन मे उमकी भूमिका प्रभावपूज हा ।

संगठित क्षेत्र में रोजगार

मगठिन क्षेत्र म १९७० ७१ क दौरान राजगार म २५ प्रतिशत और १९७१ ७२ म ३४ प्रतिशत की वद्धि हुई जिमम राजगार म नगे कुन व्यक्तिमया का सन्ध्या जा माच १९७१ क अन्त म १७४९ लाख था, बढकर माच १९७२ क अन्त म १८०८ लाख पर पहुच गई । १९७१ म औद्यागिक गतिविधि म सुस्ती की प्रवृत्तिया के अनुमार गैर-सरकारी क्षेत्र म का प्रगति नही हुई और इस क्षेत्र म १९७१ ७२ म केवल ०२ प्रतिशत अनिश्चित राजगार की व्यवस्था हुई जबकि इसकी तुलना म सरकारी क्षेत्र द्वारा ३३ प्रतिशत अनिश्चित राजगार की व्यवस्था भी की गई ।

सार्वजनिक क्षेत्र को लाभ

पहली बार सार्वजनिक क्षेत्र परियाजनाया ने १९७२ ७३ के दौरान सामूहिक रूप से शुद्ध लाभ कमाया । मस्यायी आकडा के अनुमार १९७२ ७३ म ९ करोड ९० का लाभ हुआ जबकि पिछले वर्ष १४ करोड ८२ लाख ९० की हानि हुई थी ।

६० से भी अधिक सार्वजनिक परियाजनाया न १९७२ ७३ के दौरान एक एक करोड ९० से भी अधिक मुनाफा कमाया । उनका शुद्ध लाभ ९० करोड ९० से अधिक था ।

सर्वाधिक लाभ इण्डियन आयल कम्पनी न, २० करोड ९० का कमाया । इसके बाद तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग तथा खान एवं धातु व्यापार निगम न क्रमश ९ करोड १८ लाख ९० तथा ७ करोड ८९ लाख ९० का लाभ कमाया । भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि० और हैवी इन्डस्ट्रियल (इंडिया) लि० न सामूहिक रूप से १४ करोड ७० लाख ९० का लाभ कमाया ।

अप कइ प्रतिष्ठाना की हानि पहल मे कम हुई है । हिन्दुस्तान स्टील की हानि १९७१ ७२ की ८८ करोड ८८ लाख ९० से घटकर १९७२ ७३ म २७ करोड ७६ लाख तथा मारुतिग एंड अनाम मशीनरी कारपारेशन लि० की हानि इसी अवधि म २ करोड ३८ लाख ९० से घटकर २ लाख ९० रह गई ।

हानि की अधिकतम मात्रा के निग १६ प्रतिष्ठान उत्तरदायी रह । इनम म प्रत्येक ने २० २० लाख ९० से अधिक की हानि उठायी । १९७२ ७३ के दौरान इनकी कुल हानि ८१ करोड १८ लाख ९० रही । इनम म तीन हिन्दुस्तान स्टील, हैवी इंजीनियरिंग कारपारेशन तथा नवली निगमाद का सामूहिक रूप से ५४ करोड ९४ लाख ९० की हानि हुई । इनम म प्रत्येक की व्यक्तिगत हानि क्रमश २७ करोड ७६ लाख ९० १४ करोड २४ लाख ९० तथा १२ करोड ६ लाख ९० रही । बासरो स्टील कारखाने की ५ करोड ८५ लाख ९० की हानि हुई लेकिन अभी भी यह कारखाना निर्माणाधीन है अत इसकी स्थिति का उचित रूप से पता १९७३ ७४ वर्ष क परिणामा से लगेगा ।

हिन्दुस्तान स्टील ने अब तक विश्वी के लिए १ अरब १० करोड टन कच्चे लोहे का उत्पादन किया है जिमका मूल्य २७ अरब ९० है ।

हैवी इंजीनियरी निगम ने ९५ करोड ९० मूल्य क सामान का उत्पादन किया है और हिन्दुस्तान मशीन टूल न दश म ४० प्रतिशत मशीनों का उत्पादन किया है इन आकडो से

भारत के प्राधुनिक औद्योगिक शिपयाड और हिन्दुस्तान जहाजरानी निगम का योग तथा तेज साफ करने पट्टालियम निचालने और रासायनिक ग्राह के उत्पादन में हुई प्रगति से पता चलता है कि भारत औद्योगिक शक्ति के दौर में पहुँच गया है। हिन्दुस्तान शिपयाड ने ५८ जहाजा का निर्माण किया है जिसमें ४० जहाज गने हैं जो गमुन में चले गये हैं। हिन्दुस्तान जहाजरानी निगम ने कुल ढोपे गए माल से लगभग आधा भाग ढाया है।

विदेशी सहायोग

औद्योगिक प्रगति के लिए पर्याप्त धार्मिक व तकनीकी साधन जुगान की समस्या में हर विकासोमुख देश का जूझना पडता है। योजनाबद्ध विकास के गान दो गणना में भारत भी विभिन्न विकसित देशों व अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से लघुतालिक धनवा दोषनातित ऋणा के रूप में धार्मिक सहायता और तकनीकी सहायता लता रहा है। निरवम हा धरनी औद्योगिक उन्नति की आवश्यक सन्तार बनाये रखन के लिए हमार देश की धनव्यवस्था में इस प्रकार की सहायता का एक विशिष्ट भाग रहा है परंतु इस सहायता का उत्तरात्तर कम करन और अन्तत समाप्त कर देन के उद्देश्य ने सदा हमार नीति नियाजवा का प्रेरित किया है। वास्तव में यह विदेशी सहायता केवल धार्मिक आत्मनिभरता के अर्थन सत्य का औद्योगिकीकरण प्राप्त कर सक्ने, अथवा 'सहायता को समाप्त करने के लिए सहायता' के दृष्टिकोण से हमने ली है।

१९६७-६८ में भारत को विभिन्न स्रोतों से कुल १,१९६ करोड १० की विदेशी सहायता प्राप्त हुई, जबकि पिछले वर्ष (१९७२-७३) में इससे लगभग आधी— ७६ करोड १०—राशि के ऋण लिए गये। कुल विदेशी सहायता का एक बड़ा भाग पिछले ऋण का भुगतान करने में चला जाता है अतः विकास के लिए इसका अर्थना पाल ही उपलब्ध हो पाता है। १९६७-६८ में विदेशी सहायता का लगभग एक तिहाई ३३३ करोड १० पिछले ऋण का चुकता करने के लिए विस्तार के रूप में दिया गया और इस प्रकार वास्तविक विदेशी सहायता केवल ८६३ करोड १० की थी। १९७२-७३ में यह घट कर १२३ करोड १० रह गयी क्योंकि इस वर्ष प्राप्त सहायता में से ५०३ करोड १० का राशि (अथवा ८० प्रतिशत से भी अधिक) पिछले ऋणों का मूल और व्याज चुकता करन के काम में लयी गयी। देश के कुछ भागों में सूखा पडने भारत पाक युद्ध और बंगला देश से आया शरणाधिया पर किए गये विशाल खर्च के बावजूद पिछले पांच वर्षों में विदेशी सहायता पर वास्तविक निभरता में लगभग ८५ प्रतिशत कमी हुई है। मुद्रा की त्रय शक्ति में इन पांच वर्षों में हुए हास को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि १९६७ के मुकाबले में विदेशी सहायता की मात्रा अत्र नगण्य है।

परिपक्ष्य चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान २,६१४ करोड १० की कुल विदेशी सहायता मित्रने का अनुमान लगाया गया था परंतु इस वर्ष लगभग ८१५ करोड १० की सहायता मिलने की आशा है जिससे यह राशि बढ़कर ३,६०० करोड १० के लगभग हो जायगी। परंतु इसका लगभग दो तिहाई पिछले ऋणों की कमीतें देने पर ही खर्च किया गया है और योजना के पांच वर्षों में वास्तविक सहायता १,५०० करोड १० से अधिक नहीं

भारत का इस प्रकार वित्तीय सहायता देने वाले देशों में अमेरिका पश्चिमी जर्मनी जापान व दंगलड आदि प्रमुख रहे हैं। भारत सहायता संधि की १५ जून ७३ को हुई बढक में

सहायता देने वाले देशों के आशाप्रद रवियों को देखने हुए यह कहा जा सकता है कि जो थोड़ी बहुत विदेशी सहायता अपनी विकास योजनाओं की निर्बाध प्रगति के लिए हमें चाहिए उसके मिलने में कोई विशेष अड़चन नहीं होगी। पिछले दो वर्षों में अमेरिका में किसी प्रकार की वित्तीय अथवा अन्य सहायता नहीं ली गयी। परन्तु अब अमेरिका ने स्वयमेव लगभग ६४ करोड़ ०० का काफी पहले से स्वीकृत परतु रुका हुआ ऋण देने का निश्चय किया है और इस वर्ष में २०० करोड़ २० अर्धिक की कुल ऋण सहायता देने के बारे में कहा है। जापान से भी पिछले दशक में अपेक्षाकृत सुविधाजनक शर्तों पर कई बार ऋण लिया गया है जिसका अपना औद्योगिक विकास की गति बनाये रखने के लिए हमने भरपूर उपयोग किया है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से लिए गये ऋणों की तरह यहाँ जापानी ऋण भी दीर्घकालिक हैं और इस प्रकार इनमें प्राप्त धन आसानी से अधिक उन उद्योगों में लगाया जा सकता है जिनमें पूर्ण उत्पादन शुरू होने में काफी समय लगता है।

उत्पादन में रुकावट का कारण

देश का समृद्धि और प्रगति के लिए उत्पादन नितात आवश्यक होता है। उत्पादन के अभाव में वृत्त पूँजी निमाण, निर्यात में गिरावट आ जाती है तथा अनेक प्रकार की हलचलें और आन्दोलन और पकड़ लत हैं।

उत्पादन में रुकावट के कई कारण हैं, जैसे विजली, कच्चा माल तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी, वन पुर्जों का पुराना और बेकार हो जाना तथा औद्योगिक विवाद। पर उपरोक्त सभी कारणों में औद्योगिक विवाद यानी हड़ताल और तालाबन्दी से उत्पादन और मानव दिन को सर्वाधिक क्षति पहुँचती है।

प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि १९७० और १९७२ में २ करोड़ से अधिक मानव दिन बर्बाद गये थे। १९७१ में बर्बाद मानव दिन की संख्या १६५ करोड़ थी और १९७३ में अगस्त मास तक की संख्या ११२ करोड़ रही। मावजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र में यह हानि सर्वाधिक रही जसा कि नीचे दी गयी तालिका से मान्य होगा

मानव-दिन की बर्बादी

(दस लाख में)

वर्ष	सावजनिक क्षेत्र	निजी क्षेत्र	कुल
१९७०	१	१८५	२०६
१९७१	२३	१४२	१६५
१९७२	३३	१७२	२०५
१९७३*	१४	६८	११२

* (जनवरी से अगस्त तक)

उपर दी गई तालिका से पता चलता है कि निजी क्षेत्र में सावजनिक क्षेत्र की अपेक्षा ५ से ६ गुना तक अधिक मानव दिन बर्बाद हुए हैं। प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष मानव दिन की बर्बादी संबंधी आंकड़े प्राप्त हैं उनमें पता चलता है कि १९७० में जब सावजनिक क्षेत्र में ४३ मानव दिन नष्ट हुए थे। निजी क्षेत्र में बर्बाद हुए दिन की संख्या ४० थी। उसी तरह जब १९७१ में सावजनिक क्षेत्र में बर्बाद हुए मानव दिन की संख्या २६ थी, निजी क्षेत्र में उसकी संख्या २६ थी। इससे स्पष्ट होता है कि प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष मानव दिन की बर्बादी

की सख्या निजी क्षेत्र में सावजनिक क्षेत्र की अपेक्षा दस गुना अधिक थी।

इस सभ में सावजनिक और निजी क्षत्र में काम कर रह व्यक्तिना की सख्या सबधी जान करी प्रासगिक प्रतीत होती है। नीचे दी गयी तालिका से इस पर अच्छा प्रकाश पडता है—

नियोजन

(दस लाख में)

वर्ष	सावजनिक क्षेत्र	निजी क्षेत्र
१९६२	७४	५२
१९६७	९६	६७
१९७०	१०४	६७
१९७१	१०७	६८
१९७२	११२	६८

ऊपर दी गई तालिका से यह भी पता चलता है कि हाल के वर्षों में निजी क्षत्र का तुलना में सावजनिक क्षेत्र में लगे लोग की सख्या में काफी वृद्धि हुई है।

औद्योगिक विवादा से मानव दिन की जा बर्बादी होती है उससे राष्ट्रीय उत्पादन और सम्पत्ति को काफी नुकसान होना है। १९७१ के १६५९ मामला की और १९७२ के १७१४ मामला की जो जानकारी प्राप्त है उनसे पता चलता है कि १९७१ और १९७२ में क्रमशः ६०,५३६ रु० ५१० रुपये की और ६८,०१,०२००८ रुपये की क्षति हुई थी।

औद्योगिक सबध तत्र

औद्योगिक विवादा का निपटान के लिए केंद्र तथा राज्य में औद्योगिक सबध तत्र कायम है। केन्द्रीय तत्र जिसे मुख्य अमायुक्त सगठन कहते हैं औद्योगिक विवादा को रोकने उनकी छानबीन करने और निपटाने के लिए उत्तरदायी है। जो विवादा नहीं निपट पाते उनमें कुछ पंच फैमल के लिए और कुछ औद्योगिक एव अरम यायालय को भेज दिए जाते हैं।

१९७० में केन्द्रीय अरम सगठन के समक्ष निणय के लिए ७६२० औद्योगिक विवादा आये। उनमें ५५५६ अनौपचारिक तथा विधिवत निपटाये गये। इस प्रकार उठे और निपटाये गये विवादा की सख्या १९७१ में ६६२० और ५०५४ थी और १९७२ में ५६६२ तथा ६१२६।

राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी तथा अन्य नेताओं ने अनेक अवसरों पर मजदूरों तथा प्रबंधकों से आग्रह किया है कि राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर वे हड़ताल और तालाबंदी न करें।

गन याजना सप्ताह के अवसर पर राष्ट्र के नाम अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा था कि हड़ताल और तालाबंदी से राष्ट्र को जो क्षति होती है उससे जनता के किसी भी वर्ग का थोड़े समय के लिए भी वास्तव में लाभ नहीं होता।

सप्तसूत्री योजना

प्रमुख अर्थशास्त्रिया ने देश की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी का लिए गए अपने नोट में औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने के लिए सात कार्यक्रम

तुरन्त लागू करने का मुझाब दिया है। यह नोट भूतपूर्व के द्वीय मंत्री डा० पी० के० भार० वी० राव तथा अन्य प्रमुख अर्थशास्त्रियां न तैयार किया है तथा नवम्बर १९७३ में केन्द्रीय मन्त्रिमंडल ने इन नोटों के आघार पर इन अर्थशास्त्रियों से विचार विमर्श किया था। काल धन और मुद्रास्फीति की समस्या को हल करने के लिए तात्कालिक कार्रवाई के रूप में बड़े नोटा का प्रचलन बन्द करा व उपाय का अर्थशास्त्रियां न समर्थन किया है, परंतु कहा है कि दीर्घकालीन हल के लिए बरा के ढांचे में परिवर्तन करने होंगे। औद्योगिक उत्पादन में तेजी लाने के लिए अर्थशास्त्रियों द्वारा पेश किया गया सप्ताहव्ययी कार्यक्रम इस प्रकार है

(१) यह दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए कि एकाधिकार या आंशिक एकाधिकार व्यवस्था का नहीं परंतु उत्पादन का है जिस बनाने की क्षमता पर एकाधिकार स्थापित होना है।

(२) ऐसी एकाधिकारी फर्मों एवं कारखाना का सांख्यिक अथवा मयुक्त क्षेत्र में लिया जाना चाहिए जहां ऐसे कारखाने आंशिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं हो सकें।

(३) नया फर्मों को ऐसी सामान के उत्पादन के लिए वित्तीय प्रोत्साहन दिया जाये जिन पर अभी एकाधिकार या आंशिक एकाधिकार है। परंतु इसके लिए लाइसेंस समयबद्ध हो तथा समय के अंतर्गत काम शुरू न होने पर दंड की व्यवस्था होनी चाहिए।

(४) आंशिक एकाधिकार वाली फर्मों को मयुक्त क्षेत्र में लाने के प्रयास किये जाय ताकि जनता के प्रति उनकी जवाबदेही बढ़ायी जा सके।

(५) आंशिक एकाधिकार वाली कई फर्मों को सामूहिक रूप से ऐसी पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग की स्थापना के लिए लाइसेंस दिये जायें जो प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से सम्पन्न हैं।

(६) एन.एन.टी. विभाग बनाया जाये जो एकाधिकारी एवं आंशिक एकाधिकारी फर्मों पर निरंतर निगाह रखे तथा उनके प्रसार को रोकने के लिए उन्मत्तापूर्वक लाइसेंस जारी करे।

(७) कुछ वस्तुओं का उत्पादन केवल लघु उद्योग क्षेत्र के लिये सुरक्षित रखने की नीति जारी रखा जाये तथा इनका प्रसार निया जाय।

भूयवद्धि की समस्या का उल्लेख करते हुए अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि केवल वृद्धि उत्पादन बढ़ने से यह समस्या हल नहीं होगी। इसके लिए ठोस वितरण नीति भी अनिवार्य होगी।

चुने हुए उद्योगों का उत्पादन

	१९७१-७२		१९७१-७२		१९७२-७३			
	१	२	४	५	६	७	८	९
(क) खनन								
१ कोयला (लिग्नाइट सहित)	७८३	दस लाख मेट्रिक टन	७४०	१८२	१८१	१८४	१६४	१६२
२ बच्चा लोहा	२२५	दस लाख मेट्रिक टन	२३२	५८	४३	६१	६०	५५
(ख) धातुकर्म उद्योग								
३ लौ लोहा	६६६	दस लाख मेट्रिक टन	६८०	१७०	१५३	१७५	१७२	१६१
४ इस्पात क डबल	६१४	दस लाख मेट्रिक टन	६४१	१५७	१४७	१६३	१७६	१५४
५ तयार इस्पात	४४८	दस लाख मेट्रिक टन	४७६	११८	१११	११३	१३७	१०८
६ इस्पात की ग्लो हुई वस्तुएं	६२	हजार मेट्रिक टन	५६	१२	१२	१४	१६	१८
७ एल्युमिनियम (प्राकृतिक धातु)	१६६८	हजार मेट्रिक टन	१८१५	४३८	४४७	४६६	४७२	४०५
८ तांबा (प्राकृतिक धातु)	६३	हजार मेट्रिक टन	८३	२५	२५	२३	१०	२५
(ग) यांत्रिक इंजीनियरी उद्योग								
९ मशीनी धातु	४३०	दस लाख रुपये	५५०	१२७	१२८	१४१	१५३	१४०
१० सूती कपड़ा बनाने की मशीनें	३०३	दस लाख रुपये	३३५	६५	८६	८१	७०	६१
११ चीनी मिला की मशीनें	१३६	दस लाख रुपये	१७७	३४	५२	४१	४६	५३
१२ सीमेंट बनाने की मशीनें	४२	दस लाख रुपये	२२	८	५	४	५	५

चुने हुए उद्योगों का उत्पादन

१९७१-७२* १९७२-७३*

१९७०-७१	१९७१-७२*	पहली तिमाही	दूसरी तिमाही	तीसरी तिमाही	चौथी तिमाही	पहली तिमाही	दूसरी तिमाही
३	४	५	६	७	८	९	१०

(घ) रासायनिक और सम्बन्धित उद्योग

२७	गार्डोजनी उबरक	हजार मेट्रिक टन	६४२	१८४	२२४	२४५	२४२	२४२
२८	फार्मेटा उबरक	हजार मेट्रिक टन	२२६	६३	७०	७७	२४८	७७
२९	गंधक का तैयार	हजार मेट्रिक टन	१०५३	२४६	२६७	२६७	२६५	३१४
३०	मोडा एण	हजार मेट्रिक टन	४४६	११६	१२४	१२०	११८	११३
३१	कार्बोन्स साभ	तदेव	३७१	६०	६४	१००	६७	१००
३२	नामक और गता	तदेव	७४५	८०	२०२	२०७	१६४	१६६

(१) माटर गार्डिया क टायर दस लाख मी सख्या से

३३	रबड के टायर और टयूब	तदेव	४३३	०६३	११०	११७	११३	११६
(ii)	माटर गार्डिया क टायर	तदेव	४२४	०६१	१०७	११४	११२	११८
(iii)	वाइसिकिता के टायर	तदेव	२२३६	३६६	४४७	६६७	६१६	४८४
(iv)	वाइसिकितो के टयूब	तदेव	१३८१	२६३	३८५	४०७	३८०	४०२
३६	सोमट	दस लाख मेट्रिक टन	१४६	३६	३७	३७	४०	३६
३५	उच्चतापसह वस्तुए	हजार मेट्रिक टन	६८३	२०४	२०३	२०१	२००	१६८
३६	परिष्कृत पेट्रोलेियम उत्पाद	दस लाख मेट्रिक टन	१७१	४५	६८	४७	४६	४४

(छ) वस्त्र उद्योग

३७	जूट से बनी वस्तुए	हजार मेट्रिक टन	११२६	२७३	२६७	२६१	२६८	२७१
३८	मूली धामा	हजार मेट्रिक टन	६२६	२१४	२२७	२३०	२३१	२४६

दी राजस्थान स्टेट को-आपरेटिव बँक लि०, जयपुर

(राज्य का एक मात्र शीघ्र सहकारी एच सिस्टम बँक)

प्रधान कार्यालय

नेहरू बाजार, जयपुर।

शाखा कार्यालय

(१) (सायकलीन शाखा) नन्द भवन,
सुभाष मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर।

(२) जसलमेर।

अपना बचत किया हुआ धन इस बँक में जमा करा कर कृषि उत्पादन एवं अन्य लघु उद्योग धर्मों के विकास में सहयोग प्रदान कीजिये।

आकर्षक ब्याज दरें

सविग्न बच

४५०%

म्यादी भ्रमानत

२७५% से ७७५% तक

चालू खाता

१००% (माह की कम से कम बकाया पर)

रेकॉर्डिंग डिपोजिट

१०/ १०० माहवार जमा कराने पर

१ साल बाद

१२४/- १०

२ साल बाद

२५८/- १०

३ साल बाद

४०९/- १०

४ साल बाद

५५८/- १०

५ साल बाद

७२८/- १० प्राप्त कीजिये

को-आपरेटिव थ्रिपट सर्टीफिकेट

५/- १० का सर्टीफिकेट

३४० पैसे में

१०/- १०

६८० पैसे में

५०/- १०

३६०० पैसे में

१००/- १०

६८०० पैसे में उपलब्ध है जिसका भुगतान ५ वर्ष समाप्त होने पर प्राप्त कीजिये—

आपकी बहुमूल्य वस्तुओं की सुरक्षा के लिये प्रधान कार्यालय एवं सी स्कीम शाखा में कम दरो पर लावस की व्यवस्था है।

विशेष विवरण के लिये कृपया सम्पर्क स्थापित करें

प्रधान कार्यालय

टेलीफोन न०

प्रधान कार्यालय

टेलीफोन न०

प्रबन्ध संचालक

६२६३६

उप व्यवस्थापक (बँकिंग)

७२४५७

प्रधान व्यवस्थापक

६२६०२

सी स्कीम शाखा व्यवस्थापक

६४६४०

जी० ए० भीमनाथवाला

गुलारामसिंह शक्तावत

प्रबन्ध संचालक

अध्यक्ष

सारे परिवार के लिए हिन्दुस्तान टाइम्स के श्रेष्ठ हिंदी प्रकाशन

हिन्दुस्तान

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

कादम्बिनी

नदन

प्रकाशक हिन्दुस्तान टाइम्स लि०, नई दिल्ली-१

विद्युत विकासातील आमचे स्थान

भारतातील एकूण ६ टक्के क्षेत्र व्यापणारे व देशातील एकूण लोकसंख्येपैकी ६ टक्के लोकसंख्या असणारे महाराष्ट्र राज्य हे भारतातील तिसऱ्या क्रमांकाचे राज्य आहे। विद्युत विकासाच्या क्षेत्रात आमचे स्थान खालील प्रमाणे आहे।

- × अखिल भारतीय बीज वापराच्या मानाने महाराष्ट्रात विजेचा दरडोई वापर दुप्पट आहे।
- × संपूर्ण भारतातील विद्युतीकरण ची टक्केवारी २० असली, तरी या राज्यातील विद्युतीकरणाची टक्केवारी ४० आहे, व येथील ७० टक्के जनतस बीजपुरवण्याचा लाभ भिलालेला आहे।
- × भारतातील औद्योगिक उत्पादनापैकी सुमारे एक चतुर्थांश माल या राज्यात तयार होती व भारतीय औद्योगिक क्षेत्रात होणाऱ्या बीज वापरापैकी सुमारे ६ वा हिस्सा महाराष्ट्रात वापरला जातो।
- × देशातील दुसऱ्या कोणत्याही राज्यापेक्षा महाराष्ट्र राज्याची स्थापिताक्षमता, विद्युत उत्पादन आणि बीज विक्री अधिक आहे।
- × जून अखेर पयलत राज्यातील १५७६२ शहर व खेडी यांचे विद्युतीकरण करण्यात आले असून ३०२८७५ क्वि पंपाना बीज पुरवण्यात आलेली आहे।
- × भारतीय स्वातंत्र्याच्या रोप्य महात्सवी वर्षात १०३१ हरिजन वस्त्याचे विद्युतीकरण करण्यात आलेले आहे। या काळाने रोज जवळ जवळ ३ हरिजन वस्त्याचे विद्युतीकरण करण्यात आले।

भासा रितीने महाराष्ट्र राज्यातील औद्योगिक व प्राभोग विकासात महाराष्ट्र राज्य बीज मंडळाचा सिहावा वाटा आहे।



महाराष्ट्र राज्य विद्युत मंडळातर्फे प्रसृत।

धौलपुर सहकारी भूमि विकास बैंक लि० धौलपुर (राज०)

क्षेत्र में हरित क्रांति तथा कृषक की समृद्धि के लिए सतत प्रयत्नशील

अल्पकालीन प्रगति का सिंहावलोकन

राजाखेडा लघु सिंचाई योजना

१४ लाख ६६ हजार ३१८ रु०

धौलपुर

८ लाख ३७ हजार ६८५ रु०

लघु कृषक योजना ,

८ लाख २१ हजार ४० रु०

०४ लाख ४६ हजार ९७ रु०

५१ लाख ७८ हजार १४० रु०

उपरोक्त ऋण राशि बैंक द्वारा मलकूप निर्माण, डोजल एजिस पंप सटस विद्युत मोटर्स तथा ट्रक्टर की खरीद बरिग कराने नाली व पंप हाऊस के निर्माण अर्धुरे व पुरान कुआ की मरम्मत तथा भूमि को समतल कराने हेतु क्षेत्र व कृषक की वितरित की गई है।

विशेष सुविधाएं

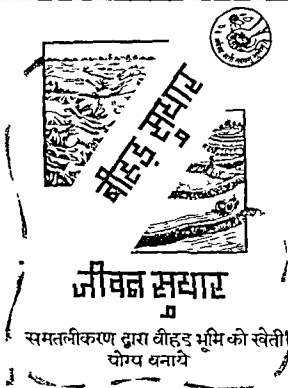
केवल ४ से १२ बाघा तक की भूमि वाले छोटे कृषकों को ऋण की २५ प्रतिशत छूट मिलान का तथा अनुसूचित जातिया व जनजातिया के किसानों को याज दिलाने का प्रावधान है।

प्रद्युर्नर्नासह (कप्तान)

निरजनसिंह राजोरिया

अध्यक्ष

सचिव



भूमि सरक्षण अनुभाग कृषि विभाग

उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

अधिक जानकारी के लिए कृपया ११३३ के कृषि विभाग से संपर्क करें।

वाणिज्य व्यापार

देश की बढ़ती हुई आर्थिक रूपरखा व अनुसार भारत के विदेश व्यापार का ढांचा भी बदल गया है। एव के बाद दूसरी विगत याजनाया म वस्तु अधिका पूजा लगाने के फल स्वरूप विदेश व्यापार की मात्रा, मूल्य और स्वरूप म महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए ^३ और उसम काफी वृद्धि हुई है।

इन पिछले २६ वर्षों म भारत का विदेश व्यापार तीन गुना हा गया है लेकिन हमने भा अधिका उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण परिवर्तन इसकी संरचना और दिशा म हुए है। आजादी के बाद इन २६ वर्षों म हमारे देश व विश्व व्यापार का 'उपनिवेशवादी' स्वरूप बदलकर स्वतंत्र एव सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न राष्ट्र के व्यापार व अनुकूल हा गया है।

भारत के निर्यात व्यापार म महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है और अब हमम काफी विविधता है एव यह विभिन्न दिशाया म किया जाता है। पहले भारत के बारे मे यह धारणा थी कि वह जूट, धालें चमड़ा और बाजू आदि जैसे परम्परागत कच्चे माल और कृषि पदार्थों जसी सीमित वस्तुया को हां पश्चिम व बाजारा म बेच सकता है, लेकिन अब यह स्थिति बदल गयी है। अब यह माना जाता है कि भारत विश्व के सभी देश से खासकर पूर्वी यूरोप के समाजवादी देशा एव एगिपा, अफ्रीका एव लटिन अमेरिका के प्रगतिशील देशा मे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने का यत्न कर रहा है।

आजादी के समय भारत के कुल निर्यात-व्यापार का ६० प्रतिशत माल चार वस्तुया अथवा चाय, कपास जूट का सामान और सूती कपड़ा का हाना था लेकिन आज हमारे कुल निर्यात म हा वस्तुया का भाग ३० प्रतिशत से भी कम है। आज भारत का निर्यात कुछ थोड़ी-सी मुख्य वस्तुया या कपि पर आधारित उद्योगा की वस्तुया पर ही निर्भर नहा करता।

नये औद्योगिक उत्पादन

अब हमारे निर्यात व्यापार मे तयार किय हुए माल और नई औद्योगिक वस्तुया का स्थान अधिक प्रमुख है। आज भारत के कुल निर्यात व्यापार म नयी औद्योगिक वस्तुया की मात्रा ५० प्रतिशत से भी अधिक है जबकि १९४७-४८ म हमारे निर्यात म इन चीजों का भाग ५ प्रतिशत से कम होता था।

नयी वस्तुया के निर्यात में केवल सामान्य प्रकार का वना हुआ माल ही शामिल नहीं है। भारत म वना विभिन्न प्रकार की टिकाऊ उपभाग की वस्तुए समय और मशीने यातायात के उपकरण, भारी विद्युत् सम्प्रेषण लाइनें और मीनारों रच की पट्टी आदि

वस्तुएँ प्रत्यक्ष विकासशील देशों को ही नहीं भेजी जातीं बल्कि पश्चिमी औद्योगिक दृष्टि से उन्नत देशों के बड़िया बाजारों में स्थान पाती हैं। इनमें से कई वस्तुएँ विश्व के अनेक देशों से आमंत्रित निविदाओं के आधार पर भेजी जाती हैं जिनमें विकसित देशों के साथ बड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है और तब उनका आडर मिलता है। निर्यात में कुछ ऐसे ठेके भी हान ह जिनमें मशीनों और उपकरणों का निर्यात करने के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान और कार्यक्रम निर्धारित करने डिजाइन बनाने, निर्माणकार्य करने जैसी सेवाएँ भी उपलब्ध करानी होती हैं। भारत तेजी से पूंजीगत उपकरणों, समस्त एव मशीनों और तकनीकी ज्ञान का निर्यात करने वाला देश के रूप में उभर रहा है।

भारत का विदेश व्यापार अब काफी 'यापक' और बहुमुखी हो गया है। अब यह सिर्फ ब्रिटेन या अमेरिका जैसे देशों तक ही सीमित नहीं है। दिन-दिन पूर्व युरोपीय देशों और अफ्रीका एशिया एव लातिनी अमेरिका के देशों के साथ नये व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित होते जा रहे हैं।

खाद्यान्नो का आयात समाप्त

वस्तुओं की विविधता एव विभिन्नता की दृष्टि से हमारे आयात में भी महत्वपूर्ण विकास हुआ है। आज की सभ्यता पहले भारत मुख्यतया तयार माल ही मगाया करता था लेकिन अब वह बिल्कुल नहीं मगाया जाता है। भौगोलिक दृष्टि से भी हमारे आयात में बड़ी विविधता आयी है। कुछ दिन पहले तक भारत के कुल आयात में खाद्यान्न के आयात का प्रमुख स्थान था। अब वह प्रायः समाप्त हो गया है जो इस महत्वपूर्ण दिशा में आत्मनिर्भरता का परिचायक है।

हाल के वर्षों में भारतीय उद्यमियों ने अफ्रीका और एशिया के देशों में सहयोग के आधार पर सौ से ऊपर उद्योग खोले हैं। इनमें से इथियोपिया, कीनिया, लीबिया, मारोश, नाइजीरिया, श्रीलंका ईरान और मलयेशिया में स्थापित २७ उद्योगों में उत्पादन प्रारम्भ हो गया है। यहाँ-यहाँ ध्यान देने योग्य है कि कुछ भारतीय उद्यमियों ने तो ब्रिटेन बनाम पश्चिमी जर्मनी और अमेरिका जैसे उन्नत देशों में भी सहयोग के आधार पर ऐसे उद्योग खोले हैं।

आज की समय भारत से निर्यात की जानेवाली वस्तुओं के उद्योगों में गुण नियंत्रण की कोई भी सघटित व्यवस्था नहीं थी। आज भारत से निर्यात की जानेवाली ८५ प्रतिशत वस्तुओं का गुण नियंत्रण और जहाज पर लाने से पहले जांच की कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ता है। परिणामस्वरूप आज विश्व के बाजारों में भारतीय माल गुण एव बढिया बनावट के लिए काफी प्रतिष्ठा पा चुका है। अगले कुछ वर्षों में निर्यात की जानेवाली समस्त वस्तुओं का गुण नियंत्रण की परिधि के अन्तर्गत लाने की योजनाएँ बना ली गयी हैं।

विभिन्न प्रकार की इजीनियरी वस्तुओं के निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। छोटे-बड़े के प्रारम्भ में जहाँ कुल ३ से ५ करोड़ रुपए का निर्यात होता था वहाँ अब भारत प्रत्यक्ष रूप से १०० करोड़ रुपए से अधिक की विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। इससे पाँच गुना अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए एक योजना बना ली गयी है और उसका 'याव' हार्दिक रूप से दिया जा रहा है, जिसमें अन्ततः ५०० करोड़ रुपए की इजीनियरी वस्तुओं के निर्यात का आशय है।

व्यापारिक क्रांति का आरम्भ

आजादी के बाद की एक प्रमुख बात यह है कि विदेश व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों को समालन के लिए कई सरकारी क्षेत्रों के अभिकरण खोले गए हैं। धीरे धीरे आयात व्यापार का अपने हाथ में लेने की सरकार की नीति के अंतर्गत सरकारी क्षेत्र में कई अभिकरण स्थापित किए गए हैं। इनमें (१) भारतीय राज्य व्यापार निगम (२) खनिज एवं धातु व्यापार निगम, (३) हथकरघा एवं हस्तकला निर्यात निगम (४) भारतीय अलखिल निर्यात निगम और (५) रूढ़ी धातु व्यापार निगम शामिल हैं।

हाल के वर्षों में आयात और निर्यात व्यापार के विशेष क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए कई सरकारी एजेंसियां खोली गयी हैं। ये हैं—(१) प्रतिवप लगभग १०० करोड़ रुपए की कपास आयात करने के लिए कपास निगम और (२) प्रतिवप ३० करोड़ रुपए के कच्चे काजू के आयात के लिए काजू निगम।

विकासशील देशों को पूरी परियोजनाओं के निर्यात और बढ़िया उपकरणों के निर्यात की देखभाल के लिए परियोजना एवं उपकरण निगम स्थापित किया गया है। पकटों में चाय की विक्री का बढ़ावा देने के लिए और चाय का निर्यात कर अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए चाय व्यापार निगम बनाया गया है।

१९७२-७३ में भारत के विदेश व्यापार की प्रवृत्तियां

वर्ष १९७१-७२ भारत के निर्यात व्यापार के लिए कठिनाई का वर्ष था जबकि इसमें ४६ प्रतिशत की वृद्धि दर रही। १९७२-७३ के दौरान हम स्थिति में काफी सुधार हुआ और इस वर्ष (अप्रैल से दिसम्बर) के पहले नौ महीनों में इससे पूर्ववर्ती वर्ष की इसी अवधि की अपेक्षा निर्यात में लगभग २२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है और आयात में लगभग ६७ प्रतिशत की कमी हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात् पहली बार ही व्यापार सतुलन भारत के पक्ष में रहा है।

१९६७-६८ से १९७२-७३ तक के व्यापार सतुलन की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दर्शायी गई है —

(करोड़ ₹० में)

वर्ष	आयात (लागत, बीमा, भाड़ा)	निर्यात पुनरनिर्यात सहित (जहाज पर मूल्य)	व्यापार सतुलन
१९६७-६८	२००७६	११६८७	—८०८६
१९६८-६९	१९०८६	१३५७६	—५५०७
१९६९-७०	१५८२७	१४१३३	—१६६४
१९७०-७१	१६३४२	१५३५२	—९९९०
१९७१-७२	१८१२०	१६०६६	—२०५४
अप्रैल दिसम्बर			
१९७१-७२	१३६३६	११५००	—२२३६
*अप्रैल दिसम्बर, १९७२-७३	१२३०६	१३६५२	*१६५३

*अर्नातम।

निर्यात

चालू चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए १९६८-६९ को आधार वष मानकर, निर्यात में वृद्धि इस प्रकार रही १९६९-७० में ४१ प्रतिशत १९७०-७१ में ८६ प्रतिशत और १९७१-७२ में ४६ प्रतिशत। इसका अर्थ यह है कि ५८ प्रतिशत प्रतिवष की औसत वृद्धि दर से वृद्धि हुई। चौथी योजना के लिए वृद्धि की ७ प्रतिशत दर निर्धारित की गई थी। वष १९७२-७३ के पहले नौ महीना के दौरान निर्यात व्यापार में हुई २० प्रतिशत की वृद्धि को यदि वष के अन्त में तीन महीना में नहीं बनाए रखा जाता है तब भी यह आशा है कि इस वष के दौरान हुई वृद्धि की दर चौथी योजना के पहले तीन महीना के दौरान हुई वृद्धि से तथा ७ प्रतिशत के लक्ष्य से भी काफी अधिक रहेगी।

१९७१-७२ में निर्यात निष्पादन १९७१-७२ के दौरान क्षरणशीलता के अन्तर्गत तथा भारत-पाक युद्ध के कारण भारत के साधनों पर असामान्य दबाव पड़ा। १९७१-७२ में प्राप्त ४६ प्रतिशत की वृद्धि दर हालांकि स्वयं में प्रभावात्पादक नहीं है फिर भी उम वष के दौरान विद्यमान अनेक प्रतिकूल कारणों के सदृश यदि इस दबाव का उपाय न किया जाय तो यह कम महत्वपूर्ण नहीं है। ये कारण थे (१) कृषिपत्र आधारभूत वस्त्रों के मूल्य की घटती सप्लाई में लगातार कमी (२) औद्योगिक उत्पादन में धीमी प्रवृत्ति (३) भारत-पाक युद्ध के कारण परिवहन सबंधी गत्यावरोध तथा उसमें पड़ी बाधा (४) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा संकट जिसके कारण विदेश व्यापार में अनिश्चितता छाई रही (५) विश्व के इस्पात उद्योग में मंदी जिसके कारण लौह अयस्क लौह भणनीज आदि के निर्यात पर असर पड़ा (६) कृषिपत्र विकसित देशों द्वारा अग्रनायी गई प्रतिवधात्मक नीतियां (७) जहाजा में अग्रनायी स्थान तथा भाड़े की बढ़ती हुई दर।

इस वष के दौरान निम्नलिखित वस्तुओं के निर्यात में प्रभावशाली वृद्धि हुई (१) पटसन निमित्त वस्तुएं (२) चमड़ा तथा चमड़ा निमित्त माल (३) तम्बाकू (४) मछली, (५) बाजू की गिरिया (६) हीरे तथा मूल्यवान तथा अल्प मूल्यवान रत्न तथा (७) सूती परिधान। पटसन निमित्त वस्तुओं के निर्यात में हुई वृद्धि उल्लेखनीय थी अर्थात् १९७०-७१ में १६० करोड़ रु० के निर्यात हुए थे जो १९७१-७२ में बढ़कर २६५ करोड़ रु० के हो गए। इसी प्रकार चमड़ा तथा चमड़े की वस्तुओं के निर्यात जो १९७०-७१ में लगभग ७२२ करोड़ रु० के थे बढ़कर १९७१-७२ में ९०८ करोड़ रु० के हो गए।

१९७०-७१ के आठवां की तुलना में इस वष के दौरान निम्नोक्त वस्तुओं के निर्यात में उल्लेखनीय रूप से गिरावट आई लौहा तथा इस्पात लौह अयस्क लौह-भणनीज खली तथा इजीनियरी माल। लोहे तथा इस्पात के निर्यातों में तीव्र गिरावट के लिए देश में इस्पात की कमी उत्तरदायी थी। जिसके निर्यात १९७०-७१ में ६७ करोड़ रु० के हुए थे जो गिर कर १९७१-७२ में २५ करोड़ रु० के रह गए। इजीनियरी वस्तुओं के निर्यातों में गिरावट के लिए भी यही कारण उत्तरदायी थे। लौह अयस्क तथा लौह भणनीज के निर्यातों में गिरावट का मुख्य कारण था विश्व इस्पात उद्योग में मंदी। खलिया के निर्यातों में गिरावट के ये कारण थे अंतरराष्ट्रीय कीमती म गिरावट सोयाबीन से प्रतियोगिता, अधिक भाड़ा दरें तथा घरेलू बाजार की भाग में वृद्धि।

पूर्ववर्ती वष की अपेक्षा १९७१-७२ के दौरान, अनेक निर्यात उत्पादों तथा चाय,

पटसन निर्मित वस्तुएँ, सूती यान, मछली तथा तम्बाकू निर्मित से प्राप्त इकाई मूल्य अधिक था। तथापि लौह अयस्क के निर्याता से प्राप्त इकाई मूल्य म एक्कदम गिरावट आई।

१९७२-७३ के दौरान निर्यातों की प्रवृत्तियाँ १९७२-७३ व दौरान निर्यात निष्पादन काफी प्रभावोपादेव रहा है। इसका कारण यह है कि इस अवधि के दौरान देश की आर्थिक स्थिति म समग्ररूप से आम सुधार हुआ बगला देश के साथ व्यापार प्रारम्भ हा गया और विश्व की प्रमुख मुद्रायों के बीच विनिमय की नई दरा की व्यवस्था हो गई।

विदशी मुद्रा की समता दरा के बराबर उतार चढाव से रूपये म निर्यात आय के मूल्य पर पडने वाले प्रभाव का ठीक ठीक अनुमान लगाना कठिन है।

निर्यात निष्पादन का मूल्यांकन करने म, इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि सामान्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रक्रिया के अनुसार, देश से बाहर जाने वाली सभी वस्तुएँ निर्यात क रूप मे अभिलिखित की जाती है। भुगतान के शेष आकडा से वित्त व्यवस्था क तरीके का हिसाब लगाया जाता है। इस प्रकार भारत के समग्र निर्यात आकडा म बगला देश को किए गए निर्यात भी शामिल हैं जिनम अनुदानों के वदने किए गए कुछ ऐसी वस्तुओं के निर्यात शामिल है जिनकी पुनरावृत्ति नहीं होगी और कुछ ऐसी वस्तुओं के हैं जिनके निर्यात जारी रहेंगे। १९१६ करोड ₹० के कुल निर्यात म बगला देश का ३६ करोड ₹० के निर्यात हुए। तथापि इस अवधि के दौरान पर्याप्त जानकारी के अभाव म बगला देश को किए गए निर्यातों का अभिनेखन अपूर्ण था।

अप्रैल सितम्बर, १९७१ की तुलना म अप्रैल सितम्बर, १९७२ के दौरान हुई १६२ करोड ₹० की कुल वृद्धिमे जिन मदों का मुख्य रूप से योगदान रहा था वे हैं चमड़ा तथा चमड़ा निर्मित माल, सूती वस्त्र हीरे मछली, तम्बाकू, रली, काजू की गिरा, अन्न तथा अन्न से निर्मित वस्तुएँ। निम्नलिखित तालिका म उन प्रमुख मदों को दिखाया गया है जिनके निर्यातों म अप्रैल सितम्बर १९७२ म पूर्ववर्ती वर्ष की तत्सम्बन्धी अवधि की तुलना म वृद्धि हुई (करोड ₹० म)

क्रमांक	वस्तु	अप्रैल सितम्बर		वृद्धि
		१९७१	१९७२	
				१९७१ की तुलना म अप्रैल सितम्बर १९७२ म हुई
१	पटसन निर्मित माल	११७ २१	१३४ ६१	+१७ ७०
२	चाय	६६ ११	७५ ८६	+९ ७८
३	सूती वस्त्र (क) सूती कपडा क यान (मिल निर्मित)	२७ ७०	३६ ७३	+९ ०३
४	सूत	१ ३८	११ ०६	+ १ ६१
५	सूती परिधान	६ ०१	१३ ०६	+७ २५

६	हथकरपा सूती कपड़े के घा	४४१	५ ८३	+१४२
७	प्रतिमित तम्बाक	३१०४	६३ ८७	+१२ ८३
८	बाजू गिरी	३४०६	३६ ६४	+५ ५५
९	खसी	२० ७२	२७ ०१	+६ २९
१०	मछली	१५ ६७	२८ ५६	+१२ ९२
११	घाघान तथा घाघान उत्पाद	३ ४४	२३ ७५	+२० ३१
१२	कपास	७ ५६	११ ३७	+३ ८१
१३	कच्ची ऊन	१ ६३	२ १६	+० ५६
१४	कच्चा पटसन	० ५४	२ ४२	+१ ८८
१५	मूंगफली	१ ६५	२ ६३	+० ९८
१६	पनिज इधन, स्नेहक तथा सबद्ध सामग्री (कोयला तथा कोक शामिल है)	४ ५६	७ ८५	+३ २९
१७	चमड़ा तथा चमड़ा से निर्मित वस्तुएं जूता आदि की छोडकर	४१ ९७	७२ ०७	+३० १०
१८	इंजीनियरी माल	६२ ६३	६५ ६४	+३ ०१
१९	हस्तशिल्प की वस्तुएं (क) मोती कीमती तथा कम कीमती	३६ ६७	५६ ३८	+१९ ७६
२०	रासायनिक पदार्थ तथा सबद्ध उत्पाद	१३ ८७	१६ ५८	+२ ७१
२१	काठ, काठ कबाड तथा काक निर्मित वस्तुएं	६ ०३	५ ५४	+१ ५१
२२	अशोधित रबड सहित रबड निर्मित वस्तुएं	३ ५४	४ ८७	+१ ३३
२३	लोह मगनीज तथा लौह मिश्रित वस्तुएं	२ २३	४ ०६	+१ ८६
२४	कापी	१४ ७५	१६ ०२	+१ २७

दूसरी ओर चीनी लौह अयस्क तथा इस्पात आदि के निर्याता में काफी गिरावट आई। देश में चीनी व कम उत्पादन से निर्याता व लिए इस मद की उपलब्धि कम हो गई। लौह अयस्क के सबद्ध में, बलाडिला में कुछ उत्पादन कठिनाई तथा पारादीप पत्तन पर चक्रवात के कारण विस्थापन के अलावा बड़ी हुई समुद्री भांडा दरो से इस मद के निर्याता व विकास में अवरोध उत्पन्न हुआ। लोहे तथा इस्पात के निर्यात में आई वहावट तब तक बनी रहती जब तक कि इस्पात व धरलू उत्पादन में सुधार नहीं हा जाता।

निम्नोक्त सारणी में उन प्रमुख मन् को दिखाया गया है जिनके निर्याता में अप्रैल मितम्बर १९७२ में अप्रैल मितम्बर १९७१ की उतनी ही अवधि की तुलना में कमी आई (करोड़ रु० में)

क्रमांक	वस्तु	अप्रैल सितम्बर		अप्रैल सितम्बर १९७१ की तुलना में अप्रैल सितम्बर १९७२ में आई गिरावट
		१९७१	१९७२	
१	लोह अयस्क	४३ २४	४१ ६५	१ ५९
२	लोहा तथा इस्पात (प्राइम) लोह मगनीज तथा लोह मिश्रित धातुओं आदि को छोड़कर	१७ ३८	१२ ३५	५ ०३
३	ममाले (काली मिच सहित)	१६ ४८	११ ५०	४ ९८
४	चीनी	२३ ६०	९ ७८	१३ ८२
५	मगनीज अयस्क	५ ५६	४ ११	१ ४५
६	प्याज	० ९९	० ५३	० ४६
७	चावल	० ९८	० ९४	० ०४
८	लोहे तथा इस्पात की कतरन	१ १६	० ५२	० ६४

निर्यातों की दिशा अप्रैल सितम्बर १९७२ में गत वर्ष की उसी अवधि की तुलना में पश्चिम जर्मनी को निर्यात बढ़कर लगभग ६६ करोड़ रुपए पश्चिम यूरोप को ५७ करोड़ रुपए से भी अधिक एशिया तथा ओसीनिया को ३९ करोड़ रुपए तथा अमरीका का ७ करोड़ रुपए के हुए। अफ्रीका को निर्यात मामूली से कम हुए।

एशिया को निर्यातों में वृद्धि मुख्यतः बंगलादेश ने साथ बढ़े हुए व्यापार और जापान नेपाल तथा ईरान का निर्यातों में वृद्धि के परिणामस्वरूप हुई। इसके विपरीत श्रीलंका को निर्यातों में अत्यधिक कमी आई और वे ८३ करोड़ रुपए तक (१२७ करोड़ रुपए) से ६४ करोड़ रुपए) गिर गए। आस्ट्रेलिया, बर्मा, मलेशिया और कोरिया गणराज्य द्वारा माल कम मंगाया गया।

आयात

गत छ वर्षों में, १९६९-७० में आयातों का स्तर सबसे कम था। तब से अब इसमें उच्चमुखी प्रवृत्ति दिखाई दी है। १९७१-७२ में कुल आयात १८१२ करोड़ रुपए के हुए जिसका अधिप्राय १९७०-७१ की तुलना में ११% की वृद्धि जाना है। परंतु १९७२-७३ में पहले नौ महीनों की प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि पूरे वर्ष (१९७२-७३) के लिए अब गत वर्ष की तुलना में कम हो सकता है।

वर्ष के लिए वस्तुवार थोड़े से प्रकट होता है कि निर्यात रूप से आयातों में अधिकतम वृद्धि लोहे तथा इस्पात के संबंध में हुई जो १९७०-७१ में १४७ करोड़ रुपए से बढ़कर १९७१-७२ में २३८ करोड़ रुपए होकर ९१ करोड़ रुपए की हुई। यह, स्वदेशी पूंजी की

कमी धीरे बढ़ती हुई परेगु मांग के कारण हुई थी। जूरी घण्टि में पै, विनिमय जूरी में व घायात ५८ करोड़ रुपए मनीषा तथा परिवहन उपकरण के ३८ करोड़ रुपये उबरक निमित्त मात्र व २० करोड़ १० तक बढ़। परन्तु १९३१ ३२ में मुम्बईर खाद्य विनिमय व व उपकरण खाद्यान्न व घायात २१३ करोड़ रुपए में घटकर १३१ करोड़ रुपए व रह गए। धातुह धातुमा व घायात में १३ करोड़ रुपए की कमी हुई।

१९३२ ३३ में घायात की प्रवृत्तियाँ वष १९३३ ३३ व वहाँ की महीना (घना विमम्बर) में कुल घायात १२३१ करोड़ रुपए मुख्य के हुए। मगना घमिनाम १९३१ ३२ की उतती हा घबधि म घायात का तुपता म लगभग ६ ३% की गिरावट हाता है। वष वार ब्योरा वष व वहन पांच महीना के लिए है। त्रिमसे मगना गिनता है कि मगना की वष का छाटकर आयात घमिनाम धारा म कम हुए। वष विमम्बर विमम्बर खाद्यान्न तथा व घायात म विमम्बर दी। तात तथा दस्ता व मामन म घमिनाम विमम्बर, १९३३ म घायात लगभग मन वष व वार व वष जबकि पैट्रोलियम तथा उबरक व मामन म कुल गिरावट घई। परन्तु उबरक घमिनाम विमम्बर घमिनाम घमिनाम की ब्यवस्था का मगना हुए वष की शय घमिनाम में इन वषों व घायात में वधि विमम्बर का सम्भावना है।

विमम्बरित मारपी म माट तीरे पर वस्तु-ममूटा व घनुगार वष १९३० ३१ १९३१ ३२ तथा घमिनाम घमिनाम १९३३ ३३ (१९३१ ३२ व तुपनामक घाटका व माघ) म विमम्बर घायात विमम्बर गए है

आयात मुख्य वस्तु-समूह

(मूल्य करोड़ १० में)

वस्तु	१९३० ३१	१९३१-३२	घमिनाम घमिनाम	
			१९३१	१९३२
खाद्यान्न	२१३०	१३१०	४२३	१०४
रई	६८८	११३४	६५३	५६०
रामायनिक तत्व तथा योगिन	६८०	७१८	३६७	२५०
उबरक निमित्त	६१२	८१२	२३६	२१६
मणोधिन्त पन्थोलियम तथा पेट्रोलियम				
उत्पाद	१३५६	१६६१	८०८	३८३
नीहा तथा वस्थात	१४७०	२३७६	६५६	६५०
मलौह धातुए	११६४	१०१८	५१४	६५३
मशीन	३२८२	३२६६	१५५२	१६६५
परिवहन उपकरण	६८२	८४६	३४२	२८६
आयात का कुल योग	१६३४२	१८१२०	६७५०	६६७५

आयातों की दिशा वष १९३१ ३२ के दौरान पश्चिम यूरोप तथा एशिया से

आयाता में पर्याप्त वृद्धि हुई है जबकि अमेरिका अफ्रीका व पूर्व यूरोप से होने वाले निर्याता में गिरावट आई है। पश्चिम यूरोप तथा इकाफे के देशों से (विशेषतः जापान तथा ईरान से) अधिक आयात लाहे तथा इस्तात, मशीना, पेट्रोलियम तथा पेट्रोलियम उत्पादों और रामायनिक उत्पादों को हमारी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए करने पडे।

अप्रैल अगस्त १९७२ आयात व्यापार की ग्लोबल स्थिति के बारे में उपलब्ध अद्यतन जानकारी, अप्रैल अगस्त १९७० की अवधि में संबंधित है। इस अवधि के दौरान पश्चिम यूरोप से भारत के आयातों में ३८४ करोड़ रु० की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि में यूरोपीय साक्षा बाजार तथा एफटा के देशों का लगभग एक समान भाग था। अफ्रीका तथा एशिया से पिछले वर्षों की उसी अवधि की तुलना में इस अवधि में अपेक्षित अधिक आयात हुए। इस वर्ष में जांबिया मूडान तथा कांगो लोकतन्त्रीय गणराज्य से आयातों में वृद्धि और २० अरब गणराज्य से आयातों में गिरावट दृष्टिगोचर हुई। गिरावट का कारण यह था कि भारत द्वारा रुई की खरीद में कमी आई।

पिछले वर्ष की उसी अवधि की तुलना में अप्रैल अगस्त १९७२ की अवधि के दौरान अमेरिका तथा पूर्व यूरोप से आयातों में गिरावट आई। पिछले वर्ष का तुलना में इस अवधि में अमेरिका से काफी कम आयात हुए। इस गिरावट का सम्बन्ध अधिराशत अमेरिका से तथा कुछ हद तक कनाडा से किए गए आयातों से है।

क्षेत्र-वार आयातों को दर्शाने वाला एक विवरण नीचे दिया जाता है

(करोड़ रुपये में)

क्षेत्र	अप्रैल अगस्त			
	१९७०-७१	१९७१-७२	१९७१	१९७२
१ अफ्रीका	१६६ ८४	१४३ ७७	१६६ ३६	८६ ८६
२ अमेरिका	५८६ ०१	५३६ ००	२३० ४१	१०६ ६८
उत्तरी अमेरिका	५७० १८	५२६ ३३	२२८ १७	१०४ ३८
पेटिन अमेरिका	१४ २६	५ ७४	१ ८२	२ २६
३ एशिया तथा महासागरीय देश	२०० १८	४३८ ०२	१७६ ०६	१८१ ४७
इकाफे	२६४ ३७	३६१ ३२	१५३ १२	१५३ ४७
एशियाई तथा महासागरीय अन्य देश	३५ ८१	६२ १७	२२ ६४	२८ ०१
४ पूर्व यूरोप	२२७ ६५	२०१ ७५	६२ ८२	८८ ८७
५ पश्चिम यूरोप	३५० ५१	५०० ११	१६६ २८	२३७ ६३
यूरोपीय साक्षा बाजार	१८८ ४०	२४६ ३२	१०१ ६५	११६ ८८
एफटा के देश	१५६ ०२	२४६ ७७	६५ ४१	११५ १५

निष्कर्ष

चालू वर्ष (१९७२-७३) के दौरान भारत के विदेश व्यापार का रुख काफी आशा

प्रद रहा है और यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि इस वष १७६० करोड़ ६० का निर्यात नक्ष्य न बवल प्राप्त कर लिया जायगा बल्कि निर्यात उससे भी आगे बढ़ जायेंगे। इन नौ महीना के निर्यात आकड़ों से पता चलता है कि वे पिछले वष की उसी अवधि के आकड़ों की तुलना में २२ प्रतिशत अधिक है। दूसरी तरफ, आयातों का रुख कमी की ओर रहा। पिछले वष भी उसी अवधि की तुलना में इस अवधि में ६७ प्रतिशत कम आयात हुए।

वष १९७३-७४ में निर्यातों का भविष्य ज्यादातर, देश में व्याप्त अर्थ व्यवस्था और विश्वेशी बाजारों में व्यापार स्थिति पर निर्भर करेगा। कुछ अनुमानों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में अनिश्चितताओं के बावजूद १९७३ में विश्व व्यापार में ८ से १० प्रतिशत तक वृद्धि होने की आशा है। वृद्धि की इस दर के लिए हम अपने निर्यातों को बढ़ाने के सद्बल में निर्यात उत्पादन प्रतिस्पर्धात्मक कीमत पर पर्याप्त अतिरिक्त निर्यात माल रखने और नये बाजारों का पता लगाने के विषय में और अधिक गहन प्रयास करने की आवश्यकता होगी।

वाणिज्यिक सम्बन्ध तथा व्यापार करार

अपने देशों के साथ घनिष्ठ आर्थिक सम्बन्ध बनाने और राष्ट्रों के बीच व्यापार बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय व्यापार वातावरण और आर्थिक तथा व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डलों के आदान प्रदान पर उचित बल दिया जाता है जिससे वर्तमान व्यापार करारों अथवा प्रबंधों का नवीकरण किया जा सके अथवा उनका क्षेत्र बढ़ाया जा सके तथा नये करार किये जा सकें।

व्यापार करार २८ मार्च १९७२ को नई दिल्ली में भारत तथा बंगलादेश के बीच एक व्यापार करार पर हस्ताक्षर किये गये जो कि आरम्भ में एक वष की अवधि के लिए वध है। इस करार में २५ करोड़ ६० तक दोनों तरफ दोनों देशों की विशेष रचि की मद्दा में सन्तुलित व्यापार हेतु एक सीमित भुगतान प्रबंध की व्यवस्था की गई है।

दोनों सरकारों के प्रतिनिधियों की संयुक्त पुनर्विलोकन समिति ने जुलाई १९७२ में काठमाण्डू में भारत-नेपाल व्यापार तथा परिवहन संधि (१९७१) के कार्याकरण का पुनर्विलोकन किया। इसके फलस्वरूप तीसरे देशों के साथ नेपाल का व्यापार प्रवाह और अधिक सुव्यवहित करने के लिए नेपाल सरकार को कलकत्ता पत्तन पर भालगोदाम के लिए अतिरिक्त स्थान उपलब्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त नवमलगाडी/सत्तीघाट तथा मुरसंध/जलेश्वर से होकर भारत अतिरिक्त परिवहन मार्ग बनाने पर भी सहमत हो गया है ताकि नेपाल का तीसरे देशों के साथ व्यापार रङ्गपुर तथा टनकपुर से हो सके और साथ ही भारत के साथ व्यापार के लिए अतिरिक्त मार्ग भी मिल सके जिससे नेपाल के गुलरिया जिन की आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा सके।

दोनों देशों के बीच व्यापारिक तथा आर्थिक सहयोग में सम्बन्धित मामलों पर विचार विमर्श करने हेतु अप्रैल १९७० में नई दिल्ली में भारत-नेपाल आर्थिक सहयोग की संयुक्त समिति की दूसरी बैठक हुई।

मौसमीय अवधि में प्राप्त होने वाले अथवा संयुक्त अथवा गणराज्य सूझान त्रानिया बिना तथा एक के साथ नये व्यापार करार किये गये अथवा वर्तमान करारों की अवधि बढ़ाया गया।

इथोपिया, केया, घाना, जाइरा, जाम्बिया तथा मडगास्कर के साथ व्यापार करार प्रयत्न समझौते करने के प्रयास जारी रखे गये ।

सोवियत संघ पोलंड, चैकोस्लोवाकिया, जर्मन लोकतन्त्रीय गणराज्य, बल्गारिया, हंगरी, रूमानिया तथा कोरिया लोकतन्त्रीय जनवादी गणराज्य के साथ वर्ष १९७३ के लिए वार्षिक व्यापार सलेखों को अन्तिम रूप दिया गया ।

भारत तथा विभिन्न पश्चिम यूरोपीय देशों के बीच व्यापार सम्बन्ध बढाने विविधीकरण करने तथा सुदृढ़ बनाने के विचार से वाणिज्यिक विकास कार्यक्रम बनाये गये हैं । जर्मन संघीय गणराज्य, फ्रांस बेल्जियम इटली तथा डेन्मार्क की सरकारें ऐसे कार्यक्रमों को द्विपक्षीय आधार पर कार्यान्वित करने के लिए सिद्धांत रूप में सहमत हो गई हैं । इन कार्यक्रमों के व्यौर पर वार्ताएँ जारी हैं ।

भारत तथा सेनेगल की सरकारों ने पारस्परिक आर्थिक सहयोग बढाने के लिए एक संयुक्त समिति बनाने का विनिश्चय कर लिया है । दोनों सरकारों के बीच इस सम्बन्ध में पत्राचार शीघ्र ही आदान प्रदान किया जायेगा ।

इस समय विदेशों में ५७ भारतीय वाणिज्यिक प्रतिष्ठान हैं । इनमें जेनेवा में गाट तथा ब्रुकटाइ के भारत के रेजिडेंट प्रतिनिधि कार्यालय शामिल नहीं हैं ।

भारत-पोलंड व्यापार को बढाने की सभावनाओं का पुनर्विलोकन करने के विचार से, इस मन्त्रालय के एक प्रतिनिधि ने विदेश काय मन्त्री के नेतृत्व में एक सरकारी दल के सदस्य के रूप में पोलंड का दौरा किया ।

भारत तथा पानैड के बीच वर्ष १९७३, १९७४ तथा १९७५ के लिए दीर्घावधि व्यापार सलेख तथा रूमानिया के साथ वर्ष १९७३ के लिए वार्षिक व्यापार सलेख पर वार्ता करने के विचार से एक भारतीय व्यापार प्रतिनिधिमण्डल ने इन देशों का दौरा किया । पोलंड के साथ दीर्घावधि व्यापार सलेख आद्यशरित किया गया ।

भारत-सावियन संयुक्त आयोग पर बातचीत करने हेतु जो कि मास्का में हुई, योजना मन्त्री के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य के रूप में इस मन्त्रालय के एक प्रतिनिधि ने सावियन संघ का दौरा किया ।

भारत फ्रांस संयुक्त आयोग की बैठक में जो मार्च १९७३ में हुई शामिल होने के लिए एक भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने फ्रांस का दौरा किया ।

भारत मिस्र का अरब गणराज्य के व्यापार प्रबन्ध के कार्यक्रमों का मध्यावधि पुनर्विलोकन करने हेतु अप्रैल १९७३ में एक भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने मिस्र के अरब गणराज्य का दौरा किया ।

परियोजना तथा उपस्कर निगम के अध्यक्ष के नेतृत्व में सरकारी क्षेत्र के संगठनों के एक दल ने फरवरी-मार्च १९७३ में कुछ सटिन अमरीकी देशों (अर्थात् ब्राजील अर्जेन्टीना चिली पेरू, कोलम्बिया वेनेजुएला तथा मक्सिको) का उन देशों में भ्रमण बाता व साथ-साथ विशिष्ट मदों के खरीददारों के साथ सीधे सम्पर्क स्थापित करने की दृष्टि से दौरा किया । इस दल में वृष्य उपाय आद्योगिक बच्चा मान उपभोक्ता माल इजीनियरों तथा रेलवे उपस्कर धातु तथा खनिज मन्त्रालयों के वार्ता दलों की परियोजनाएँ जहाजराना

तथा बकिंग महिन अनेक विषया क धारे म विचार किया । उनकी रिपोर्ट पर अनुवर्ती काय वाही की जा रही है ।

वष १९७४ क व्यापार सलेखा को अतिम रूप देने हेतु चकोस्लोवाकिया तथा जमन लोकतन्त्रीय गणराज्य से व्यापार प्रतिनिधिमण्डल भारत आये ।

वष १९७४ के व्यापार सलेख को अतिम रूप देने हेतु सोवियत सघ के विदेश व्यापार उपमन्त्री मि० आर्० टी० ग्रिगिन के नेतृत्व म एक सोवियत व्यापार प्रतिनिधि मण्डल भारत आया ।

स्पेन सरकार के अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सवधो क महानिदेशक नवम्बर, १९७३ म भारत आये और उहाने वाणिज्य मन्त्रालय मे वार्ताए की । इन वार्तामा के दौरान, भारत-स्पेन व्यापार को अतिम रूप दिया गया । भारत-स्पेन व्यापार सम्बन्ध का बढ़ाने, सुदृढ़ करने तथा घनिष्ठ करने के उपाया पर भी विचार किया गया ।

स्पेन से एक व्यापार प्रतिनिधिमण्डल जिसमे प्रमुख वाणिज्य मण्डलो के प्रतिनिधि तथा निर्यात/आयात दोना प्रकार के हिता का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिनिधि शामिल थ दिसम्बर १९७३ म भारत आया ।

नवम्बर १९७३ म नई दिल्ली मे भारत-बल्जियम सयुक्त आयोग की बैठक मे शामिल होने के वास्तु सरकारी अधिकारियो का एक बेलजियाई प्रतिनिधिमण्डल भारत आया । भारत बल्जियाई व्यापारिक आर्थिक सवधो को और आगे बढ़ाने तथा सुदृढ़ करने के उपाया पर बातचीत की गई ।

नवम्बर १९७३ म विदेश व्यापार मन्त्रालय इटली के महानिदेशक भारत आये और उहाने भारत इटली व्यापार तथा वाणिज्यिक सम्बन्धो के विविधीकरण पर वार्ताए की ।

इराक के विदेश काय मन्त्री के नेतृत्व म एक उच्चस्तरीय इराकी आर्थिक प्रतिनिधि मण्डल भारत आया और उहाने भारत के साथ एक आर्थिक तथा तकनीकी सहयोग करार करन हेतु हमारे योजना मन्त्री के साथ बातचीत की ।

भारत-सडान व्यापार प्रबन्ध के काय का मध्यावधि पुनर्विलोकन करन के वास्ते मूडान से एक व्यापार प्रतिनिधिमण्डल ने अपने आर्थिक तथा व्यापार मन्त्री के नेतृत्व म भारत का दौरा किया ।

वष १९७२-७३ क लिए भारत सयुक्त अरब गणराज्य व्यापार प्रबन्ध सम्पन्न करन हेतु सयुक्त अरब गणराज्य से एक व्यापार प्रतिनिधिमण्डल भारत आया ।

१९७१-७२ तथा अप्रैल-नवम्बर, १९७२ के दौरान भारत का
महीनेवार आयात तथा निर्यात

महीना	प्रामात				निर्यात			
	(मूल्य करोड रु० म)				(पुनरिवात महित)			
	१९७१-७२	१९७२ ७३	१९७१ ७२	१९७२ ७३	१९७१ ७२	१९७२ ७३	१९७१ ७२	१९७२ ७३
अप्रैल	१३६ २६	१३७ ५३	१२१ ८४	१५६ ३७				
मई	१५८ ८१	१३३ ६७	१२८ ७४	१५६ ६६				
जून	१५६ ०६	१३० ०४	११६ ०६	१४५ २२				
जुलाई	१६६ ८५	१६८ ८२	१४८ ८६	१४३ ६४				
अगस्त	१४३ ६८	१६८ २२	१२१ २६	१६३ ८६				
सितम्बर	१४८ २७	१५१ ६७	११६ ८४	१६१ २३				
अक्टूबर	१३० ७३	१३८ ०७	१२० ६२	१६६ ८५				
नवम्बर	१४६ ५८	१०६ ५२	१२६ १६	१६६ ७४				
दिसम्बर	१७४ ११	१३१ ६७	१३३ ५६	१५६ ८३				
जनवरी	१६७ ७५		१४० २७					
फरवरी	१४० २५		१२६ २०					
मार्च	१३६ ६१		१५६ ११					

प्रमुख देशों को किए गए निर्यात

क्रमांक	देश	(करोड रु० म)		
		अप्रैल सितम्बर		
		१९७० ७१	१९७१ ७२	१९७२
१	पश्चिम यूरोप	२०० ३	३२६ ८	२१३ ३
(१)	यूरोपीय साम्राज्य बाजार के देश	६८ ६	१२३ ८	६६ ६
	(क) बेल्जियम	२० ३	२४ ०	११ ८
	(ख) फ्रांस	१८ ०	२४ १	१६ ३
	(ग) जर्मन संघीय गणराज्य	३७ ३	३६ ८	३० २
	(घ) इटली	१४ ०	४७ ७	१६ ८
	(ङ) नीदरलैण्ड	१६ ०	१४ ७	१३ ५
(२)	ब्रिटेन	१७० ४	१६८ १	६१ ०
(३)	पश्चिम यूरोप व अन्य देश	३१ ३	३३ १	२७ ६
	(क) आस्ट्रिया	० ६	० ८	० ६
	(ख) डेनमार्क	४ १	३ ६	२ ८
	(ग) नार्वे	० ६	१ ७	१ २
	(घ) माल्टा	० ३	० २	० १

(द) गिनलण	०६	०६	०६
(घ) घीन	१६	१६	०६
(छ) घायरलड	६६	६६	६१
(ज) स्पेन	२७	३१	१७
(झ) स्वीडन	६०	६०	७६
(ञ) स्वीट्जरलड	७६	७५	३०
(ट) तुर्की	०३	००	४५
२ एशिया तथा महासागर के देश	४८८५	६४७	२५८०
(१) इकाफे	४०६६	३८३०	२११२
(क) अफगानिस्तान	१४२	०७६	१०६
(ख) आस्ट्रेलिया	०४५	७६	१२,७
(ग) बर्मा	१०८	१८	३०
(घ) बोरिया सोवतत्तीय जनवादी गणराज्य	०७	१२	०७
(ङ) श्रीलका	३१८	२१२	६४
(च) मलयशिया	११७	११७	३६
(छ) फारमोसा (चीन गणराज्य)	२०	५१	०५
(ज) हांगकांग	१७२	१५५	८७
(झ) इडोनेशिया	४१	३२	२५
(ञ) ईरान	२६७	१६८	१४४
(ट) जापान	२०३५	१८१७	६३७
(ठ) बोरिया गणराज्य	२१	६३	१०
(ड) नेपाल	२३५	२८४	१७६
(ढ) यूजीलण्ड	६०	१०३	४३
(ण) बंगलादेश	०३	४१०	३६१
(त) फिलीपीन	१४	१४	०६
(थ) सिंगापुर	१७६	१७५	७७
(द) थाईलण्ड	५७	४६	३१
(ध) वियतनाम गणराज्य	२७	३६	०१
२ एशिया तथा महासागर के अन्य देश	७७६	६२५	३८६
(क) दक्षिणी यमन जनवादी गणराज्य	५४	३६	१६
(ख) बहरीन द्वीपसमूह	६५	३६	१६
(ग) साइप्रस	१०	१६	०५
(घ) ईराक	६६	६७	५६
(ङ) जोर्डन	२४	२६	१६
(च) कुवत	१५७	१०७	७२
(छ) लेबनान	१०	१५	१३
(ज) मस्कत तथा ओमान	२२	२६	११

(झ) सऊनी घरब	१४५	१११	६१
(ञ) सीरिया	२०	१८	२३
(ट) कतार	११२	२८	१८
(ठ) दुबाई	५७	५०	३६
३ अफ्रीका	१३६३	१३१६	५२६
(क) मलावी	०६	१३	०८
(ख) मिस्र (संघ० गणराज्य)	५६४	२३१	१५६
(ग) इथापिया	२६	२१	१०
(घ) घाना	१०	१२	०४
(ङ) कीनिया	७६	१७८	३१
(च) मारीशस तथा उसके आश्रित शासन	१४	१७	०६
(छ) मोरक्का	१६	०७	०३
(ज) पूर्वी अफ्रीका के घ प दश	०७	४०	२८
(झ) नाइजीरिया	८६	६६	४७
(ञ) सीबिया	१७	१८	१२
(ट) सियरा लियोन	१३	१३	०८
(ठ) सूडान	३८३	५१७	७५
(ड) तजानिया	४४	४१	२३
(ढ) ट्यूनीशिया	०८	१६	११
(ण) सोमालिया	०८	१३	०७
(त) यूगांडा	३०	४५	१६
(थ) जाम्बिया	३०	५६	३७
(द) स्वाजीलण्ड	०२	२०	१५
४ अमरीका			
(क) कनाडा	२४५६	३१७६	१६५८
(ख) सं० रा० अमरीका	२८०	३६४	१६८
(ग) लातीन अमरीका	८३	१२६	२६
(घ) अर्जेन्टाइना	३३	६०	०५
(ङ) ब्राजील	०८	०६	०२
(च) चिली	०२	२३	०३
(छ) डोमिनिकन गणराज्य	०२	०२	०४
(ज) इक्वेडोर	०१	०१	०२
(झ) पेरू	१०	०६	०४
(ञ) वेनिसुएला	०५	०६	०३
(ट) उरुग्वे	०६	०७	०१
अन्य अमरीकी देश	२०	२८	११
(क) गियाना	०२	०६	०२
(ख) जमाइका	०३	०३	०१

(ग) नीदरलैंड एटीएस	० ०८	० १	० ०४
(घ) त्रिनिडाड तथा टोबागो	० ५	० ८	० ३
(ङ) विडवड द्वीप	० ३	० ३	० २

५ पूर्व यूरोपीय देश	३६२४	३४३५	२२६६
(क) बुल्गारिया	६६	१५५	१०३
(ख) चेकोस्लोवाकिया	२६५	३०५	२३३
(ग) जर्मन लोकतन्त्रीय गणराज्य	२४६	१८०	६७
(घ) हंगरी	१३८	१५५	६५
(ङ) पोलैंड	२२१	१६६	१६७
(च) रूमानिया	१३७	१११	५१
(छ) सोवियत संघ	२०६६	२०८७	१४६०
(ज) युगोस्लाविया	३६४	२४८	६१

कुल निर्यात (पुनर्निर्यात को छोड़कर)	१५३५२	१६०६६	६१८६
--------------------------------------	-------	-------	------

प्रमुख वस्तुओं का आयात-निर्यात

चाय वर्ष १९७२ के दौरान भारत में गत वर्ष की उसी अवधि के दौरान ४३३२ करोड़ कि० ग्रा० की तुलना में ४५१६ करोड़ कि० ग्रा० चाय का उत्पादन हुआ। १९७१ में ४७३३ करोड़ कि० ग्रा० के वास्तविक उत्पादन की तुलना में १९७२ वर्ष के लिए चाय का उत्पादन लक्ष्य ४४६ करोड़ कि० ग्रा० निर्धारित किया गया था।

वर्ष १९७२ के दौरान २०७८६ लाख कि० ग्रा० चाय का निर्यात किया गया जबकि वर्ष १९७१ के दौरान २०६०७ लाख कि० ग्रा० का निर्यात किया था। वर्ष १९७२ के दौरान निर्यात का मूल्य के रूप में १५६५६ करोड़ ₹० वसूल हुए जबकि वर्ष १९७१ के दौरान १५५३६ करोड़ ₹० वसूल हुए थे। चाय का इकाई मूल्य वर्ष १९७१ में ७५६ रुपये प्रति कि० ग्रा० की तुलना में वर्ष १९७२ में ७५६ रुपये प्रति कि० ग्रा० मामूली भाव बंधित था। पूर्व यूरोपीय देशों जिनमें सोवियत संघ, नीदरलैंड, पश्चिम जर्मनी, संयुक्त अरब गणराज्य, सूडान, ट्यूनीशिया, मरुजी अरब तथा फारम की खाड़ी के देश शामिल हैं, का हमारा निर्यात में पर्याप्त बढि हुई है। तथापि म० रा० समरका बनाडा ब्रिटेन, भारत तथा अफगानिस्तान में भारतीय चाय के आयात में गिरावट आई।

काफी वर्ष १९७१-७२ के दौरान ६८००० म० टन काफी का उत्पादन हुआ और वर्ष १९७३-७४ के दौरान ८७००० म० टन उत्पादन हुआ। काफी की फसल पर कूल खिलत समय जनवायु का काफी प्रभाव पड़ना है।

काफी के निर्यात एक प्रकार के अतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय रूप में विनियमित किए जाते हैं। १९७१-७२ (अक्टूबर १९७१ से अक्टूबर १९७२) के काफी वर्ष के लिए भारत का आवन्ति निर्यात बाधा ६०१०० म० टन था। हम भारत काट के निर्यात कर दिया गया। य निर्यात १६०६० म० टन के हुए और हम प्रकार ६०१०४ म० टन का कुल निर्यात किया गया जो कि एक रिहाई है।

इलायची इनायची की खेती मुख्य रूप से तीन राज्या, केरल, कर्नाटक और तमिऴनाडु में होती है ।

इलायची के उत्पादन में प्रत्येक वर्ष अत्यधिक उतार चढ़ाव होता है जो मौसम विशेषतः वर्षा और उसके वितरण के तरीके पर निर्भर करता है । १९७०-७१ में हुए ३१७० म० टन उत्पादन की तुलना में १९७१-७२ में ३७८५ म० टन इलायची का उत्पादन हुआ । १९७२-७३ (फसल वर्ष) में २६०० म० टन इलायची का उत्पादन हुआ ।

वित्तीय वर्ष १९७१-७२ के दौरान २१५७ म० टन इलायची का निर्यात हुआ जो पिछले सभी रिकार्डों से अधिक था और इस प्रकार १९७०-७१ में हुए १७०५ म० टन के निर्यात की तुलना में ८४२ म० टन की वृद्धि हुई । तथापि निर्यात आय में ३१९ करोड़ रु० की कमी हुई अर्थात् १९७०-७१ में हुई ११२२ करोड़ रु० की आय की तुलना में ८०३ करोड़ रुपये की आय हुई ।

उपलब्ध अनतिम आंकड़ा के अनुसार १ जनवरी से ३१ अक्टूबर १९७३ का अवधि में ५७८ करोड़ रुपये मूल्य की १५६० म० टन इलायची का निर्यात हुआ जबकि १९६९-७० में ७८३ करोड़ रुपये मूल्य की १५६८ म० टन इलायची का निर्यात हुआ था ।

भारतीय इलायची के प्रमुख बाजार में वन रहे कुवैत (२० प्रतिशत) मउमै अरब (२० प्रतिशत) मोरिशस (४ प्रतिशत) बहरीन (६ प्रतिशत) जापान (४ प्रतिशत) एवं कतार (३ प्रतिशत) ।

सूती वस्त्र सूती वस्त्रों के निर्यात में जिनमें गत वर्ष गिरावट आ गई था चालू वर्ष के दौरान उध्वमुखी प्रवृत्ति आई । सूती वस्त्रों का विभिन्न विस्मा के लिए जिनमें सूत शामिल है निर्यात लक्ष्य वर्ष १९७२-७३ के रुई सपरिवर्तन सीए के अन्तर्गत सावित्यत सघ का किये जान वाले निर्यातों के अन्तर्गत १२५५० लाख रु० रखा गया था जिससे १६५० लाख रु० की निवल आय होगी । जनवरी-नवम्बर १९७२ में सूती वस्त्रों के कुल निर्यात १९७१ की उतनी ही अवधि में कुल ६६५१ लाख रु० के निर्यातों की तुलना में १०८७० लाख रु० के हुए । यह ३१२१ लाख रु० का उल्लेखनीय वृद्धि की द्योतक है । इससे गत वर्ष का उतनी ही अवधि के निर्यात आंकड़ा की तुलना में ३३ प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

कपास गत रुई मौसम (मिऴम्बर, १९७१—अगस्त १९७२) में रुई की फसल ६६ लाख गांठों की थी । इतनी उपज पहले कभी नहीं हुई । रुई का यह बड़ा हुआ उत्पादन मुख्यतः सतारजनक मानसून वर्षों के कारण हुआ (८० प्रतिशत रुई की फसल वर्षा पापित थी) । कृषि मन्त्रालय द्वारा शुरू की गई गहन रुई उत्पादन योजना का भी उत्पादन की वृद्धि में योगदान रहा । चालू रुई मौसम अर्थात् सितम्बर, ७० अगस्त ७३ में रुई का उत्पादन उतना अधिक नहीं हुआ जितना कि गत रुई मौसम में हुआ था क्योंकि कई रुई उगाए जाने वाले क्षेत्रों में सूखा पड गया । तथापि ६२ लाख गांठों का अनुमान है । इस मौसम का फसल की एक मुख्य विशेषता यह है कि नन्वे रंगे वाला रुई का उत्पादन गत मौसम के उत्पादन के मुकाबले ५ लाख गांठों अधिक होने की सम्भावना है । फिर भी मध्यम तथा छोटे रंगे की रुई के उत्पादन के उस रुद तक कम होने का सम्भावना है ।

वस्त्र मशीनों पूरा मशीनों का उत्पादन करने वाले वस्त्र मशीन उद्योग की वार्षिक सत्थापित क्षमता लगभग ५५ करोड़ रुपये है जबकि उसकी लागत में प्राप्त क्षमता लगभग ६७ करोड़ रुपये है ।

(ग) नीदरलड एटीलस	० ०८	० १	० ०४
(घ) त्रिनिडाड तथा टोबागो	० ५	० ८	० ३
(ङ) विडवड द्वीप	० ३	० ३	० २
५ पूर्व यूरोपीय देश	३६२४	३४३५	२२६६
(क) ब्रुलगरिया	६ ६	१५५	१० ३
(ख) चैकोस्लोवाकिया	२६५	३०५	२३ ३
(ग) जर्मन लोकतन्त्रीय गणराज्य	२४६	१८०	६ ७
(घ) हंगरी	१३ ८	१५५	६ ५
(ङ) पोलड	२२ १	१६६	१६ ७
(च) रूमानिया	१३ ७	११ १	५ १
(छ) सोवियत सघ	२०६६	२०८ ७	१४६ ०
(ज) युगोस्लाविया	३६४	२४४	६ १
कुल निर्यात (पुननिर्यात को छोडकर)	१४३५२	१६०६६	६१८६

प्रमुख वस्तुओं का आयात-निर्यात

चाय वर्ष १९७० के दौरान भारत में गत वर्ष की उसी अवधि के दौरान ४३ ३३ करोड़ कि० ग्रा० की तुलना में ६५ १६ करोड़ कि० ग्रा० चाय का उत्पादन हुआ। १९७१ में ४० ३३ करोड़ कि० ग्रा० के वास्तविक उत्पादन की तुलना में १९७० वर्ष के लिए चाय का उत्पादन लगभग ६४ ६ करोड़ कि० ग्रा० निर्धारित किया गया था।

वर्ष १९७२ के दौरान २०७८ ६ लाख कि० ग्रा० चाय का निर्यात किया गया जबकि वर्ष १९७१ के दौरान २०६० ७ लाख कि० ग्रा० का निर्यात किया था। वर्ष १९७० के दौरान निर्यात का मूल्य के रूप में १५६ ५६ करोड़ ₹० बसूल हुए जबकि वर्ष १९७१ के दौरान १५५ ३४ करोड़ ₹० बसूल हुए थे। चाय का इकाई मूल्य वर्ष १९७१ में ७ ५६ रुपये प्रति कि० ग्रा० की तुलना में वर्ष १९७० में ७ ५५ ₹० प्रति कि० ग्रा० मामूली में अधिक था। पूर्व यूरोपीय देशों त्रिनिडाड तथा टोबागो, नीदरलड, पश्चिम जर्मनी, सोवियत संघ, गणराज्य, मूडान, ट्यूनीशिया, मडगा, अरब तथा पारस की खाड़ी के देश शामिल हैं। का हमारे निर्यात में पर्याप्त वृद्धि हुई है। तथापि म० रा० प्रमरीका, कनाडा, ब्रिटेन, भारत, तथा अफगानिस्तान में भारतीय चाय के आयात में गिरावट आई।

बाकी वर्ष १९७१ ७२ के दौरान ६८ ००० म० टन काफी का उत्पादन हुआ और वर्ष १९७० ७१ के दौरान ८७ ००० म० टन उत्पादन हुआ। बांधा का फसल पर पूरा नियंत्रण समय-समय पर बांधा प्रभाव पड़ता है।

बांधा के निर्यात एक प्रकार के घनगत घनराश्ट्रीय रूप में विनियमित किए जाते हैं। १९७१ ७० (अक्टूबर १९७१ में सितम्बर १९७०) के काफी वर्ष के लिए भारत का आवृत्ति निर्यात बांधा ६०१ ० म० टन था। एक मात्र बांधा का निर्यात कर लिया गया। यह निर्यात १६ ०६ म० टन के हुए और एक प्रकार ६० १०६ म० टन का कुल निर्यात किया गया जा कि एक रिहाई है।

इलायची इलायची की खेती मुख्य रूप से तीन राज्या केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में होती है।

इलायची के उत्पादन में प्रत्येक वर्ष अत्यधिक उतार चढ़ाव होता है जो मौसम, विशेषतः वर्षा और उसके वितरण के तरीके पर निर्भर करता है। १९७०-७१ में हुए ३१७० म० टन उत्पादन की तुलना में १९७१-७२ के दौरान ३७८५ म० टन इलायची का उत्पादन हुआ। १९७२-७३ (फसल वर्ष) में २६०० म० टन इलायची का उत्पादन हुआ।

वित्तीय वर्ष १९७१-७२ के दौरान २१४७ म० टन इलायची का निर्यात हुआ जो पिछले वर्षों की तुलना में अधिक था और इस प्रकार १९७०-७१ में हुए १७०५ म० टन के निर्यात की तुलना में ४४२ म० टन की वृद्धि हुई। तथापि निर्यात प्रायः ३१९ करोड़ रु० की कमी हुई अर्थात् १९७०-७१ में हुई ११०२ करोड़ रु० की प्रायः की तुलना में ८०३ करोड़ रुपये की प्रायः हुई।

उपलब्ध अनुमानों के अनुसार १ जनवरी से ३१ अक्टूबर १९७३ की अवधि में ५७४ करोड़ रुपये मूल्य की १५६२ म० टन इलायची का निर्यात हुआ जबकि इसमें पहले वर्ष की वसी अवधि में ७८३ करोड़ रुपये मूल्य की १५६८ म० टन इलायची का निर्यात हुआ था।

भारतीय इलायची के प्रमुख बाजार ये हैं कुवैत (३२ प्रतिशत) मस्की अरब (२० प्रतिशत) माक्सिको (८ प्रतिशत) बहरीन (८ प्रतिशत), जापान (४ प्रतिशत) एवं कतार (३ प्रतिशत)।

सूती वस्त्र सूती वस्त्रों के निर्यातों में जिनमें गत वर्ष गिरावट आ गई थी चालू वर्ष के दौरान उच्चमूला प्रवृत्ति आई। सूती वस्त्रों की विभिन्न किस्मों के लिए, जिनमें सूत शामिल है निर्यात लक्ष्य वर्ष १९७२-७३ के रई संपरिवर्तन मौदे के अन्तर्गत साद्विधत संघ को किये जाने वाले निर्यातों के अलावा १२५५० टायरों का रखा गया था जिसमें १८५० लाख रु० की निर्यात प्रायः होगी। जनवरी-नवम्बर, १९७२ में सूती वस्त्रों के कुल निर्यात, १९७१ की उतनी ही अवधि में केवल ६६५१ लाख रु० के निर्यातों की तुलना में १२८७२ लाख रु० के हुए। यह ३१२१ लाख रु० की उल्लेखनीय वृद्धि की द्योतक है। इसमें गत वर्ष की उतनी ही अवधि के निर्यातों के अलावा की तुलना में ३३ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

कपास गत रई मौसम (मिनम्बर, १९७१—अगस्त १९७२) में रई की फसल ६६ लाख गांठों की थी। इनकी उपज पहले वर्षों की तुलना में कम हुई। रई का यह बढ़ा हुआ उत्पादन मुख्यतः सततपत्रक मानसून वर्षों के कारण हुआ (८० प्रतिशत रई की फसल वर्षा पीछे की थी)। कृषि मंत्रालय द्वारा शुरू की गई गहन रई उत्पादन योजना का भी उत्पादन की वृद्धि में योगदान रहा। चालू रई मौसम अर्थात् मिनम्बर ७२ अगस्त ७३ में रई का उत्पादन उतना अधिक नहीं हुआ जितना कि गत रई मौसम में हुआ था क्योंकि कई रई उगाने वाले क्षेत्रों में सूखा पड़ गया। तथापि ६२ लाख गांठों हानि का अनुमान है। इस मौसम का फसल की एक मुख्य विशेषता यह है कि लम्बे रंग वाली रई का उत्पादन गत मौसम के उत्पादन के मुकाबले ५ लाख गांठों अधिक हानि का सम्भावना है। फिर भी, मध्यम तथा छोटे रंगों की रई के उत्पादन में उस हद तक कम होने का सम्भावना है।

वस्त्र मशीनें पूरा मशीनों का उत्पादन करने वाले वस्त्र मशीन उद्योग की वार्षिक सम्पूर्ण क्षमता लगभग ४५ करोड़ रुपये है जबकि उसकी लाइसेंस प्राप्त क्षमता लगभग ६७ करोड़ रुपये है।

वर्ष १९७१ के शीरा प्रमुख घन मशीन विनिर्माताओं व पूरा मशीन व उपकरण का मूल्य लगभग ३६ ०८ करोड़ ६० लाख। जनवरी गिम्बर १९७० व शीरा घट उपकरण २० ६३ करोड़ रुपय का हुआ। वर्ष १९७० व शीरा पूरा मशीन व उपकरण का पूर्वनिर्माता मूल्य २७ २० करोड़ रुपय है। वर्ष १९७१ व शीरा फान्सू पुर्जा तथा महायुक्त सामान का उपकरण ३० ३८ करोड़ रुपय मूल्य का हुआ। जापान गिम्बर १९७० व शीरा उपकरण २४ ७६ करोड़ रुपय मूल्य का हुआ था।

वर्ष १९७० ७१ व शीरा घट मशीन फालतू पुर्जा तथा महायुक्त सामान का निर्यात ७११ ८५ लाख ८० मूल्य का हुआ था। वर्ष १९७१ ७२ व शीरा ६०४ ६६ लाख रुपय मूल्य व निर्यात हुए।

पटसन उद्योग १९७१ की तुलना में १९७२ का वर्ष भारतीय पटसन उद्योग व निर्यात एक कठिनाई का वर्ष मानित हुआ है। कम पटसन तथा कच्चा पटसन की बढ़ती हुई मांगता में कच्चा पटसन की सप्लाई करने में नई समस्याएँ पैदा हो गई हैं। इसका साथ ही भारतीय पटसन निर्मित मान व मशिनपेटा में तथा बगलादेश व उपकरण से कठोर प्रतिযোগिता करना पड़ रही है।

पटसन की वस्तुओं का उत्पादन जनवरी-नवम्बर १९७२ व शीरा ११ ५३ लाख टन था जो कि १९७१ की इसी अवधि व आकड़ा में क्वल कुछ ही अधिक था। जबकि हैजियम तथा सविन का उत्पादन बढ़ा कालीन घस्तर व उत्पादन में मुख्य रूप से निर्यात की कम मांग व कारण कमी आई। पटसन मिला का विजला का सप्लाई में बार-बार पड़ने वाला बाधाएँ उत्पादन व मांग में एक मुख्य र्वावट सिद्ध होती रही है।

जनवरी नवम्बर, १९७२ की अवधि व दौरान पटसन की वस्तुओं व निर्यात ४ ६५ लाख ८० व थे जो कि १९७१ की इसी अवधि व दौरान किये गये निर्यात से लगभग १७ प्रतिशत कम थे। प्रायः सभी वस्तुओं व निर्यात में कमी आई लेकिन कालीन घस्तर व निर्यात में अधिकतम गिरावट (३१ ६ प्रतिशत) आई। पटसन की वस्तुओं के निर्यात में गिरावट व मुख्य कारण है बगलादेश से प्रतियोगिता का फिर से पैदा होना भारतीय पटसन की वस्तुओं की उच्च कीमत तथा सश्लिष्टा से बढ़ती हुआ घटता।

लोह अयस्क विकास में बाधा डालने वाले अंतर्राष्ट्रीय कारणों तथा आंतरिक कठिनाइयों के बावजूद निगम वर्ष १९७१ ७२ के दौरान लोह अयस्क के निर्यात में ७२ करोड़ रुपय व स्तर का बचाव रख सका। १९७३ ७४ के दौरान लोह अयस्क के निर्यात बढ़ाने के लिए अयस्क प्रयत्न किये जा रहे हैं। अपने प्रयासों के फलस्वरूप निगम ने पहले ही ताईवान तथा दक्षिण कारिया के नये उभरने वाले बाजारों में पाव जमा लिए है। मौके पर की गई सविदाओं व प्रतिरिक्त ताईवान को जनवरी १९७३ से ५ वर्षों के दौरान ११ ६ लाख मे० टन लोह अयस्क सप्लाई करने के लिए दीघकालीन करार किया गया है। इसी तरह १९७३ ७७ की ५ वर्षों की अवधि के दौरान दक्षिण कारिया का ११ ४ लाख मे० टन लोह अयस्क सप्लाई करने के लिए भी एक सविदा की गई है।

मगनीज अयस्क स्वज नहर के बराबर बढ़ पड़े रहने जापान इस्पात उद्योग द्वारा खरीद में कमी, आंतरिक रेल यातायात में कठिनाइयों तथा मगनीज अयस्क के उच्चतर अंश की देशी मांग बढ़ जाने व कारण इस अंश की सप्लाई में कमी के कारण मगनीज अयस्क के निर्यात भी गत वर्ष १४ करोड़ रुपय व निर्यात से घटकर १९७१ ७२ के दौरान ११ करोड़ रुपय के हुए। तथापि, निगम इस वर्ष व दौरान लोह अयस्क व निर्यात में वृद्धि करने का भरसक प्रयत्न कर रहा

है। इस वष पहली बार निगम न चैंकोस्लोवाकिया तथा दक्षिण यारिया के बाजारा म फरोजीनम ग्रेड का मगनीज अयस्क (जिसम मगनीज का अंश कम है) और पूव यूरोपीय बाजार म उच्च ग्रेड मगनीज अयस्क (उच्च फास्फोरस वाला) भेजा है उच्च फास्फोरस वाले उच्च ग्रेड मगनीज अयस्क की देश म खपत नही होती।

कोयला भारतीय कोयले के परम्परागत बाजारा अर्थात् श्रीलका तथा बर्मा म रेला का डीजनीकरण हा जान के कारण भारत से कोयला उठाना कम कर दिया है जिसके परिणामस्वरूप निगम द्वारा कोयला का निर्यात गत वष के ४ करोड रुपये से घट कर १९७१ ७२ मे २ कराड रुपये रह गया। बंगला देश के स्वतंत्र होने से इस परम्परागत बाजार म कोयला के निर्यात काफी मात्रा मे फिर स होने लगे हैं। निगम न बंगला देश को सहायता कार्यक्रम के अंतगत आरभ म ५० हजार मे० टन कोयला सप्लाई किया। भारत और बंगलादेश के बीच मपन हुई व्यापार योजना म खनिज तथा धातु व्यापार निगम द्वारा २८ माघ १९७२ से लेकर बारह महीने की अवधि मे अय चीजा के साथ-साथ ४ करोड रुपये मूल्य के कोयले के निर्यात करने की व्यवस्था है। इस व्यापार योजना के अनुसरण म निगम ने ३५ करोड रुपये मूल्य के ४६००० मे० टन कोयला सप्लाई करने के लिए एक सविदा की है।

अन्नक हान मे निगम ने अन्नक के निर्यात के लिए जमन लोकतन्त्रीय गणराज्य के साथ एक तीन वर्षीय करार किया है। इस करार के अंतगत वष १९७३ के दौरान निर्यात किए जाने वाले अन्नक का मूल्य लगभग १ कराड रुपये है। पहले की गई सविदाओं के आधार पर अप्रैल जून १९७२ के दौरान भूतपूर्व निर्यातका द्वारा किए गए २ कराड रुपये के निर्यात के अतिरिक्त १९७२ ७३ के दौरान निगम के अन्नक के निर्यात १० करोड रुपये के होने की सम्भावना है।

इस्पात इस्पात की वस्तुओं का व्यापार १९७१ ७२ म बढ कर २० २३ करोड रुपये का हुआ जबकि पिछले वष १९ ६३ कराड रुपये का ही व्यापार हुआ था। १९७२ ७३ म नई वस्तुओं के मार्गीकरण के फलस्वरूप इस्पात का व्यापार ३५ करोड रुपये का होने की सम्भावना है।

उबरक १९७१ ७२ म उबरक ग्रुप का वस्तुओं का व्यापार लगभग ५९ करोड रुपये का हुआ जबकि पिछले वष ५८ करोड रुपये का हुआ था। १९७३ ७४ म इस ग्रुप की वस्तुओं का व्यापार ८० करोड रुपये का होने की सम्भावना है।

पहली छमाही में घाटा

अधिकृत आंकड़ों के अनुसार चालू वित्तीय वष के पूवाड मे भारत के आयात निर्यात सन्तुलन म ४३ कराड र का घाटा रहा है जबकि पिछले वष के पूवाड म व्यापार सन्तुलन म ६६ करोड र० का लाभ रहा।

व्यापार सन्तुलन म यह घाटा अनाज खाद, पेट्रोलियम तथा अलौह धातुओं के अधिक आयात से हुआ। १९७३ ७४ की पहली छमाही म भारत का कुल निर्यात व्यापार १०७५ करोड र० का रहा। यह १९७२ ७३ के पूवाड म हुए निर्यात से १५९ करोड र० अर्थात् १७ प्रतिशत अधिक था। परन्तु इसके साथ ही चालू वित्तीय वष के पूवाड म गत वष के इसी काल म हुए आयात से ३१ प्रतिशत अधिक आयात हुआ और आयात निर्यात सन्तुलन मे ४३ करोड र का उन्न घाटा हुआ।

१९७२ ७३ मे निर्यात व्यापार में हुई भारी बढि चमडा सूती वपडा दस्तकारी की

वस्तुमा तेल और छल तथा तम्बाकू की विशेषा म मांग बढ़ जाने के कारण हुई। दग व घनावा बगलादेश से १५८ करोड ६० का व्यापार भी इसका कारण रहा।

१९७२ ७३ म कुन १९६१ करोड ६० का निर्यात हुआ। १९७१ ७२ म हुए निर्यात म यह २२ प्रतिशत घटवा ३५३ करोड ६० अधिक था। इसका विपरीत १९७२ ७३ म हुआ कुन १७६६ ०४ करोड ६० का आयात १९७१ ७२ म हुए १८२६५६ करोड ६० का आयात से १५ प्रतिशत कम रहा। १९७२ ७३ म गहू, कपास तल चिननाई दवाइया, लाहा, इम्पान आदि कम आयात हुए।



राजस्थान आवासन बोर्ड : जयपुर

राजस्थान राज्य म आवासन स्थाना की आवश्यकता की व्यवस्था और पूर्ति के लिये किये जाने वाले उपाया को उपलब्ध करने के लिये राज्य सरकार द्वारा राजस्थान अधिनियम सं० ४ १९७० के अन्तर्गत स्थापित।

उपलब्धिया

पञ्जीकरण योजनाओं मे पञ्जीकृत

	वष	आवेदक
प्रथम	१९७१	८४२
द्वितीय	१९७२	५४२८
तृतीय	१९७३	२५०००

आवृत्त किये

प्रथम	जुलाई ७२	६४०
द्वितीय	अप्रैल ७३	९७१
तृतीय	मकनूबर, ७३	१४३९

आयोजन

बोर्ड की कालोनिया म
पाक सडकें, स्कूल अस्पताल बाजार
बस स्टैण्ड आदि

* जनता एव आर्थिक दृष्टि से
कमजोर वर्ग के नागरिकों के लिए
विशेषरूप से निर्मित गाँवों गह
* लागत सिर्फ ३४००)

आमार

आवासन मण्डल की आवासीय योजनाओं में सहयोग के लिये आमार।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Dai-ichi Karkaria Private Ltd.

Manufacturers of Nonionic, Cationic and Anionic
Surface Active Agents, Emulsifiers
and Cross Linking Agents

Liberty Building, New Marine Lines
BOMBAY-400020

Phone 293633
297224

Grams NONIONIC

Telex UNIFERO 011-3222

SHOBHA'S

Specialist in



**Ladies &
Children Wear**



5 E, Air Conditioned Market,
Shakespeare Sarani,
CALCUTTA-16

बजट १९७३-७४

वित्तमंत्री श्री चहाण ने २८ फरवरी १९७३ को ससद में १९७३-७४ का बजट पेश किया। बजट में देश की जनता पर २६२ करोड़ रुपये के नये कर लगाये गये। आयकर और निगमकर की दर बिल्कुल छोटी छोड़ दी गयी हैं लेकिन मिगरट, पेट्रोल सूती कपड़े कृत्रिम रेशे के कपड़े, बिजली से चलन वाले घरेलू उपकरण के उपकरण लाहा अल्यू-मानियम फ्रान्च आनक वस्तुआ पर उत्पादन शुल्क बढ़ाकर ११८ करोड़ रुपये उगाहन की तजवीज की गयी और भीमाकरा से १५६ करोड़ रुपये की। प्रत्यक्ष करा से केवल १८६ करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होगी।

२६२ करोड़ रुपये के अतिरिक्त करा में से ४२ करोड़ रुपये राज्या का अपन हिस्से के रूप में मिनेगे और जेप राशि ३३५ करोड़ रुपये के घाटे को घटा कर ६५ करोड़ रुपये पर बाध देगी। इस तरह यह बजट हाल के वर्षों में सबसे कम घाटे का बजट है। लेकिन हम बात की कोर्ट गारटी नहीं है कि घाटे की राशि बढ़ेगी नहीं बल्कि जसा वित्त मंत्री ने स्वीकार किया सरकार की कमचारिया के वेतन आयोग की रपट अभी भी आ सकती है। जब यह रपट आ जायेगी तो सरकार या तो नोट छाप कर या नये कर लगा कर अधिकतर वेतन या सुविधाओं की व्यवस्था करगी।

इस बजट में एक खूबिया है। खूबिया में आपातकालीन सिचार्ड कार्यक्रम के वास्ते राज्या का दन के लिए १५० करोड़ रुपये बीज उबरक आदि के लिए बजट देने के वास्ते १०० करोड़ रुपये और प्राकृतिक विपणाआ के समय ७५ करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है। शिथिलता का राजगार दिलाने के लिए १०० करोड़ रुपये रखे गये हैं। इसके अलावा एम. दा. बर्षों को भी आयकर की लपट में लिया गया है जा दूसरी आमदनी को खेती की आमदनी बता कर काना धन भण्डे किया करते थे या अविभक्त हिंदू कुटुंब का मत्स्य होन के कारण अतिरिक्त छूट प्राप्त कर लिया करते थे।

बजट की मध्य में बड़ा बात यह है कि इस दफा भी अप्रत्यक्ष करा पर वित्त मंत्री महान्य निभर रहे हैं। मिगरेट कृषीम के कपड़े और घरेलू उपकरण के बिजली के सामान पर कर लगाना ता समय में आना है लेकिन १६५ लिटर तक के रेफरिजरटरा का करवडि में मुक्त रखना समझ में नहीं आता।

वित्त मंत्री की नमाम कीजिशा के बावु विक्रम कार्यों के लिए ३६५ करोड़ रुपये ही बचे हैं जब कि पिछले वर्ष दन में दूसरी खम निश्चिन का गयी था। इसका अभाव महंगाई

के कारण वह १ जून १९०० तक मिला था उसका लिए अब ११४ १३० रुपय मध्य करने पड़ेगे। विभाग का जो वित्त अधिभार कम म करने का एक मुख्य कारण यह भी है कि देश भर में वार्षिक म मागकर प्रशासनिक और गैर-वित्त व्यय में भी बचत कर ली जा रही है।

अविभक्त पुटुब और कृषि आय

प्रथम १ जून के समय १ म १९०१ ०६ के बजट में विभाग का बजट था—जिसमें उन मांगों का हटाया गया है जिन्हें का धन मांगों के हटाया गये भी शामिल है—और जो हिंदू अविभक्त पुटुब का गण्य होवे का जो अविभक्त पुटुब का मांग म मूलाका कम कर देना है।

प्रथम कर जो राज समिति को प्राप्त होगा १ जो १९०१ म ११ मकर का मिला गया था प्रथम कर का ठा १ म सामूहिक परिवार करने का गुणाय लिया था और मांग ११ का ११ का समानर धर्मधरम्या का काट छाट के धन उपाय गुणाय है। भारत सरकार ने का लाभ म युनियनो परिवार और वान धन मयधी गुणाय पर विचार म ११ लिया ११ धन ११ लिया ११ अविभक्त पुटुब का मांग मुविधा ममात्त कर का गुणाय वांशु मर्मित का ११ का और कृषि आय का गैर कृषि आय म शामिल कर के कर लगान का गुणाय राज समिति का था।

इन बातों को ध्यान म रखते हुए कि कर म यमन के लिए हिंदू अविभक्त पुटुब मस्या का व्यापक रूप म प्रयाग लिया जाता है सरकार का प्रभाव है कि इन मस्या के माध्यम म प्राप्त हान धन कर के फायदा का सामित किया जाय।

जिस अविभक्त पुटुब की दशा म जिनके एक या अधिभार मस्या की स्वयं रूप म पुटुब आय ५००० रुपय म अधिभार है उम के लिए अधिभार ममत एक धन कर दर सूची बनायी गया है। इस के अनुसार ५००० रु पर कोई कर नहीं देना होगा। ६००० पर १६६ रुपय ०५०० पर ४८६ रु १०००० पर ६७८ रु और इसी तरह ५ माय की धामनी पर ६५८ ८५० रुपय कर लगेगा।

इस विपरीत ऐसे हिंदू अविभक्त पुटुबों के लिए जिन म स्वयं रूप म ५००० रुपय म अधिभार आय वाता कोई मदद नहीं है अधिभार सहित एक धन दर सूची बनायी गयी है। ऐसे परिवारों का स्वभावतया कुछ कम कर देना होगा। ६००० रुपय की धामनी पर ११० रु ही कर लगेगा। उपरांत वर्ग के मुवाबले म कर की राशि ८६ रु कम है। ७५०० पर ६८६ का जगह २७५ रु १०००० की धामनी पर ६७८ की जगह कुल ५५० रुपया कर लगाया जायगा। इस मामले म अंतर की राशि ४२८ रुपया बठनी है।

अविभक्त पुटुबों के सदस्या की अजन क्षमताओं को ध्यान म रखकर यह व्यवस्था की गयी है। यह नहीं कहा जा सकता कि बजट की व्यवस्थाएँ अविभक्त पुटुब पर चोट कर रही हैं।

कृषि धन और आय कराधान समिति की जो राज समिति के नाम म अधिभार प्रसिद्ध है एक प्रमुख सिफारिश यह थी कि करदाता का हान वाली कृषि आय का इतर धन स हान वाला आय म जोड़ कर इस तरह कर लगाना चाहिए कि माना कृष्यतर आय की राशि आय के उच्च स्तरा म रखी गयी हो। इन आमदनिया का एकीकरण तभी प्रभावी होगा जब किसी करदाता की कृषि म भिन्न कराधाय आय 'यूनितम छूट सीमा से अधिभार' हो। राज समिति के अनुसार धामनिया का जाड़ने की यह रीति बतायी गयी थी (१) कृष्यतर आय म स अनुज्ञात प्रारंभिक छूट (२) कृषि आय और (३) कृष्यतर आय का अतिशय। वित्त विधेयक म यही रीति स्वीकार कर ली है। विधेयक म कहा गया है कि कृष्यतर आय के प्रथम ५००० रुपय पर कर नहीं लगेगा इससे बाद

कृषि धाय रखी जायेगी, लेकिन उस पर कोई कर नहीं लगेगा और फिर कृषि स डतर आय का वह भाग जो ५००० से अधिक है, इस के वाट जाडा जायेगा । आयकर इसी राशि पर लगेगा । जाहिर है कि बीच म कृषि आय जुटने से अप्येतर आय का अतिशेष अधिक कर देने सोपान म पहुँच जायेगा ।

आयकरदाता पर इसका क्या असर पडेगा इसे स्पष्ट कर देना आवश्यक है । ५ हजार पर तो कर देय है ही नहीं, इसलिए ६ हजार रुपया वार्षिक ग्रामदनी वाले व्यक्ति हिंदू अविभक्त कुटुंब अरजिस्ट्रीकृत फम व्यक्ति या का सगम व्यक्ति निकाय को जो कर देना पडेगा उस का उलहरण है । यदि किसी की आय ६ हजार रुपये है और उसकी कृषि आय शून्य है वहा उसे सामान्य रूप म ११० रुपये कर देना होगा । ऐसे व्यक्ति का यदि ५ हजार रुपये की ग्रामदनी कृषि क्षेत्र म है ता उसे ११० के म्यान पर १८७ रुपये कर देना होगा । यदि खेती स उस की शुद्ध आय १० हजार तक हुई ता करमुक्त कृष्येतर आय का अतिशेष इतने ऊचे सोपान म पहुँच जायेगा कि उस ३३० रुपये कर अन्त करना पडेगा ।

कृषि आय पर कट्टर सरकार कर नहीं लगा सकती मगर इतना ता कर ही सकती है कि सामान्य करलता यदि यथेष्ट कृषि आय से लाभचित हा कर अधिक कर द सकता है—या कृष्येतर आय का कृषि आय बना कर कर वचना कर सकता है उस मे अधिक राशि कर के रूप म चमू न मक । इसम कर जगत की एक विमगति ता दूर हानी ही है ।

बजट एक नजर में

(करोड रु म)	१९७० ७३	१९७२ ७३	१९७३ ७४
राजस्व	बजट	सशोधित	बजट
प्राप्तिया	४४६७	४६२८	४८३१
			(+) २५०
व्यय	४१२४	४५६१	४७५२
	(+) ३४३	(+) ३७	(+) ७६
			(+) ०५०

	पूजी		
प्राप्तिया	२,०६५	२,६५२	२,४६०
व्यय	२,६८६	३,२३६	२,८७६
	(-) ५६४	(-) ५८७	(-) ४१६

कुन घाटा	(-) २५१	(-) ५७०	(-) २३८
			(+) ०५०
शुद्ध घाटा			८५

(+ बजट प्रस्तावा का असर (इसम राज्या का हिस्सा शामिल नहीं है।)

प्रतिरक्षा पर कमी

१९७० ७४ व बजट म प्रतिरक्षा व्यय म लगातार कई वर्षों के बाद पहली बार कमी

(नाममात्र की ही सही) दिखायी गयी है। १९७२ ७३ म प्रतिरक्षा पर कुल व्यय १ ७३२ ०१ करोड़ रु हुआ था जो बजट म प्रावधान से १६२ करोड़ रु अधिक था। १९७३ ७४ व बजट म प्रतिरक्षा तयारी पर खच करने के लिए १ ७२६ ६१ करोड़ रु का प्रावधान किया गया है। पाकिस्तान की ओर से खतरे का साया वित्तमन्त्री के बजट भाषण म भी प्रतिबिम्बित हुआ। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की सैनिक तयारी को देखते हुए प्रतिरक्षा व्यय म कटौती नहीं की जा सकती है। प्रतिरक्षा पर कुल बजट का लगभग एक चौथाई खच करने का दूसरा कारण यह भी है कि १९६८ ७४ के लिए जो प्रतिरक्षा योजना चल रही है उसने लक्ष्य की पुष्टि के लिए इतना खच करना अनिवार्य है।

भारत के स्वाधीन होते ही यह विचार व्यक्त किया गया था कि शक्ति-संतुलन के कारण भारत पर विदेशी हमले की आशंका नहीं है। १९४७ म देश के विभाजन के साथ ही यह धारणा निमूल होने लगी थी किंतु १९६२ के चीनी आक्रमण ने तो स्थिति को एकबारगी ही पलट दिया। देश को दियास्वप्न से जग कर फिर अपनी प्रतिरक्षा की तयारी म जुट जाना पडा। पिछले दस वष म देश ने पाकिस्तान से जो लडाइया लड़ी और जीती यह प्रतिरक्षा व्यवस्था को उत्तरोत्तर दृढ बनाने से ही संभव हो सका। यह सच है कि आकार की दृष्टि से भारतीय सेना का विश्व म चौथा स्थान है (तीन अन्य हैं अमेरिका, सोवियत संघ और चीन) किंतु उस के ऊपर जिम्मेवारी भी बहुत बड़ी है। उस देश की १५००० कि मी थल सीमा और ५ ७०० कि मी जल सीमा की रक्षा का उत्तरदायित्व निभाना पड रहा है। इसके लिए पूव सधम वह तभी हो सकती है जब कि उसका सबसे-मुखी विकास किया जाये। इस आवश्यकता को देखते हुए निवट भविष्य म प्रतिरक्षा व्यय में कटौती की कोई गुंजाइश नजर नहीं आती है।

बजट म इस आवश्यकता का न्युट्रिगल रखत हुए ही प्रतिरक्षा व्यय का प्रावधान किया गया है। प्रतिरक्षा तयारी के लिए निर्धारित राशि का सेना व तीना अंग के विकास पर जिस अनुपात म व्यय किया जायेगा उस से भी इस का आभास मिल जाता है। व्यवस्था के अनुसार वायुसेना तथा नौसेना पर पिछले वष की तुलना म अधिक खच होगा जब कि थलसेना के लिए पूव वष से कम धनराशि का प्रावधान किया गया है।

वायुसेना पर १९७२ ७३ में २६६ ६४ करोड़ रु खच किये गये जबकि १९७३ ७४ म ३३० ८७ करोड़ रु व्यय होंगे। यानी चालू वष की तुलना में अगले वष ३१ २३ करोड़ रु अतिरिक्त खच होंगे। इसी प्रकार नौसेना की तयारी के लिए १५ २६ करोड़ रु की अतिरिक्त व्यवस्था की गयी है। नौसेना पर १९७२ ७३ म ७२ १५ करोड़ रु खच किये गये जबकि १९७३ ७४ के लिए ८७ ४१ करोड़ रु का प्रावधान है। थलसेना के लिए निर्धारित राशि म ४६ ४२ करोड़ रु की कमी की गयी है। १९७२ ७३ म थल सेना पर १ ०७५ करोड़ रु खच किया गया था जबकि १९७३ ७४ व लिए १ ०२५ करोड़ रु का ही प्रावधान है।

वायुसेना पर जो अतिरिक्त व्यय होगा उस का एक बड़ा हिस्सा अर्थात् १७ ५० करोड़ रु मडार पर खच किया जायेगा। मिस २१ का उत्पादन हाल ही म आरंभ हुआ है। निचार्न पर उड़ने वाले विमानों के लिए भारत ब्रिटेन से प्रक्षेपास्त्र भी खरीदना चाहता है। इस प्रकार १९७३ ७४ म मडार पर कुल २१५ ६५ करोड़ रु व्यय का अनुमान है। आगामी वष 'विशेष परियोजनाओं' पर वायुसेना २३ ३४ करोड़ रु खच करने वाली है जबकि चालू वित्त वष के लिए यह राशि कुल ८ ४७ करोड़ रु और १९७१ ७२ म ८ ३६ करोड़ रु ही थी। 'विशेष परियोजना' की म १९७१ ७२ म ही अस्तित्व म आयी थी। इन म पर दूसरे वष म लगभग

दुगना और तीसरे म लगभग छह गुने व्यय का प्रावधान याजना के महत्व को स्पष्ट कर देना है। ऐसा अनुमान है कि 'विशेष परियोजना के अंतर्गत राडार व्यवस्था को, विशेषकर उत्तरी सीमा पर सुधारन की योजना है। १९६२ के आक्रमण के बाद उत्तरी सीमा पर जा सचल राडार इकाइया स्थापित की गयी थी उन के स्थान पर अब ऐसी राडार व्यवस्था करने की योजना है जिस स हिमालय पार की गतिविधिया पर नजर रखी जा सके और निचाई पर उड़ने वाले विमाना का पता लगाया जा सक। पहले इस परियोजना म अमेरिका निर्मित उपकरण के प्रयोग की याजना थी परंतु जब यह स भव नहीं हो पाया ता अब कल्पिक प्राविधि के प्रयोग का निणय किया गया है।

वायुसेना की तरह ही नौसेना क विकास के लिए भी अधिक धनराशि 'भंडार पर ही खच की जायेगी। नौसेना के बडे का इधर काफी विस्तार हुआ है जिस का कारण जहाजा की खरीद और स्वदेश निर्मित जहाजा की उपलब्धि रहा है। बडे के विस्तार के साथ ही बजट गति मे वद्धि होना स्वाभाविक ही है। नौसेना म 'भंडार' पर ४५.६६ करोड रु खच किये जायेंगे।

जहा तक थलसेना का प्रश्न है उस के 'भंडार पर हान वाले व्यय म चालू वित्त वष की तुलना म ३२.३५ कराड रु की कमी होगी। इस मद पर १९७३ ७४ म कुल २७३.५१ कराड रु ही खच हाये। इस म यह संकेत मित्रता है कि पाकिस्तान मे युद्ध के दौरान थलसेना के भंडार का जा क्षति पहुँची थी वह लगभग पूरी हो गयी है। इसी प्रकार सेना के शोध तथा विकास सगठन पर भी १९७३ ७४ म १९७२ ७३ के मुकाबले ६.८५ रु कम खच किये जायेंगे।

विज्ञान और प्राविधि पर अधिक

नये बजट मे प्रतिरक्षा तयारी के लिए किये गये कम प्रावधान के विपरीत विज्ञान तथा प्राविधि के विकास के लिए अधिक धन का प्रावधान किया गया है। भारत तथा विकसित देशा क बीच प्राविधि के क्षेत्र म जो अंतर विद्यमान है उसे कम करने की दृष्टि स कुछ ऐसे क्षेत्रा का चुनाव किया गया है जिन के विकास के लिए विशेष सहायता प्रदान की जायेगी। स्वदेशी प्राविधि का प्रासाहन देने की दृष्टि म बजट म शोध और विकास कार्यों के लिए अधिक धन की व्यवस्था की गयी है। इसी उद्देश्य स साथ प्रयोगशालाओं को शोध तथा विकास कार्यों के लिए उद्योगा स जा धन राशि प्राप्त हानी है उम के एक तिहाई को करमुक्त भी रखा गया है। शोध कमचारिया पर होने वाले व्यय के बारे म भी नये उद्योगा को विशेष रियासतें दा गयी हैं।

विज्ञान तथा प्राविधि विभाग के सचिवालय पर होने वाल व्यय के लिए १९७३ ७४ के बजट म जा प्रावधान किया गया है वह चालू वित्त वष से ४ करोड रु अधिक है किंतु वित्तिक तथा औद्योगिक शोध परिषद (सी एस आई आर) के लिए निर्धारित राशि म कुछ कमी की गयी है। १९७२ ७३ क २६.६६ करोड रु क मुकाबल १९७३ ७४ क लिए २४.२३ करोड रु की व्यवस्था की गयी है। इस के विपरीत भारतीय सर्वेक्षण विभाग का चालू वित्त वष से १.६ करोड रु अधिक का प्रावधान किया गया है। सर्वेक्षण विभाग का ६.६ करोड रु मिलेगे। राष्ट्रीय शोध विकास निगम के लिए २० लाख रु की ऋण राशि निर्धारित की गयी है। निगम अपनी विकास याजनाओं को चलाने के लिए उद्योगा का सहयोग भी प्राप्त करता है।

विज्ञान की प्रगति के लिए बजट म एक नयी व्यवस्था भी की गयी है। मूलभूत शोध को प्रासाहन देने के लिए सरकार का इरादा एक विज्ञान अनुसंधान परिषद की स्थापना का है। इस के लिए बजट म ५० लाख रु की अग्रिम राशि का प्रावधान किया गया है। बजट म अणु ऊर्जा

वायव्य के लिए भी पहले से अधिक्त राशि निर्धारित की गयी है। १९७०-७३ में इस के लिए १०६ करोड़ रु का प्रावधान था जो १९७३-७४ के लिए ११० करोड़ रु का हो गया है।

इलेक्ट्रानिक उद्योग के विकास के लिए भी बजट में पहले से अधिक्त धन राशि की व्यवस्था की गयी है। १९७३-७४ में इलेक्ट्रानिक शोध तथा विनाम परियोजनाओं पर २०८५ करोड़ रु खर्च होंगे। इससे यह संभव मिलता है कि इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में सरकार न केवल आत्मनिर्भर होना चाहती है बल्कि भारत और विरसित देशों के उद्योगों को भी जो प्राविधिक अंतर है उस भी कम करना चाहती है। इस मंत्र में राज्य सरकारों को अनुदान देने के लिए १२५ करोड़ रु की अलग व्यवस्था की गयी है। किंतु १९७३-७४ के बजट में अतिरिक्त अनुमोदान के लिए १९७०-७३ के १८ करोड़ रु के प्रावधान के मुकाबले १५ करोड़ रु की राशि ही निर्धारित की गयी है।

इस बार बजट में शराब पर कोई नया कर नहीं लगाया गया है। इसी प्रकार टैक्सिजन पर भी कोई नया कर नहीं लगा है यद्यपि रेडियो भटा पर कुछ कर लगे हैं।



MEGHALAYA

AND
ITS PEOPLE
ARE DETERMINED
TO
STEP OUT IN UNISON
TO USHER IN A NEW ERA
WHICH WILL BRING
PROGRESS AND PROSPERITY

TO THE LAND OF CHARM AND BEAUTY

Issued by the Directorate of Information and
Public Relations, Meghalaya, Shillong

हमारे २१७ ग्रन्थ

आपका ज्ञान और आपके घर की शोभा बढ़ायेंगे

- यदि आप चाहते हैं कि अपना समुचित विकास करें,
- यदि आप चाहते हैं कि जीवन को नया प्रकाश मिले,
- यदि आप चाहते हैं कि साहित्य आपको शक्ति दे,
- यदि आप चाहते हैं कि समाज आपका सम्मान करे,

तो हमारा आपसे दिनभर निवेदन है कि

“हिन्दी समिति” के ये ग्रन्थ जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति के सर्वोत्तम सुलभ साधन हैं।

हिन्दी समिति ने कला, विज्ञान, सस्कृति, इतिहास, दर्शन आदि विविध विषयों पर अब तक २१७ ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं।

ये ग्रन्थ नयनाभिराम मुद्रण, आकर्षक आवरण, सुदृढ जिल्द और उचित मूल्य के लिए बहु प्रशंसित हैं।

विशेष जानकारी और सूची-पत्र के लिए लिखें

हिन्दी



समिति

मधिव

हिन्दी समिति, उत्तर-प्रदेश शासन,

हिन्दी मन्त्र महारत्ना गांधी मार्ग,

लखनऊ

राजस्थान स्टेट लाटरी

प्रत्येक ड़ा में लाखो रुपये के पुरस्कार

साथ ही

दैनिक ड़ा के द्वारा प्रतिदिन स्वर्ण अवसर

आप भी अपना भाग्य आजमाइये

केवल एक रुपये का टिकट खरीदकर

आप भी लखपति बन सकते हैं ।

आज ही टिकट खरीदिये

एजेन्सी के लिये राज्य के जिला के कोषाधिकारिया से मिलिये ।
तहसीली (सब ट्रेजरी) में भी टिकट मिलने की व्यवस्था है ।

विशय जानकारी के लिये

निदेशक, अल्प वचत एवं स्टेट लाटरीज विभाग

अशोक मार्ग, बगला न० एच ३

राजस्थान, जयपुर ।

भारत : जन-सांख्यिकी विवरण

सम्पूर्ण भारत की जनगणना १० मार्च १९७१ को प्रारम्भ होकर ३ अप्रैल १९७१ को समाप्त हुई। जनगणना कायम १२ लाख ५० हजार व्यक्तियों में भाग लिया।

प्रश्न सूचियाँ

इस जनगणना में आंकड़े एकत्र करने के लिए चार प्रकार की प्रश्न सूचियाँ तैयार की गईं। पहली थी मकान सूची जिसमें देश के समस्त मकानों का ब्यौरा एकत्र किया गया—जहाँ मकान किस चाबूके बने हैं, रहवासी हैं या दुकान या कारखाना आदि के लिए इस्तेमाल होने हैं कितने लोग उनमें रहते हैं और उनका क्षेत्रफल आदि कितना है। यह सूची १९६१ की जनगणना के समय भी प्रयुक्त हुई थी। दूसरी सूची में उन मकानों का विवरण देना था जिनमें कोई कारखाना या व्यवसाय होता है। वास्तव में यह सूची पहला सूची का पूरक थी। यह सूची पहली बार १९७१ की जनगणना में ही प्रयुक्त हुई। तीसरी तथा सबसे महत्वपूर्ण सूची व्यक्तिगत सम्बन्धी थी। इसमें देश के प्रत्येक व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठी की गई। यह सूची जनगणना का आधार ही नहीं क्योंकि इसमें एकत्र आंकड़ा सही यह स्पष्ट होता है कि देश में कितने पुरुष, स्त्रियाँ तथा बच्चे हैं, कितने विवाहित, अविवाहित या शिक्षित अथवा अशिक्षित हैं। इसी सूची से यह भी पता चलता है कि लोग क्या-क्या काम करते हैं, कितने बेरोजगार हैं, किन-किन धर्मों के अनुयायी हैं, किस भाषा बोलते हैं और कहाँ रहने वाले हैं। यह सूची मकानों की जनगणना का आधार रही या यह समझ लाजिए कि इसका बिना जनगणना की कल्पना ही नहीं की जा सकती। चौथी सूची में जनसंख्या का लक्षा है जो विभिन्न परिवारों में रहने वाले व्यक्तियों के बारे में मुख्य-मुख्य बातें प्रस्तुत करती है। इस सूची में पहली तीन सूचियों के आधार पर आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं।

भू-क्षेत्र और जनसंख्या

विश्व के भू-क्षेत्र का भारत केवल २.४ प्रतिशत है किन्तु भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का १५ प्रतिशत है। विश्व की जनसंख्या इस समय लगभग ३.७१ करोड़ है। भारत में अधिक जनसंख्या केवल चीन की है। उनकी जनसंख्या लगभग ७.५ करोड़ है। १९६१ में भारत की जनसंख्या ४३,६२,०८२ थी जबकि १९७१ की जनगणना के अनुसार यह बढ़कर ५८,६६,५५,६४५ हो गई है। भारत का क्षेत्रफल ३२,६८,०८० वर्ग किलोमीटर एवं आबादी का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर १४८ है।

पहली अप्रैल १९७१ तक भारत की जनसंख्या ५८,७३,६७,६२६ थी जो पिछली दशक की जनसंख्या वृद्धि का २४.६९ प्रतिशत प्रदर्शित करती है जबकि यह वृद्धि १९५१

६१ की दम वर्षों की अवधि में २१ ६८ प्रतिशत थी। बांग्लादेशी व प्रारम्भ से अंत तक की जनसंख्या उमका प्रति दशाली व वृद्धि इन वृद्धि व प्रतिशत और न्य प्रतिशत व निरंतर वृद्धि हुए आठवां पर एक नजर डालने से ही स्पष्टि प्रकट हा जाती है। १९०१ में भारत का जनसंख्या २३ ८३ ३७ ३१३ थी जा १९११ में २१ २० ०१ ६७० हा गई और १९२१ में २१ ६६८ १५७ की वृद्धि हुई जा ५ ७३ प्रतिशत वृद्धि है। १९११ में १९२१ में भारत का जनसंख्या वृद्धि व स्थान पर कम हा गई किन्तु १९२१ और १९३१ में वीर ११ प्रतिशत वृद्धि कर २७ ८८ ६७ ४३० हा गई। १९३१ में १९६१ तक वृद्धि १८ प्रतिशत हातर जनसंख्या ३१,८५ ३९ ९६० तक पहुंच गई और १९६१ में ५२ में जनसंख्या १३ ३१ प्रतिशत व न्याय में ३६ ०९ ५० ३७४ पर जा टिकी। इन आठवां में स्पष्ट हा जाता है कि भारत पचास वर्षों में भारत की जनसंख्या दुगुनी से भी अधिक हा गई है।

यदि यही हाल रहा तो वर्तमान शर्ती समाप्त हात-हात भारत की जनसंख्या शांति व प्रारम्भ की जनसंख्या की लगभग चार गुनी हा जाणगी। इन समय (१९७१) भारत का जनसंख्या पूर यूरोप की जनसंख्या (५१३ ६६२ ०००) से और दाना अमेरिका का जनसंख्या (६९९ ३९८ ०००) से अधिक है तथा यह अफ्रीका महाद्वीप की जनसंख्या से ५० प्रतिशत अधिक है एक रूस की जनसंख्या (७९९ ६२० ०००) की लगभग दुगुनी है।

पिछली दशालिया में भारत की जनसंख्या का वृद्धि का विवरण सक्षम में कर लेना उचित हागा। १९२१ का वर्ष दि प्रकट डिवाइड' कहा गया है क्योंकि उससे पहले भारत की आवाणी कुछ धीरे धीरे और अनियमित रूप से बनी थी तथा उसका बाद से यह वृद्धि लगातार और तजा से हान लगी। इससे पहले १८९१ से १९०१ तक का समय भयंकर अकाल का समय था जिससे आवाणी बिल्कुन बढ़ी ही नहा थी और १९०१ से १९११ तक आवाणी की वृद्धि केवल ५ ७३ प्रतिशत हुई।

इसके पश्चात १९११ से १९२१ का समय आवादी न वृद्धि का समय रहा क्योंकि १९१८ १९१९ में इण्डो-एशिया का व्यापक प्रकाश रहा और बाद के तीस वर्षों में (१९२१ ५१) वृद्धि लगभग उत्तरोत्तर हाती रही जो कुल मिलाकर ४४ प्रतिशत तक पहुंच गई क्योंकि इस दौरान किसी अकाल या महामारी का प्रकाश नहा हुआ। फिर अगले दस वर्षों (१९५१ ६१) में यह प्रतिशत एक दम २१ ६६ हा गया जिससे जनसंख्या में लगभग ८ करोड़ की वृद्धि हा गई। यह वृद्धि प्रतिशत और बटा जिसके परिणामस्वरूप १९७१ में भारत की जनसंख्या लगभग ५५ करोड़ पर पहुंच गई।

जनमदर व मृत्युदर

भारत में १९०१ १९११ में जनमदर ४९ २ प्रति हजार एवं मृत्युदर ४२ ६ प्रति हजार १९११ २१ में ४८ १ प्रति हजार एवं ४७ २ प्रति हजार १९२१ ३१ में ४६ ४ प्रति हजार एवं ३६ ३ प्रति हजार १९३१ ४१ में ४५ ० प्रति हजार एवं ३१ २ प्रति हजार १९४१ ५१ में ३९ ९ प्रति हजार एवं २७ ४ प्रति हजार तथा १९५१ ६१ में ४७ ७ प्रति हजार एवं २२ ८ प्रति हजार थे।

इन आठवां में स्पष्ट हा जाता है कि भारत १९२१ के बाद उमाश्रापिक सन्नाति व प्रथम चरण में प्रवेश कर गया जिससे जनमदर लगभग बनी रही और मृत्युदर लगातार कम हाती चला गई। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात और विशेषतया स्वतंत्रता के पश्चात सफाई आवागमन प्राधुनिक दवाइया मलेरिया उमूलन आदि साधना ने मृत्युदर को कम करने में विशेष

याग दिया है। इन प्रकार मृत्युदर की अपभ्या जमदर अधिक हान म जनसख्या म निरतर वृद्धि ही हाती जाणगी ।

उत्तर प्रदेश सबसे बडा राज्य

उत्तर प्रदेश (८ करोड ८३ लाख आवाणी वाला) देश का मवम बडा राज्य रहा । बिहार का स्थान दूसरा रहा । इसकी आवाणी ५ कराड ६४ लाख और इसके बान् महाराष्ट्र की आवादी ५ करोड ३ लाख रही । १९६१ की जनगणना क समय भी इही तीना राज्या का पहल तीन स्थान प्राप्त ये । ४ करोड ४४ लाख की आवाणी वाला पश्चिम बंगाल जा १९६१ म पाचव स्थान पर था, आंध्र प्रदेश का अपने स्थान से हटाकर चौथ स्थान पर पहुच गया और अब आंध्र प्रन्श सर्वाधिक आवादी वाला पाचवा राज्य है । इसी प्रकार मध्य प्रदेश (८ कराड १५ लाख) सातव स्थान स १९७१ की जनगणना म छठे स्थान पर और तमिलनाडु (४ करोड ११ लाख) छठे स्थान स सातवें स्थान पर आ गया है । अन्य राज्या और के द्रशासित क्षेत्रा का कमोबश वही स्थान रहा केवल असम ही इसका अपवाद है जिसकी आवादी म वद्धि हुई और जो चौहवें स्थान से तेरहवें स्थान पर हो गया है । दिल्ली की भी आवादी बडी है और यह १९६१ की जनगणना म अठारहव स्थान क बजाय सत्रहवें स्थान पर पहुच गया है । अब इसकी आवादी हिमाचल प्रदेश (३४ लाख) स भी अधिक हा गई है ।

जिन राज्या और के द्रशासित क्षेत्रा की आवादी म दश क औमत स अधिक दर स वद्धि हुई, उनम गावा दमन और दीव हैं । इनकी आवादी की वद्धि की दर ६०० प्रतिशत स अधिक रही अर्थात पिछले दशक की तुलना म छहगुना से अधिक तजी से आवादी बनी । इसक बाद आत हैं— जम्मू और कश्मीर (२१४ प्रतिशत), नागालड (१८२ प्रतिशत) लकादीव मिनिकाय और अमीनीदीवी डीपममूह (११८ प्रतिशत), तमिलनाडु (८६ प्रतिशत) पाडिचेरी (६७ प्रतिशत) आंध्र प्रन्श (३२ प्रतिशत) उडासा (२६ प्रतिशत) मेघालय (२६ प्रतिशत) उत्तर प्रदेश (१८ प्रतिशत) मध्य प्रदेश (१६ प्रतिशत) और महाराष्ट्र (१५ प्रतिशत) । जिन राज्या और के द्र शासित क्षेत्रा की आवाणी की वद्धि की दर म १९६१ ७१ क दशक म इससे पहल दशक की तुलना म कम दर स वद्धि हुई उनम चडीगढ (७१ प्रतिशत), त्रिपुरा (५४ प्रतिशत) और दादरा तथा नगरहवेली (-२९ प्रतिशत) आत है ।

स्त्री-पुरुष अनुपात

जनगणना का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आवाणी म स्त्रिया की तुलना म निरन्तर पुण्या की सख्या अधिक रही है । इस समय स्त्री-पुण्या का अनुपात प्रति १,००० पुरपा स पीछे ९३० स्त्रिया का है । यह बात इस दृष्टि स भी महत्वपूर्ण है कि प्राय प्रत्येक आयु बग म यह अतर कई दशका स बना हुआ है । यद्यपि इस असमानता का कारण पूरी तरह समनाया नहीं जा सका है पर जनगणना अधिकारिया का बहना है कि निम्न कारणा मे ऐसा हुआ है (१) लडका का अधिक पमद किया जाता और परिणामस्वरूप लडकिया के प्रति उपभ्या भाव, (२) लडकिया की मृत्युदर अधिक होना और (३) मानाद्या की अधिक सख्या म मृत्यु ।

जिन राज्या म प्रति १,००० पुरपा के पीछे स्त्रिया की सख्या अधिक है वे हैं—केरन (१०१६) और दादरा तथा नगरहवेली (१,००७) हैं । १९६१ की जनगणना तक उडीसा म स्त्रिया का सख्या पुरपा स अधिक थी (१००१) लेकिन अब पुरपा की सख्या अधिक हा गई है । अब उडीसा म प्रति १,००० पुरपा क पीछे ९८९ स्त्रिया हैं । यह भी ध्यान दन याग्य है कि

यद्यपि बेरन म अभी भी स्त्रिया का अनुपात अधिक है पर यह निरन्तर घटता जा रहा है । १९६१ म करल म १००० पुरुषा व पाछ स्त्रिया की गणना १०२२ थी ।

साक्षरता

प्राथमिक शिक्षा व निरन्तर और विज्ञान धमान पर विस्तार व कारण तथा जनक साक्षरता अभियाना के फलस्वरूप १९७१ म साक्षरता का प्रतिशत २६.२५ हा गया जबकि १९६१ म यह २४.०३ था । १९७१ म स्त्रा साक्षरता का प्रतिशत १८.८७ रहा जबकि १९६१ की जनगणना व समय यह १२.६५ था । साक्षरता व क्षत्र म जा मन्तता मित है वर सजित नही है क्याकि तेजा स आवाजी की व छि न देश व समस्त लागी का साक्षर बतान व प्रयास का और अधिक बठिन बना दिया है ।

साक्षरता म चंडीगढ़ का पहला स्थान हा गया है जबकि १९६१ म यह दूसरा स्थान पर था । अब करल न यह दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया है । सन् १९६१ की जनगणना व समय स्त्रिया म सर्वाधिक साक्षरता थी लकिन अब यह तागर स्थान पर पहुच गया है । पट्टन करन तीमर स्थान पर था । गोआ व लिए यह प्रशंसा का विषय है कि वह गातर स्थान म अब चौथे स्थान पर पहुच गया है । लक्ष्मीव मिनिकाय और अमीनीवीवी द्वारममूह का वद्वशासित क्षत्र जा १९६१ म पद्वहवे स्थान पर था अब छठे स्थान पर आ गया है । यद्यपि अन्य राज्या और वद्वशासित क्षेत्रा का पहल जमा ही नीचा स्तर बना हुआ है लकिन उडीसा १९६१ व मानहवे स्थान म इक्कीसव स्थान पर पहुच गया है ।

भारत मे कितने नर और कितने नारी ?

राज्य	कुल आबादी	पुरुष	स्त्री
आंध्रप्रदेश	४३ ३६४ ६५१	२१,६४४ ८२६	२१ ६५० १२५
असम	१४ ६५२ १०८	७ ८६३ ७२५	७ ०८८ ३८३
बिहार	५६ ३३२ २४६	२८ ७६७ २३८	२७ ५३५ ००८
गुजरात	२६ ६८७ १८६	१३ ७८७ २४०	१२ ८९९ ९४६
हरियाणा	६ ६७१ १६५	५ ३१७ १४६	४ ६५४ ०१६
हिमाचल प्रदेश	३ ४२४ ३३२	१,७३५ १०६	१ ६८९ २२६
जम्मू-कश्मीर	४ ६१५ १७६	२ ६५२ ६६१	२ १६२ ५१५
केरल	२१ २८० ३६७	१० ५३८,८७३	१० ७४१ ५२४
मध्यप्रदेश	४१ ६५०,६८४	२१ ४३८ ८६४	२० २११,८२०
महाराष्ट्र	५६,३३५ ४६२	२६ ०५४ २३२	२४ २८१,२६०
कर्नाटक	२६ २६३ ३३४	१४ ६६० ६६१	१४ ३२२ ६७३
नागालड	५१५ ५६१	२७५ ३५६	२४०,२०२
उडिसा	२१ ६३४ ८२७	४४ ०२८,०३६	१० ६०६ ७६१
पंजाब	१३ ६७२ ६७२	७,१६२ ३०५	६,२८० ६६७
राजस्थान	२५ ७२४ १४२	१३ ४४२ ०५६	१२,२८२ ०८६
तमिलनाडु	४१ १०३ १२५	२० ७७२ ५४६	२०,३३०,५७६

उत्तर प्रदेश	८८ ३६४,७७६	४६ ६२२,८१०	६१ ४४१,६०७
पश्चिम बंगाल	४४ ६४०,०६५	२३ ६८८,२६६	२०,६५१ ८११
संघीय राज्य			
अण्डमान निकोबार	११५ ०६०	७० ००५	४५ ०८५
चंडीगढ़	२५६ ६७६	१६६ ८८८	११० ०६१
दिल्ली एव नागर हवेली	७४ १६५	३३ ८४६	३७ २१६
जम्मू	६०४४,३३८	२२६४ २१०	१ ८००,०४८
गावा दमन तथा दीव	८५७,१८०	४३१ ०२६	४२६ १५६
लकादिव, मिनीकाय तथा अमीन दीव द्वीप समूह	३१ ७६८	१६ ०६०	१५ ७३६
मणिपुर	१ ०६६ ५५५	५३६,१०१	१३० ६५४
मध्य प्रदेश	६८३,३३६	५०३ ३५१	६७६ ६८५
मिजोरम	६४४ ७४६	२३३ १५४	२११ ५६०
पाण्डिचेरी	४७१ ३४७	२३६ ८५०	२३४ ६६७
त्रिपुरा	१ ५५६,८२०	८०२ ५०६	७५४,३१३

भारत में साक्षरता १९७१ की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत १६.०५ (अर्थात् २६.३५ प्रतिशत) है। इनमें ११.७७७७७७ पुंश्र और ४.२७३०८८२ स्त्रियाँ हैं।

भारत में राज्यवार साक्षरता के वरीयता के अनुसार प्रतिशत

क्रम	राज्य	१९७१ में साक्षरता का %	१९६१ में साक्षरता का %	१९६१ में वरीयता क्रम	साक्षरता में % वृद्धि
०	भारत	२६.३५	२४.०३	—	+२.३२
१	चण्डीगढ़	६१.२६	५१.०६	२	+१०.२०
२	हरियाणा	६१.१६	६६.५८	३	+५.४२
३	जम्मू	५६.६५	५०.७५	१	+५.९०
४	गावा दमन तथा दीव	६६.५३	३०.७५	७	+३५.७८
५	अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह	४३.४८	३३.६३	५	+९.८५
६	लकादिव मिनीकाय तथा अमीनदीव द्वीप समूह	४२.६६	३३.२७	१५	+९.३९
७	पाण्डिचेरी	६३.३६	३७.४३	६	+२५.९३
८	नामिलना	३६.३६	३७.६१	६	+१.२५
९	महाराष्ट्र	३६.०६	२६.८२	१०	+९.२४
१०	गुजरात	३५.७०	३०.४५	८	+५.२५

११	दारा	३३३६	६३१	१३	१६३
१२	गन्धमती बंगला	३३०४	६	१३	१
१३	गन्धपुर	३६०	३०६	६	३
१४	बागीचा	३१६३	४६०	१६	३३६०
१५	तिमावत प्रान्त	३१३	१६	३	६३३
१६	तिपुरा	३६३	०६	१६	३३३
१७	धमम	६३६	६३६	१	१३६
१८	मेषावत	६६१	१६३	१	+३३६
१९	तापान	३३३	१३६१	३३	६३६
२०	हस्तिना	४६६	१६६३	३०	+३३६
२१	उडागा	६१	१६६	१६	+३३६
	घांश प्रान्त	६३६	१६६	१	+३३६
	मध्य प्रान्त	०३	१३१३	४	+६६०
२२	उत्तर प्रान्त	१६६	१३६३	६	६१
२३	विहार	१६६३	१६६०		६३३
२४	राजस्थान	१६३६	१३१		३३६
२५	जम्म तथा कश्मीर	१६३०	११०३	३	+३३६१
२६	पंजाब तथा उत्तर पंजाब	१६६०	६६६	६	३६३३
२७	उत्तर-पूर्वी गंगा प्रान्त	६३६	३१३	६	३१००

हिन्दुओं की जनसंख्या वृद्धि में गिरावट

१९३१ का जनगणना स्थिति के अनुसार यह प्रमाणित होता है कि हिन्दुओं की जनसंख्या प्रतिशत में वृद्धि हुई है तथा मुसलमानों की जनसंख्या में वृद्धि हुई है। मुसलमानों की जनसंख्या में ३०.६५ प्रतिशत वृद्धि हुई है जबकि हिन्दुओं की जनसंख्या में २६.६६ प्रतिशत वृद्धि हुई है। पंजाब की जनसंख्या वृद्धि में ३०.६० प्रतिशत रहा।

धर्मानुसार जनसंख्या तथा वृद्धि—१९३१

धर्मानुसार वर्ग	जनसंख्या	स्त्री-पुरुष अनुपात (प्रति हजार पुरुषों के पीछे)	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	वृद्धि १९११-३१
कुल जनसंख्या	५६७ ६४६ ६०६	६३०	१००.००	२६६०
हिन्दू (जिनमें सिख सहित)	६६६ २७५ ४२६	६३०	६२.७२	२३६६
मुस्लिम	६१ ४१७ ६३४	६२२	११.०१	३०.६५
ईसाई	१६ २२३ ३६५	६६६	२.६०	३०.६०
बौद्ध	३ ६१२ ३४५	६६५	०.३०	१३.२०
अन्य	२ १६६ ५५६	१०११	०.४०	२६.१०
जिन्होंने धर्म नहीं लिखा	३६ ०६३	६६३	०.०१	—

आदिवासी विभिन्न राज्यों मे

१९७१ की जनगणना के अनुसार विभिन्न राज्यों की कुल जनसंख्या में आदिम जातियाँ की प्रतिशत जनसंख्या का विवरण ।

(जनसंख्या लाखों में)

क्रम संख्या	राज्य/केन्द्र शासित क्षेत्र	कुल जनसंख्या	आदिम जातियाँ की संख्या	प्रतिशत
राज्य				
१	आंध्रप्रदेश	८३५ ०३	१६ ५०	३ ८१
२	असम	१ ८६ ५८	१६ २०	१ २ ८४
३	बिहार	५६३ ५३	६६ ३३	८ ७६
४	गुजरात	२६६ ६७	३७ ३८	१ ६६
५	हरियाणा	१०० ३७	—	—
६	हिमाचल प्रदेश	३४ ६०	१ ४०	४ ०६
७	जम्मू और कश्मीर	६६ १७	—	—
८	केरल	२१३ ४७	२ ६६	१ २६
९	मध्यप्रदेश	४१६ ५८	८३ ८७	२० १८
१०	महाराष्ट्र	१०४ १०	२६ ५८	२ ८६
११	मणिपुर	१० ७३	३ ३४	३१ १७
१२	मघानय	१० १२	८ १८	८० ६३
१३	कर्नाटक	२६२ ६६	२ ३१	० ७६
१४	नगालड	५ १६	६ ५८	८८ ६१
१५	उडामा	३१६ ४४	१० ७२	३ ३११
१६	पंजाब	१३५ ५१	—	—
१७	राजस्थान	२५७ ६६	२१ २६	१ २ १३
१८	तमिलनाडु	४११ ६६	३ १२	० ७६
१९	त्रिपुरा	१५ ६६	८ ११	२८ ६५
२०	उत्तरप्रदेश	८८३ ४२	१ ६६	० २०
२१	पश्चिम बंगाल	६४ १२	२५ ३०	१ ७०
केन्द्र शासित क्षेत्र				
१	अंडमान और निकोबार द्वीप	१ १५	० १८	१ ५०
२	अरुणाचल प्रदेश	६ ६८	२ ६६	४ ००
३	चंडीगढ़	२ १७	—	—
४	दादरा और नगर हवेली	० ७८	० ६८	८८ ६६
५	दिल्ली	६० ६६	—	—
६	गोवा दमन और दीव	८ ५८	० ०८	० ६०
७	लक्षद्वीप	० ३०	० ३०	१ ००
८	पांडिचेरी	६ ७०	—	—
कुल		५४,७६,४६८०६	३ ८० १४ ६८	६ ८६

जनजातियाँ सभी धर्मावलंबी हैं । मनु १६६१ की व्यवस्था के अनुसार २०२२ प्रतिशत हिंदू ६१६ प्रतिशत विभिन्न आदिम जन ०२६ प्रतिशत इस्लाम ००१ प्रतिशत मुस्लिम ५ ५३ प्रतिशत सिमा तथा ०२४ प्रतिशत अन्य मता हैं ।

Whenever You Build Better Consult

Grant ENLARGE

Phone 73529, 74003

Shivratan G. Mohatta

S M S HIGHWAY JAIPUR 3

for

'BBB' Lakheri Cement, Iron & Steel, Snow Cem, Paints,
Makrana, Marble Chips, 'Silvicrete' White Cement,
Accoproof, G I Pipes & Fittings, 'Everest
Brand Asbestos Cement Sheets & Pipes Soda Ash Etc

With

Best

Compliments

From

M/S R. Y. Durlabhji

Johari Bazar, Post Box 78,
JAIPUR-302003

Telephones 75557 and 72757

Telex 036 211 Cable ARIHANT

Awarded CERTIFICATE OF MERIT by the Government of
India twice October 66 to March 68 and April 68 to March
69 for the best export performance in Precious Stones

विज्ञान

भारत उस विशाल देश का समस्याएँ विज्ञान के बिना हल नहीं हो सकती। निधनता और निरक्षरता अंधविश्वास अज्ञान और रुढ़िवादिता बीमारी गंदगी और भूख—इन सबको जड़ मूल से उखाड़ फेंकने के लिए हमें विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) की शरण में जाना ही होगा। जहाँ सन् १९५८ में हम अनुसंधान और विकास पर २५ करोड़ रुपये खर्च करते थे, वहाँ अब १९७३ में लगभग १९७ करोड़ खर्च हो रहे हैं। सन् १९५८ में ही लोकमभा ने वैज्ञानिक नीति प्रस्ताव पारित किया था जिसमें विज्ञान के प्रति सत्भावना व्यक्त करते हुए यह घोषणा का गन् है—विशुद्ध व्यावहारिक तथा शैक्षणिक विज्ञान तथा वैज्ञानिक अनुसंधान की अभिवृद्धि करना उच्च वाटि के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करना, और उनके कार्य का राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम मानना जनता की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना तथा व्यक्ति के प्रयासों में वैज्ञानिक खाज और वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देना हमारा लक्ष्य है।

निदान विज्ञान पर हम अधिक खर्च करते जा रहे हैं अनेक अनुसंधानशालाएँ प्रयाग शालाएँ भी हमने खड़ी कर दीं किन्तु इसके बावजूद वांछित परिणाम सामने नहीं आए। इसका प्रमुख कारण यही रहा कि प्रौद्योगिकी के दम युग में हमने उस पर कोई नीति प्रस्ताव तयार नहीं किया न ही आज तक हम निश्चय कर पाए कि विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के बिना क्षेत्रों में हमारे प्राथमिक लक्ष्य कौन से हैं।

वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों की कुल संख्या (हज़ारों में)

	१९५०	१९६०	१९७०
विज्ञान			
स्नातक	६००	१६५६	४२००
स्नातकोत्तर (पॉस्ट ग्रेजुएट)	१६०	४७७	१३९२
दृष्टि तथा पशु चिकित्सा			
स्नातक	६९	२०२	६०२
स्नातकोत्तर	१०	३७	१३५
इंजीनियरी तथा टेक्नोलॉजी			
डिप्लोमाधारी	३१५	७५०	२४४४
स्नातक	२१६	६२०	१८५४
चिकित्सा			
डिप्लोमाधारी	३३०	३६०	७७०
स्नातक	१८०	६१६	९७८
योग	१८८०	४५००	११८७५

भारत में वन्यानिर्वाह और तकनीकियाँ की मर्यादा में तर्कीय बन्धन है जो कि उदरगार तालिका से प्रवृत्त है।

एक प्रकार हम श्रेष्ठ है कि भारत में ही छत्र मान वष में वन्यानिर्वाह और तकनीकियाँ की मर्यादा दुगुनी होती गई। आज भारत में प्रसिद्धि वन्यानिर्वाह की मर्यादा बाहर बाहर में ऊपर पहुँच रही है। साथ ही यह भी तथ्य है कि देश के हजारों वन्यानिर्वाह कर्मियों को नौकरों के तौर पर विदेश में जाना पड़ा या फिर अपने ही देश में हजारों इजोनिर्वाह तथा दूगुने प्रसिद्धि वन्यानिर्वाह का बकारी का सामना करना पड़ा।

केन्द्रीय बजट में विज्ञान और विज्ञान के लिए जा रगि होना है उम्मीद मर्यादा प्रतिगत स अधिक इन पांच प्रमुख मर्यादा द्वारा रख दिया जाता है—वन्यानिर्वाह तथा शोधार्थ अनुसंधान परिपद परमाणु शक्ति विभाग भारतीय कृषि अनुसंधान परिपद प्रतिरक्षा अनुसंधान एवं विज्ञान मर्यादा तथा भारतीय भयज अनुसंधान परिपद।

वन्यानिर्वाह तथा शोधार्थ अनुसंधान भारत में वन्यानिर्वाह तथा शोधार्थ अनुसंधान का विश्व निवेश और प्रोत्साहन एक व लिए मर्यादा बड़ी सस्या वन्यानिर्वाह एवं शोधार्थ अनुसंधान परिपद (काउन्सिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च) है। इस मर्यादा अनुसंधान अनुसंधानशालाएँ प्रयोगशालाएँ तथा सस्या हैं जो श्रम अनुसंधान क्षेत्र में मूलभूत और श्याव हारिक अनुसंधान के कार्य में लग है। विज्ञान में भारतीयता के पापक डा० घात्माराम गन वर्षों में परिपद के महानिदेशक रह। व्यावहारिक अनुसंधान के क्षेत्र में उनका कार्य उल्लेखनीय रहा है। मितम्बर १९७१ में उन्होंने प्रवक्ता ग्रहण किया और डा० वाई० नामुडम्मा की महानिर्वाह पर नियुक्ति हुई।

चिकित्सा भारतीय भयज अनुसंधान परिपद (इंडियन काउन्सिल ऑफ मेडिकल रिसर्च) अपने सात सस्या और केन्द्रों के माध्यम से चिकित्सा के क्षेत्र में नए नए अनुसंधान का प्रोत्साहन देती है। विभिन्न शोध परियोजनाएँ पर विचार करके उन्हें वित्तीय महायता भी दी जाती है।

परिपद के अंतर्गत विभिन्न सस्या केन्द्र इस प्रकार हैं—

- १ राष्ट्रीय पोषण सस्या, हैदराबाद (१९१९ में स्थापित) सस्या खाद्य तथा पापण मन्वर्धी समस्याएँ पर अनुसंधान करता है जनसाधारण को सतुलित आहार की जानकारी कराता है और पोषण विज्ञान में कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देता है।
- २ विषाणु अनुसंधान केन्द्र, पूना (स्थापित १९५२)
- ३ तपेदिक रसायनी चिकित्सा केन्द्र मद्रास (स्थापित १९५६)
- ४ हैजा अनुसंधान केन्द्र, कलकत्ता (स्थापित १९६३)
- ५ इंडियन रजिस्ट्री ऑफ पथोलॉजी, सफदरजग अस्पताल, नई दिल्ली (स्थापित १९६५)—रोग विज्ञान तथा उमकी विभिन्न शाखाएँ में अनुसंधान करना और उस अनुसंधान का पीकीकरण।
- ६ व्यावसायिक स्वास्थ्य अनुसंधान सस्या वी० जे० मेडिकल कॉलेज अहमदाबाद (स्थापित १९६६)
- ७ जनन अनुसंधान सस्या बम्बई (स्थापित १९७०)

VISIT ASSAM

Enjoy Her Beauties And
Return With Heartful Memories

PLACES THAT AWAIT YOU

KAZIRANGA HOME OF RARE ONE HORNED RHINO

MANAS ANGLER'S PARADISE AND LAND OF
GOLDEN LANGURS

GAUHATI PANAROMIC VIEW OF BRAHMAPUTRA AND
HOLI KAMAKHYA

SIBSAGAR RELICS OF AHOM KINGDOM AND
MANY OTHER PLACES OF BREATH TAKING
BEAUTY AND INDUSTRIAL IMPORTANCE

Our Luxury Mini Coaches Would Provide You
An Economic And Comfortable Ride

(Rate FIFTY PAISE PER HEAD PER K M)

For details please contact —

Director Of Tourism . Assam

PANBAZAR GAUHATI (Phone No 7102)

ISSUED BY THE DIRECTORATE OF TOURISM
ASSAM GAUHATI

INDIA LIVES IN VILLAGES

—Mahatma Gandhi

Gujarat State Road Transport Corporation

Serves the villages by

- ① Nationalisation of Passenger bus services to the extent of 100 per cent
- ② Providing bus services
 - ① Viz Short distance
Long distance connecting pilgrimage & tourist centres
night services luxury services
19 seater luxury mini buses inter state services and thereby nearly 4850 buses carry 63 crores of passengers in a year
- ③ Providing Parcel Services which carry essential materials such as medicines etc to the villages of Gujarat
- ④ Providing pick up stands retiring rooms at bus stations drinking water at the bus stands clock room etc
- ⑤ Granting concessions to students blinds & cancer patients etc

Gujarat State
VAHAN VYA

nspe
N AH

ration

चिकित्सा क्षेत्र में विभिन्न अनुसंधान एकाग—१ ब्लड ग्रुप रेफरेम सेटर हाफकिन इस्टीट्यूट, बम्बई, २ एण्टीरो-वायरस रिमच यूनिट बम्बई ३ यूरो फिजीयानाजी रिमच यूनिट, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली, ४ हेमेटालाजिकल यूनिट कलकत्ता, ५ पीरियाडो-टोनाजिकल रिमच यूनिट, लखनऊ ६ टुकामा (रोहा) रिमच सटर, अलीगढ़, ७ टावमीवालाजी रिमच यूनिट (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान), नई दिल्ली ८ आई० सी० एम० आर० यूनिट, कुन्नूर ९ लेवारेटरी एनिमल्स इन्फार्मेशन सर्विस, बम्बई १२ १० आगरा, वल्लौर बम्बई कलकत्ता और कुरुनूर में रोग विज्ञान विभाग के केन्द्र ।

इस वर्ष ५६५ परियोजनाओं का वित्तीय सहायता देने के लिए स्वीकृत किया गया । पापण अनुसंधान प्रयोगशाला का दर्जा बढ़ाकर राष्ट्रीय पोषण संस्थान का रूप दिया गया । दो एकागों को मिनाकर बम्बई में जनन अनुसंधान संस्थान की शुरुआत हुई ।

कृषि अनुसंधान कृषि तथा पशुपालन के विविध क्षेत्रों में अनुसंधान करने तथा अनुसंधान के प्रयोजनों का प्रावधान देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद है । इसकी स्थापना १९२९ में हुई थी । परिषद के अंतर्गत विभिन्न संस्थान तथा प्रयोगशालाएँ हैं और प्रायोगिक काम भी है । भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (निदेशक डा० एम० एस० स्वामिनाथन) ने खाद्य फसल तथा कृषि उपकरणों के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है । भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, राष्ट्रीय दुग्धशाला अनुसंधान-संस्थान करनाल चावल अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता, आलू अनुसंधान संस्था, शिमला तटवर्ती मछली अनुसंधान केन्द्र मण्डयम तथा कृषि विश्वविद्यालय, पतनगर द्वारा उत्पादन बढ़ाने तथा नई-नई किस्माँ पर अनुसंधान करने का कार्य किया जाता है । गेहूँ धान, तिनहन कपास ग्राम अगूर साग-मिर्चिया तथा कई तरह के फूलों पर महत्वपूर्ण खोज-कार्य हुआ है ।

प्रतिरक्षा अनुसंधान प्रतिरक्षा अनुसंधान तथा विकास सगठन की स्थापना १९६२ में हुई ।

सगठन का प्रमुख ध्येय है—मनाओं की सामरिक अवस्थाओं का ध्यान में रखकर नए तथा आधुनिक शस्त्रास्त्रों व उपकरणों का डिजाइन और विकास करना उनके स्वदेशी उत्पादन में सहायता देना शारीरिक, मानसिक, पोषक सम्बन्धी तथा अन्य समस्याओं के समाधान में मनाओं का सहायक बनना । विविध परियोजनाओं के फलस्वरूप शस्त्रों उपकरणों तथा पुर्जों के स्वदेशी उत्पादन में तजी से बढि हुई है । इससे विदेशी मुद्रा की बचत हुई है और हमारी सशस्त्र मनाओं को अधिक प्रभावकारी तथा श्रेष्ठ किस्म के शस्त्र व उपकरण मिल हैं । नई किस्म की पक्कीय तोप अध-म्बचानित राइफल टक नाशक सुरंग विस्फोटक पील्ड आर्टिलरी रडार चेतावनी रडार-तन्त्र भीमात क्षेत्रों में सैनिक उपयोग की कुछ वस्तुएँ आदि हमारी महत्वपूर्ण उपनिधियाँ मानी जा सकती हैं । रक्षा उपकरणों के काम में आने वाले समागों काच की भारतीय विधि निकालना तथा उनमें आत्मनिभरता स्वतन्त्रता के बाद भारत की उन्नतनीय उपनिधि हैं ।

१९५८ में माघारण किस्म की गिनी चुनी प्रयोगशालाओं में शुरुआत कर आज हम अनुसंधान विकास और रक्षा उत्पादन के लिए तीस बड़े-बड़े संस्थान तथा प्रयोगशालाएँ सगठित कर चुके हैं । इनमें रक्षा सम्बन्धी सभी वज्ञानिक तथा तकनीकी पहलुओं पर काम हो रहा है ।

रक्षा अनुसंधान और विकास पर वर्तमान व्यय यानी सम्पूर्ण रक्षा बजट का लगभग १७.५ प्रतिशत घटता है ।

परमाणु शक्ति तथा अंतरिक्ष अनुसंधान परमाणु ऊर्जा आयाग के अध्यक्ष डा० विनय साराभाई ने भारत में परमाणु ऊर्जा तथा अंतरिक्ष अनुसंधान का दशवर्षीय कार्यक्रम तैयार किया था जिस पर संसदीय सलाहकार समिति ने जून १९७० में स्वीकृति प्रदान कर दी । कार्यक्रम के अनुसार १९८० तक २७०० मेगावाट नाभिकीय ऊर्जा का उत्पादन होने लगेगा । १९७०-७५ के प्रथम चरण में ३६५ करोड़ रुपये तथा ७५.८० के द्वितीय चरण में ८८५ करोड़ रुपये व्यय किए जायेंगे । कार्यक्रम पूरा होने पर विद्युत भारी पानी, इंधन प्लूटोनियम तथा अन्य उत्पादों के बचकर १७० करोड़ का लाभ प्रतिवर्ष होने का अनुमान है । विद्युत की कमी को दूर करने के लिए भी सौरऊर्जा के उपयोग को आवश्यक माना जाने लगा है । भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष प्रो० आर० एस० मिश्र ने तीन जनवरी १९७४ को नागपुर में कहा कि विद्युत की वर्तमान कमी को दूर करने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए । देश काफी समय तक सौर ऊर्जा पर निर्भर रह सकता है क्योंकि यह काफी मात्रा में नियमित ढंग से प्राप्त की जा सकती है । अतएव हम सौरऊर्जा के उपयोग को सर्वाधिक प्राथमिकता देनी चाहिए ।

राजस्थान का रेगिस्तान जितनी सौर ऊर्जा अवशोषित करता है वह विश्व में एक बंध में कोयला तेल और गैस जलाने से ऊर्जा जा मिलती है उसके समतुल्य बराबर होती है । परन्तु अभी सौर ऊर्जा को तैयार करने उसे संचित करने तथा उसके उपयोग पर अपेक्षाकृत अधिक धन व्यय करना पड़ता है । अतएव इसके लिए नई तकनीक का विकास करना होगा । अभी तक सौर ऊर्जा को तैयार करने के लिए पर्याप्त धन नहीं मिल रहा है । परंतु इस पर धन व्यय करना लाभप्रद रहेगा ।

तारापुर में भारत का प्रथम तथा एशिया का सबसे बड़ा परमाणु शक्ति ऊर्जा उत्पादन केन्द्र चालू है जिसकी क्षमता ३८० मेगावाट है । राजस्थान में राणाप्रताप सागर के परमाणु शक्ति केन्द्र की एक यूनिट तो शीघ्र ही चालू हो जाएगी ।

परमाणु शक्ति के क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास सम्बन्धी क्रियाकलाप का राष्ट्रीय केन्द्र बम्बई के निकट ट्रान्से स्थित परमाणु शक्ति प्रतिष्ठान है । इसमें लगभग पांच हजार वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मचारी कार्यरत हैं । प्रतिष्ठान के पांच मुख्य विभाग हैं । इसमें तीन परमाणु भट्टियाँ हैं—अप्रैल १९५६ में चालू हुई । चालीस मेगावाट की कनाडा भारत भट्टी जनवरी १९६१ में तैयार हुई और तीसरी परीक्षणालम्क भट्टी जरलीना है । इन भट्टियों के अलावा यहाँ थोरियम निष्पन्न यूनिट और थोरियम संचयन भी हैं । रेडियो आइसोटोप का उत्पादन भी यहाँ हो रहा है । चिकित्सा वृषि उद्योग जीवन विज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों में रेडियो आइसोटोप के उपयोग के बारे में यहाँ अनुसंधान किया जाता है । सन १९७२ में तलचर (उड़ीसा) में पांचवें गुड्जल संचयन की स्थापना की गई तथा अगस्त १९७३ में राजस्थान परमाणु बिजलीघर की पहली परमाणु भट्टी चालू की गई ।

नाभिकीय इंधन संचयन, हैदराबाद अणु आयुध तथा अणु विद्युत दोनों ही के लिए इंधन की आवश्यकता है जिस अणु इंधन कहते हैं । यह यूरेनियम तथा थोरियम से बनाया जाता है । प्राकृतिक यूरेनियम से इंधन तैयार करने के लिए हैदराबाद के निकट आणुविक इंधन संचयन समूह परियोजना १९६८ के उत्तरार्ध में प्रारम्भ की गई । इसमें सात संचयन हैं जो इंधन

तथा इधन से सम्बन्धित वस्तुआ का निर्माण करने लगे हैं ।

परमाणु शक्ति विराम का काय अय जिन सस्याआ म ही रहा है उनके नाम ये है—

(१) गौरी बिदनोर भूकम्पभापी केन्द्र—यह बगलोर स ८० किलामीटर दूर है । इसम भूमिगत आणविक विस्फोटा का पता लगाने की व्यवस्था है । चीन के प्रथम आणविक विस्फोट का पता विश्व म सबसे पहले इसी केन्द्र को मिला था ।

(२) भारी पानी सयत्र—नागल म १९६२ से काय कर रहा है । राणाप्रताप मागर, बडौल तथा तृतीकोरिन के सयत्र बन रहे हैं ।

(३) भारतीय यूरेनियम निगम जादुगुडा—अवतुवर, १९६७ म स्थापना हुई । देश में यूरेनियम खाना व विकास तथा यूरेनियम उत्पादन के लिए उत्तरदायी है ।

(४) भारतीय रेयर अय लिमिटेड—स्थापित १९५० । मनावलनुन्चि म समुद्र के किनारे से मूल्यवान मिट्टी प्राप्त कर रही है जिसका अणु विकास कायक्रमा म भारी महत्व है ।

(५) इलेक्ट्रानिक कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड हैदराबाद—स्थापित १९६७ । इसने भाषा अणु अनुसंधान केन्द्र के इलेक्ट्रानिक उत्पादन इकाई का काम अपने हाथ म ले लिया है । यह आणविक यंत्र, इलेक्ट्रानिक पाट आदि व्यापारिक रूप म तयार करती है ।

(६) भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद—१९४८ ।

(७) अधिक ऊर्जा (हाई अल्टीम्यूट) अनुसंधान प्रयोगशाला गुलमग ।

(८) साहा नाभिकीय भौतिकी सस्थान, बलकत्ता ।

(९) परिवर्तनशील ऊर्जा साइब्लोट्रोन, बलकत्ता ।

(१०) टाटा मूलभूत अनुसंधान सस्थान—परमाणु विज्ञान तथा गणितमूलक अनुसंधान का राष्ट्रीय केन्द्र है ।

(११) टाटा स्मारक केन्द्र, बम्बई—इसम टाटा स्मारक अस्पताल तथा कंसर अनुसंधान सस्थान शामिल हैं ।

टाटा मूलभूत अनुसंधान, बम्बई द्वारा हैदराबाद से १९५६ म प्लाम्टिक के गुब्बारे छोडकर अंतरिक्ष अनुसंधान का काय प्रारम्भ किया गया । तब से अब तक गुब्बारा की सौ बडी उडानें हा चुकी हैं ।

अंतरिक्ष अनुसंधान की भारतीय राष्ट्रीय समिति अगस्त १९६१ म अंतरिक्ष अनुसंधान का काय अणु ऊर्जा विभाग को सौंप दिया गया । विभाग ने १९६२ म इस काय के लिए डा० विन्नम साराभाई की अध्यक्षता म भारतीय राष्ट्रीय समिति गठित की ।

धुम्बा भूमध्यरेखीय राकेट प्रक्षेपण केन्द्र त्रिवेन्द्रम से १६ किलामीटर उत्तर म इसकी स्थापना १९६३ म की गई । नवम्बर १९६३ म यहा पर ध्वनित राकेट कायक्रम प्रारम्भ किया गया । १९६३ स १९७२ के जुलाई मास तक इस केन्द्र से ढाई सौ से अधिक राकेट छोडे जा चुके हैं । १९७१ की पहली छ माही मे ही ६३ राकेट छोडे गये । भारत ने अपना रोहिनी राकेट तयार कर लिया है । प्रथम रोहिनी राकेट (आर० एच० ७५) का सफन परीक्षण १९७० म किया गया । यही राकेट आगे चलकर उपग्रह के रूप मे विकसित करने के लिए काय चालू है ।

श्री हरिकोटा केन्द्र धुम्बा म प्राप्त सफलताआ के पश्चात भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान सगठन ने आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले म समुद्र म स्थित श्री हरिकोटा म उपग्रह प्रक्षेपण केन्द्र की

भारतीय फेलो ऑफ रॉयल सोसायटी

क्र०	नाम	विशेषता	आयु	पुरस्कार प्राप्ति
१	छुरणेंद जी, धारदशिर	जलपात निर्माता तथा इंजीनियर	३३	२७-५-१८८१
२	रामानुजन, श्रीनिवास	गणितज्ञ	३१	२-५-१९१८
३	सर जगदीशचंद्र बसु	जीवभौतिकविद	७२	१३-५-१९२०
४	सर सी० बा० रमन	भौतिकविद	३६	१५-५-१९२४
५	मघनाद साहा	भौतिकविद	३४	१२-५-१९२७
६	बीरबल साहनी	पत्रियावाटनिस्ट	४४	७-५-१९३६
७	सर वरीमनिमम श्रीनिवास कृष्णन	भौतिकविद	४२	४-३-१९४०
८	हामी जहागीर भाभा	भौतिकविद	३२	२०-३-१९४१
९	सर शातिस्वरूप भटनागर	रसायनज्ञ	४८	१८-३-१९४३
१०	मुयहम्मद चंद्रशेखर	खगोलभौतिकविद	३४	१६-३-१९४४
११	प्रधानचंद्र भट्टालनोविस	सांख्यिकीविद	५२	२२-३-१९४५
१२	दाराशा गीशेरवान वाडिया	भूगर्भवेत्ता	६४	२०-३-१९५८
१३	सत्येंद्रनाथ बोस	सांख्यिकीविद	६४	२०-३-१९५८
१४	शिशिर कुमार मित्रा	ऊपरी वायुमंडल भौतिक विद	६८	२०-३-१९५८
१५	तिरुवकट राजद्र शेपाट्टि	रसायनज्ञ	६०	२४-३-१९६०
१६	पचानन माहेश्वरी	वनस्पतिशास्त्री	६१	१८-३-१९६६
१७	बलियमूडि राधाकृष्ण राव	सांख्यिकीविद	४७	१६-३-१९६७
१८	एम० जी० व० मनन	भौतिकविद	४२	१९-३-१९७०
१९	बेंजामिन पियरी पाल	कृषिविज्ञाना	६६	१६-३-१९७२
२०	हरिप्रचंद्र	गणितज्ञ	५०	१५-३-१९७३
२१	एम० एस० स्वामिनाथन	कृषिविज्ञानी	४८	१५-३-१९७३

निरन्तर प्रगति

१९४७ म भारत स्वाधीन होने के साथ साथ वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सी०एस०आई०आर०) की स्थापना की गई। भारतीय उद्योगों की सहायता करने, औद्योगिक अनुसंधान और वैज्ञानिक मूल-वृक्ष को बढ़ावा देना तथा देश में अनुसंधान प्रयोगशालाओं का एक जाल सा विज्ञान के लिए सी०एस०आई०आर० के अन्तर्गत ४४ अनुसंधान संस्थानों कायम हैं। इनका बजट आरम्भ में १९५२ में ५ लाख था जो आज १९७३ में बढ़कर २३ करोड़ हो गया है। इसके अन्तर्गत विभिन्न संस्थाओं में १० हजार वैज्ञानिक और तकनीकीविद काम कर रहे हैं। सी०एस०आई०आर० ने अभी तक ५१२ प्रविधियाँ उद्योगों का उपयोग के लिए दी हैं। इनमें से २३७ का इस समय व्यावसायिक उपयोग किया जा रहा है।

गत २६ वर्षों में सी०एस०आई०आर० ने कई नए उद्योगों के विकास में तथा पुराने उद्योगों को समय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सी०एस०आई०आर० ने उद्योगों

के लिए आवश्यक कई प्रकार की सामग्री रचना घटका और साज सामान में भारत का ग्राम निभर बनाया है। इन सबसे भी अधिख सी०एम०आई०आर० का जो योगदान रहा है वह है विविध विषय में विभिन्न प्रकार का बच्चा सामग्री का सस्तर अनुसंधान प्रयत्न का बढ़ावा देना। बज्ञानिका का अधिख योग्य, अधिख रागम अधिख प्रनुष्ट और अधिन प्रगता कार्यों में अधिख दक्ष बनाकर उद्योग और समाज के विकास के लिये अधिख उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जाता रहा है। अधिखराश राष्ट्रीय प्रयागशालाएँ एसी बच्ची सामग्री का गयेगण करता है जिनकी उनको बहुत अधिख आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप बच्चे माल व सम्बन्ध में दक्ष कितना सक्षम ह और उसमें किन किन वस्तुप्रा की कमी है इस विषय में हम आज वही अधिख जानकारी प्राप्त है। देश में उत्पादन की बढ़ोतरी व लिये इस सम्बन्ध में ज्ञान होना प्रति आवश्यक है। देश में उपलब्ध कायला खान चमड़ा निम्न स्तर का प्राप्त होता है। उनका अच्छे उद्योग में उपयोग नहीं होता। सी०एम०आई०आर०आई० धनराश और सा०एन०आई०आई० मद्राम ने प्रमश कोयला खाल और चमड़े का उपयोगी बनाने के लिये नये तराक निराल हैं। कई उद्योगों में समुन्नत कोयला काम में लिया जाता है। ऐसे ही खाल और चमड़ा भी चमड़े का अच्छा सामान बनाने के लिये चमड़ा उद्योगों में काम में लिये जाते हैं। इस दृष्टि से सी०एम०आई०आर० का पिछले २६ वर्षों में भारत के आर्थिक विकास में जो योगदान रहा है वह महत्वपूर्ण है। उसके फलस्वरूप देश में शीशा चमड़ा रसायन धातु इलेक्ट्रानिक्स उपकरण जम उद्योगों का बहुत बड़े पमाने पर विकास हुआ है।

इलेक्ट्रानिक्स विगत दो दशका में इलेक्ट्रानिक्स ने भारत में प्रायः सभी मानव प्रयत्न में अपना स्थान बना लिया है। सी०एम०आई०आर० की दो प्रयागशालायें केन्द्रीय इलेक्ट्रानिक्स इजीनियरी अनुसंधान संस्थान (सी०ई०ई०आई०आई०) पिलाना और राष्ट्रीय भौतिक प्रयागशाला (एन०पी०एल०) नई दिल्ली देश में इलेक्ट्रानिक्स व विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

सी०ई०ई०आई०आई० ने टेलीविजन रिसेवरो का अभिकल्प तयार किया है और उसका विकास किया है। टी०वी० कमरे बनाये हैं टेप रिकार्डर स्टीरिओफोनिक पिक्अप डीजल इलेक्ट्रिक लोकांमाटिक व लिये एक्साइडेशन कंट्रोल सिस्टम तथा उनके लिये आवश्यक साज-सामग्री का देश में विकास किया है तथा उनके मूल्यों को गिराकर विदेशी मुद्रा की आवश्यकता में कमी की है। रल क इजिना में इलेक्ट्रानिक मोडयूल काम में आते हैं। ऐसे एक मोडयूल का मूल्य लगभग ३० हजार रुपये प्रति इजिन होता है। संस्थान ने इस इजिन में एक्साइडेशन कंट्रोल प्रणाली के इलेक्ट्रानिक भाग का अभिकल्प तयार कर, उसका विकास और निर्माण किया है। उससे देश का प्रतिवर्ष ३० लाख रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत होने की आशा है।

एन०पी०एल० ने भी सोल्डर माइका कपेसिटर सिरमिक कपसिटर मुलायम और बठोर फराइट पाइजो इलेक्ट्रिक सिरमिक आदि को तयार करने की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली है। उनका उत्पादन देश में आरम्भ हो जाने से आयात में कमी हुई है और इससे लगभग २७ लाख रुपये मूल्य की विदेशी मुद्रा की बचत संभव हो सकी है।

मशीन कन्द्रीय यात्रिक इजीनियरी अनुसंधान संस्थान (सी०एम०आई०आई०) दुर्गापुर ने कविल और तारो का बनाने की मशीन की एक शृंखला सी तयार की है। इनका उत्पादन आरम्भ हो गया है और इससे पर्याप्त विदेशी मुद्रा की बचत हुई है। इसके अतगत जो मशीनें बाजारों में आयी हैं उनमें से कुछ हैं पेपर इन्सुलेशन मशीन बाधिंग मशीन टिबस्टिंग

मशीन, स्ट्रिडिंग मशीन, कंटीयूथ्रस रेजिस्टेंस एनलायर और स्पूलर। एक २० अश्व शक्ति व फ्रिज ट्रैक्टर का भी देश में ही सपनतापूर्वक विनास किया गया है। इसको बनाने से सम्बन्धित जानकारी पञ्जाब स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट कॉर्पोरेशन को दे दी गयी है।

इंधन और धातु भारत में पाये जाने वाले कोयले में धातु रणना का समावेश होने के कारण उनको अच्छा नहीं माना जाता। अपने इन अश्वगुणा के कारण इस कोयले का उद्योग में विशेषकर धातुवम उद्योगों में, उपयोग नहीं हो पाता। इस कोयला को विभुद्ध करने का काम विशेषी विशेषता की दृष्टि में असम्भव था। किंतु केन्द्रीय इंधन अनुसंधान संस्थान (सी०एफ० आर०आई०), धनवाद ने इस सम्बन्ध में जो काम किया है उसके परिणामस्वरूप २५ करोड़ टन कायला प्रतिवर्ष साफ करने की क्षमता रखने वाले कारखाने का निर्माण हो सका है। कोयला शासन के कारखाने स्थापित करने से सम्बन्धित सभी आवश्यक जानकारी प्रदान करने संस्थान ने जिन उद्योगों को स्थापित करने में सहयोग दिया है उनका मूल्य ७० करोड़ रुपये से ऊपर है।

इंधन और स्नहन की कायक्षमता का मूल्यांकन सम्बन्धी काय विदेशों से करवाया जाता था और उनमें एक नमूने पर लगभग १५ हजार रुपये खर्च होते थे। भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आई०आई०पी०) देहरादून ने ऐसा ही समतुल्य काय किया है। संस्थान की विधि से इस काय पर लगभग ५ हजार रुपये व्यय होता है और एक नमूने पर १० हजार रुपये का ब्याज वित्तीय मुद्दा की बचत होती है। इसी प्रकार उद्योगों के उपयोग के लिये जो दूसरा काय संस्थान द्वारा किया गया है, वह स्नहन तैला की सफाई से सम्बन्धित विधि का विकास करना है। निजी क्षेत्र में लगभग १० उद्योगों को यह विधि उपयोग के लिये दे दी गयी है।

राष्ट्रीय धातुवम प्रयोगशाला (एन०एम०एल०), जमशेदपुर ने अयस्क और गाला के पूर्व लघुकरण और स्पज लोहे के उत्पादन के लिये प्रक्रियाओं का विकास किया है। जमशेदपुर में संस्थान भवन में २०० टन वार्षिक क्षमता का मग्नेशियम धातु तैयार करने का एक प्रारूप-संयंत्र लगाया गया है। यह देश का सामरिक महत्व के धातु और उनका मिश्रण तैयार करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। संस्थान ने कई और विविध प्रकार के लौह मिश्रधातु तैयार करने देश में इनकी कमी को पूरा करने का प्रयत्न किया है। इनमें टिन निबल टंग्स्टन, आदि उल्लेखनीय हैं।

श्रौपधि और चिकित्सा केन्द्रीय श्रौपधि अनुसंधान संस्थान (सी०डी०आर०आई०), लखनऊ ने गन्ध निराध के सम्बन्ध में अभी हाल ही में जो अनुसंधान काय किया है, वह काफी महत्वपूर्ण है। उनमें सेंटस्वैयर नामक एक युक्ति तैयार की है। इसको इस्तमाल करने से कई बुरा प्रभाव नहीं होता तथा इसमें अमपनता की संभावनायें भी बहुत कम हैं। संस्थान का एक अन्य नया आविष्कार है सेंटाजोलान, जिस ड्रग कट्टीनर ने श्रौपधि के रूप में श्रौपधालया में परीक्षण के लिये मुक्त कर दिया है।

काच, सिरेमिक और धमडा काच और सिरेमिक के क्षेत्र में अभी तक किए गए अनुसंधानों से काच और सिरेमिक तथा तत्सम्बन्धी उद्योगों के लिये आवश्यक सामग्री को देश में ही उपलब्ध करने में बहुत मदद मिली है। देश में इसके लिये जो विधियाँ तैयार की गयी हैं, उनमें लगभग २५३ करोड़ रुपये वार्षिक की बचत हुई है। ये अविवाश विधियाँ केन्द्रीय काच और सिरेमिक अनुसंधान संस्थान (सी०जी०सी०आर०आई०), कलकत्ता द्वारा तैयार की गयी हैं। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं व्यर्थ अन्नक सड़ना का निमाण सामरिक महत्व का प्रकाशीय काच अवरक्त किरण काच क्वाटज वाटर फिल्टर वेण्डल, इत्यादि।

कन्द्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्थान (सी०एल०आर०आई०), मद्रास ने आयात प्रति स्थापन करने बचत करने के सम्बन्ध में जा प्रक्रियायें विकसित की हैं उनमें से कुछ बॉलिंग चमड़े, पिक्किंग बण्ड स्ट्रेप और अन्य उद्योग सम्बन्धी चमड़े के निर्माण के लिये है। इनमें आयात में निरंतर कमी हुई है तथा १९५२-५३ में आयातित वस्तुओं का मूल्य में ७१ लाख रुपये की बचत के स्थान पर १९६६-७० में उनके मूल्य में ७७ करोड़ रुपये की बचत हुआ है।

संस्थान ने निर्माण कार्य विद्यमान रखकर जा विधिया विकसित की हैं, उनमें बच्ची खाल और चमड़ा के अतिरिक्त ई०आई० लदर क्लादिंग लदर वट रूयू लदर, लाइनिंग प्रोमलदर का सामान एनिमल केसिंग बकरे के बाल जूत आदि शामिल है। उनका १९५२-५३ में कुल निर्यात २७ ३६ करोड़ रुपये मूल्य का होता था। अब बढ़कर ६८ ५५ करोड़ रुपये मूल्य का हो गया है।

भोजन कन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सी०एफ०टी०आर०आई०), मसूर न यह सिद्ध कर दिया है कि शिशुओं के लिये भस के दूध से भी आहार तैयार किया जा सकता है। पहले यह समझा जाता था कि शिशु भस का दूध हजम नहीं कर सकत। इस विधि के विकसित होने से शिशु आहार उद्योग में बढ़ि हुई है। और इसका आयात कम होने से प्रतिवर्ष ६ करोड़ रुपये मूल्य की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है। संस्थान ने उच्च प्रोटीन वाले आहार की विधि भी विकसित की है। यह सस्ती है। इसमें पोषण तत्व भी पर्याप्त मात्रा में होता है और इसे तिलहन और दाल आदि में तैयार किया जाता है।

इजीनियरी संरचना इजीनियरी अनुसंधान केंद्र (एस०ई०आर०सी०) रडकी न अधिक तावत वाली शक्तिशाली लोह की डिफाउंड छेड़ें तैयार की हैं। इनका नाम प्रिपवार है और इन्हें क्रीट को प्रतिबलित करने के लिये मुलायम इस्पात की जगह इस्तेमाल किया जाता है। केंद्र ने जा एक अन्य विशेष कार्य किया है वह पर्यूनिकूलरशल से संबंधित है और इसमें इस्पात की काफी बचत हुई है।

केंद्र न कम्प्यूटर अध्ययन के आधार पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिजली ले जाने के लिये तार प्रिधान में इस्तेमाल होने वाले लोह के टावरों का अभिकल्प तैयार किया है। इसमें इस्पात में १० प्रतिशत की कमी हुई है। अनुमान है कि देश में इस्पात के सभी टावर यदि इस अध्ययन के आधार पर लगाये गये तो इसमें चौथी याजना अवधि में ८० करोड़ रुपये की बचत हो सकेगी।

कन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सी० वा० आर० आई०) रडकी न कई मजिल (२५) मकान बनाने के सम्बन्ध में अध्ययन किए हैं। संस्थान न माइक्रोवव एटना टावर लगाने के लिये फ्लैटरीड पावर की बुनियाद का उपयोगी पाया है। इसमें लगभग ८० प्रतिशत की बचत होना है। संस्थान न उत्तर रेलवे के लिये एम टावरों के कई डिजाइन तैयार किये हैं।

रसायन उद्योग रसायन के क्षेत्र में जा महत्वपूर्ण काम किए गए हैं उनमें विभिन्न रसायन तैयार करने की प्रक्रिया क्षरण राधा रम राशन मट्रिकम वाड आदि उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रीय रसायनिक प्रयोगशाला (एन०सी०एन०) पूना न उद्योगों में सम्बन्धित रसायन रम आर्गनि मध्यवर्ती रसायन आदि तैयार करने के लिये अभी तक १२० विधिया विकसित की हैं। इनमें में ८० विधिया उद्योगों का देना गया है और उनमें में भा एन०सी०एन० की ५५ विधिया उपयोग में आ रही हैं। अन्तर्गत अनुसंधान प्रयोगशाला (आर०आर०एन०), हैदराबाद न स्वयंसेवा बच्चा मामला में क्षरण राधा रम राशन तैयार किया है। आशा का जाती है कि इसमें विमान में वय में लगभग एक लाख लान्च रम राशन का आयात कम हो जाएगा। ●

गरीबी, बेरोजगारी तथा क्षेत्रीय असन्तुलन के
विरुद्ध सशक्त अभियान

मध्यप्रदेश की पाचवी योजना के प्रमुख लक्ष्य

- अनाज का उत्पादन ११३ लाख टन से बढ़ाकर १५८ लाख टन किया जाये।
- सिंचाई का क्षेत्रफल ८३ प्रतिशत से बढ़ाकर २३ प्रतिशत किया जाये।
- प्रत्येक जिले में कम से कम दो मध्यम उद्योग स्थापित किये जाय।
- विद्युत उत्पादन क्षमता वर्तमान ७५७५ मेगावाट से बढ़ाकर १०६० मेगावाट की जाय।
- राज्य की पत्तीस प्रतिशत ग्रामीण जनता का बिजली की सुविधा दी जाय।
- एक हजार से अधिक आवादी वाले गाँवों को सड़क से जोड़ा जाय।
- ग्यारह बचपन की आयु वाले बालकों को शिक्षा की सुविधा प्रदान की जावे।
- सभी समस्यामूलक ग्रामों में पीने के पानी की व्यवस्था की जावे।
- आदिवासी एवं हरिजन जनता के विकास के विशेष प्रयत्न किये जायें।
- गंदी वस्तियाँ का उन्मूलन किया जावे।
- भूमिहीनों को भूमि वितरित की जावे।

जनता के सहयोग से इन लक्ष्यों को पूर्ति सम्भव है।

(सूचना तथा प्रकाशन सचालनालय, मध्य प्रदेश,
भोपाल द्वारा प्रसारित)

मध्यप्रदेश की यात्रा कीजिये

तीर्थ यात्राओं की पावन भूमि

- सांची** जहाँ भगवान बुद्ध ने प्रमुख शिष्य सारिपुत्र और महामोग्लायन के अवशेष अवस्थित हैं।
- उज्जैन** भगवान महाकालेश्वर की नगरी, पृथ्वी का द्रव्य बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक।
- अमरकंटक** पतित पावनी नमदा का उदगम स्थान।
- चित्रकूट** जहाँ भगवान राम ने वनवास अवधि का कुछ काल व्यतीत किया और गोस्वामी तुलसीदास को दर्शन दिये।
- श्रीकारमाघाता** पुण्यतापी नमदा के बीच शोम गिरिक पर अवस्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।
- महेश्वर** आद्य शंकराचार्य की चरण धूलि से पुनीता महिष्मती की पुरातन नगरी।
- मध्यप्रदेश में तीर्थ-यात्रा एवं दृश्यावलोकन के श्रीर भी अनेक दर्शनीय स्थल।
- (पयटन सचालनालय, मध्यप्रदेश द्वारा प्रसारित)

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

-डा० चन्द्रिका ठाकुर, कुसुपति



जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना म० प्र० विधान सभा एक्ट द्वारा १ अक्टूबर सन् १९६४ का हुई।

भारत के अग्र कृषि विश्वविद्यालयों की भांति इस कृषि विश्वविद्यालय की गिनती पठन सयुक्त राष्ट्र समरिका व लण्डन ग्रांट विश्वविद्यालय की पंक्ति पर प्राथमिक है जिसे कि मुख्य उद्देश्य कृषि व सम्बंधित विज्ञानों व शिक्षण व विस्तार का एकीकरण करना है।

विश्वविद्यालय व ग्यारह सपटक महा विद्यालय एवं १९ अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रगत प्रदेश की विभिन्न भूमि एवं जलवायु वाले छात्रा म स्थित हैं।

नौ वर्ष के अल्पकाल में इस विश्व विद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति की है। व्यावहारिक पाठ्यक्रम तकनीकी प्रशिक्षण, धावा सोय शिक्षा के अतिरिक्त ग्राम सेवकों के लिये

अल्पकालीन स्नातक पाठ्यक्रम (कृषि महाविद्यालय, रीवा), दुग्धशाला एवं कुचकुट पालन के एक वर्षीय व्यावहारिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त सस्यविज्ञान, मदा विज्ञान सूक्ष्म विज्ञान और पशुपोषण विज्ञान म पी० एच० डी० उपाधि तक शिक्षा आरम्भ हो चुकी है। गृह विज्ञान एवं मत्स्य पालन महाविद्यालय भी सन १९७३ सत्र से जबलपुर म प्रारम्भ हो चुके हैं।

विश्वविद्यालय ने मुख्य फसला की कई जनत किस्में विकसित की हैं। इनमें गेहूँ नमदा ४ मूग जवाहर मक्का चन्दन सफर २ कपास खण्डवा २ तथा बटनावर २ मूगफली ज्योति और तिल एन ६२ अलसी और १७ और न० ५५ चना जे० जी० ६२ तथा मटर जी० सी० १४१ महत्वपूर्ण हैं।

मानव निर्मित अनाज ट्रिटिकल पर महत्वपूर्ण अनुसंधान काय इस विश्वविद्यालय म चल रहा है। विभिन्न दलहन फसला के लिये राइजोवियम सम्बन्ध तथा सोयाबीन कुसुम सूयमुखी पान एवं अदरक के अतिरिक्त अफीम पर विशेष अनुसंधान काय हुआ है। अस्सिचित खेती पर भी एक परियोजना इन्दौर तथा रीवा म प्रारम्भ का गई है। मिश्रित खेती पर प्रयोग जारी है।

पशुपालन एवं पशुचिकित्सा सहाय के अंतगत होवसटीन फ्लिजियन नस्ल के हिमोक्रूत बीय से धारधारकर गायों का सकरण किया जा रहा है। स्थानीय भेड़ों के सकरण से मांस एवं उन के गुण तथा मात्रा म सुधार किया गया है।

कृषि अभियांत्रिकी सहाय ने खेती के जनत यन्त्र निर्मित किए हैं। विस्तार शिक्षा गतिविधिया को गति देने के उद्देश्य स अनेक कृषि पुस्तिकायें कृषि नगर डायरी के अतिरिक्त कृषि विश्व नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया है। कृषि विश्वविद्यालय से खेती की और रेडियो कायक्रम काफी लोकप्रिय है।

विश्वविद्यालय ने कई योजनाए बनाई हैं जिन्हें पाचवी पंचवर्षीय योजना मे लागू किया जायेगा। इनमें वन महाविद्यालय की स्थापना उत्तम बीजों का उत्पादन एवं प्रमाणीकरण एवं कृषि अनुसंधान का विकास प्रमुख हैं।

मध्य प्रदेश को भारत का धान्यागार बनाना ही कृषि विश्वविद्यालय का लक्ष्य है।

पुस्तकालय

१५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हुआ। उस समय देश की केवल १५ प्रतिशत जनता ही लिख-पढ़ सकती थी। साक्षर लोग म से केवल एक चौथाई मिडिल तक शिक्षा पाए हुए थे। दूसरे शब्दों में, भारत की कुल जनसंख्या का ४ प्रतिशत से भी कम भाग इस योग्य था कि वह पुस्तकालयों का लाभ उठा सके। साथ ही साक्षर जनता का अधिकांश शहरों और कस्बों में था। देश की कुल जनता का ८८ प्रतिशत भाग ५ लाख गांवों में रहता था जहाँ तक ज्ञान का प्रसार पहुँचा ही नहीं था। यही नहीं जो ३ प्रतिशत जनता पुस्तकालयों का लाभ उठा सकती थी उसके लिए पुस्तकालयों की समुचित व्यवस्था नहीं थी।

स्वतंत्रता के बाद से देश में साक्षरता की दर १५ प्रतिशत से बढ़कर ३० प्रतिशत हो गई है लेकिन इसके बावजूद कुल मिलाकर निरक्षर लोगों की ही संख्या बढ़ी है। इसका कारण यह है कि नए साक्षर लोग पढ़ने की सुविधाओं के अभाव में निरक्षर लोगों की पंक्ति में आ जाते हैं। अतः नए लोग और अधिक शिक्षित लोगों के लिए मावजनिक् पुस्तकालयों की व्यवस्था करना अनिवार्य है।

इस समस्या का एक और भी पहलू है। व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कोई व्यक्ति चाहे वह इंजीनियर डाक्टर अथवा तकनीशियन हो एक बार गांव में नौकरी कर लेने के पश्चात् अपने कार्य क्षेत्र की नई-नई खोजों से अनभिज्ञ रहता है। उसके पास इनके बारे में जानकारी हासिल करने का कोई साधन ही नहीं है। ये विशेषण दूर दूर फले स्थानों में बिखर हुए हैं। अतः सभी के लिए अलग अलग पुस्तकालयों की व्यवस्था करना कठिन है। उन्हें पास के मावजनिक् पुस्तकालयों की सुविधा उपलब्ध करानी होगी और यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि देश भर में जगह-जगह मावजनिक् पुस्तकालय न खोल दिए जाएं। इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि किसी व्यक्ति को अपने घर अथवा काम करने के स्थान से पुस्तकालय तक पहुंचने के लिए २० मिनट से अधिक न चलना पड़े।

राष्ट्रीय मावजनिक् पुस्तकालय प्रणाली के अन्तर्गत कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय के अनुरिक्त देश के छोटे प्रशासकीय क्षेत्रों में एक-एक के द्वीय पुस्तकालय खोलने का व्यवस्था की गई है। इनके अनुरिक्त जिला पुस्तकालय प्रणाली के अन्तर्गत कस्बों और गांवों में पुस्तकालय खोलने का प्रयत्न है।

मद्रास और बम्बई में क्षेत्रीय के द्वीय पुस्तकालय खोले गए हैं। आज २१ में से १७ राज्यों में के द्वीय या राज्य पुस्तकालय हैं। इनके अलावा देश के ३७१ जिलों में से ३३६ जिलों में जिला के द्वीय पुस्तकालय हैं। १५०० विकास खण्डों और ४०,००० गांवों में भी पुस्तकालय हैं।

पुस्तकालय हैं जिनमें काशी हिंदू विश्वविद्यालय का पुस्तकालय मकान की दृष्टि से सबसे बड़ा है जिसमें ८ लाख पुस्तकें हैं। कालेजा में आगरा कालेज का क्षेत्रीय ग्रंथालय प्राचीन और विज्ञान है।

नेशनल लायब्रेरी कलकत्ता

यह भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय है जो सामान्यतया सभी संकलना के लिए है। यह पुस्तकालय सार्वजनिक रूप में १८३५ में स्थापित हुआ था। १९३० में इसका पुनर्गठन हुआ और इसका स्वरूप इम्पीरियल लाइब्रेरी का है तथा स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय पुस्तकालय का रूप धारण किया जिसका फ़िनायाम स्व० ५० जवाहरलाल नेहरू ने १९६३ में किया था।

इसका संपूर्ण संकलन १४ लाख है। इस पुस्तकालय का ७५ ००० पुस्तकें भर आशुताप मुकर्जी से दान के रूप में प्राप्त हुईं। पूरे वर्ष में यह पुस्तकालय केवल तीन दिन बंद रहता है और ५२३ कार्यकर्ता काम करते हैं। १७ ००० प्रकाशन प्रति वर्ष बुक डिपॉजिटरी एक्ट के अधीन पर इस पुस्तकालय का प्राप्त होने हैं और वार्षिक खर्च लगभग ३३ लाख रुपये है। इस पुस्तकालय में १७ ००० पाठक पंजीकृत हैं और ७७ ००० से अधिक पुस्तकें प्रत्येक वर्ष पढ़ने के लिए प्रदान की जाती हैं।

3819

C

AGARWAL BROTHERS

Cardamom Stockist
General Merchants, Commission Agents

HEAD OFFICE 'GANGTOK
Association All Over Sikkim

Phone 237, 376

लखपति बनने का सुनहला अवसर

एक रुपये का टिकट खरीदिये

और

इस मौके से लाभ उठाइये

हर ड्रा पर अनेक इनाम

केवल एक रुपये में



प्रति सप्ताह सम्पन्न बने



बिहार स्टेट लाटरीज

पारिवारिक जीवन का सच्चा सुख
अपने बच्चों की
सुखी, स्वस्थ और हसते खेलते देखने में है ।
बच्चों को चाहिए

अच्छा पीटिक भोजन
अच्छे कपड़े
अच्छी शिक्षा ।

और माता पिता चाहते हैं

उनका बच्चा सदैव स्वस्थ और हूट्ट पुट्ट रहे
बच्चे को आवश्यक वस्तुओं की कमी न रहे,
बच्चे को अधिक से अधिक उच्च शिक्षा प्राप्त हो,
बच्चा बड़ा होकर कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाये ।

यह सब सम्भव है,

यदि

बच्चों की सरया दो या तीन से अधिक न हो ।

पारिवारिक सुख के लिये
भविष्य की समृद्धि के लिये

परिवार नियोजन कार्यक्रम का लाभ उठाइये ।

(लोक स्वास्थ्य संचालनालय (परिवार नियोजन) म प्र द्वारा प्रसारित)

प्रशिक्षित बेरोजगारों को
चिन्ता मुक्त करने के ठोस प्रयत्न
छोटे उद्योग स्थापित करने के लिए
राज्य शासन द्वारा विशेष
सुविधायें

- छात्रवृत्ति और सांघातिक प्रशिक्षण की व्यवस्था ।
- दुलभ बच्चे माल की प्राप्ति की सुविधा ।
- भूमि एवं विहाना के आवंटन में प्राथमिकता ।
- विपन्न खरीदों पर यत्न सुलभ ।
- राज्य सहायता अधिनियम के अंतर्गत सहायता ।
- मध्यप्रदेश वित्त निगम से ऋण प्राप्ति की सुविधा ।
- मुक्त तकनीकी सहायता और उद्योगों के चयन में मार्ग दर्शन ।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क साधिये

उद्योग संचालक, मध्यप्रदेश, भोपाल

(उद्योग संचालनालय मध्यप्रदेश द्वारा प्रसारित)

गुजरात स्टेट को-ऑपरेटिव लैंड डेवलपमेंट बैंक लि०

४८६, आश्रम रोड, अहमदाबाद-६

टेलीफोन नंबर { ५०५३६ एम० डी०
७६२८७ } कार्यालय
७६१८८ }

ग्राम 'सेतो बक'

फिक्सड डिपोजिट योजना

इस बक में आकषक व्याज की दर से फिक्सड डिपोजिट में धन राशि जमा करवाकर अपने धन का उचित लाभ उठाईये।

१ वष के लिये ७ प्रतिशत
० वष के लिये ७।१ प्रतिशत

बैंक का कृषि-ऋण में योगदान

सदस्य सख्या	६ लाख ४५ हजार
शेयर कैपिटल	₹० १० करोड ८१ लाख
रिजर्व फंड	₹० २ करोड ४६ लाख
डिबेंचस द्वारा	
एकत्रित किया हुआ फंड	₹० १६२ करोड ४१ लाख
कुल ऋण	₹० १७३ करोड ५३ लाख

मोरनभाई भावजीभाई पटेल

म्नीषामाई दरजी

ह० म० जोशी

चेयरमेन

उपाध्यक्ष

आई ए एस
मनेीजग डायरेक्टर

महावाणी

देशवासीहरूको सुख दुःख नै हाम्रो सुख दुःख हो,
देश र जनताको स्वार्थ नै हाम्रो एकमात्र स्वार्थ हो ।

—श्री ५ वीरेन्द्र

सुमकामनाका साथ
डा० योगेन्द्र झा
काठमांडू

गुजरात स्टेट को-ऑपरेटिव लैंड डेवलपमेंट बैंक लि०

४८६, आश्रम रोड, अहमदाबाद-६

टेलीफोन नंबर { ५०५३६ एम० डी०
७६२८७ } कार्यालय
७६१८८ }

ग्राम 'खेती बक'

फिक्सड डिपोजिट योजना

इस बक मे आकपक ब्याज की दर से फिक्सड डिपोजिट मे धन राशि
जमा करवाकर अपने धन का उचित लाभ उठाईये ।

१ वष के लिये ७ प्रतिशत
२ वष के लिये ७।१ प्रतिशत

बैंक का कृपि-ऋण मे योगदान

सदस्य सदस्या	६ लाख ४५ हजार
शेयर केपिटल	₹० १० करोड ८१ लाख
रिजर्व फंड	₹० २ करोड ४६ लाख
डिबेंचस द्वारा	
एकत्रित किया हुआ फंड	₹० १६२ करोड ४१ लाख
कुल ऋण	₹० १७३ करोड ५३ लाख

मौरनभाई मावजीभाई पटेल

भीषाभाई दरजी

₹० म० जोशी

चेयरमेन

उपाध्यक्ष

आई ए एस
मनेजिंग डायरेक्टर

महावाणी

देशवासीहरूको सुख दुःख नै हाम्रो सुख दुःख हो,
देश र जनताको स्वार्थ नै हाम्रो एकमात्र स्वार्थ हो ।

—श्री ५ वीरेन्द्र

शुभकामनाका साथ
डा० योगेन्द्र झा
काठमांडू

गुजरात स्टेट को-ऑपरेटिव लैंड डेवलपमेंट बैंक लि०

४८६, आश्रम रोड, अहमदाबाद-६

टेलीफोन नंबर { १०५३६ एम० डी०
७६२८७ } कार्यालय
७६२८८ }

ग्राम 'खेती बक'

फिक्सड डिपोजिट योजना

इस बैंक में आकषक ब्याज की दर से फिक्सड डिपोजिट में धन राशि
जमा करवाकर अपने धन का उचित लाभ उठाईये ।

१ वर्ष के लिये ७ प्रतिशत
२ वर्ष के लिये ७।। प्रतिशत

बैंक का कृषि-ऋण में योगदान

सदस्य सख्या	६ लाख ४५ हजार
शेयर कैपिटल	₹० १० करोड ८१ लाख
रिजर्व फंड	₹० २ करोड ४६ लाख
डिबेंचर्स द्वारा	
एकत्रित किया हुआ फंड	₹० १६२ करोड ४१ लाख
कुल ऋण	₹० १७३ करोड ५३ लाख

मोहनमाई मावजीमाई पटेल

भीणामाई दरजी

ह० म० जोशी

चेयरमेन

उपाध्यक्ष

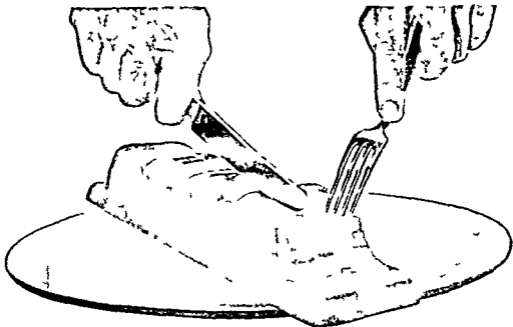
आई ए एस
मनेजिंग डायरेक्टर

महावाणी

देशवासीहरूको मुख दुःख नै हाम्रो सुख दुःख हो,
देश र जनताको स्वार्थ नै हाम्रो एकमात्र स्वार्थ हो ।

—श्री ५ वीरेन्द्र

शुभकामनाका साथ
डा० योगेन्द्र झा
काठमाडौं



HINDALCO aluminium feeds 5,000 factories



Hindalco provides Aluminium, a vital raw material to over 5,000 factories in India. Factors manufacturing Electrical Cables and Conductors, Household Utensils and Appliances, Transport Vehicles, Packaging and Containers, Building and Construction, Furniture and Architectural Sections, Defence Equipment, Dairy and Farming requisites, rain and rust proof grain silos, Paints, Machine parts, Coins. The manufacturers of

these and a hundred other products depend on metal from Hindalco.

In May 1962 Hindalco went into production with a primary capacity of 20,000 tonnes. Ten years later the capacity was raised to 95,000 tonnes to meet the growing requirements of aluminium, the metal for today and tomorrow.



HINDUSTAN ALUMINIUM CORPORATION LTD
P.O. Renukoot, Dist. Mirzapur, U.P.

Contact Hindalco Salesperson Centre, 22 Villing Sable Marg, Lucknow 7 for assistance in setting up small scale projects.



PODAR
textiles



Podar Mills Ltd.

**Podar Silks &
Synthetics Ltd.**

Podar Processors

Podar Spinning Mills

Podar Knittings Ltd.

FOR YOUR
ANNUAL DIARIES



BHAVE PVT. LTD.

DESIGNERS & MANUFACTURERS

OF

**EXECUTIVE DIARIES, THAT SAVE TIME
(A MUST FOR EVERY BUSY EXECUTIVE)**

&

VARIOUS OTHER DIARIES

ALSO

Specialists in **OFFSET PRINTING, PAPER GRAINING
& VARIOUS P V C PLASTIC ARTICLES**

**242, Jahangir Boman Behram Marg, Byculla,
BOMBAY - 8**

(India)

Gram BHAVEDIARY

Tel 379361

WITH THE BEST COMPLIMENTS

The Indian Iron & Steel Corp.

Structural Engineers

&

[Registered Stockists of Iron and Steel



Manufacturers of :

Steel hangers
Steel windows
Steel sashes
Steel doors
Chimneys
Tanks etc

Stockists of

Angles
Rounds
Beams
Plates
Sheets
Weld mesh etc



Telegrams : STEELCO

Phones *Offi* 72399
 77145
P M *Modi* 74638
 Res 34935

Office and Workshops

8571 Rastrapathi Road
Opp to Karbala Maidan

SECUNDERABAD

**AN
INVITATION
TO
ENTREPRENEURS
TO START
INDUSTRIES
IN
GUJARAT**



GSFC

WILL BE HAPPY TO ASSIST YOU BY PROVIDING
LOANS ON LONG AND MEDIUM TERM
BASIS ● GUARANTEERING DEFERRED PAY
MENT TO SUPPLIERS OF MACHINERIES IN
INDIA ON LIBERAL TERMS ● UNDERWRITING
THE SHARES ● AND SUBSCRIBING TO DEBEN
TURES ● LOANS AT CONCESSIONAL RATES
IN BACKWARD DISTRICTS

**GUJARAT STATE
FINANCIAL CORPORATION**

ASHRAM ROAD
P B NO 4030
AHMEDABAD 9

है। क्रिकेट के क्षेत्र में सन १९३२ में टेस्ट श्रृंखला शुरू होने से भारत ने ब्रिटेन पर अजीत वाडेकर की कप्तानी में दूसरी सफल विजय प्राप्त की। भारत २-१ से विजयी रहा। अजित वाडेकर के नाम एक और विजय लिखी गई और विजय की सीढ़ी पर भारतीय क्रिकेट का एक और अध्याय जुड़ गया जो कुल मिलाकर एक सुखद घटना कही जाएगी।

हाकी मोर्चे पर भारतीय टीम ने विश्व कप के फाइनल में चहुमुखी खेल का प्रदर्शन किया किन्तु दुर्भाग्य से ट्राईबेकर में हार गई। फिर भी भारतीय टीम का खेल ओरन्जिन्ग में जहाँ उस केवल वास्तव पर ही ध्यान रखना पड़ा काफी अच्छा एवं प्रभावी रहा। १९२८ में एमस्टर्डम में भारत ने प्रथम बार अपना प्रभुत्व जमाया था। भारत एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय खिताब जीतने से वंचित रह गया। हाकी के म्यान में पुराने प्रतिद्वंदी पाकिस्तान को १० से हराने के बाद ऐसा निश्चित प्रतीत होने लगा था कि एक बार फिर एमस्टर्डम से ही भारतीय हाकी के नये युग की शुरुआत होगी। हमारी टीम ने अत्यंत मजबूत जापानी टीम का डटकर मुकाबला किया तथा उसे हराया। पश्चिम जर्मनी का अंत तक मुकाबला किया। पाकिस्तान को भी हराया अंत में पनाल्टी स्ट्रोक का लाभ न उठा मकन के कारण ही स्वर्णपदक से वंचित रहना पड़ा।

अक्टूबर १९७३ में राजधानी दिल्ली में भारतीय ग्रांड प्री टेनिस चंपियनशिप में मद्रास के युवक विजय अमतराज ने आस्ट्रेलिया के अनुभवी टेनिस खिलाड़ी माल एण्डरसन को पराजित कर पुरुष एक्ल का खिताब जीता। छोटे एशियाई जूनियर टेनिस का विजेता भारत बना। चंपियनशिप के फाइनल मुकाबले में उसने ईरान को ३-० से मात दी। एक्ल प्रतियोगिता में भी भारत का प्रथम शानदार रहा और वह छठे एशियाई जूनियर टेनिस में एक्ल प्रतियोगिता का उपविजेता रहा और युगल का विजयता बना। अमतराज को भारतीय टेनिस का प्रथम अचूक खिलाड़ी माना गया है। अब लगभग दो दशक के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि मानो भारतीय टेनिस में इतिहास में विश्व चंपियन बनने की सबसे अधिक सम्भावना १९ वर्षीय विजय अमतराज की ही हो।

भारतीय गोल्फ टीम ने जिम में लक्षमणसिंह आर० के० पीताम्बर पी० जी० सेठी और बिन्धुमणिधर जकार्ता में एशियाई एम्बेयोर गोल्फ टीम का खिताब जीता। देश का प्रतिनिधित्व करने वाले पांचों मुकदमावाजी ने एक स्वर्णपदक एवं दो रजत पदक प्राप्त कर देश के गौरव को बढ़ाया है। विश्व विनियम में भारत के मतीश माहन और माल्कन फरेरा ने द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

कुश्ती खेल में एम कप लडू चौगुन राजधानी में आयोजित महानभारत कसरी प्रतियोगिता में मल्लभारत कसरी के गुजराती जीतने में सफल हुआ। पहलवान नन्दपाल डम बार भारतकसरी के सतपाल उनीयमान पहलवान भारत कुमार का गुज जातने में सफल हुआ। घातम्बिक घना में गढ़ा पर प्रशिक्षण न होने के कारण हा कुश्ती के जादूगर पद्मश्री मास्टर चण्डीराम मराठ्य पहलवान भी माने जा सकते हैं। आगामी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले पहलवानों की शीघ्र घोषणा होना चाहिए। ऐसा विश्वास है कि आगामी वर्ष इस क्षेत्र में भी भारत नई उपलब्धियां प्राप्त करेगा।

एशियाई खेलों में भारत का दूसरा स्थान

१६ नवम्बर ७३ में ३ नवम्बर ७३ तक छठिन का प्रथम एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता मनाता में हुई। पहलवानों का भारत का स्थान दूसरे नवम्बर पर घोषा जयति जावान प्रथम

रहा। कुन मिनाकर १८ दान इन्में भाग लिया। प्रतिभागिता के परिणाम का देखकर कृत
जा सकता है कि भारतीय एथलीट्स बिना भर के एथलीट्स से तानहीं, मात्र एशिया के अन्य
दान के एथलीट्स से किसी प्रकार भी कम नहीं रहे। भारत न कुन मिनाकर १६ पदक हासिल
लिए जिनमें ४ स्वर्णपदक ६ रजतपदक और ६ कांस्यपदक हैं। भारतीय टीम के कप्तान प्रवीण
कुमार चक्का फेंकने में स्वर्णपदक तान जीत सके फिर भी १६ ८ मीटर चक्का फेंकर रजत
पदक जीतने में सफलता प्राप्त की।

प्रतिभागिता में अजमेर सिंह ने ६० ४० मीटर तार गाना फेंकर भारत के लिए पहला
स्वर्णपदक प्राप्त किया। ५००० मीटर की दौड़ में भारत के विनाय सिंह जापान के ट्शिमा साता
से केवल ० १ सेकेंड से पीछे रहे गए, उन्हें रजत पदक मिला। १०,००० मीटर की लम्बी दौड़
में जापान के ट्शिमा साता और भारत के विनाय अन्ता एकद्वारा पुन प्रथम व द्वितीय नम्बर पर
आए। २० नवम्बर (शनिवार) का भारत के एथलीट्स ने मान पदक जीत जिनमें तान
स्वर्णपदक था। उनके प्रतिस्पर्धी गाना फेंकने के मुकाबले में तान भारत न तीना स्थान प्राप्त
किए। गाना सिंह ने १३ मीटर गाना फेंकर पहला स्थान (स्वर्णपदक) गुजरात सिंह ने
दूसरा व बहादुर सिंह ने तीसरा स्थान अर्जित किया।

द्वितीय अर्ध (त्रिकूद) में माहिन्दर सिंह जिन ने १४ ६६ मीटर कूदकर स्वर्णपदक और
टी० सी० साहानान ने १८ ६६ मीटर कूदकर कांस्य पदक लिया। भारत के विजय चौहान ने
त्रिकूद प्रतिभागिता में २८५ अंक प्राप्त करके स्वर्णपदक लिया। दूसरी एशियाई एथलेटिक
प्रतिभागिता १९५४ में दक्षिण काठिया में होगी।

एशियाई खेल

एशियाई खेलों का प्रथम आयोजन स्व० प्रधान मंत्री प० जवाहरलाल नेहरू
का प्रेरणा से १९५१ में भारत में हुआ। अन्त जापान का दान चम्पियन बना जबकि भारत
ने ५ स्वर्ण ८ रजत और ६ कांस्य पदक जीत कर दूसरा स्थान प्राप्त किया था। उनके
बाद इन खेलों का आयोजन १९५६ में मनामा १६५८ में टाकिया १६८० में जकार्ता
१९६६ में बैंकाक और १९७० में भी बैंकाक में किया गया। भारत का स्थान पाचवा
था। उनमें ६ स्वर्ण ६ रजत और १० कांस्य पदक जीत। १६८० में मनामा में खेलों का
आयोजन हुआ भारत ने १६ पदक जीत।

फुटबाल प्रथम एशियाई खेलों में फुटबाल में भारत ने स्वर्ण पदक जीता था।
दूसरे खेलों में सेमीफाइनल में इंडोनेशिया से पराजित हो गया। तीसरे खेलों में पुन सेमी-
फाइनल में काठिया से हार गया। चौथे खेलों में पुन स्वर्ण पदक जीता। पाचवें खेलों में
विन्डन अन्तर्गत रहा। बैंकाक के छठे खेलों में जापान का पराजित कर कांस्य पदक जीता।

दौड़कूद (एथलेटिक) दौड़कूद में भारत ने हर बार एशियाई खेलों में धाक
बनाये रखी। प्रथम खेलों में हमारा धमर नेवी विंडन १०० एव २०० मीटर में रिकार्ड बनाये।
चक्का और गाना फेंक में भारत का एकाधिकार रहा। दूसरे खेलों में बाघा दौड़ में मदन एव
उन्नी कूद में अजीत ने स्वर्ण पदक जीत। तान खेलों में मिनसा सिंह ने २०० फीट ६००
में रिकार्ड बनाए। महिन्दर सिंह त्रिकूद में प्रथम रहे। गुजरात सिंह ने टेकवलय में स्वर्ण
पदक पाया।

जकार्ता खेलों में पुन मिनसा का मुकाबला न था। ८०० मीटर में दनजीत १५००
में महिन्दर, ५ और तन हवार में उरता प्रथम रहे। राने में पुन भारत ने स्वर्ण

बनाया। चौथे खेला में भारत ने मिलखा सिंह न ४००, माहिन्दर ने १५००, विलोड ने १०,००० मीटर १०० X ४ रीले में स्वर्ण पदक जीते।

पाचव खेला में भारत के अमर ६०० मीटर में बाबूबा ८०० मीटर में भीमसिंह ऊची कूद में जोगिन्दर गोला फन में प्रवीण चनवा फन में स्वर्ण पदक विजेता बने।

छठे खेल में भारत के माहिन्दर न कूद में जोगिन्दर न गाना फेंकन में तथा प्रवीण ने डिसकस में तथा महिलाओं की ४०० मीटर दौड़ में कमलजीत मधु ने स्वर्ण पदक जीते। लार्मसिंह त्रिकूद रार्मसिंह ८०० मीटर चौहान ६०० रील स्ववीरा ५००० मीटर में रजत पदक और मुच्चासिंह ४०० मी० गुरमज ३००० मीटर पगवाधा भीमसिंह न ऊची कूद में १०० मीटर रील में वास्य पदक जीते।

हाकी नई दिल्ली और मनीला के खेला में हाकी शामिल नहीं थी। १९५८ में हाकी प्रथम बार सम्मिलित की गई। भारत गाने अरुणापत से दूसरा और पाकिस्तान प्रथम माना गया। जकार्ता में भारत ०-२ से पाकिस्तान से फाइनल में हारा। बकाव में भारत न प्रथम बार स्वर्ण पदक जीता। छठे खेला में फाइनल में पाकिस्तान में ०-१ से हारा। भारत ने रजत पदक जीता।

कुश्ती दूसरे एशियाई खेला में जब कुश्ती समाविष्ट हुई तो भारतीय टीम ने दो पदक से जीत का श्रीगणेश किया। हमारे खानिद का रजत और राय को वास्य पदक मिला। तीसरे खेला में हमारे पहलवान जकार्ता नहीं गए। जकार्ता के चौथे खेला में हमारे सात पहलवानों ने बारह पदक जीते। हमारे मालवा मास्तिमान और गणपत ने एक-एक स्वर्ण के साथ एक-एक अग्र पदक जीता। उदयचन्द ने दो रजत तथा पाच और गुहम ने एक-एक वास्य पदक पाया। पाचवें खेला में हमारे पहलवानों ने कमाल ही कर लिया। सात सप्ताश्या न १२ पदक जीते। मानवा स्वर्ण व वास्य मास्तिमान स्वर्ण व रजत गणपत स्वर्ण व रजत उदयचन्द दो रजत सज्जनसिंह रजत गुहम वास्य व रजत पाडे वास्य। कुश्ती के श्रीको रामन और प्री स्टाइल दोनों मुकाबला में हमारे पहलवानों की धाक रही। बकाव के छठे खेला में भारत का एक स्वर्ण एक रजत और तीन वास्य पदक मिले। मास्टर चन्दगीराम स्वर्ण जीतसिंह रजत और ओमी मुक्तिदार व नेत्रपाल के वास्य पदक मिले।

अग्र खेल मुक्केबाजी के हैवीवेट वग में ह्वार्मिंह न स्वर्ण पदक जीता। फ्लोरबट में मुन्नु स्वामी वेणु न रजत जीता। वाटरपोलो में भारत न १९५१ के बाद दूसरी बार भाग लिया और रजत पदक प्राप्त किया। साइकिलिंग और बास्केटबाल में अग्रफल रहे। नौका दौड़ में सोली काट्टवटर और अफसर इमन ने वास्य पदक जीता।

राष्ट्रमंडल खेल

प्रारम्भ में यह खेल ब्रिटेन के उपनिवेशों और ब्रिटेन के बीच आपसी सदभावना बनाये रखने के लिये शुरू किये गये थे। धीरे-धीरे उमक सभी उपनिवेश आजाद हो गये अतः अब यह राष्ट्रमण्डल खेलों का रूप ले चुक है। यह खेल प्रत्येक चार वर्ष बाद होते हैं।

भारत ने मिडनी खेलों से इसमें भाग लेना शुरू किया था। १९५८ के कार्डिफ खेलों में हम अच्छी सफलता मिली। हमारे अग्रक मिन्चार्मिंह और पहलवान लीलाराम ने स्वर्ण पदक जीते। चीनी हमल के कारण भारत न १९६२ में भाग नहीं लिया। जमेका में आयोजित १९६६ के खेलों में हमारे तान पहलवानों भीमसिंह विशम्भर और मुक्तिदार सिंह

भारतीय खिलाड़ियों के राष्ट्रीय रेकार्ड (१ अक्टूबर १९७३ तक)

१०० मीटर	नेतय पावेल	१० ४ मिनट	१९६५
२००	मिनया मिह	२० ८	१९६०
६००		४५ ६	१९६०
८००	श्रीराम सिंह	१ ४७ ३	१९७२
१ ५००	गडवन्त मिक्वेरा	३ ६३ ७	१९६६
५ ०००		१६ ०१ ६	१९७२
१० ०००	कृपाल मिह	२९ ३६ ०	१९६७
३ ०००	स्टापलचेज गुरमज मिह	८ ५३ २	१९७०
११०	बाधा गुरुवचन मिह	१६ ०	१९६५
४००	बाधा अम तपाल	५२ २	१९६२
ऊंची कूद	भाम सिंह	२ ०९ मीटर	१९६८
पोल बाँट	सखबीर मिह	४ २१	१९६९
सबो कूद	टी० सी० युहान	७ ६०	१९७२
तिकडी कूद	मोहिंदर मिह गिल	१६ ७९	१९७१
शाट पुट	जगराज सिंह	१७ ८६	१९७३
चक्का फेंक	प्रवीण कुमार	५६ ७४	१९७३
हमर फेंक		६५ ७६	१९६९
नेजा फेंक	राज मिह	७० १८	१९७३
डिकेथलन	वी० एम० चौहान	७३७८ ग्राम	१९७२
६×१०० मीटर रिल	राष्ठीय दल	४० ५ मिनट	१९६४
४×६००		३ ०८ ८	१९६४
मेरायन	हरनेक मिह	२ घंटे १८ मि १८ ६ स	१९६९
२० किलोमीटर पदन	बचन सिंह	१ घं २७ मि ५७ ६ से	१९६७
५० किलोमीटर पदन	विशान सिंह	४ घं १९ मि ४६ ४ स	१९७०

भारतीय महिला खिलाड़ियों के राष्ट्रीय रेकार्ड (१ अक्टूबर १९७३)

१०० मीटर	एम डी साजा	१२ २ स	१९६१
	निमना उथमा	१२ २	१९७२
२००	गन राधा	२४ ९ ,	१९७३
४००	कमलजीत सधू	५६ ३ ,	१९७०
८००	जलज नायन	२ १४ २ ,	१९७३
१,५०० ,		४ ४४ ३ ,	१९७३
१०० मीटर बाधा	मजात बालिया	१४ ३ ,,	१९७०
ऊंची कूद	गाम्ज	१ ५७ मीटर	१९६८
सबो कूद	मी पारज	५ ७१ ,	१९६६

शॉर्ट पुट	क छत्रवाल	११२ ८३ "	१९६६
चक्का फेंक	अनुसूया वार्द	८१ २	१९७३
नजा फेंक	ई डेवनपाट	८७ ३८	१९६४
पेंटाथलन	मी फारेज	३९३१ अक	१९६५
४x१०० मीटर रिल	राष्ट्रीय दल	४९ ४ म	१९५८

ओलंपिक खेल प्रतियोगिताओं में भारत का स्थान

१९००	परिम	एम जी प्रिचाड २०० मीटर रजत पदक।
१९२४	परिस	जे के पिट ४०० मीटर मेमी फाइनल म ततीय।
१९२४	परिम	प्लीप मिह ऊची कूद म छठा स्थान।
१९३२	लाम एजल्स	एम मटन ११० मीटर बाघा म सातवा स्थान।
१९४८	रान	एच रिवाँना निकडी कूद क फाइनल म बाहर।
१९४८	लदन	ब नदेव मिह उची कूद क फाइनल म बाहर।
१९४८	लदन	क डी जादव बटमवेट कुश्ती म छठा स्थान।
१९५२	हेलमिका	क डी जाव प्री स्टाबल बटमवेट म कांस्यपदक।
१९५२	हेलमिकी	मायू प्री स्टाइन फेन्स्वेट म चौथा स्थान।
१९५२	हैनमिकी	लेवी पिटो १००-२०० मीटर दौड म ममी फाइनल तक पहुँचे।
१९६०	राम	मिलखा मिह ४०० मीटर म चौथा स्थान।
१९६०	रोम	माघा मिह मिडिनवेट कुश्ती म छठे।
१९६४	टाकिया	गुरवचन मिह ११० मीटर बाघा म पाचव।
१९६४	टाकियो	स्टीफा डिमूजा ८०० मीटर समा फाइनल म सातवा स्थान।
१९६४	टाकियो	विशम्भर मिह प्री स्टाइल बटमवेट कुश्ती म छठा स्थान।

ओलंपिक हाँकी में भारत

१९२८	स्वण पदक	१९५६	स्वण पदक
१९३२		१९६०	रजत पदक
१९३६		१९६४	स्वण पदक
१९४८	,	१९६८	कांस्य पदक
१९५२:		१९७२	“ "

फुटबाल म १९५६ म चौथा स्थान

२०वें म्युनिख ओलम्पिक में पदक विजेताओं की सूची

	स्यण	रजत	कास्य	कुल
सावियत रूम	५०	२७	२२	९९
अमरीका	३३	३१	३०	९४
पूव जमनी	२०	२३	२३	६६
पश्चिम जमनी	१३	११	१६	४०
जापान	१३	८	८	२९
ग्राम्स्त्रिया	८	७	२	१७
पोनड	७	५	८	२०
हंगरी	६	१३	१५	३४
बल्गारिया	६	१०	५	२१
इटली	५	३	१०	१८
स्वीडन	४	६	६	१६
ब्रिटेन	४	५	९	१८
रूमनिया	३	१	४	८
क्यूबा	३	१	४	८
हालड	३	१	१	५
फ्रान्स	२	८	७	१७
चकास्लोवाकिया	२	४	२	८
केन्या	२	३	४	९
युगोस्लाविया	२	१	४	७
नार्वे	२	१	१	४
उत्तर कारिया	१	१	३	५
यूजीलड	१	१	१	३
युगाडा	१	१	०	२
डेनमार्क	१	०	०	१
स्विटजरलड	०	३	०	३
कनाडा	०	२	३	५
ईरान	—	२	१	३
बर्जियम	०	२	०	२
यूनान	—	२	—	२
ग्राम्स्ट्रीया	०	१	०	१
कोलंबिया	०	१	२	३
मक्सिका	०	१	०	१
पाकिस्तान	०	१	०	१
ट्यूनिशिया	०	१	०	१

अर्जेंटीना	०	१	०	१
दक्षिण कोरिया	०	१	०	१
लेबनान	०	१	०	१
तुर्की	०	१	०	१
मंगोलिया	०	१	०	१
ब्राजील	०	०	२	२
इथियोपिया	०	०	०	०
स्पेन	०	०	२	२
जमका	०	०	१	१
भारत	०	०	१	१
नाइजीरिया	०	०	१	१
घाना	—	—	१	१

अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट भ्रमण

वेस्टइंडीज के विरुद्ध १९७१ म वेस्टइंडीज भ्रमण के दौरान भारत न शृंखला जीती । इसम पूर्व वहा दा शृंखलायें हारी । भारत म तीन शृंखलाया म हम हार । अग १९७४-७५ म वेस्टइंडीज टीम भारत भ्रमण पर आयेंगी । हमारी टीम वेस्टइंडीज १९७६ म जायेंगी ।

यूजीलड के विरुद्ध यूजीलड म दो शृंखला जीती और एक म बराबर छूटे और वहा एक भ्रमण जीता ।

पाकिस्तान के विरुद्ध पाकिस्तान के साथ एक भ्रमण हमन जीता और एक बराबर छूटा । वहा एक भ्रमण बराबर रहा ।

टेस्ट रिकार्ड कुन मिनावर भारत ने अब तक १०४ टेस्ट खेल हैं । १७ म विजयी रहा ५८ म बराबर रहा और ४९ टेस्ट हार ।

इंग्लड के साथ एंग्लड क विरुद्ध कुल चालाम टेस्ट खेने गए । वहा कुल २५ खेले गए जिनम भारत एक जीता १७ हारा और ७ म बराबर रहा । यहा कुन १५ टेस्ट खेन जिनम हमन ३ जीत १ हारा और ११ म बराबर रहे ।

आस्ट्रेलिया के साथ आस्ट्रेलिया के विरुद्ध २५ टेस्ट खेल गए जिनम वहा कुन ९ टेस्ट खेले । एक म बराबर रहे और आठ हार । यहा कुल १६ खेने जिनम ० म हम जीत, ८ हार और ५ म बराबर रहे ।

वेस्टइंडीज के साथ वेस्टइंडीज क विरुद्ध कुल २८ टेस्ट खेल गए । वहा कुल १५ टेस्ट हुए । इनम भारत एक म जीता ८ म बराबर रहा और ६ म हारा । यहा कुल १३ टेस्ट हुए जिनम भारत ७ म बराबर रहा ६ म हारा ।

पाकिस्तान के साथ कुल १५ टेस्ट हुए । यहा १० हुए जिनम भारत ० म जीता ७ म बराबर रहा और १ म हारा । वहा पाच टेस्ट हुए जा सभी बराबर छूटे ।

यूजीलड के साथ इनके विरुद्ध कुल १६ टेस्ट हुए । वहा चार जिनम तीन म भारत जीता और एक म हारा । यहा कुन १२ टेस्ट हुए जिनम चार म भारत विजेता रहा ७ म बराबर आर एक म हारा ।

भारत ने अब तक निम्न १७ टाइटल जीत और निम्न ११ को माया में—

(१) इंग्लैंड को मद्रास में	१९५१ ५०	म
(२) पाकिस्तान को सिन्धी में	१९५० ५३	
(३) पाकिस्तान को बम्बई में	१९५० ५३	,
(४) यूजीलैंड का बम्बई में	१९५५ ५६	,
(५) यूजीलैंड का मद्रास में	१९५५-५६	
(६) आस्ट्रेलिया को बानगुर में	१९५६ ६०	,
(७) इंग्लैंड का कलकत्ता में	१९६१ ६०	,
(८) इंग्लैंड का मद्रास में	१९६१ ६०	,
(९) आस्ट्रेलिया का बम्बई में	१९६३ ६६	
(१०) यूजीलैंड का सिन्धी में	१९६६ ६५	
(११) यूजीलैंड का इंडियन में	१९६७ ६८	”
(१२) यूजीलैंड का थातिगहन में	१९६७ ६८	,
(१३) यूजीलैंड का आक्लैंड में	१९६७ ६८	,
(१४) यूजीलैंड को बम्बई में	१९६९ ७०	
(१५) आस्ट्रेलिया का दिल्ली में	१९६९ ७०	
(१६) वेस्टइंडीज का पापुआ न्यू गिनी में	१९७० ७१	
(१७) इंग्लैंड का कलकत्ता में	१९७० ७१	
(१८) इंग्लैंड का भारत में	१९७२ ७३	

राष्ट्रीय मुकाबले

राष्ट्रीय कुश्ती फ्रीस्टाइल कुश्ती का प्रचार फीला में सम्बद्ध भारतीय कुश्ती मण्डल द्वारा किया जाता रहा है। इसी सभ में ऐसी कुश्ती के प्रचार के लिए काम भी उठाया और राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में हिट केमरी प्रति मुकाबले कराए जाते हैं। इस वर्ष हिंदू केमरी मास्टर चन्दगीराम बने।

देशी कुश्ती सभ पिछले कई वर्षों में देशी कुश्ती सभ घटती चली गयी है। भारत केसरी और भारत भीम मुकाबले इस सभ की महत्वपूर्ण देन हैं। अब महान भारत केमरी का मुकाबला भी होने लगा है।

भारत केसरी १९६८ मास्टर चन्दगीराम १९६९ मास्टर चन्दगीराम १९७० मेहरदीन १९७१ विजयकुमार १९७३ नेत्रपाल।

भारत भीम १९७० मास्टर चन्दगीराम १९७१ मेहरदीन १९७२ मास्टर चन्दगीराम।
महाभारत केसरी—दाइ चौगुले।

डूरेड कप १८८८ में शिमला में अंग्रेज फ्रीजी यूनिट ने प्रारम्भ किया। १९५० में दिल्ली में मंच शुरू हुआ। मोहन बगाल सबसे अधिक ८ बार विजेता रहा। तीन बार लगातार डूरेड कप जीता। ईस्ट बगाल छह बार विजयी रही। आध्र प्रदेश चार मद्रास रंजीमट और मारुवा दो-दो बार और मोमा सुरक्षा दल ने एक बार इस जीता। १९७२ में ईस्ट बगाल विजेता रहा।

आई० एफ० ए० फुटबाल (कलकत्ता में) १९७२ विजेता ईस्ट बंगाल रनर मोहनबागान । इस्ट बंगाल सबसे अधिक ११ बार विजेता रहा ।

सुव्रत रूप फुटबाल (दिल्ली में) इसमें स्कूला की टीम भाग लेती है । १९७२ में पी० व० ए० आई० कलकत्ता विजयी रहा ।

मोगिल्बी फुटबाल १९७२ में आर० ए० सी० वीवानेर विजयी ।

डी० सी० एम० फुटबाल उत्तरी कारिया की २५ अप्रैल क्लब विजयी ।

अन्तरविश्वविद्यालय फुटबाल कलकत्ता विश्वविद्यालय विजयी ।

राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिताएँ

देश में क्रिकेट के प्रचार और प्रसार करने के लक्ष्य से भारताय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने तत्वावधान में वर्ष भर क्रिकेट की विभिन्न प्रतियोगितायें चलाती रहती हैं जिनका संक्षेप में विवरण प्रस्तुत है ।

रणजी ट्राफी राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए महान क्रिकेट खिलाड़ी रणजीत सिंह जी राजा नावानगर की याद में स्वर्गीय भूपद्रसिंह महाराजा पटियाला ने 'रणजी ट्राफी १९३४ में प्रदान की । बम्बई ने इसे प्रथम दो वर्ष और बीच-बीच में सात वर्ष और १९५६ से लगातार अर्ध तक चौहूँ वर्ष जीत कर इस पर अधिकार किया । होलकर और बडौला ने इस चार चार बार जीता, महाराष्ट्र ने दो बार बंगाल मद्रास नावानगर और मद्रास ने एक-एक बार जीता । होलकर बंगाल, राजस्थान मद्रास, मसूर सना और बडौला का कई बार रनर रहने का गौरव प्राप्त है ।

ईरानी ट्राफी राष्ट्रीय विजेता (रणजी ट्राफी चम्पियन) और भारत श्रेय की टीमों के बीच प्रतिवर्ष मुकाबले के विजेता को स्वर्गीय जैड आर० ईरानी के नाम पर स्पसर बंधुओं द्वारा प्रदत्त ट्राफी प्रदान की जाती है । यह मुकाबला १९६१ से शुरू हुआ । रणजी ट्राफी विजिता बम्बई ने दस लगातार ६ वर्ष जीता ।

दलीपसिंह ट्राफी अन्त क्षेत्रीय आधार पर अखिल भारतीय क्रिकेट चैम्पियनशिप के लिए भारतीय क्रिकेट के महान खिलाड़ी "रणजी" के भतीजे महाराजा दलीपसिंह (नावा नगर) के नाम पर प्रतियोगिता १९६१ से आरम्भ की गई । प्रथम दो वर्ष पश्चिम क्षेत्र विजयी रहा । ६४ में पश्चिम और दक्षिण संयुक्त विजेता बने । ६५ में पुनः पश्चिम क्षेत्र विजेता रहा । इस वर्ष पश्चिम क्षेत्र मातवा बार विजेता बना ।

रोहितन बारिया कप अन्तर वि० वि० मुकाबले के लिए राहित बारिया कप प्रतियोगिता १९३५ से चला रही है । इस मुकाबले में क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों के अखिल भारतीय मुकाबले में क्षेत्रीय चम्पियन भिड़ते हैं । पञ्जाब पहली तीन वर्ष और एक बार फिर विजेता रहा । बम्बई विश्वविद्यालय ने इस १९३८ से ४२ फिर ४४ से ४६ तक फिर ५० और पुनः ५४ से ५८ फिर ६० और पुनः ६३ से ६५ तक जीतकर रिकार्ड बनाया । दिल्ली के मसूर तान-तीन बार विजिता रहे । उममानिया कलकत्ता व पूना ने इसे एक एक बार उठाया ।

कूच बिहार ट्राफी स्कूली बालकों में क्रिकेट के प्रचार के लक्ष्य में वाड ने १९५० में राष्ट्रीय स्कूला के लिए कूच बिहार के महाराजा के नाम पर ट्राफी प्रतियोगिता शुरू की । यह मुकाबला क्षेत्रों की चुनाटा टीमों के बीच क्षेत्रीय आधार पर होता है । मुकाबले में क्वेन स्कूला के माध्यम से छात्र जा अठारह वर्ष में कम आयु के हों भाग ले सकते हैं ।

सी० के० नायडू ट्राफी राष्ट्रीय आधार पर स्क्वा टीमा की प्रांतीय भिडन क लिए सी० व० नायडू प्रतियोगिता शुरू की गई ताकि प्रांतीय टीम अंत तक इन्टर्मी खेल और टीम खन का विकास करें।

मोइनुद्दौला कप अखिल भारतीय स्तर पर हैटराबाद म प्रसिद्ध बनवा क बीच नाकफाउट पद्धति पर माइनुदौला क्रिकेट प्रतियोगिता हाना ह। हर कप देश क चांगे क खिलाडी अपनी टीमो म यहा शानदार खेन लिखाते हैं।

विभिन्न खेल परिणाम एक दृष्टि मे

बैडमिन्टन

महाराष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय बैडमिन्टन चम्पियनशिप (बम्बई मे) इनमाक क स्वडप्रि पुरुष एवल विजेता स्वीडन की ईवा ट्रेड वव महिना एकन विजता इगलर की टाम पुरुष युगल विजेता।

अन्तर्राज्य पश्चिम क्षेत्र बैडमिन्टन चम्पियनशिप (गुजरात मे) रनव न चम्पियन शिप जीती महाराष्ट्र महिला चम्पियन।

अन्तरविश्वविद्यालय बैडमिन्टन चम्पियनशिप (दिल्ली मे) पुरुष वग म दिल्ली वि० वि० विजयी। महिला वग म गुल्शनानक वि० वि० विजयी।

अन्तरविश्वविद्यालय महिला बैडमिन्टन (त्रिवेन्द्रम मे) केरल विजेता।

राष्ट्रीय चम्पियन लिग खना राष्ट्रीय चम्पियन बन।

थामस कप भारत ने इम कप आकलड म यूजीलड को ५४ स हराया। अब मई १९७३ म यकार्ता (इंडोनेशिया) म अमरिका स क्वाटर फाइनल म भिडा।

लान टेनिस

अपर इंडिया लान टेनिस (कानपुर) कपा के कारण फाइनल मच नहीं हुआ अत एवल मैच म जयन्तीप मुकर्जी और प्रमजीन लाल तथा युगल म कृष्णन और प्रेमजीन तथा बनराम और नरद सयुक्त विजता।

राष्ट्रीय चम्पियनशिप (कलकत्ता) गौरव मिश्र चम्पियन।

बास्केट बाल

बटलेरियन बास्केटबाल (दिल्ली मे) सीमा सुरक्षा एन तामरी वार चम्पियन। महिला वग म रायल क्लब दूसरी वार चम्पियन।

दिल्ली राज्य बास्केट बाल चम्पियनशिप (दिल्ली मे) सिगनल चम्पियन। महिलाधा म रायन बनव।

पुरस्कार एवं सम्मान

प्रणवा क पुरस्कार खला का आधार प्रणवा *। उत्साह और उमम का ही दूसरा नाम खेनकू है। खेल क प्रचार और प्रचार के लिए प्रणवा का वातावरण बनाना अत्या वश्यक है। पुरस्कार इम अपभित लक्ष्य का प्राप्ति क निय महज साधन है। पुरस्कार की कल्पना मात्र स हम कडे म कडा परिश्रम करन म जुट जान है। विश्व म सबसे खिलाडिया का सुन्दर पुरस्कार पत्र और अन्तररण देन पर बहुत जाग लिया जाना ह। आनम्पिक और

अथ पुरस्कारा के अलावा विश्व म मवश्रेष्ठ खिलाडिया का कई अलकरण दिए जात हैं ।

हेलम्स पुरस्कार नावल पुरस्कार की भाति खेन क्षेत्र म यह पुरस्कार हर वष विश्व के चाटा के खिलाडिया का लिया जाता है ।

भारत के निम्न धार खिलाडो यह गौरव पद पा चुके हैं

सवश्री के० टी० मिह बाबू (हाकी) रामानाथन कृष्णन (टनिम) मिलखामिह (दौडकूद) जाल पाडिवाला (दौडकूद आकडा के विशेषत) ।

विश्व क्रिकेट सम्मान विस्डन अलकरण

(१) रणजीतमिह १८६६ (२) दलापमिह १६२६ (३) नवाव पटौदी (सीनियर) १६२० (४) मी० के० नायडू १६२३ (५) विजय मरचेंट १६२७ (६) वीनू मानकड १६८७ (७) नवाव पटौदी (जूनियर) १६६४ ।

राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतिवष २६ जनवरी का राष्ट्रपति श्रेष्ठ खिलाडिया का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करत हैं ।

अर्जुन पुरस्कार

शिक्षामन्त्रालय राग खेल मगठना और भारतीय खेन परिषद की सिफारिश पर प्रतिवष विभिन्न खेला के सवश्रेष्ठ खिलाडिया का अर्जुन पुरस्कार दिया जाता है । यह पुरस्कार दन का क्रम १९६१ मे प्रारम्भ किया गया । अब तक १५३ खिलाडिया का पुरस्कार मिल चुका है । इम वष जिन्हें १९७० के अर्जुन पुरस्कार भेंट किए गए हैं उनकी मस्या १४ है । टस्ट स्पिनर वी० एन चद्रशेखर राष्ट्रीय वेडमिंटन चम्पियन प्रकाश पादुकान के अतिरिक्त पुरस्कार पान वाला म भारत की हाकी क फुलवक माईकेन किण्डू और अंतर्राष्ट्रीय पहलवान प्रेमनाथ भी शामिल हैं ।

अब तक इन अतकरणा क नाम इम प्रकार हैं

१९६२

लौडकूद	हवलदार तग्लाकमिह	फुटबाल	टी० बनराम
बटमिन्तन	कुमारी मीना शाह	टनिम	नरेशकुमार
विलियड	दिल्लन जाम	बालीवाल	नृपजीतमिह
मुक्कजाजी	हवनदार पद्मवहादुर मन	बजन उठाना	एल० क० राम
		कुशना	मनवा

१९६३

लौडकूद	कुमारी स्टेफी डिमूजा	पालो	मजर ठाकुर विशनमिह
फुटबाल	चुन्नी गाम्बामा	बजन उठाना	कामिननी ईश्वरदार
गाम्फ	ए० एम० मनित्र	कुशनी	जी० आन्नाकर
हाकी	चरजीतमिन्		

१९६४

लौडकूद	माखन मिह	पावा	गवराना हनुमानमिह
क्रिकेट	नवाव पटौदी	टेमिन् टनिम	गौतम धार० पावान
फुटबाल	जनेत्र मिन्	कुशनी	विश्वभरमिह
हाकी	एम० लक्ष्मण		

१९६५

दौडकूद	के० एल० राव	हाकी (पुरुष)	उद्यम सिंह
बैडमिंटन	दिनेश खन्ना	हाकी (महिला)	कु० गनबीरा प्रिटो
क्रिकेट	विजय मजरेकर	वजन उठाना	य नबीरसिंह भाटिया
फुटबाल	भरुणलाल घोष		

१९६६

दौडकूद	अजमरसिंह	हाकी (महिला)	कुमारी सुनीता पुरी
दौडकूद	बी० एस० बरुआ	गान्दैनिस	जयन्ती मुखर्जी
मुक्केबाजी	हवासिंह	तराकी	कुमारी रीमा त्ता
क्रिकेट	चंद्रकांत गुलाबराय बोर्डे	टेबुल टेनिस	कुमारी उषा सुन्दरराज
फुटबाल	सुमुफ खा	वजन उठाना	माहनलाल घोष
हाकी	बी० जे० पीटर	कुश्ती	भीमसिंह

१९६७

बैडमिंटन	सुरेश गोयत	लानटेनिस	प्रेमजीत नाल
बास्केट बाल	खुशी राम	तराकी	अरुण शा
क्रिकेट	अजीत वाडेकर	टेबल टेनिस	फारुक अर०
फुटबाल	पीटर धगराज	वजन उठाना	खोगन्जी
गान्दैनिस	अर० के० पीताम्बर	कुश्ती	मवरी मुत्तु जन
हाकी	हरविंदरसिंह	दौडकूद	श्रीवियल
हाकी	जगजीतसिंह	दौडकूद	मुख्तियारसिंह
हाकी	मोहिंदर लाल		प्रवीण कुमार
			भीमसिंह

१९६८

निशानबाजी	कु० रायश्री	हाकी	बलबीरसिंह
दौडकूद	कु० मनजीत बालिया	बास्केट बाल	गुरन्पालसिंह
दौडकूद	जोगेन्द्र सिंह	मुक्केबाजी	निस स्वामी
क्रिकेट	प्रमना		

१९६९

कुश्ती	मास्टर चन्गीराम	फुटबाल	इंद्रसिंह
दौडकूद	हरनरामसिंह	तराकी	बघनाय
बास्केट बाल	हरिन्त	क्रिकेट	विश्वसिंह वेदी
निशानबाजी	कुमारी भुवनेश्वरा	स्ववश	अनिल नायर

१९७०

दौड़कूद	माहिंदर सिंह गिल	बैडमिंटन	श्रीमती दमयंती ताम्बे
बाल बैडमिंटन	जे० पिन्धया	बास्केट बाल	अद्वैतसिंह मुत्तसौर
बिलियर्ड	माइकेल फररा	क्रिकेट	सरदेसाई
फुटबाल	संघद नईमुहोत	हाकी	अजीतपालसिंह
खा-खो	सुधीर भास्करराव	टेबल टेनिस	जगनाथ
भारतोलन	अरुण कुमार दास	कुश्ती	सुदेश कुमार
नौकानयन	सोहराव जमशेट		
	कान्द्रेकर		

१९७१

दौड़कूद	एडवड मिक्वेरा	हाकी	कृष्णामूर्ति
बैडमिंटन	कु० शोभा मूर्ति	खा खो	कु० अचला
बास्केट बाल	मनमाहन सिंह	निशानेबाजी	भीमसिंह जी काग
धूसेबाजी	मुनु स्वामी वेणु	टेबल टेनिस	खान्नायजी
क्रिकेट	बकट राघवन	तराकी	भवर सिंह
फुटबाल	चंद्रेश्वर प्रमाद सिंह	भारतोलन	श्याम ताल मनदान

१९७२

दौड़कूद	विजय सिंह चौहान
बैडमिंटन	प्रकाश पादुक्कान
बाल बैडमिंटन	कुमारी जयाम्मा श्रीनिवासन
बिलियर्डस	सतीश माहन
धूसेबाजी	हवलदार चंद्रयानारायण
क्रिकेट	वी० ल० चंद्रशेखर
क्रिकेट	एकनाथ साठकर
गोफ	श्रीमती अजनी देमाई
हाकी	माईकल किण्टू
बच्चड़ी	सदानंद महादेव शेटी
रायफ्ल शूटिंग	उत्पाचिनु भाई
बालीबाल	बलवन्तसिंह
भारतोलन	अनिल कुमार मडल
कुश्ती	प्रेमनाथ

राष्ट्रीय खेल-कूद सगठन

राष्ट्रीय खेल कूद सगठन का उद्देश्य खेल के चुन हुए क्षेत्रों में कानिष्ठ विद्यार्थियों को बीच श्रेष्ठता का बढ़ावा देना है । यह यात्रा १९६९ में आरम्भ की गई थी तथा १९७२-७३ के दौरान निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रम जारी थे —

१ विश्वविद्यालयों में शारीरिक सुविधाओं का विकास ।

२ प्रशिक्षण की व्यवस्था ।

३ प्रशिक्षण शिविरा का आयोजन ।

४ खेल-कूद प्रतिभा खोज, छात्रवृत्तिया देना ।

खेल प्रतिभा छात्रवृत्तियां यह छात्रवृत्तिया विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रहे श्रेष्ठ पुरुष महिला खिलाडियों की महायत्ना के लिए उनका अपने शारीरिक स्तर को बनाए रखने के हेतु उपस्करा की खरीद वस्त्रादि के लिए प्रदान की जाती है । प्रत्येक वर्ष १०० रुपये प्रतिमास की ५० छात्रवृत्तिया प्रदान की जाती है जो दा वष की अवधि के लिए वर्ष में १० मास के लिए धाय हाती है । १९७२-७३ के दौरान ५० नई छात्रवृत्तिया प्रदान की गई थी । १९७१-७२ के दौरान प्रदान की गई ५० छात्रवृत्तिया में से ३० छात्रवृत्तिया का नवीकरण किया गया था ।

अखिल भारतीय खेल-कूद परिषद

अखिल भारतीय खेलकूद परिषद का पुनर्गठन अप्रैल १९७२ में किया गया था । यह परिषद सलाहकार बोर्ड के रूप में सरकार का उन सभी बातों पर सहाय देना के लिए है जो देश में खेल तथा खेलकूद के विकास से संबंधित हैं । पुनर्गठित परिषद में अध्ययन तथा विभिन्न श्रेणियों में से भारत सरकार द्वारा मनानीय किए गए ३६ संस्य सम्मिलित हैं ।

राज्य खेल कूद परिषदों को अनुदान उपयोगिता स्टेडियमों का निर्माण करने तरने के तालाबों स्टेडियमों में तज प्रकाश की व्यवस्था करने प्रशिक्षण शिविरा का आयोजन करने तथा खेलकूद उपस्करा को खरीदने और ग्रामीण क्लबों की स्थापना के लिए राज्य खेल कूद परिषदों का वित्तीय सहायता देने की सहायित योजना को १९७२-७३ में भी जारी रखा गया था । इस योजना के अंतर्गत वर्ष के दौरान १० लाख रुपया तक निधिया की व्यवस्था की गई थी ।

अखिल भारतीय खेलकूद परिषद की सिफारिश पर १९७२-७३ में तरणताल का निर्माण के लिए सहायता की मात्रा प्रत्येक तरणताल की तर से २५,००० रुपये से ५०,००० रुपये तक बना दी गई है ।

ग्रामीण खेल कूद केंद्र ग्रामीण खेल-कूद केंद्रों की स्थापना की योजना १९७२-७३ के दौरान जारी रही । पश्चिम बंगाल सरकार को ५५ नए ग्रामीण केंद्रों की मजूरी दी गई और अन्य राज्यों में पहले से स्थापित केंद्रों को अनुदान दिया गया ।

स्कूली विद्यार्थियों के लिए खेल कूद प्रतिभा छात्रवृत्तिया इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष १३-१७ आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं के परिणामों के आधार पर ५० रुपये प्रति मास प्रत्येक छात्रवृत्ति की दर से २०० छात्रवृत्तिया और राज्य-स्तर पर प्रतियोगिताओं के परिणामों के आधार पर २५ रुपये प्रतिमास प्रत्येक छात्रवृत्ति की दर से ४०० छात्रवृत्तिया प्रदान की जाती हैं ।

अखिल भारतीय खेलकूद परिषद की सिफारिश पर अखिल भारतीय स्कूल खेलकूद प्रतियोगिताओं जवाहरनाल नेहरू हाकी टूर्नामेंट और सुन्नतो मुखर्जी कप फुटबाल टूर्नामेंट में भाग लेने वाला में से प्रतिभा का पता लगाने के लिए विशेष चयन समितिया का गठन किया गया था । इन समितियों द्वारा चुने गए विद्यार्थियों का अनुमय छात्रवृत्तिया प्रदान की गई हैं ।

खेल कूद सभा को अनुदान १९७२-७३ वष के दौरान वार्षिक प्रतियोगिताओं अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने विन्शी दला व भारत के दौरा और वतनिक सहायक सचिवा के वेतना का भुगतान करने प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने, ग्रनकूद उपखर खरीदन तथा ग्रामीण टूर्नामट आयोजित करने कलए विभिन्न राष्ट्रीय खेलकूद सभा का निम्नर १९७२ तक क लए कुल २० ०३,८३४ रुपये के अनुदान स्वीकृत किये गये हैं ।

२५वा स्वतंत्रता वषगाठ समारोहा क भाग क रूप में, ग्रामीण युवका के लिए देश भर में खेलकूद टूर्नामट आयोजित करने का निश्चय किया गया है । टूर्नामट ब्लॉक स्तर जिना स्तर, राज्य स्तर और बाद में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जायेगा । ब्लॉक जिना और राज्य स्तर पर टूर्नामट आयोजित करने क लए राज्य सरकारा व सघ शासित क्षेत्रा का इस मंत्रानय द्वारा वित्तीय सहायता दी जा रही है । राज्य स्तरीय टूर्नामट में ग्रामीण खिलाडिया क भाग लेने क आधार पर राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान पटियाला क तत्वावधान में नई दिल्ली में हुई तीमरी अखिल भारतीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विभिन्न खेलकूद क क्लब चुने गये ।

राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला

राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान पटियाला, जिमकी स्थापना भारत सरकार ने १९६१ में की थी विभिन्न खेलकूद में अहताप्राप्त शिक्षक उपलब्ध कराने क प्रमुख कार्य में अच्छी प्रगति करता रहा है । इसमें अब तक १३ विभिन्न प्रकार के खेलकूदों में २०४६ शिक्षका का प्रशिक्षित किया है । इस समय लगभग २३० विद्यार्थी नियमित तथा सक्षिप्त पाठयक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं । वर्तमान विद्यार्थिया में बगला देश क १० नेपाल के ८ और श्रीलंका क २ विद्यार्थी शामिल हैं । १९७० क ग्रीष्म अवकाश क दौरान सार भारत स लगभग २६१ अध्यापका क लिए एक विशेष अनुस्थापन पाठयक्रम का आयोजन किया गया था । वार्ड ० एम० सी० ए० शारीरिक शिक्षण कालज मद्रास में दक्षिणी राज्या क लगभग १०० अध्यापका के लिए एक एम पाठयक्रम आयोजित किया गया था ।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण योजना क कार्यावयन क लिए संस्थान में इस समय लगभग ३०० शिक्षक हैं । ये विभिन्न राज्या का राजधानिया में स्थापित क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्रों और जिला मुख्यालया में स्थापित नहरू युवक केंद्रों में तनान किये जाते हैं ।

१९७३-७४ क दौरान क्लकत्ता में एक तरणताल तथा नई दिल्ली में प्रस्तावित राष्ट्रीय खेल समूह का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया है । प्रयाजना क लक्ष्य दश में खिलाडिया को अन्तराष्ट्रीय स्तरा की सुविधाएं प्रदान करना तथा महत्वपूर्ण अन्तराष्ट्रीय खेल कार्यो का आयोजन करना है । आयोजना क प्रथम पक्ष का अनुमान २६३ करोड रुपये की लागत का है । परियोजना क पाचवा पचवर्षीय याजना के अंत तक पूर्ण होने की संभावना है ।

१९७२-७३ क दौरान खेलों के क्षेत्र में भारत विदेश सांस्कृतिक विनिमय डा० कारनोज फलिकका सटिलिया खेल राष्ट्रीय संस्थान बेंनेजुला के अध्यक्ष ने परवरी १९७३ में भारतीय अतिथि क रूप में भारत का भ्रमण किया ।

डा० मिहल नमसौर केंद्रीय खेल औपघ संस्था बुडापस्ट के निदेशक ने भारत का भ्रमण किया तथा साथ-साथ हैदराबाद में आयोजित खेल औपघ मगाटी का भी देखा ।

रीयम राज्य खेल परिषद् नाइजीरिया व निगेश, था घार० एम० एडमिगिण
न भारत का भ्रमण किया ।

राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान पत्रियाला म विभिन्न खेला म शिफा व रूप म प्रशिक्षण
हेतु बगला देश म १० प्रशिक्षण शिबिर हुए । प्रत्येक १० माह शिबिर पाठ्यक्रम व निर
२०० रूपय प्रति माग की छात्रवृत्तियां तथा प्रति छात्र ५०० रूपय का उपहार भत्ता प्रशि
का किया गया है ।

भारत मरफार का घार स उपहार व रूप म बगला देश का ५०००० रूपय की
कीमत का घन उपस्कर भजा गया है ।

राष्ट्रीय खेल संस्थान व एक हाकी प्रशिक्षण का सवाए ३ महान की अवधि व
लिए मियापुर मरवार का पत्र की गई थी । एन त्रिस्ट प्रशिक्षक ६ महीन की अवधि व निर
गाम्बिया का प्रतिनियुक्ति पर भजा गया है । नाइजीरिया का सौंप गय एक हाकी प्रशिक्षक
की प्रतिनियुक्ति की अवधि १९७२ तक बढ़ा जा गई थी ।

भारत सावियत रम मासृतिव विनिमय वापस म अधीन निम्नर १९७२
जनवरी १९७३ व दौरान मावियत रम की छ सन्स्थीय टनिस टीम न भारत का दौरा किया ।

बगलादेश का एक फुटबाल और एक एक हाकी टीम न प्रमश डुरड फुटबाल प्रतियोगिता
घार जवाहरलाल नेहरू हाकी प्रतियोगिता म भाग लिया । बगलादेश की एक फुटबाल टीम ने
गाहाटी म हुई चत्ताई ट्राफी प्रतियोगिता म भाग लिया ।

१९७३-७४ मे प्रमुख प्रतियोगिताओं का व्यौरा

क्रिकेट

- १—कूब बिहार ट्राफी १९७३—द्वितीय श्रेणी स्क्रूला न पश्चिमी क्षेत्र टीम को ८ विकेटो पर
पराजित किया ।
- २—इरानी कप—बम्बई न शय भारत की टीम का हराकर जीता ।

फुटबाल

- १—डूरण्ड कप १९७३—ईस्ट बंगाल ने मोहन बागान को हराकर जीता ।
- २—मुम्बई कप—पी० के० आशुताप इस्टीट्यूशन आफ क्लब्स ने गोरखा ववायस कम्पनी
देहरादून को हराकर जीता ।

हाकी

- १—वल्ड कप—हालण्ड ने द्वितीय हाकी कप भारत से ६-४ पर जीता ।
- २—गोल्ड कप—कापस आफ सिग्नल ने वाडर सिक्ससिस्टी फीस को हराकर जीता । नेहरू
कप भी कापस आफ सिग्नल ने ही जीता ।

दसवें राष्ट्रमण्डल खेलों मे भारतीय खिलाड़ियों के कारनामे

नाइस्टवच म २५ जनवरी १९७४ मे २ फरवरी तक राष्ट्रमण्डल खेलों का आयोजन
हुआ । भारत को इन खेलों म चार स्वर्ण ८ रजत और तीन कांस्य पदक प्राप्त हुए ।
आस्ट्रेलिया चंपियन राष्ट्र रहा उसने २६ स्वर्ण पदक, २८ रजत २५ कांस्य पदक जीते ।
भारत को पदक तानिका व हिराब स छठा स्थान मिला ।

इन खेलों म उसे बहुत उल्लेखनीय सफलता मिली । टीम व सदस्यों के अनुपात मे

इतने अधिक पदक किसी अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारतीय खिलाड़ी नहीं लाए।

श्री नारायण ने भारत के लिए पहली बार राष्ट्र मण्डल खेलों का रजत पदक जीता। भारत के मूनूस्वामी वेणु ने लाइट वेट वजन में कांस्य पदक जीता। भारोत्तान में भारत ने एक रजत और एक कांस्य पदक प्राप्त किया। अनिल मण्डल ने फ्लाइवेट में रजत और श्री एस० वेल्स स्वामी ने वेटमवेट में कांस्य पदक जीता। भारत के श्री मोट्टिद्रासिंह का त्रिकद प्रतियोगिता में रजत पदक से ही सतोष करना पड़ा।

पोरुब का प्रतीक कुश्ती में भारत के पहलवानों ने अपनी शक्ति का सुंदर प्रदर्शन दिखाया। भारत ने राष्ट्र मण्डलीय खेलों में चार स्वर्ण पदक पांच रजत पदक और एक कांस्य पदक हासिल किया। स्वर्ण पदक विजेताओं में सुदशकुमार (फ्लाइवेट) प्रमनाथ (वेटमवेट), जगद्वय सिंह (लाइटवेट) और रघुनाथ पवार (वेटमवेट) हैं। रजत पदक जीतने वाले शिवाजी चिंगले (फ्लाइवेट) विश्वनाथसिंह (सुपर हैवीवेट) सतपाल (मिडिलवेट) दादू चौधरी (हैवीवेट) और नेत्रपाल (लाइट हैवीवेट)। कांस्य पदक जीतकर सतोष करने वाले १६ वर्षीय राधेश्याम रहे।

पदक तालिका राष्ट्रमण्डल खेल

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
आस्ट्रेलिया	२६	८	२५
इंग्लैंड	२८	३१	२१
कनाडा	२५	१६	१८
यूजीएसए	६	८	१८
चीनिया	७	२	३
भारत	५	८	३
स्काटलैंड	३	५	११
नाइजीरिया	३	३	५
उ० धायरलैंड	१	१	२
जमायका	०	१	०
वेल्स	१	५	५
उगांडा	१	५	३
घाना	१	३	५
जाम्बिया	१	१	१
मलयेशिया	१	०	३
तजानिया	१	०	१
सैंट विजसट	१	०	०
ट्रिनीडाड टूबेको	०	१	१
प० समाऊ	०	१	१
मिगापुर	०	०	१
स्वेडन	०	०	१

फोन १७७

फोन ८१३६३
८१७०१

तार खडसारी

तार गोल्ड मूहर

वो० किशनलाल खंडसारी चीनी मिल

मोसरा रोड,
निजामाबाद (आंध्र प्रदेश)

उस्मानगज
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

चार मीनार ब्राण्ड

खडसारी चीनी

उत्तर प्रदेश एव मध्य प्रदेश
क्षेत्र में अग्रणी

“दैनिक जागरण”

भासी
एव

“देश दूत”

(दैनिक जागरण भासी प्रकाशन)
इलाहाबाद

सदस्य —

* आर्टिस्ट व्यूरा आफ सक्जु लेशंस

* इण्डियन एण्ड ईस्टन न्यूजपेपर्स सोसाइटी

भोजन में पौष्टिक पदार्थों की कमी की पूर्ति के लिए अपने तालाब में मत्स्य पालन कीजिये ।

- १ मछली में वे सभी पदार्थ विद्यमान हैं जो शारीरिक बनावट एवं स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं ।
- २ इसमें उपलब्ध प्रोटीन सरलता से पचन वाला होती है ।
- ३ बच्चा में व्याप्त कुपोषणना (Mal Nutrition) का दूर करन में मछली महायुक्त हा मक्ती है ।

प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाने के लिए

- १ कतला राहू नरन व माय कामन काय मछली क वीन का सचय करें ।
- २ खेती व समान तालाब में अमोनियम सल्फेट सुपर फास्फट एवं सीवेज खाद दें ।
- ३ मासहारा मछलिया एवं जलीय वनस्पतिया की सफाई अच्छी प्रकार स करें ।

(संचालक, मत्स्योद्योग, म० प्र० द्वारा प्रसारित)

“भारत में दूध की नदियां बहती थीं”
कहावत को चरितार्थ करना चाहते हैं ?

यदि हां, तो

अपनी गाय की जर्सी नस्ल के साड के वीय से कृत्रिम रेतन द्वारा नि शुल्क फलवाइये ।

इससे पंदा हुई वछिया

- पहली पीढ़ी में ही १५०० ६० की गाय बनेगी ।
- प्रतिदिन १० लिटर तक दूध देगी ।
- लगातार ३०० दिनों तक दूध देती रहगी ।

अधिक जानकारी के लिए निकट के पशु चिकित्सालय से सम्पर्क साधें ।

संचालनालय, पशु चिकित्सा सेवायें, मध्य प्रदेश

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड की प्रगति एक नजर में

	माच, १९६६ तक	माच, १९७१ तक	माच, १९७७ तक	माच, १९७३ तक
प्रतिष्ठापित समतल क्षमता (भगावाट)	५६	८०८	८६८	५६८
उत्पादित बिजली (दसलक्ष किलोवाट घट)	१०७ ८१	१२७० ३०	१८३८ २०	१९५३ ३४
विद्युतीकृत गाबो की सख्या	३७६२	७९१३	८५१७	९१०६
ऊजायित पम्पा की सख्या	१० २५६	६५ ३६६	७३ ३८२	९ ०५६

हमारी दृष्टि में कम ही पूजा, सेवा ही मत्र, उपभोक्ता ही उपास्य,
सत्य ही आदश और परम्परा तथा सस्कृति ही हमारी अक्षय शक्ति है।

जन-सम्पर्क पदाधिकारी,

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड

द्वारा प्रचारित

हरियाणा

विजलीकरण के क्षेत्र में सबसे आगे

हरियाणा भारत का प्रथम राज्य है —

जहां सारे गाव विजलीयुक्त है,

उपजाऊ भूमि के प्रत्येक वर्ग किलोमीटर में तीन ट्यूबवैल है,

कृषि के लिये भारत भर में सबसे अधिक बिजली उपभोग

में लाई जाती है,

प्रत्येक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में १५ किलोमीटर

लम्बी विजली की लाईन लगी है,

विजली का प्रति व्यक्ति उपभोग ११६ यूनिट है,

हर चौथे घर में विजली का कनेक्शन है।



हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड

भारतीय श्रमिक

भारत में पुराने काल से श्रम विषयक सप्रहालया का निर्माण हाता रहा है। इनके अनुसार समय-समय पर औद्योगिक और श्रम नीति का संचालन वितरण शास्त्रबद्ध रीति से हाता रहा। श्रम नीति के दार्शनिक में प्रमुख रूप से बहुस्पति याज्ञवल्क्य नारण मनु शुक्र और काटिल्य की गणना हाती है। भारतीय श्रमिकों के परम्परा से विश्वकर्मा आदेश रहे हैं और भारत के अलग अलग प्रांतों में अलग अलग दिन में विश्वकर्मा दिन का श्रमिक और उद्योग सस्थाओं अपना दिन के रूप में मनाता रह है। वर्तमान काल में पुनः इस सघटित रूप से बड़े प्रमाण में राष्ट्रीय श्रमिक दिन के रूप में मनाना आरम्भ हुआ है।

औद्योगिकरण के साथ आधुनिक ढंग के श्रमिक-सघटना का निर्माण पिछली शताब्दी के आखिरी दशक में हुआ। शुरू में जगह-जगह पर तात्कालिक सघ-ममितिया बनती थी। १९०६ में बम्बई और कलकत्ता के पोस्ट आफिसों में प्रथम बार स्थायी रूप के सघटन बने। प्रथम महायुद्ध में और इसके बाद यूनियनों की संख्या काफी बढ़ गई। भारतीय श्रमिकों के प्राथमिक नेताओं में डा० वरिस्टा लाखडे एन० राम० जाशी, मालामीटर जिनवाला आदि-वाला मुहम्मद रज्जर इ० की गिनती हाती है।

इंडियन नेशनल कांग्रेस ने १९१९ से श्रमिक-क्षेत्र पर ध्यान देना शुरू किया। १९२३ में कम्युनिस्टों ने भारत के श्रम-क्षेत्र में अपना काम अधिवृत्त ढंग से शुरू किया। भारत का पहला सघटन विषयक महत्व का श्रम कानून १९२६ में इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट एक्ट नाम से पारित हुआ। आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस का पहला अधिवृत्त भारतीय श्रमिक सघटन १९२० में ही शुरू हुआ था। १९२९ में ए० जवाहरलाल नेहरू का अध्यक्षता में एक आयोग सघटन बनाया गया। लेकिन यह निर्णय लाकशाही ढंग से नहीं हुआ ऐसा आरोप लगाकर इस निर्णय के साथ एन० राम० जाशी की अध्यक्षता में दूसरे अधिवृत्त भारतीय श्रम सघटन नेशनल फ़ेडरेशन आफ लेबर का निर्माण हुआ। श्रमिक सघटन के इस विभाजन के साथ ही राजनीति का मजदूर सघटना के ऊपर प्रकट रूप से प्रभाव पडना आरम्भ हुआ।

मजदूर क्षेत्र के बारे में पहली सबव्युप रिपोर्ट रायल कमीशन आफ लेबर ने १९३१ में प्रस्तुत की। इस कमीशन का आयोजक और कांग्रेस इन दोनों ने वरिष्कार शुरू से हा जारी किया था। लेकिन १९६६ तक के सार श्रमिक कानूनों के ऊपर इस रायन कमीशन का रिपोर्ट का ही गहरा असर रहा है। १९६७ में दूसरे सबव्युप ममालाचन के लिए नेशनल लेबर कमीशन की नियुक्ति की गई। २८ अगस्त १९६९ को इस कमीशन ने अपना मत प्रस्तुत किया और इसके आधार पर ही श्रम-कानूनों की पुनरचना का काम शुरू हुआ है।

भारतीय श्रमिका व संपत्ता का बर्द्धि का इतिहास निम्नलिखित ढंग से है

वर्ष	पजीवून यूनिया की संख्या	रिपाट भजन वाली यूनियन की संख्या	सामान्य संख्या	प्रति यूनियन माधारण संख्या
१९०७-०८	२६	२८	१०१०००	३५६४
१९०८-०९	२३६	२०५	२६८०००	१३०६
१९१०-११	५७६६	१,६०६	१६,६३,०००	१००८
१९११-१२	४,६२३	२,५५६	१६,६६,०००	७८१
१९१५-१६	८,०६५	४,००६	२२,७५,०००	५६८
१९१६-१७	११,३१२	६,८१२	४०,१३,०००	५८६
१९१७-१८	११,६८८	७,२५०	३६,७७,०००	५८६
१९१८-१९	१३,०२३	७,५४३	४४,६६,०००	५६०

उपयुक्त यूनियन कई केंद्रीय मजदूर संघटना में संलग्न हुई हैं। इसमें सरकारी आकड़ा के अनुसार इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इटक) की संख्या सबसे ज्यादा माने १४१७ १५३ है। इटक की स्थापना १९४७ में कांग्रेस के द्वारा की गई। केंद्रीय-करीब उसी समय यान १९४८ में हिंद मजदूर सभा और यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना हुई। १९६६ में इन दोनों की संख्या क्रमशः ४३६ ६७७ और ६३ ४५४ थी। इसी समय आयटक की संख्या ८३३,५६४ थी। १९५५ में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना हुई। १९७१ की संधिपूर्वक जानकारी के आधार पर भारतीय मजदूर संघ की सदस्य-संख्या ४३४००० है। १९६५ में ससोपा के द्वारा हिंद मजदूर पंचायत की स्थापना की गई। इटक और हिंद मजदूर सभा इंटर्नेशनल काफेडरेशन आफ फ्री ट्रेड यूनियंस के साथ संलग्न हैं।

१९७० में माकमवानी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ७१० आई० टा० यू० (संघ और इंडियन ट्रेड यूनियन) की स्थापना हुई।

मालिक मजदूर और सरकार इन तीन पक्षाओं में संगठित होकर देश की श्रम व्यवस्था के बारे में विचार विमर्श करने का आवश्यकता तब प्रतीत हुई जब इंटर्नेशनल लबर आगनायजेशन के ढांचे के अंतर्गत १९४२ में इंडियन लेबर कांग्रेस और उसके अंतर्गत स्टैंडिंग लबर कमिटी इन विपरीत समिति का गठन हुआ। भारत में श्रम कानून में एक सुवर्ता रूढ़ औद्योगिक विवादा का हल करने की पद्धति विकसित हो और अखिल भारतीय मजदूर और औद्योगिक सम्बंध विषयक प्रश्नों की चर्चा हो इन तीन उद्देश्यों से यह स्थापना की गई है और केंद्रीय श्रम मन्त्री की अध्यक्षता में इसकी बैठक होती रहती है। श्रम विवादा अलग अलग उद्योगों की अखिल भारतीय विपरीत समिति और राज्य स्तरीय विपरीत समितियों का निर्माण होता रहता है।

देश की श्रम शक्ति

१९५१ में देश के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की संख्या २६१६००० थी जो १९७० के आंकड़े के मुताबिक बसकर ६६३८००० में गई। कुछ प्रमुख राज्यों में इनका संख्या इस प्रकार थी —

भ्रम—६८००० आंध्र प्रदेश—२५६००० उडामा—७५००० उत्तर प्रदेश—

४ १६ ०००, गुजरात—४,३८,००० तमिऴनाडु—४ २१,००० पञ्जाब—१ १७ ०००
 प० बंगाल—८ ६० ०००, बिहार—२ २६,००० मध्य प्रदेश—२ २८ ०००, महाराष्ट्र—
 १० ०३ ००० कर्नाटक—२ ६० ००० राजस्थान—८३ ००० हरियाणा—८६ ००० हिमाचल
 प्रन्श—१० ०००, दिनी—८४ ००० और पाडिचेरी—१२ ००० । शेष राज्या म श्रमिका
 की सख्या—१० ००० स कम थी ।

इसी तरह सभी खाना म काम करन वाल मजदूरा का औमत दनिव सख्या १६७० म
 ६ ३८,००३ थी । इनम से २ ६० ८१४ व्यक्ति भूमि के नीचे काम करते थे । खान अधिनियम
 क अतगत खाने खानी कायला खाना म श्रमिका की सख्या ३ ६१ ५३८ थी । इनम म २ ३५ ४००
 व्यक्ति भूमि के नीचे काम करते थ ।

एनक अतिरिक्त १६७०-७१ म भारतीय रजा म १३ ७० ००० व्यक्ति काम
 कर रहे थ । डाक और तार विभाग म ५ ६० ००० व्यक्ति और वाटरगाहा श्रांति पर लगभग
 १,००,००० व्यक्ति काम करते थ । मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि लगभग ८० लाख
 श्रमिक संगठित क्षेत्र म काम कर रहे थ ।

रोजगार और काम काज की स्थिति

मजदूरा का मालिका क शापणम बचान के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरत बाद
 न्यूनतम वेतन अधिनियम १६६८ लागू किया गया । इसके अन्तगत श्रमिका के लिए न्यूनतम
 वेतन काम क घटे माप्ताहिक छुट्टी और आवर टाइम के काम क वेतन का निर्धारण किया गया
 है । कारखाना म काम-काज की स्थिति क सम्बन्ध म फक्टरी एक्ट १६४८ लागू किया
 गया । इसके अन्तगत वयस्क मजदूर के लिए मप्ताह म काम क ४८ घंटे निर्धारित किए
 गए और श्रमिका के लिए सुरक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण मवाधा की व्यवस्था की गई ।
 अब १६ वष से कम उम्र क बालक कारखाना म काम नहा कर सकते । जिन कारखाना म
 २५० म अधिक कामचारी हा वहा कटीन की व्यवस्था भी की जाना है ।

१६६८ क बोनम भुगतान अधिनियम क अतगत यह तय किया गया था कि जिन
 कारखान या संस्थान म किसी भी दिन २० या अधिक व्यक्ति काम करते हा उन्हें मजदूरा
 को वेतन का कम स कम ४ प्रतिशत के बराबर बानम देना हागा परन्तु यह किसी भी
 रशा म ४० रुपए म कम नहीं हो सकता । अधिकतम बानम २० प्रतिशत हा । इस अधिनियम
 की पुनरीक्षा के लिए सरकार ने अप्रन १६७२ म डा० वी० के० मदान की अध्यक्षता म बोनम
 पुनरीक्षा समिति नियुक्त का । एन समिति की अन्तरिम सिफारिशा के आधार पर सरकार
 न बोनम की न्यूनतम राशि ६ प्रतिशत से बढ़ाकर ८ प्रतिशत कर दा परंतु बानम की यह
 राशि न्यूनतम ८० रुपए वेतन पाने वाले श्रमिका के लिए ५० रुपए हागी ।

विभिन्न राज्या म १६७० म कारखाना के मजदूरा को प्रति व्यक्ति लिए जान वाले
 औमत वार्षिक वेतन का योग इस प्रकार है (काप्टक म दिए गए आकड़े १६७१ के है)—
 असम २ ३६३ रु० (१ ५६६ रु०) आंध्र प्रदेश २,११७ रु० (१ १६६ रु०), उड़ीसा ८६६
 रु० (१ १८० रु०) उत्तर प्रदेश २ ०६३ रु० (१ २-४ रु०) बरन २ ४६७ रु० (१ १५२
 रु०) गुजरात २ ८०० रु० (१ ७०० रु०) जम्मु व कश्मीर १ ६३८ रु० (अनुपलब्ध),
 तमिऴनाडु २ ४४० रु० (१ ६६५ रु०) पञ्जाब २ १५६ (१ १७४ रु०) बिहार २ ७१० रु०
 (१ ८५६ रु०) मध्य प्रन्श २ ६१२ रु० (१ ८१६ रु०) महाराष्ट्र ० ६०३ रु० (१ ७७५ रु०)
 कर्नाटक २ ०८८ रु० (१ ३७५ रु०) राजस्थान ० ००३ रु० (७६१ रु०) हरियाणा

२६१६ रु० (अनुपनाथ), हिमाचल प्रदेश २,५२१ रु० (१,२८८ रु०) दिल्ली २,८४५ रु० (१,६५५ रु०) ।

ममूचे देश के लिए मजदूरी का सूचक अब यदि १९६१ म १०० माना जाए तो दम वप वाद १९७० म यह बढकर १७५ हो गया था । तथापि बनी हुई महगाई के कारण औसत वास्तविक आय ६८ रु० रह गई थी ।

ठेके पर काम करन वाले मजदूरों के लिए भी एक अधिनियम १९७० म बनाया गया था जो १० फरवरी १९७१ स ममूचे देश म लागू हो गया है । इमम कुछ सस्थाता म उनकी नौकरी की शर्तों का नियमन किया गया है और कुछ परिस्थितिया म उम समाप्त कर दिया गया है ।

सामाजिक सुरक्षा

सामाजिक सुरक्षा क क्षेत्र म भी स्वाधीनता प्राप्ति के बाद कारगर काम उठाए गए । १९४८ म कमचारी राज्य बीमा अधिनियम पास हुआ जिसम बीमारी दुघटना और मातृत्व सम्बंधी सेवाएँ उपलब्ध की जाती हैं । यह अधिनियम उन कारखाना पर लागू हाना है जिनम २० स अधिक व्यक्ति काम करते है और जिनका बेतन ८०० रु० स कम है । इसने अन्तगत मजदूर मालिक और सरकार तीना ही योगदान देत हैं । काम के समय दुघटना म मृत्यु हाने पर आश्रिता के लिए पेंशन की भी व्यवस्था है । परिवार के सदस्या क लिए भी अब चिकित्सा सुविधाया की जा रही है । १९७२ म ३३७ केन्द्रा म ४० लाख कमचारी और उनक १ २८ ८६ ००० आश्रित इस योजना स लाभ उठा रहे थ । इमके अन्तगत ५१ अस्पताल काम कर रहे हैं ।

कमचारी भविष्य निधि अधिनियम १९५२ म लागू हुआ । ३१ मार्च १९७० को यह १२० उद्योगा म और जम्मू कश्मीर का छोडकर सभी राग्या म लागू था । यह अधिनियम उन सम्थाया पर लागू नहीं होता जिनम ५० स कम व्यक्ति काम करत है और बिजली का उपयोग नहीं किया जाता । ८७ उद्योगा म मजदूरों और मातिका का हिस्सा ८-८ प्रतिशत और शय ६ १/४ प्रतिशत हाना है । मार्च १९७२ म ६२ ५० ००० व्यक्ति इस योजना स लाभ उठा रहे थ ।

जनवरी १९५८ म मृत्यु राहत कोष की स्थापना की गई थी । इमके अन्तगत मृतक क उत्तराधिकारिया आदि को अगस्त १९६६ के बाद म ७५० रु० मितता मुनिश्चिन हो गया है ।

उपयुक्त अधिनियमा आदि क अनिश्चित आय भी कई अधिनियम है । इनम कामना खान परिवार पेंशन याजना १९७१ और कमचारी परिवार पशन योजना १९७१ का उल्लेख किया जा सकता है । ३१ मार्च का इनक अन्तगत क्रमश २०५ लाख और ६५० लाख कमचारा भान थ । विभिन्न खाना आदि म भी भविष्य निधि याजनाएँ लागू है । श्रमिक कल्याण निधि अधिनियम भी पास किए गए हैं जिनक अन्तगत उन्मात्न पर उपकर लगा कर श्रमिक कल्याण व्यवस्था की जाता है ।

श्रम स्थिति और औद्योगिक विवाद

यद्यपि स्वतन्त्रता म पहलु भा औद्योगिक विवाद हान थ और मजदूर हडताल का महारा तन थ पर उनका कार्य अधिक संगठित रूप नया था । नया शिक्षा म एक उन्नत

नीय घटना थी, १९१६ में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कपडा मिल मजदूरों की २५ दिन की हड़ताल। शांति और सद्भावनापूर्ण वातावरण में यह हड़ताल सफलतापूर्वक समाप्त हुई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत सरकार ने अनुभव किया कि देश की औद्योगिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि औद्योगिक विवाद शांतिपूर्वक हल कर लिए जाए। इसलिए मारिना, मजदूरों और सरकारी प्रतिनिधियों का एक त्रिपक्षी सम्मेलन हुआ जिसमें आधारे पर औद्योगिक विवाद अधिनियम १९४७ बनाया गया। यह औद्योगिक विवादों को तय करने हेतु तन्त्र की व्यवस्था करता है। इस अधिनियम के अतिरिक्त अनुशासन संहिता १९५८ और औद्योगिक शांति सन्धिया १९६२ भी अच्छे औद्योगिक सम्बन्ध स्थापित करने की निशा में बनाए गए हैं। इन्हें मारिना और श्रमिका के केन्द्रीय संगठनों ने स्वेच्छिक रूप से स्वीकृत किया है। १९५३ और १९५६ में इस अधिनियम में संशोधन हुए जिनके अंतर्गत मिन बन्द रहने की स्थिति में या छुट्टी के समय मजदूरों का मुआवजा मिलता है।



नगर पालिक निगम जबलपुर

विकास कार्यों के निरन्तर बढ़ते चरण

- ★ नगर की प्रमुख सड़कों का सुधार तथा विस्तार काय निरन्तर जारी है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण यातायात में द्रुतगति से हो रही वृद्धि से दुष्परिणामों से बचाव के लिए नगर के प्रमुख चौराहों का विकास किया जा रहा है। चौराहों पर मरकरी लाइट द्वारा आकर्षक प्रकाश व्यवस्था करने का कार्य जारी है।
- ★ नगर के समस्त ४६ वार्डों में जहाँ मिट्टी के तेल के भ्रमके लगे थे उनको हटाकर टयव लाइट लगाये जा रहे हैं। वार्डों के भीतर नालियाँ का निर्माण गलियाँ का निर्माण एवं सुधार काय जारी है।
- ★ नगर के पिछड़े वार्डों में जहाँ टीन के सावजनिक शौचालय बने हुए हैं उनके स्थान पर सफ्ट शौचालयों का निर्माण किये जाने की योजना का शुभारंभ किया जा चुका है।
- ★ नये माटर रूड का विकास काय द्रुतगति से किया जा रहा है।
- ★ पर्याप्त जलपूर्ति के लिये जहाँ छोटी पाइप लाइन है उसको बन्द कर बड़ी लाइन डाली जा रही है तथा जहाँ पाइप लाइन अभी नहीं है वहाँ नई लाइन डाली जा रही है। उपनगरीय क्षेत्र गंगा एवं पुरवा में जलपूर्ति की प्रलय से योजना क्रियाविध हो रही है।
- ★ रानी दुर्गावती की गजानन्द प्रतिष्ठा की शीघ्र स्थापना की जा रही है।
- ★ नगर के ११ वार्डों में गंदी बस्तियों के सुधार की योजना को क्रियाविध किये जाने का प्रयास किया जा रहा है।
- ★ भोमती नाला को पक्का करने तथा गुरनी बाजार एवं लटकारी के पहाव सुधार की योजना। नगरवासियों से अपेक्षा है कि नगर निगम की जनहितकारी योजनाओं के क्रियाविधन में सन्धिय सहयोग प्रदान करें।

के० एल० दुबे
महापौर

रामानन्द शर्मा
आयुक्त

शंकरलाल यादव
अध्यक्ष स्थायी समिति

अनिल शर्मा
उप महापौर

जनसम्पर्क विभाग, नगर निगम, जबलपुर द्वारा प्रसारित।

Manufacturers of
Writing, Printing and Cover Paper



The Vidarbha Paper Mills Ltd.

Second Floor, Bank of Maharashtra Building

Sitabuldi, NAGPUR 12

Phone 26505

Grams PAPERMILL



Works SIHORA (Kanhana S E Rly Station)

म० प्र० राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित, भोपाल

प्रदेश के कृषकों की सतत सेवा में

बक अपने से सम्बद्ध प्रदेश के ४३ जिला सहकारी भूमि विकास बका के माध्यम से कृषि उत्पादन वृद्धि हेतु भूमि विकास काय के लिये दीर्घावधि ऋण प्रदान कर रहा है। बैंक ने वष १९७२-७३ में रुपये ११९६ लाख का कुल ऋण वितरित किया है जिसमें से रुपये ८३९ लाख कुमा निर्माण, रुपये २४ लाख नलकूप निर्माण रुपये २०७ लाख पंपसेट खरीदने व रुपये १२२ लाख ट्रेक्टर खरीदने तथा रुपये ४ लाख भूमि सुधार के लिए था।

३० जून १९७३ की वित्तीय स्थिति

ग्रहपूजी एव अन्य विधियाँ	रुपये ३ करोड
कायशील पूजी	रुपये ४३ करोड
शेष ऋण	रुपये ३६ करोड
गबनमट गारटी पर निगमित ऋणपत्र	रुपये ३८ करोड

बक द्वारा जिला बैंक के माध्यम से फिक्सड डिपॉजिट अधिकतम व्याज दर पर स्वीकार किया जाता है।

७% एक वष के लिए कृषया ७॥% दो वष के लिए

अपने निकटतम भूमि विकास बैंक से सम्पक करें।

एम० एल० सोनी
प्रबन्धक

एम० एम० बतरा
प्रबन्ध संचालक

ताराचन्द अग्रवाल
अध्यक्ष

मध्य प्रदेश टैक्सटाइल्स कारपोरेशन लि०, भोपाल के तत्वाधान में

निम्न कपडा व सूत मिलो के निरंतर प्रगति की ओर बढ़त चरण -

- (१) में० यु भोपाल टैक्सटाइल्स लि० भोपाल।
- (२) में० बुरहानपुर ताप्ती मिल्स लि०, बुरहानपुर।
- (३) में० स्वदेशी काटन एव फ्लोर मिल्स लि०, इंदौर।
- (४) में० हीरा मिल्स लि०, उज्जैन।
- (५) में० इंदौर मालवा यूनाइटेड मिल्स लि०, इंदौर।
- (६) में० कन्याणमल मिल्स इंदौर।
- (७) में० बगाल नागपुर काटन मिल्स लि० राजनादगाव।
- (८) में० सनावद स्पिनग मिल सनावद।

हमारी सफलतायें -

कुल २,५८,२६४ स्पिंडिल्स व ५६६० लूम्स पर २२५८० श्रमिका द्वारा महत्वपूर्ण काय। केवल दो वष की अवधि में रु० ४११५३० लाख के माल का उत्पादन। निगम द्वारा १२१५६ लाख रु० की लागत से वर्तमान मिलो का आधुनिकरण तथा नवीनीकरण।

आगामी कार्यक्रम में

बी० एन० सी० मिल्स राजनादगाव में २५० स्वचालित लूम्स व १५००० स्पिंडिल्स से युक्त एक विस्तार योजना।

हमारे आकर्षण -

प्रिंटेड पापनिम लॉग क्लाथ शर्टिंग मच्छरदानिया टेपेस्ट्री, धोतिया इत्यादि।

प्रदेश भर में फले निगम के विभिन्न बिक्री केन्द्रों पर एक बार अवश्य पधारें।

बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित, पटना-1

बिहार राज्य के कृषक से भुज्जी

स्मरण रमें

बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक सीमित

बैंक रोड पटना 1

बालक संख्या

कृषक संख्या { 21 17 1155
221 2 1155

प्रतिवर्ष कृषक भुज्जी

(गणना में)

	1 1 1958	1 1 58
(1) शिवाजीपुरा	15 78	1 3 30
(2) विन्ध्य बैंक एच. एस. वि.:	0 17	11 24
(3) मिर्जापुर एच. एस. वि.	11 3	152 92
(4) बाग विन्ध्य	135 78	167 18
(5) विन्ध्य एच. एस.	2 7 8	1800 25
(6) शिवाजीपुरा एच. एस.	10	10

यह बैंक बिहार राज्य में आपस-आस कृषि क्षेत्रों के विकास के लिए कार्य करता है।
यह कंपनी - 3 शिवाजीपुरा के माध्यम से राज्य में कार्य करता है।
सोपनापीत कार्य प्रभाव करता है।

यह बैंक 3 से 10 वर्षों के लिए 10% शान्त गैर-दृष्ट
माताओं को भी दर पर कृषि उपकरणों के लिए पैसे देता है।
प्रतिवर्ष एक घंटे कृषि मजदूरी भूमि सुधार के लिए कार्य करता है।
कंपनी बचत का बैंक के विभिन्न निष्पादन में जमा करने के लिए नियमित रूप से कार्य करे

1 वर्ष के लिए 3%
2 वर्ष के लिए 3 1/2%

सपेश्वर सिंह
अध्यक्ष

अशोक कुमार मुस्तर्जी
प्रबंध निदेशक

विदेशों में प्रवासी भारतीय

आज दुनिया क १२६ देशा म कुल मितार ६० लाख ऐस नागरिक रहत ह जिनक पुरखे भारत स गए थे । उन दिना बहुत म देशा या क्षेत्रा म ब्रिटिश प्रभुत्व था फतत उह काई कठिनाई नहा हुई परतु भारत तथा इन प्रदेशा के स्वाधीन हान पर आज स्थिति बदल गई है ।

बर्मा से शुरूआत

आजकल जो कठिनाई उगाडा म रहन वाल भारताया क मामल ह यह काद अवेला घटना नही है । १९४८ म जब बर्मा स्वाधीन हुआ तब उम समय वहा भी भारतीय ऐसी ही स्थिति म थ, जसे कि अब पूर्वी अफ्रीका म है । भारतीय काफी सख्या म दुकानदार साहूकार और उद्योगपति थ पर धीरे धीरे बर्मीकरण की नीति के फलस्वरूप उह हटना पडा । १९६३ म बर्मा सरकार द्वारा राष्ट्रीयकरण की नीति अपनात क बाद उक्त भारताया का वहा स हटना शुरू हो गया । अप्रैल १९६३ स १ जनवरी १९७३ क बीच १ लाख ६६ हजार ५०३ भारतीय भारत लौटे । उनम स अधिकांश क दक्षिण भारत म रियतगर आदि थ और उनक पूवज वही स गए थ अत उनके पुनर्वास म ज्यादा कठिनाई नही हुई । भौगोलिक समीपता म भी सुविधा हुई ।

भारतीय मूल क १ लाख २० हजार म १ लाख ५० हजार तक क लागू का बर्मा स्थित अपनी उम सम्पत्ति का मुआवजा मिलगा जिनका १९६३ और १९६५ क बीच बर्मा सरकार न राष्ट्रीयकरण कर लिया था ।

बर्मा सरकार ने एक क्षतिपूर्ति आकलन बोड का गठन कर दिया है । अनुमान है कि डेढ लाख लागू म स जिन पर क्षतिपूर्ति का घापणा लागू होगी १ लाख नाग अभी बर्मा म हा ह ।

बर्मा सरकार न जनवरी १९७४ म एक घापणा कर प्रवासी भारताया की राष्ट्रीयकृत सम्पत्ति दुकानें तथा व्यापारिक सन्धाना का मुआवजा देन क मबध म आवेदन माग है ।

बर्मा सरकार न १९६३ तथा १९६५ म थाक व्यापार तथा फुटकर कारावार एक उद्योग धंधा का राष्ट्रीयकरण कर लिया था । इसम लगभग ४ लाख प्रवासी भारताय प्रभावित हुए थ । इनम से तीन चौथाई भारत आ चुके है ।

श्रीलंका श्रीलंका म १८४० म तमिलभाषी भारताय जान लग थ तब वहा भी ब्रिटेन क अंगत था । धार धीरे वना भारताया की सन्धा काफी बढ ग । ये लाग मजदूर,

डाइवर-यापारी दर्जी, स्वणकार, आदि विभिन्न व्यवसायों में काम करते थे। १९४८ में लका के स्वाधीन होने पर इन लोगों ने लका की नागरिकता लेने की कोशिश की पर विफल रहे।

१९६४ के भारत-श्रीलंका करार के अंतर्गत १ जनवरी १९७३ तक श्रीलंका से भारत आने वाले प्रत्यावासियों की संख्या ७६,०२५ थी। १९७० में भारतीय तथा श्रीलंका की नागरिकता के लिए अंतिम तिथि निश्चित किए जाने के पश्चात् प्रथम दो वर्षों की लगभग १६०० की औसत और आगामी दो वर्षों की ७००० की औसत में और वृद्धि हो गई। १९७१ में प्रत्यावासनों की संख्या २५,००० थी और यह संख्या १९७२ में ३३,००० पहुंच गई। १९७३ में प्रत्यावासनों के आंकड़ा के ४०,००० होने की आशा है।

मलेशिया और सिंगापुर

मलेशिया और सिंगापुर की जनसंख्या में भी भारतीयों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन क्षेत्रों में सदियों से ही भारतीय आते-जाते रहे हैं। मलेशिया में करीब ८ लाख ८ हजार भारतमूल के लोग हैं। उनमें से ५० प्रतिशत सांख्यिक-निर्माण विभाग रेलवे-नगरपालिका आदि में काम पर लगे हैं। ३५ प्रतिशत व्यापारी हैं। कुछ साग बवालत और चिकित्सा आदि का व्यवसाय करते हैं।

सिंगापुर में भी भारतीय काफी असें से रहते हैं। इसकी कुल आबादी १७,१२,६०० है। उनमें १ लाख तीस हजार भारतमूलक हैं। उनमें से अधिक व्यापार में लगे हैं।

मारीशस मारीशस और फिजी में भारतवर्षियों का कारण भारत का छोटा रूप ही विकसित हो गया है। बम्बई से लगभग २४०० मील दूर हिन्द महासागर का यह द्वीप ऐसा स्थान है जहां भारतीय परम्पराय हिन्दू धर्म और हिन्दी भाषा जीवन्त रूप में विद्यमान है। मारीशस में भारत के मजदूर १८३५ से जाते शुरू हुए उनका जाने का उद्देश्य यूरोपियों के गन्तव्य के बड़े-बड़े खेतों पर मजदूरी करना था। १८४० तक वहां १८,५०० भारतीय मजदूर पहुंच गए। उनके पहुंचने के साथ ही मारीशस में चीनी का उत्पादन बन्द और सम्पन्नता बन्द लगी। ठेक पर आने वाले मजदूर गिरमिटिया कहलाते थे। वे क्लानर में बड़ी बस गये और खेती करने लगे। कुछ व्यापारी भी वहां पहुंचे। भारतीयों ने अपनी पूजा-अर्चना के लिए मन्दिर बनाये और अपनी समृद्धि का कायम रखने हुए जीवन व्यतीत करने लगे। ज्यादातर मजदूर विहार में गए और वहां का मुख्य भाषा भाजपुरी हो गई पर गुजराती और तमिल भाषी भारतीय भी वहां पहुंचे। अतः वहां के स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। वहां के बच्चे हिन्दी प्रेम से पढ़ते हैं। राज में साग रामायण महाभारत की बधा सुनते हैं। १९७३ में मारीशस में मानव जनसंख्या अत्यन्त कम है। मारीशस की कुल आबादी ७ लाख है उद्योग में करीब ६० प्रतिशत भारतवर्षी हैं। मंत्री भारतवर्षियों ने मारीशस का नागरिकता दे रखी है। १९७० में मारीशस में आन्ताराष्ट्रीय प्राय सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें भारत के विचार के प्रायस्त्वा के प्रायस्माजिया ने भारी शब्दों में भाग लिया। बन्धु सत्त्व पार्थी का जगता के धार समक तना १० शिवसागर समसुत्ताम प्रधान मन्त्री है।

फिजी उद्योग-धाम्पुत्रिया के उत्तर-पूर्व में फिजी द्वीपसमूह में भी काफी भारतीय रहते हैं। यह देश १० अक्टूबर १९७० का स्वाधीन हुआ। पत्तन यन्त्रियत के प्रधान था। मारीशस का भाति महा भी भारतीयों के राज के स्थान में मजदूरों के रूप में काम करते

गए। १८७० के बाद मजदूर वहा जाने लगे। १९१७ तक ६३००० भारतीय मजदूर वहा पहुच गए। उस मे से करीब एक तिहाई वापस लौट आए शेष वही बस गए और खेती करने लगे। फिजी मे करीब डेढ लाख एकड भूमि मे गन्ने के खेत हैं। ये लगभग सभी भारत वासिया के है। फिजी की कुल जनसख्या करीब ५ लाख है। भारतीयो की सख्या ढाई लाख से ऊपर है। कृषि के अलावा भारतीय व्यापारिया ने छोटी दुकान भी खानी, जिन पर परचून का सामान बिकता है। शाम को भारत की तरह यहा भी मंदिरों म घडियाल वजत हैं। भजन और आरती गूजती हैं। शुरू मे यहा भी योरोपीय भू-स्वामियो ने भारतीयो पर अत्याचार किए और उनके प्रति गुलामा का-सा व्यवहार किया। भारतीयो ने प्रतिकार के लिए जारलार आंदोलन किया। पहले अंग्रेजी शासका ने भारतीयो पर जमीन खरीदन पर भी राब लगा रखी थी, पर अब स्वाधीन फिजी म भेदभाव नहीं है।

दक्षिण अमेरिकी देश गुयाना म भी भारतीय शुरू म मजदूरों के रूप मे गए थे जबकि गुलामा की प्रथा समाप्त हा जान के बाद, अफ्रीकिया द्वारा काम करने से इन्कार कर देने के बाद वागा क मानिका को मजदूरों की जरूरत हुई। ये मजदूर भी इकरारनामे के अंतगत वहा गए और बाद म वही बस गए। ये लोग तटवर्ती क्षेत्रों म धान की खेती करने लगे और आजकल गुयाना का पूरा चावल उद्योग इन्ही के हाथ मे है। गुयाना की करीब पौने सात लाख की आबादी म करीब साढे तीन लाख भारतवशी है। इस प्रकार के कुल जनसख्या के आधे से अधिक हैं उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। कुछ असें तक भारतवशिया के मजदूर नता छेदी जगन यहा के प्रधानमन्त्रा रह चुके हैं, पर अंग्रेजा के बुचक के कारण उन्हें पद से हटना पडा। सभी भारतवशी गुयाना के नागरिक है।

तजानिया कीनिया और उगाडा म भी भारतीय काफी असें से है। स्वय वास्को डिगामा ने मोम्बासा और पूर्वी अफ्रीका के अथ तटवर्ती नगरा तथा जजीवार म भारतीयो के होने का उल्लेख किया है। भारत के पश्चिमा तट और पूर्वी अफ्रीका के बीच जहाजा का आना जाना काफी समय से होता रहा है। कीनिया और उगाडा म रेलवे के निर्माण म मुख्य योग भारतीयो का रहा है। उगाडा के वर्तमान सनिक राष्ट्रपति भले ही पिछला इतिहास भूल जाए पर यह सप्रमाण मिथ है कि भारतीय मजदूरों के बिना वहा रेलवे लाइन नहीं बिछती। १८९६ म ३५० भारतीय मजदूरों का पहला दल मोम्बासा आया था। कुछ ही वर्षों मे यह सख्या बढ़कर ३०००० तक पहुच गई। रेलवे लाइन पूरी हो जाने के बाद करीब ६००० मजदूर वही बस गए और नारीगर खाती सर्वेक्षक क्लक आदि के काम म लग गए। करीब २००० भारतीय रेलवे म ही लग गए। रेलवे के निर्माण म भारतीयो का बडा कष्ट उठाना पडा। वीहड जगला म शिविरा म से अनक मजदूरों को नरभक्षी जानवर उठा ले जाते थे। अनक मजदूर मलेरिया और अथ भयकर रागा के शिकार हा जाते थे।

रेलवे लादन के बिछन के साथ ही पूर्वी अफ्रीका के आंतरिक भाग म फलने चले गए। स्टेशनो के पास धीरे धीरे छोटी छोटी दुकान खाली गयी और कुछ समय बाद सारा फूटकर व्यापार भारतीयो के हाथो म आ गया। भारतीयो ने दूर-दूर के इलाका म दुकान खोलकर ग्राम अफीकिया का रोजमरा की चीज उपनय की। ब्रिटिश अधिकाारिया न भा भारतीयो के हौसल की दाद दी और नई जगह बस्ती बनात हा के भारतीयो को दुकान खालने के लिए आमन्त्रित करत। जजीवार के एक भूतपूर्व कामल जनरल ने एक बयान म स्पष्ट रूप से कहा था कि पूर्वी अफ्रीका म भारतीयो की बढौलत हा अथ-व्यवस्था चल रही है।

भारतीय हा मूल्या का उचित स्तर कायम रखना म मन्त्र करता है क्योंकि य कम मुनाफा लेकर हीजें बेचते हैं। यूरोपीय प्रयागिया म भारतीयों क प्रति द्वेष जागता तथा। उनके स्टोर भारतीयों क मुकाबले कम घाटा प्राप्ति करता थ और ये दूर-दूर तक के इलाका म जाने क बतराक थ पर भारतीय दुबान्तर मुबत ७ बज म र रात तक दुबान पर जुग रहता था उमकी जर्जरत कम था अत कम मुनाफा सता था।

इसके साथ हा पूर्वी अफ्रीका म बड-बड व्यापार भी जम गए और उहलि मूल्य धन अजित किया। उगाण्डा म उद्योग क रूप म बपाम का प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी भारतीयों का है। अफ्रिका क वहा जाने के पूव बपाम की उन्नयनीय धता सहा रही हाथी धी। १९०३ म ब्रिटिश सरकार न भारत म बपाम क बीज मगारर बाट और धाड पैमान पर ऐती शुरू हुई। शीघ्र ही भारतीयों न उगम शि लना शुरू की और बपाम अन्न क केन्द्र बनाये। १९२४ म र्ग तरह क १९८ बडो म म १०० स अधिव भारतीयों क थ। निर्पति क लिए ६८ प्रतिशत रुई भारतीयों फमें भजती था और कवन ८ प्रतिशत यूरोपाय फमें। धीरे धीरे यह बाम काफी चन निबना नव अफ्रीकिया ने गिरायत की शि भारतीय बपाम का कम दाम टत है। र्ग पर बपाम का यूनतम भाव निश्चित करने क लिए कारवाई की ग पर जान म पता चना कि कुछ मामना को छाडकर किमाना का वाजिब गम हा किया जा रहा है।

उगाडा म उद्योग क रूप म चीनी का जमाने का भी श्रेय भारतीयों का है। पहला चीनी कारखाना १९२३ म नानजी कालिनाम महता न तुगाजी म लगाया था। अत भा उगाडा म काफी मालदार भारतीय है। एक अनुमान है कि माधवानी उद्योग-ममूह का वनमान मूल्य उगाडा क कुत बजट का एक चौथाई है। उधर तगानिका म भारताय फन गए। वहा की प्रमुख फसल सीसन उगान म भी उनका एताधिकार हा गया। भारताया का महत्व इतना बट गया कि द्वितीय विश्वयुद्ध म जमनी की पराजय क बाद यह प्रस्ताव रखा गया कि तगानिका का कवन भारताया क लिय मुगक्षित कर दिया जाए पर भारताया ने प्रस्ताव स्वाकार नहा किया।

इसी प्रकार कीनिया म भी भारतीयों न व्यापार फनाया। नरावी और माम्बासा क बाजारा म दुबाना के नाम दखकर ही भारतीय प्रभाव पता गग जाता है। अथ पूर्वी अफ्रीकी देशों की तरह वहा भी भारतीयों पर यह धाराप है कि वे कीनिया क प्रति निष्ठा नही रखते अपनी बचत की राशि भारत या अथ देशों न भजते है। कीनिया क विकास म धन नहा लगात। एक अथशास्त्री क अनुमार कीनिया के २० ८ प्रतिशत भारतीयों ने अपना धन कीनिया म हां सम्पत्ति खरीदन म लगाया जबकि ९७ प्रतिशत भारतीयों ने भारत म सम्पत्ति खरीती। यह सही है कि वे पहले अपने बचत का राशि का कुछ भाग अपने परिवार वाला को भारत भेजते थ क्योंकि मयुक्त परिवार व्यवस्था म यह जिम्मन्तरी निभानी हाती है पर अथ यह बात नहा है।

उगाण्डा क राष्ट्रपति क ९ अगस्त १९७२क आदेश द्वारा उगाण्डा म रह रहे एशियाई मूल के उन सभी लोगो के निष्कासन या उनर वशत्रम का समाप्त करने क लिये प्रवेश परमिट तथा आवास प्रमाणपत्र रद्द कर लिय गये जा भारत इग्लड पाकिस्तान तथा बंगलादेश के नागरिक थ।

१५ अगस्त १९७२ से ८ मार्च १९७३ की अवधि के दौरान ९ ८०९ प्रत्यावासी

उगाडा से भारत आये। उन्हें बुरी तरह प्रताड़ित कर निवान लिया गया तथा उनकी सम्पत्ति व यहाँ तक कि आभूषण आदि भी जबरदस्ती छीन लिये गये।

सभी प्रकार भोजाम्बिक स लगभग ६०० परिवार जिनमें लगभग २३ ००० व्यक्ति हैं भारत वापस लौटे।

आजकल उगाण्डा में भारतीयों के साथ जा बीत रही है वह १९६८ में कीनिया में भी हुआ था। कीनिया, उगाडा तागानिका और जजीबार जब अंग्रेजों के शासन में मुक्त हुए तब वहाँ रहने वाले भारतवासियों का यह छूट दी गई थी कि वे चाहें तो ब्रिटिश पासपाट लेकर ब्रिटिश नागरिक बन सकते हैं। चाहे भारत या पाकिस्तान के नागरिक बन सकते हैं। चाहे उन्हा देगा के नागरिक हो सकते हैं। कुछ न वहाँ की नागरिकता ले ला कुछ न ब्रिटिश पासपोर्ट ले लिये, कुछ भारत एवं पाकिस्तान के नागरिक बन गए और एक ऐसा बग रह गया जा कहीं का नागरिक नहा था।

जो पढ़े - सो बढ़े

- शिक्षा और परीक्षा में उचित सुधारों के लिए और
- सभी के लिए मूल्यांकन के समान आधारों के लिए

मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल

वृत्त सञ्चाल्य है।

- केन्द्रीय मूल्यांकन प्रणाली और परीक्षा-केंद्रों की कड़ी व्यवस्था इस बात का आश्वासन है कि प्रत्येक परीक्षार्थी को पढ़ाई और परिश्रम के बराबर ही परीक्षा में उचित स्थान प्राप्त होगा।
 - मंडल की परीक्षाओं में प्रति वर्ष २ ००,००० से भी अधिक परीक्षार्थी सम्मिलित होते हैं।
 - देश के कोने-कोने में रह रहे २०,००० से भी अधिक स्वावलम्बी छात्र पत्राचार-माध्यम क्रम के माध्यम से इण्टरमीजिएट की शिक्षा प्राप्त करत हैं और परीक्षा देत हैं।
 - मण्डल प्रयत्नशील है कि प्रश्नों का चयन उद्देश्यमूलक हो।
 - मण्डल प्रयत्नशील है कि मूल्यांकन के आधार ठोस हों और स्तर सभी जगह समान हों।
 - देश के इस सबसे बड़े राज्य में प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थियों को समान सुविधा देने के लिए मंडल ने ग्वालियर, रीवा, इंदौर, जबलपुर और रायपुर में अपने क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित किये हैं।
 - मंडल द्वारा शाखाओं में विज्ञान सामग्री तथा अन्य आवश्यक साधनों की पूर्ति के लिए लगभग १५ लाख रुपये की राशि प्रदान की गयी है।
 - राज्य के निधन किंतु मेधावी विद्यार्थियों का पुस्तकें खरीदने के लिए ५० ००० रु० का प्रावधान किया गया है।
 - भोपाल में मंडल द्वारा संचालित आन्ध्र विद्यालय राज्य भर के प्रतिभा सम्पन्न मेधावी बच्चों की अपनी सम्पत्ति है। यहाँ उन्हें योग्यता के आधार पर प्रवेश विद्या-वेतन और छात्रावास का सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- सामाजिक काम जनता की मुनियारी शक्त है और मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल इसका दृढ़तापूर्वक पालन कर रहा है।

मनमोहक आकर्षक

J

जियाजी रासिलिन सूटिंग

आपकी कल्पना से परे,

अनेक नये

अनोखे डिजायनों में

उपलब्ध

★

निर्माता

जियाजीराव काटन मिल्स लि०,
बिरलानगर

लोकप्रियता के शिखर पर

सारे भारतवर्ष में

रत्ना छाप जाफरानी पत्ती

न० ६४, न० १५०, न० २००,

न० ३००, न० ४५० एव किवाम राजरत्न

अधिकाधिक लोकप्रिय क्यों है ?

क्योंकि

इसमें केशर, कस्तुरी, कीमती इत्रो एव विशुद्ध देशी मसालो का
व्यवहार होता है जो स्वाद एव सुगन्ध में सर्वोत्तम है।

निर्माता

प्रभात जर्दा फैक्टरी

मुजफ्फरपुर (बिहार)

मध्य प्रदेश

का

सर्वोत्तम—एकमात्र आकर्षण

- ⊙ रमणीय
- तापनियंत्रित
- आरामदेह

गोपी-छवि-गृह

रायगढ (म० प्र०)

दूरभाष ५५५

मानुराम सावडिया
संचालक एव प्रोप्रायटर

भारत की असीम खनिज सम्पदा
के उत्पादन एव निर्यात द्वारा
देश की प्रगति एव अर्थ-व्यवस्था में
सुदृढता लाई जा सकती है ।

इसी उद्देश्य की पूर्ति में सलग्न

राजऋषि एक्सपोर्ट्स (प्रा०) लि०

४-ई, वादना, टालस्टाय मार्ग,
नई दिल्ली ।

दूरभाष ४३१६४

दूरप्रेष राजऋषि

हमारा लक्ष्य है, मरुभूमि में एक आधुनिक कृषि व्यवस्था का विस्तार
उपलब्ध सेवाएं

- ★ हार्वेस्टर कम्बाइन
- ★ बुलडोजर
- ★ ट्रक्टर

गेहूँ ज्वार और चना काटने तथा निभालने के लिये ।
भूमि को समतल करने के लिये ।
खेत का फाड़ने तथा बीजने के लिये ।
उपरोक्त तीनों सबार्थों हमारे भाठों के द्वा पर उचित मूल्य
पर उपलब्ध हैं ।

बीज और खाद के लिये ।

ट्रेक्टर की मरम्मत और देखभाल के लिये ।

उच्चकोटि के ट्रैक्टरों तथा कृषि यन्त्रों की खरीद के लिये ।

निगम के प्रधान कार्यालय तथा केन्द्रों पर आप सदस्य आमंत्रित हैं ।

- हनुमानगढ़
- कोटा
- श्री विजयनगर
- भीलवाड़ा
- भरतपुर
- अलवर
- पाली
- झोटावाड़ा (जयपुर) ।

राजस्थान राज्य कृषि उद्योग निगम लिमिटेड

(राजस्थान सरकार का प्रतिष्ठान)

बिराट भवन पृथ्वीराज मार्ग, सी स्कीम जयपुर ।

चेचक के ये परिणाम

- कुहपता
- अपगता
- अधापन
- अकाल मृत्यु

भयक अवश्य है, परंतु

इससे बचा जा सकता है—चेचक का टीका लगवाकर

चेचक का टीका कब कब ?

प्राथमिक टीका —

बच्चों को — ३-६ माह की आयु में

वनों को — किसी भी आयु में

पुनर्टीका

सबको सफल प्राथमिक टीके के बाद
हर पाँचवें वर्ष जीवन भर

प्रसारित ।

निदेशक

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन

स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन शिक्षा ध्युरो उ० प्र०

सचनर ।

भारत में विस्थापित

'अतिथि दवा भव' सूत्र के उद्घापन और पाठनकर्त्ता भारत का १ कराड से अधिक अनिथिया (विस्थापिता) का भरण पापण राजगार शिक्षा चिकित्सा आदि समस्याआ से जूझना पड रहा है। ससार म एमा कार्ण नेश नही है जहा प्तनी बडी सख्या म लोग आण हा और जिनका दायित्व सरकार का वहन करना पड रहा हा।

समझा जाता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध म सर्वाधिक ८० लाख लोग विस्थापित हुए पर भारत की सख्या इस सख्या स डार्ड गुना स कुछ ही कम है। द्वितीय महायुद्ध के समय ८० लाख लोग बे घरदार बना न्यिे गये व। १९४५ म समुक्त राष्ट्र सघ ने इस समस्या को अन्तरराष्ट्रीय ढग पर मुतयान के लिए समुक्त राष्ट्र सघ महायता और पुनवास परि पद् की स्थापना की। इस परिपद न उम समस्या को पूरी तरह हन करने म ३ ६८ ३५ ८२,२३६ डालर व्यय किये और ३१ जून १९४७ तक यह परिपद कायशील रही। इस अवधि म ५५८४८१ जमन, २८०५६ आस्टिया १७ ८६५ स्टनियन २८०७५ मध्य पूव क देशा के, १०१४६ चीनी विस्थापिता का बसाया गया। आस्टिया म १३८००० बेल्जियम म ५००० चीन म १३५००, फ्रांस म ४३१००० यूनान म २००० स्टली म १८६००० मध्य पूव म ३३,०००, नीदरलड म ५,००० इग्लड म ६०००० विस्थापित थ।

भारत विभाजन के दुदिन से ही नही अपितु त्यक पूव ३ जून १९४७ का विभाजन की घापणा क बाद स ही भारत म विस्थापिता का आना शुरू हा गया। इन विस्थापिता की सरकार न अलग अलग धरनिया बनाई हैं। पाकिस्तान स आन वाला का विस्थापित बर्मा माजाम्बिक और श्रीलका म आन वाला का स्वदेश नौटे भारगीय निव्वन तथा बगानेश स आन वाला का शरणार्थी भारतीय अतश्रता का पाकिस्तान का ह्माल रित किये जाने स प्रभावित ब्यक्ति और भारत-याक सघप क समय हुए वे घरवार लाग।

पाकिस्तान स भारत म विस्थापिता क आन क ८ मुख्य कारण हैं —

१—शत्रुतापूण वानावरण क कारण अल्पमव्यक समुणय के लागे द्वारा पाकिस्तान क सीमावर्ती क्षेत्रा का छाडना।

२—उनक धार्मिक रीतिरिवाज तथा शिक्षा पद्धति म ह्मनभेप क कारण असुरक्षा की भावना। बहुमव्यक जाति क लागे द्वारा मगटिन तरीका म खेता म खडी फसन का बनात ने जाना और सम्पत्ति पर कब्जा करना।

३—पाकिस्तान का एक इस्लामी राज्य बनान की बार-बार का घापणा न हिंदुमा म ऐसी भावना भर दी है कि पाकिस्तान म उनका कोई भविष्य नहा रह गया है।

५—पूर्वी बंगाल की हिन्दू शक्ति परिधिगत और बरगंजर समुदाय का धार्मिक बहिष्कार ।

४—प्राचीन चोत्रण तथा व्यापार मुनिधामा की बर्मी ।

९—संगमध्यक समुदाय की घोरता का उत्पीड़न, हरण धार्मिक ।

७—धार्मिक अधिकाधिक तथा 'याया'या मे बहुमदक समुदाय के लागू के विरुद्ध की गई निकायना को दूर न कर पाया ।

८—धनान्तरा समुदाय के लागू के सबधिया तथा पुढासिया के लगानार भारत धारा की पाट में उतरी सख्या में होने वाली बर्मी तथा उत्तमे उत्पन्न बर्माए ।

भगस्त १९४६ में १९७१ तक बंगलादेश (तब पूर्वी प्राकिस्तान) से आए विस्थापिता की बर्षवार सख्या इस प्रकार है —

सन	सख्या	कारण
१९४६	१९,०००	हिंदू विनाश
१९४७	२,४४,०००	भारत विभाजन
१९४८	७,७६,०००	हैदराबाद पुलिस कारवार्द के विरोध में दगा उत्पात
१९४९	२,१२,०००	
१९५०	१५,७५,३६०	दगा उत्पात
१९५१	१,८७,०००	हिंदू निष्कासन
१९५२	३,०३,०००	आर्थिक विपत्ति से सताये जाकर और पासपांट मिलने की कठिनाई
१९५३	७६,०००	लियाकत अली-नेहरू पकट दफना दिया गया
१९५४	१,१८,०००	दगे
१९५५	२,३९,०००	उच्च विराधिया और बंगला प्रेमिया को निकाल देने की नीति के फलस्वरूप
१९५६	३,२०,०००	पाकिस्तान का इस्लामी राज्य घोषित किया गया
१९५७	८,५६,०००	इस्लामी राज्य में 'हिंदू कयो'?
१९५८	१,०७,९०६	पगम्बर का बाल श्रीनगर में चोरी चला गया
१९५९	७,५६,५	हिंदू विरोधी आन्दोलन
१९६०	२,४५,२७	"
१९६१	१,१६,१४	"
१९६२	९,७६,८	"
१९६३	२,४९,९९९	"
भगस्त ६३	८९,००,०००	बंगला देश सघष

सरकार आन्दो के अनुसार ५० पाकिस्तान से ४७४० लाख विस्थापित भारत १९५६ से १९६४ तक पाकिस्तान से आने वालों का सख्या नगण्य रही। १६ दिसम्बर

१९७१ का बगलादेश की मुक्ति के बाद बगलादेश में आये प्रायः सभी विस्थापित भारत से अपने देश लौट गये।

उगाडा सरकार द्वारा भारतीया का निकालन व आदेश के बाद अगस्त १९७२ से प्रत्यावासिया का भारत आना प्रारम्भ हो गया। १९७३ तक ६५०० व्यक्ति उगाडा से भारत लौट चुके हैं। इनमें से लगभग ५,६६० भारतीय पामपोट वाले हैं तथा शेष मुख्यतया ब्रिटिश पामपोट वाले हैं। उगाडा पामपोट वाला तथा राज्यविहीन व्यक्तियों की संख्या भी कम नहीं है।

उगाडा से लौटे विस्थापिता की सहायता के लिये बम्बई में एक शिविर स्थापित किया गया तथा प्रत्यावासियों को तत्काल राहत दी गई।

बर्मा की सरकार द्वारा सभी प्रकार के व्यापार का राष्ट्रीयकरण तथा विदेशियों पर कुछ अन्य प्रकार के प्रतिबंध लगाए जाने के फलस्वरूप बर्मा में रहने वाले भारतीय १ जून, १९६३ से भारी संख्या में भारत लौट रहे हैं। यह अनुमान किया गया था कि कुछ समय के भीतर लगभग २३०,००० व्यक्ति वापस आ जायेंगे। जून १९७३ तक १,६६,६२३ व्यक्ति भारत आए। बर्मा से आये इन भारतमूलक विस्थापिता को देश भर में बसाया गया है।

माजासिबक (अफ़्रीका) से भारत विराधी भावना के कारण लगभग ६०० परिवार जिनमें लगभग २३ सौ व्यक्ति हैं भारत लौटे हैं और अधिकतर गुजरात राज्य में बसे गए हैं। स्वदेश लौटने समय उनको भारत सरकार द्वारा उदारतापूर्वक सीमा शुल्क में सुविधाएँ दी गई हैं। विधवाया, अनाया और अशक्त व्यक्तियों को गरीबी की परिस्थितियों में १२०० रु० प्रतिवर्ष तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। स्वदेश लौटने वाले भारतीयों का रियायती दरा से ब्याज पर ऋण के रूप में पुनर्वासि सहायता भी दी गई है ताकि वे व्यापार व्यावसायिक प्रतिष्ठान या लघुस्वरोच्चा उद्योगों को शुरू करने में योग्य बन सकें। कृषि भूमि एसाट करने के मामले में उन्हें प्राथमिकता दी गई है। स्वदेश लौटे भारतीयों के बच्चा का शिक्षा के लिए निशुल्क शिक्षा छात्रवृत्ति पुस्तक इत्यादि के रूप में सुविधाएँ दी गई हैं। गुजरात सरकार के अनुसार अब लगभग इन सभी परिवारों का बसाया जा चुका है।

१९६४ के भारत-श्रीलंका करार के अंतर्गत भारतीय मूल के ५,२५ लाख व्यक्तियों को भारतीय नागरिकता दी जानी है और इन व्यक्तियों का १५ वर्ष की अवधि में भारत लौटना है। कालम्बो स्थित भारतीय उच्चायाग से प्राप्त सूचना के अनुसार नागरिकता प्राप्त करने के लिए ४,५८,४०० व्यक्तियों के प्राथमपत्र प्राप्त हुए हैं। १ जनवरी १९७३ तक भारतीय नागरिकता प्रदान किये गये व्यक्तियों की कुल संख्या १,५५,०३८ थी। १ जनवरी १९७३ तक ७६,०२५ व्यक्ति भारत आ चुके हैं। स्वदेश लौटने वाले इन लोगों में से अधिकांश सीधे अपने मूल शहर या गाँवों को चले गये हैं।

२६ जनवरी १९७४ को दिल्ली में श्रीलंका की प्रधानमंत्री श्रीमती बंधारनायक तथा प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के बीच हुई वार्ता के बाद घोषणा की गई कि भारत और श्रीलंका न केवल भारत मूलक लोगों के भविष्य का निराकरण करते हुये आंधे आंधे के आधार पर उन्हें नागरिकता देने का निणय किया है। इस प्रकार ७५ हजार लोगों का भारत तथा बाकी ७५ हजार को श्रीलंका सरकार नागरिकता प्रदान करेगी।

१९६४ में हुये समझौते के अंतगत भारत ने ५२१,००० ब्यबिया को नागरिकता देने का निणय किया था। श्रीलंका ने तीन लाख लोगो को नागरिकता देने की जिम्मेदारी ली थी।

श्रीलंका से लौटने वाले भारतीयों व पुनर्वासि का राष्ट्रीय ममम्या व रूप म माना गया है। सहायता तथा पुनर्वासि उपाया व कार्यालयन व लिए वांछित धन भारत सरकार द्वारा अनुदान तथा ऋण के रूप म दिया जाता है।

तिब्बत पर हुए चीना आक्रमण के कारण १९५६ से अत्र तत्र लगभग १,६००० तिब्बती भारत सिक्किम तथा भूटान म आए है। १९७० व शौरान लगभग १,०४ शरणार्थी म्यायी पुनर्वासि के लिए स्वित्जरलंड चले गये थे।

तिब्बती शरणार्थियों व कृषि और अन्य व्यवसायों म पुनर्व्यवस्थापना की याचनाओं म इस वर्ष और प्रगति हुई है। अब तक २५,३०० तिब्बती शरणार्थियों को कृषि बस्तिया लघुस्तर के उद्योगों और देश के विभिन्न भागों म स्थापित दस्तकारी केंद्रों म पुनर्वासि दिया गया है। केंद्रीय सरकार द्वारा संचालित या सहायता प्राप्त कई शिशुशालाओं और स्कूलों म लगभग ६५,००० बच्चे पढ़ रहे हैं। लगभग ४,००० से अधिक शरणार्थियों ने अपने प्रयासों द्वारा विभिन्न प्रकार के काम खोज लिए हैं।

केंद्रीय सरकार अत्र रोजगार और पुनर्वासि मंत्रालय के अधीन पुनर्वासि विभाग व माध्यम से भारत आने वाले इन विस्थापितों व लिए अनेक कार्य करती है। दृष्टिकारण विकास पुनर्वासि भूमि उद्धार मगठन कुछ ऐसे ही कार्य हैं जिनके माध्यम से सरकार कार्य करती है।

विद्युत पूर्ति में आत्मनिर्भर

खेता व कारखाना

को

उदार दरा पर विद्युत पूर्ति

चतुर्थ योजना म स्थापित विद्युत क्षमता ७५७५ मगावाट
अर्थात्

१९५१-५२ की क्षमता से दस गुनी वृद्धि

राज्य की तीव्रगामी औद्योगिक प्रगति हेतु पाचवी योजना में विद्युत उत्पादन म

८६० मगावाट की अतिरिक्त वृद्धि प्रस्तावित

राज्य के सतुलित विकास हेतु पिछड़े जिलों के

विद्युतीकरण के विशेष प्रयास

विद्युतीकृत पंप	१,४४,७२३
विद्युतीकृत ग्राम	१०,१७४
विद्युतीकृत हरिजन बस्तिया	१,६२५

राज्य एव उपभोक्ताओं की सेवा में

मध्य प्रदेश विद्युत मंडल

सुबह की चाय व साथ ताजा अखबार पढा जाये तो आनन्द बढ जाता है। ताजी खबरें, ताजे गुनाम की सा सन्तुष्टि देती है। नये और भरपूर समाचारा के नये पढें

मध्य प्रदेश का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

नवीन दुनियां

नवीन दुनिया एक ऐसा अखबार है जिसे हर रुचि के लोग चाय से पढते है।

आवक स्तम्भ

सुनो भाई साघा

सवाल जबाब

चलती फिरता छाया

खेत और यलिहान

तीसरा काना

खल और खिलाडी

भारतीय घटनाचक्र

पद्मिनीधराचाय द्वारा लिखित

भविष्यफल

साप्ताहिक परिशिष्ट के अगने अलग आवकण हैं

सम्पर्क सूत्र

नवीन दुनिया कार्यालय, ५ बल्देव बाग, जबलपुर

फोन न० ४०३४

LOOK AT ASSAM

Assam Agriculture to day takes its shape

Through Scientific approach in

Different stages of operation

Farmers' acceptance of the innovations

And their keen interest in the change over

For modernisation in farming pattern

Gives a new impetus for venturing

Farming Corporations in Assam Generating

New hope for economic progress

for tillers of the soil

ISSUED BY THE AGRICULTURAL INFORMATION OFFICER
DEPARTMENT OF AGRICULTURE ASSAM GAUHATI

मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी माध्यम में अध्यापन-प्रध्यापन
प्रसम्भय नहीं है।

आवश्यकता है बुद्ध-मण्डप की

पुस्तक का अभाव दूर कराने की बुनियाद हम स्वीकार करते हैं। वैज्ञानिक
तकनीकी और मानविकी विभिन्न विषयों में १७० मात्रक ग्रन्थ हिन्दी
भाषा में प्रस्तुत कराने की विभिन्न सूचना भी हम चाहते हैं।

हृषीका अपने बुद्ध मण्डप से मानवशास्त्र में उच्च स्तरीय अध्यापन सम्भव बनाइये।

विशेष धियारण एवं निम्नलिखित सूचीपत्र के लिए सम्पर्क सूत्र—

दूरभाष १३३७
दूरलेख अकादमी

विक्रय अधिकारी
मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
६७ मासथीपनगर, भोपाल ३ (म० प्र०)

एक वायदा पूरा—पर अभी बहुत चलना बाकी

राष्ट्रीय खनिज विकास निगम लिमिटेड की स्थापना १९५६ में मुख्य रूप से लोह
अयस्क के उत्पादन और निर्यात के लिए की गयी थी। हम इस बात का गर्व है कि भारत
सरकार ने इसे १९६६-७० में विशिष्ट निर्यात बाय कुशलता के लिए पुरस्कार हेतु चुना।
इस वर्ष हमने ४४ लाख टन से अधिक लोह अयस्क का निर्यात किया तथा देश के लिए
२६३ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा कमायी।

परन्तु इससे हम सतोष नहीं हैं। हम अपनी निर्यात और अधिक बढ़ाने का प्रयत्न
कर रहे हैं। वस्तुतः १९७०-७१ में हमारा निर्यात ३३ करोड़ रु० से भी अधिक हुआ। अब
हम अपने इस्पात संयंत्रों को भी लोह अयस्क की पूर्ति करने लगे हैं। अपने इस्पात संयंत्रों
की आवश्यकताओं और विदेशों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए हम अपनी वर्तमान
खाना का विस्तार और नयी लोह खाना का विकास कर रहे हैं।

राष्ट्र की सेवा में—

राष्ट्रीय खनिज विकास निगम लिमिटेड

भारत सरकार का प्रतिष्ठान,
मुकरमजाही रोड,
हैदराबाद ५००००१ (आ० प्र०)

STATE TAKE OVER

OF



WHOLE SALE TRADE IN RICE AND PADDY A STEP TOWARDS

State Taking Over of Other Essential Commodities For
Economic Emancipation

ASSAM is the only State in the country to take
this Bold and Historic measure for procurement
and equitable distribution of Rice and Paddy
amongst the public through the
Cooperative Societies

IT IS A PEOPLE'S MOVEMENT TO FIGHT
AGAINST THE VESTED INTERESTS



Issued by The Director of Information and Public
Relations, ASSAM

भारतीय चलचित्र

भारतीय सिनेमा का विकास बड़ी मामूली स्थिति में हुआ। पिछले कुछ दशका में भारतीय सिनेमा पर विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक शक्तिया का प्रभाव पड़ा और अब भारतीय सिनेमा ने बड़ी भारी प्रगति कर ली है।

भारत में औसतन प्रतिदिन एक फिल्म और हर तीसरे दिन एक लघु फिल्म तैयार हो जाती है। इस प्रकार अब भारत, जापान और अमरीका के बाद विश्व में सबसे अधिक फिल्म बनाने वाले देशों में से एक है।

१९७२ में ४१२ फिल्म बनाई गईं। इन्हें मिलाकर अब तक बनाई गई फिल्मों की कुल संख्या लगभग ११५०० हो गई है। इनमें से लगभग २७०० हिन्दी में बनाई गई हैं और शेष बंगाली, तमिल तनुगु मलयालम, कन्नड़, मराठी गुजराती और अन्य भाषाओं में बनाई गई हैं।

एक बड़ा उद्यम

चाहे किसी भी मानदण्ड में देखा जाए अब भारतीय सिनेमा एक बड़ा व्यावसायिक उद्यम और एक विशाल उद्योग बन गया है जिसमें लगभग ११० करोड़ रु० का पूंजी निवेश किया गया है। इसमें विभिन्न योग्यता के एक लाख से अधिक पुरुष और स्त्रिया काम करते हैं और इसमें प्रति मप्ताह लगभग ३ करोड़ फिल्म देखने वालों का मनोरंजन होता है।

हमारे इस विशाल देश में ७००० से अधिक सिनेमाघर हैं। १९७२ के अंत में इन सिनेमाघरों में बठने के कुल स्थान ४२७३०५२ थे। सिनेमा हमारे युग का इस समय सबसे अधिक शक्तिशाली मनोरंजक और सवाहक बन गया है और इससे बड़ी भारी संख्या में देशका को प्रभावित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मानवीय जीवन के समस्त पहलुओं और क्रियाकलापों पर भी इसका बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ता है।

भारत में पहला चलचित्र लूमियेर बंधुओं के एक सिनेमट्रोग्राफी के माध्यम से ७ जुलाई १८९६ का बम्बई के वाटसन होटल में दिखाया गया था। भारत का पहला लघुचित्र 'रसलर' १८९६ में श्री एच० एस० भातवडेकर ने बनाया था। एफ० वी० धानावाला ने १९०० में ही अपनी एक फिल्म बनाई थी। श्री धानावाला और सावेदादा तथा हीरा नाल सेन—ये सबसे पहले भारतीय थे जिन्होंने इस क्षेत्र में पथ प्रदर्शन का काम किया। भारत की पहला मूक फिल्म पुर्डीनक श्री आर० जी० तारने और श्री एम० जी० चित्रे

की एक कहानी के आधार पर बनाई गई थी और यह बम्बई में १८ मई, १९१२ को सिगार्ड गई थी।

सिनेमा के विकास की दृष्टि से ३ मई १९१३ का दिन भारतीय सिनेमा में विकास का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिये बड़ा महत्व रखता है। इसी दिन श्री गान्धि माहल फालके द्वारा भारत में पूरी तरह से बनाई गई फिल्म हरिश्चन्द्र बम्बई में सिगार्ड गई थी। भारतीय सिनेमा के जनक की इस फिल्म में गभीर बनावार पुरण ध. श्री फातर दग्धगन एक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वे स्वयं अपनी पटकथा लिखते थे स्वयं ही सम्पादन करते थे और सेट का डिजाइन फोटो लेने का काम और निर्देशन भी स्वयं ही करते थे। उनकी फिल्मों के प्रतिपाद्य विषय दत्तकथा घम और लाल-माहिल्य में निगूण गए हैं।

१९१७ में श्री जे. एफ. मन्गल ने भी इसी विषय पर बगला में एक फिल्म बनाई। उन्होंने थियेटरों का जाल बिछाकर सिनेमा की लोकप्रियता बढ़ाई। दक्षिण में सत्रम पहली फिल्म कीचकबधन श्री एन. मुदालियर ने मद्रास में १९१६ में बनाई थी।

१९१२ से १९३४ तक इस प्रकार कुल १२७६ मूक फिल्में बनाई गई थीं। इन फिल्मों के प्रतिपाद्य विषय दत्तकथा इतिहास जीवनकथा कल्पना चक्रमा और गामा जिक बाता पर आधारित थे।

उस उद्योग की जांच पड़ताल करने के लिए १९२७ में फिल्म जांच समिति नियुक्त की गई थी। उस समय यह अनुभव किया गया था कि इस माध्यम का मनुष्या और उमक नतिक मूल्या पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। इससे दस साल पहले सिनेमामा का लाइसेंस देने के लिए और सावजनिक रूप से फिल्मों के प्रदर्शन के अधिकार के मॉडिफिकेट देने के लिए भारतीय सिनेमा फोटोग्राफी अधिनियम पास किया गया था।

बोलती फिल्में

भारत में सबसे पहला बोलती चित्र आलम गारा श्री आदेशर ईरानी ने बम्बई में १९३१ में बनाया था। यह दरअसल एक युगांतकारी घटना थी क्योंकि इससे हमारी फिल्मों में संगीत नृत्य और सवाद का सूत्रपात हुआ। इसका यह परिणाम हुआ कि न केवल हमारी फिल्मों के प्रतिपाद्य विषय और स्वरूप में ही आमूलचूल परिवर्तन हुए बल्कि इस उद्योग और इसके क्षेत्रों के समस्त सगठन में भी भारी परिवर्तन हुए। भारत के लोगों में फिल्मों में संगीत बड़ा लोकप्रिय है। हमारी फिल्मों की भाषा और हमारा अपना संगीत ये दोनों ही इतने भिन्न हैं कि हम वास्तविक विश्व सिनेमा से बिल्कुल अलग चलने लगे हैं। फिर भी श्री पी. सी. बरुआ देवकी बोस नितिन बोस श्री शांताराम विनायक हिमाशु राय महबूब जे. बी. एच. वाडिया आदि निर्माताओं ने कुछ बहुत अच्छी भारतीय फिल्में बनाईं। श्री सत्यजीत रे ने भारतीय सिनेमा को विश्व के सिनेमा के समक्ष रख दिया।

नई तकनीकें अपनाते फोटोग्राफी के आधुनिक माज-सामान का इस्तेमाल करने और सम्पादन की नई प्रणालियाँ अपनाने की दृष्टि से भारत ने फिल्म बनाने की कला और विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। मोर्टेज फलश-शक क्लोज अप डिस्टाल्व और जम्प क्राउट जसी फोटोग्राफी की विभिन्न प्रणालियाँ अब हमारी फिल्मों का निर्माण करते समय प्रयोग की जाती हैं।

सबसे पहली

भारत में सबसे पहली रंगीन फिल्म 'कन्याकुमारी' १९३७ में बनाई गई थी। अब तक ३५० से अधिक रंगीन फिल्में बन चुकी हैं जिनमें से अधिकांश हिन्दी में बनाई गई हैं। १९३३ में 'कम' फिल्म हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में बनाई गई थी जिसकी नायिका देविका रानी थी। श्री गुरुदत्त ने १९५६ में सबसे पहली मिनमास्कोप फिल्म 'कागज के फूल' बनाई थी। मिनमास्कोप में पहली रंगीन फिल्म 'प्यार की प्यास' १९६१ में बनी। पहली बहुत बड़े बजट की फिल्म 'मुगले आज़म' थी जिसे श्री के० आसिफ ने बनाया था। १९७१ में एक बंगाली फिल्म 'इगीत' बनाई गई जिसमें कोई शब्द नहीं बोलना पड़ा था। श्री सुनील दत्त ने १९६४ में केवल एक अभिनेता से अपनी प्रायोगिक फिल्म 'यादें' बनायीं। १९६७ में बनाई गई 'राउण्ड दि वर्ल्ड' पहली भारतीय टैक्नीकनर फिल्म थी जो ७० मिलीमीटर में स्टीरियोफोनिक साउण्ड के साथ बनाई गई थी। 'पाम्पौश' गैबार्कलर में बनी पहली फिल्म थी और किमी भारतीय द्वारा बनाई गई पहली टैक्नीकनर फिल्म 'नक नक पायल बाजे' थी।

श्रेष्ठतम फिल्में

बाबूराव पट्टर विमलराय गुरुदत्त, के० आसिफ वी० एन० सरकार और कई अन्य भारतीय निर्माता ऐसे हैं जिन्होंने भारत की श्रेष्ठतम फिल्में बनाईं और उन्होंने अपनी कृतियां से यह सिद्ध कर दिया कि मिनमा की कला में हमारी सफलताएं कितनी उत्कृष्ट हैं। हम दरअसल अपने इन निर्माताओं पर गर्व हैं।

प्रभात टाकीज, वाम्बे टाकीज, 'यू थियेटर्स ए० वी० एम०, जेमिनी—ये कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने भारत में कई सार्थक फिल्में बनायीं।

१९४३ में वाम्बे टाकीज द्वारा जारी की गई फिल्म 'किस्मत' ने कलकत्ता में लगातार सातों तीनों साप्ताहिक चक्र अपने समय का सारा रेकार्ड तोड़ दिया। इसका कारण यह था कि इस फिल्म की कथा आकर्षक संगीत और कुशल कलाकारों ने इसे सुन्दर और आकर्षक बनाने में काफी कामर उठा नहीं रखी।

इस समय श्री मयजित र विश्व में सबसे अधिक प्रतिभाशाली फिल्म निर्माताओं में से एक माने जाते हैं। आपू सभे उनमें उनके तीन चित्र निस्सन्देह मिनमा कला की एक सर्वोत्कृष्ट कृति हैं। वाल्ट डिजले का छोड़कर शायद अब कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे सामयिक फिल्मों की दुनिया में इतने बड़े पैमाने पर फिल्मों के आलोचकों और प्रशंसकों ने सम्मान दिया हो और प्रशंसा की हो। उनकी पहली फिल्म 'पापेर पांचाली' की सारी दुनिया में प्रशंसा हुई। फिल्म बनाने के उनके ढंग में नवीनता है और इस माध्यम के द्वारा वे यथाथ रूप से विचारों का चित्रण करते हैं वहाँगी का उत्पादन करते हैं पहले से ही स्थिति का मिनमिला बँडाने हैं और जीवन के छोटे छोटे कष्ट और छोटी-छोटी खुशियाँ को प्रकट करते हैं। उनकी कृतियाँ में यथाथ तथा लय आदि अथ खुशियाँ का बड़ा सुन्दर समय हाता है और यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। अब फिल्म बनाने का उनका यह ढंग 'रेज मिनमा' के नाम से जाना जाता है।

वृत्तचित्र

फिल्म विभाग दो दशक पहले स्थापित किया गया था। यह अपने प्रकार का सबसे

बड़ा सगठन है। जनता को जागरूक बनाने और उन्हें जानकारी देने के लिए आवश्यक विचारा और सूचना के आधार पर यह अधिकांश-वत्तचित्र तैयार करता है। कुछ वत्तचित्र अथ फिल्म निर्माताओं को भी दे दिये जाते हैं ताकि वे निजी क्षेत्र में वत्तचित्रों को तैयार करने के काम में सहायता दें। कई वत्तचित्रों और प्रायोगिक फिल्मों का विश्वभर में गुणगान हुआ है। यह विभाग एक साप्ताहिक समाचार चित्र तैयार करता है ताकि देशवासी देश में तथा विदेशों में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं को देख सकें और उनका विवरण सुन सकें। ये फिल्म अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषाओं में बनाई जाती हैं। वत्तचित्रों के समाचार चित्रों के अलावा यह विभाग काटून, कथा फिल्म, शैक्षणिक निर्देशात्मक फिल्म पयटन फिल्म और अन्य फिल्म भी बनाता है। यह विभाग हर साल लगभग १५० फिल्म तैयार करता है जो विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में भी तैयार होती हैं।

फिल्म उद्योग के साथ संबंध

१९५१ में स्थापित फिल्म जांच समिति ने अथ बातों के साथ साथ इन बातों की सिफारिश की थी

- (१) फिल्म निर्माताओं के लिए प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया जाय।
- (२) कलात्मक महत्व की फिल्मों का वित्तीय सहायता के लिए एक संस्था स्थापित की जाय।
- (३) एक फिल्म परिषद स्थापित की जाय।

भारत और भारत के आसपास के देशों के नये फिल्म निर्माताओं को प्रशिक्षण देने के लिये फिल्म प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया गया है जो एशिया में अपने प्रकार का सबसे बड़ा संस्थान है। इस संस्थान ने फिल्म उद्योग को नायक और नायिकाएँ योग्य और प्रशिक्षित निर्देशक और पटकथा लेखक फिल्म सम्पादक साउंड रिकार्डिस्ट और अथ तकनीक दिये हैं। अब इसमें यह व्यवस्था भी की जा रही है कि वह टेलीविजन के नये उभरते माध्यम के बारे में भी प्रशिक्षण देंगे।

नई लहर की फिल्में

अब कुछ ऐसे नये फिल्म निर्माता सामने आये हैं जो थोड़े से रुपये-पैसे से लोक से हटकर कलात्मक और प्रायोगिक फिल्म बनाने के लिये उत्सुक हैं जो इस समय के सामाजिक व्यवहार और प्रथाओं तथा साम-सामयिक प्रवृत्तियों के अनुकूल हैं और जिनमें लोगों का भावनात्मक आवश्यकताओं की भी संतुष्टि हो सके। फिल्म वित्त निगम ने मिनेमा का एक साथ एक ढंग से विक्रय करने के लिये काफी सहमिती यत्न किये हैं। यह निगम हमारे मिनेमा देखने वाले लोगों की रचि बनाने का यत्न करता है और प्रतिभाशाली तथा योग्य फिल्म निर्माताओं का आवश्यक वित्तीय सहायता देता है। भुवनशाम सारा आकाश दस्तक और बटनाम वस्ता आदि फिल्मों की विशेषता और गुणा की बड़ी सराहना की गई है और इन फिल्मों का इस निगम ने ही वित्तीय सहायता की है।

पूना में राष्ट्रीय फिल्म-मैगज़ेन स्थापित किया गया है ताकि देश और विदेश की श्रेष्ठतम फिल्में यहां लाने-सुरक्षित रूप में रखी जा सकें। यहां फिल्मों का वर्गीकरण किया जाता है अनुसंधान किया जाता है और फिल्मों के अध्ययन और फिल्मों-सम्बन्धी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित किया जाता है।

आज्ज्या कर्तचित्र नियंत्रण निगम हमारी फिल्मों के नियंत्रण के लिये नये अवसर पैदा करके इस उद्योग की सहायता कर रहा है।

सैंसरशिप

सरकार न फिमा का सैंसर बरन क प्रश्न क बार म एउ समिति नियुक्त की ह ताकि वह हम बात का अध्ययन करे कि सावजनिक रूप से प्रदर्शित की गई फिमा का समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के परिप्रेष्य म लागू पर क्या असर पड़ता ह ।

यामला समिति न सरकार का अपनी रिपोर्ट दी है । ममिति न विस्तार स बतमान कानूनी मशीनरी और भारतीय तथा विदेशी फिमा क प्रदर्शन के लिये सर्टिफिकेट देन की प्रणाली का अध्ययन किया है ।

राष्ट्रीय पुरस्कार

सरकार न बलात्मक और साम्प्रतिक दृष्टि से उठूट प्रसार की फिन्म बनाम क लिये फिन्म निर्माताओं का प्रात्माहित करने के निमित्त राष्ट्रीय पुरस्कार देन की व्यवस्था की है । फिन्मा कत्तचित्रा और प्रायोगिक तथा शक्षणिक फिन्मा के लिए अलग अलग पुरस्कार लिये जात हैं ।

सन '७३ को पुरस्कृत सर्वश्रेष्ठ फिल्मों

१९७२ की घोषित सर्वश्रेष्ठ फिन्मा और सर्वश्रेष्ठ फिन्मी व्यक्तित्वा का १७ दिगम्बर १९७३ कानई दिल्ली के विधान हाल म राष्ट्रपति की बी गिरि ने निम्न प्रकार पुरस्कार दिये ।		
सर्वोत्तम अभिनता	श्री सजीव कुमार भरत पुरस्कार	काशिश (हिन्दी)
सर्वोत्तम अभिनेत्री	श्रीमती टी शारदा उवशी पुरस्कार	'स्वयम्बरम्' (मलयालम)
सर्वोत्तम निर्देशक	श्री अदूर गायालाकृष्णन	स्वयम्बरम
सर्वोत्तम पटकथा लेखक	श्री गुलजार	काशिश (हिन्दी)
सर्वोत्तम संगीतकार	श्री एस डी बमन	'जिन्दगी, जिन्दगी (हिन्दी)
सर्वोत्तम गायिका	कु० लता मंगेशकर	परिचय' (हिन्दी)
सर्वोत्तम गायक	श्री जेत्सूदोस	अच्चानुम भाष्यायुम (मलयालम)
सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफी (रंगीन)	श्री क के महाजन	माया दपण (हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफी (ब्लैक एंड व्हाइट)	श्री एम सी रवि वर्मा	स्वयम्बरम्'
सर्वश्रेष्ठ बाल अभिनेत्री	कु० नीरा मालाव	रानूर प्रथम भाग
फिल्म उद्योग वागदान	संगीतकार पक्ज मलिक	दादासाहब फालक पुरस्कार

क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाली फिल्मों

माया दपण	हिन्दी	पना थीरता	मलयालम
श्रीपजा सानार माती	अरमी	'मानागा मनीपुर	मनापुरी
स्तोर पत्र	बंगाली	पिञ्जरा	मराठी
गुण सुन्दरी नो घर समार	गुजराती	पथिकथा पटानमा	तमिल
'शोरा मजरा	कन्नड	पनन्ती कपुरम	तेलगू

हरित नान्ति की दिशा में
एक और कदम

- १ राज्य व कृषि-बाजार की अच्छी व्यवस्था और नियंत्रण
- २ ५० विकसित बाजार प्राणणों का १६ ६५ करोड़ रुपये की लागत से निर्माण
- ३ गावों में बाजार केंद्रों को मिलाने वाली सड़क का निर्माण
- ४ कृषकों को उपज का उचित मूल्य दिलाने की व्यवस्था
- ५ कृषकों और व्यापारियों की कृषि-सूचना सेवा
- ६ उपभोक्ताओं को विशुद्ध एवं वर्गीकृत सामग्रियों की उपलब्धि का प्रबंध

बिहार राज्य कृषि मार्केटिंग बोर्ड,

अभय भवन फ्रेजर रोड पटना।

दी बाहमेर सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि०

प्रधान कार्यालय—स्टेशन रोड, बाहमेर
(स्थापित ४ मार्च १९५६)

	(हजारों में)
कायशाल पूजी	१०७ ४७
अधिकृत पूजी	३० ०००
जमा पूजी	१८,३८
अमानतें	२३,१६
ऋण बकाया	७६ १२
चम्पलाल जन व्यवस्थापक	ताराराम चौधरी अध्यक्ष

निष्पक्ष तथा राष्ट्रीय विचारों के लिए
पढ़ें तथा पढायें

साप्ताहिक सत्यजन

संपादक मलिक देशराज

विधायक विश्रामगढ़

खंड १ भागल (म० प्र०) फोन १४५६

कृषकों को अधिकाधिक मूल्य प्राप्त कराने में सक्रियता से सलग्न
कृषि उपज मण्डी बिलासपुर (म० प्र०)

उपमण्डी प्राणण—विलहा
मण्डी प्राणण में आवश्यक सुविधाओं को
उपलब्ध करने में कार्यरत
मारसाधक पदाधिकारी
कृषि उपज मण्डी
बिलासपुर

भारतीय संगीत व नृत्य

भारतीय संगीत न विदेशों में भारी लोकप्रियता प्राप्त की है। भारतीय संगीतज्ञ वर्षों से अमरीका और यूरोपीय देशों में परम्परागत भारतीय संगीत पेश करते रहे हैं। आज ५० रविशंकर उस्ताद अली अकबर खा जस कलाकार यूरोप और अमरीकी संगीत जगत में उतने ही लोकप्रिय हैं जितने कि प्रतिष्ठित पश्चिमी संगीतज्ञ।

भारतीय संगीत में इस प्रकार की रुचि और उस सगव अपनाने की इस प्रवृत्ति के कई कारण हैं। संगीत के अध्येता इस बात को अनुभव करने लगे हैं कि विश्व के विभिन्न देशों में अधिक विकसित प्रभावकारी एवं हृदयस्पर्शी संगीत प्रणालियाँ हैं। आज सगात के क्षेत्र में देश की सीमाओं का बंधन समाप्त हो चुका है। ५० रविशंकर और उस्ताद अली अकबर खा अमरीकी विश्वविद्यालयों में भारतीय संगीत की शिक्षा दे रहे हैं तथा उनके द्वारा स्थापित संगीत कालेजों में भारतीय संगीत का गंभीर रूप में अपनाने वालों की संख्या बढ़ रही है। विश्वविख्यात वायलिनवादनक यहूदी मेनुहिन उस्ताद अलताखा की तबला संगीत के साथ भारतीय राग बजाने लगे हैं। रविशंकर-यहूदी मेनुहिन की युगलबन्दी जनमानस को आदोलित कर चुकी है जबकि उस्ताद अली अकबर खा और अमरीकी सन्माफोन वादक जोन हंडी का युगल कार्यक्रम नये स्वरूप की सृष्टि कर चुका है। इसी प्रकार विविध पश्चिमी साजों के साथ भारतीय साजों के वादनमा ने संगीत की सीमाबद्धता समाप्त कर दी है।

परम्परागत सांगीतिक परम्परा का निर्वाह करने वाले प्रतिभाशाली संगीत सजक ५० रविशंकर न देश में ही नहीं बल्कि अमरीका एवं यूरोपीय देशों में नवयुग का निर्माण किया है। उन्होंने भारतीय संगीतज्ञों के लिए विश्व के द्वार खोल दिए हैं।

१९५८ में उन्हें प्रथम बार पेरिस में आयोजित यूनेस्को संगीत समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया। इसी समारोह में यहूदी मेनुहिन एवं डेविड आस्ट्रिच न कार्यक्रम पेश किये। १९६६ में उन्होंने पुनः इसी समारोह में भाग लिया। मध्यपूर्व, रूस एवं स्कैंडिनेविया का उनकी यात्रा प्रभावकारी रही और उन्होंने विदेशी फिल्मों में सगात दिया। उन्होंने लास एंजिल्स में किन्नर स्कूल आफ म्यूजिक स्थापित किया, जिसमें गायन, सितार सगन, तबला की शिक्षा अभी भी जारी है।

उस्ताद अली अकबर खा अपने ढंग के एक ही कलाकार हैं। भारत के श्रेष्ठ सरोद वादन उस्ताद अली अकबर खा का स्थान आज विश्व के संगीतज्ञों में काफी ऊँचा है। यूरोपीय देशों और अमरीका में इन पक्के परम्परावादी कलाकारों ने संगीतज्ञों और सगात प्रेमियों

का समान रूप से प्रभावित किया है। सुर और लय के वादशाह अली अकबर के संगीत से युवावगम नयी चेतना का संचार हुआ है। अमरीका के श्रेष्ठ सवमाफोनवादन जान ब्रीम आदि कलाकारों के साथ वादन विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण भाषण, प्रदर्शन तथा कॉलेज के संचालन से उस्ताद ने संगीत की महान सेवा की है।

उस्ताद अली अकबर खा १९५५ में प्रथम बार वायलिनवादन यूहूदी मेनुहिन के आमंत्रण पर अमरीका गये। उन्होंने यूयाक स्थित म्यूजियम ऑफ़ माइन ग्राट्स में सरोज वादन पेश किया। टेलीविजन पर भारतीय संगीत पेश करने वाले उस्ताद अली अकबर प्रथम कलाकार थे। १९६५ में उन्होंने अमरीकन सोसायटी ऑफ़ ईस्टर्न ग्राट्स में वाद्य एवं गायन की शिक्षा देना स्वीकार कर लिया। इस और काफी अमरीकी छात्र आकृष्ट हुए। १९६७ में छात्रों की संख्या बढ़ गयी और सरोज सितार तबला बासुरी वादन तथा गायन सीखने के लिए अमरीका के विभिन्न भागों के व्यक्ति अधिक उत्सुक दिखायी दिये। इस समय उस्ताद ने कैलिफोर्निया में अली अकबर कॉलेज ऑफ़ म्यूजिक स्थापित किया। इस कॉलेज में प्रशिक्षण देने के लिए उस्ताद भारत से वायलिन वादन श्री वी० पी० जोग सराजवादन बहादुर खा और मितारवादन इद्रनील भट्टाचार्य को लगे गये।

वास्तव में यूरोप में भारतीय सस्टुति के प्रति रचि बहुत पहले ही जाग्रत हो चुकी थी। श्री उदयशंकर के पिता डा० श्यामशंकर वर्षों से यूरोप में थे। संगीत के शौकीन डा० श्यामशंकर ने अपने पुत्र उदयशंकर का वहाँ बुलाया। १९२४ के लगभग बड़ा संगीतमय नाटक पेश किया गये जिसमें उदयशंकर सहायक रहे। इसी समय में उदयशंकर विख्यात पावलोवा के सम्पर्क में आए और उन्होंने सनिका की सहायता के लिये एक कार्यक्रम पेश किया जिसमें भारतीय वाद्य-वीणा तबला, आदि का प्रयोग किया गया। पावलोवा ने भारत आकर अध्ययन किया और पुनः यूरोप लौट कर दो नृत्यनाटिकाएँ प्रस्तुत कीं। भारतीय वाद्यों का ही आर्कस्ट्रा तैयार किया गया। इस आर्कस्ट्रा के निर्माण में प० विष्णु दिगम्बर के शिष्य विष्णुनाथ शिरानी और उस्ताद अलाउद्दीन खा के शिष्य तिमिर बरन का हाथ रहा।

भारतीय संगीत के महान संरक्षक गायनाचार्य प० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने १९३० में यद्यपि कलकत्ता और श्रीलंका की ही यात्रा की किंतु भारत में रहते हुए भी उन्होंने जिग प्रकार की स्वरलिपि तैयार की जिनसे भारतीय संगीत एवं पश्चिमी संगीत का निकट जान तथा स्टाफनाटशन प्रणाली अपनाने में प्रयास का एक उदाहरण मिलता है।

प० पलुस्कर के शिष्य प० आचारनाथ ठाकुर ने १९२३ २४ १९२६ २७ १९३० और १९५५ में नवान यात्रा की और फारेंस के अन्तर्राष्ट्रीय संगीत सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने इटली के तत्कालीन कणधार मुसालिनी के समक्ष गायन पेश किया।

भारत के महान गायक उस्ताद अमर खा ने १९६६ में स्टेट यूनिवर्सिटी कॉलेज यूयाक में विजिनिंग प्रॉफ़ेसर के रूप में अमरीका का यात्रा की।

विश्वविद्यालय मितारवादन उस्ताद विनायक खा ने १९५५ ५६ में सांस्कृतिक प्रतिनिधिमन्त्र के माध्यम से भारत की यात्रा कर उन्हीं भारत की समृद्ध परम्परा से परिचित कराया। १९६६ में उन्होंने एशियन म्यूजिक कंसर्ट में भाग लिया तथा १९६५ में बर्लिन स्टाइटाम ऑफ़ि स्थानों पर मितारवादन पेश किया।

भारत का प्राचीन गायना ध्रुपद के प्रतिनिधि के रूप में उस्ताद नमिर मादनुद्दान

डागर एव नामिर अमीनुद्दीन डागर न १९६८ म यूरोप की यात्रा की। बर्लिन परिम लन्दन, ब्रुसल्स म उनके कायत्रमा की काफी मराहना की गई।

विख्यात तबलावादक प० चतुरखाल न १९५४ स १९६८ तक प० रविशंकर, प० रामनारायण एव श्रीमती शरन रानी के साथ विदेश यात्रा की और तबला वादन स पश्चिमी वादक को काफी प्रभावित किया। गुणी तबलावादक प० तारानाथ का अमरीका एव यूरोप म बडा सम्मान ह और उहाने वहा कई शिष्य तयार किये। आज उस्ताद अल्लारखा अमरीका और यूरोप म प्रसिद्ध है।

विख्यात सारंगीवाजक प० रामनारायण १९५४ स अब तक यूरोप एव अमरीका की कई बार यात्रा कर चुक है। इम पारम्परिक वाद्य स पश्चिम का परिचित कराने का श्रेय प० रामनारायण का है।

उस्ताद अनाउद्दीन खा की शिष्या सरोदवादिना शरन रानी न रूस आस्ट्रेलिया, इरान, फिजी द्वीप तथा यूरोपीय दशा की यात्रा के दौरान भाषण प्रदर्शन व कायत्रमा स वहा की जनता का काफी प्रभावित किया। १९६६ और १९६७ म शरन रानी ने ईरानी सतूर के साथ युगलवन्दो पेश की जो एक नया अनुभव था।

प्रसिद्ध वासुरीवाजक विजयराघव राव ने १९५४ म मास्त्रुतिक शिष्टमडल क साथ रूस, पानड चेकोस्लावाकिया की यात्रा की।

वीनकार उस्ताद जिया माइउद्दीन डागर ने १९६८ म अमरीका के वेसलीन विश्व विद्यालय मे वीन एव सुरबहार वादन एव गायन की शिक्षा दी। प्रभा अत्र सरोदवाजक अमजन् अली खा वासुरीवाजक हृदिप्रसाद चौरासिया एव माणिक वर्मा ने भी विदेशा म भारतीय सगीत की लोकप्रियता म वागदान किया।

नृत्य कला

विदेशा म नृत्य प्रदर्शन व क्षेत्र म मितारा देवी विरजू महाराज गोपीकृष्ण अवेरी वहना, दमयंता जाशी आदि ने काफी काय किया।

वास्तव म स्वतंत्रता प्राप्ति के पूव नृत्य क प्रचार का काय मनका-दल ने किया। इनके साथ इनके अलावा रागिना देवी का भा भारतीय नृत्य प्रदर्शन के सम्बन्ध म बडा नाम है। कथकली गुरु गापीनाथ भी उनक साथ थ। रामगोपाल न परिम लन्दन, यूयाक हानिब्रुड म कायत्रम पेश किये।

श्रीमती बाल सरस्वती ने यूरोप और अमरीका की यात्रा का तथा अमरीकी विश्व विद्यालय म गायन और भरतनाटयम नृत्य की शिक्षा दी। श्रीमती बान सरस्वती के भ्राता वासुरावाजक श्री टी० विश्वनाथन न तीन वर्षों मे दो बार अमरीका एव यूरोपाय देशा की यात्रा की और कर्नाटक सगीत को लोकप्रिय बनाने म बडा योगदान किया। जान हिगिस ने मद्रास आकर सगीत सीखा और अपना नाम हिगिस भगवतार रख लिया। टारंटा विश्व विद्यालय म अभी कर्नाटक सगीत पीठ स्थापित हा गई है। मद्रास सरकार के क० वी० नारायणस्वामी न दो बार अमरीका की यात्रा की। मदगमवाजक पालघाट रघु ने एक वष तक अमराका म रह कर कर्नाटक ताल पद्धति का प्रचार किया। मृदगमवाजक तिरुचि शंकरन अभी टारंटा विश्वविद्यालय म शिक्षा दे रह ह। वीणावाजक कल्याण कृष्ण भगवतार ने एक वष तक अमरीकी विश्वविद्यालय म शिक्षा दी। वीणावाजक एस० बालचंदर ने कई

वार यूरोपीय देश एव अमरीका की यात्रा कर कर्नाटक संगीत की विशेषता से पश्चिम का परिचित कराया ।

वासुरीवादक रमणी वायलिनवादक लालगुडी जयराम तथा त्रय कर्नाटक संगीतज्ञा की पश्चिम में बड़ी मांग है । गायिका एम० एस० सुब्बलक्ष्मी न राष्ट्रसंघीय बहत्सभा में गायन पेश कर बड़ा सम्मान प्राप्त किया । बीणावादक चिट्टी बाबू और वायलिनवादक टी० एन० वृष्णन ने भी पश्चिम में कार्यक्रम पेश किये ।

दक्षिण की नृत्य प्रणालियाँ का भी वहाँ काफी प्रचार हुआ । श्रीमती मृणालिनी साराभाई न अमरीका की यात्रा कर भरतनाट्यम का प्रचार किया । ऋता देवी न सात बार यूरोपीय देश तीन बार अमरीका और तीन बार रूस की यात्रा कर भरतनाट्यम कूचिपूडि माहिनी आर्ट्स एव उडासा नृत्या का सफल प्रदर्शन किया । ऋता के अनुसार भारतीय नृत्य के आध्यात्मिक पक्ष ने पश्चिम का अधिक प्रभावित किया । श्रीमती रक्मिणी देवी अग्गेल न आस्ट्रेलिया और अमरीका में भरतनाट्यम नृत्य पेश कर ख्याति अर्जित की ।

लगभग दो सौ वर्ष पूर्व सर विलियम जास ने भारतीय संगीत का अध्ययन कर भारतीय रागा के विविध रूप बताये । इसके बाद विलियड ने भारतीय संगीत पर ग्रथ की रचना की । कप्तान सी० के० ड० ने दक्षिणी एव उत्तरी वाद्या की तुलना की । श्री ई० बलमट न थ्युतिया के सम्बन्ध में कुछ सिद्धांत निर्धारित किये । श्री फाकम स्ट्रेंजवे ने यह स्थापित किया कि मेलाडी ही मूल आधार है ।

एलेन डेनेलु ने हमारे संगीत के परम्परागत स्वरूप को स्थापित करने का प्रयास किया । रोजयल ने उत्तर भारतीय एव दक्षिण भारतीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन किया । वाल्टर काफमन ने उत्तर भारतीय रागा की स्वरलिपियाँ का तुलनात्मक अध्ययन किया । बाट राइट न भारतीय संगीत की स्वरलिपि पद्धति की समस्या पर विचार किया । राजर आस्टन ने भारतीय संगीत के दार्शनिक पहलू को स्थापित किया ।



केडिया एराड कंपनी, भोपाल

वार्षिकी १९७४ के प्रकाशनावसर

पर

हिन्दुस्थान समाचार मूज एजेसी के प्रति

हार्दिक शुभकामनाएँ

MOST PEOPLE LOVE
ORANGE FLAVOUR
THAT'S WHY
THEY LIKE FANTA
THE BRIGHT
HAPPY TASTE
THAT MAKES
EVERYTHING
MORE FUN

**ORANGE
FLAVOURED**

FANTA
...TASTES SO
GOOD
IT'S FUN TO
BE THIRSTY!

Fanta is a registered trade mark of The Coca Cola Company

Authorised Bottler
PURE DRINKS (NEW DELHI) PVT LIMITED NEW DELHI

महाराजा जीवाजी राव सिधिया म्यूजियम

इसम शहशाह अकबर एव औरंगजेब की
तलवार, बहादुरशाह जफर की ढाल,
नेपोलियन की मज भव्य आकपक फानूस
परशियन गलीचे, विश्व परीक्षक चीनी
कटोरे भारतीय एव पाश्चात्य वाद्य, प्राचीन
सिक्के, विशाल दरवारहाल ३ टन के दो
विशाल फानूस आदि देखने को मिलेंगे।

स्थान

जय विलास पैलेस, ग्वालियर
समय प्रात ६-३० से साय ४ ३०
बजे तक

टिकिट दर

२ ५० २० बच्चा का १ २५ २० सैनिको
एव छात्रो के लिए १ २५ २०

(परिचय पत्र दिखाना आवश्यक है)

नाट गाइड की व्यवस्था है।

✱

मानसेवी सचालक
महाराजा जीवाजी राव
सिधिया म्यूजियम,
जयविलास पैलेस, ग्वालियर

आय-कर दाता!

आय कर विभाग ने प्रत्येक आय कर दाता के लिये एक

स्थापित लेखा नम्बर



नियत कर दिया है

ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिये किया गया है कि निर्धारितियां ने प्राप्त भुगतान के चाना पौरा और आय सभी विन्नी पत्रियों को ठीक तरह से दत्त किया और पभावनी मरणा जा सकें। अगर आपकी गतता से का स्थायी लेखा नम्बर मिल गये हू। या को नम्बर नहीं मिला हा हा हुआ करके अपने कर निर्धारण आय-कर प्रपिहारी/ आयकर भावुतन से एक नम्बर २ = करने को या एक ही नम्बर नियत करने को करिये।

हमारा अपने आय के व्योरो चानाता भागि पर अपना लो स्थायी लेखा नम्बर प्रभाव नियत ताकि

● विभाग आपकी दम्पि सेवा कर सकें।

निरीक्षण निदेशालय

मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् में नवीन योजनाओं का सूत्रपात

राज्य में साहित्य तथा साहित्यकारों के विकास एवं प्रोत्साहन के लिए मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् पिछले २० वर्षों में निरन्तर गतिशील रही है। पिछले दो वर्षों में परिषद् की गतिविधियाँ मध्यमपूर्व विस्तार हुआ है। परिषद् को राज्य के जीवन्त साहित्य एवं साहित्यकारों से जोड़ने की निष्ठा में इधर शीघ्र ही निम्नलिखित योजनाएँ हाथ में ली जा रही हैं —

- १ सेमीनार एवं गोष्ठी (अ) कबीर-उत्सव (ब) आलोचक शिविर
- २ दो वार्षिक फेलोशिप जो केवल प्रदेश के रचनाशील लेखकों का दिए जाएंगे।
- ३ राज्य में प्रकाशित होने वाली छोटी पत्रिकाओं की सहायता अनुदान।
- ४ हर वर्ष ५ युवा लेखकों की पहली पुस्तिका का प्रकाशन।
- ५ प्रदेश की बाह्य के लेखकों का प्रवेश का दौरा-विशेषण आतिथ्यवासी सुन्दर अचना का।
- ६ मध्यप्रदेश के लेखकों का एक प्रमाणिका शुरू है।
- ७ स्वतन्त्रता पूर्व निषिद्ध साहित्यिक कृतियों का पुनःप्रकाशन।
- ८ आलोचना और रचनात्मक चिन्तन के एक वैज्ञानिक का प्रकाशन।
- ९ विश्वविद्यालय या साहित्यिक संस्थाओं द्वारा आयोजित गोष्ठियाँ या सम्मेलन आदि के लिए सहायता अनुदान।

परिषद् के नवीनतम प्रकाशन जो आप अपने पुस्तकालय में रखना चाहेंगे
 अ अनुष्टुप प० सुयनारायण दास की प्रतिनिधि रचनाओं का सङ्कलन।
 ब रामानुजलाल श्रीवास्तव प्रतिनिधि रचनाएँ।
 स मयिलो मगल प० शुकलाल प्रसाद पाण्डेय।
 द रोवा राज्य का इतिहास श्री गुरु रामप्यारे अग्निहोत्री।
 ह मध्यप्रदेश के सगीतज्ञ श्री प्यारेलाल श्रीमाल।

विशेष विवरण के लिए लिखें

सचिव, शासन साहित्य परिषद्, पुराना सचिवालय, भोपाल

अधिक अनुत्पादन के लिये परम आवश्यक खाद की पूर्ति करने में सलग्न

मैसर्स नारायण राइस एण्ड आयल मिल्स

फोन २०६

लोहा बिलासपुर (म० प्र०)

निवासी ३३०

दी धरमसो मोरारजी केमिकल क० लिमिटेड के

'जहाज छाप' सुपर फास्फेट के बिलासपुर जिले के तथा

हिंदुस्तान स्टील कम्पनी लिमिटेड के

राजा छाप अमानियम सल्फेट एवं राउरकेला के साना खाद के बिलासपुर जिले एवं रायगढ़ जिले के एजेंट

हर डिपो में थोक एवं चिल्लर भाव से हमेशा उपलब्ध

महाराष्ट्र राज्य की उपराजधानी ऐतिहासिक नगर नागपुर

भोसला शासका तथा बाद में मध्यप्रदेश की राजधानी रहे नागपुर नगर की परंपरा अति उज्वल है। इस नगर में नये और पुराने का सुंदर सम्मिलन दिखाई देता है। ऐतिहासिक काल से ही यह नगर मासकृतिक राजनीतिक तथा व्यावसायिक दृष्टिया से एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस समय यह नगर महाराष्ट्र राज्य की उपराजधानी के रूप पर आसीन है।

भौगोलिक दृष्टि से नागपुर भारत के लगभग केन्द्र स्थान पर स्थित है। यह नगर सेंट्रल तथा साऊथ ईस्टन रेलवे का प्रमुख जंक्शन है। यहां से बम्बई, कलकत्ता दिल्ली और मद्रास जाने के लिए हवाई सेवा भी उपलब्ध है। सभी विश्वाभा के राष्ट्रीय मार्गों का यहां मिलन होता है।

नागपुर नगर अपने स्वादिष्ट सतरो तथा हैण्डलूम की साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है, और उनकी मांग देश के हर कोने से की जाती है। यहां पर स्थापित उद्योगों में सूत निर्माता, वस्त्र बुनाई, चीनी मिट्टी और काच का सामान खर उत्पादन, फला के पेय और चमड़ा कमाने का समावेश होता है। भारत का एकमात्र 'यूज प्रिंट कारखाना नागपुर के ही समीप स्थित है। नागपुर विश्वविद्यालय के अतिरिक्त यहां पर आकाशवाणी का केन्द्र भी है।

नागपुर से सटे हुए तथा नागपुर महानगरपालिका से पय जल प्राप्त करने वाले कामठी नगर में फरो मगनिज प्लाट सेपटी फयूज व गनपावडर प्लाट, शासकीय अल्कोहल फक्टरी बीडी फक्टरी और हैण्डलूम के प्रतिष्ठान हैं। एक औद्योगिक बस्ती भी यहां पर स्थापित है।

नागपुर को प्रकृतिदेवी का भी बरदान प्राप्त है। ऊंचे विशाल वक्ष सुन्दर पहाड़िया अनुपम प्राकृतिक दृष्य, आरोग्यवधक जलवायु और आवागमन की विपुल सुविधाओं तथा वर्षा पवनार व रामटेक जैसे समीपस्थ दर्शनीय स्थानों के कारण यह नगर पर्यटकों को बहुत आता है।

आवागमन की सभी सुविधाओं से युक्त इस ऐतिहासिक नगर में सुसज्जित यात्रियों का हार्दिक स्वागत है।

कृ रा पाडव महापौर	गोपालराव मोटघरे उपमहापौर	उमेश चौबे अध्यक्ष स्था० सं०	के. व. मडलेकर निगम आयुक्त
----------------------	-----------------------------	--------------------------------	------------------------------

अपनी बचत का धन

मथुरा जिला सहकारी बैंक लि० मथुरा में जमा कीजिये।

क्याकि इसमें सरकार हिस्सेदार है

रिजर्व बैंक का प्रतिवय निरीक्षण होता है।

इसमें जमा धन किसानों को कृषि उत्पादन में वृद्धि हेतु ऋण के रूप में दिया जाता है।

रघुराज सिंह सिसोदिया
सचिव

दिगम्बर सिंह
सभापति

फोन ३६८

फोन १७१

मथुरा जिला सहकारी बैंक लि०, मथुरा

राजनीतिक दल

भारत के राजनीतिक ढांचे में अखिल भारतीय कांग्रेस का दो हिस्सा में विभाजन तथा उसके कारण विभिन्न दलों में हो रही प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण घटना रही है। प्रक्रिया चालू है और जहाँ एक ओर राजनीति विशारदा का मत है कि निकट भविष्य में समान-काय क्रम के आधार पर दलों की संख्या कम होगी वहाँ यह मत भी व्यक्त किया जा रहा है कि राजनीतिक दलों की संख्या पर कोई स्थायी निष्णय निकट भविष्य में निकल पाना कठिन है।

डा० शंकरदयाल शर्मा के नेतृत्व वाली कांग्रेस और श्री अशोक मेहता के नेतृत्व वाली कांग्रेस के अलावा भारत के राजनीतिक ढांचे में अखिल भारतीय मायताप्राप्त चार दल हैं—स्वतन्त्र पार्टी, जनसंघ, कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट। द्रविड मुन्नेत्र कडगम, भारतीय त्राति दल, अन्नाली दल, रिपब्लिकन पार्टी, बंगला कांग्रेस आदि क्षेत्रीय स्तर की पार्टियाँ हैं। विलय से पूर्व समोपा व प्रमाणा को भी अखिल भारतीय मायता प्राप्त थी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

कांग्रेस देश का सबसे बड़ा और सर्वाधिक पुराना राजनीतिक दल था। इसकी स्थापना सन १८८५ में ए० ए० ओ० ह्यूम नामक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारी ने की थी। आरम्भ में इस संस्था का उद्देश्य देश में सामाजिक और आर्थिक सुधारों को लागू कराना था किन्तु बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ही राष्ट्रवादी तत्वा के भारी संख्या में इसमें प्रवेश करने के कारण कांग्रेस राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के क्षेत्र में अग्रसर हो उठी और १९४७ तक वह देश में राष्ट्रीय स्तर पर सबसे प्रभावी पार्टी के रूप में कार्य करती रही।

१५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजों के भारत छोड़ने पर देश का शासन सूत्र भी इसी दल में सम्मिला। सन १९४८ में कांग्रेस ने अपने लक्ष्य की घोषणा करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य भारत में शान्तिपूर्ण बंध उपाया द्वारा जनता के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अधिकारों की समानता पर आधारित एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है जिसका ध्येय विश्वशान्ति तथा सद्भाव है। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हान के कारण कांग्रेस ने लोकतांत्रिक मांग से देश की प्रगति की घोषणा की।

विदेश नीति के क्षेत्र में कांग्रेस गूटनिरपेक्ष नीति की समर्थक रही। राष्ट्र को शक्ति गूटा के प्रभाव से मुक्त रखने और अर्थ राष्ट्र से सैनिक गठजोड़ करके विराध्य में कांग्रेस की नीति रही। सयुक्त राष्ट्रसंघ को विश्वशान्ति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण मानकर औपनिवेशिक देशों की स्वतंत्रता, रणभेद की नीति का परित्याग अर्थ राष्ट्र में मासू

तिक और आर्थिक सहयोग तथा विश्वशांति उमकी विदेश नीति के प्रमुख आधार रहे ।

कांग्रेस के दो दल (कांग्रेस—सगठन कांग्रेस)

१९६६ में इस दिन में एक भीषण आंतरिक विस्फोट हुआ जिसमें कारण वह न पाटिया में विभाजित हो गया । कांग्रेस के लम्बे इतिहास में पहले भी ऐम अवसर आए जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विखंडन की स्थिति पैदा हुई और किसी बड़े विभाजन में वह हर बार बचती रही । परन्तु इस बार बच नहीं सकी ।

जून १९६६ को कांग्रेस महासमिति के बंगलौर अधिवेशन में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के चुनाव के प्रश्न पर प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और अध्यक्ष श्री निर्जलिगप्पा और दोना के समर्थकों के बीच सीधा टकराव हुआ । १३ जून को श्रीमती गांधी के विरोध के बावजूद लोकसभा के अध्यक्ष श्री नीलम संजीव रेड्डी को दल के समर्थित बांड न पाने के विरुद्ध चार के बहुमत से कांग्रेसी प्रत्याशी चुना ।

श्री रेड्डी के पक्ष में सबश्री मारारजी देसाई (जा उस समय उप प्रधानमंत्री के वित्त मंत्री थे) श्री कामराज श्री यशवंतराव चव्हाण और श्री स० का० पाटिल ने तथा विरोध में श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने मत दिये । श्री जगजीवनराम ने मत नहीं दिया क्योंकि उनका अपना नाम श्रीमती गांधी द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका था । उन्होंने अन्य नाम श्री बराहगिरि ब्रह्मचरि का रखा था । श्री निर्जलिगप्पा द्वारा यत्नान किये जाने का अवसर उत्पन्न नहीं हुआ । लेकिन जबकि श्री जगजीवनराम श्री रेड्डी के विरुद्ध थे श्री निर्जलिगप्पा उनके पक्ष में थे ।

सोलह अगस्त १९६६ को हुए राष्ट्रपति चुनाव में श्रीमती गांधी और उनके समर्थकों ने अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार श्री गिरि को मत दिये और श्री गिरि विजयी रहे ।

इसके बावजूद कांग्रेस कायसमिति की अगली बैठक में एकता बनाए रखने का प्रस्ताव पारित हुआ । पर इस पर अमल न होने की शिकायतें दोना और से होती रही । बाद में प्रधानमंत्री के समर्थकों ने श्री निर्जलिगप्पा को अध्यक्ष पद से हटाने के उद्देश्य से महामसमिति की विशेष बैठक बुलाने का अनुरोध करते हुए देशव्यापी हस्ताक्षर अभियान चलाया ।

श्री निर्जलिगप्पा और उनके गुट ने इस काय को अनुरोधन भग की गम्भीर काय वाही माना और कायसमिति की अगली बैठक से एक रात पूर्व श्री जगजीवनराम श्री फखरुद्दीन अली अहमद और तीन में से एक महासचिव डा० शंकरदयाल शर्मा को काय समिति की सम्मतिना से अलग कर लिया ।

श्रीमती गांधी ने उसी रात अपने समर्थक नेताओं की एक बैठक बुलाकर कायसमिति की बैठक अपने निवास स्थान पर उसी समय करने की घोषणा की । इस प्रकार दूसरे दिन एक ही समय कायसमिति की दो समानांतर बैठकें हुई—एक दल के मुख्यालय पर श्री निर्जलिगप्पा का अध्यक्षता में हुई और दूसरी प्रधानमंत्री निवास पर श्रीमती गांधी के महापतित्व में । यही कांग्रेस के विभाजन की पहली निर्णित प्रक्रिया हुई । कायसमिति के ०१ सम्मतिना में से ११ श्री निर्जलिगप्पा की अध्यक्षता में हुई बैठक में और शेष दल श्रीमती गांधी द्वारा बुलायी गया बैठक में सम्मतिनात हुए ।

इस प्रकार दिन का दो भाग में विभाजन एक वस्तुस्थिति बन गया ।

प्रधानमंत्री और उनके समर्थकों ने २३ और २४ नवम्बर का महासमिति की विशेष बैठक में श्री निर्जलिंगप्पा और उनकी कार्यसमिति के सभी सदस्यों का दान से निकाल दिया तथा उनके द्वारा की गई सारी अनुशासनात्मक कार्रवाई रद्द कर दी। इसके बाद कांग्रेस सत्तीय दल का भी विभाजन हो गया।

कांग्रेस अध्यक्ष डा० शंकरदयान शर्मा तथा महामन्त्री सवथ्री हनरी आस्टिन तथा चन्द्रजीत यादव हैं। अन्य प्रमुख नेता हैं श्रीमती इंदिरा गांधी श्री पशवतराव चव्हाण श्री जगजीवनराम, श्री फखरुद्दीन अली अहमद श्री उमाशंकर दीक्षित आदि।

संगठन कांग्रेस अध्यक्ष श्री अशोक मेहता तथा महामन्त्री सवथ्री श्यामधर मिश्र एवं रवींद्र वर्मा हैं। अन्य प्रमुख नेता श्री मारारजा देसाई श्री श्यामनन्द मिश्र तथा कामराज, स० का० पाटिल श्री चंद्रभानु गुप्त आदि।

स्वतन्त्र पार्टी

इस दल की स्थापना तीसरे आम चुनाव से पूर्व देश के एक वरिष्ठ राजनयक श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने की थी। उनके प्रभावी व्यक्तित्व के कारण शीघ्र ही इस दल का कुछ राजनयिका एवं भूतपूर्व शासकों के एक बड़े वर्ग तथा अवकाश प्राप्त वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों का समर्थन प्राप्त हो गया।

यह दल कांग्रेस की समाजवादी नीतियों का विरोध करता है। राजाजी के अनुसार कांग्रेसवाद का महारा लेकर जनता को भ्रमित करती है और अपने दावा पर आबरण डालती है। उसके शासन ने नवीन असमानताओं को जन्म दिया है और उसकी अर्द्धराष्ट्रीयकरण की नीतियां एवं नए पूंजीवादी वर्ग का संगठन कर रही हैं। स्वतन्त्र पार्टी कांग्रेस की राष्ट्रीयकरण सहकारी कृषि आदि नीतियों का विरोध करती हुई गांधी जी के बताये हुए आदर्शों पर राष्ट्र का निमाण करना चाहती है। यह दल वैयक्तिक अधिकारों को मायता देकर राष्ट्रीय जीवन, कृषि व्यवसाय और उद्योगों का शासन के कठोर नियन्त्रण से मुक्त रखना चाहता है।

वैदेशिक नीति के क्षेत्र में यह दल साम्यवादी गुट का विरोधी तथा पश्चिमी देशों से घनिष्ठतम सम्बन्ध बनाये रखने का समर्थक है। इस समय दल के अध्यक्ष श्री पीलू माणी तथा महामन्त्री श्री मधु मेहता हैं।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (दक्षिणपथी)

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन इस देश में अंग्रेजों के विरुद्ध चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान कांग्रेस के अंतर्गत ही हुआ था। किन्तु १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का विरोध करने के कारण कम्युनिस्ट पार्टी के लोग का कांग्रेस से बाहर आकर अपना विधिवत पथक संगठन खड़ा करना पड़ा और अब यह पार्टी देश के प्रमुख राजनीतिक दलों में से एक है। किन्तु चीन समर्थक तत्वों के दल में अलग हो जाने के बाद इस दल की शक्ति का गहरा घटका लगा है और भारत का कम्युनिस्ट आन्दोलन आज भी फूट से ग्रस्त है।

मई १९७१ के चुनाव घोषणापत्र के अनुसार कम्युनिस्ट पार्टी आर्थिक क्षेत्र में विदेशी एकाधिकारवाद का समाप्ति पर दल देता है और सभी व्यापारिक एवं वाणिज्यिक संस्थानों का राष्ट्रीयकरण करना चाहती है। चीनी योजना के प्रारूप में मनमैत्र रखने का जन्

धानी योजना' का सुझाव देती है। जिसमें अनुसार आवश्यकता व अनुसार वेतन के सिद्धांत को स्वीकार किया जा सके और कृषि तथा उद्योग व क्षत्रा म श्रमिका को समुचित वेतन दिया जा सके। अग्राय उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने के साथ साथ पार्टी विदेशी वका के राष्ट्रीयकरण की समर्थक है।

राजनीतिक क्षेत्र में पार्टी केन्द्र एवं राज्या के विवादा का समाप्त करने के लिए राज्या की स्वायत्तता पर बल देती है।

इस समय पार्टी के चेयरमन कामरेड श्रीपाद अमृत डागे और महामन्त्री श्री सी० राजेश्वरराव है। दल का केन्द्रीय कार्यालय नई दिल्ली में है। प्रमुख नेता हैं—श्री हीरेन मुकर्जी श्री भूपेश गुप्त आदि।

माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी

सन १९६४ में अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के एक बहुत बड़े वग न रुम चीन के सद्भावितक मतभेदा से प्रभावित होकर एक नवीन दल का गठन किया जो सोवियत संघ के 'सशोधनवाद का घोर विरोधी था। इस नवीन दल का नाम माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी रखा गया और घोषणा की गयी कि यह नवीन दल भारतवर्ष में समाजवाद एवं साम्यवाद की स्थापना करने के लिए उन भारतीय श्रमजीवियों का प्रभावी संगठन होगा जाकि माक्सवादी और लनिनवाद के प्रति अपनी अटूट आस्था रखत हैं तथा जो प्राथमिक चरण के रूप में इस देश में जनवादी लोकनातिक राय की स्थापना चाहते हैं।

सन १९७१ के चुनाव घोषणापत्र के अनुसार माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी भी वक उद्योग का राष्ट्रीयकरण करने निजी क्षेत्र का समाप्त करने एवं जीवनोपयोगी वस्तुओं पर कर कम करने का आश्वासन देता है। कम्युनिस्ट पार्टी की ही भांति माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी भी सामंतवादी व्यवस्था का पूरी तरह उन्मूलन कर श्रानिकारी भूमि सुधारों की समर्थक है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पार्टी वग संघ और जनानदोलना की अपरिहार्यता को स्वीकार करती है। कम्युनिस्ट चीन में वर्तमान विवाद को हल करने के लिए पार्टी मीधी लिपिभीय वार्ता पर बल देती है और पश्चिमी देशों के साथ चल रहे वर्तमान व्यापारिक एवं वाणिज्यिक करारों का समाप्त करने की समर्थक है।

दल के महामन्त्री कामरेड पी० सुन्दरय्या हैं और सचिव ए० व० गोपालन ई० एम० एम० नम्बूद्रीपात् श्री राममूर्ति एम० वमवपुनय्या वी० टी० रणन्वि तथा ज्योति वमु प्रमुख नेताओं में से हैं। दल की केन्द्रीय समिति का कार्यालय बलकत्ता में है।

इस दल कम्युनिस्ट पार्टी का अतिरिक्त खुला हिमा का कार्यालय करने वाले नरमनवादी खुलघाम भाषावादी का प्रचार कर हिमात्मक प्रवृत्तियों का भङ्गात रह हैं। उनका दल में दाना कम्युनिस्ट महाधनवादी डरपात व पयध्रष्ट है।

भारतीय जनसंघ

भारतीय जनसंघ की स्थापना सन् १९५१ में डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा की गई थी। दल दल न दल व विरोधी दल में मन्त्रवृण स्थान प्राप्त कर दिया है।

जनसंघ एकात्म मानवतावादी का अपना धार्मिक मानता है और राष्ट्र का एकता का धारण बनाए रखन तथा राष्ट्र एवं राज्य सरकारों की पारस्परिक हाड का समाप्त करने के लिए एकात्मक शासन का समर्थक है। दल में विधि सम्मत शासन लागू करने के लिए जनसंघ धर्मराय (रुन धार्मिक) की प्रस्थापना करना चाहता है जिसमें कि समाज

व' आर्थिक' और सामाजिक' ढांचे में व्याप्त सभी अनुमाननामा को समाप्त किया जा सके।

सन् १९७२ के चुनाव घोषणापत्र में अनुसार जनसभ्य दश का ईमानदार प्रशासन देने की घोषणा करता है तथा उच्चतम स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार का समाप्त करने के लिए एक 'उच्चाधिकार प्राप्त आयोग' गठित किए जाते और सभी भूतपूर्व मंत्रियों की सम्पत्ति की जांच किए जाने का सुझाव देता है।

शैक्षणिक क्षेत्र में जनसभ्य आगामी पांच वर्षों में ११ वर्ष की आयु के बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने का अभिवचन देता है। उसके उपरान्त हायर सेकेंडरी स्तर तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जायेगी। शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप बनाने के लिए शैक्षणिक ढांचे में आमूलचूर्ण परिवर्तन किया जायेगा। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी जायेगी। राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का प्रचलन होगा। मन्त्रित' का लोकप्रिय बनाया जायेगा और हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोगों का एक अर्थ प्रादेशिक भाषा का पान कराया जायेगा।

विदेश नीति के क्षेत्र में जनसभ्य स्पष्टतम शब्दों में घोषणा करता है कि असलगतता हमारे लिए अनुकूलघनीय धर्म के रूप में नहीं है। राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर जनसभ्य शक्ति गुटा से अलग रहकर 'स्वतन्त्र नीति' पर बल देता है। वह द्विपक्षीय सम्झौतों का समर्थक है और ऐसा करत समय विभिन्न राज्यों के शक्ति गुटा से सम्बन्धों का वह अधिक महत्व नहीं देता। पारिस्त्रान के प्रति यथायवादी नीति का पीपक है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता को अनुष्ण बनाने की दृष्टि से भारत में मर्यादित बल का बतान और अनुष्ण बनाने का जनसभ्य समर्थन करता है।

आर्थिक क्षेत्र में जनसभ्य स्वदेशी-याजना की घोषणा करता है। मशीनों के स्थान पर श्रम शक्ति के अधिकारियों प्रयोग का समर्थक है जिससे बेकारी दूर की जा सके। जनसभ्य कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र में सामञ्जस्य बिठाए जाने का समर्थक है।

इस समय तक के अध्येत श्री लालकृष्ण अडवाणी और महामन्त्री श्री सुन्दरसिंह भडारी हैं। अर्थ प्रमुख नेताओं में श्री अटलबिहारी वाजपयी डा० महावीर, जगन्नाथराव जोशी राजमाता विजयाराजे निघिया, यन्त्रत शर्मा नानाजी देशमुख, पी० परमेश्वरन् पीताम्बर रास आदि हैं। इन का केंद्रीय कार्यालय नई दिल्ली में है।

रिपब्लिकन पार्टी

रिपब्लिकन पार्टी मुख्यतः अनुसूचित और सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से पिछड़ी हुई जातियों द्वारा संगठित एक ऐसा राजनीतिक दल है जो भारतीय संविधान की प्रस्तावना में वर्णित सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक समानता पर अत्यधिक बल देता है और पिछड़े वर्गों के शोषण का अखिलम्ब समाप्त कर देना चाहता है।

इस दल के भी दा टुकड़ हो गए हैं तथा एक गायकवाड गुट के नाम से प्रसिद्ध है तथा दूसरे का नेतृत्व श्री सी० टी० खोबरागडे के हाथ है।

सोशलिस्ट पार्टी

छठे दशक के प्रारम्भ में प्रजा समाजवादी दल के रूप में समाजवादी आन्दोलन चलता था। श्री जयप्रकाश नारायण आचार्य नरद्वेज तथा आचार्य कृपलानी आदि नेता इसमें रहे हैं। १९५५ के अंतिम माह में इस समाजवादी आन्दोलन का विभाजन हुआ।

श्री सी० एन० घन्नादुरै व निघन व उपरात श्री एम० बरुणानिधि दन के प्रमुख नेता के रूप म सामने आए और वे ही इस समय तमिलनाडु राज्य के मुख्यमंत्री हैं। किन्तु अक्टूबर १९७२ म दन व कोषाध्यक्ष तथा प्रख्यात फिल्मी कतारार श्री रामचंद्रन ने विद्रोह कर अलग दल घन्ना-द्रमुक की स्थापना की ह। इस पार्टी म भीषण फूट पड़ गई ह तथा घन्ना-द्रमुक म अन्तर् विघ्नायक व समान सत्स्य शामिल हा गये है।

भारतीय क्रातिदल

भारताय क्रातिदल का गठन चौथे ग्राम चुनाव व पूर्व विभिन्न प्रदशा म कांग्रेस व एक अमन्तुष्ट वर्ग द्वारा किया गया था। अन्त निर्वाचन व दारान दन का व्यवस्थित मगठन पडा न हा सवा और इमने तत्कालीन मूधय नताम्रा सवथ्री मेहामायाप्रसाद सिंह तथा अजय मुखर्जी ने दल के गांधीवाणी दशन पर चतन की घापणा की। किन्तु चौथे ग्राम चुनाव के उपरान्त इम दन की शक्ति विखरनी प्रारम्भ हा गड और अजय मुखर्जी तथा महा मायाप्रसाद सिंह सरीखे नेता इसमे अन्तग हा गय। फिर भी फरवरी १९६६ म उत्तरप्रदेश म हुए मध्यावधि चुनाव म चौधरी चरणसिंह के व्यक्तित्व व कारण इस दन को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। किन्तु १९७१ के मध्यावधि चुनाव म इसे भारी विफलता का मुह देखना पडा। दल व अध्यक्ष चौधरी चरणसिंह तथा मन्चिव श्री श्यामलाल यादव हैं।



कार्यालय नगर निगम भोपाल

चारो तरफ हरी भरी पहाडिया की सी मास पेशिया से कसा बीच मे तालाबो के गहरे तरल हृदय वाला भोपाल अपनी नई जल्दता के मुताबिक नये ढंग से सवर रहा है। देश के दिल मे बसे सबसे बडे प्रात की इस राजधानी के नागरिका से अपेक्षा की जाती है कि नगर निगम विधान का पालन कर निगम को सहयोग दें।

वर्षाकाल से जजरित भवना की सूचना नगर निगम का तत्काल देव एव उसम निवास न करें।

खाद्य पदार्थो म किसी प्रकार की मिलावट न कर जन स्वास्थ्य की रक्षा कर।

बाजार की सडी गली चीजा का उपयोग खाने के लिये न होने द।

नगर को स्वच्छ बनाने के लिए कचरा नियत स्थान पर ही डालें।

सक्रामक बीमारियों से बचने के लिए निर्धारित समय पर नि शुल्क टीका लगाने की व्यवस्था से लाभ लें।

पाने के पानी का किसी प्रकार से अपव्यय न हाने दें।

जन्म मृत्यु की जानकारी नगर निगम भोपाल का तत्काल देवें।

एन० डी० साह

जन सन्धिक अधिकारी

नगर निगम भोपाल

एन० पी० तिवारी

आयुक्त

नगर निगम भोपाल

हम दोनों की सेवा करते हैं कृषि और उद्योग

यती और पदावार बसाने के लिए निगम द्वारा कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है। निगम द्वारा कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है। निगम सविन सांठ के माध्यम से घासी टिन्ड द्वारा कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है। निगम सविन सांठ के माध्यम से घासी टिन्ड द्वारा कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है।

निगम बेरोजगार इजीनियरों को सेवा का व्यवसाय शुरू करने हेतु कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है। निगम सविन सांठ के माध्यम से घासी टिन्ड द्वारा कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है। निगम सविन सांठ के माध्यम से घासी टिन्ड द्वारा कृषि और उद्योग के लिए कृषि वंश प्रदाय करता है।

निगम द्वारा दूसरे एक या स्टोरज बिग भी बनाए जा रहे हैं। मध्य प्रदेश में कृषि सम्बंधी उद्योग स्थापित कराने में भी निगम (इंटरप्रनुपस) सहायता कर रहा है।

मध्य प्रदेश राज्य कृषि उद्योग विकास निगम समिति
न्यू मार्केट, टी० टी० नगर भोपाल।

आज की वचत कल की निश्चिन्तता हो सती है

दृगलिये

जनता सहकारी बैंक लि०, पूना

प्रपवा

इसकी उनीत शाखाओं में से किसी भी शाखा में
आज ही अपना खाता खोलकर एक की उपलब्ध सुविधाएं
प्राप्त करें।

दूरधनी — ५५२५८-५५२५९

द० श० जमदग्नि
कार्यकारी सचालक

घर के बजट के असंतुलन का कारण

आपका अपना मकान बनवाना

मुनने में आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय घवश्य प्रतीत होता है।

परन्तु १० म से ८ मामलो में ऐसा हा होता है।

आप मकान बनवाने के लिए जितने धन की व्यवस्था करत हैं निर्माण सामग्री में होने वाली मूल्य वृद्धि के कारण उससे कहीं अधिक धन लग जाता है और आपकी घर खर्च में कटौती करनी पडती है। मितो सबधियो से ऋण लेना पडता है। आप इन सभी परेशानियो से निश्चय ही बच सकत है।

आप मध्यप्रदेश गृह निर्माण मडल की अनेक भाडा प्रय योजनाया के अतगत मकान बनवाइये एवं निर्धारित नियोजित योजना के अतगत आपरा मकान बन जायेगा और आपकी उसका आर्थिक भार भी अनुभव नहीं होगा।

मध्यप्रदेश के अनेक नगरो में विभिन्न आय समूह के अतगत भवन निर्माण योजनायें कार्याचित की जा रही है।

विस्तृत विवरण के लिये जनमपक अधिकारी मध्यप्रदेश गृह निर्माण मडल से संपक करें।

गृह निर्माण आयुक्त,

मध्य प्रदेश गृह निर्माण मडल, भोपाल

YOUR TRUSTED GUIDES

The Directorate
of Tourism,
Maharashtra,



now makes available
to tourists two informative and
accurate maps—

Tourist Map of Maharashtra

The map gives a detailed representation of forts, caves, beaches, National parks and communication lines along with a comprehensive write up on Maharashtra. What is more, the new index system makes it convenient for you to locate the place of your interest immediately and accurately.

Size 80 cm X 60 cm

Price Rs 3.50 with plastic cover

Tourist Map of Bombay

The map gives information about hotels, cinema theatres, art galleries and other places of interest to tourists. Besides tourists, the maps are also useful to hotels, tour operators, sales executives, students and teachers.

Size 45 cm X 75 cm

Price Rs 2.50 with plastic cover

The maps are available at —

**The Directorate of Tourism,
Government of Maharashtra,**

Express Towers, Bombay-400001
Tel 296389, 296489, 296096

Divisional tourist offices at

**NAGPUR POONA AURANGA
BAD & PANAJI (GOA)**
Information counters of the Directorate



196, L B Shastri Marg,
Bhandup, Bombay - 400078
Tel 596191 Telex 011-2683
Grams 'AGRICOLA'

Manufacturing Division of
**I. A. E. C. BOMBAY
PRIVATE LIMITED**
43, Dr V B Gandhi Marg,
Fort, Bombay-400001

Phone 258457

Manufacturers of

- AUTOMATIC FLUE
TUBE BOILERS
- DEMINERALISING
PLANT
- THERMAL
DEALRATORS
- CONDENSERS
- H P & L P
HEATERS
- WATER TREATMENT
PLANTS
- DUST COLLECTING
EQUIPMENT
- MATERIAL TESTING
MACHINES
- SUBMERSIBLE
PUMPS ETC

नगर परिषद्, उदयपुर (राजस्थान)

इतिहास की गौरवशाली भूमि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की धारिणी धारा शीला की नगरी तथा पपटका की रम्यस्थली आपकी मुख्यमय यात्रा का नामना करता है। यह नगर एक ऐतिहासिक नगर है व इसे सुन्दर, सुनियोजित योजनाबद्ध के अनुसार गुरुमय नगरी बनाना है। यह सभी सम्भव है जबकि नगर निवासी निम्न महत्वाग प्रस्ताव करें।—

- १—अपने नगर को स्वच्छ रखिये ताकि गन्दगी से किसी प्रकार की बीमारी न पनने पाय।
- २—मिलावटी छाछ पनाथों की सूचना स्वास्थ्य अधिकारी को तुरत दें ताकि उचित कार्यवाही की जा सके।
- ३—अनाधिकत निर्माण कार्य न करें व परिषद् से पहले नक्शा पाग कराव तथा नगर परिषद् की भूमि पर किसी प्रकार का अतिप्रमण न करें।
- ४—चुगी व अन्य वर समय पर जमा करावें।
- ५—जन्म मृत्यु की सूचना तुरत परिषद् का देकर अपना सह्याग दें।
- ६—उदयपुर इन्वार्डम का ५वां संस्करण छप गया है जो निर्धारित मूल्य पर नगर परिषद् से आप त्रय कर सवत है।

शान्तिलाल खासगीवाला, धार० ए० एम०
प्रशासक नगर परिषद् उदयपुर (राज०)

किसानों की सेवा में राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम

- खाद्यान्न, कपि उपज तथा अन्य माल का व्यवस्थित एवं बजानित भण्डारण।
- मामूली शुल्क पर माल को बीडे मकीठा दीमक पसी स हाने वाली हानि तथा धोरी नकदजनी आम आदि के खतरा से बचाव।
- निगम की गोदाम रसीद पर वका से सुगम ऋण-सुविधा।
- भण्डारण सुविधाओं के शलाका अथ सरकार की ओर स किसानों स गृह की खरीद व्यवस्था।
- निर्धारित दर पर गेहू की खरीद गेहू की कीमत का तुरत भुगतान।

निकटतम भण्डार गृह से सम्पर्क करें

प्रधान कार्यालय	टेलीफोन नं.
माधव भवन	७२३०७
सदर धाने के पास	७५१६३
स्टेशन रोड जयपुर ६	६२०५२

पी०बी०एच०

जन-जन का वाहन मध्य प्रदेश राज्य परिवहन

- मध्य प्रदेश राज्य परिवहन की वाहनों के संगीत शिरामे है जो भारत के हृदयस्थल मध्य प्रदेश को देश के विशाल भू भाग से सम्बद्ध बिये दिये हैं।
- राज्य परिवहन निगम की २१४६ वाहन नियमित रूप से प्रतिदिन ३ लाख ७७ हजार ८ सौ किलोमीटर तय करती हैं और ३ लाख ३० हजार यात्रियों को मजिल तक पहुंचाती हैं। ये वाहनों राज्य के विभिन्न भागों को आपस में और निकटवर्ती उत्तर प्रदेश बिहार, उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र गुजरात राजस्थान हरियाणा आदि राज्यों से जोड़ती हैं।
- राज्य परिवहन निगम को गव है कि इन वाहनों का अवाध आवागमन तमभग आध भारतवष का जन-संचारण है।
- ये राष्ट्रीय एकता और पारस्परिक सहभाव की वृद्धि में सतत कायरत हैं।

मध्य प्रदेश राज्य परिवहन निगम, वैरागढ, भोपाल द्वारा प्रसारित।

Both in War and Peace

We serve the Nation's Armed Forces

The Denjong Agricultural Co-operative Limited

(SPONSORED BY THE GOVERNMENT OF SIKKIM)

Regd Office

ELEPHANT, MANSION, GANGTOK, SIKKIM

Phone GTK 378

Contractor to the Army for

- FRUITS
- VEGETABLES
- POTATOES
- ONIONS
- EGGS
- POULTRY
- FISH
- MILK &
- DAIRY PRODUCTS
- FIREWOOD &
- CHARCOAL

सार्वजनिक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश नई सड़कों के निर्माण में तीव्रता

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का प्रथम तीन वर्षों में

नई पक्की सड़कों का निर्माण	१३२६ कि० मा०
केवल वर्ष १९७२-७३ में निर्माण	१४३५ कि० मी०
वर्ष १९७३-७४ में अपेक्षित निर्माण	१९७५ कि० मी०

निर्माण की गति में वर्ष १९७२-७३ में तीन गुनी से अधिक प्रगति हुई है और चालू वित्तीय वर्ष में यह प्रगति और बढ़ाई गई है।

सड़कों के निर्माण द्वारा पिछड़े क्षेत्रों के विकास में विभाग निरन्तर गतिशील है।

दूरलेख अपेक्षक

दरभाष २३२० २६५५ २६५६

कृषि शक्ति में अग्रणी

शीघ्रता से सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

○ प्रदेश की कृषि के मोर्चे पर लड़ने में साख सहायता ○ प्रत्येक सहकारी उद्यम को वित्तीय सहयोग ○ प्रदेश की विकास सम्भावनाओं का अनुसंधान एवं आवश्यक तकनीकी तथा वित्तीय सहयोग ○ सहकारी बँका तथा सहकारी संस्थाओं का माध्यम से किसानों के लिए बीज, खाद, कीटनाशक दवाइया तथा नगद राशि की व्यवस्था ○ सार्वजनिक बचतों का कृषि क्षेत्र में विनियोजन तथा बचतों पर प्राकृतिक याज ○ समस्त बँकिंग सेवाएँ।

लक्ष्मण प्रसाद भागवत अध्यक्ष

ए० एन० मुशरान

बापू सिंह मंडलोई

उपाध्यक्ष

पी० व्ही० बोवडे अध्यक्ष

मध्य प्रदेश

राज्य सहकारी बँक मर्यादित,

सहकारी सदन राइट टाउन

जबलपुर।

शाखाएँ इंदौर, भोपाल, ग्वालियर, सतना, बिलासपुर, एवं भुगतान कार्यालय रामपुर (जबलपुर)

पाकिस्तानी आक्रमण : तिथिक्रम

पाकिस्तान न अपने जन्मकाल से अभी तक २६ वर्षों में भारत पर जा बबर हमले किये हैं उनकी डायरी इस प्रकार है

अक्तूबर, १९४७ पाकिस्तानी सेना की प्रेरणा और महायत्ना से कवायलिया ने कश्मीर पर हमला किया।

मई १९४८ पाकिस्तान ने स्वीकार किया कि उसकी नियमित सेना की तीन ब्रिगेड कश्मीर में हैं।

जनवरी, १९५६ पाकिस्तानी सैनिक कच्छ के रत में छाड़वेट में घुस गए। उस क्षेत्र में भारतीय सेनाओं ने २५ फरवरी का प्रवेश कर पाकिस्तानिया को पीछे हटने को बाध्य कर दिया।

जनवरी १९६५ पाकिस्तान ने कच्छ के रत में कजरकोट पर कब्जा कर लिया।

६ अप्रैल, १९६५ पाकिस्तान ने टका और भारी तापा से कच्छ में भारतीय सीमा चौकी पर अचानक और पूरा हमला बोल दिया। ३० जून को हुए समझौते के अनुसार १ जनवरी १९६५ की स्थिति फिर लाने के लिए कच्छ समझौते पर हस्ताक्षर किया।

५ अगस्त १९६५ हजारों पाकिस्तानी सैनिक सादे कपडा में ४७० मील लम्बी युद्ध विराम रेखा पार करके तोड़ फोड़ लूट और बर्तल करने के लिए जम्मू-कश्मीर में घुस आए।

१ सितम्बर १९६५ पाकिस्तानी सेना का एक पूरी ब्रिगेड ७० टका के साथ अन्त रॉष्ट्रीय सीमा पार कर भारतीय क्षेत्र छम्ब-जोरिया में घुस आई। (इसके बाद पश्चिम पाकिस्तान की सारी सीमा पर भारत के साथ युद्ध छेड़ दिया।) १० जनवरी १९६६ को ताशकंद समझौते के अन्तगत भारत ने विजित प्रदेश वापस किये और पाकिस्तान ने भविष्य में आक्रमण न करने का आश्वासन दिया।

३० जनवरी १९७१ दो पाकिस्तानी एजेंट श्रीनगर से इटियन एयरलाइन के एक विमान का अपहरण कर लाहौर ले गये जहा उसे नष्ट कर दिया गया।

२ फरवरी १९७१ पाकिस्तानी आश्वासना के बावजूद भारतीय विमान को हवाई अड्डे के अधिकारिया सेना और पुलिस के सामने जला दिया गया और इसके जलाने का सारा दाय्य पाकिस्तानी टेलीविजन पर दिखाया गया।

१० अप्रैल से नवम्बर १९७१ तक पूर्वी बंगाल की निहत्थी जनता पर बबर मनुक अत्याचार। १ करोड़ शरणार्थिया को भारत में खदेड़ कर हमारी अर्थ-व्यवस्था पर आक्रमण।

पाकिस्तानी सना ने अगम और त्रिपुरा में भारत की सीमा चौकिया पर बार-बार गोलाबारी की।

१ नवम्बर १९७१ अमरतल्ला नगर पर हवाई आक्रमण एवं बमबर्षा।

३ दिसम्बर १९७१ पाकिस्तानी विमानों ने भारतीय हवाई अड्डों पर हमला किया और सीमा चौकिया पर गोलाबारी की।

४ दिसम्बर १९७१ पाकिस्तानी सैनिक जुता न भारत में प्रिनाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

भारत पर पाक आक्रमणों का इतिहास

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद में ही भारत की यही इच्छा रही है कि वह पाकिस्तान के साथ शांति और मत्रीपूवक रहे। इस देश में समय-समय पर पाकिस्तान की धार मित्रता का हाथ बनाया है। भारतीय नेता सबके यही कहते आये हैं कि भारत और पाकिस्तान में मित्रता और सदभाव न केवल भौगोलिक कारणों से बल्कि दोनों देशों के निवासियों में प्रति हास सस्कृति भाषा तथा अन्य कई बंधनों के कारण भी आवश्यक है लेकिन दुभाग्यवश पाकिस्तान बनने के दिन से अब तक पाकिस्तान के नेता समय-समय पर कहते रहे हैं कि भारत उनका नम्बर एक दुश्मन है और भारत को कुचल कर ही पाकिस्तान उन्नति कर सकता है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पिछले पच्चीस वर्षों में पाकिस्तान ने भारत पर बार-बार खुल्लखुल्ला आक्रमण किया तथा भारत के विरुद्ध अनेक शत्रुतापूर्ण वाक्यावहियाँ की हैं।

कश्मीर पर आक्रमण (१९४७)

पाकिस्तान बनने के सात मप्ताहों में ही पाकिस्तान ने भारत पर पहला आक्रमण किया। यह हमला पाकिस्तान के कबायली हमलावरों ने पाकिस्तान की नियमित सेना की मदद से जम्मू और कश्मीर राज्य पर किया जिसका विलय भारत में हो चुका था। पाकिस्तान से युद्ध टालने के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने २२ दिसम्बर १९४७ का पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने पाकिस्तान से हमलावरों का सहायता न देने तथा सशप चालू न रखने का अनुरोध किया। पाकिस्तान ने सहायता की बात से साफ इन्कार कर लिया और वहाँ के प्रधानमंत्री ने ३० दिसम्बर १९४७ को पत्र का उत्तर देते हुए कहा कि पाकिस्तान सरकार हमलावरों को सहायता देने के आरोप का खण्डन करती है। इसके विपरीत पाकिस्तान सरकार ने लगातार प्रयत्न किया है कि युद्ध को छोड़कर अन्य सभी उपायों से कबायली आन्दोलन को प्रोत्साहित किया जाए। इसके बाद पाकिस्तान के तत्कालीन विदेश मंत्री सर मुहम्मद जफर लाला खान ने १५ जनवरी १९४८ को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि पाकिस्तान सरकार इस आरोप का खण्डन करती है कि वह कथित हमलावरों को कोई सहायता दे रही है और न ही उन्होंने भारत के विरुद्ध कोई आक्रामक वाक्यावहियाँ की हैं।

यह खण्डन तथ्या से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता था। उपलब्ध जानकारी के आधार पर भारत पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध छेड़ सकता था लेकिन अपनी नीति के अनुरूप भारत ने शांति का माग अपनाया और उसने समस्या का सयुक्त राष्ट्र सभ के सम्मुख रखा। ३० दिसम्बर १९४७ को भारत ने पाकिस्तानी हमलों के विरुद्ध शिकायत सुरक्षा परिषद को भेजी। जुलाई १९४८ में सयुक्त राष्ट्र आयोग कराची पहुँचा तथा कश्मीर में सयुक्त राष्ट्र

संघ की उपस्थिति आमन हो गई तो पाकिस्तान अपनी कयनी स फिर गया और उसके जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण में शामिल न होने की बात स्वीकार करन पर भी सर जफरुल्लाखा ने तिलज्जतापूर्वक सुरक्षा परिषद को सूचित किया कि कश्मीर में पाकिस्तान की नियमित सेना व तीन दस्त मौजूद हैं तथा ये दस्ते कश्मीर राज्य में मई मास के पहले पखवारे में भेजे गये थे ।

आयाग न मौक पर परिस्थितिया का अध्ययन किया तथा वह इस निणय पर पहुंचा कि जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तानी सना का जमाव अवध है और वह सना तुरत हटा ली जानी चाहिए तथा भारतीय क्षत्र खाली किया जाना चाहिए ।

कच्छ पर आक्रमण

कश्मीर में अपने मनमूब पूरे होते न देखकर पाकिस्तान ने भारत के एक दूसरे भाग पर अपनी कुत्प्टि डाला । १९५६ के आरम्भ में पाकिस्तान न कच्छ के रन के उत्तरी भाग में छाडवेट के भारतीय क्षेत्र का बलपूर्वक हथियान का अमफल प्रयास किया । लेकिन उसी वष २५ फरवरी को जब भारत की सना उस क्षेत्र की आर बनी पाकिस्तानी सेना वापिस अपने क्षेत्र में चली गई । १९६८ के आरम्भ में पाकिस्तानिया न दोबारा सीमा पार करके कजरकाट के भारतीय क्षत्र पर अधिकार कर लिया तथा वहा एक स्थायी चौकी खोल दी । भारत ने मन्त्री और शांति की अपनी नीति से प्रेरित होकर पाकिस्तान का १९६० के भारत पाक सीमा समझौते व सीमा पर गश्न सम्बन्धी नियमा व अतगत पूव स्थिति लन के लिए स्थानीय कमाण्डरा की एक बैठक आयोजित करन का सुझाव दिया । भारत ने यह भी सुझाव दिया कि समस्या को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए जिस स्तर पर पाकिस्तान चाह दोना दशा व प्रतिनिधिया की एक बैठक आयोजित की जाए । पाकिस्तान न इन मुचावा का ठुकरा दिया और पिछने नकशा और समझौता की ताक पर रखकर ९ अप्रन १९६५ को हमार कच्छ क्षेत्र की सरदार सीमा पर गुप-चुप लेकिन पूरी सनिक ताकत स आक्रमण किया । इस हमले में टका और भारी तोपा की मदद स पैदल सना की एक ब्रिगेड न भाग लिया । २८ अप्रन १९६५ को लाकमभा को सबाधित करन हुए प्रधानमन्त्री श्री लानवहादुर शान्त्री ने वहा पाकिस्तानी (१५ फरवरी १९६५ को राजकोट रेजिस के उप-महाधीनक और पाकिस्तान इस रजिस के कमाण्डर की बैठक में तथा था म । माच १९६५ के पाकिस्तानी नाट में पाकिस्तान इस बात स मुबर गया कि इण्डम रजम ने कजरकाट क्षेत्र पर कब्जा किया हुआ है । युद्धवर्तिया से बरामद दस्तावेजा और उनमें पूछताछ स यह लथ्य सामने आया कि पाकिस्तानी आक्रमण पहले साब-ममझकर तथा याजना बनाकर किया गया । इस आक्रमण व निय ७ अप्रन को आदेश दिया गया था और हमला ९ अप्रन का बडे मवेर आरम्भ हुआ ।

१५ अप्रन का पाकिस्तान के मनमान आक्रमण व औचित्य का सिद्ध करन हुए पाकिस्तान व तत्कालान विदेशमन्त्री श्री जेड० ए० भूट्टो न अपने नडखदान प्रत्युत्तर में वहा कि ध्यान रू कि माने तौर पर मुख्य बात यह है कि क्षमना उम क्षेत्र व बाग में जा २४वी ममानांतर रखा व उत्तर में है । थगडा इस बात पर खडा नहीं हुआ है कि सीमाएं निश्चिन नहीं की गई है बकि इसनिण कि क्षमने बाना यह क्षेत्र भारत व अनुचित कच्चे में है । म प्रकार पाकिस्तान न उम क्षेत्र पर आक्रमण किया जा उमके बच्चे में वभी भा नहीं रहा ।

यह आक्रमण सयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र और १९५६ के भारत-पाक सीमा समझौते के मूल नियमों का विरुद्ध था। इस समस्या को जून १९६५ में लखनऊ में हुई राष्ट्र मण्डल देशों के प्रधानमंत्रियों की बैठक में उठाया गया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री हेरोल्ड विल्सन की पहल पर तथा पाकिस्तान के साथ मंत्री सम्बन्ध कायम रखने की इच्छा से प्रेरित होकर भारत ने ३० जून, १९६५ को पाकिस्तान के साथ युद्ध विराम संधि की जिसमें निम्नलिखित शर्तें थीं —

(१) १ जुलाई १९६५ से युद्ध विराम,

(२) सेनाओं की १ जनवरी १९६५ की स्थिति में वापसी और

(३) सिंध-कच्छ सीमा के निर्धारण के लिए निर्धारित कार्यक्रम पर अमल करना।

इस समझौते के अंतर्गत स्वीडन के 'यायाधीश ग्रैन' की अध्यक्षता में एक तीन सदस्यीय 'यायाधिकरण' की स्थापना की गई। इसका नियम अंतिम और सवमाय होना था। भारत ने इस क्षेत्र की अपनी सुनिश्चित सीमा को केवल शांति के कारण ही ट्रिब्यूनल पर छोड़ा था। १९ फरवरी १९६८ को इस 'यायाधिकरण' ने अपना निर्देश दिया और सबसेअंतिम से २५वें समानांतर के साथ वाली सीमा पर पाकिस्तान के दावे को अस्वीकार कर दिया। 'यायाधिकरण' ने पाकिस्तान के इस मत को भी पूरी तरह अस्वीकार कर दिया कि कच्छ और सिंध की सीमा रेखा कच्छ के रन के बीच से २४वें समानांतर के साथ गुजरनी चाहिए। 'यायाधिकरण' के नियम के अनुसार कच्छ का उत्तरी सिरे के साथ-साथ भारत की सीमा मानी गई। फसले के अनुसार कच्छ के रन के उत्तरी सिरे का ३२० बग मील का छोटा सा क्षेत्र पाकिस्तान को दिया गया। हालांकि पाकिस्तान ने इस क्षेत्र में ३५०० बग मील पर अपना दावा किया था। इस 'यायाधिकरण' के एक सदस्य श्री ऐलिस बाबनर ने जिन्होंने भारत के पक्ष में अपना मत दिया था कहा —

सीमा का मकडोनल्ड सीमांकन काफी समय से माय रहा है। १८७० में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना से १९४७ में उसकी समाप्ति तक यह चिह्न सभों तरह के उतार चढ़ाव के बीच हमेशा माय रहा है।

इस अवधि में न तो भारत सरकार ने न बम्बई सरकार या १९६५ के भारत सरकार अधिनियम के अंतर्गत गवर्नर के अधीन सिंध राज्य की स्थापना होने पर सिंध सरकार ने ही उक्त सीमा निर्धारण को चुनौती दी या गलत माना।

१९६५ १८७० में पूरे सिंध के सर्वे आफ इण्डिया द्वारा सर्वेक्षण का बाद तथा १८७१ और १८७२ में इस सर्वेक्षण के निष्पत्ति प्रकाशित होने पर कच्छ के महान रन की सीमा ठीक-ठीक निश्चित कर ली गई।

इस नियम का अंतिम संस्करण १९२८ का है। सिंध राज्य के १९३५ के संवैत मानचित्र में भी मकडोनल्ड सीमा रेखा दिखाई गई है और यह रेखा ब्रिटिश राज्य की समाप्ति तक सभी मानचित्रों में दिखाई गई है।

कश्मीर पर आक्रमण (१९६५)

कच्छ समझौते का हुए अभी कुछ ही समय बीता था और उसके अंतर्गत भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों की बैठक के लिए प्रबंध और प्रचार किया जा रहा था कि ५ अगस्त १९६५ को पाकिस्तान ने भारत पर तामरा हमला कर दिया। सारी वर्षों में अराजक पाकिस्तानी मजिद ४७० मान लम्बा युद्धविराम रेखा पार करके तांजनाडू

भारत और हत्या के लिए जम्मू और कश्मीर में प्रवेश कर गये। जसा कि १९४७ में हुआ था पाकिस्तान ने इस बार भी साफ़ इकार किया कि इस आक्रमण में उमका हाथ है। तत्कालीन पाकिस्तानी विदेश मन्त्री श्री जेड० ए० भुट्टो ने एक बयान में कहा "कश्मीर में जो कुछ हा रहा है उसके बारे में किसी तरह यह नहीं कहा जा सकता कि वह पाकिस्तान द्वारा किया जा रहा है। जब हमलावर घुसपट्टिये असफल हो गये तो पाकिस्तान की एन जिप्रेड और १७ टका ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पार करके १ सितम्बर १९६५ को भारतीय क्षेत्र में प्रवेश किया और इस प्रकार युद्धविराम समझौते तथा अन्तर्राष्ट्रीय कानून का बेशर्मी से उल्लंघन किया। इस आनामक कायवाही के बाद पाकिस्तान के प्रेसीडेण्ट अयूब खान ने अपने राष्ट्रव्यापी प्रसारण में खुल्लम-खुल्ला कहा कि अगर आजाद कश्मीर या पाकिस्तान के अर्थ किसी हिस्से के लोग कश्मीर के बहादुर लोग की सहायता के लिए जाए तो भारत किसी को दापी नहीं ठहरा सकता। इसके साथ पाकिस्तान के थल सनाध्यक्ष जनरल मुहम्मद नूसा ने सलकारा 'दुश्मन पर तुम्हारा दात हैं। उह और मडात जाओ जब तक कि दुश्मन नष्ट न हो जाए। लेकिन पाकिस्तान अपने दात गहर न गडा सका और शत्रु का नष्ट न कर सका, क्योंकि भारतीय सेनाओं ने ६ सितम्बर का लाहौर क्षेत्र में तीन स्थानों से सीमा को पार किया जिससे वह उन अड्डा तक पहुंच सके, जहां से पाकिस्तान अगले हमला के लिए तैयारी कर रहा था। इस प्रकार भारत ने पाकिस्तान की अगली कायवाही रोक दी जो आत्मरक्षा के लिए आवश्यक थी।

प्रेसीडेंट अयूब खान यह देखकर कि उन्होंने अपने देश को लडाई क बिगार तक धकेल लिया है ऐसे बंदम उठाये जिसमें सीमित कायवाही और युद्ध के बीच अन्तर लगभग समाप्त हो गया। लाहौर क्षेत्र में भारत की रक्षात्मक कायवाही के तुरंत बाद प्रेसीडेंट अयूब खान ने रेडिया से घोषणा की कि भारत के साथ हमारा युद्ध छिड गया है। हालांकि भारत के तत्कालीन रक्षामन्त्री श्री यशवन्तराव चव्हाण ने फिर यह स्पष्ट कर दिया कि हमारी कायवाही सीमित है और उसका उद्देश्य पाकिस्तान का यह महसूस कराना है कि हम कश्मीर समेत भारत की प्रादेशिक अखण्डता में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। इससे पहले ३ सितम्बर को अपने प्रसारण में प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री ने घोषणा की थी कि मैं यह कहूँ कि हमारा अगडा पाकिस्तान की जनता के साथ नहीं है। हम उमका भला चाहते हैं। हम चाहते हैं कि पाकिस्तान के लोग पूर्ण और हम उनके साथ शांति और मित्रतापूर्वक रहना चाहते हैं। युद्ध विराम होने के समय तक भारतीय सनाए लम्बे चौड़े युद्ध क्षेत्र में जो कश्मीर में सिध तक फना हुआ था, कायवाही के लिए मनाइ थी। लेकिन जबकि भारत पाकिस्तान की जनता की अनाई चाहता था, वहा पाकिस्तानी सेना ने नितान्त अथहीन और बबरतापूर्ण कायवाही की तथा युद्धविराम स्वीकार करने के चार घंटे बाद भी अमृतसर एक उप-नगर छेगहेडा में भारतीय नागरिकों पर बमबर्षा की।

कश्मीर पर हुये हमले में मारे मारे के मामले यह स्पष्ट हो गया कि ३० जून, १९६५ का जो समझौता हुआ था उमकी प्रत्यावना में सद्भाव के जिम वातावरण की चर्चा थी वह भारत का भुतावे में डानन के लिए थी और इसीलिए था जिगमे अचानक भारत के विरुद्ध कायवाहा की जा सक। अपनी स्वाभाविक मौम्यता के साथ प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री ने कहा दुनिया का यह जानकर बडा आघात पहुंचेगा कि जब उम समझौते पर हुन्ता था हा हा रहे थे तभी पाकिस्तान ने कश्मीर में अगम्य घुसपट्टिये अजन की

योजना तैयार कर ली थी और मरी म उा मागा को प्रशिक्षण दे रहा था। एक महीने बाद ३० जून १ समझौते की म्यादा मूक्या म पहल ही उगा उह कमी म भजा। इग प्रकार उमरा आचरण अपनी महाना प्राण बहता है।

हालाकि पाकिस्तान न एक बार फिर कश्मार पर हमला किया फिर भी भारत न शांति और मदभाव के नाते १० जनवरी, १९६६ को तागत-मममो। का स्वीकार किया जिससे दोना देशा क बीच मध्य ममाप्त हुआ और कश्मीर म कनी म्मिनि फिर हो गयी जो ५ अगस्त १९६५ म पहल थी। जबकि पाकिस्तानी नियमित मना के धुमपैटिया के रूप म प्रवेश किया था। उग समझौते क अंतगत भारत और पाकिस्तान १ सन्ध्या किया कि व वन प्रयोग का त्याग करेंगे और घोषणा की कि व दोना देशा की जनता क बीच मामास्य और शांतिपूर्ण सम्बन्ध कायम करेंगे और दाना दशा की जनता क बीच मद्भाव और मित्रता बनायग। समझौते क वात् भारत न प्राणा की कि दोना देशा क सम्बन्धा का एक नया युग आरम्भ हागा।

भारतीय विमान का अपहरण

लेकिन यह भी धोखा मात्र सिद्ध हुआ। ३० जनवरी, १९७१ का दो पाकिस्तानी एजटा न एक भारतीय नागरिक यात्री विमान का जो श्रीनगर म जम्मू की नियमित उडान कर रहा था पिस्तौन के बल पर लाहौर जाने क लिए विवश किया। जसा कि होता आया है पाकिस्तान न इस बात से इकार किया कि इस काम म उगका काई हास है और भारत को अपने इस निणय की सूचना दी कि वह उम विमान का उमने यात्रिया और चालका सहित भारत वापिस जाने देगा। फिर भी पाकिस्तान न भारत के उम विमान की महायता के लिए राहत विमान भजे जाने की बात स्वीकार नही की। उमने यह भी नही माना कि अफगानिस्तान की एरियाना विमान सेवा के एक विमान द्वारा अपहृत विमान के यात्रिया और कर्मचारिया का वापस भेज दिया जाए। अन्त म जब यात्री ४८ घण्टे से अधिक् समय तक कष्ट शल चुके तो पाकिस्तान ने उह और चालका को सडक द्वारा भारत-पाक सीमा पर हुसनीवाला चौकी भेजना स्वीकार किया। २ फरवरी, १९७१ को पाकिस्तान सरकार के पिछले आश्वासन के बावजूद भारतीय विमान को उडा दिया गया और यह काम हवाई भडडे के अधिचारिया सनिको और पुलिम की उपस्थिति म हुआ तथा उसके नष्ट किय जान को टेलीविजन व्यवस्था द्वारा टेलीविजन कमरा पर उतारा गया। इमसे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता था कि इस कांड म पाकिस्तान का हास है। यही नही पाकिस्तान ने विमान का अपहरण करने वाला को शरण दी उन्हें और उनके सहयोगिया से सहानुभूति प्रकट की और १३ फरवरी १९७१ को लाहौर म उह विजय परेड म धुमाया गया। भारतीय विमान के अपहरण और उस नष्ट करने म पाकिस्तान सरकार की स्पष्ट जिम्मेवारी को देखते हुए भारत सरकार न २ फरवरी १९७१ से भारतीय सीमा स होकर पाकिस्तान क सभी विमाना की उडान को रोक लिया और पाकिस्तान का यह स्पष्ट कर लिया कि यह राक तब तक लागू रहेगी जब तक पाकिस्तान सरकार अपना उत्तरदायित्व स्वीकार न कर और जा कुछ हुआ है उसकी क्षतिपूर्ति न करे।

१९७१ का आक्रमण

विमान अपहरण क तयभग दो महीने बाद पाकिस्तान के सनिक शासका न भारत

के विरुद्ध एक भय ढग से आक्रमण धारम्भ किया। उन्होंने पूव बंगाल से भारतीय सीमा पर अपने लाखा नागरिका का बलपूर्वक भेजना शुरू किया। यह पूव बंगाल में उस दारुण कांड का आरम्भ था जिससे भारत की सुरक्षा और आर्थिक विकास पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। वास्तव में भारत को यह आशा थी कि पाकिस्तान की जनता के साथ मित्रता पूरा सम्बन्ध का नया युग आरम्भ होगा क्योंकि पाकिस्तान न लोकतन्त्रीय अधिकाारक व सन्धि सम्बन्ध के द्वा २८ नवम्बर १९६६ का विजय पाई थी और उसे पाकिस्तान के सैनिक शासका का स्पष्ट आश्वासन मिला था कि देश में चुनाव कराये जायेंगे तथा सत्ता जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों का सौंप दी जायेगी।

चुनाव हुए और शेख मुजीबुर्रहमान क नतत्व में आवासी लाग का पाकिस्तान की राष्ट्रीय प्रसम्बली में पूरा बहुमत मिला। राजनीति का मन में प्रमुख प्रश्न यह था कि क्या सैनिक शासन मचमुच सत्ता जनता क चुन हुए प्रतिनिधियों का सौंप देगा ?

शेख मुजीबुर्रहमान जन प्रतिनिधियों का सत्ता सापने क प्रश्न पर सैनिक शासक का स बातचीत कर ही रहे थ कि २५ मार्च १९७१ का अचानक याजना मिट्टी में मिला दी गई थी पूव बंगाल के निहत्थे लोग पर जिन्होंने लगभग शत प्रतिशत वाट शाख मुजीबुर्रहमान को दिये थ दमन के तीर पर बबर श्रत्याचार शुरू कर लिया गया जिसकी मिमान मिलना कठिन है। बताया जाता है कि लगभग तीस लाख बंगालियों का मौन क घाट उतार लिया गया और एक कराड लागने भारत में शरण ली।

भारत की विजय

बंगलादेश की आड में पाकिस्तान ने मघालय व त्रिपुरा क्षत्र में भारतीय नगरा पर भीषण गोलाबारी प्रारम्भ कर ली। पूर्वी बंगाल सीमा क क्षत्र से उट्टान खुलकर वायु याना बटका से भारत पर आक्रमण किया।

३ दिसम्बर को सायंकाल अचानक पाकिस्तान ने भारत क १२ हवाई अड्डा पर वायु मना द्वारा बमबारी कर खुला आक्रमण प्रारम्भ कर लिया। पाकिस्तानी विमानों ने १९६५ की तरह नागरिका पर बम वर्षा क साथ-साथ नायाम बम भी गिराये। पाकिस्तान की प्राणामक नीति का दखन हुए भारत न बगलादश की मुक्ति के लिए अपना सना का प्रादेश लिया। भारतीय सना ने पाकिस्ताना हमलाबरा से पूर्वी व पश्चिमी दाना सीमाप्रा पर भीषण सघष कर उन्हें न बवल पीछ धक्कने में प्रवितु पाकिस्तान क अनेक स्थाना पर कजा करन में भी सफलता प्राप्त की।

भारतीय जवाना न सभी मोर्चों पर पाकिस्तानी हमलाबरा क टाट छट्ट किया तथा घन्त में १६ दिसम्बर का टाका पर कजा करन में सफलता प्राप्त की। पाकिस्तानी सना क ६३ हजार सैनिका न धारममपण कर लिया। १७ दिसम्बर का पाकिस्तान न भारत क यद विराम प्रस्ताव का स्वीकार कर अपनी पराजय मान ली।

भारत-पाक युद्ध का घटनाक्रम

३ दिसम्बर १९७१ पाकिस्तानी वायुसना ने अपना पूव निश्चित याजना क घन्त मार गाम का ५ ६५ बज कई भारताय हवाई अड्डा—भमतनर पटानको श्रीनगर अतीपुर उत्तरलाई जाधपुर अम्बाला और आगरा—पर हवाई हमन विय। इनक साथ ही पाकिस्तानी सन न भा हमाग पश्चिमी गंगा में कई स्थाना पर आक्रमण कर लिया।

पाकिस्तानी सेना ने कई भारतीय ठिाना—गुनेमावी, गेमाररा, पुछ धोर भय कई स्थाना पर गोलाबारी की ।

२५ नवम्बर को पाकिस्तानी प्रसीडेंट याह्या खा ने १० दिन क प्रन्त युद्ध छडने की घोषणा की थी । प्रसीडेंट याह्या खा ने इस बन्दव्य क नवें दिन भारत पर आक्रमण कर दिया ।

भारतीय प्रधानमन्त्री, रक्षामन्त्री और वित्तमन्त्री पाकिस्तानी हमले का गमगार सुनकर अपने दौरा स दिल्ली लौट आए । प्रधानमन्त्री क बन्दव्यता का लौटने क तुर्गन बात् मन्त्रिमण्डल की आपातकालीन बैठक हुई ।

राष्ट्रपति श्री बी० बी० गिरि ने आपातकालीन स्थिति की घोषणा की ।

रात के ११ ५० बजे भारतीय वायुसेना न जवाबी वायवाही की और पाकिस्तानी हवाई अड्डा—चदेरी, शोरकाट सरगाधा मुरी, मियावली मम्बर (कराची क निरन्) रिमालवाला (रावलपिंडी के निकट) और चागामागा (लाहौर क निकट) पर हमल किए । इन पाकिस्तानी हवाई अड्डा पर छडे कई विमाना का क्षतिग्रस्त किया गया और पट्टान टकों पर आग लगा दी गई । सरगाधा हवाई अड्डा बर्बात् कर दिया गया ।

४ दिसम्बर पाकिस्तान न भारत के विरुद्ध युद्ध की औपचारिक घोषणा कर दी ।

पाकिस्तानी सेनाआ न बख्तरबद गाडिया और तोपखाने की मन्त से छम्ब पर भारी हमला बोल दिया । भारतीय सेना न दुश्मन के अनेक सनिक हताहत कर दिए ।

फिरोजपुर मे एक पाकिस्तानी ब्रिगेड ने पाक वायुसेना बख्तरबद गाडिया और तापखाना की मदद स हुमनीवाला के निकट भारतीय इन्वार् पर आक्रमण कर लिया । हमारी सेना ने दुश्मन के अनेक सनिक हताहत किये और उसे पीछे धकेल दिया ।

पूर्वी क्षेत्र मे भारतीय सेना कई स्थाना स बंगलादेश म प्रविष्ट हुई । भारतीय सेना ने मुक्तिवाहिनी के सहयोग स कई स्थाना को आजाद कर दिया ।

भारतीय नौसेना के पश्चिमी और पूर्वी बडे शत्रु के युद्धपोता को नष्ट करने के लिए निकल पडे ।

५ दिसम्बर सुरक्षा परिषद मे भारत और पाकिस्तान को समान मानकर युद्ध विराम क लिये जो प्रस्ताव पेश किया गया था उस ने उसे अपने वीटो क प्रयोग से टुन्रा लिया ।

मुक्तिवाहिनी के सहयाग से भारतीय सेना ने बंगलादेश के कई और इलाके मुक्त कराये ।

पाकिस्तानी सेना ने बख्तरबद गाडिया की मन्त से लौगानेवाला पर भारी हमला बाल दिया । भारतीय सेना न अपना वायुसेना क सहयोग स पाकिस्तानी सेना को पीछे धकेल लिया । पाकिस्तान की दा बटालियन न अमृतमर म रानिया पर हमला कर लिया । भारतीय सेना ने दुश्मन के अनेक सनिक हताहत किये और उसे पीछे धकेल लिया ।

छम्ब म दुश्मन का दूसरा हमला भी विफल कर दिया गया ।

दुश्मन के अनेक सनिक हताहत हुये और उसे पीछे हटना पडा ।

पुछ के निकट कस्बा मे पाकिस्तानी हमला विफल कर दिया गया ।

भारतीय नौसेना के एक पश्चिमी नौसैनिक दल ने दो पाकिस्तानी विध्वंसका—खजर और शाहजहा—को डुबाने का साहसिक काय कर दिखाया । इस नौसैनिक दल न कराची बंदरगाह क प्रतिष्ठाणा पर भी बमजारी की ।

बगल की खाड़ी में हमारी नौसना ने दुश्मन की एक पनडुब्बी क्षतिग्रस्त कर दी और चटगाव तथा वाक्स बाजार के प्रतिष्ठानों पर लगातार बमबारी की।

६ दिसम्बर ५१६ दिम्बर् की रात को पाकिस्तानी सेना की लगभग दो ब्रिगेडों ने बख्तरवद रेजीमेन्टों की मदद से छम्ब में दो बार भारतीय सैनिक ठिकाना पर हमला किया। दोनो बार हमलाबारा को पीछे धकेल दिया गया।

उधर बंगलादेश में हमारी सेना ने मुक्तिवाहिनी के सहयोग से कई इलाकों को मुक्त कर लिया।

भारतीय नौमनिक विमानों ने खुलना, चालना और मंगला बंदरगाहों पर प्रहार किया और चटगाव हवाई अड्डे तथा उसके आस-पास के पाक सैनिक सस्थानों पर आक्रमण किया।

मुक्तिवाहिनी ने लालमुनीरहाट में प्रवेश किया। भारतीय सेना दुश्मन के विरुद्ध मुक्तिवाहिनी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी।

६ दिम्बर् की रात का छम्ब दुश्मन से खाली करा लिया गया।

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने समद में गण प्रजातंत्र की बंगलादेश को भारत द्वारा मायता की मूचना दी। "म अक्सर पर उन्होंने कहा— इस समय हमारा ध्यान इस नवजात देश के राष्ट्रपिता की ओर है।"

पाकिस्तान ने भारत के माथे राजनातिक सम्बन्ध तोड़ दिये।

७ दिसम्बर जसोर हवाई अड्डा हमारे अधिकार में। भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी जसोर छावनी में प्रविष्ट हुई। जसोर शहर मुक्त।

सिलहट में भारतीय सैनिक हेलीकोप्टरों में उतारे गये। सिलहट और मौलवी बाजार मुक्त करा लिये गये।

८ दिसम्बर भारतीय थलसेनाध्यक्ष जनरल एम० एच० एफ० जे० मानेकशा ने बंगलादेश स्थित पाकिस्तानी आधिपत्य सेना के अधिकारियों और अन्य सैनिकों तथा कर्मचारियों को, उनकी शांतिपूर्ण स्थिति का ध्यान में रखते हुए, तुरन्त आत्मसमर्पण करने के लिए कहा।

छम्ब में पाकिस्तानी सेना ने एक और ब्रिगेड और अधिक बख्तरवद गांडिया और अपनी वायुसेना की सहायता से भीषण हमला किया। भारतीय सेना ने दुश्मन का डटकर मुकाबला किया और उसके बड़ी संख्या में सैनिक हताहत कर दिये।

उधर भारतीय सेना ने मुक्तिवाहिनी के सहयोग से कोमिल्ला और ब्राह्मणवारिया को मुक्त करा लिया।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव पास करके भारत और पाकिस्तान का युद्ध विराम करने और अपनी अपनी फौजों अपने अपने इलाकों में वापस बुलाने का अनुरोध किया।

९ दिसम्बर रक्षामन्त्री ने समद में घोषणा की कि विशाखापत्तनम के निकट ३१४ दिम्बर् की रात का समुद्र में अमराका में बनी सबसे बड़ी पाकिस्तानी पनडुब्बी गंजी डुबा दी गई।

बंगलादेश में भारतीय सेना और मुक्तिवाहिनी ने मिलकर चान्पुर और दाऊद कनी मुक्त करा लिए।

नया छोड पर दुतरफा हमला किया गया भारतीय सेना की नया छोड में तनात

दुश्मन की पाकिस्तानी सेना से भिड़त । भारतीय पश्चिमी नौमनिब बडे ने दूगरी बार साहसिक अभियान म ग्वादर स कराची तन के सम्पूण मकरान तट पर बमगारी की और कराची बन्दरगाह म कई महत्वपूण इधन के भडारा पर धाग लगा गी ।

१० दिसम्बर लक्षम मुक्त । यहा पर तैनात पाकिस्तानी कर्माडिग अफमर न अपन अधीन ४१६ अधिकाऱिया और सनिका महिन घातमसमपण किया ।

छम्ब म दुश्मन ने मुनब्बर तवी नदी के पार बङ्गने के लिए भारी धात्रमण किया । यहा पर दुश्मन की सनिक डिवीजन की सहायता के लिए कम से कम गी बख्तरख्त रेजीमट थे । यहा पर घमासान लडाई शुरू हो गई ।

कच्छ म नगरपारकर स उत्तर म १० मील दूर चीरावाह और विकोट पर ग्जा ।

भारत ने विश्व क कई देशा के विमाना को कराची इस्तामाबाद और ढाका मे विदेशी नागरिका को निकालने म उनकी सुरक्षा की गारटी दी ।

११ दिसम्बर मेजर जनरल राव फरमानअली ने सयुक्त राष्ट्र महासचिव घाट से पश्चिम पाकिस्तानी सनिको और नागरिका को बगलादश से निकालने म सहायता दन का अनुरोध किया और कहा कि जब तक उनका बहा स निकाला नहीं जाता तब तक उनकी सुरक्षा का बन्धोमस्त किया जाय ।

जनरल माह्या खा न मेजर जनरल फरमानअली के डम सदेश का रद्द कर लिया ।

जनरल मानकशा न मेजर जनरल फरमानअली को एक सदेश म बताया कि मुकाबला करना बेकार है इसलिए हथियार डाल ग ।

सनाध्यक्ष ने मेजर जनरल फरमानअली को एक और सदेश म चेतावनी दी कि वह भागन का प्रयत्न न करे ।

मुक्तिवाहिनी ने भारतीय सेना के सहयोग म बगलादश म हिली ममनसिह कुशितया और नोब्राखाली को मुक्त कर दिया । हमारी मना न छम्ब सेक्टर म घमासान युद्ध क बाद पाकिस्तानी सेना को मुनब्बर तवी के पश्चिम का ओर धकेल दिया ।

१२ दिसम्बर बहुत सार भारतीय छाताधारी सनिका को ढाका पर हमला करने क लिए ढाका के ग्राम-पास उतारा गया ।

१३ दिसम्बर हमारी सेना न ढाका घेर लिया । सनाध्यक्ष जनरल मानकशा न मेजर जनरल फरमानअली को फिजूल खून खराबा रोकने के लिए सदेश भजा और कहा कि जो सनिक हथियार डाल देगे उनक साथ उचित ब्यवहार किया जाएगा ।

१४ दिसम्बर रक्षामत्री थी जगजीवनराम न समद का युद्ध क पहने के दस दिन क हताहता की सख्या बताई । मतक—१६७८ घायल—५०२५ और लापता—१६६२ ।

उन्हां बताया कि पाकिस्तानी सेना क हताहता की सख्या इसस बहुत ज्यादा है । इसके अलावा पाकिस्तानी नियमित सेना क ४१०२ अफमर और सनिक हमारी कद म है ।

भारतीय वायुसेना क ८ विमान चालक और ३ नवीगटर बीरगति को प्राप्त हुए और ३६ विमान चालक और ३ नवीगटर लापता हैं ।

भारतीय नौसेना क आई०एन०एम० खुकरी जहाज क डूबन स १८ अधिकारी और १७३ नौसनिक लापता हैं ।

बगलागेश म पाकिस्तानी प्रशासन क उच्चाधिकारिया न त्यागपत्र दे दिए और

रेडक्रास व तटस्थ क्षेत्र में कारण की याचना की। बागदा मुक्त हुआ गया। पाकिस्तानी सेना की ६३ इन्फैंट्री ब्रिगेड के कमांडर, ब्रिगेडियर खदेर न दा लफिज़ेनट वर्नना और एब मेजर के साथ ढाका व नजदीक आत्मसमर्पण कर दिया।

माघियत मध्य ने अमरीका के भारत-यात्र युद्ध विंगम और सेनाप्रा की वापसी व प्रस्ताव पर तीसरी बार वीटा कर दिया।

१५ दिसम्बर ढाका में पश्चिमी पाकिस्तानी सेना के कमांडर, ले० ज० ए० ए० के० नियोजी न भारतीय सेनाध्यक्ष को युद्धविराम का अनुरोध किया। जवाब में जनरल मानकशा न उन्हें १६ दिसम्बर, १९७१ का सुबह ६ बजे तक आत्मसमर्पण करने का निदेश दिया।

१६ दिसम्बर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी न सनद में घोषणा का कि बगला देश में पश्चिमी पाकिस्तानी सेना न आज्ञा स्ति व ४३१ बजे बिना शर्त हथियार डाल दिये हैं। आत्मसमर्पण करार पर त्रै० जनरल निभाजा न पाकिस्तानी पूर्वी कमान का आग्रह म हस्ताक्षर किए हैं।

शिमला समझौता

भारत द्वारा पाकिस्तान का बुरा तरह पराजित किये जाने के परिणामस्वरूप श्री भुट्टो याह्या खा को हटाकर पाकिस्तान के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। उन्होंने ममूत पराजय का क्षय याह्याखा पर डालकर उन्हें नजरबंद कर लिया तथा पराजय की जांच करने की घोषणा की।

राष्ट्रपति भुट्टो न जब दखा कि बगलादेश तो बन ही गया दूसरे पाकिस्तान का भारी भूभाग व ६३ हजार पाकिस्तानी सैनिक भारत के बन्धे में हैं तो उन्होंने भारत से समझौते की पेशकश की। अंत में २६ जून में शिमला में भारत-यात्र शिखर वार्ता प्रारम्भ हुई तथा भुट्टो के बड़े हथ के बावजूद भारत न अपनी शांति की नीति का प्रमुखता देकर समझौता वार्ता सफल बनाने का पूरा प्रयास किया। अंत में २ जुलाई का अधरात्रि का १२ बजेकर ६० मिनट पर प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी व श्री भुट्टो ने समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये।

शिमला समझौते का पूण पाठ निम्न है —

१ भारत और पाकिस्तान की सरकारें यह मकस्य करती है कि दाना देश उम मध्य और टकराव का समाप्त करेंगे जिसमें उनका सम्बन्ध को अब तक विगाडे रखा है। वे मैत्रा और सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध तथा उपमहाद्वीप में स्थायी शांति कायम करने का निग काम करेंगे जिसमें आगे में दाना देश अपने माघना और शक्ति का उपयोग अपनी जनता के कल्याण के मुस्तर काय में कर सकें।

इन उद्देश्या की पूर्ति का निग भारत और पाकिस्तान का सरकारें निम्न बातों पर सहमत हैं कि—

(क) दाना देश आपसी सम्बन्धों में मयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र के सिद्धान्तों और उद्देश्या व अनुरूप काय करेंगे।

(ख) दोना देश अपने मतभेदों का शांतिपूर्ण उपायों तथा द्विपक्षीय बालचीन अथवा ऐम विसा उपाय में हल करेंगे जो दाना देशों का माय है। दाना देशों के बाव विसा भी समस्या का अतिम समाधान हान तक काई भी पत्र एवतरफा तौर पर स्थिति में काई परिवर्तन नहीं करणा और दोना पक्ष ऐसी किमी कारबाई के सगठन, उमकी

सहायता और प्राप्ताह्न को राखेंगे जिससे शांतिपूर्ण और सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों को हानि पहुँचती है।

(ग) दोनों देश समझते, अच्छे पड़ोसीपन और स्थायी शांति के लिए वायम्न करते हैं कि वे शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता एवं प्रभुत्व सम्पन्नता तथा बराबरी तथा दोनों के लाभ पर आंतरिक मामला में हस्तक्षेप न करा के उमूला पर काम करेंगे।

(घ) दोनों देशों के सम्बन्धों में पिछले २५ वर्षों से विगाड पण करन वाल सघप के मूल विवादों और कारणों का शांतिपूर्ण उपायों द्वारा मुनझाया जाएगा।

(ङ) वे एक दूसरे की राष्ट्रीय एकता क्षेत्रीय अखण्डता राजनीति में स्वतंत्रता और समानता का सदैव सम्मान करेंगे।

(च) दोनों देश सयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र के अनुरूप एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता या राजनीति में स्वतंत्रता के विरुद्ध शक्ति का उपयोग नहू करण और न ही ऐसा करन की धमकी देंगे।

२. दोनों सरकारें एक-दूसरे के खिलाफ शत्रुतापूर्ण प्रचार राकन के लिए सभी सम्भव कदम उठाएगी। वे ऐसी सूचना व प्रचार प्रसार का प्राप्ताह्न देंगी जिसे दोनों के सम्बन्धों में बढ़ि है।

३. दोनों देशों के बीच शन शन सम्बन्धों का वायम्न करने और उह सामाय बनान के लिए इस पर सहमति हुई कि

(क) संचार सम्बन्ध पुन वायम्न करने के लिए कदम उठाए जायेंगे। संचार सम्बन्धों में डाक तार समुद्री एवं स्थलाय यात्रा और विमान सेवाएं शामिल हैं। विमान सेवा में भारत पर होकर उड़ाने भी सम्मिलित हैं।

(ख) एक दूसरे देश के नागरिकों को यात्रा सुविधाएं वटाने के लिए उचित कदम उठाए जाएंगे।

(ग) आर्थिक तथा आपसी सहमति के क्षेत्रों में व्यापार और सहायग यथासम्भव पुन शुरू किया जायगा।

(घ) विज्ञान और सस्कृति के क्षेत्रों में आदान प्रदान को प्राप्ताह्न दिया जायेगा। इस सम्बन्ध में आवश्यक विवरण तयार करन के लिए दोनों देशों के प्रतिनिधि-मण्डल समय समय पर मिलने रहेंगे।

४. स्थायी शांति की स्थापना का प्रक्रिया शुरू करन के लिए दोनों सरकारें इस पर सहमत हैं कि—

(क) भारतीय और पाकिस्तानी सेनाएं अंतर्राष्ट्रीय सीमा के अपनी अपनी अर हटा ली जाएगी।

(ख) दोनों देश जम्मू-कश्मीर में १७ दिसम्बर १९७१ को हुए युद्धविराम के पत्रस्वरूप वायम्न हुई नियंत्रण रेखा का किसी भी पक्ष द्वारा स्वीकृत स्थिति का प्रभावित किए बिना समादर करेंगे।

काइ भी पक्ष इस सम्बन्ध में आपसी मतभेद या कानूनी परिभाषा का लेकर एक तरफा तौर पर स्थिति में परिवर्तन नहू करेगा। दोनों पक्ष वायदा करत हैं कि शक्ति का उपयोग करके रेखा का उल्लंघन नहू करेंगे।

(ग) सेनाप्रा की वापसी इस समझौते के लागू होने पर शुरू हो जायेगी और उसका ३० दिना बाद यह काम पूरा हो जायेगा।

५ इस समझौते की दाना देशों की अपनी अपनी माविधानिक प्रक्रियाओं के अनुरूप पुष्टि होनी आवश्यक है। इन पुष्टि-पत्रों के आदान प्रदान की तिथि सही समझौता लागू होगा।

६ दाना सरकार इस पर सहमत हैं कि उनके प्रधान भविष्य में दोनों की सुविधा के अनुरूप किसी समय मिलेंगे। इस बीच सम्बन्धों के सामायीकरण की प्रक्रिया और प्रसंग तय करने के लिए दाना पक्षा के प्रतिनिधियों की बैठक होगी। ये प्रतिनिधि युद्ध में बंदी बनाए गए मैजिस्ट्रेट और नागरिकों की वापसी जम्मू-कश्मीर विवाद के अंतिम निपटारे और राजनयिक सम्बन्धों पुनः कायम करने के प्रश्नों पर विचार करेंगे।

शिमला समझौते पर हस्ताक्षर करके लौटते ही श्री भुट्टो ने पुनः भारत विरोधी रव्य अपना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने लाहौर पहुंचते ही कहा—

‘पाकिस्तान की खाई हुई जमीन तथा युद्ध वंदिया का लेने के लिए मैं शिमला गया था। जमीन लेकर लौटा हूँ। हमारे कदो भाई भी शीघ्र ही छूट आयेंगे। मैंने पाकिस्तान के किसी सिद्धांत के साथ समझौता नहीं किया। मैंने युद्धवज्ज संधि का भी स्वीकार नहीं किया है। कश्मीर पर हमारा दावा अभी भी बरकरार है।’

भारत ने शिमला समझौते के अनुसार पाकिस्तान विरोधी प्रचार बिल्कुल बंद कर लिया था किन्तु पाकिस्तान में जारी रहा। श्री भुट्टो ने शिमला में आश्वामन दिया था कि वे अगस्त तक बंगलादेश का मायता दे देंगे किन्तु उन्होंने लगभग डेढ़ बप बीत जाने पर भी अभी तक मायता नहीं दी है।

भारत पाकिस्तान के सन्ध्याधिकारियों की सीमा रेखांकन के लिए वाता प्रारम्भ हुई। पाकिस्तान ने उसमें भी अडचनें खड़ी की। कश्मीर के ठाको चक क्षेत्र, जोकि भारत का क्षेत्र था पर उसने अपना अधिकार जमाया। भारतीय थल सेनाध्यक्ष जनरल मानेकशा का दावा लाहौर जाकर टिक्का था सवाता करना पड़ी और अंत में भारत ने पाकिस्तान के अमहयागपुण रवये को देखते हुए भी पाकिस्तान को छम्ब का क्षेत्र ठोका चक के बदल में देकर उसका हठ का मान लिया। इस प्रकार भारत ने २० दिसम्बर १९७२ का साथ ६ वजे तक सभी विजित क्षेत्रों से सेनाप्रा की वापसी का काम पूरा कर लिया। किन्तु इसका बाद ही पाकिस्तान ने पुनः भारत को धमकिया देनी प्रारम्भ कर दी। श्री भुट्टो समय समय पर तयोरिया बदल कर धमकी भरे शब्दों का प्रयोग करते रहे।

भारत ने अत्यंत धैर्य के साथ व्यवहार कर शिमला समझौते की क्रियाविति का प्रयास जारी रखा। २३ जुलाई १९७३ को श्री पी०एन० हक्सर के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल इस्लामाबाद पहुंचा। २४ जुलाई से दोनों देशों के प्रतिनिधिमण्डलों के बीच बातचीत प्रारम्भ हुई। इसी बीच २६ जुलाई को परिस में राष्ट्रपति भुट्टो ने पुनः कश्मीर की आड में भारत विरोधी वक्तव्य दे डाला। सात दिना तक हुई वार्ता पाकिस्तान की हठधर्मी के कारण ३० जुलाई १९७३ को असफल हो गयी तथा निष्पत्ति हुआ कि अगली वार्ता दिल्ली में होगी।

१७ अगस्त को श्री अजीज अहमद के नेतृत्व में पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल दिल्ली पहुंचा। १८ का दोनों प्रतिनिधिमण्डलों के बीच वार्ता प्रारम्भ हुई। २१ व २६ अगस्त को

अजीज अहमद ने श्रीमती इंदिरा गांधी से भेंट की। अतः म. पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल की हठधर्मी के बावजूद भारत ने वार्ता की सफलता का मांग पिवाला और ग्यारह मिनट तक लगातार बातचीत के बाद २८ अगस्त को दोनों के बीच मानवीय समस्याओं का हल के लिये समझौता हो गया। भारत ने अधिसूच्य पाकिस्तानी युद्धबंदियों की मुक्ति स्वीकार कर ली। साथ ही उन १६५ युद्धबंदियों जिन पर बंगलादेश न गम्भीर आरोप लगाये हैं, के अभिभाग के तिलसिले में पाकिस्तान और बंगलादेश के बीच प्रत्यक्ष वार्ता के द्वारा मामला सुलझाने की प्राकाशा व्यक्त की गई। पाकिस्तानी युद्धबंदियों की वापसी के साथ साथ पाकिस्तान में फसे बंगालिया की वापसी का मांग भी प्रशस्त हुआ।

भारत ने समझौता होते ही १६ सितम्बर १९७३ स पाकिस्तानी युद्धबंदियों की वापसी तेजी से शुरू कर दी। किंतु पाकिस्तान बंगालिया की वापसी तथा बंगलादेश से विहारी पाकिस्तानियों की वापसी में बराबर बाधा उत्पन्न करता रहा। बंगलादेश को मायता देने के आश्वासन का भी वह बराबर अघर में लटकाये हुए है।

राष्ट्रपति भुट्टो ने पुनः कश्मीर का नाम पर भारत का विरुद्ध विपक्षित जारी किया हुआ है। पास व अमेरिका की सहायता से वह शस्त्र एकत्रित कर भारत का विरुद्ध तयारिया में लगा हुआ है।



अजमेर सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक लि०, अजमेर

स्थापित-१९१०

दूरभाष २०४८५ २१३६६

शाखाएँ — जयपुर राड अजमेर खाईलण्ड अजमेर (सायकालीन) यावर भिनाय, केवडी किशनगड विजयनगर नसीराबाद पीसागन व ममुदा।

सहकारी बक में धन लगाकर देश की प्रगति और समाजवाद लाने में सहायक बनिये।

— देश की ६२ साल की उम्र एवं राजस्थान सरकार की —

भागीदारी बैंक की सुदृढ स्थिति की परिचायक हैं।

— बक की प्रगति एक नजर में —

क्र० स	विवरण	१९७०-७१	१९७१-७२	२४-१०-७३
१	हिस्सा पूजी	१५५१४५०)	२२६१०७५)	२८५४६००)
२	गुरक्षित एवं भ्रम कोष	१०३७६१६)	१२६१६४१)	१५१३१४२)
३	धमानत	६५२४०१०)	८६१८११३)	१०६७२६८६)
८	ऋण बचाया	१०६६६४३४)	१२८६५६८१)	२१२५५०८५)
५	कायशील पूजा	१५०७६१७१)	१८८५६७४२)	२८२१८६६६)
६	शुद्ध लाभ	६००२०)	१६५१६५)	२२६४१०)
				(३०-६-७३)

(कस्टिन जयसिंह)

(भार० के० गोयल)

अध्यक्ष

अध्यक्षपाक

अजमेर सेंट्रल कोओपरेटिव बैंक

अजमेर सेंट्रल कोओपरेटिव बैंक लि०,

लि० अजमेर

प्रधान कार्यालय, अजमेर

*GOA, A Lyric**Composed Of Sun And Shadows**Sea And Sand**Of Verdant Land**And People Radiant**A Culture With Strains**Of East And West**A Promise To Restore**Health And Vigour**With Rest And Pleasure**An Invitation Which Echoes**Far And Wide**How Can You Stand Aside?*

For any tourist information please contact our

TOURIST BUREAU

Opp Judicial Commissioner's
Court, Afonso do Albuquerque Road,

PANAJI GOA

Tel No 2673

Issued by the

Department of Information and Tourism,**GOVERNMENT OF GOA DAMAN AND DIU****PANAJI GOA**

PUBLICATION BOARD ASSAM

Some outstanding publications

1971

- 1 **English Sanskrit Dictionary** *by Anundoram Borooah*
(1850 1889)
World's second lexicon of its kind after Monier Williams. It is a great achievement. —*Max Muller*
First published—1877 Royal cloth binding
Reprinted —1971 812 pages Rs 75 00
- 2 **Ancient Geography of India (English)**
by Anundoram Borooah
First published—1877 Royal cloth binding
Reprinted —1971 115 pages Rs 20 00
- 3 **Ramalinganusasan (English Sanskrit)**
by Anundoram Borooah
First published—1877 Full cloth binding
Reprinted —1971 165 pages Rs 15 00
- 4 **Bhavabhuti and His Place in Sanskrit Literature (English)**
by Anundoram Borooah
Great contribution to the history of Sanskrit Literature
—*Sir Charles Bayley*
First published—1877 78 pages
Reprinted —1971 Rs 10 00
- 5 **Mahaviracharita (English Sanskrit)**
by Anundoram Borooah
Styled in simple and lucid Sanskrit incorporated with another book in English Bhavabhuti and his Place in Sanskrit Literature
Royal cloth bound 278 pages Rs 25 00
- 6 **Nanartha Samgraha (English Sanskrit)**
by Anundoram Borooah
Royal cloth bound 560 pages Rs 35 00
- 7 **Saraswati-Kanthabharana (English-Sanskrit)**
by Anundoram Borooah
410 pages Rs 30 00
- 8 **Tribal Folk-Tales of Assam (Hills)**
by Satyendranath Barkataki (Retired I A S)
21 magnificent pictures Rs 15 00
- 9 **The Land Where the Bamboo Flowers**
by J D Baveja
32 magnificent pictures Rs 10 00

Publication Board, Assam
GAUHATI-3

हिन्दुस्थान समाचार (रजत जयन्ती वर्ष)

सन १९४७ म दस आजाद हुआ और सन् १९५० म देश का प्रजातांत्रिक संविधान मिला। आजादी और मावभौम स्वतंत्र लोकतन्त्रात्मक गणतंत्र स्थापित करने वाला संविधान यदा एमी घटनाएँ थी जिनसे जन-जीवन नई आशा, नये विश्वास प्रगति समानता और बहुतायत के विचारों से भर गया। सन ४७ और सन् ५० के बीच के इस कालखण्ड में नव निर्माण का दायित्व लिए अनेक राष्ट्रनिर्माण के निश्चय गज उठे। भारतीय पत्रकारिता में हिन्दुस्थान समाचार का पन्नापण भी इसी महान् वैचारिक जागरण की एक देशाभिमानी किरण है। आजादी आन के साथ ही जन-जागरण के क्षेत्र में यह विचार गूजने लगा था कि प्रजातंत्र और स्वतंत्रता की सुरक्षा और अभिवृद्धि के लिए जिस प्रकार जागरण जनमत चाहिए वह विदेशी भाषा और चढ़ बड़े शहरों की राजनीतिक गतिविधियाँ में वधे हुए अखबाराएँ एक पूरे एजेंसियाँ से सम्भव नहीं होंगी। इसलिए राष्ट्रीय भाषाओं का समाचार पत्रों का स्तर उठाकर प्रसार और उनकी स्वस्थ निष्पत्ति, निर्भीक समाचार संचालन करने की शक्ति का यत्ना आवश्यक है। इसी स्वाभाविक और महती आवश्यकता की पूर्ति के लिए सन् १९४८ के दिसम्बर मास में हिन्दुस्थान समाचार का कार्य प्रारम्भ हुआ। भारतीय भाषाओं में समाचार संचालन, सम्पादन और वितरण करने के कार्य का हिन्दुस्थान समाचार ने उठाया। हिन्दुस्थान समाचार पूरे २५ वर्ष पूर्ण कर २६वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। यह उसका रजत जयन्ती वर्ष है।

हिन्दुस्थान समाचार प्राइवेट लिमिटेड

भारतीय भाषाओं और विनोदकर हिन्दी की प्रगति के लिये जा महापुरुष विगत शताब्दी में कार्यशील रहे उनका पुनर्जागरण इस कार्य को प्राप्त हुआ। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने इस कार्य की सराहना की। आचार्य विनोबा भावे ने इस कार्य के लिए प्रोत्साहन दिया। बम्बई के यू० पी० आर्डी० में कार्य कर रहे एक पत्रकार इस कार्य की धुरी लेकर आगे बढ़े। उनका नाम है श्री शिवराम शंकर आष्टे। श्री आष्टे जी पत्रकारिता के क्षेत्र में जिस प्रकार निष्पत्ति के उसी प्रकार एक अच्छे अधिवक्ता भी हैं। श्री आष्टे जी ने बम्बई में ही इस कार्य को प्रारम्भ किया। सन १९४८ के दिसम्बर मास में हिन्दुस्थान समाचार प्राइवेट लि० की विधिवत स्थापना की गई। श्री आष्टे जी विभिन्न प्रस्तावों में घूम घूमकर साथी पत्रकारों का इस कार्य में उत्साहित तथा सलग्न करने लगे।

निम्नलिखित कार्य प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रारम्भ हुआ। सब प्रथम बम्बई नागपुर जिल्ला और पटना में केंद्र स्थापित हुए। छोटे-बड़े अनेक क्षेत्रों में समाजसेवी और

भारतीय भाषाओं व प्रमी वाचनार्थाओं ने समाचार सञ्चलन में हिन्दुस्थान समाचार का सहायता पहुँचाई। आर्थिक दुरावस्था और भारतीय भाषाओं के सम्बन्धिताओं व प्रति उदासीनता व वाचजुद्ध उम वायुमण्डल में शिक्षक कमचारी विद्यार्थी, प्राप्तिपर कई लोग ने इस महती राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति में अपने धन तथा समय दाना की शक्ति लगाई।

विकास

सबप्रथम मराठी हिन्दी और उर्दू में बम्बई नागपुर दिल्ली और पटना व द्रा से यह काय हुआ। फिर मन् १९४८ से १९५३ के बीच लगभग सभी प्रांता में समाचार सञ्चलन का यह काय पहुँच चुका था और बम्बई, दिल्ली कलकत्ता पटना बंगलौर नागपुर वानपुर और नपान का राजधानी काठमाण्डू में क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित हो चुके थे। तब तब देव नागरी लिपि में दूर मुद्रक नहीं थे। इस कारण शीघ्रता से समाचार प्रेषण में कठिनाई हो रही थी। चिन्तु इसी समय तत्कालीन केन्द्रीय सञ्चार मंत्री श्री रफी अहमद किदवाई ने जबलपुर टेलीग्राफ वरुणाण में अग्रजी टेलीप्रिन्टर मशीन पर नागरी कुञ्जी पठन स्थापित कराने का काय सम्पन्न कराया। सबप्रथम चार मशीन तयार हुई। उममें सदा हिन्दुस्थान समाचार को मिली। पटना में राणपि पुरपोत्तमदास टंडन ने और दिल्ली में श्री जगजीवनराम जी ने जून १९५४ में हिन्दुस्थान समाचार द्वारा नागरी दूर मुद्रक स्थापित होने की विधि का उद्घाटन किया। इस प्रकार हिन्दुस्थान समाचार की ओर से स्वतन्त्र भारत में सबप्रथम नागरी लिपि में समाचार प्रेषण का स्वदेशी युग प्रारम्भ हुआ। वष में दा वार देवनागरी दूर मुद्रक के काम के विषय में सरकार को सुझाव देकर हिन्दुस्थान समाचार ने देवनागरी दूर मुद्रक के विकास में योगदान किया।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इस युगांतरकारी कार्याक्रम पर पटना में एक सम्मेलन आयोजित हुआ था। बिहार के तत्कालीन राज्यपाल श्री रगनाथ रामचन्द्र दिवाकर इस अवसर पर पधार थे। निष्पन्न निर्भीक और राष्ट्रपयोगी समाचारा के दायित्व का मुखरित करने व लिए जा गण्टी आयोजित की गई थी उसकी अध्यक्षता पटना विश्वविद्यालय व तत्कालीन उपकुलपति स्व० श्यामानन्द सहाय ने की थी। विशेष अतिथि के रूप में नपान व तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोइराला भी पधार थे। इस अवसर पर आचार्य विनोदा भावे और श्री जयप्रकाशनारायण ने हिन्दुस्थान समाचार व समाचारा की निष्पक्षता की मराहता का। लाङ्ग-सभा व अध्यक्ष श्री जे० थो० मावनकर ने कहा— मैं इस काय याचना का हार्थिक समर्थन करता हूँ। तत्कालीन व द्राय वृषि मन्त्रा श्री पजावराव देशमुख ने कहा कि— मय और निष्पक्ष समाचार राष्ट्रीय जीवन का मजबूत करने में आवश्यक हैं। मुझे प्रमत्तता है कि विगत पांच वर्षों में हिन्दुस्थान समाचार ने देश व मभी प्रमुख व द्रा पर मवाङ्गता नियुक्त करने में मफयता प्राप्त की है।

द्वन्द्व धर्तिरिक्त प० दानन्त्यान उपाध्याय श्री भन्त कौशल्यायन श्री गान्धर्माधिकारी गन्ध प्रभुदत्त ब्रह्मचारी डा० अमरनाथ झा डा० श्री वृष्णिमिह श्री कमलापति त्रिपाठी धर्ति विद्वाना ने भी हिन्दुस्थान समाचार द्वारा नागरी में दूर मुद्रक मवा प्रारम्भ करने व काय का मगहा। इस प्रकार मय व सरकार तथा गैर-सरकारी मभी क्षेत्रा में प्राप्त महायता व आधारा पर हिन्दुस्थान समाचार ने प्रगति कर दूररी मजिन पार कर ला।

प्रगति का तीसरा चरण

जाना व मभा वगैरे और म्ता में प्राप्त व्यापक ममयता में उत्साहित हिन्दुस्थान

समाचार व कायवतामा न देहता तत्र पटुचकर राष्ट्र की प्रगति मे सम्बन्धिता मभा दृष्टि कारणे व समाचार मकनित वर एक नया उलाहरण प्रस्तुत किया । अत्र यह माना जाने लगा कि ग्राम तहसील और जिना केन्द्रा तत्र पटुचकर समाचार मकनन का व्यापन काय वरने म हिन्दुस्थान समाचार न राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति के लिए महान काय किया है । विभिन्न राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार भी हिन्दुस्थान समाचार की ग्रामा तत्र छू मने वाली म समाचार मकनन यात्रना म प्रभावित हुई । मन् १९२१ म ही बिहार सरकार हिन्दुस्थान समाचार म समाचार लने लगी । मके बाद मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश राजस्थान पंजाब सरकारा न भी समाचार नना प्रारम्भ किया । राष्ट्रीय समाचारा म हिन्दुस्थान समाचार के इम काय का यागपान स्वीकार करन हुए आज लगभग सभी प्रदेश और मघाय क्षेत्र का सरकार इमना नियमित प्राहर है । केन्द्र सरकार न भी समाचार नना प्रारम्भ कर दिया है । मन् १९६८ म आकाशवाणी व विभिन्न केन्द्रा म प्राग्गिक समाचार प्रसारण के लिए तथा लिली म राष्ट्रीय समाचार प्रसारण के लिए भी हिन्दुस्थान समाचार द्वारा प्रपित समाचार लिए जाने लगे ।

भारतीय जनजीवन की विविध साम्प्रतिक सामाजिक और राजनतिक सभी गति-विधिया का जनता की अपनी भाषा यानी राष्ट्रीय भाषामा म मकनित और प्रपित करन वाली एकमात्र मस्या हिन्दुस्थान समाचार है यह तथ्य मकर नामन उभर कर प्राया । नि मरह हिन्दुस्थान समाचार व मवादपना, मम्पानक और छाट-बड सभी काय वतामा न राष्ट्रीय समाचार मकनन म अभी तत्र अधिकाभन उपमिन पडे मासृतिक धार्मिक, साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्रा व समाचारा का महत्प्र प्रदान किया जा राष्ट्र जावन की विविध धत्ता की प्रगति का स्पष्ट करने व लिए महत्वपूर्ण मान गये ।

हिन्दुस्थान समाचार की इम विनोय स्थिति को स्वीकार कर नपान म भी म ममिति का स्वागत हया । मन् १९५२ म मन् १९६३ तत्र नपान रडिया म हिन्दुस्थान समाचार स नपान एव भारत व समाचार लिए जात थ । फिर वहा जब राष्ट्रीय समाचार ममिति की स्थापना हुई ता हिन्दुस्थान समाचार नपान की ममिति का समाचार नन लगा ।

मिक्किम सरकार पिछले १७ वर्षों म हिन्दुस्थान समाचार का मवा लनों है । भारत व सामावर्ती पडामी दशा नपान भूटान मिक्किम के साथ समाचारा द्वारा मम्पक म्यापिन करन म हिन्दुस्थान समाचार न जा अगुवाई की है वह भारतीय पत्रकारिता के इतिहाम म एक महत्वपूर्ण घटना गिना जायगी ।

सहकारी समिति सुदृढ आधार

हिन्दुस्थान समाचार की इम प्रगति की आधारशिला मन् १९२७ म रखी गई था । यह एक महत्वपूर्ण घटना थी । मन् १९५७ म हिन्दुस्थान समाचार व कायवतामा न एक सहकार ममिति (का प्रापगृथि मामायटी) स्थापित की और उसका पजीयन परवरी १९५७ म कराया । हिन्दुस्थान समाचार (प्राइवेट) निमिटेड व व्यवस्थापका न समाचार समिति का मचावन म मन्कारी ममिति का मीप लिया । सहकारिता व आधार पर एक समाचार ममिति व काय का मचावन न कवन भारत म वरन बिस्व ना पत्रकारिता म एक अन्तिय उलाहरण बन कर मामन प्राया । तत्र मे इमी व्यवस्था व अन्तगत मन् ममिति म्ग की मभा साथ भाषामा तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी म समाचार मकनन मम्पादन और प्रपण का काय कर म्ग ह ।

हिंदुस्थान समाचार गृहवारी मिति की स्थापना पर भारत न तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने जो सन्देश दिया था वह हिंदुस्थान समाचार का सन्ध क रित्त मागन्शक रहगा । राष्ट्रपति महोन्य न बहा था कि —

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि हिंदुस्थान समाचार मिति एग महतारी सस्या के रूप म आज विधिवत परिवर्तित हो रही है । यह स्पातर एग बड़े महत्त्व का प्रयाग है । हिन्दी की एवमात्र समाचार मिति होने क नात या भी हिंदुस्थान समाचार की जिम्मेदारिया काफी बड़ी थी । इस नये स्पातर म जिम्मेदारिया और बड़ी ह । मुझे आशा है कि मिति के कायकर्ता जो अत्र इसक मालिक और व्यवस्थापन भी हगे मिति क ऊँचे उद्देश्या की पूर्ति के लिए अथक प्रयत्न करेंगे । मैं मिति की सपन्नता की कामना करता हूँ ।

अनेक महानुभावो का सहकार्य

हिंदुस्थान समाचार को प्रारम्भ से ही इस बात का सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि देश के श्रेष्ठ विद्वान जन-नेता और शासन के उच्च पदस्य अधिकारिया का सममथन मिला । स्थापना क समय डा० राजेन्द्रप्रसाद राजपि पुम्पोत्तमदास टण्टन प० गोविन्दबलामपन और था रफा अहमद किन्वई जने राष्ट्र भक्ता का शुभाशीष प्राप्त हुआ । समन साय ही हिंदुस्थान समाचार की विभिन्न प्रबन्ध मितिया म पदाधिकारी रह कर अनन्व महानुभावा ने हिंदुस्थान समाचार की प्रगति म सहयोग प्रदान किया है । डा० हरकृष्ण महताव डा० रामसुभर्गामिह सठ गविन्ददास श्री तन्तमल जन श्री जयनारायण व्याम श्री हरिश्चन्द्र माथुर श्री रगनाथ रामचन्द्र दिवाकर श्री घनश्यामसिंह गुप्त और श्री सुरद्रनाथ घाय आदि जन नताम्रा न प्रबन्ध मिति के काय सचालन पदा पर रह कर मिति का मागन्शन समय समय पर किया है । राज्य सभा म कांग्रेस दल के उपनेता श्री जयमुखलाल हाथी न गत दो वर्षों म मिति क अध्यक्ष के रूप म सक्रिय योगदान किया ।

इनके अतिरिक्त श्री सत्यकाम विद्यालकार (धर्मयुग बम्बई) श्री सत्येन्द्रकुमार गुप्त (आज काशी) और श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी (सम्पादक सरस्वता प्रयाग) आदि साहि त्यिक पत्रकार विद्वाना न भी प्रबन्ध मिति म अपना योगदान दिया । चालू वर्ष (१९७३ ७४) म प्रबन्ध मिति इस प्रकार है

अध्यक्ष—डा० सराजिनी महिषी—नागरिक विमानन एव पयटन राज्यमत्री ।

उपाध्यक्ष—श्री कामाख्याप्रसाद त्रिपाठी असम ।

था अभयकुमार जन प्रधान सम्पादक नवभारत टाइम्स ।

श्री वसन्तकृष्ण ओर दिल्ली ।

मन्त्री—श्री बालेश्वर अग्रवाल प्रबन्ध सम्पादक हिंदुस्थान समाचार ।

फीपोष्यन्—श्री ना० डा० लेल मुख्य समाचार सम्पादक हिंदुस्थान समाचार ।

सदस्य—

(१) श्री जयमुखलाल हाथा, उपनता काग्रम समदीय दल नई दिल्ली ।

(२) श्री गंगाशरण गिह ससन् सदस्य नई दिल्ली ।

(३) श्री सुधाकर पाठे ससन् सदस्य महामन्त्री नागरी प्रचारिणा सभा काशी महामन्त्री अविन भारताय हिन्दी साहित्य सम्मलन प्रयाग ।

(४) श्री मुकुन्द राव किलोन्कर सम्पादक किलोन्कर पुण ।

- (५) श्री ओमप्रकाश कुट्टा, विशेष प्रतिनिधि, हि दुस्थान समाचार भोपाल ।
 (६) श्री देवेन्द्र नाथ महथी, सम्पादक, हि दुस्थान समाचार कटक ।
 (७) श्री भपतभाई पारीख सम्पादक, हि दुस्थान समाचार अहमदाबाद ।
 (८) श्री श्रीकृष्ण शमा सम्पादक हि दुस्थान समाचार, त्रिवेन्द्रम ।
 (९) श्री अमर सिंह सदशवाहक, हि दुस्थान समाचार, दिल्ली ।

प्रगति के महत्वपूर्ण आकड़े

- * विभिन्न प्रदेशों के लगभग सभी तहसील केन्द्रों तक पहुँचकर हजारों गाँव हि दुस्थान समाचार की पहुँच के अंतर्गत आ चुके हैं ।
- * हिंदी, मराठी, गुजराती, उडिया बंगला असमी, पंजाबी मलयालम तेलुगु तमिल उर्दू और कन्नड़ भाषाओं में समाचार प्रेषण और वितरण होता है ।
- * चार स्थानों से अंग्रेजी में समाचार देकर अंग्रेजी पत्रों में भी ग्रामीण समाचारों को हि० सं० में स्थान मिलाया है ।
- * इस समय २० शाखा कार्यालयों में समाचारों का आदान प्रदान नियंत्रित होता है ।
- * हि दुस्थान समाचार के अधिभूत सम्वाददाताओं की कुल संख्या १०७२ है । दूर मुद्रक केन्द्र २० हैं ।
- * १३५ समाचारपत्र इसके ग्राहक हैं ।
- * केन्द्र एवं सभी राज्य सरकारों तथा स्थानीय क्षेत्रों से इस मायता प्राप्त है ।
- * आकाशवाणी के केन्द्रों में ७ भाषाओं में इसके समाचार प्रसारित होते हैं ।
- * हि दुस्थान समाचार की ओर से प्रतिवर्ष 'वापिकी' का प्रकाशन होता है जिसमें वर्ष की महत्वपूर्ण जानकारियाँ महत्वपूर्ण अध्यायों के अंतर्गत उपलब्ध की जाती हैं ।
- * हि दुस्थान समाचार की ओर से युगवाता प्रसंग-लेख सेवा (Feature Service) संचालित की गई है जिसकी सामग्री ८५ समाचारपत्रों के लेख-संस्थाओं में प्रकाशित होती है ।

भावी योजनाएँ

- * अगले १० दूरमुद्रक केन्द्रों और स्थापित करना । यह कार्य सम्पन्न होने से हि दुस्थान समाचार प्रगति की उम महत्वपूर्ण मजिल पर पहुँच जायगा जिसमें सम्पूर्ण भारत में समाचारों का एक साथ वितरण सभी प्रांतों में सभी भारतीय भाषाओं में हो सकेगा ।
 - * जो समाचारपत्रों नागरी निधि में सेवा कर रहे हैं उन्हें समाचारपत्र केन्द्रों तक दूरमुद्रक (निर्बर) मशीनों से जोड़कर समाचार देना ।
 - * बर्मा इंडोनेशिया मलयेशिया, थाईलैंड श्रीलंका, सिंगापुर कीनिया मारीशस आदि पड़ोसी देशों में शाखा कार्यालय स्थापित करना और समाचारों के आदान प्रदान की व्यवस्था करना ।
- समाचार चित्र (News Photos) विभाग स्थापित कर राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं के चित्र समाचारपत्रों में प्रकाशनाय योजना ।

वर्तमान गठन

इस समय हि दुस्थान समाचार सहकारी समिति के २७६ अग्राहकों सदस्य हैं ।

इनमें हिंदुस्थान समाचार में राय वरौ वान व्याजिया व श्रीगिना भाग्याय भाषाभाषा वं विवाग म प्रजातत्र वा उज्ज्वन भविष्य धारन वान उत्गाही गमात्रसरी श्रीर पत्रार महानुभाव भी सहसारी समिति व मन्म्य है। उन्नय्याय गुज नाम है—श्री मुग्द्रमहिन धाय (पायनियर लखनऊ) श्री ए० डी० मणि (हिनया, नागपुर) श्री अनारागापान भवड (नागपुर टाइम्स) श्री मायाराम गुरजन (दशरथु रायपुर) श्री वृणचद्र भ्रप्रवान (विश्वमिन्न कलकत्ता) श्री डोरीलाल भ्रप्रवान (भ्रमर उजाना आगरा) श्री मानव चाणडा (जनगण जाधपुर) डा० भगवानदास अराडा (गण्डीव वागणमी) श्री बी० एन० नायर (मातभूमि कालीकट) इन सम्पादका के अतिरिक्त ममिति क मन्म्या म श्री प्रकाशवीर शास्त्री श्री श्यामधर मिश्र (समत् सदस्य) सठ गाविन्नाम (समत् मन्म्य) श्री अनत प्रमात् शमा (ससत् सदस्य) श्री वदप्रसाश काहरी (मिन्ना) श्री जगन्नाथचद्र ऋषि (विनासपुर) श्री आनदप्रकाश रहजा (मिन्ना) श्री जयविशन भाई हरिवत्तभनाम (अहमदाबाद) श्री प्रफुल्लचद्र वरमा (भूतपूर्व समत्सदस्य) श्री रामनारायण चौधरी (अजमेर) आदि समाजसंघी अनुभवी महानुभाव है। प्रति वष समिति की साधारण सभा की वार्षिक बैठक म समिति की प्रगति का सिहावलोकन कर नये वष के लिय मागदशन इन सब बधुभा म प्राप्त हात रहत है।

हमारी प्रतिबद्धता

हिंदुस्थान समाचार की गन २५ वर्षों की प्रगति म इतन बधुभा वा सहयाग प्राप्त हुआ है श्रीर विभिन्न कठिन परिस्थितिया म स उभरने के लिए इतने हाय आत्मीयतापूर्वक सहायनाथ आग आये है कि उनकी गिनती करना कठिन है। पचीम वर्षों के वायकान का चलचित्र ही मन चक्षु के समक्ष खिच जाता है श्रीर अद्वावनत होकर उन सब बधुभा व समक्ष हम इतन अवस्था म यह सकल्प लिये खडे है कि राष्ट्र की बहुविधि प्रगति शांति सुव्यवस्था श्रीर सीहात् क निर्माण म निष्पक्ष सत्य निर्भोक पत्रकारिता के पय पर हम आग ही बन्ते जायेंगे। भारत म पत्रकारिता का जम राष्ट्रभक्ति की नहरा के साथ हुआ है।

राजा राममाहनराय स लेकर तिलक अरविन्द रवीन्द्र गाधी तक अनक जन ननाम्ना ने पत्रकारिता की जन जागरण व प्रवल मायम के रूप म अपनाया है। सवथा महावीर प्रसात् द्विवन् गणशशकर विद्यार्थी जगन्नाथप्रसात् मिलिन् प्रतापनारायण मिश्र बाबूराव विष्णु पराडकर इद्र विद्यावाचस्पति बालकृष्ण भट्ट शिवपूजनमहाय नक्षमणनारायण गन् भगवनीप्रमात् बाजपयी माखननाथ चतुर्वेदी रामवैद्य वेनीपुरी आदि नाम पत्रकारिता व माय मीधे सम्यधित है त्री सबधी रामचद्र वमा रामचद्र शुक्ल प्रमचत् अशर गिरि धर शमा १० मम्पूर्णानिन् आदि कितन ही माहित्यकारा न भी पत्रकारिता की धारा को पुष्ट किया है। यही के मागदशक दीप स्तम्भ है जिनकी पावन म्मनि हिंदुस्थान समाचार की प्रगति म निस्वाय समाज सवा का प्ररणा बनकर हमार सामन उपस्थित है।

इन पावन विश्वासा म आग बढ़त हुए हिंदुस्थान समाचार का वह तिन भी देखना है जव हिंदुस्थान समाचार ममिति विश्व व विभिन्न देशा म सम्पक स्थापित कर भारताय भाषायी समाचारपत्रा व त्रिण विश्व समाचार का मकनन तथा प्रसारण कर सवे। सभ्य महान है प्ररणा उनात् है श्रीर अगम्य रागा वा महकाय हमारा मम्वन है। डाई दशक की प्रगति हम उन्मात्ति कर रहा है। हिंदुस्थान समाचार इसी उद्देश्य की पूर्ति म सभी उधुभा व अधिवाधिक महनाय की कामना करता है।

हिन्दुस्थान समाचार के प्रमुख कार्य केन्द्र

*अगरतला

*अकोला

*अहमदाबाद

*बम्बई

बंगलौर

*भोपाल

*बलकता

*बटव

*बण्डीगड

*ब्यालियर

*गोहाटी

गगटाक (सिक्किम)

*हैदराबाद

इंदौर

*जयपुर

*जालघर

जम्मू

काठमाण्डू (नेपाल)

*लखनऊ

*लुधियाना

मद्रास

*नई दिल्ली

*नागपुर

*पटना

पणजी

शिलांग

श्रीनगर

शिमला

त्रिबेद्रम

*दूरमुद्रक केन्द्र।

शिमला नगर को स्वच्छ सुन्दर बनाए रखने में नगर निगम को सहयोग दे

स्वच्छता—स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है और स्वच्छता ही सौंदर्य में वृद्धि करती है। शिमला पहाड़ा की रानी है तथा शिमला के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह इसके सौंदर्यवर्धन में पूर्ण सहयोग दे।

कड़ा कंकट सड़क, नाली तथा गलियों में न फेंककर नियत स्थान पर डालो। अपने घर तथा दुकानों के डाउन पाईपों को सही हालत में रखें ताकि इसका पानी सड़क तथा गलियों में न पड़े।

शिमला का प्राकृतिक सौंदर्य बनाए रखने के लिए वृक्षा को न काटें तथा सौंदर्य में वृद्धि करने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर।

निगम ने पार्कों को सुंदर बनाने के साथ साथ हिल मार्केड में मोसम में स्वयं उगान वाले फूल लगाए हैं। इनकी रक्षा का दायित्व आप पर है।

शिमला में पानी ४४०० फुट नीचे से पम्प कर तीस किलोमीटर दूर से पाइपों की सहायता से पहुँचाया जाता है अतः पानी का अप्रत्यक्ष रोकने के लिए—नला को खुला न छोड़ें आवश्यकता से अधिक पानी का प्रयोग न करें तथा टूटियाँ में खराबी धान पर तुरंत निगम को सूचित करें।

पानी या सीवरेज पाइपों के ढिंढोरे तथा फटने की सूचना तुरंत नगर निगम के जल प्रदाय विभाग को दे।

शेरसिंह

कायकारी अधिकारी

अत्तरसिंह

प्रशासक, नगर निगम शिमला

म० प्र० राज्य सहकारी विपणन सघ मर्यादित, भोपाल

* राज्य क किसानों की सेवा म विगत १७ वर्षों से समर्पित ।

** सहकारिता क क्षत म बढती हुई धार्मिक गतिविधियों क सभम निर्वाह हतु सतत प्रयत्नशील ।

— वष ब्यब १९७२-७३ मे किया गए ए सके आकडे —

- | | |
|---|--|
| १ रसायनिक खाद | २०२००० टन मूल्य ₹० १८१० कराड |
| | यह राज्य म रसायनिक खादा की कुल खपत का लगभग दो तिहाई भाग है । |
| २ मिचाई पम्प | ७,२०० मूल्य ₹० २०५ करोड |
| | पम्प फिट करने और उनकी विक्रयापारान्त सेवा के लिए अब प्रत्येक जिले म प्रशिक्षित मकेनिक हैं । |
| ३ धनाजा की खरीद | धान ५०००० टन मूल्य ₹० ३५० कराड |
| | गेहूँ ११०,००० टन मूल्य ₹० ८०० कराड |
| | बलहन एव ज्वार बाजरा १७००० टन मूल्य ₹० २१० करोड |
| * ६२५१ टन ज्वार बाजरा देश के अभावग्रस्त राज्यों अर्थात् महाराष्ट्र, गुजरात मसूर एव राजस्थान का भेजा गया । | |
| ४ प्रक्रिया इकाइया | वायशील चावल तल दान एव पशु आहार मिलें-५० निर्माणाधीन-१२ मिल |
| ५ निर्माणाधीन काम | १) कीटनाशक औषधि सयत कटनी
२) दानदार रसायनिक खाद्य सयत, भोपाल
३) ११०००० क्षमता के ११ गोदाम |
| ६ उपभोक्ताओं की सेवा | चावल दाल तल की उपभोक्ताओं का प्रचलित बाजार भावा से कम भावो पर बित्री हेतु स्वयं की दुकाना एव अन्य सहकारी मर्यादो के माध्यम से राज्य क बडे शहरो म करीब ३० बित्री केन्द्रा का संचालन । |

छोटे किसानों की आत्मनिर्भरता का बडा प्रयास

म० प्र० राज्य सहकारी विपणन सघ

रामगोपाल तिवारी ससद सदस्य
अध्यक्ष

शिवलाल बिनेन
उपाध्यक्ष

नन्दा बल्लभ लोहनी
प्रबंध संचालक

हिन्दुस्थान समाचार

को ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड क

रजत जयन्ती शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं

दो सिरोंही सेण्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि०

सिरोंही (राजस्थान) की ओर से

स्वरूपगिह
अध्यक्ष

जोगीलाल मुणोयत
व्यवस्थापक

बैंक के कार्यालय सिरोंही, स्वरूपगज, शिवगज, आवूरोड

मिराणी जिला क कृषका का धन्य व मध्यस्थानीन ऋण लिया जाता है ।

समस्त प्रकार का बचिग व्यवसाय किया जाता है ।

स्थाई धमानती पर ८% तक ब्याज लिया जाता है ।

Manufacturers & Exporters

of

**Camping & Hiking Equipment
For Outdoor Recreation**

Rucksacks ● Back Packs ● Haversacks

Side Bags ● Shoulder Bags ● Napsacks

Shopping Bags ● School Bags

Duffle Bags ● Zipper Bags

Travelling Bags

SARNA WEB EQUIPMENT MFG CO

7197 KUTAB ROAD NEW DELHI INDIA

CABLE 'SARNAWEB PHONE 516144

सुरा वे मलमन्नाना पाप्मा च मलमूच्यते ।
तस्माद् ब्राह्मणराजयो वरचय न सुरा पिबेत ॥

—मनुस्मृति ११ ६३

सुरा (शराब) अन्न का मल है। मल का पाप कहते हैं। मल मूत्र जस अभ्यय पदाय हैं वैसे ही ब्राह्मण-क्षत्रिय और वश्य आदि सुरा (शराब) रूपी मल का न पीवें क्योंकि मल मूत्र तो शूकर (सूअर) आदि पशु ही खाते हैं। मनुष्य नहीं।

पतिलाक न सा याति ब्राह्मणा या सुरा पिबेत ।

इहैव सा शुनी गधो शूकरो चोप जायते ॥

—याज्ञवल्क्य स्मृति ५ १५६

जो ब्राह्मणों स्त्री शराब पीवे वह पतिलोक को प्राप्त नहीं होती अर्थात् वह घर का नुहा बसा सकती-फिर भला वह अपने वान वच्चा को क्या शिक्षा द सकती है। वह तो इस लोक में मल खाने वाली कुतिया गिधनी तथा शूकरी हो जाती है। यही दशा शराब पीने वाले पति की भी होती है।

यक्षरक्ष पिशाचान मदय मास सुराप्राप्तवम ।

वत ब्राह्मणेन नातस्य देवातामारुत हवि ॥

—मनुस्मृति ११ १५

मद्य मास आदि ता यह राक्षस पिशाच और नीच जाडाला व भोग्य एव पय पदाय हैं। अतएव ब्राह्मण (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वश्य) को उनका सेवन नहीं करना चाहिए-क्याकि उन देवताप्रा का भाजन तो द्रव्य पदाय हैं।

पजाबी चन्द्र हलवाई कराचीवाला

प्रधान कार्यालय १८५, बालकेश्वर रोड, तीनवस्ती, लम्बई-६

ग्वालियर नगर निगम हादिक अभिनन्दन करता है

ग्वालियर के प्रमुख आकर्षण

१ ग्वालियर दुग—ग्वालियर के ऐतिहासिक किले पर राजा मानसिंह तोमर (१४८६-१५१०) द्वारा बनवाया गया मानमंदिर जो अपनी भव्यता व सुंदरता के लिए विख्यात है। इसी प्रकार ऐतिहासिक जन प्रतिमाएं सास बहू का मंदिर व तेली की साठ आदि मान मंदिर के निकट स्थित दशनीय स्थल पयटको के लिए अनुपम हैं।

२ प्रथम स्वतंत्रता सप्राण की वीर अमर सेनानी शासी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि जहा वीरांगना की अश्वाराहिणी प्रतिमा स्थापित है।

३ महान गायक तानसेन व मोहम्मद गोस के मकबरे, जहा प्रतिवप श० भा० स्तर पर संगीत समारोह आयोजित किया जाता है जिसमे देश के विख्यात संगीतज्ञ भाग लेते हैं।

४ गांधी उद्यान-राष्ट्रपिता की स्मृति को समर्पित उद्यान, जिसमे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और थियोसीफिकल लाज स्थित हैं एव महात्मा गांधी की पूण आकार की प्रतिमा स्थापित है।

५ इसी उद्यान मे, म०प्र० का एकमात्र विडियाघर, जा आकर्षक व मनमोहक देशी विदेशी वय प्राणिया से युक्त है, स्थापित है।

६ मरीमाता पर पत्थर की भूमिगत बावडी और पास मे जनमूर्तियो एव तीर्थकुंडो की आदमकद प्रतिमाएं हैं—जनियो का प्रमुख तीर्थस्थान है।

७ सावरकर सरोवर—स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की आदमकद कास्यमूर्ति जिसका निर्माण व विकास गतवप ही निगम द्वारा कराया गया है।

८ निगम सग्रहालय—सदियो पुरानी नलाकृतिया, शस्त्रा प्राचीन वस्तुमा और प्राकृतिक ऐतिहासिक महत्व के नमूना का समृद्ध सग्रह।

९ बन्दीदाता और गुरुद्वारा—ग्वालियर दुग पर स्थित मुगल काल का ऐतिहासिक गुरुद्वारा। प्रव लाखा की लागत से नई सज्जा व सुन्दरता के साथ बन रहा है।

१० जयाजीचौक—नगर का मुख्य व्यावसायिक व दशनीय केन्द्र, जहा ५ लाख लोग पुष्पा से लकर स्वण घरीदने तक व लिए एकत्रित होते हैं।

नगरपालिक निगम, ग्वालियर द्वारा प्रसारित

तार यात्री

फोन ४२२६ आसनसोल

भारतीय रेलवे यात्री सघ

(Indian Railways Passengers' Association)

H O Radhanagar

BURNPUR ASANSOL (W B)

President SRI RAMAWTAR GUTGUTIYA

सरसक

श्री चं द्रकाप्रसाद, एम पी

श्री के डी मालवीय, एम पी

भारतीय रेलवे यात्री सघ विगत पाच वर्षों ग रेलवे यात्रियो की सेवा कर रही है।

भारतीय रेलवे व विभिन्न छोटे छोट यात्री मया का चाहिए कि व इसके अन्तगत, रजिस्ट्रेशन करावें तथा यात्रियो की सुविधा व लिए एक साथ काम करें।

शुभकामनाया व साथ

श्री रामप्रयतार गुटगुटिया

अध्यक्ष

स्वाद एवं सुगन्ध संभारप्रद!



पं. देवीप्रसाद प्रयागदत्त.
 कलकत्ता. कन्नौज. कानपुर. नागपुर. हृदयनाद.

फोन	कलकत्ता	कन्नौज	कानपुर	नागपुर	हृदयनाद
	२५ २६२६	५१	५७१८५	२३७६८	५३ ५०

ग्वालियर नगर निगम हार्दिक अभिनन्दन करता है

ग्वालियर के प्रमुख आकर्षण

१ ग्वालियर दुर्ग—ग्वालियर के ऐतिहासिक किले पर राजा मानसिंह तोमर (१४८९-१५१०) द्वारा बनवाया गया मानमन्दिर जो अपनी भव्यता व सुन्दरता के लिए विख्यात है। इसी प्रकार ऐतिहासिक जैन प्रतिमाएँ सास बहू का मन्दिर व तेली की साठ प्रादि मान मन्दिर के निकट स्थित दशनीय स्थल पयटकों के लिए अनुपम हैं।

२ प्रथम स्वतंत्रता सत्राम की वीर अमर-सेनानी धासी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि जहा धीरागना की अशवारोहिणी प्रतिमा स्थापित है।

३ महान गायक तानसेन व मोहम्मद गोस के मकबरे जहा प्रतिवध प्र० भा० स्तर पर सगीत समारोह आयोजित किया जाता है, जिसमे देश के विख्यात सगीतज्ञ भाग लेते हैं।

४ गांधी उद्यान-राष्ट्रपिता की स्मृति को समर्पित उद्यान, जिसमे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और थियोसोफिकल लाज स्थित है एव महात्मा गांधी की पूण आकार की प्रतिमा स्थापित है।

५ इसी उद्यान मे, म०प्र० का एकमात्र विडियाथर, जो आन्ध्रक व मनमोहन देशी विदेशी वय प्राणिया से युक्त है, स्थापित है।

६ मरोमाता पर पत्थर की भूमिगत बावडी और पास मे जनमूर्तिया एव तीथकुडो की प्रादमकद प्रतिमाएँ हैं—जनिया का प्रमुख तीथस्थान है।

७ सावरकर सरोवर—स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की प्रादमकद कास्यमूर्ति जिसका निर्माण व विवास गतवष ही निगम द्वारा कराया गया है।

८ निगम सप्रहालय—सदियों पुरानी बलाकृतिया, शस्त्रो प्राचीन वस्तुप्रा और प्राकृतिक ऐतिहासिक महदब के नमूनो का समृद्ध सप्रह।

९ बन्दीदाता और गुरुद्वारा—ग्वालियर दुर्ग पर स्थित मुगल काल का ऐतिहासिक गुरुद्वारा। अब लाखो की लागत से नई सज्जा व सुन्दरता के साथ बन रहा है।

१० जयाजीचौक—नगर का मुख्य व्यावसायिक व दशनीय केन्द्र, जहा ५ लाख लोग पुष्पो से लेकर स्वण खरीदने तक के लिए एकत्रित होते हैं।

नगरपालिक निगम, ग्वालियर द्वारा प्रसारित

तार यात्री

फोन ४२२६ प्रासनसोल

भारतीय रेलवे यात्री सघ

(Indian Railways Passengers' Association)

H O Radhanagar

BURNPUR ASANSOL (W B)

President SRI RAMAWTAR GUTGUTIYA

सरक्षक

श्री चं द्विकाप्रसाद, एम पी

श्री के श्री मालवीय, एम पी

भारतीय रेलवे यात्री सघ विगत पाच वर्षों से रेलवे यात्रिया की सेवा कर रही है।

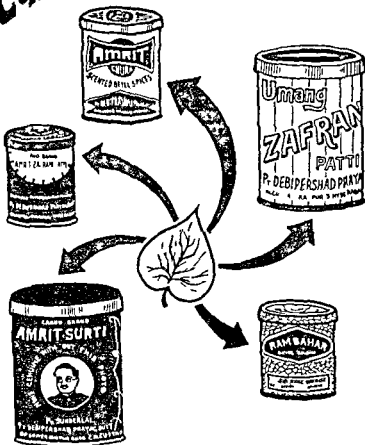
भारतीय रेलवे व विभिन्न छोटे छोटे यात्री सघा को चाहिए कि वे इसके अतगत रजिस्ट्रेशन करावें तथा यात्रिया की सुविधा के लिए एक साथ काय करें।

शमकामनाप्रो के साथ

श्री रामअवतार गुटगुटिया

अध्यक्ष

स्वाद एवं सुगन्ध संभारपूर!



पं. देवीप्रसाद प्रयागदत्त.
 कुरुक्षेत्रा. कन्नौज. कातपुर. नागपुर. हृदयनाद.

फोन	कलकत्ता	कन्नौज	कानपुर	नागपुर	हृदयनाद
	३३ २०२६	५१	५३१८५।	२३७८८	५३३५०

ग्वालियर नगर निगम हार्दिक अभिनन्दन करता है

ग्वालियर के प्रमुख आकर्षण

१ ग्वालियर दुर्ग—ग्वालियर के ऐतिहासिक किले पर राजा मानसिंह तोमर (१४८६-१५१०) द्वारा बनवाया गया मानमंदिर जो अपनी भव्यता व सुंदरता के लिए विख्यात है। इसी प्रकार ऐतिहासिक जैन प्रतिमाएँ सास बहू का मंदिर व तली की लाट आदि मानमंदिर के निकट स्थित दशनीय स्थल पयटकी के लिए प्रमुख हैं।

२ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीर भ्रमर-सेनानी झासी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि जहाँ वीरांगना की अश्वारोहिणी प्रतिमा स्थापित है।

३ महान गायक तानसेन व मोहम्मद ग़ोस के मकबरे, जहाँ प्रतिवर्ष भ्र० भा० स्तर पर संगीत समारोह आयोजित किया जाता है, जिसमें देश के विख्यात संगीतज्ञ भाग लेते हैं।

४ गांधी उद्यान—राष्ट्रपिता की स्मृति को समर्पित उद्यान जिसमें मन्दिर, मस्जिद, गुहद्वारा और थियोसीफिकल लाज स्थित है एवं महात्मा गांधी की पूण आकार की प्रतिमा स्थापित है।

५ इसी उद्यान में, म०प्र० का एकमात्र चिडियाघर, जो आकर्षक व मनमोहक देशी विदेशी वन्य प्राणियों से युक्त है स्थापित है।

६ मरीमाता पर पत्थर की भूमिगत बावडी और पास में जैनमूर्तियों एवं तीर्थकुंडों की आदमकद प्रतिमाएँ हैं—जनिया का प्रमुख तीर्थस्थान है।

७ सावरकर सरोवर—स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की आदमकद का स्मृति जिसका निर्माण व विकास गतवर्ष ही निगम द्वारा कराया गया है।

८ निगम सभ्रहालय—सदियों पुरानी कलाकृतियाँ, शस्त्रों प्राचीन वस्तुएँ और प्राकृतिक ऐतिहासिक महत्व के नमूनों का समृद्ध संग्रह।

९ बंदादाता और गुहद्वारा—ग्वालियर दुर्ग पर स्थित मुगल काल का ऐतिहासिक गुहद्वारा। अब लाखों की लागत से नई सज्जा व सुंदरता के साथ बन रहा है।

१० जयाजीचोक—नगर का मुख्य व्यावसायिक व दशनीय केंद्र, जहाँ ५ लाख लोग पुष्पा से लेकर स्वर्ण खरीदने तक के लिए एकत्रित होते हैं।

नगरपालिक निगम, ग्वालियर द्वारा प्रसारित

तार यात्री

फोन ४२२६ आसनसोल

भारतीय रेलवे यात्री सघ

(Indian Railways Passengers' Association)

H O Radhanagar

BURNPUR ASANSOL (W B)

President SRI RAMAWTAR GUTGUTIYA

सरक्षक

श्री चर्च द्रव्यप्रसाद, एम पी

श्री के बी मालवीय, एम पी

भारतीय रेलवे यात्री सघ विगत पाच वर्षों से रेलवे यात्रियों की सेवा कर रही है।

भारतीय रेलवे के विभिन्न छोटे छोटे यात्री सघों को चाहिए कि वे इसके अन्तर्गत

रजिस्ट्रेशन करावें तथा यात्रियों की सुविधा के लिए एक साथ कार्य करें।

शुभकामनाओं के साथ

श्री रामश्रवतार गुटगुटिया

अध्यक्ष

मध्यावधि निवचन

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी व मन्त्रिमण्डल की सलाह पर राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने २७ दिसम्बर १९७० को चौथी लोक सभा को ३ वर्ष और २८५ दिनों के बाद ही भंग कर दिया। लोक सभा की सामान्य कालावधि पांच वर्ष होती है। दरम्यान प्रधानमंत्री का दल कांग्रेस विभाजन के बाद नवम्बर १९६६ में अल्पमत में रह गया था। प्रथम राज्यसभा में प्रोवीपस के मामले में सत्तापटल दल की पराजय हुई थी। प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने अपनी 'धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी नीतियाँ को लागू करने के लिये' जनता की अभिप्रायना दश के २८ करोड़ मतदाताओं के समर्थन की। इन २८ करोड़ मतदाताओं में दो करोड़ मतदाता पहली बार मतदान करने वाले थे। १ से १० मार्च १९७१ तक चुनाव सम्पन्न हुए।

५१८ सीटों में से नयी कांग्रेस का ३५० सीटें मिली। यह दो तिहाई बहुमत से ४ अधिक थी। माकमवादी कम्युनिस्ट पार्टी को २५ कम्युनिस्ट पार्टी को २३, जनसंघ को २२, मगधन कांग्रेस को १६, निदलीय को १३ स्वतंत्र का ८ मसोपा का ३ और प्रसोपा को २ सीटें मिली। अरया को ५३, तनगाना प्रजामिति का १०, द्रमुक को २३, मुस्लिम लीग को ४, नातिकारी समाजवादी पार्टी और केरल कांग्रेस को ३३ क्षारखड पार्टी को २ तथा विशाल हरियाणा पार्टी, उत्कल कांग्रेस बंगला कांग्रेस अकासी दल फारवर्ड ब्लाक, भा० ना० दल, रिपब्लिकन पार्टी और पहाड़ी नेना दल को ११ सीटें मिली।

हालांकि १६५ विरोधी सदस्य जीत थे पर इनमें से ७३ के मामले नयी कांग्रेस के प्रत्याशी नहीं थे। इन ७३ में से २३ द्रमुक के, २१ (२३ में से) कम्युनिस्ट पार्टी ३ मुस्लिम लीग (४ में से) के, केरल कांग्रेस के ३ और नातिकारी समाजवादी पार्टी के २ (३ में से) थे।

निदलीय भी कम हुए

अन्य दलों की तरह निदलीय सदस्यों का भी इस बार संख्या घट गई। १९५२ में १०६ निदलीय कांग्रेस थे १९५७ में यह संख्या ७३ तथा १९६२ में ६० रह गई। भंग राज्यसभा में ३५ निदलीय थे और २५ का संयुक्त निदलीय प्रगतिशील थुप था । १३ निदलीय सदस्य हैं। यद्यपि इस बार निदलीय प्रत्याशियों की संख्या अधिक थी। अधिकतर निदलीयों को विकास के लिए शुभ लगन माना जा सकता है।

KIRLOSKAR PUMPS certainly It has travelled a long long way pushed along miles and miles of piping by KIRLOSKAR PUMPS You have it on tap just an arm s length away

Water supply that's a vital job KIRLOSKAR PUMPS are doing Day and night in scores of cities and towns



There are other jobs too pumping in irrigation drainage and industrial systems

The KIRLOSKAR range is wide from small monoblock to large vertical turbine pumps the right pump for every requirement for small big urban rural water supply systems All backed by spares before and after sales service everywhere

KIRLOSKAR PUMPS stand right up front among pumps

KIRLOSKAR BROTHERS LTD
Udyog Bhavan Tilak Road, Poona 2

IF YOUR
CHILD ASKS
WHO PUT
THE WATER
IN THE TAP,
WHAT'S
YOUR
ANSWER?

मध्यावधि निवचन

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी व मन्त्रिमण्डल की मन्त्राह पर राष्ट्रपति श्री बी० थो० गिरि न २७ दिसम्बर १९७० को चौथी लोक सभा का ३ वष और २८५ दिना के बाद ही भंग कर दिया। लोक सभा की सामान्य कानूनवधि पांच वष होती है। दरअसल प्रधानमन्त्री का दल कांग्रेस विभाजन के बाद नवम्बर १९६६ म अल्पमत म रह गया था। अत रायसभा म प्रीवीपस के मामले म सत्तारूढ दल की पराजय हुई थी। प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी ने अपनी 'धमनिरपेक्ष और समाजवादी नीतिया का लागू करने के लिये' जनान्देश की अभियाचना दश व २८ कराड मतदाताग्रा व समर्थ की। इन २८ करोड मतदाताग्रा म दस कराड मतदाना पहली बार मतदान करने वान थे। १ मे १० माच १९७१ तक चुनाव सम्पन्न हुए।

५१८ सीटा म से नयी कांग्रेस को ३५० सीटें मिली। यह दो तिहाई बहुमत से ४ अधिक थी। माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी को २५, कम्युनिस्ट पार्टी का २२ जनमध को २२ सगठन कांग्रेस को १६ निदलीय को १३ स्वतंत्र का ८ ससोपा का ३ और प्रसापा को २ सीटें मिली। अया को ५३ तलगाना प्रजाममिति का १० द्रमुक का २३, मुस्लिम लीग को ४, श्रातिकारी समाजवादी पार्टी और केरल कांग्रेस को ३३ वारखड पार्टी को २ तथा विशाल हरियाणा पार्टी, उत्तल कांग्रेस वगला कांग्रेस, अकाली दल फारवड बनाव, भा० का० दल रिपब्लिकन पार्टी और पहाडी नेता दल को ११ सीट मिली।

हालाकि १६५ विरोधी सदस्य जीत थे पर इनम म ७३ व सामत नयी कांग्रेस के प्रत्याशी नहीं थे। इन ७३ म से २३ द्रमुक व, २१ (२३ म म) कम्युनिस्ट पार्टी, ३ मुस्लिमलीग (४ म मे) के, केरल कांग्रेस के ३ और शान्तिकारी समाजवादी पार्टी के २, (३ म से) थे।

निदलीय भी कम हुए

अय दला की तरह निदलीय सन्स्था की भी कम वार मख्या घट गई। १९५२ मे १०६ निदलीय आये थे १९५७ म यह मख्या ७३ तथा १९६२ म ६० रह गई। भंग लोक-सभा म ३५ निदलीय थे और २५ का मयुक्त निदलीय प्रगतिशील ग्रुप था परन्तु अत केवल १३ निदलीय सदस्य हैं। यद्यपि इस वार निदलीय प्रत्याशिया की मख्या गन चुनाव की अपन्था अधिक थी। अधिकाश निदलीया की जमानतें जन्म हा गई। यह लावनत्र के विकास के लिए शुभ लक्षण माना जा सकता है।

७५ करोड़ रुपये व्यय

उक्त चुनाव में जितना खर्च हुआ है वह विषय पर बहुत से अनुमान लगाए जा रहे हैं लेकिन पश्चिम एंडमिनिस्ट्रेशन के एक विभाग ने यह हिमायत लगायी है कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ और उम्मीदवारों ने सातगभा के चुनाव के लिए २५७ करोड़ रुपये खर्च किये हैं। यह हिमायत हम अनुमान का सार उगायी गया है कि प्रत्येक चुनाव क्षेत्र में सभी उम्मीदवारों ने मिनकर ५ लाख रुपये खर्च किये हैं। क्योंकि ११५ चुनाव क्षेत्रों में चुनाव हुए हैं। इसलिए कुल खर्च ५१ करोड़ ७५ लाख रुपये बताया है।

लेकिन उपरोक्त विवरण २४ ७५ लाख रुपये में राज्य विधान सभा के लिए होने वाला खर्च नहीं है। उस बात का अनुमान लगाया गया है कि उड़ीसा पश्चिमा बंगाल और तमिलनाडु की तीन राज्य विधान सभाओं में चुनाव पर कम से कम १५ करोड़ रुपये और खर्च हुआ होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ और उम्मीदवारों ने सात सभा तथा तान राज्य विधान सभाओं के चुनाव पर ८० करोड़ ७५ लाख रुपये खर्च किये हैं।

परंतु सरकारी खर्च अतिरिक्त है। चुनाव आयोग के भूतों ने यह बताया है कि पोस्टिंग बूथ लगाने पत्रों का छपाई और वोट प्रणाली का एक स्थान में दूसरे स्थान तक भेजन तथा वाटर की लिफ्ट छपाने पर कुल खर्च १५ करोड़ रुपये के लगभग आया है।

इस १५ करोड़ रुपये की राशि के अतिरिक्त विभिन्न राज्यों में विशेष रूप से पश्चिमी बंगाल में बानून व्यवस्था बनाये रखने के लिये सरकार का लगभग २० करोड़ रुपये व्यय करना पड़ा है। चुनाव के बीच काम करने वाले सरकारी कर्मचारियों के वेतन और महंगाई भत्तों की कुल राशि ५ करोड़ रुपये बनता है। क्योंकि चुनाव प्रबंध के कारण सेना तथा केंद्रीय रिजर्व पुलिस का एक स्थान से दूसरे स्थान जाना पड़ा है इसलिए इस पर भी काफी खर्च हुआ है। इन सभी खर्चों का देखते हुए यही कहना उपयुक्त होगा कि केंद्रीय और राज्य सरकारों ने कुल मिलाकर ३५ करोड़ रुपये खर्च किये हैं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि मध्यावधि चुनाव में देश को ७५ करोड़ रुपये के खर्च का बोझ बहन करना पड़ा। इसमें ३५ करोड़ सरकारी खर्चों से खर्च हुआ और ४० करोड़ रुपये राजनीतिक पार्टियाँ और उम्मीदवारों ने खर्च किये हैं।

मान्यता प्राप्त

लोकसभा के मध्यावधि चुनाव में गहरी पराजय के बाद प्रमाणात् समाप्ता तथा स्वतन्त्र पार्टी की अखिल भारतीय दल की मान्यता समाप्त हो गई।

उक्त ताना दला का वध मतों का ४ प्रतिशत मत नहीं प्राप्त हो सका जो अखिल भारतीय स्तर की मान्यता के लिए आवश्यक है।

लोकसभा के साथ ही उड़ीसा तमिलनाडु व पंजाब वगैरह तीनों विधानसभाओं के चुनाव भी सम्पन्न हुए।

लोकसभा मध्यावधि चुनाव परिणाम १९७१

१९७१ म प्राप्त सीट स्थान लड़े मिले वध मता का प्रतिशत

कांग्रेस	३५०	४४०	४३.०१
कांग्रेस (सगठन)	१६	२३८	१०.४७
जनसघ	२२	१५७	७.०२
स्वतन्त्र पार्टी	८	५६	३.०६
ससोपा	३	६०	३.४३
प्रसोपा	२	६२	१.०६
कम्युनिस्ट	२३	८७	८.३७
कम्युनिस्ट (माक्स)	२५	८६	५.१६
द्र० भु० क०	२३	२४	३.८५
तलगाना प्र० म०	१०	१०	
का० सो० पा०	३		
मुस्लिम लीग	६		
भात्राद	१	१०१	२.२२
निदर्तीय व अन्य	२५		

ब्राह्म प्रदेश

कुल स्थान	४१
कुल मतदाता	२ २५ ६६ ४११
कुल मतदान	१ ३४,०० ८०४
प्रतिशत	५६.४

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लड़े	जीते
कांग्रेस (सगठन)	७ २५ ६६६	५.५	१०	—
कांग्रेस	७२ ८६ ०६६	५.४८	३७	२८
स्वतन्त्र	५ ६७ ७७७	५.०	६	—
जनसघ	० ०५ ५५६	१.६	५	—
कम्यु०	७ ७६ ०१६	६.०	११	१
कम्यु० (मा)	० ६८ ७१३	३.०	५	१
ससोपा	६० ८५३	०.४	२	—
रिपब्लिकन	३३ ७०८	०.४	६	—
तलगाना प्रजा समिति	१८ ८० ५८६	१.६०	१४	१०
तलगाना कांग्रेस	६५ ५४८	०.१	७	—
मायनर्जी और लेबर पार्टी	६० ०६८	०.१	६	—
वक्वड कनाम महामभा	६ ६०६	०.१	१	—
रामराज्य परिषद	५३६	—	१	—
निदर्तीय	१० ७३ ३६०	८.५	६३	१

अराम

कुल स्थान	१६
कुल मतदाता	६३,०७३६५
कुल मतदान	३१,७७१४३
प्रतिशत	५०.३७

दल	प्राप्त मत	कुल मता का प्रतिशत	स्थान लक्ष	जीन
काँग्रेस	१७,२६६६८	५६.६	१३	१३
काँग्रेस (संगठन)	८८,१५५	६	१०	—
स्वतंत्र	७,०३३	०.२	१	—
जनसम	७,६४६२	२.४	१	—
कम्युनिस्ट	१,८०,६७७	५.९	५	—
कम्यु (मा)	६,७७७	१.६	०	—
ससोपा	६९,२८१	१.६	५	—
प्रसोपा	१,३७,६२८	६.५	६	—
भारतपाटी हिलसीडम काँग्रेस	६०,७७२	३.०	१	१
निन्दलीय	६,६८,५६६	१.६	९	—

बिहार

कुल स्थान	५३
कुल मतदाता	३,०६,११,०६२
कुल मतदान	१,६०,६६,६१
प्रतिशत	५८.८३

दल	प्राप्त मत	कुल मता का प्रतिशत	स्थान लक्ष	जीन
काँग्रेस	५६,७७,२८३	३३.७५	६७	३६
काँग्रेस (संगठन)	१७,१४,३५७	११.५७	५४	३
स्वतंत्र	३३,३३१	०.०२	३	—
जनसम	१८,०१,७७२	१२.६०	२८	२
ससोपा	१४,१०,२५१	६.५२	२८	२
कम्युनिस्ट	१४,७७,१४६	६.६८	१७	५
कम्युनिस्ट (मा)	१,१३,३७३	०.७६	४	—
प्रसोपा	१,४२,१००	०.६६	१२	—
भाक्राद	१,३६,१००	०.६५	१३	—
झारखण्ड	१,२०,३००	०.८१	१२	१
जनता	१,३६,०६१	०.६६	४	—
निन्दलीय एव अन्य	२७,५०,६५२	१०.५६	२२८	१

૧ ગુજરાત

કુલ સ્થાન	૨૪
કુલ મતદાતા	૧,૧૫ ૩૪,૫૬૫
કુલ મતદાન	૬૮,૨૨ ૭૩૨
પ્રતિશત	૫૫ ૬

દલ	પ્રાપ્ત મત	વધ મતા વા પ્રતિશત	સ્થાન લહે	જીતે
કાંગ્રેસ	૨૭,૪૬ ૫૧૫	૪૪ ૮	૨૩	૧૧
કાંગ્રેસ (સગ)	૨૪,૩૩,૬૪૩	૩૯ ૬	૧૬	૧૧
સ્વતંત્ર	૩ ૩૪,૮૫૮	૪ ૪	૪	૨
જનમધ	૧ ૩૮,૭૬૧	૨ ૨	૫	—
પ્રમોપા	૬૭ ૮૧૮	૧ ૦	૧	—
નિરલોચ એવ ઇન્ડ	૩ ૭૮,૮૦૭	૬ ૧	૬૬	—

હરિયાણા

કુલ સ્થાન	૬
કુલ મતદાતા	૪૭ ૬૮ ૦૩૨
કુલ મતદાન	૩૦,૬૮ ૬૬૬
પ્રતિશત	૬૪ ૩

દલ	પ્રાપ્ત મત	વધ મતા વા પ્રતિશત	સ્થાન લહે	જીતે
કાંગ્રેસ	૧૫ ૦૨ ૬૨૬	૫૨ ૭૩	૬	૦
કાંગ્રેસ (સગઠન)	૩,૩૬ ૨૧૩	૧૧ ૩૭	૪	—
જનમધ	૩ ૩૪,૮૩૦	૧૧ ૨૨	૩	૧
વિશાલ હરિયાણા પાર્ટી	૨ ૭૪ ૦૬૧	૬ ૧૬	૩	૧
માનાદ	૧૬,૬૭૮	૦ ૫૬	૨	—
કમ્યુનિસ્ટ (મા૦)	૩ ૬૧૭	૦ ૧૩	૧	—
સસોપા	૮૬ ૫૧૦	૨ ૬૦	૧	—
પ્રસોપા	૫ ૬૪૨	૦ ૧૬	૨	—
પારવહ બ્લાક	—	૧૮,૭૦૨	૦ ૬૩	૨
પ્રાય સમા	—	૧૩ ૦૭૭	૦ ૪૪	૧
પ્રોગ્રેસિવ	—	૩ ૧૦૮	૦ ૧૦	૧
રિપબ્લિકન પાર્ટી	—	૧૪,૬૬૫	૦ ૪૬	૩
પ્રવાલી દલ	—	—	૧	—
નિરલોચ	—	૨,૬૬,૧૬૮	૧૦ ૦૫	૩૦

हिमाचल प्रदेश

कुल स्थान	३
कुल मतदाता	१०५३३३६
कुल मतदान	५३८६६३
प्रतिशत	६३

दल	प्राप्त मत	व्यय मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	६००००२	७६६६	३	३
कांग्रेस (सगठन)	१३६६८	०६८	०	—
जनसघ	७०५६०	१३८६	२	—
लोक राग्य पार्टी	८०६०	१५६	१	—
कम्युनिस्ट पार्टी	११२४६	०१५	१	—
स्वतन्त्र पार्टी	५७६७	१०६	१	—
निदलीय	८६५०	१६४	६	—

जम्मू-कश्मीर

कुल मतदाता	२०५३३३६
कुल मतदान	११८१०२४
प्रतिशत	५७५३

दल	प्राप्त मत	व्यय मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	६०६६०६	५४००	५	५
जनसघ	१४२७५०	१२०१	३	—
जमायते इस्लामी	१६८६७७	१५००	२	—
प्रसोपा	५३३२	००४	१	—
अकाली दल	१२६५८	१०१	२	—
अन्य दल एवं निदलीय	१८६६१३	१७००	५	१

केरल

कुल स्थान	१६
कुल मतदाता	१०२०२२७४
कुल मतदान	६५६११६७
प्रतिशत	६४४८

दल	प्राप्त मत	व्यय मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीते
कांग्रेस	१०२६६०	१६७६	७	६
कांग्रेस (सगठन)	६०८८७	१४०	४	—
स्वतन्त्र पार्टी	१४७१६	०२४	१	—
जनसघ	६१,१८७	१३४	३	—

४५६

कम्युनिस्ट	५ ६३ ७६१	६ १०	३	३
कम्युनिस्ट (मा०)	१७ ११ ४४७	२६ २१	११	२
मुस्लिम लीग	३ ६६ ७०७	५ ६३	२	२
करल काँग्रेस	५ ४२,४३१	८ ७१	३	३
रिवोल्यूशनरी मामनिस्ट पार्टी	४,१६ ७६६	६ ४४	२	२
प्रसापा	१ ६३ ७६५	७ ७१	१	—
ससापा	५७ ३८७	० ८८	२	—
निम्नलीय	१७ ०७ ७१३	१८ ६८	७८	१

मध्य प्रदेश

कुल स्थान	३७
कुल मतदाता	१ ६५ ५६,८६८
कुल मतदान	६६ ६६,८६१
प्रतिशत	४८ ०३

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
काँग्रेस	४० २४,६४६	४५ ५८	३६	२१
काँग्रेस (सगठन)	२ ०० ४०६	७ ७७	५	—
जनसंघ	२६ ६६ २३८	३७ ५७	२८	११
प्रसापा	१७ २६८	० ७२	६	—
ससापा	१ ३८ ५५०	१ ५७	५	१
कम्युनिस्ट (मा)	५ ३६७	० ०६	१	—
कम्युनिस्ट	—	—	४	—
स्वतन्त्र पार्टी	८ २६२	० ०६	१	—
अन्य	६० ८६७	० ८६	८	—
निम्नलीय	१२,३० ८४५	१३ ६४	७३	४

महाराष्ट्र

कुल स्थान	४५
कुल मतदाता	२ ३४ ५० ६५२
कुल मतदान	१ ४० ६५ ६३०
प्रतिशत	५६ ६०

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
काँग्रेस	८६ ५६ ६४८	६३ ७७	४३	४२
काँग्रेस (सगठन)	३ ७८ ७४८	७ ७६	६	—
ससापा	३ ०२,६७१	२ २३	६	—
प्रसापा	७ ३३ ७८६	१ ७२	८	१
जनसंघ	७ २७ १६७	५ ३५	१३	—
रिपब्लिकन (गायकवाड)	१ ५२ ७६४	१ १३	१	१
रिपब्लिकन (खोत्रागडे)	३ ०१ ६११	२ २२	१२	—

रिपब्लिकन (क्वाम्यल)	३२,१६२	० २४	७	—
कम्युनिस्ट पार्टी	२ ३२ ३५७	१ ७१	७	—
कम्युनिस्ट पार्टी (मा)	६७,१६६	० ४६	७	—
भाषाद	१ ७५ ७१	१ २६	६	—
फारवर्ड ताव	१ ७६ २००	१ २६	७	—
शिवसना	२ २७,४६८	१ ६७	५	—
प्राउटिस्ट	५ ६४७	० ०६	३	—
हिंदू महासभा	३१८	० ०२	१	—
महाविदभ मधप समिति	२ ६६६	० २२	१	—
निदलीय	११ ६३ ६६८	८ ५६	६१	—

कर्नाटक (मैसूर)

कुल स्थान	२७
कुल मतदाता	१ ३७ ८६ ६८३
कुल मतदान	७६ ४५ ३४७
प्रतिशत	५५

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	५४,१८ ५३६	७१ ००	२७	२७
कांग्रेस (सगठन)	१२ ५१ २५५	१६ ५०	१७	—
स्वतन्त्र पार्टी	२ ७६ ६१०	३ ६०	५	—
जनसघ	१ ४५ ५३१	१ ६०	२	—
ससापा	७६ १११	१ ०४	१	—
कम्युनिस्ट पार्टी	६ ६१४	० ०८	१	—
प्रसोपा	६७,३०१	१ २८	५	—
कम्युनिस्ट (मा)	४५ १८८	० ६०	२	—
निदलीय	३,२१,६०१	४ १०	४३	—

नागालेड

कुल मतदाता	२ ७५ ४५६
कुल मतदान	१ ४८ ०२५
प्रतिशत	६० ६

दल	प्राप्त मत	वध मतो का प्रतिशत	स्थान लडे	जीते
युनाइटेड फ्रंट भाफ नागालेड	८६ ५१४	६० ०५	१	१
नागालेड नेशनलिस्ट	५८,५११	३६ ०५	१	—

पजाब

कुल स्थान	१३
कुल मतदाता	६६ ४१, ४५४
कुल मतदान	४१ १४ ४६२
प्रतिशत	५८ ८

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीते
कांग्रेस	१८, ७३, ८६२	४५	११	१०
कांग्रेस (सगठन)	१, ८६, ८६५	४५	४	—
भवाली दल	१२ ५७ ८०२	३१	१२	१
जनसघ	१ ८१, ३१६	४४	५	—
कम्युनिस्ट	२, ५३, ८००	५६	२	२
कम्युनिस्ट (भा)	८६, ६४३	२२	३	—
ससोपा	२६, ३३१	०७	३	—
रिपब्लिकन	१८ ०६५	०४	२	—
प्रसोपा	२, ८६६	०७	१	—
निदलीय	१, ८३ ३४३	४५	३६	—

उडीसा

कुल स्थान	२०
कुल मतदाता	१ ०८, ४५, २३५
कुल मतदान	४६, ८४, ८०१
प्रतिशत	४३ २

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीते
कांग्रेस	१७ १५, ६८७	३८ ४	१६	१५
कांग्रेस (सगठन)	१ ००, ३६२	२२	६	—
स्वतल	७ १०, ०६५	१५ ७	१३	३
जनसघ	६ ६३०	० २	१	—
उत्कल कांग्रेस	१० ५३ १६४	२३ ६	२०	१
प्रसोपा	३ ०८ ३४०	६ ६	६	—
कम्युनिस्ट	१ ६४ २७३	४ ४	३	१
कम्युनिस्ट (भा)	४५ ७०३	१ ०	१	—
क्षारखण्ड	७३ ६००	१ ६	२	—
ससोपा	८१, ८४३	१ ८	२	—
जनकांग्रेस	६० १०३	१ ६	२	—
फारवड कांग्रेस	२२ ६५६	० ५	१	—
निदलीय	८७ २६४	१ ६	६	—

राजस्थान

कुल स्थान	२३
कुल मतदाता	१ ३२ ६६ ११६
कुल मतदान	१७ ५० ०३६
प्रतिशत	१४ ०६

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लब्ध	जोन
कांग्रेस	३४ ८६ ७७४	५० ३५	२२	१६
कांग्रेस (सगठन)	१ १६ ३८४	१ ६५	६	—
स्वतंत्र	१० १४ २०७	१४ ६५	८	२
जनसम	८ ५७ ००१	१२ ३८	७	१
भाजपा	२ ७० ८१३	३ ६१	७	—
समाजा	१ ७४ २७३	३ ५०	१	—
कम्युनिस्ट	० ४ २६८	० ६६	१	—
कम्युनिस्ट (मा)	४५, ५६६	० ६६	२	—
विशाल हरियाणा पार्टी	७४ ३८२	१ ०६	१	—
निदलीय	८, ५४ १२२	१२ ३३	७३	०

तमिलनाडु

कुल स्थान	३६
कुल मतदाता	२ ३० ६४, ६८५
कुल मतदान	१ ६१ ६५ ६४२
प्रतिशत	१७ ८२

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लब्ध	जोन
कांग्रेस	१६ ६५ ५६७	१२ ५१	६	६
कांग्रेस (सगठन)	४८ ५३ ५३४	३० ४३	२६	१
स्वतंत्र	१४ ७६ ६६३	६ २८	६	—
जनसम	३ ६४४	० ०२	१	—
कम्युनिस्ट	८ ६६ ३६६	५ ६३	६	४
कम्युनिस्ट (मा)	२ ६० ८३३	१ ६४	६	—
समाजा	१ ४१ ६०५	० ८६	१	—
द्रमुक	५६ २० ७७८	३५ ०५	२४	२३
फारवार्ड ब्लॉक	२ ०८ ४३१	१ ३१	१	—१
निदलीय	५ १६, ४४८	३ २४	२७	१

उत्तर प्रदेश

कुल स्थान	८५
कुल मतदाता	८५६६६२५
कुल मतदान	२१०,६०३५२
प्रतिशत	६६१५

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	६६८३२६८	४८५७	७८	७३
कांग्रेस (भगटन)	१७६५१४७	८५८	४४	१
जनमध	०५०४००७	१०२८	०७	६
स्वतंत्र	६५७८	०५०	३	—
ससोपा	८६२८६८	६१०	०५	—
कम्युनिस्ट	७६०८८६	३७०	६	४
प्रमोपा	६७,३३४	०२३	७	—
कम्युनिस्ट (मा)	०६८२१	०१६	३	—
भाषाद	२६,११११८	१०७०	६७	१
निम्नतीय एव अन्य	१६७००२०	६६०	२७०	०

पश्चिमी बंगाल

कुल स्थान	४०
कुल मतदाता	२,१७,१४७४५
कुल मतदान	१३७४२३५१
प्रतिशत	६३२६

दल	प्राप्त मत	वैध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	३५६८६६५	२७०३	३१	१३
कांग्रेस (भगटन)	६१५१४७	६६५	३४	—
कम्युनिस्ट (मा)	४४८५८०८	५४०१	३८	०
कम्युनिस्ट	१३८०८१३	१०३०	१५	०
पारवड ज्वाक	३५३१७६	२६८	१०	—
प्रमोपा	१६८११६	१२०	३	१
ससोपा	११०१८६	०८५	६	—
बंगला कांग्रेस	५१८७८१	२६८	१६	१
जनमध	१११६७५	०८५	४	—
रिवान्युशनरी मामनिस्ट पार्टी	२६६१८५	००२	५	१
मुस्लिम नाग	६०५७८	०४७	०	—
निम्नतीय एव अन्य	११६६५०४	६०६	३	१

सघ शासित क्षेत्र अडमान निकोबार

कुल मतदाता	६३ १२२
कुल मतदान	४४ ५२५
प्रतिशत	७० ५

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	२७,३७३	६१ ५	१	१
निम्नलीय	१७ १५२	३८ १	४	—

घडीगढ

कुल स्थान	१
कुल मतदाता	१ १६,५००
कुल मतदान	७३ ४१८
प्रतिशत	६३ ०२

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	४८ ३३५	६६ ८५	१	१
जनसघ	१६ ८५४	२३ ३१	१	—
निम्नलीय	७,११३	९ ८४	२	—

दादरा नगर हवेली

कुल मतदाता	३३ ०१२
कुल मतदान	२३ ०४७
प्रतिशत	६९ ६

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
कांग्रेस	८ ४८४	३९ १	१	१
कांग्रेस (सगठन)	७,१३८	३२ ९	१	—
कम्युनिस्ट (भा)	६ ०३६	२७ ७	१	—

दिल्ली

कुल स्थान	७
कुल मतदाता	२०,२०,३६६
कुल मतदान	१३,१४,४८०
प्रतिशत	६५.१

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
काग्रम	८,३५,६७३	६४.४	७	७
काप्रेस (सगठन)	२१,३८८	१.६	५	—
जतमघ	३,८३,७६०	२९.३	७	—
स्वतन्त्र	१,२७६	०.१	१	—
प्रसोपा	१,१८८	०.१	२	—
समापा	१,४०५	०.२	२	—
निन्लीय	५३,१६६	४.१	४	—

गोवा, दमन और दीव

कुल मतदाता	६३५,१६८
कुल मतदान	२३५,१०५
प्रतिशत	३७.६०

दल	प्राप्त मत	वध मता का प्रतिशत	स्थान लडे	जीत
काग्रम	५८,८७३	२५.१	२	१
यूनायटेड गाग्रम	५८,६०१	२४.६	१	१
काग्रम (सगठन)	१,७८२	०.७	१	—
निन्लीय	५०,५६६	२१.५	५	—
लाकपथ	२,८५३	१.२	२	—
महाराष्ट्र गामान्तक	५४,५६७	२३.२	१	—
म० गा० (विद्राही ग्रप)	८०,३३	३.४	१	—

विधानसभा निर्वाचन-१९७२

मान १९७२ म १६ राज्या और २१ मधु शासित क्षेत्र म विधानसभा चुनाव मधुप्र हुए। काग्रम भा १४ राज्या तथा एउ मधु शासित क्षेत्र म पूण बहुमत प्राप्त हुया। इम चुनाव म विभिन्न दला द्वारा खडे जिय गये प्रत्याशिया प्राप्त स्थान तथा पूर्व की स्थिति इम प्रकार है —

दल	प्रत्याशी	विजयी	पूर्व मन्त मे
काग्रस	२५२४	१९२७	१३८२
जनसंघ	१२३०	१०५	१७५
सगठन काग्रस	८७२	८८	२०७
कम्युनिस्ट पार्टी	३२५	११२	७६
कम्युनिस्ट (मा)	४६२	३४	०२८
सोशलिस्ट	६५३	५८	११७
स्वतंत्र	३०८	१६	५४
अन्य दल	६६७	१३४	१५५
निदलीय	८९५५	२४९	२३२
कुल	११९९८	२७२३	१५२७

आंध्र प्रदेश

कुल स्थान	२८७
कुल मतदाता	२ ६५ २९ ५६४
कुल वधु मतदान	१ ४० ६८ ०९०
कुल स्थान	२८७

दल	विजित स्थान	प्राप्त मत	कुल मतदान वा प्रतिशत
काग्रस	२१९	७४ ७८ ५४०	५२०
काग्रस सगठन	—	२६ ३२२	०२
जनसंघ	—	३ ४२ ९२४	२४
स्वतंत्र	०	३ ०५ ५७४	२१
कम्युनिस्ट	७	८ ६१ ०८१	६१
कम्युनिस्ट (मा)	१	४ २९ २८५	३१
अन्य	२	२ ६० ०७८	१८
निदलीय	१६	६५ ६४ २८६	३२३

असम

कुल स्थान	११४
कुल मतदाता	६२ ४५ ९४२
कुल मतदान (प्रतिशत)	३८ ४९ ८५३ (६१ ३)
असम मत	१ ३६ १०३

दल	विजित स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काग्रस	९५	१९ ७५ २०५	५३ १९
कम्युनिस्ट	३	२ ०९ ५५०	५ ६४

कम्युनिस्ट (मा०)	—	६६,६६७	२५६
सोशलिस्ट	४	२,१४,३४२	५७७
कांग्रेस स०	—	१७,३६७	०४७
जनसंघ	—	१०,०६१	०२७
स्वतन्त्र	१	२१,६६३	०५८
निर्दलीय	११	११,६६,४४५	३१४६
कुल	११४	३७,१३,७३०	१००००

बिहार

कुल स्थान	३१८
मतदाता	३,३१,३४,१८३
मतदान	१,७४,८३,५६१
अवधि मत	३,३२,४५४

दल	प्राप्त स्थान	वैध मतदान	प्रतिशत
कांग्रेस	१६७	५८,५३,४३२	३४.१०
कांग्रेस (स०)	३०	२२,८५,६७६	१३.६१
कम्युनिस्ट	३५	१२,०३,७०६	७.०२
कम्युनिस्ट (मा०)	—	३,७३,२६६	१.५६
सोशलिस्ट पार्टी	३३	२७,५६,३६६	१६.८
जनसंघ	२५	२०,६५,१३६	१०.०४
स्वतन्त्र	१	१,३७,४७८	०.८०
अन्य	१३	६,५७,१३४	३.८४
निर्दलीय	१४	१८,१६,६०७	१०.६०

अप्य दला म प्रमाणा के ४ हिसाब क २, झारखंड ग्रुप क ७ व्यक्ति हैं।

दिल्ली महानगर परिषद

कुल स्थान ५६

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
कांग्रेस	४४	६,८१,३३२	४८.५४
मगठन कांग्रेस	०	२७,५३३	१.६६
जनसंघ	५	५,४०,०३०	३८.७४
स्वतंत्र पार्टी	—	१,०१२	०.०७
कम्युनिस्ट	३	५६,१६७	३.८६
माशलिस्ट पार्टी	—	४,३४३	०.३१
निर्दलीय	१	७५,८८६	५.४१
मुस्लिम लीग	१	१६,४०४	१.३८

गुजरात

कुल स्थान १६८

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	१३६	३६६६५१२	५०.३६
काँग्रेस (सगठन)	१६	१६३६०११	२१.३०
जनसंघ	३	६१८,३६१	८.६६
स्वतंत्र	—	—	—
कम्युनिस्ट	१	३०,६१६	०.६३
कम्युनिस्ट (मा)	—	१५,५००	०.२३
समाजवादी	—	६६,३३१	१.००
निदलीय	८	८६८६५३	१०.२८

गुजरात के नेहरूम निर्वाचन क्षेत्र में १६ क्षेत्रों का हूए मतदान में काँग्रेस ही जीती।

गोआ

कुल स्थान ३०

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	१	४१,६१०	१३.६४
महागणतन्त्रवादी समाजवादी पार्टी	१८	११६,८५५	३८.३१
यूनाइटेड गोआस पार्टी	१०	६६,१५६	२०.५०
जनसंघ	—	१,१०३	०.३६
सोपा	—	०,५५६	१.१७
कम्युनिस्ट (मा०)	—	०,२२४	०.७२
कम्युनिस्ट	—	४२६	०.१४
अन्य	—	११,४८३	३.७६
निदलीय	१	२८,६५६	६.४०

हरियाणा

कुल स्थान	८१
मतगताभा की कुल संख्या	५०,६१,२०७
मतदान	३५,८७,०३२
अवैध मत	६२,२३४
वध मत	३६,६६,७६८

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	५२	१६,३८,६१२	४६.६०
काँग्रेस (सगठन)	१२	३,७७,४२७	१०.८०

जनसभ	२	२ २८ ७६१	६ ५५
साशनिस्ट	—	८ ६३३	० २५
कम्युनिस्ट	—	६६ ६३५	२ ००
कम्युनिस्ट (मा)	—	१२,६१७	० ३६
वि० ह० पा०	३	२ ४०,४४४	६ ६४
श्राय सभा	१	७७ ७३४	२ २२
एग० यू० सी०	—	२ ६४०	० ०७
भार० पी० आई०	—	६,८६४	० २०
भार० पी० आई० (के)	—	३ ६३६	० १०
भ्राकद	—	१ ४८६	० ०६
निदलीय	११	८ २३ ४०६	२३ ५७
कुल	८१	३४ ६४,७६८	१०० ००

हिमाचल प्रदेश

कुल स्थान	६८
मतदान	१७,१० ४६४
मतदान प्रतिशत	८३५ २२७
	५० ६

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
कांग्रेस	५३	४,२३,८२१	५० ७०
कांग्रेस (सगठन)	—	२३,१६५	२ ७०
जनसभ	५	६७ ०८५	८ ०३
कम्युनिस्ट	—	१६ ४५४	१ ६०
कम्युनिस्ट (मा)	१	६,६३८	१ १०
सोशलिस्ट	—	५८६	० ०७
निदलाय	६	२ ६६२ ६१६	३१ ००
लाकराज पार्टी	२	३१ ५६२	३ ७०
रिक्त	१	—	—

मध्य प्रदेश

कुल स्थान	२६६
मतदाता	२ ०८ ४२ १२६
मतदान	१ १३,५०,४३७

दल	प्राप्त स्थान	वध मतदान	प्रतिशत
कांग्रेस	२००	५१ ६२ ७७०	४८ १४
कांग्रेस सगठन	—	२८,३५८	० २६
कम्युनिस्ट	३	१ ११ ४६७	१ ०४
कम्युनिस्ट (मा०)	—	४,४४७	० ०४

साशलिस्ट	७	६,७०,१६८	६२६
जनसघ	४८	३०,५१,४८७	२८४६
स्वतंत्र	—	६२,५१५	०५८
अन्य	—	१८,४४४	०१८
निदलीय	१८	१६,१३,७५५	१५०५
कुल	२६६	१०७,२३,४६२	१००००

महाराष्ट्र

कुल स्थान	२७०
मतदान	२५८ ६१ ७६१
मतदान	१५६ ७१ ४०८
अवधि मत	१ ६५,७३२

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	२०२	८५ १८ ६०३	५६ ३२
पा० डब्लू० पी०	७	८ ५६ ६६१	५ ६७
जनसघ	५	६ ६४ ७२७	६ २५
मराठन काँग्रेस	—	१ ६४ ४५३	१ ०६
माया	३	६ ६३ ६६३	४ ५६
बम्बेनिम्न	०	४ १५ ८३७	२ ७५
बम्बेनिम्न (मा०)	१	१ १६ ३६६	० ७६
रिपब्लिकन	३	६ ०५ १६८	६ ००
स्वतंत्र	१	४ ७८ ८६८	१ ८४
निदलीय	*१७	२५ १२ ५०३	१६ ६१
कुल	२७०	१ ५१ २५ ७७६	१०० ००

*निर्वाचक मण्डल प्रत्यागिता म मुस्लिम लीग क भा है।

मणिपुर

कुल स्थान	६०
मतदान	६०५ ५८
मतदान	६६० ६०२ (७६ १८)
अवधि मत	६ ६८

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	१३	१ ३६ ३७	३० ०१
मराठन काँग्रेस	१	१० ७०१	० १७
बम्बेनिम्न	५	६५ ७६५	१० १६

कम्युनिस्ट (मा०)	—	२,६६१	० ६६
सोपा	३	२०,१६२	५ ३६
जनसभ	—	१,००६	० २२
मणिपुर प्रजा परिषद	१५	६१,२४८	२० २१
निदलीय	१६	१,३६,१४०	३० ८३
कुल	६०	४,५१,४२१	१०० ००

मेघालय

कुल स्थान	६०
मतदाता	४,१८,४६५
मतदान	२,१५,७५१
अवैधमत	८ ७३६

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
भाल पार्टी हिल लीडर	३०	७५,८५१	३५ ५०
कांग्रेस	६	२०,४७३	१० ००
कम्युनिस्ट	—	१,१८२	० ५०
निदलीय	१६	१,११,५०६	५४ ००
कुल	६०	२ ०८ ००८	१०० ००

कर्नाटक (मैसूर)

कुल स्थान २१६

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
कांग्रेस	१६५	४६ २८,८३५	२३ ५६
संगठन कांग्रेस	२८	२३,६० ३४४	२५ ६५
जनसभ	—	३,६६ ४७०	३ ६८
स्वतंत्र पार्टी	—	५१ ४६१	० ५६
कम्युनिस्ट	३	८८ ६७८	० ६७
कम्युनिस्ट (मा०)	—	६० ५१८	१ ०१
सोपा	३	१ ५० २५६	१ ६५
निर्दलाय	२०	११ ८० ३६८	१२ ४६
जनतापक्ष	१	१८,३६०	० १६

निदलीय सफ़्तन प्रत्याशिया म रिपब्लिकन १ द्रमुव १ और एम० ई० एस० के ३ प्रत्यागी भी सम्मिलित हैं ।

पजाय

कुल स्थान १०६

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	६०	१०८३३०८	६७.६६
भारतीय दल (गांधी)	६	१३६६६०३	१०.६७
कम्युनिस्ट	१०	११०३०	०.९१
कम्युनिस्ट (मा०)	१	१५८३०६	३.५४
जनसंघ	—	१६१५६	६.६३
स्वतंत्र पार्टी	—	१०३	०.०१
संगठन काँग्रेस	—	११६५६	०.६६
माया	—	६५५६०	०.६६
भारतीय दल (गुजरात)	—	६०३५३	०.८८
रिपब्लिकन	—	१३६०३	०.८८
निर्दलीय	३	६०६१६	१.६३
कुल	१०६	६८६३६३	१००.००

पश्चिम बंगाल

कुल स्थान २८०

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	११६	६५६१६५६	६६.५६
संगठन काँग्रेस	२	१६६०५६	१.६३
जनसंघ	—	२५१५६	०.१६
कम्युनिस्ट	३५	१३६१५३६	१३.००
कम्युनिस्ट (मा०)	१६	३६७८५००	२७.६१
सोशलिस्ट पार्टी	—	१०६०६२	०.८१
निर्दलीय	८	१२१५१६८	७.०६
फारवर्ड ब्लॉक	—	३३१२३५	५.४६
२० सोशलिस्ट पार्टी	३	२८६६८०	२.१५
गारखा लीग	२	२५८०२	०.२६

राजस्थान

कुल स्थान १८४

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	१४५	३६७६१५०	५१.०१
स्वतंत्र	११	६५८,१०२	१२.२६

जनसभ	८	६८,७३५	१२१७
काँग्रेस म०	१	१०४,४०७	१३४
सोशलिस्ट	८	१८६८५१	२४४
कम्युनिस्ट	४	१२१५६१	१५६
कम्युनिस्ट (मा०)	—	७४५१४	०६६
विशाल हरियाणा	—	५००६७	०६६
रिपब्लिकन	—	०१४७	००२
निदलीय	११	१३६६६०८	१७५७
कुल	१८४	७७६५६२०	१००००

त्रिपुरा

कुल स्थान ६०

दल	प्राप्त स्थान	प्राप्त मत	प्रतिशत
काँग्रेस	४१	२२४८०१	८४.८३
कम्युनिस्ट (मा०)	१६	२८६६६७	१७.८०
कम्युनिस्ट	१	१५२२६	३.०३
फारवर्ड ब्लाक	—	५०२७	१.०१
जनसभ	—	३४५	०.०७
जटी जुना समिति	—	६८०८	१.३६
आजाद	२	५६५८३	१.१८
कुल	६०	५०१४७३	१००.००

जम्मू-कश्मीर

कुल स्थान ७५

दल	प्राप्त स्थान
काँग्रेस	५८
जनसभ	३
जमायतए इस्लामी	५
निदलीय	९

दूर संचालन—इण्टेली संचालन

दूरभाष—१६३०, २३१३६

दी राजकोट जिला-सहकारी बैंक लि० राजकोट

महवारी भवन, डेवर भाई रोड, राजकोट

(मासिक संचालन)

	ता० ३०-६-३०	ता० ३०-६-३१
○ भरपाई पत्रा	₹ १५० ६५	₹ १८० ३८
○ वधानिक रिजर्व पत्र	₹ २० ३६	₹ २० ३६
○ अन्य विविध रिजर्व पत्र	₹ ३८ ६६	₹ ६३ ६९
○ जमा राशि	₹ ३६७ ३९	₹ ३३६ ६६
○ प्रत्येक समय व निष्पत्ति रिजर्व बैंक प्रीर गुजरात स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक का ऋण	₹ ४६० ००	₹ ३५५ ०३
○ कुल प्रत्येक	₹ ६६८ २७	₹ १६२९ ५

उत्पादन हेतु अपनी पूंजी इस बैंक में रखाए ।

माकण्डराय न० त्रिवेदी

वल्लभभाई पो० पटेल

मनेजर

चेयरमन

कुटीर उद्योग को

प्रोत्साहन दीजिए

सर्वोत्तम तन्म्यावू द्वारा तयार

शेर एव पहलवान

छाप बीडिया इस्तेमाल कीजिए

राष्ट्र निर्माण को धेला में अपनी सेवामें प्रेषित कीजिए

मोहनलाल हरगोविन्ददास

तार बीडो वाता जवाहरगंज, जबलपुर फोन ४५८७

समस्त बिहार, बंगाल व असम में सुविख्यात

श्री लक्ष्मी हैन्डलूम फैक्ट्री

पिलखुवा (मेरठ) उ० प्र०

विशेषताएँ —

- (१) उच्चकोटि के हैन्डलूम खेस चादर छपा व रंगिन लाई तथा विभिन्न साइजा में ब्रायफ व डिजाइना के शाल (स्कार्फ) के निर्माता व धाक विप्रेता ।
- (२) अपनी ही फक्ट्री में कुशल कारीगरों द्वारा बुनाई, चमकदार व पक्का रंगा की रंगाई व ब्रायफ डिजाइना में छपाई ।
- (३) ग्राहक की पूर्ण सतुष्टी व लघु उद्योग द्वारा समाज व देश की सेवा हमारा लक्ष्य है ।

—रामकुमार गोयल

नगर परिषद्, जयपुर

जयपुर नगर एव सप्तस राजस्थान की जनता एव उत्तरोत्तर विद्यासोन्मुख सतत प्रयत्नशील सभी गणमान्य निवासियों, नागरिकों एव धर्मिक पात्रों का हार्दिक अभिनन्दन करती है

एव

राजस्थान की राजधानी और भारत के पेरिस इन गुलाबी नगर जयपुर ने सौंदर्य का अनुपम योगदान रचने हेतु नगर के समस्त निवासियों के दृढभाव सहयोग की अपेक्षा करती हुई निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है।

गत तीन वर्षों से निवाचन प्रतिनिधियों के कार्यकाल में परिषद् ने जो बहुमुखी प्रगति की और काम किया है एव जो नवीन उपलब्धियाँ हासिल की हैं उनमें नागरिकों द्वारा जो महत्त्व मिला है उसके लिए परिषद् आभार प्रकट करती है और यह अपेक्षा करती है कि भविष्य में भी सर्व अधिकतम व भरपूर सहयोग नागरिकों की ओर से मिलना रहेगा।

उपलब्धियाँ

आय के आँशु	वर्ष	आय	वर्ष	आय
चुगीकर	१९९७-९८	₹ २७,६२,६६०	१९७२-७३	₹ ६६,६६,०६३
गह्वर	"	७,६८,६६७		११,३८,६६८
पिंपी स्वेज फार्म	७२-७३	१,६४,०००	१९७०-७४	२,१८,०००
मुर्गा मरग	७०-७३	३८,०००	१९७३-७४	६०,०००

आय के अतिरिक्त आय में भी वृद्धि हुई है।

प्रकाश एव जन की जा व्यवस्था तीन वर्ष पूर्व की उसमें वर्तमान परिषद् के कार्यकाल में अत्यन्त उन्नत वृद्धि हुई है एव शहर के प्रमुख बाजारों एव दीवारी के बाहर के क्षेत्रों में अनेक नए ट्यूब लाइट व मरकरी बल्ब आदि लगाए गये हैं। प्रकाश व्यवस्था के अतिरिक्त वर्तमान निर्वाचित परिषद् के कार्यकाल में जो उल्लेखनीय प्रगति हुई है उसकी एक शान्त निम्न अपेक्षा में अत्यन्त ही स्पष्ट हो जाती है।

गार्ड पोस्ट व ट्यूब लाइट	१९६६-७०	१९७२-७३
विद्युत तार	₹ ७४८	₹ १२,७००
	₹ ३१,३०१ का ₹ ६४,००० का	₹ ८०४,८६० का

शहर की बच्ची बस्तियों के सुधार हेतु भी पर्याप्त प्रयास किये गये हैं। परिषद् के अग्र्य एव समस्त पापदण्ड नागरिकों का आह्वान करते हुये यह अपेक्षा करते हैं कि -

- स्वच्छता हेतु कूड़ादानों में ही कूड़ा डालें व बच्चा को नालों पर टट्टी न बंटावें।
- परिषद् के करों का मामूली भुगतान कर परिषद् को सख्त बनावें।
- महत्त्वपूर्ण स्थानों व भवना आदि पर इन्सिडर व पोस्टर नहीं चिपकावें।

जी० डी० भारद्वाज
साधक

राधाभोहनलाल
साधक

खनिज उद्योग के माध्यम से
राष्ट्रीय सम्पदा - वृद्धि की साधना
में सलग्न

सैसर्स बनारसीदास भनोत
एण्ड सन्ज

मुख्य कार्यालय
भनोत हाऊस
गोरसपुर, जवेलपुर (म० प्र०)
(दूरभाष २-५)

उप कार्यालय
किरदुल (बैलाडिल
जिला बस्तर (म० प्र०)

परिशिष्ट

केन्द्रीय मन्त्रिमंडल

१ श्रीमती इन्दिरा गांधी	प्रधानमन्त्री
२ श्री पद्मसूदन शर्मा	कृषि एवं खाद्य
३ श्री यशवन्तराव बलवन्तराव चव्हाण	वित्त
४ श्री जगजीवनराम	रक्षा
५ श्री स्वर्णमिह	विदेश
६ श्री टी० ए० प	भारी उद्योग
७ डा० कर्णमिह	स्वाम्थ्य एवं परिवार नियोजन
८ श्री राजवहादुर	पर्यटन एवं नागर विमानन
९ श्री व० ब्रह्मानंद रट्टी	संचार
१० श्री हरि रामचंद्र गाखले	विधि विधायक एवं कम्पनी काय
११ श्री चि० सुब्रह्मण्यम	औद्योगिक विकास
१२ श्री उमाशंकर दीक्षित	गृह
१३ श्री दुर्गाप्रसाद धर	याचना
१४ श्री ललितनारायण मिश्र	रेल
१५ श्री के० रघुनाथ	समन्वय मामल
१६ श्री भाना पासवान शास्त्री	निर्माण तथा आवास
१७ श्री देवकान्त बरुआ	पर्यटन तथा रसायन
१८ श्री कमलापति सिपाठी	परिवहन तथा जहाजरानी
१९ श्री केशवदेव मानवीर	इस्पात तथा खान

राज्य मंत्री

१ श्री० एम० नूतन हमन	शिक्षा तथा समाज कल्याण
२ डा० मरोजिनी महिपा	पर्यटन एवं नागर विमानन
३ श्री० र० व० खाडिलकर	पूर्ति एवं पुनर्वास
४ श्री० वी० रघुनाथ रट्टी	श्रम
५ इन्द्रकुमार गुजरान	सूचना एवं प्रसारण
६ श्री० शेरसिंह	संचार
७ श्री० नोतिराजमिह चौधरी	विधि विधायक एवं कम्पनी काय
८ श्री० श्रीम महता	समन्वय काय तथा आवास

६ श्री कर्मवीर मणिः	एतन्मया कर्मिणः विभक्त
१० श्री सुतन्त्र नमः	विद्वान् कर्म
११ श्री लघुवीर मणिः	एतन्मया कर्मिणः विभक्त
१२ श्री सुतन्त्र नमः	विद्वान् कर्म
१३ श्री विद्वान्मणिः	एतन्मया कर्मिणः विभक्त
१४ श्री ६।११।१० श्री मणिः	कर्मिणः
१५ श्री कर्मवीर मणिः	कर्मिणः
१६ श्री कर्मवीर मणिः	कर्मिणः
१७ श्री कर्मवीर मणिः	कर्मिणः
१८ श्री कर्मवीर मणिः	कर्मिणः
१९ श्री कर्मवीर मणिः	कर्मिणः

उप मन्त्रो

१ श्री कर्मवीर मणिः	स्वाम्य्य धोर परिवार विद्वान्
२ श्री जगन्नाथ मणिः	मन्त्र
३ श्री मातृमणिः	मन्त्र
४ श्री गिरीश्वरमणिः	गिरीश्वर धोर विद्वान्
५ श्री वा० मन्त्र	मन्त्र
६ श्री कर्मवीर मणिः	मन्त्र
७ श्री कर्मवीर मणिः	विद्वान् धोर परिवार मन्त्र
८ श्री कर्मवीर मणिः	मन्त्र
९ श्री कर्मवीर मणिः	धर्म
१० श्री कर्मवीर मणिः	भारती उद्योग
११ श्री धर्मवीर मणिः	गुरुता धोर प्रणयण
१२ श्री ए० मा० मन्त्र	वाणिज्य
१३ श्रीमता सुशांता राहता	वित्त
१४ श्री ए० ए० मा० मन्त्र	गुरु
१५ श्री वाडाजी वमणा	स्वाम्य्य परिवार विद्वान्
१६ श्री जियाउरहमान मन्त्र	धोद्योगिक विद्वान्
१७ श्री प्रणवकुमार मुन्त्र	जहाजराती एव परिवार
१८ श्री अरविन्द नमः	शिवा तथा मन्त्र
१९ श्री जानकी वन्धन मन्त्र	रत्ना
२० श्री सुखदव प्रमो	इस्पात तथा धातु
२१ श्री जी० वक्त्रस्वामी	पूति तथा पुतर्वाग
२२ श्री सुबाधवद्र हम्ना	इस्पात धोर धान



लोकसभा

अध्यक्ष—श्री गुरवयलसिंह दिल्ली

उपाध्यक्ष—श्री जी० जी० स्वल

सदस्य		२६	, क० काडाडाराम रड्डा	(का०)	
प्राध		२७	पी० वेंकट मुवय्या		
१	श्री बी० राजगापानराव	(का०)	२८	श्री एम० भीष्मदव	,
२	विन्कि मल्यनारायण	"	२९	जी० रामश्वरराव	
३	, क० नारायणराव	,	३०	टा० जी० एम० मनकाटे	
४	पी० बी० जी० राजू		३१	श्री एम० एम० हाशिम	
५	श्रीमता बी० राधाबाई आनंदराव		३२	जी० वेंकटस्वामी	
६	श्री एम० आर० ए० एम०		३३	, मलिकानुन	
	अप्याना नामडू	,	३४	एम० रामगापाल रड्डा	
७	एम० एम० मजीब राव		३५	पी० गंगा रड्डा	
८	एम० बी० पी० बी०		३६	तुनसीराम	
	पट्टाभिरामाराव		३७	एम० मल्यनारायण राव	(नि०)
९	बी० एम० मूति	,	३८	एस० बी० गिरि	
१०	एम० टी० राजू	,	३९	श्रीमती टा० लम्भाकान्तम्मा	(का)
११	क० मूयनारायण		४०	श्री के० रामकृष्ण रड्डा	
१२	एम० अनवीनीडू		४१	बी० नरसिंह रड्डा	(कम्प्यु० मा०)
१३	डा० क० एन० राव		असम		
१४	एम० नागेश्वरराव		४२	रिक्त	(का०)
१५	पी० अनवीनीडू प्रसाद राव		४३	श्री निहार रजन तमरर	
१६	क० रघुरमया	,	४४	वीरग एगती	
१७	एम० सुदसनम	"	४५	माट्टुल हक चौधरी	"
१८	पी० वकट रड्डा		४६	, डी० वासुमनारी	"
१९	डी० कामाक्षया	"	४७	फखरुद्दीनअली अहमद	,
२०	टी० बालकृष्णया	,	४८	लिनश गाम्बामी	"
२१	, पा० नरसिंह रड्डा	,	४९	, घरनीघर दाम	,
२२	पी० पायमारथा	"	५०	, कमनाप्रसाद अग्रवाल	
२३	वा० श्वर रड्डा	(कम्प्यु०)	५१	नानाधर नाटावा	,
२४	पा० बय्यापा रड्डा	(का०)	५२	, वेदव्रत बग्गा	,
२५	, पा० एटनी रड्डा	,	५३	, तफ्न गाथाई	"

२५७	डा० वी० के० आर० बी० राव (का०)	२६०	गिरधर गमागा	,
२५८	श्री काडाजी बासप्पा	२६१	खगपति प्रधानी	
२५९	क० लक्ष्मणा	२६२	श्री पी० के० देव	(स्वतन्त्र)
२६०	क० भलना	२६३	बरगी नायक	
२६१	जी० बाई० कृष्णन	२६४	राज राजमिह देव	
२६२	एम० वी० कृष्णप्पा	२६५	बनमाली बाबू	(का०)
२६३	के० हनुमन्तया	२६६	गदाधर माझी	,
२६४	सी० के० जफर शरीफ	२६७	कुमार मायी	
२६५	क० चिक्कालिगिहा	२६८	देवेद्र सतपथी	
२६६	एम० एम० सिद्धया	२६९	प्रताप गगादेव बडाकुमार	
२६७	तुलसीदास दासप्पा	पञ्चाव		
२६८	के० क० शेटी	३००	श्री गुरदाम सिंह बादल (शकाली दल)	
२६९	रगनाथ शिनाथ	३०१	माहि दरमिह गिल	(का०)
२७०	एन० शिवप्पा	३०२	गुरदयालमिह दिल्ली	(अध्यक्ष)
२७०	एन० शिवप्पा	३०३	रघुनदनलाल भाटिया	(का०)
२७१	डी० वी० चद्रे गावडा	३०४	प्रवाधचद्र	
२७२	टी० वी० चद्रशेखरप्पा	३०५	दरवारमिह	
२७३	बी० वी० नाडक	३०६	स्वर्णसिह	
२७४	एफ० एच० माहमिन	३०७	साधूराम	
२७५	डा० सरोजिनी महिपी	३०८	देव द्रसिह गरचा	
२७६	श्री ए० क० कोटरा शेटी	३०९	बूटासिह	
२७७	बी० शकरानंद	३१०	सतपाल कपूर	"
२७८	एम० वी० पाटिन	३११	रिक्त	(कम्यु०)
२७९	बी० १० चौधरी	३१२	भानमिह भीरा	(कम्यु०)
उडीसा		राजस्थान		
२८०	श्री मी० एम विहा (नि०)	३१३	श्री पनालान वास्पाल	(का०)
२८१	श्यामसुंदर महापात्र (का)	३१४	महाराजा कर्णामिह	(निन्वीय)
२८२	अजुन सटी	३१५	शिवनार्यामिह	(का०)
२८३	अनादि चरनदाम	३१६	श्रीकृष्ण मोनी	
२८४	सुरद्रनाथ महन्ती (उत्कल का०)	३१७	श्रीमती गायत्री देवी	(स्व०)
२८५	जानकी बल्लभ पटनायक (का०)	३१८	श्री नवलकिशोर शर्मा	(का०)
२८६	बनमाली पटनायक	३१९	डा० हरिप्रसाद	
२८७	चितामणि पाणिग्रही	३२०	श्री राजबहादुर	
२८८	दुतीकृष्ण पण्डा (कम्यु०)	३२१	जगनाथ पहाडिया	
२८९	आर० जगनाथ राव (का०)	३२२	छट्टनलाल	
		३२३	जगश्वरनाथ भागव	

३६२ ,	किंदरलान	४२८ ,	अजीज इमाम
३६३ श्रीमती शीला कौन	"	४२९	विश्वनाथप्रताप सिंह
३६४ गगादेवी	,	४३० ,,	हेमवतीनंदन बहुगुणा
३६५ जिया-उर रहमान असारी	(का०)	४३१ श्री छोटेलाल	(का०)
३६६ श्रीमती इंदिरा गांधी	,	४३२ ,,	सन्तवक्म मिह
३६७ श्री लिनेशसिंह	,	४३३ ,	रामरतन शर्मा (जनसघ)
३६८ विद्याधर बाजपयी	"	४३४ ,	स्वामी ब्रह्मानन्द (का०)
३६९ ,, कदारनार्थसिंह	,	४३५	गाविंदराम रिचार्डिया
४०० रामजीराम	"	४३६	श्री० रामसेवक
४०१ , रामकृष्ण मिहा	"	४३७ ,,	तुलाराम
४०२ ,, वैजनाथ कुराल		४३८	श्रीमती सुशीला राहतगी
४०३ ,, रघुप्रताप सिंह	,	४३९	श्री एस० एम० बनर्जी (कम्यु०)
४०४ श्रीमती शकुन्तला नायर	(जनसघ)	४४० ,	शंकर तिवारी (का०)
४०५ श्री बदलूराम शुकल	(का०)	४४१ ,	एम० एन० मिश्र
४०६ , चंद्रभाल मणि तिवारी	"	४४२ ,	अवधेशचंद्रसिंह
४०७ , धानदसिंह	,	४४३ ,	महारजसिंह यादव
४०८ , अनन्तप्रसाद धूमिया	,	४४४ ,	महादीपकसिंह शाक्य (जनसघ)
४०९ केशवदेव मालवीय	,	४४५ ,	रोहनलाल चतुर्वेदी (का०)
४१० , कृष्णचंद पांडे		४४६ ,	छत्रपति भ्रम्वेश
४११ राममूरत प्रसाद		४४७	सेठ अचलसिंह
४१२ नरसिंहनारायण पाण्डे	,	४४८	चकलेश्वरसिंह
४१३ शिखनलान मकमेना	(निदलीय)	४४९	चंद्रपान मैलानी
४१४ गैदासिंह	(का०)	४५० ,	शिवकुमार शास्त्री (भा०शा०२०)
४१५ , विश्वनाथराय		४५१	हरिसिंह बाल्मीकि (का०)
४१६ तारकेश्वर पाण्डे		४५२	सुरद्रपाल सिंह
४१७ चंद्रिकाप्रसाद	,	४५३ ,	बुद्धप्रिय मौय
४१८ क्षारगणेशराय	(कम्यु०)	४५४	शाहनवाज खा
४१९ चंद्रजीन यादव	(का०)	४५५ ,	रामचंद्र विकल
४२० रामधन राम	,	४५६	विजयपालसिंह (कम्यु०)
४२१ नागेश्वर द्विवेदी		४५७	शफकतजम (का०)
४२२ राजदेव सिंह		४५८	सुंदरलाल
४२३ , शम्भूनाथ		४५९	मुन्कराज मनी
४२४ मरजू पाण्डे	(कम्यु०)		पश्चिम गंगाल
४२५ सुधाकर पाण्डे	(का०)	४६० ,,	विनय कृष्णराम चौधरी (का०)
४२६ राजाराम शास्त्री		४६१	तुना उराव
४२७ ,, रामस्वरूप		४६२ ,	रत्नरान ब्राह्मण (कम्यु० मा०)

४६३	श्रीमती माया राय	(का०)	दिल्ली	
४६४	राजेन्द्रनाथ यमन		५०१	श्रीमती मुकुन बनर्जी (का०)
४६५	त्रिंश जारणार	(कम्यु० मा०)	५०२	श्री गणि भूषण "
४६६	श्री हाजी लुतफन हक	(का०)	५०३	चौ० त्रिलीपसिंह
४६७	मौ० खुदा बरुश		५०४	श्री हरिहरपुण्डानन भगन
४६८	" त्रिदिव चौधरी	(त्रा० सा० पा०)	५०५	श्रीमती सुभद्रा जाणा ,
४६९	रेणुपाद दास	(कम्यु० मा०)	५०६	श्री भ्रमरनाथ चावला "
४७०	श्रीमती विभा घोष	,	५०७	टी० सोहनलाल "
४७१	श्री रेनेननाथ सन	(कम्यु०)	दिल्ली को छोडकर अन्य केन्द्र शासित क्षेत्र	
४७२	ए० के० एम० इशाक	(का०)	अण्डमान निकोबार	
४७३	शक्ति सरकार		५०८	श्री के० आर० गणश (का०)
४७४	प्रा० माधुय हलदर	(कम्यु० मा०)	दादरा नागर हवेली	
४७५	श्री ज्यातिमय बसु		५०९	श्री रामभाई रावजीभाई पटन ,
४७६	इन्द्रजीत गुप्ता	(कम्यु०)	लक्ष्यदीव व मिनिकाय	
४७७	मोहम्मद इस्माइल	(कम्यु० मा०)	५१०	श्री पी० एम० सर्द " (निर्विवाह निर्वाचित)
४७८	अशोककुमार सेन	(का०)	मणिपुर	
४७९	हीरेन मुखर्जी	(कम्यु०)	५११	श्री एन० ताम्बोनिहू (का०)
४८०	प्रियरजनदास मुशी	(का०)	५१२	श्री पाम्रोकाई हाम्रोकिप
४८१	ममर मुखर्जी	(कम्यु० मा०)	त्रिपुरा	
४८२	श्याम प्रसन्न भट्टाचाय		५१३	श्री दशरथ देव वमन (कम्यु० मा०)
४८३	दिनेन भट्टाचाय		५१४	वीरन दत्त
४८४	विजय कृष्ण मोटक		चण्डीगढ़	
४८५	मनोरजन हाजरा		५१५	श्री भ्रमरनाथ विद्यालकार (का०)
४८६	जगदीश भट्टाचाय		पाण्डीचेरी	
४८७	मतीशचन्द्र मामत	(का०)	५१६	रिवन
४८८	समर गुहा	(सोपा)	गोवा	
४८९	मुवाधचन्द्र हमदा	(का०)	५१७	श्री एरासभा मिक्वेरा (सयुक्त गोमन)
४९०	अमियकुमार किरू		५१८	पुरुपोत्तम काकोडकर (का०)
४९१	देवद्रनाथ महतो		अरुणाचल	
४९२	शंकर नारायण मिह देव		५१९	श्री सी० सी० गोहेन (का०)
४९३	अजितकुमार साहा	(कम्यु० मा०)	मिजोरम	
४९४	कृष्णचन्द्र हनदर		५२०	श्री सगनियन (नि०)
४९५	राविन सेन	,	मेघालय	
४९६	सामनाथ चर्जी		५२१	श्री जी० जा० स्वल (नि०)
४९७	मराज मुखर्जी		५२२	ब० मारक (नि०)
४९८	मरनीश रे		एगलो इडियन (राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत)	
४९९	गंगाधर साहा		५२३	श्री फक अथोनी
नागालड			५२४	श्रीमती मरजारी गाडने
५००	श्री ए० कवीचन्ना	(म० भावा नागालड)		

राज्य सभा

सभापति श्री गोपालस्वरूप पाठक
उपसभापति, श्री गौडे मुराहरी

क्र.सं.	नाम	राज्य	क्र.सं.	नाम	राज्य
१	श्री जनाघन रेड्डी	(का०)	२६	श्री सूरज प्रमान	(कम्पु०)
२	ए० एम० चौधरी	(नि०)	२७	श्रीमती अजीजा अमाम	(का०)
३	नुथालापति जासप	(का०)	२८	श्री ललितेश्वर प्रमाद सिंह	(का०)
४	पापी रेड्डी	(नि०)	२९	वि. देश्वरी प्रमाद सिंह	
५	वी० बी० राजू	(का०)	३०	गुणानन्द ठाकुर	"
६	कोटा पुनया	,	३१	श्यामलाल गुप्त	(म० का०)
७	वैष्णव मत्यानारायण		३२	भूपद्रनारायण मण्डल	(सा०)
८	एम० आनन्दम्		३३	महामोदाम	(का०)
९	कासिम अली आबिद	,	३४	योगेन्द्र शर्मा	(कम्पु०)
१०	चन्द्रमौली जगरलामुडा	(म्व०)	३५	शिशिर कुमार	(सा०)
११	गड्डम नारायण रेड्डी	(का०)	३६	धर्मचन्द्र जन	(का०)
१२	एम० श्रीनिवास रेड्डी	,	३७	जगदम्बीप्रमान यादव	(जनमघ)
१३	के० एल० एन० प्रमाद		३८	भयाराम मुडा	(का०)
१४	श्रीमती रत्नाबाई श्रीनिवासराम		३९	श्रीमती जहानारा जयपालसिंह	,
१५	कट्टरगड्ड श्रीनिवासराम	(नि०)	४०	श्री भालाप्रमाद	(कम्पु०)
१६	क० वी० रघुनाथ रेड्डी	(का०)	४१	भोलापासवान शास्त्री	(का०)
१७	एम० आर० कृष्ण		४२	सीताराम कमरी	
१८	सत्य नारायणप्पा		४३	राजेन्द्र कुमार पाट्टार	(नि०)
१९	श्री नपतिरजन चौधरी	(का०)	४४	सीताराम सिंह	(सा०)
२०	विजय चन्द्र भगवती		४५	अवधेश्वर प्रमान सिन्हा	(का०)
२१	एन० सी० बुरगाहेन		४६	श्रीमती प्रतिभा सिंह	,
२२	गोलप बारबोरा	(सा०)	४७	श्री कमलनाथ झा	
२३	विपिनपालदाम	(का०)	गुजरात		
२४	एम.ती.सिंह एम० सायमा	(का०)	४८	श्री योगेन्द्र मक्वाना	(का०)
२५	देववान्त बरुवा		४९	श्रीमती सुमित्रा गांधी कुलकर्णी	
			५०	श्री डी० क० पटल	(जनमघ)

५१ श्रीमती कुमुदबेन मणिशकरजाशी (का०)	८२	५० भवानीप्रसाद तिवारी	"
५२ श्री हिम्मतरसिंह (का०)	८३	श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी	"
५३ यू० एन० महीदा	"	८४ श्री नारायणप्रसाद चौधरी	"
५४ इब्राहिम भाई वासमभाई कालनिदा	८५	" महेद्र बहादुरसिंह	"
५५ जयमुखलाल हाथी (का०)	८६	" बलरामदास	,
५६ , एच० एम० त्रिवेदी	,	८७ विजयभूषण देवशरण (जनसभ)	
५७ त्रिभुवनदास किसिभाईपटेल (स०का०)	८८	एन० के० शैजबलकर	
५८ मनुभाई शाह (का०)	८९	, रामसहाय (स० का०)	
हरियाणा		९० श्रीमती श्यामकुमारी देवी (का०)	
५९ श्री देवदत्त पुरी (का०)	९१	श्री चन्द्रपाणी शुक्ला	"
६० , रणवीरसिंह	९२	सवाईसिंह सिसौदिया	"
६१ , प० भगवतदयान शर्मा (म० का०)	९३	शकरलाल तिवारी	"
६२ कृष्णवान्त (का०)	९४	नन्दकिशोर भट्ट	"
६३ सुलतानसिंह	९५	वीरेद्रकुमार सखलेचा (जनसभ)	
हिमाचल प्रदेश		महाराष्ट्र	
६४ श्री रोशनलाल (का०)	९६	श्री नारायण गणेश गारे (सो०)	
६५ जगनाथ भारद्वाज	९७	डा० कु० सरोजनी कृष्णराव	
६६ श्रीमती सत्यवती डाग		बबर (का०)	
जम्मू-कश्मीर		९८ श्री विदेश तुकाराम कुलकर्णी	
६७ श्री भाम महता (का०)	९९	बाबूभाई एम० चिनाव (नि०)	
६८ दुर्गाप्रसाद धर	१००	कु० मरुज पुरपातम खापडें (का०)	
६९ सय्यद हुसन	१०१	श्री लक्ष्मण गापाल देशमुख	
७० तीरथराम धमना	१०२	सिवन्तर घसी चान्द	
केरल		१०३ विठ्ठल गाडगिल	
७१ श्री हामिद घनी शमन (मु० लीग)	१०४	एन० एच० कुभारे (रि०)	
७२ पा० के० राजायन (मा० कम्म्यु०)	१०५	अरविन्द गणेश कुलकर्णी (का०)	
७३ नारायण क० कृष्णन (कम्म्यु०)	१०६	पी० एम० पाटिल	
७४ क० पी० मुबद्राष्य मनन (मा० कम्म्यु०)	१०७	श्रीमती मुशीता शंकर	
७५ जा० गापीनाथन नायर (धार एम पी)		शान्तिशंकर (का०)	
७६ डा० बा० ए० मय्य माहम्म (का०)	१०८	श्री गूनायराव रघुनायराव	
७७ डा० क० मय्य कुरियन (मा० कम्म्यु०)		पाटिल (का०)	
७८ श्री क० चन्द्रगुप्तरन (मा०)	१०९	शंकरराव बाजारवा बाल	,
७९ एम० कुमारन् (कम्म्यु०)	११०	जयन्त श्रीधर तिवक	,
माध्य प्रदेश		१११ , थानिकाम गणेश मरुमाई (कम्म्यु०)	
८० श्री एम० मा० घाष (जनसभ)	११२	श्री डा० वाई० पवार (भात्रा)	
८१- मय्य महम्म (का०)	११३	वि० रा० पागारर (का०)	

११४ डा० एम० आर० व्याम (का०)	१४१ ,, रतनलाल जन (जनसघ)
मणिपुर	१४२ ,, भूपिंदर सिंह (प्रकाली)
११५ श्री सलाम ताम्बी (एम० पी० पी०)	१४३ ,, सरदार गुरचरनमिह टाहरा (प्रकाली)
मेघालय	१४४ श्रीमती सोतादेवी (का०)
११६ श्री शावालेस बे० शिल्ना (नि०)	१४५ श्री इंदरकुमार गुजराल ,
कर्नाटक	१४६ ,, गुरमुखसिंह मुसाफिर
११७ श्री धीरेन्द्र पाटिल (म० काप्रेस)	राजस्थान
११८ मलप्पा लिंगप्पा भाल्मर (का०)	१४७ श्री महेन्द्रकुमार मोहता (स्व०)
११९ डा० व० नागप्पा भल्वा (म० का०)	१४८ श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूडावत (का०)
१२० श्री भुल्वा गोविंद रट्टी (का०)	१४९ श्री जगदीशप्रसाद मायुर (जनसघ)
१२१ , पाटिल पुत्तपा (स० का०)	१५० जमनालाल बेरवा (का०)
१२२ , टी० ए० प (का०)	१५१ श्रीमती नारायणी देवा माणवनाल
१२३ बी० टी० केम्पराज ,	वमा (का०)
१२४ यू० बे० लक्ष्मण गोडा (नि०)	१५२ श्री माहम्मद उस्मान भला
१२५ मकसूद अलीखा (का०)	१५३ रामनिवास मिर्धा
१२६ , व० एम० मल्ले गोडा (नि०)	१५४ कुभाराम श्राय (नि०)
१२७ बी० पी० नागराजा मुधि ,	१५५ , बालकृष्ण कौल (नि०)
१२८ एच० एम० नरसिया (का०)	१५६ ,, गणेशलाल माली (का०)
मागालय	तमिलनाडु
१२९ श्री मेल्हपुरा बेरो (का०)	१५७ श्री ए० के० रफाये (मुस्लिम लीग)
उड़ीसा	१५८ , टी० के० श्रीनिवासन (द्रमुक्)
१३० श्री ब्रह्मानंद पंडा (का०)	१५९ व० ए० कृष्णास्वामी (द्रमुक्)
१३१ विनय कुमार महन्ती (का०)	१६० , काची कल्याणसुन्दरम
१३२ चतन्यप्रसाद माझी	१६१ जी० ए० अर्पण ,
१३३ धीरजेश्वरी देव (स्व०)	१६२ एम० कमलनाथन ,,
१३४ के० पी० मिह्तेव (स्व०)	१६३ एम० रुचनाम्बामी (स्व०)
१३५ कृष्णचन्द्र पंडा (स्व०)	१६४ एम० एम० मारीस्वामी (द्रमुक्)
१३६ लोकनाथ मिश्र (स्व०)	१६५ एम० आर० बकटरमन
१३७ सुंदरमणी पटेल (स्व०)	(मा० कम्यु०)
१३८ श्रीमती सरस्वती प्रधान (काप्रम)	१६६ ,, एम० सी० वालन (अन्ना द्रमुक्)
१३९ , देवानंद शमात (का०)	१६७ एम० एम० राजेन्द्रन (द्रमुक्)
पंजाब	१६८ , टी० बी० आनन्दन (स० का०)
१४० श्री मोहनसिंह (का०)	१६९ एम० एम० अब्दुलकादर (द्रमुक्)
	१७० , बी० बी० स्वामीनाथन ,
	१७१ ए० व० ए० अब्दुल समद
	(मुस्लिम लीग)

१७२ , के० एस० रामास्वामी (का०)
 १७३ , विल्डर्ड विलन (द्रमुव)
 १७४ एम० ए० खाजा माहिदीन
 (मुस्लिम गीग)

२०६ माहनीर प्रगाल भुवन (का०)
 २०७ डर मिह
 २०८ कमनापति त्रिपाठी
 २०९ श्यामधर मिथ (म० का०)

त्रिपुरा

१७५ डा० त्रिगुण सन (का०)
 उत्तर प्रदेश
 १७६ श्री बनारसी दाम (म० का०)
 १७७ दत्तापन्त टगडी (जनसघ)
 १७८ गणेशलाल चौधरी (स० का०)
 १७९ सुखदेव प्रसाद (का०)
 १८० अजितप्रसाद जन (का०)
 १८१ चन्द्रदत्त पाण्डे (स० का०)
 १८२ पीताम्बरदास (जनसघ)
 १८३ यशपाल कपूर (का०)
 १८४ नवलकिशोर (स० का०)
 १८५ महावीर त्यागी (स० का०)
 १८६ हृषदेव मालवीय (का०)
 १८७ प्रो० एस० नूरन हसन (का०)
 १८८ श्री त्रिलोकीसिंह
 १८९ प्रेममनाहर (जनसघ)
 १९० आनन्दनारायण मुल्ता (का०)
 १९१ सीताराम जयपुरिया (नि०)
 १९२ मोहनसिंह आवराय (भाकाद)
 १९३ नागश्वर प्रसाद शाही (का०)
 १९४ कल्याणचन्द्र (का०)
 १९५ त्रिभुवननारायण मिह (म० का०)
 १९६ उमाशकर दीक्षित (का०)
 १९७ चन्द्रशेखर
 १९८ सठ पृथ्वीनाथ (भाकाद)
 १९९ मारुमिह वर्मा (जनसघ)
 २०० डा० बी० बी० मिह (का०)
 २०१ डा० जे० ए० अहमद (कम्प्यू०)
 २०२ श्री गोडे मुराहरि (नि०)
 २०३ धामप्रकाश त्यागी (जनसघ)
 २०४ मौलाना अमर मदन (का०)
 २०५ , श्यामनाल यादव (भाकाद)

प० बंगाल

२१० श्री शशाङ्कशर्मा सायल (मा० कम्प्यू०)
 २११ गुरुद मन्जि चौधरी (नि०)
 २१२ सरदार अमजन्तली (का०)
 २१३ डा० रजतकुमार चक्रवर्ती
 २१४ श्री कृष्णबहादुर चेत्री
 २१५ द्विजेन्द्रलाल सन गुप्त (नि०)
 २१६ भूपथ गुप्त (कम्प्यू०)
 २१७ कल्याणराय (कम्प्यू०)
 २१८ डा० देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय (का०)
 २१९ श्री काली मुखर्जी
 २२० श्रीमती पुरबी मुखर्जी
 २२१ श्री मलिककुमार गामुली (मा० कम्प्यू०)
 २२२ , नीरेन घोष (मा० कम्प्यू०)
 २२३ सनतकुमार राहा (कम्प्यू०)
 २२४ प्रणवकुमार मुखर्जी (का०)
 २२५ मनोरजतराय (मा० कम्प्यू०)

अरुणाचल प्रदेश

२२६ श्री तोदक बासर (राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत)

दिल्ली

२२७ डा० भाई महावीर (जनसघ)
 २२८ श्रीमती सविता बहल (का०)
 २२९ श्री लालकृष्ण अडवानी (जनसघ)

मिचोरम

२३० श्री लालबुअइया
 पाडिबेरी
 २३१ श्री एस० शिवप्रकाशम (द्रमुव)
 राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत
 २३२ प्रो० रशीदुद्दीन खा
 २३३ श्री चन्द्रविशन दफतरी
 २३४ श्री उमाशकर जोशी

२०१ श्री जयरामदास दीनराम
 २०६ प्रमथनाथ त्रिभि
 २३७ डा० के० रमया
 २०८ श्रीमती मरागावम चंद्रशेखर

२३६ श्री गंगाशरण मिहा
 २६० हवीर तनवीर
 २४१ अरु अन्नाहम
 २६२ जोखिम अल्वा
 २४३ डा० वी० पी० त्त

Gram [AMBICA MILL
 AMBICMILL

Insist on

Ambica Fabrics

SHRI AMBICA

Producers of *La shion* Fabrics of cotton and Cotton mixed
 Filament Yarn

Shri Ambica Group

SHRI AMBICA MILLS LTD
 SHRI ARBUDA MILLS LTD
 SHRI AMBICA TUBES
 SHRI AMBICA MACHINERY
 MANUFACTURERS
 SHRI AMBICA CYLINDER MFG CO
 SHRI AMBUJA CHEMICALS CO

दूरभाष कार्यालय ६३६३२

दूरभाष निवास ६२०७५

अशोक औषधि उद्योग

प्रधान कार्यालय जगतगज, चाराणसी
 - उच्चकाटि की आयुर्वेदिक औषधिया के निर्माता -
 व्यवस्थापक विष्णुचल प्रसाद गप्त

- * ममस्त भारतवप म थाक विक्रेताजा की आवश्यकता है।
- * नियमावली के लिए पत्रव्यवहार करें।

नेपाल ब्रांच गाधी मबान
 गोरखपुर

मध्य प्रदेश ब्रांच कटनी
 जबलपुर

Phones [Factory 62571
Resi 66791
Jain Resi 62672

Gram ARMOURED

DEELITE P.V.C. CABLE 1.1.K.V. INDIA



**P V C INSULATED & SHEATHED IN COPPER
CONDUCTOR**

Supplier for

Gujarat Maharashtra, Tamilnadu Rajasthan Andhra Pradesh,
Madhya Pradesh

Manufactured by

DHAMANI JAIN METAL INDUSTRIES

J 127 FATEHTIBA, ADARSH NAGAR, JAIPUR-4
(RAJASTHAN)

भारत का प्राचीनतम

हिन्दी दैनिक

“विश्वसित्र”

○ कलकत्ता ○ बम्बई एव ○ कानपुर से

एक साथ प्रकाशित

मुख्य कार्यालय

१२ डलहौजी स्क्वायर

कलकत्ता-१

फोन २२ १२२६
२० १३२६

INSIST YOUR DEALER

For

dinesh Suitings

Famous for

- D**-Distinctive in feel and finish with K D mark,
- I**-Internationally acclaimed as one of the biggest exporters in suitings and other materials,
- N**-New and most appealing designs,
- E**-Exclusive suit lengths of imported Merino Wool,
- S**-Superb shades,
- H**-High quality with lowest competitive prices,
An Unparallel name in Woollen and Terene-wool

Sole Selling Agents for BIHAR

M's WOOLTEX

PATNA-4* Phone 51764

Grams COMARK Phone PMBX 57194, 41746 42775

Andhra Pradesh State Co-operative Marketing Federation Ltd

5-2-68, Jambagh, Hyderabad 500001

Agricultural inputs and other requisites are arranged for member societies at request

Procurement of Food grains and pulses etc as Agent to Government Food Corporation of India National Agricultural Co operative Marketing Federation and also on our own account

Sale of sugar to retail dealers and to others on permits issued by the Director of Civil Supplies

Cotton purchases as Agents to Cotton Corporation of India
Construction of godowns and processing units on behalf of Co operatives

Marketing activities of agricultural products and agro based industrial equipment like oil engines tractor spares zinc sheets etc

Fertiliser distribution of Pool MFL IFFCO Hyderabad Chemicals Coramondal Indian Potash etc

Products to the constituent societies

SERVICE TO FARMERS IS SUCCESS TO PLANNERS

President

V JAGAPATHI RAO M.L.A

Joint Registrar/General Manager

MUSTAFA HUSAIN

The Gujarat State Co-operative Bank Ltd., Ahmedabad

Sahakar Bhavan, Relief Road, P B No 302, Ahmedabad

Telephones General 26293 23214 Manager 25917
Telegram APEXBANK

SHRI DWARKADAS M PATEL
Chairman

SHRI JASHBHAI U PATEL
Vice chairman

31 12 73

Paid up share capital
Reserve & other funds
Total Deposits
Working capital

Rs 340 00 Lacs
Rs 582 01 Lacs
Rs 4806 80 Lacs
Rs 13460 87 Lacs

The Bank offers attractive rates of interest on deposits Also offers facility for modern safe deposit vault
Invest all your savings with us

C C MEHTA
Manager

BUY HANDLOOM SAREES
AND HANDLOOM PRODUCTS
AND HELP THE WEAKER SECTOR

For Quality & Durable Goods, Contact—

Maharashtra State Handlooms Corporation Ltd

(A Govt of Maharashtra Undertaking)

Ahmad Manzil Central Avenue NAGPUR 18 (M S)

Telegrams HANDLOOMS
Tel-phones 26429 25559 26753 24291

नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी के नवीनतम प्रकाशन



हिंदी विश्वकोश, खंड १ (सशोधित एवं परिवर्धित संस्करण) मूल्य ५०.००

पूर्व प्रकाशित संस्करण के अनेक विषया में सशोधन एवं परिवर्धन के साथ इसमें ज्ञान विज्ञान के प्रचुर नए विषयो का समावेश कर लिया गया है।

सोमनाथ ग्रथावली, खंड २ सपा० प० सुधाकर पांडेय मूल्य ५१.००

इस ग्रथावली के प्रस्तुत खंड में कविवर सोमनाथ की 'रामचरित-रत्नाकर', 'रामकलाधर', अजेन्द्र विनोद नाम की तीन रचनाओं का अत्यंत वैज्ञानिक ढंग से संपादन किया गया है।

सोमनाथ ग्रथावली, खंड ३ सपा० पंडित सुधाकर पांडेय, मूल्य २५.००

प्रस्तुत खंड में 'रामचरित रत्नाकर' के अवशिष्ट भाग के संपादन के साथ ही कवि की कृतिया का साहित्यिक पर्यालोचन भी दे लिया गया है। अतः में पद्यानुक्रमणिका भी लगा दी गयी है।

ठाकुर ग्रथावली सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र मूल्य १०.००

कविवर ठाकुर की रचनाओं के संपादन के साथ ही उनके जीवन एवं काव्यगत गुणों का अत्यंत उत्कृष्ट पर्यालोचन।

अमरगीतसार संपादक प० रामचंद्र शुक्ल मूल्य ८.००

सभा द्वारा प्रथम प्रकाशित संस्करण।

गणतन्त्र दिवस की मंगल घेला मे समस्त उपभोक्ताओं एव पाठकों का
हार्दिक अभिनन्दन

दी हीरा मिल्स लिमिटेड, उज्जैन

हमारे उत्पादित कपड़े की उत्तरोत्तर बढ़ती मांग व कारण —

अच्छी रुई का मिक्सिंग, कपड़े की बँटन, अच्छा मैनेजर एव मुदर
आकषक प्रिन्ट्स जैसे —

नागमणी मोतीमाता स्वामी काश्मीर की रानी गणमाता इबिरा,
ऐरवय राजसमो, एयर मासल एव फोल्ड मागस आदि ।

हमारी उपार्थियाँ —

मारकोन खादी मलेशिया, घुला हरक धुले घोती व साधो जोड, रगोन खादी
प्रिन्टेड शीटिंग, डिस्चाज व रेजिस्ट प्रिन्ट आदि ।

नियन्त्रित कपड़े की दुकानों द्वारा जनता की सेवा में निरत

मैनेजर

दी हीरा मिल्स लिमिटेड, उज्जैन

सार्वजनिक शांति, समुन्नति तथा समृद्धि के लिए अग्रसर
दी विलासपुर को-आपरेटिव सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड

पो० बा० न० ६ बिलासपुर (म० प्र०) फोन न० २०

अमानत वृद्धि की दिशा में ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित कर सन १९७२-७३ में
पिछले वर्ष की अमानता में ३३ लाख का वृद्धि ।

लिकिंग से बसूली अग्रिम खाद वितरण तथा लघु कृषक
विकास अभिकरण के अतगत लघु कृषकों की सहायता
शाखाओं की संख्या २६

समितियाँ की संख्या ७६१

सदस्य संख्या १६००००

अमानतों पर आकषक ब्याज

करेंट डिपॉजिट १/२% वापिक । सेविंग डिपॉजिट ४% छमाही भुगतान स्मात
सेविंग ५% । रिक्विंग डिपॉजिट ५ ३/४% से ६ १/२% । फिक्स्ड डिपॉजिट ५ १/२% से ७ १/२%
अवधि व अनुसार

ब्याज का भुगतान मासिक

बक की ३० ११ ७३ की वित्तीय स्थिति

अश पूजा पटी हुई	८१ ६७ ०१३ ००
रक्षित एव अय निधिमा	३५ ३२ ००८ ८४
अमानतें	२ १८ ६६ ७७६ १८
वापशील पूजा	२ ०१,१४ ४०६ ६२
वितरित कज	५ ३२ ६७ १३६ ६८

बेसोराव गावधन
अध्यक्ष

रामगोपाल तिवारी
मानसेवी सचिव

मुदरान प्रसाद शर्मा
अतिरिक्त प्रबंधक

With best compliments from :

EAGLE CHEMICALS

38, Sudershanpura Industrial Area, JAIPUR 8
(Rajasthan)



Manufacturers

- CHLORINATED PARAFFIN
- HYDROCHLORIC ACID AND
- OTHER CHEMICALS

Tele [Phone 72051, 67192
Gram EAGLE

राष्ट्र की सेवा में सलग्न

प्रदेश की चतुर्थ सहकारी चीनी मिल

दि० किसान को-आपरेटिव शुगर फैक्ट्री लि०

मझोला (पीलीभीत) उ० प्र०

प्रमुख विशेषतायें —

- १ गन्ना उत्पादका को उनकी उपज का अधिकतम मूल्य
- २ कमचारियों को यथासंभव अधिकतम सुविधाय
- ३ आधुनिक संयंत्र
- ४ आधुनिक प्रगतिशील प्रशासन
- ५ अपने क्षेत्र का आर्थिक एवं सामाजिक विकास

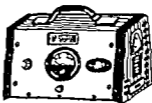
राजेन्द्रनाथ उवेराय
प्रधान प्रबंधक

इन्दु प्रकाश ऐरन, आई०ए०एस०
प्रभारी अधिकारी

INSTALL
DEPENDABLE

Shakti®

MANUAL & AUTOMATIC TRANSFORMER
FOR POSITIVE PROTECTION OF YOUR ELECTRICAL EQUIPMENTS



Tele [Gram SHAKTIVOLT
Phone 61543

Shakti Electricals Private Ltd

Specialist in AUTOMATIC & MANUAL VOLTAGE
CONTROLS



1323 Gulian Street

Phone 265058 Near Dariba Kalan
Gram Shaktivolt DELHI 110006

Regd Office & Factory

C 20 INDUSTRIAL ESTATE
JAIPUR 6

पहले निज को सबल बनाले,
सेवन कर **बैद्यनाथ** द्वारा

दैहिक और मानसिक बल से,
लोक-तंत्र को सफल बनाए।

बैद्यनाथ

द्वारा सदा सेवन करें।



देशों द्वारा का सबसे बड़ा
निर्माता और नियंत्रक

श्री **बैद्यनाथ** आयुर्वेद भवन
प्राइवेट लिमिटेड

राजस्थान, जयपुर, कांशी, नागपुर, नैनी (बिवाह बाल)

८ मुख्य कारणा

१ आतिथ्यपूर्ण
वातावरण

२ सोहादपूर्ण
श्रमिक
सम्बन्ध

३ प्रचुर मात्रा में
निर्वाह विद्युत
प्रदाय

आप अपने नये उद्योग
के लिये राजस्थान
को क्यों चुनें ?

४ कृषि एवं
खनिज साधनों
की प्रचुरता

५ आधारभूत
सुविधाओं की
व्यापकता

विस्तृत जानकारी के लिये
सम्पर्क करें -

६. प्रशिक्षित एवं
सशक्त
जनशक्ति

उद्योग निदेशालय
राजस्थान, जयपुर

७ सहायता एवं
सुविधाओं की
विपुलता

८ नि शुल्क
श्रीदघोगिक
परामर्श सेवा

दूरभाष 65396

राजस्थान सरकार द्वारा प्रसारित

राज्य तथा संघीय क्षेत्र

आन्ध्र प्रदेश

राजधानी—हैदराबाद, क्षेत्रफल—२७६७१४ वर्ग कि० मी०, जनसंख्या—८२,५०२ ३०८
 मुख्यभाषा—तुलु साक्षरता प्रतिशत—२४६ (१९७१) राज्यपाल—श्री खण्डूभाई वासजी
 देमाई, शासक बल—कांग्रेस विधान सभा सदस्य संख्या—२०८, विधान परिषद सदस्य
 संख्या—६०,

याजना परिषद (करोड़ रुपया म)

	तीसरी याजना	चतुर्थ योजना (१९६६ ६७ म १९७० ७१ तक)
कुल	३५२ ८०	३६७ ६६
केन्द्रीय सहयोग	२२० ७७	२०३ ८२
राज्य व साधना से	१३१ ६५	१६४ १७

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदर मुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर) हजार म	जन-संख्या (लाखो म)	सदर मुकाम
१ अनन्तपुर	१६ ०	२१ १५	अनन्तपुर
२ आदिलाबाद	१६ ३	१२ ८८	आदिलाबाद
३ कर्ना	१२ ६	१५ ७७	कडपा
४ कन्नूर	१८ ८	१६ ८२	कर्नूल
५ करीमनगर	११ ८	१६ ६४	करीमनगर
६ कृष्णा	८ ७	२४ ६४	मच्छलीपटनम
७ खम्मम	१५ ६	१३ ७०	खम्मम
८ गुंटूर	११ ६	२८ ४१	गुंटूर
९ चित्तूर	१५ ८	२२ ८६	चित्तूर
१० तनगापट्ट	१६ ०	१८ २०	तनगापट्ट
११ निजामाबाद	८ ०	१२ १३	निजामाबाद

१२	नेल्दूर	१३ १	१६ १०	मन्तूर
१३	पश्चिम गाटावरी	७ ८	२३ ७४	एतूर
१४	पूर्वा गोदावरी	१० ६	३० ८७	काविनाडा
१५	प्रकाशम (आगोल)	१७ ६	१६ २०	आगोल
१६	महबूबनगर	१८ ४	१६ ३२	महबूबनगर
१७	मेदक	६ ७	१४ ६८	सगारडिड
१८	वरगल	१२ ६	१८ ७१	वरगल
१९	विशाखापटनम	१३ ७	२८ ०५	विशाखापटनम
२०	श्रीवाकुलम	६ ७	२५ ६०	श्रीवाकुलम
२१	हैदराबाद	७ ७	२७ ६२	हदराबाद

मन्त्रिमण्डल

१	श्री जे० वगलराव	मुख्यमन्त्री
२	श्री वी० वी० सुब्बारड्डी	उपमुख्यमन्त्री, कृषि, छात्र तथा कानून
३	श्री एन० रामाचन्द्रा रड्डी	वित्त एवं वाणिज्य कर
४	श्री पी० वामी रेड्डी	उद्योग
५	श्री जे० चोक्काराव	परिवहन
६	श्री बे० राजामल्लु	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य
७	श्री राजा सागी सूर्यनारायण राजू	धार्मिक तथा चरिटेबिल
८	श्री इब्राहिममल्ली असारी	सूचना तथा जनसम्पर्क
९	श्री वी० कृष्णमूर्ति नायडू	बहुद सिंचाई तथा बाढ नियंत्रण
१०	श्री बी० सुब्बाराव	सहकारिता
११	श्री लक्ष्मणनासु	श्रम रोजगार तथा पुनर्वास
१२	श्री जी० राजाराम	विद्युत्
१३	श्री बिल्ला मुबामुडू	नगरपालिका प्रशासन तथा जल कल

राज्य-मन्त्री

१	डा० सी० एच० देवद्वाराव	पयटन रबीन्द्र भारती
२	श्रीमती लक्ष्मीदेवा	महिना कन्याण तथा बाल कन्याण

असभ

राजधानी—शिराग क्षत्रफल—७८ ४२३ वर्ग कि० मी० जनसंख्या—१ ४६ २२ १०८
 मुख्यभाषा—प्रममिया साभरता प्रतिशत—२८ ७४
 राज्यपाल—श्री एल० पी० सिंह शासक दल—वाद्यस
 मुख्य मन्त्री—श्री शरत्चन्द्र मिश्र विधान सभा अध्यक्ष—श्री आर० सी० वरध्वा
 सभस्य सभ्या—११४

योजना परिव्यय (लाघ रुपया म)

	तीसरी योजना	चतुथ याजना
कुल	१३ २२४	२६ १७५
केन्द्रीय सहयाग	६ ६६०	२३ ०००
राज्य क साधन	३ २३४	४ १७५

जिलो का क्षेत्रफल, जनसख्या और सदर मुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वग किलामीटर)	जनसख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ उत्तरी काचार पहाडिया	४ ८६०	७६ ०४७	हैपनाम
२ काचार	६ ६६२	१७,१३ ३१८	मिलचर
३ कामरूप	६ ८६३	२८,५४ १८३	गाहाटी
८ गोलपारा	१०,३५६	२२,२५ १०३	धुवरी
५ दोरग	८ ७७५	१७,३६ १८८	तजपुर
६ नौगाव	५ ५६१	१६ ८० ८६५	नौगाव
७ मित्रि पहाडिया	१० ३३२	३ ७६ ३१०	डीफ
८ सखीमपुर	१२ ७६२	२१ २२ ७१६	डिबरुगढ
९ शिवसागर	८,६८६	१८,३७ ३८६	जारहाट

मन्त्रिमण्डल

१ श्री शरतचन्द्र मिन्हा	मुख्यमन्त्री गृह वित्त आदि
२ श्री सय्यद अहमद अली	बानून समदीय काय आदि
३ श्री परमानन्द गांगुली	वन समाज कल्याण तथा राजस्व
४ श्री गजेन्द्र ताली	श्रम सहकारिता
५ श्री इन्द्रनाथ	उद्योग आबकारी विद्युत्
६ श्री माहिनाथ पुरकायस्थ	आपूर्ति खादी तथा ग्रामाद्याग
७ डा० सुतफुररहमान	ताकनिर्माण
८ श्री उपेन्द्रनाथ	कृषि तथा मछलापालन
९ श्री उत्तमचन्द्र ब्रह्मा	समाज कल्याण
१० श्री हरिन्द्रनाथ तानुबदार	शिक्षा परिवहन तथा पयन्
११ श्री छत्रसिंह तारा	आन्वित्त मन्त्र आदि
१२ श्री जयमन्त्र हज्जर	पशुपालन एवं जल

राज्य-मन्त्री

१ श्री हितेश्वर शकिया	गृह स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन
२ श्री विष्णु प्रसाद	विद्युत व्यापार तथा वाणिज्य
३ श्रीमती स्वणप्रभा महत	समाज कल्याण, रगम तथा बुनकर

बिहार

राजधानी—पटना, क्षेत्रफल—१७३ ८७६ बर्ग कि० मी०,

जनसंख्या—५ ६३ ५३ ३६६

मुख्य भाषा—हिन्दी बोलिया—भाजपुरी नागपुरिया मथिना मगही

साक्षरता प्रतिशत—(१९७१) १६ ६७, राज्यपाल—श्री आर० डा० भण्डारे

शासक दल—नामैम

मुख्यमन्त्री—श्री अब्दुल गफूर, विधान सभा अध्यक्ष—श्री हरिनाथ मिश्र

सदस्य सत्या—३१६ मंत्रिपरिषद सदस्य—२६ मन्त्री—२१ राज्य मन्त्री—४

उपमन्त्री—४, प्रति व्यक्ति आय—२३८ रुपये

योजना परिषद (नाथ रुपया म)

	तीसरा याजना	चतुथ याजना
कुल	३३ १७४	५३ १२८
केन्द्रीय सहयोग	४१ ५६०	३३ ८००
राज्य के साधन	११ ५८४	१९ ३२८

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि०मी०)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ गया	१२ ३४४	४४ ५७ ६७३	गया
२ चम्पारन	६ १६६	३५ ४३ १०३	मातिहारी
दरभंगा	८ ६७६	४२ ३३ ६०४	दरभंगा
४ धनबाद	२ ८६४	१६ ६६ ४१७	धनबाद
५ पटना	५ ४४८	५ ५६ ६४५	पटना
पनाम	१० ६७७	१५ ०६ ३५०	डाटनगज
७ पूर्णिया	११ ०१०	३६ ४१ ८६३	पूर्णिया
८ भागलपुर	५ ६५६	२० ६१ १०३	भागलपुर
९ मुंगेर	६ ८७	४८ ६४ ६०६	मुंगेर
१० मुजफ्फरपुर	७ ८४८	६८ ४० ६८१	मुजफ्फरपुर

११	राची	१८ ३३१	२६ ११ ४४५	राची
१२	शाहाजाद	११ ३२०	३६ २६ ०३१	भारा
१३	सपाल परगना	१४ १२६	२१ ८६ ६०८	दुमका
१४	महरसा	५ ८८५	२३ ५० २८८	महरसा
१५	मारन	६ ६५०	८२ ७६ २५०	छपरा
१६	मिहभूम	१३ ४४७	२४ ३७ ७६६	चाइबामा
१७	हजारीबाग	१८ ०६०	३०,२० २१६	हजारीबाग

मन्त्रिमण्डल

१	श्री अब्दुल गफूर	मुख्यमंत्री गृह सूचना व पयटन
२	श्री दारागाप्रसाद राय	वित्त और याजना
३	श्रीमती रामदुलारा मिन्हा	धर्म एव राजगार
४	श्री चन्द्रशेखर सिंह	उद्योग तथा तकनीकी शिक्षा
५	डा० जगन्नाथ मिश्र	मिचार्ड एव विद्युत
६	श्री लहटन चौधरी	राजस्व तथा भूमि सुधार
७	श्री मुगेरीनाल	खान
८	श्री शत्रुघ्नशरण सिंह	महकारिता तथा गन्ना
९	श्री रामराजप्रसाद सिंह	स्वायत्त शामन आवागम तथा जन स्वास्थ्य
१०	श्री राज जयपालसिंह यादव	कृषि पशुपालन
११	श्री विद्याकर कवि	शिक्षा
१२	श्री सिद्धुअल हम्ब्रन	मत्स्य पालन तथा कारागार
१३	श्री वरमचन्द भगत	वन तथा जनजाति कर्याण
१४	श्री नरसिंह बठ	सामुदायिक विकास तथा ग्राम पचायत
१५	श्री जयनारायण महता	एकमाञ्ज
१६	श्री कन्तर पाण्डे	स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन
१७	श्री बालेश्वरराय	सूचना पयटन तथा समाज कल्याण
१८	श्री श्यामदोरे बाई	कानून तथा नधु मिचार्ड
१९	श्री सनितश्वर प्रसाद गाही	खाद्य आपूर्ति तथा वाणिज्य
२०	श्री रफीक अलम	जन-न्याय
२१	श्री बिन्देश्वरी दुब	परिवहन तथा च्यरी

राज्य-मन्त्री

१	श्री भाष्म नारायणसिंह	खाद्य तथा आपूर्ति
२	श्रीमती प्रभावता गुप्त	खान तथा मृतत्व
३	श्री मिथी नादा	प्राथमिक शिक्षा
४	श्री शम्भूशरण ठाकुर	कारागार

उपमन्त्री

१ श्री श्रवणेश्वर राम	मिर्चार्ड तथा विद्युत
२ श्री फजुल आजम	नयु मिर्चार्ड
३ श्री मदनप्रसाद सिंह	पयन्त तय श्रीवा
४ श्री बिलातराम	हरिजन कल्याण

गुजरात

राजधानी—गाधीनगर

क्षेत्रफल—१ ६५ ६८४ वर्ग कि० मा०,

जनसंख्या—२६ ६३० ६२६

मुख्यभाषा—गुजराती साक्षरता प्रतिशत—४४ ५३

राज्यपाल—श्री के० विश्वनाथन् ।

योजना परिषद (लाघ र्पमा म)

	तामरो याजना	चतुथ याजना
कुल	२३७६८	६५५००
केंद्राय सहयोग	१११६०	१५८००
राज्य केंद्र साधन	१२६०८	२६७००

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि० मीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ अमरेली	६७६०	८४८ ७३०	अमरेली
२ अहमदाबाद	८७०७	२६ १० ३०७	अहमदाबाद
३ वच्छ	४५ ६१२	८४६ ७६६	वच्छ
४ खेडा	७,१६४	२४ ५१ ३८७	खेडा
५ गाधीनगर	६४६	२०० ६४२	गाधीनगर
६ जामनगर	१४ १२५	११ ११ ३४३	जामनगर
७ जूनागढ़	१० ६०७	१६ ५६ ६७७	जूनागढ़
८ डांग	१ ६८३	६४ १८५	अहवा
९ पंचमहल	८ ८६६	१८ ४८ ८०४	गोधरा
१० बडोदरा	७ ७८८	१६ ८० ०६५	बडोदरा
११ वनासवाडा	१२ ७०२	१२ ६५,३८३	पालनपुर
१२ भडोच	६ ०४५	११ ०६ ६०१	भडोच
१३ भावनगर	११ १५५	१४ ०५ २८५	भावनगर
१४ मेहसाना	६,०२७	२०,६२ ४६८	मेहसाना

१५ राजकोट	११,२०३	१६,२४,०७२	राजकोट
१६ वल्साड	५,२३८	१४,२८,७४२	वल्साड
१७ साबरकाठा	७,३६०	११,८७,६३७	हिम्मतनगर
१८ सुरेन्द्रनगर	१०,४८८	८,४४,४४४	सुरेन्द्रनगर
१९ सूरत	७,७४५	१७,८६,६२४	सूरत

मन्त्रिमंडल

१ श्री धिमनभाई पटेल	मुख्यमंत्री गृह, मूचना तथा वृषि
२ श्री कांतिलाल धिया	उप मुख्यमंत्री उद्योग, विद्युत तथा सहकारिता
३ डा० अमूल देसाई	वित्त तथा योजना
४ डा० ठाकौरभाई पटेल	स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन
५ श्रीमती आयाशा बेगम शेख	शिक्षा, मत्स्यपालन तथा युवागतिविधि
६ श्री दिव्यकान्त नरावती	कानून तथा नगरपालिका
७ श्री नरेन्द्र सिंह झाला	राजस्व तथा नागरिक आपूर्ति
८ श्री गगाराम रावल	परिवहन, पयन्त तथा वन
९ श्री छवीलदास मेहता	जन-काय
१० श्री मनसुख जोशी	श्रम तथा आवास
११ श्री अमरसिंह चौधरी	समाज कल्याण

राज्यमन्त्री

१ श्री उदेंद्र सिंह वादोडिया	वृषि तथा परिवहन
२ श्री मंगनभाई बरोत	शिक्षा श्रम तथा आवास
३ श्री पीयूष ठाकुर	उद्योग, विद्युत तथा सहकारिता

उपमन्त्री

१ श्री सामजीभाई लामोदर	नागरिक आपूर्ति तथा वन
२ श्री रामजीभाई कारकर	उद्योग विद्युत तथा सहकारिता
३ श्री एम० मामाभाई भाभी	स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन
४ श्री बी० एम० मुतियानी	समाज कल्याण तथा पयन्त
५ श्री नवीनघघु रावानी	योजना तथा आवास

हरियाणा

राजधानी—चंडीगढ़	क्षेत्रफल—४४,२२२ वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या—१,००,३६,८०८ (१९७१ वीं जनगणना के अनुसार)	
मुख्य भाषा—हिन्दी,	साक्षरता प्रतिशत—२६.८६

राज्यपाल—श्री बी० एन० पटवर्दी। शासन बजट—राज्य मन्त्र मंत्री—श्री पं० गंगाधर
विद्याल मन्त्री—श्री स्वर्णलाल शर्मा मन्त्री—श्री

व्यय	राज्य मन्त्री (श्री पं० गंगाधर)
राज्य मन्त्री	३२००
राज्य मन्त्री	३२००
राज्य मन्त्री	११६५०

जिल्लों का क्षेत्रकण जनसंख्या घोर नगर मन्त्री

जिला	जनसंख्या (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या	नगर मन्त्री
१ जिला	१०६०४००	१६६३६६३	जिला
राज्य	३८३६००	११०४०३	राज्य
२ मन्त्री	६८८६००	१३३१३१४	मन्त्री
३ जनसंख्या	३३३१००	६०३६३	जनसंख्या
४ जनसंख्या	३८३३००	१०६८६०४	जनसंख्या
५ जिला	३३००००	३३००६१	जिला
६ मन्त्री	३०६००	३३८५६	मन्त्री
७ मन्त्री	१६६००	१८३०३	मन्त्री
८ भिवानी	५०६३००	३५३३१३	भिवानी
९ बुधवार	३३३००	८६०८६६	बुधवार

मन्त्रिमण्डल

- श्री श्रीमान्
 - श्री श्रीमान्
 - श्री श्रीमान्
 - श्री श्रीमान्
 - श्री श्रीमान्
 - श्री श्रीमान्
 - श्री श्रीमान्
- मुख्यमंत्री सामान्य प्रशासन (विशेषज्ञ मन्त्री)
साथ एवं राज्या विद्युत एवं विचार
गृह जन सार मन्त्री वरत सामूहिक काम
खन पथका मन्त्री उद्देश्य निर्वाह
समन्वित काम मन्त्री श्रम एवं राजस्व
घोर घोषागिर प्रशासन विभाग।
दृष्टि व्याघ्र एवं पूति वन एवं मन्त्री विभाग।
विशेषज्ञ एवं पन्थाय सामाजिक कल्याण विभाग
दूर्ध्व एवं अनुसूचित जातिया का कल्याण एवं
घाबकारी एवं कराधान विभाग।
वित्त मुद्रण एवं सखन प्रणाली घाबाम विभाग।
शिक्षा भाषा एवं पुरातत्व विभाग।
उद्योग नगर एवं ग्राम योजना उपनिवेशन
एवं नागरिक सम्पत्ति घोर स्वास्थ्य विभाग।

- ८ पट्टिन चिरजी लात लाव निर्माण (सडन एव भवन निर्माण) तव नीकी शिक्षा वास्तुमला, राजस्व एव पुनर्वास और चक्रदी विभाग ।
- ९ बनल महासिंह परिवहन डेग विवाम पशुपालन, मत्स्य पालन स्वायत्त शासन एव सवजनिक स्वास्थ्य विभाग ।
- १० श्री बनारसीनाम गुप्त श्रावाम महकारिता स्थानाव स्वायत्त शासन ।

राज्य मन्त्री

- १ श्रीमती शारदा रानी स्वास्थ्य गृह, समन्तीय वाय विभाग ।
- २ श्रीमती चन्दावती लाव निर्माण (भवन एव महक निर्माण) राजस्व पुनर्वास एव चक्रवती और औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग ।
- ३ श्रीमती प्रसन्नी देवा शिक्षा श्रावकारा एव कराधान श्राव परिवहन ।
- ४ श्री शाधन दाम स्वायत्त शासन सहकारिता एव तवनीकी शिक्षा याजना विद्युत एव मिचाई खाद्य एव पूर्ण विभाग ।
- ५ श्री हरभाहि दर मिह चट्टा

हिमाचल प्रदेश

राजधानी—शिमला जनसख्या १९७१—३४ ६० ४३४ क्षेत्रफल—५५ ६७३ वर्ग कि० मी०
 मुख्यभाषा—हिन्दी साक्षरता प्रतिशत १९०
 राज्यपाल—एम० चक्रवर्ती शासक दल—काग्रम
 मुख्यमन्त्री—डा० यशवन्तसिंह परमार
 विधानसभा अध्यक्ष—कुनारचन्द राणा सदस्य सख्या—६८ (३ मनानीत)
 योजना परिव्यय (लाख रुपया म)

तीमरी याजना

चतुथ योजना

३३५

९४४०

जिलो का क्षेत्रफल, जनसख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि० मी०)	जनसख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ कांगडा	८ ३९७	१३,२७ २११	धमशाना
२ किन्नौर	६ ५५३	४९ ८३५	वास्ता
३ कुल्लू	५ ४५५	१ ६२ ३७१	कुल्लू
४ चम्बा	८ १९५	२ ५५ २३३	चम्बा
५ बिलासपुर	१ १६७	१ ९४ ७८६	बिलासपुर
६ मण्डी	४ ०१८	४ १५ १८०	मण्डी

७ ऊना	—	—	ऊना
८ लाहौल और स्पीति	१२,०११	०३ १३८	बीतौरग
९ शिमला	१४१६	० १७ १०६	गिमना
१० तिरमौर	० ८०१	० ११ ०३३	ताउन
११ हमीरपुर	—	—	हमीरपुर
१२ सालन	—	—	गानन

मन्त्रिमण्डल

१ डा० यशवर्तसिंह परमार	मुख्यमंत्री गृह योजना वित्त जनसंख्या आदि
२ श्री रामलाल	परिवहन पत्राचार विधि तथा बुनाव
३ श्री देशराज महाजन	राजस्व शिक्षा महाराजिता तथा परामर्श
४ श्री नानचंद प्रार्थी	वन उद्योग भावनारी

राज्य मंत्री

१ श्री हरदयाल	पचायत
२ श्री मनसाराज	समाज कल्याण तथा कारागार
३ श्रीमती सरला शर्मा	स्थानीय स्वायत्त शासन स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन

जम्मू-कश्मीर

राजधानी—श्रीनगर (प्रीष्म), जम्मू (शीत) क्षेत्रफल—२२२८७० वर्ग कि० मी० (१३७३८२ वर्ग कि० मी० युद्ध विराम रेखा से भारतीय क्षेत्र में शेष पाक अधिभूत), जनसंख्या—४६,१६,६३२ मुख्यभाषा—उर्दू कश्मीरी, डोगरी साक्षरता प्रतिशत—१८ २०, राज्यपाल—श्री एल० के० झा० शासक दल—कांग्रेस मुख्यमंत्री—श्री मीर कासिम, विधान सभा अध्यक्ष—श्री अरदुल गोनी सदस्य संख्या—७५ ।

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि० मी०)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
अनन्तनाग (कश्मीर दक्षिण)	५,३८२	८ ३२ २८०	अनन्तनाग
ऊधमपुर	४,५४६	३ ३८ ८४६	ऊधमपुर
बठुआ	२,६५१	२ ७४ ६७१	बठुआ
जम्मू	३ १६५	७ ३१ ७४३	जम्मू
डोडा	११ ६६१	३ ४२ २२०	डोडा
पुछ	१ ६५८	१ ७०,७८७	पुछ
बारामूला (कश्मीर उत्तर)	७ ४५८	७ ७५ ७२४	बारामूला
राजौरी	२ ६८१	२ १७ ३७३	राजौरी
लद्दाख	६५,८७६	१ ०५ २६१	लेह
श्रीनगर	३ ०१३	८,२७ ६६७	श्रीनगर

मन्त्रिमंडल

१ श्री मीर कासिम	मुख्यमंत्री, याजना, सूचना आदि
२ श्री गिरधारीलाल डायरा	वित्त विधि, उद्योग एवं वाणिज्य
३ श्री तिलोचन दत्त	कृषि वन, पशुपालन राजस्व
४ मोहम्मद सईद	निर्वाह बाढ़ नियन्त्रण
५ श्री जी० शार० कार	खाद्य आपूर्ति परिवहन विद्युत समाज कल्याण तथा श्रम

राज्य मंत्री

१ श्री गुलाम मोहम्मद	उद्योग एवं वाणिज्य
२ श्री हसरत डोगरा	स्वाम्थ्य
३ ठा० रणधीर सिंह	सूचना पयटन
४ श्री अब्दुल अजीज जरगर	कृषि
५ सोनम बाग्याल	सहकारिता
६ श्री गुलाम मोहम्मद पची	श्रम समाज कल्याण तथा समदीय काम
७ श्री माखनलाल फोतेदार	कानून तथा निर्वाह

उपमंत्री

१ मोहम्मद अली काचू	भावकारी तथा कर
२ श्री धमपाल	परिवहन
३ श्री परमानंद	स्थानीय स्वायत्त शासन
४ अब्दुल कयूम	शिक्षा तथा याजना
५ श्री बशीर अहमद	पशुपालन तथा भेड़ विकास

केरल

राजधानी—त्रिवेन्द्रम क्षेत्रफल—३८८५५ वर्ग कि० मी०
जनसंख्या—१९७१—२१ ३४ ७३७५, मुख्य भाषा—मलयालम
साक्षरता प्रतिशत—(१९७१) ६० ४२, राज्यपाल—श्री एन० एन० वाचू
शासक दल—कांग्रेस—कम्युनिस्ट मोर्चा मुख्यमंत्री—श्री अच्युत मनन
सदस्य संख्या—१३४,
मन्त्रीपरिषद संख्या—१३
राज्य की राष्ट्रीय आय—१००२ करोड़ १९६९-७०-१९६८ कराड प्रति व्यक्ति आय—५६७ रु०
योजना परिव्यय (लाख रुपया म)

	तीसरी याजना	चतुर्थ योजना
कुल	१८ १५९	२५ ८३५
केन्द्रीय सहयोग	१२ १७०	१७ ५००
राज्य के साधन	५ ९८९	८ ३३५

जिना	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (लाख म)	गण्डर मुनाम
१ आनणुजा	१ ८८४	०१ ०६	आनणुजा
२ एर्णाकुनम	२ ३७७	०१ ६४	एर्णाकुनम
३ कण्णूर	२ ७०६	०३ ६१	कण्णूर
४ काजिकाड	३ ७२६	०१ ०६	काजिकाड
५ काट्टयम	२ १६५	१५ ३६	काट्टयम
६ कोलम	४ ६२३	०४ १३	कोलम
७ तिरुवनन्तपुरम्	० १६२	०१ ६६	तिरुवनन्तपुरम्
८ तशूर	३ ०३२	२१ २६	तशूर
९ पालक्काट	४ ४००	१६ ८५	पालक्काट
१० मलप्पुरम	३ ६३८	१८ ५६	मलप्पुरम
११ ईडक्की	२ १२७	१७ ६५	काट्टयम

मन्त्रिमण्डल

१ श्री सी० अच्युत मेतन	मुख्यमन्त्री सामाय प्रशामन योजना मन्त्रि
२ श्री टी० क० त्रिवाकरन	वाड नियन्त्रण सिचाई
३ श्री बाबी जान	भूराजस्व तथा भावकारी
४ श्री के० आबुक्कर कुट्टी नाट्टा	पचायत मत्स्यपालन मन्त्रि
५ श्री एन० क० बालकृष्ण	महकारिता एव जनस्वास्थ्य
६ श्री पाल० पी० मणि	खाद्य तथा नागरिक आपूर्ति
७ के० जी० अदियन्नी	वन लाटरीज मन्त्रि
८ चाक्कीरी अहमद कुट्टी	शिक्षा समाज कल्याण पयटन जन
९ श्री के० करणकरन	गह सूचना एव प्रचार
१० श्री बी० पुम्पोत्तम	कृषि एव श्रम कानून तथा रोजगार
११ श्री वल्ला एचारन	हरिजन कल्याण तथा सामुदायिक विकास
१२ श्री टी० बी० थामम	उद्यान तथा वाणिज्य
१३ श्री एम्० एन० मोक्किन्न नायडर	परिवहन तथा संचार मन्त्रि

मध्यप्रदेश

राजधानी—भायान क्षेत्रफल—४ ४३ ४५६ वर्ग कि० मी०

जनसंख्या—८१ ९५४ ११६

मुख्यभाषा—हिन्दी साक्षरता प्रतिशत—०० १४

राज्यपाल—श्री मयनारायण सिंह शासक दल—कांग्रेस मुख्यमन्त्री—श्री प्रकाशचन्द सेठी,

विधान सभा अध्यक्ष—श्री गुलशेर अहमद सदस्य संख्या—२६७ दलीय स्थिति—

कांग्रेस—२०१ जनसंघ—४६, सीमा—६, कम्यु०—५, निदनीय—१३, रिक्त—३
 नाम लिस्ट—१ मंत्री परिषद संख्या—२६ मंत्री—११ राज्यमंत्री—८ उपमंत्री—३,
 राज्य की राष्ट्रीय आय—२ २३ ७६ ३६ लाख ₹०, प्रति व्यक्ति आय—१६६ रुपये

योजना परिव्यय (लाख रुपया में)

	सीमरी योजना	चतुर्थ योजना
कुल	२८,८३५	३८,३००
केंद्रीय महत्याग	२१,६५०	२ २००
राज्य के साधन	६,८८५	१० १००

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और मंदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या	मंदरमुकाम
१	२	३	४
१ जूँर	२ ८३१	१० २१ १५०	जूँर
२ उज्जैन	६ ११३	८ ६८ ५१३	उज्जैन
३ गुना	११ ०६२	७ ८३ ७४८	गुना
४ खानिपुर	५ १८४	८ ५८ ००१	खानिपुर
५ छत्रगपुर	८ ७५८	७ १२ २८५	छत्रगपुर
६ छिन्वाडा	११ ८२१	६ ८६ ६१३	छिन्वाडा
७ जयपुर	१० १५२	१० ८६ ०३०	जयपुर
८ बाबुसा	६ ७७२	६ ६७ ८११	बाबुसा
९ टीकमगढ़	५,०३४	५ ६८ ८८५	टीकमगढ़
१० रनिया	२ ०२७	२ १५ २६३	रनिया
११ दमोद	७ ३२१	५ ७२ २६३	दमोद
१२ दुग	१६ ६२२	२६ ६१ ६०१	दुग
१३ दवाम	७ ००७	१ ६४ ३२	दवाम
१४ धार	८ १६०	८ १२ ६००	धार
१५ नरमिहपुर	१ १२	१ १६,२७०	नरमिहपुर
१६ निमाड (पू०) (खरगात)	१२ १८१	१२ ८६ ८१२	भुमगौत
१७ निमाड (पू०) (खडवा)	१० ७०१	८ ७८ २२१	खडवा
१८ पना	७ ०२१	६ २६ ०७७	पना
१९ बन्वर	३६ १७०	१५ ११,६५६	जगन्पुर

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या	संरचना
२० बालाघाट	६ २५५	६ ७७ ५८३	बालाघाट
२१ विलासपुर	१६ ७२३	२४ ४०, ६६२	विलासपुर
२२ बँतूल	१० ०६०	७, ३६ १६६	बँतूल
२३ भिंड	४ ४६२	७ ६३ ६५५	भिंड
२४ मडला	१३ २७८	८ ७३ ५७७	मडला
२५ मन्दासौर	१० २७१	६ ६१ ५२२	मन्दासौर
२६ मुरना	११ ६२५	६ ८५ ३३८	मुरना
२७ रतलाम	४ ४७४	६ २६ ५३४	रतलाम
२८ राजगढ	६ १७३	६ ४४ ३४६	राजगढ
२९ रायगढ	१३ ११६	१२ ७८ ७०५	रायगढ
३० रायपुर	२१ २७३	२६ १३ ५३१	रायपुर
३१ रायसन	८ ४७४	५ ५३ ०२६	रायसन
३२ रीवा	६ ४६७	६ ७७ ८६४	रीवा
३३ विदिशा (भिलसा)	७ ३५३	६ ५८ ४२७	विदिशा
३४ शहडोल	१४ ०१६	१० २६ ८३६	शहडोल
३५ शाजापुर	६, १८६	६ ७८ ३५६	शाजापुर
३६ शिवपुरी	१० ३२५	६ ७६ ५६७	शिवपुरी
३७ सतना	७ ३६२	६ १३ ५३१	सतना
३८ सरगुजा	२२ ३४०	१३ २६ ४३६	श्रम्बिकापुर
३९ सागर	१० २५६	१० ६२ २६१	सागर
४० सिवनी	८ ७४३	६ ६८ ३५२	सिवनी
४१ सीधी	१० ५१६	७ ७६ ७८६	सीधी
४२ सीहोर	६ ३२५	१० ८४ ६३३	सीहोर
४३ होंगगावाड	१० ०१६	८ ०५ ८७०	होंगगावाड

नोट—कुल जिला का संख्या ६५ हा गई है । दो नय जिले है—भोपाल तथा राजनादगाव ।

मन्त्रिमंडल

- १ श्री प्रकाशचन्ध्र मट्टी
- २ श्री श्यामसुन्दरनागयण मुधान
- ३ श्री मधुराप्रसाद दुब
- ४ श्री किशोरानन्द शुक्ला

मुख्यमंत्री गृह पयटन पुरातत्व मिर्चार्ड एव
विद्युत शक्ति
वित्त पथक राजस्व तथा वन
महकारिता लोक स्वास्थ्य प्रभियंत्रिकी
राजस्व भू-सुधार

५ श्री अजुनसिंह	शिखा
६ श्री परमानन्द भार्गव पटेल	उद्याग एव वाणिज्य
७ श्री कृष्णपालसिंह	विधि तथा जेल
८ श्री बसंतराव उषक	कृषि खाद्य तथा आदिम जाति कल्याण
९ श्री चंद्रप्रताप तिवारी	याचना
१० श्री तेजनाल टेमर	लाक निर्माण विभाग
११ श्री त्रिमाहूणम महन्त	श्रम तथा पुनर्वासि

राज्य मंत्री

१ श्री राजा रामसिंह	स्थानीय स्वायत्त शासन (नगर)
२ कु० विमला वर्मा	लाक स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन
३ श्री बाबूगम चतुर्वेदी	पंचायत सामुदायिक विज्ञान तथा समाज कल्याण
४ श्री रणविजय प्रतापसिंह	गह
५ श्री भजीज कुरशी	मिचाद एव विद्युत
६ श्री उमराव सिंह	वन
७ श्री मुमुकलाल भेडिया	महकारिता
८ श्री टुमनलाल	विधि एव जल

उपमंत्री

१ श्री मनमाहनदाम	लाक निर्माण विभाग
२ श्री चंद्रप्रभाप शेंखर	वित्त
३ कु० कमला कुमारी	पंचायत समाज कल्याण
४ श्री दुर्गागम भूयवशी	राजस्व
५ श्री भवरसिंह पाते	शिखा
६ श्री शाभाराम पटेल	लाक स्वास्थ्य एव परिवार नियोजन
७ श्री बन्हेयानाल कामरिया	महकारिता

महाराष्ट्र

राजधानी—बम्बई क्षेत्रफल—३,०७,७६२ वर्ग कि० मा०,

जनसंख्या—५०,३३५,४८०

मुख्य भाषा—मराठी साम्प्रतता प्रतिशत—०६

राज्यपाल—मलादासवर जग, शासक दल—कांग्रेस, मुख्यमंत्री—वमन्तराव फूर्तिसिंह नाईक
 विधान सभा अध्यक्ष—गणराव बानसुरे मदनस्य संख्या—७१ इतीय स्थिति—कांग्रेस—
 २२१ ला० भा०—१० जनसभ—५ विद्यगना—१ समाज—० निर्—३ रिक्त—०
 समाजवादी प्रपायी—१६, मंत्री परिषद संख्या—०१ मंत्री—१० राज्यमंत्री—८
 उपमंत्री—१ राज्य श्री राष्ट्राय भाव—३०५ कराड राज्य प्रति ध्यक्ति भाव—६५४११६०

योजना परिव्यय (ररोड रुपया मे)

	तीसरी योजना	चतुर्थ योजना
कुल	३६० २०	१००० २१
केन्द्रीय सहयोग	१६२ ००	२४५ ५०
राज्य के साधन	२२८ २०	७५४ ७१

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि० मी०)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ अरनाता	१० १६७	१५ ०१,४७८	अरनाता
२ अमरावती	१२ २१०	११ ६१ २०६	अमरावती
३ अहमदनगर	१७ ०३५	२२ ६६ ११७	अहमदनगर
४ उस्मानाबाद	१४ ११७	१८ ६६ ६८७	उस्मानाबाद
५ औरंगाबाद	१६ २००	१६ ७१ ००६	औरंगाबाद
६ अनावा	७ १६८	१० ६३ ००३	अलीपुर्ग
७ अहमदाबाद	८ ०५६	२० ६८ ०४६	अहमदाबाद
८ अहमदाबाद	६ ०३	५६ ७० १७५	अहमदाबाद
९ अहमदाबाद	२१ ६४१	१६ ४० १३७	अहमदाबाद
१० अहमदाबाद	११ ७७१	२१ २३ १२१	अहमदाबाद
११ अहमदाबाद	६ ५५३	२२ ८१ ६६४	अहमदाबाद
१२ अहमदाबाद	१३ १६३	१६ ६२ १८१	अहमदाबाद
१३ अहमदाबाद	१० ६६२	१३ ६७ ७६२	अहमदाबाद
१४ अहमदाबाद	६ ६२८	१६ ६२ ६८८	अहमदाबाद
१५ अहमदाबाद	११ ५८२	१३ ६६ २०१	अहमदाबाद
१६ अहमदाबाद	१२ ६८६	११ ०१ ७७१	अहमदाबाद
१७ अहमदाबाद	१५ ६६०	२१ ७८ ०२६	अहमदाबाद
१८ अहमदाबाद	११ ७७७	१२ ८६ १२१	अहमदाबाद
१९ अहमदाबाद	६ ७६१	१२ ६२ ६७८	अहमदाबाद
२० अहमदाबाद	६ १६	११ ८१ ५८०	अहमदाबाद
२१ अहमदाबाद	१ ६ १	१६ २ ६७७	अहमदाबाद
२२ अहमदाबाद	१३ ०६०	१६ ८० १८३	अहमदाबाद
२३ अहमदाबाद	६ २०७	७ ७६ ५६२	अहमदाबाद
२४ अहमदाबाद	११ ० १	१ १ ८६०	अहमदाबाद
२५ अहमदाबाद	१० ६८	१३ ७ ७६	अहमदाबाद
२६ अहमदाबाद	८ १६	११ २६ ८ ०	अहमदाबाद

मन्त्रिमण्डल

१ श्री बसंतराव नाइक	मुख्यमंत्री, मामांय प्रशासन ग्राम विकास, गृह याजना, मूचना तथा पयटन
२ श्री बसंतराव दाना पाटील	मिचार्ई तथा विद्युत
३ श्री शंकरराव चह्वाण	कृषि एव राज्य सडक परिवहन
४ श्री मधुकरराव चौधरी	वित्त, लघुवचत तथा वन
५ श्री एन० एम० तिडवे	उद्योग श्रम एव विधायी मामल
६ डा० रफीक जकारिया	जनस्वास्थ्य तथा नागर विकास
७ श्री वाई० जे० माहित	महकागिता तथा आवास
८ श्री एच० जी० वतक	राजस्व पुनर्वास खाद्य तथा आपूर्ति
९ श्री ए० आर० अनतुले	भवन तथा संचार विधि एव याय तथा मत्स्य पालन
१० श्रीमती प्रतिभा पाटील	समाज कल्याण तथा सांस्कृतिक मामल
११ प्रो० ए० एन० नामजाशी	शिक्षा एव खेल
१२ डा० एम० बी० पापट	मद्यनिषेध

राज्यमन्त्री

१ श्री के० पी० पाटील	उद्याय विजला वन तथा पयटन
२ श्री शंकरराव पाटील	वित्त ग्रामीण विकास तथा श्रम
३ श्री मुत्तरराव सोलंक	राजस्व एव सट्टवारिता
४ श्री शरत्चंद्र पवार	गृह प्रचार, पुनर्वास खाद्य तथा आपूर्ति
५ श्री जी० एम० सरतायक	नगर विकास, जनस्वास्थ्य तथा भवन एव संचार
६ श्रीमती प्रभा राव	शिक्षा तथा याजना
७ श्री आर० ज० देवतल	कृषि मिचार्ई तथा राज्य सडक परिवहन
८ श्री डी० टी० रूपवत	समाज कल्याण, मत्स्य पालन तथा आवास

उपमन्त्री

१ श्री रामू पटल	वन तथा समाज कल्याण
-----------------	--------------------

कर्नाटक

राजधानी—बंगलौर, क्षेत्रफल—१ ९१ ७७३ बग कि० मी० जनसंख्या—२,९२ ९९ ०१६, साक्षरता प्रतिशत—३१ ४७ मुख्य भाषा—कन्नड।
 राज्यपाल—श्री माहनलाल मुखाडिया।
 योजना परिषद (लाख रुपया म)

तीसरी योजना	चतुर्थ योजना
-------------	--------------

कुल	२५ ०६९	३५ ००६
केंद्राय सहयाग	१५ ६५०	१७ ३००
राय के माधन	९ ४१९	१७ ७००

जिले का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ उत्तर कन्नड	१० २७६	८ ४६ १०५	कारवाड
२ कोल्हा (वर्ग)	४,१०८	३ ७८ २६१	मडकेरी
३ कोलार	८ २२३	१५ १६ ६२६	कोलार
४ गुलबर्गा	१६ २२४	१७ ३६ २२०	गुलबर्गा
५ चिकमगलूर	७ १६६	७ ३६ ६८७	चिकमगलूर
६ चित्रदुर्ग	१० ८५२	१३ ६७ ४५६	चित्रदुर्ग
७ तुमकूर	१० ६०६	१६ २७ ७२१	तुमकूर
८ दक्षिण कन्नड	८ ४४१	१६ ३६ ३१५	मंगलूर
९ धारवाड	१३ ७४६	२३ ४२ २१३	धारवाड
१० बगलार	८ ००३	३३ ६५ ५१५	बगलार
११ बलारी	६ ८६८	११ २२ ६८६	बलारी
१२ बीजापुर	१७ ०५६	१६ ८५ ५६१	बीजापुर
१३ बीदर	५ ४५१	८ २६ ०५६	बीदर
१४ बलगाँव	१३ ४१०	२४ २३ ३४२	बलगाँव
१५ मण्ड्या	४ ६५८	११ ५४ २७८	मण्ड्या
१६ मसूर	११ २४७	२० ७७ २३८	मसूर
१७ रायचूर	१४ ००५	१८ १५ ७४०	रायचूर
१८ शिवमोग्ग	१० ७४८	१३ १० ८८५	शिवमोग्ग
१९ हामन	६ ८२३	११ ०२ ३७०	हामन

मन्त्रिमण्डल

१ श्री देवराज उम	मुख्यमंत्री	गृह यात्रा तथा सामान्य प्रशासन
२ श्री एच० एम० चन्नेमण्णा	मावजनिव	काम
३ श्री एच० मिहा बीरप्पा	स्वास्थ्य	
४ श्री बी० बमबाल्लिगप्पा	नगरपालिका प्रशासन तथा आवास	
५ श्री मन्लिकाजुनम्बामा	पंचायतीराज सभाज कल्याण	
६ श्री ए० प्रार० बन्नीनारायण	शिक्षा	
७ श्री ए० शंकर प्रसा	महकामिना	
८ श्री एन० कृष्णमन्ना गौडा	राजस्व	
९ श्री क० एच० पान्नि	कृषि एवं वन	
१० श्री प्रजाज मन्	श्रम परिवहन पयन्त तथा वक्क	

११ श्री एम० वाई घोरपडे	वित्त
१२ श्री एम० एम० कृष्ण	उद्योग एव वाणिज्य
१३ श्री डी० व० नायकर	विधि तथा समन्वीय काय

राज्यमन्त्री

१ श्री बी० एम० वीजली	युवा सवा
२ श्री एच० एन० नागे गौडा	बहुत्वा सिंचाई
३ श्री बी० शिवना	वित्त
४ श्री के० टी० राठीड	मत्स्य पालन
५ श्री डी० सी० जामदुर	याजना एव सूचना
६ श्री एन० चिक्कर	पशुपालन
७ श्री एस० बी० नगराज	रशम विवाम
८ श्रीमता इवा वज	खाद्य तथा आपूर्ति

भेघालय

राजधानी—शिवाग, क्षेत्रफल—२२ ८८६ वर्ग कि० मा०, जनसंख्या—१० ११ ६६६
 मुख्यभाषा—ग्रामी साप्तरता प्रतिशत—२६ ५ राज्यपाल—श्री एन० पी० सिंह (असम)
 शासक दल—ग्रान पार्टी हिल लीडम कान्फ्रेंस मुख्यमन्त्री—क० विलियम्सन मगमा
 विधान सभा अध्यक्ष—श्री आर० एम० विगडो सदस्य संख्या—६०, दलीय स्थिति—
 ए० पी० एच० एल० सी०—३२ का—६ निदलीय—१६
 मन्त्री परिषद संख्या—७

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि० मी०)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
ग्रामी पहाडिया	१० ५२६	६,०५ ०८६	शिवाग
रुन्तिया पहाडिया	२ ८६३		
शिवाग	१३		
गारा पहाडिया	८,०८४		

मन्त्रिमण्डल

१ कप्तन विलियम्सन मगमा	मुख्यमन्त्री गृह धानि
२ श्री ए० डा० निकालमराय	उद्योग तथा कृषि
३ श्री बा० बी० निगन्ना	वित्त
४ श्री ई० बरह	जनकाय
५ श्री मन्काट्टा मागक	स्वास्थ्य परिवार नियोजन तथा शिक्षा

राज्यमन्त्री

१ श्री नारयिन पिय

गिमा युवा तथा ममात्र बन्ध्याग

२ श्री जी० एम० माराज

मायत्रित निर्माण गीमा तथा जनश्राम्य

मणिपुर

राजधानी—इम्फान क्षेत्रफल—२२ ३/६ बग कि० मी०,

जनसख्या—१० १२ ७५३

मुख्यभाषा—मणिपुरी साक्षरता प्रतिशत—३७ ७

राज्यपाल—श्री एल० पी० मिह ।

घोत्रना परिषद (राज्य स्तर पर)

तीमरी घोत्रना

षनुष घोत्रना

१ २८२

२ ८००

जिलो का क्षेत्रफल, जनसख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (बग कि० मी०)	जनसख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
मणिपुर उत्तर	३ ४१७	१ ०४ १७५	बराग
मणिपुर दक्षिण	४ ५८१	६८ ११४	चूडाचाम्पुर
मणिपुर पूर्व	४ ४०६	६० २२६	उख्रम्ल
मणिपुर पश्चिम	४ ३४४	४४ ६७५	ताभगलाग
मणिपुर मध्य	५ ६०५	७ ६३ २६०	इम्फाल

राष्ट्रपति शासन के अंतगत ।

नागालड

राजधानी—वाहिमा क्षेत्रफल—१६ ५२७ बग कि० मी०

जनसख्या—५ १६ ४४६

मुख्यभाषा—अगामी साक्षरता प्रतिशत—२७ २३

राज्यपाल—श्री एल० पी० मिह मुख्यमंत्री—होकिंगे सेमा ।

योजना परिव्यय (लाघ रुपया मे)

	तीमरी योजना	चतुथ योजना
कुल	१ ०८०	४,०००
केन्द्रीय सहयोग	१,०८०	३,५००
राज्य के साधन	—	५००

जिलो का क्षेत्रफल, जनसख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसख्या	सदरमुकाम
१	२	३	४
१ कोहिमा	७,२०६	१ ७५,२०४	कोहिमा
२ त्वेनसाग	५,४६६	१,७३,००३	त्वेनसाग
३ मोकोक्चुग	३,८५२	१,६८,२४२	मोकोक्चुग

मन्त्रिमण्डल

- | | |
|-----------------------------|---|
| १ श्री होकिशे सेमा | मुख्यमन्त्री, गृह, सामान्य प्रशासन, सूचना आदि |
| २ श्री जसोकी ब्रगामी | शिक्षा एवं सांस्कृतिक अनुसंधान |
| ३ श्री पी० सी० चित्तेन जमीर | वित्त एवं राजस्व सहायिता उद्योग एवं वाणिज्य |
| ४ श्री टी० एन० भ्रगामी | सांख्यिक निर्माण विभाग एवं विद्युत |
| ५ श्री अकुम इमलाग | विधि एवं समदीय वाय तथा कृषि |

राज्यमन्त्री

- | | |
|-----------------------|----------------------------------|
| १ श्री एन० एल० ओडिया | परिवहन एवं संचार तथा पुनर्वास |
| २ श्री इहेयो झिमामी | जनस्वास्थ्य एवं चिकित्सा सहायिता |
| ३ श्री कारामान भ्राभो | सामुदायिक विकास आदि |
| ४ श्री चिंगवाग कायाक | पशु चिकित्सा एवं कारागार |
| ५ श्री वेप्रेनी काफपो | शिक्षा एवं नमाज कल्याण |

उपमन्त्री

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १ श्री राइट हाग | सांख्यिक निर्माण विभाग |
| २ श्री सुलुतेम्बा भ्राभो | वन एवं मत्स्यपानन |
| ३ श्री निहावो सेमा | सूचना एवं प्रचार, |
| ४ श्री तोपी हान्सी | जनस्वास्थ्य एवं चिकित्सा |
| ५ श्री पुनुह | कृषि |

उडीसा

राजधानी—भुवनेश्वर क्षेत्रफल—१,५५,८४२ वर्ग कि० मी०, जनसंख्या २,१६,४४,६१५,

मुख्यभाषा—उडिया, साक्षरता प्रतिशत—२१.६२

राज्यपाल—श्री वी० डी० जेती, शासक—राष्ट्रपति शासन ।

योजना परिव्यय (लाख रुपया म)

	तामरी योजना	चतुर्थ याजना
कुल	२५ ४२३	२२ २६०
केन्द्रीय सहयोग	१३ ४४०	१६ ०००
राज्य के साधन	११ ९८३	६ २६०

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१	२	३	४
१ बटक	११ २११	३८ २७ ६७८	बटक
२ कलाहाण्डी	११ ८३५	११ ६३,८६६	भवानी पटना
३ केओझर	८ २४०	६ ५५,५१४	केओझर
४ बारापुट	२७ ०२०	२० ४३ २८१	बोरापुट
५ गजाम	१२ ५२७	२२ ६३ ८०८	छत्रपुर
६ डेंकानाल	१० ८२६	१२ ६३ ६१४	डकानान
७ पुरी	१० १५६	२३ ४० ८५६	पुरी
८ बलागार	८ ६०३	१२ ६३ ६५७	बलागीर
९ बालेश्वर	६ ३६४	३८ ३० ५०६	बालेश्वर
१० बौद्ध खन्मात	११ ०७०	६ २१ ६७५	फून्नाणी
११ मयूरभज	१० ४१२	१६ ३४ २००	बारिपना
१२ सम्बलपुर	१७ ५७०	१८ ४४ ८६८	सम्बलपुर
१३ सुन्दरगढ़	६ ६७५	१० ३० ७५८	सुन्दरगढ़

पजाब

राजधानी—चण्डीगढ़ क्षेत्रफल—५० ३६२ वर्ग कि० मी०

जनसंख्या—१ ३५ ५१ ०६०

मुख्यभाषा—पजाबी साक्षरता प्रतिशत (१९७१)—३३ ३६ राज्यपाल—श्री महेंद्रमोहन

बीधरी

विधानसभा अध्यक्ष—डा० नवलकृष्ण ।

योजना परिषद (लाघ रपया म)

	तीमरी याजना	चतुथ योजना
कुल	२५ ४२३	२६ ३५६
केन्द्रीय सहयाग	१६ ४४०	१० १००
राय के माधन	११ ६८३	१६,२५६

जिलो का क्षेत्रफल, जनसख्या और सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वग कि० मी०)	जनसख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ अमृतमर	५,०८८	१८,३५,५००	अमृतमर
२ कपूरथला	१ ६३३	४ २६,५१६	कपूरथला
३ गुरदासपुर	३ ५६०	१२ २६,२४६	गुरदासपुर
४ जालंधर	३ ३६६	१६,५४ ५०१	जालंधर
५ पटियाला	४ ५८३	१२ १५ १००	पटियाला
६ फिरोजपुर	१० १६५	१६ ०५,८३३	फिरोजपुर
७ भटिंडा	७ ०२२	१३ १८ १३४	भटिंडा
८ लुधियाना	३ ८५७	१६ १६ ६२१	लुधियाना
९ सगूर	५ १०७	११ ६६ ६५०	सगूर
१० होशियारपुर	३ ८८३	१० ५२,१५३	होशियारपुर
११ रोपड	२ ०६८	४ ७१ ५६४	रोपड
१२ फरीदकोट	—	—	फरीदकोट

- मन्त्रिमण्डल -

१ शानी जलमिह	मुख्यमन्त्री सामाज्य प्रशामन गृह
२ श्री उमरावसिंह	राजस्व भू-सुधार, ममदीय काय मन्त्रि
३ श्री हमराज शर्मा	वित्त, याजना नद्य बचत,श्रम एव राजगार
४ श्री गुरमलसिंह	शिक्षा चिकित्सा शिक्षा मन्त्रि
५ मास्टर गुरबन्नासिंह	वृषि वन मन्त्रि
६ श्री यश	तकनीकी शिक्षा कारागार तथा यावकारी वर

राज्यमन्त्री

१ श्री जोगेन्द्रपाल पाण्डे	मावजनिक निर्माण काय
२ श्री सन्तोषसिंह रघावा	सामुदायिक विकास पचायतराज, पशुपालन

३ बु० सरला पाराशर	रामाज बत्त्याण
४ स० सोहनसिंह जलालुस्मान	जन स्वास्थ्य बुटीर उद्योग
५ श्री दिलबागसिंह दलेका	परिवहन
६ स० बलवीरसिंह	स्वास्थ्य एव परिवार नियोजन
७ मरदार गुरवच्छानिह साविया	सिचाई एव विद्युत
८ स० गुरुशानसिंह	खाद्य एव आपूर्ति
९ श्रीमती गुरबिंदरकौर बरार	श्रावाम तथा गन्नी बस्ता उमूनन

उपमन्त्री

१ श्री बलराम	सहकारिता तथा सिचाई व विद्युत
२ श्री खुशहाल बहल	बुटीर उद्योग तथा औद्योगिक सहकारिता

राजस्थान

राजधानी—जयपुर क्षेत्रफल—३ ८२ २६७ वर्ग कि० मी०
जनसंख्या—२५ ७६५ ८०६ (२४ ७६५ ८०६) १९७१ म
मुख्यभाषा—हिंदी बोली—राजस्थानी साक्षरता प्रतिशत—१९ ०७
राज्यपाल—श्री जोगिंदरसिंह शासक दल—कांग्रेस मुख्यमन्त्री—श्री हरदेव जागी
सबसे सख्या—१८४ दलीप स्थिति—५० १४४ स्व० ११ जन० ८ मो० ४,
स० का०—१ कम्यु०—४ निद०—११, एक रिक्त
योजना परिषद (नाख रपया म)

	तामरी याजना	चतुथ योजना
बुल	२१ २३४	३१ ६ ०
केन्द्रीय सहायता	१६ ४०३	२२ ०००
राज्य के तथा ग्रय साधन	४ ८३१	६ ६००

जिलो का क्षेत्रफल जनसंख्या तथा सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	सदरमुकाम
१	२	३	४
१ अजमेर	८ ६७६	११ ६७ ७२६	अजमेर
२ अलवर	८ ३६२	१३ ६१ १६२	अलवर
३ उदयपुर	१७ २६७	१८ ०३ ६८०	उदयपुर
४ बाग	१२ ६३७	११ ६३ ८७०	बाग
५ गगानगर	२० ६२६	१३ ६६,०११	गगानगर

६ चित्तौडगढ़	१०,८७८	६,४४,६८१	चित्तौडगढ़
७ चुरू	१६,८२६	८,७४ ६३६	चुरू
८ जयपुर	१६,०००	२४ ८२,३८५	जयपुर
९ जालौर	१०,६४०	६ ६७,६५०	जालौर
१० जसलमर	३८,४०१	१ ६६ ७६१	जैमठमेर
११ जोधपुर	२२ ८६०	११ ५२ ७१२	जोधपुर
१२ झालावाड़	६ २१६	६,२२,००१	झालावाड़
१३ झुन्झुनू	५ ६२६	६ २६,२३०	झुन्झुनू
१४ टाक	७ २००	६ २५ ८३०	टाक
१५ टूंगरपुर	३ ७७०	५ ३० २६८	टूंगरपुर
१६ नागौर	१७ ७१८	१२ ६२,१७७	नागौर
१७ पाली	१० ३६१	६ ७०,००२	पाली
१८ रामवाडा	५ ०३७	६ ५४ ५८६	रामवाडा
१९ बाडमेर	२८ २८७	७ ७४ ८०४	बाडमेर
२० बीरानेर	२७,२३१	५ ७३ १६६	बीरानेर
२१ बूंदी	५ ५५०	८ ४६,०२१	बूंदी
२२ भरतपुर	८ ०६३	१६,६०,२०६	भरतपुर
२३ भीलवाडा	१० ६४०	१० ५४ ८६०	भीलवाडा
२४ सर्वाई माधोपुर	१० ५६३	११ ६३ ५२८	सर्वाई माधोपुर
२५ सिराही	५ १३४	४,२३,८१५	सिराही
२६ सीकर	७ ७३०	१० ४२ ६४८	सीकर

मंत्रिमंडल

- १ श्री हरदय जोशी
मुख्यमंत्री वार्मिक मामाय प्रशासन राजनीतिक मंत्रिमंडल गह (नागरिक सुरक्षा सहित), उद्योग जन अभियाग प्रकाल एव वाड महायता पयटन राजस्व उपनिवेशन वन सनिक क-याण दवस्थान वकफ
- २ श्री परमराय मदेरणा
वित्त, प्रायानना आर्थिक एव माणियवी, आवकारी एव करारापण
- ३ श्री चन्दमन धद
दृष्टि, पशुपालन, भेड व उन खाद्य एव नागरिक रमद
- ४ श्री शिवचरण माधुर
मिचार्ड सावजनिक निमाण विसुत राजम्भान गह शिक्षा भाषा विभाग भाषामी अल्पमन्थक, कान् एव याय, विधानसभावी मामने
- ५ श्री हारालान दबपुरा
चिविरमा एव स्वास्थ्य (परिवार नियानन महि यातायात, समाज कल्याण, धम एव नियानन
- ६ श्री सतमिह
- ७ श्री मोहनराज छगाणी

८ श्री रामनारायण चौधरी	सहकारिता, स्वायत्त शासन, नगर आयोजना, पंचायत एवं सामुदायिक विकास, जल
१ श्रीमती कमला बेनीवाल	जनसम्पर्क, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य (परिवार नियोजन सहित) श्रम एवं नियोजन ममाजकल्याण
२ श्री जुझार सिंह	खनिज (स्वतंत्र चाज) वित्त आयोजना आर्थिक एवं सांख्यिकी आबकारी एवं करारोपण
३ श्री मूलचन्द मीणा	खादी एवं ग्रामीणोद्योग (स्वतंत्र चाज) राजस्व एवं म-मुधार उपनिवेश वन सनिक कल्याण देवस्थान

राज्य मन्त्री

४ श्री फारूक हसन	शिक्षा भाषा विभाग विधि एवं न्याय कानूनी मामले निर्वाचन
५ श्री मुशोलाल महावर	कृषि पशुपालन भंड व ऊन, स्वायत्त शासन नगर आयोजना
६ श्री गुलाब सिंह शक्तावत	सामाय प्रशासन, गड (नागरिक सुरक्षा सहित) उद्योग जन अभियोग अकाल एवं बाढ महाधना
७ श्री बनवारा लाल बरवा	सहकारिता पंचायत एवं विकास मुद्रण एवं लेखन सामग्री जेन

उत्तर प्रदेश

राजधानी—लखनऊ क्षेत्रफल—२ ६४ ४१३ वर्ग कि० मा०

जनसंख्या—(१९७१)—८ ८३ ४१ १४४

राज्यपाल—श्री अकबरअली खां शासक दल—बाग्रेस

मुख्यभाषा—हिन्दी साक्षरता प्रतिशत—२१ ६४

मुख्यमन्त्री—श्री हमधतानन्द बहुगुणा

विधान सभा अध्यक्ष—श्री आत्माराम गाविंद खेर सदस्य संख्या—६२५

राज्य की राष्ट्रीय आय—२१०७ करोड रुपय, प्रति व्यक्ति आय—२४७ रुपय

योजना परिव्यय (लाख रुपया म)

	तामरा योजना	चतुर्थ योजना
कुल	५६ ०२५	६६,५००
केंद्राय महयाग	३५ ६२०	५२ ६००
राज्य क माधन	२० ४४५	४३ ६००

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१	२	३	४
१ अन्नमाडा	७,०२३	७५० ०३८	अन्नमाडा
२ अलीगढ	५ ०२४	२१ ११ ८२६	अलीगढ
३ आगरा	४ ८१६	२३ ०८ ६२८	आगरा
४ आजमगढ	५ ७४४	२८ ५७,४८४	आजमगढ
५ इटावा	४ ३२७	१४ ४७ ७००	इटावा
६ इलाहाबाद	७,२५५	२६ ३७,२७८	इलाहाबाद
७ उत्तरकाशी	८ ०१६	१ ६७ ८०५	उत्तरकाशी
८ उन्नाव	४ ४८	१४ ८४ २६३	उन्नाव
९ एटा	४ ४४६	१५ १७,६२५	एटा
१० बानपुर	९ १२१	२६ ६६ २३०	बानपुर
११ खेरी	७ ९६१	१४ ८६ ५६०	लखीमपुर
१२ गढ़वान	५ ४४०	५ ५३,०२८	पौड़ी
१३ गाजापुर	२ २८१	१५ ३१,६५४	गाजापुर
१४ गाडा	७ ३२१	२१ ०२ ०२६	गाडा
१५ गारखपुर	६ ३१६	३० २८ १७७	गारखपुर
१६ चमोली	६ १२१	२ ६० ५७१	चमोली
१७ जालौन	४ ५४६	८ १३ ४६०	उरुन
१८ जौनपुर	४ ०४०	२० ०५ ६२४	जौनपुर
१९ शामी	१० ०६६	१३ ०७ ०४८	शामी
२० टीहरी गढ़वान	४ ४०१	३ ६७ ३८५	नरदनगर
२१ देवरिया	५ ४००	२८ १२ ३१०	देवरिया
२२ दहरादून	२ ०८८	५ ७७ २०६	दहरादून
२३ ननीतान	९ ७६०	७ ०८ ०८०	ननीतान
२४ पिथौरागढ	७ २१७	२ १३ ७४७	पिथौरागढ
२५ पौनीभीत	२ ५०४	७,५० ११४	पौनीभीत
२६ प्रतापगढ़	३ ७१०	१४ २० ७०७	बेना
२७ फतहपुर	४ १६८	१० ७८ २५४	फतहपुर
२८ फर्रुखाबाद	४ २४६	१५ ५६ ६२०	फतहगढ़
२९ फर्रुखाबाद	४,६२७	१६ २७ ८८१	फर्रुखाबाद
३० बन्सगाँव	५ १५८	१६ ६५ ६६७	बन्सगाँव
३१ बलिया	२ १८३	१५,८८ ६२५	बलिया

३०	बग्गी	७३०६	१६८१०६०	बग्गी
३३	बटगाँव	६८७१	१७६६७७	बटगाँव
३६	बोरा	७६४४	११८०११४	बोरा
३४	बागावडी	६४१०	१६३४५६३	बागावडी
३६	बिजौर	६८५०	१६६०१८४	बिजौर
३७	बुनागाँव	४८६५	२०७३३६३	बुनागाँव
४०	बरली	४१०५	१७,७६८६७	बरली
३६	मधुरा	३७६७	१०६००७७	मधुरा
४०	मिरजापुर	११३०१	१४६१०८८	मिरजापुर
४१	मुरागाँव	५६४६	२४२८६७१	मुरागाँव
४२	मुजावरनगर	४२४५	१८०२०८६	मुजावरनगर
४३	मेरठ	५६४४	३३६६६५३	मेरठ
६४	मानपुरी	४२५४	१४६५५३६	मानपुरी
६५	रामपुर	२,३७२	६०१००६	रामपुर
४६	रायबरेली	६६०३	१४१०८१०	रायबरेली
६७	लघनऊ	२५०८	१६१७८५८	लघनऊ
४८	वाराणसी	५०६१	२८५०४५६	वाराणसी
४६	शाहजहापुर	६५८१	१०८६१०६	शाहजहापुर
५०	सहारनपुर	५५२५	२०५४८३६	सहारनपुर
५१	सीतापुर	५,७३८	१८८४६००	सीतापुर
५२	मुलतानपुर	४४२४	१६४२६०८	मुलतानपुर
५३	हमीरपुर	७१६२	६८८,२१५	हमीरपुर
५४	हरदोई	६०१०	१८४६५१६	हरदोई

मन्त्रीमंडल

१	श्री हमबतानदन बहुगुणा	मुख्यमंत्री	सामाय प्रशासन गृह योजना आदि
२	श्री अजीत प्रतापसिंह	पयटन एवं वन	
३	श्री बलदेवसिंह श्राय	सामुदायिक विकास तथा पंचायत राज	
४	श्री नारायणदत्त तिवारी	वित्त भारी उद्योग आदि	
५	श्री लक्ष्मीशंकर यादव	सावजनिक निर्माण कार्य	
६	श्री महमूद अलीखा	तिर्चाई	
७	श्री स्वामीप्रसाद सिंह	राजस्व	
८	श्री धमदत्त वर्ध	स्थानीय स्वायत्त शासन एवं आवास	
९	डा० रामजीलाल सहायक	तकनीकी शिक्षा	
१०	श्री रामचंद्र विक्रम	कृषि पशुपालन तथा लघु सिंचाई	
११	श्रीमती राजद्र कुमारी बाजपथी	खाद्य एवं आपूर्ति	
१२	श्री सलिनगराम जायमवाल	चिकित्सा एवं परिवार नियोजन	
१३	श्री इस्तिफा हुमान	उद्योग	
१४	श्री राजमंगल पाण्डे	कानून न्याय धर्म तथा परिवहन	
१५	श्री देवराज	जल तथा आबकारी	

राज्यमन्त्री

१ श्री नरद्रसिंह भडारी	पवतीय विकाम
२ श्री राजविहारी मिह	प्राथमिक शिक्षा
३ श्री अफ्रीनाथ दीक्षित	सहकारिता
४ श्री अजीजुररहमान	वित्त मंत्री से सम्बद्ध
५ बाजी जरीन अब्बासी	सामुदायिक विकाम मंत्री से सम्बद्ध
६ श्री जगनाथ प्रसाद	कृषि व पशु पालन मंत्री से सम्बद्ध
७ श्री नवाबसिंह यादव	आवास मंत्री से सम्बद्ध
८ श्री वीरेन्द्रस्वरूप भटनागर	वित्त मंत्री से सम्बद्ध
९ श्रीमती माहसिना किदवई	खाद्य व आपूर्ति से सम्बद्ध
१० श्री शिवनाथ मिह	स्वास्थ्य व परिवार नियोजन से सम्बद्ध

उपमन्त्री

१ श्री आगा जनी	आवास से सम्बद्ध
२ श्री चचलसिंह	श्रम व प्याय से सम्बद्ध
३ श्री जे० एन० प्रसाद	स्वास्थ्य व परिवार नियोजन से सम्बद्ध
४ श्री देवेन्द्रसिंह	मिचार्ड मंत्री से सम्बद्ध
५ श्री वीर बहादुरसिंह	वित्त व महकारिता मंत्री से सम्बद्ध
६ श्री भानुप्रताप सिंह	कृषि मंत्री से सम्बद्ध
७ श्री रामकृष्ण द्विवेदी	राजस्व मंत्री से सम्बद्ध
८ श्री नालमाराम	उद्योग मंत्री से सम्बद्ध
९ श्री शिवलाल बाल्मीकि	सामुदायिक विकाम से सम्बद्ध

तमिलनाडु

राजधानी—मद्रास	क्षेत्रफल—१ ०० ०६६ वर्ग कि० मा०
जनसंख्या—४ ११ ६६,१६८	मुख्यभाषा—तमिल
राज्यपाल—क० क० शाह	शासक दल—इ० मु० क०
मुख्यमन्त्री—श्री एम० वरुणानिधि	
सदस्य सख्या—२५५	
मन्त्री परिषद सख्या—१३	
राज्य की राष्ट्रीय आय—२,०६४ २० करोड़ रु०	प्रति व्यक्ति आय—५५१ रुपये
योजना परिषद (लाख रुपया में)	

तीसरी योजना

चतुर्थ योजना

कुल	३६,२३३	५१,६३६
केंद्राय सहाय	१२,६८०	२०,२००
राज्य व माघन	२१,५५३	३१,४३६

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना)	मुख्यालय
१ उत्तर प्रारवाड	१० ०६५	३७ ५५ ७६७	बन्नार
२ बन्नाकुमारी	१ ६८६	१० २० ५६६	नागरवाइन
३ कोयम्बतूर	१५ ६७३	६३ ७३ १७८	कोयम्बतूर
४ चिंचलपट्ट	७ ६२०	०६ ०७ ५६६	बाबापुरम
५ तत्रावूर	६ ७३१	३८ ४० ७३०	तत्रावूर
६ तिरुचिचरापल्लि	१६ २६१	३८ ६८ ८१६	तिरुचिचरापल्लि
७ तिरुनेल्वेलि	११ ४३३	३० ०० ५१५	तिरुनेल्वेलि
८ दक्षिण प्रारवाड	१० ८६८	३६ १७ ७३३	कड्डानूर
९ धमपुरी	६ ६६३	१६ ७७ ७७५	धमपुरी
१० नीलगिरि	० ५४६	६ ६४ ०१५	उत्तमडलम
११ मडुर	१० ६०६	३६ ५८ १६७	मडुर
१२ मद्रास	१५८	२६ ६६ ४६६	मद्रास
१३ रामनाथपुरम	१२ ५७८	२८ ६० ००७	मडुर
१४ सलम	८ ६४३	०६ ६२ ६१६	सलम

मन्त्रिमण्डल

१ श्री एम० करणानिधि	मुख्यमंत्री, सामाजिक प्रशासन मन्त्रिमण्डल सूचना तथा प्रचार
२ श्री वी० प्रार० नडुचजियन	शिक्षा राजस्व तथा पयटन
३ श्री के० अम्बलगर	जनस्वास्थ्य
४ श्री एन० वी० नटराजन	सूचना तथा जनसम्पर्क
५ श्रीमती सत्यवती भुत्तू	हरिजन कल्याण
६ श्री पी० यू० शनमुगम	खाद्य तथा स्थानीय प्रशासन
७ श्री एस० माधवन	उद्योग
८ श्री एम० जै० सादिकपाशा	जन कान
९ श्री एम० पी० आदित्यनार	सहकारिता कृषि तथा खाद्य उत्पादन
१० श्री अनहिल धर्मलिंगम	स्थानीय शासन
११ श्री व० राजाराम	पिछडावग तथा श्रमिक
१२ श्री श्री० पी० रामन	विद्युत
१३ श्री एम० रामचन्द्रन	परिवहन

त्रिपुरा

राजधानी—अगरतला क्षेत्रफल—१०४७७ वर्ग कि० मा०

जनसंख्या—१५५५३६२, साक्षरता प्रतिशत—२३५

राज्यपाल—श्री एन० पी० मिह

योजना परिषद (साठ ग्पया म)

	तामरा याजना	चतुय योजना
कुल	१,५२१	३,१६१

जिलो का क्षेत्रफल तथा जनसन्ख्या

जिला	क्षेत्रफल (जिलोमीटर)	जनसन्ख्या
उत्तर त्रिपुरा	३ ५४१	६,०४,००६
मणिण त्रिपुरा	३ ५७७	३ ६६ ७२८
पश्चिम त्रिपुरा	३ ३५६	७,५१ ६०५

मन्त्रिमण्डल

- १ श्री मुख्यमाय मनगुप्त मुख्यमन्त्री, गृह शिक्षा याजना छाद्य तथा आपूर्ति, कृषि उद्योग
- २ श्री मनारजन नाथ जनस्वाम्थ्य तथा चिकित्सा, विधि कारागार
- ५ श्री देवद्विंशार चौधरी वित्त पुनर्वासि
- ४ श्री हरिधरन चौधरी जनजाति तथा हरिजन कल्याण

उपमन्त्री

- १ श्रीमता बमन चन्द्रवर्ती समाज, शिक्षा, महिला कायक्रम बद्ध तथा श्रमहाय महिला कल्याण आदि
- २ श्री मनमूर भल्ली कृषि तथा सामुदायिक विकास
- ३ श्री शलेश श्राम शिक्षा महकारिता पचायत आदि

पश्चिमी बंगाल

राजधानी—कलकत्ता, क्षेत्रफल—८७ ८५३ वर्ग कि० मी०

जनसन्ख्या—१ ६७१—६,४३ १२ ०११

मुख्यभाषा—बंगला साक्षरता प्रतिशत—३३ ५

राज्यपाल—ए० एन० डायम मुख्यमन्त्री—श्री सिद्धाय शर्कर र

योजना परिषद (साठ ग्पया म)

	तीमरी याजना	चतुय याजना
कुल	३० ०६८	३२,२५०
कल्याय सन्धाय	१५ ५१०	२२ १००
राज्य क माधन	१४ ५५८	१० १५०

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना के अनुसार)	मुख्यालय
१ बलकत्ता	१०४	३१ ४८,७४६	कलकत्ता
२ कूचबिहार	३ ३८६	१४ १४ १८३	कूचबिहार
३ जनपाईगुडी	६,०४५	१७ ५० १५६	जनपाईगुडी
४ दार्जिलिंग	३,०७५	७ ८१ ७७७	दार्जिलिंग
५ नदिया	३ ६२६	२२ ३०,२७०	कृष्ण नगर
६ पश्चिम दिनाजपुर	५ २०६	१८ ५६,८८७	बालूरघाट
७ पुरुलिया	६,२५६	१६ ०२,८७५	पुरुलिया
८ बाकुडा	६ ८८१	२० ३१,०३६	बाकुडा
९ मालदा	३ ७१३	१६,१२ ६५७	इंगलिश बाजार
१० मुंगिदाबाद	५,३४१	२६,४० २०४	बहरामपुर
११ मिदनापुर	१३ ७२४	५५ ०६,२४७	मिदनापुर
१२ बद्धवान	७ ०२८	३६ १६ १७४	बद्धवान
१३ बीरभूम	४ ५५०	१७,७५ ६०६	सूरा
१४ हावडा	१ ४७४	२४ १७ २८६	हावडा
१५ हुगली	३ १४५	२८ ७२ ११६	चुचुडा
१६ २४ परगना	१३ ७६६	८४ ४६ ४८२	झलीपुर

मन्त्रिमण्डल

- | | |
|-------------------------------------|--|
| १ श्री मिडाय शंकर राय | मुख्यमंत्री गृह पयन्त तथा ससदीय मामला विकास तथा नियोजन सूचना व जनसम्पर्क विधि तथा शिक्षा |
| २ श्री मृत्युञ्जय बनर्जी | शिक्षा (युवा तथा रहित) |
| ३ श्री अरुबरान्त अनाउत गणि या चौधरी | मिर्चाई व नये माग विद्युत विभाग |
| ४ श्री तरणकानि घाय | वाणिज्य व उद्योग एवं गृह विभाग पयन्त विभाग |
| ५ श्री गहर पाय | वित्त तथा आबकारी मन्त्रा |
| ६ श्री गुरुपन् या | भूमि उपयोगिता व सुधार एवं भूमि राजस्व |
| ७ श्री गोताराम महता | वन तथा पशुपालन पशु चिकित्सा विभाग |
| ८ डा० गायानराम नाग | श्रम एवं रण कारखाना |
| ९ श्री शानसिंह मान्तरान | परिवहन जन व गृह विभाग व समन्वय मामला |
| १० श्री मन्नाय राय | मन्त्राय व पुनवाम अनुसूचित जाति व जनजाति विभा |

- ११ श्री भोलानाथ सेन
१२ श्री अरुण मत्र
१३ श्री अजित पत्र

- १ श्री प्रदीप भट्टाचार्य
२ श्री धानंद मोहन विश्वास

- ३ श्री प्रमोद कानि धाय
४ डा० मोहम्मद फजल हक
५ श्री इनिश लकरा
६ श्री सुब्रतो मुखर्जी
७ श्री गोविन्द नस्तर
८ श्री रामचरण सरावगी
९ श्री मतीश मिहा

- १ श्रीमती अमला सारेन
२ गजद गुरग

- ३ श्री सुनीति चटर्जी

५२६

लाभ निमाण व धावाम
महवारिता तथा मन्त्र्यपालन
स्वास्थ्य तथा परिवार नियोजन

राज्यमन्त्री

अम व रुण कारखान
कृषि व मामुनायिक विकास ग्रामाण जन धापूर्ति
विधि
घात्र तथा नागरिक धापूर्ति
गह जेन पयन्त
समाज कल्याण विभाग
सूचना व जनमम्पक
स्वास्थ्य एव परिवार नियाजन
लोन निमाण व धावाम
मावजनिक उपनम कुटार व लघु उद्याग

उपमन्त्री

शिक्षा (युवा सेवा व खेलकूद छाडकर)
वाणिज्य व उद्याग तथा गह मन्त्रानय व अधीन
पयटन
मिचाई व जलमाग विद्युत ।

हैदराबाद वनस्पति लिमिटेड

(रजि० कार्यालय मोला अली, हैदराबाद ५०००४०)

फोन ७१७२८ व ७१८४६

● उत्तम वनस्पति ● शुद्ध परिस्त्रुत तेल

और

● वढिया नहाने के सावुन के निर्माता

प्रशासकीय कार्यालय

बिक्री मण्डार

५ ६ ०७०, जास सन
गन फाउडरी हैदराबाद १
फोन ४५७१३ व ४५७१४

बगम बाजार
हैदराबाद (फोन ५३८४१)
घात्पाण स्टार
बिजयवाडा (फोन ७३२३७)

केन्द्र शासित राज्य

अरुणाचल

राजधानी—शिलांग क्षेत्रफल—८३,१७८ जनसंख्या—४,६७,५११
 मुख्य आयुक्त—वे० ए० ए० राजा

जिला का क्षेत्रफल जनसंख्या तथा सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (१९७१ जनगणना के अनुसार)	जिला मुख्यालय
कामग	१३,७२४	८६,००१	बोमडीला
निरप	६,६०७	६७,४७०	खासा
लोहित	२४,४२७	६२,८६५	तजू
मियांग	२३,७२३	१,२१,६३६	अलांग
मुबनसिरी	१४,७६७	६६,२३६	जिरो

अडमान निकोबार

राजधानी—पाटलेयर क्षेत्रफल—८२६३ वर्ग कि० मी०
 जनसंख्या—१,१५,१३३ मुख्यभाषा—बहुभाषी साक्षरता प्रतिशत—४७.३
 मुख्यायुक्त—श्री हरमन्तर मिह मुख्य सचिव—एम० सी० वाजपयी ।
 योजना परियोजना (लाघ र्पया म)

	तीमरी योजना	चतुर्थ योजना
कुल	६१७	११००

चण्डीगढ़

जनसंख्या—२,५७,२११ क्षेत्रफल—११६ वर्ग कि० मी०
 मुख्यभाषा—हिन्दी-पंजाबी सहायक—ग० पी० मायूर
 योजना परियोजना (लाघ र्पया म)

	तामरा योजना	चतुर्थ योजना
कुल	८१६	७१०

दादरा नगर हुवेली

राजधानी—सिलवासा क्षेत्रफल—४६१ वग कि० मी० मुख्यालय—निलवामा
 जनसंख्या—७४ १७०, साक्षरता प्रतिशत—१४ ८६
 मुख्यभाषा—बहुभाषी प्रशासक—श्री एस० वे० बनर्जी ।
 योजना परिव्यय (लाख रुपया म)

कुल	तीसरी योजना २५	चतुर्थ योजना २२४
-----	-------------------	---------------------

दिल्ली

राजधानी—दिल्ली क्षेत्रफल—१ ४८५ वग कि० मी०
 जनसंख्या—४० ६५ ६६८
 मुख्यभाषा—हिन्दी साक्षरता प्रतिशत—५६ ६५
 उपराज्यपाल—श्री बालेश्वरप्रसाद शासक दल—कांग्रेस मुख्य कायकारी पापद—
 श्री राघारमण
 महानगर परिषद अध्यक्ष—मीर मुश्ताक अहमद सदस्य सत्या—५६ दलीय स्थिति—
 का०—४४, जन०—५ स० का०—२ निद०—१ मुस्लिम लीग—१ सोपा—३,
 कायकारी पापद संख्या—४

महानगर परिषद

१ श्री राघारमण	मुख्य कायकारी पापद
२ श्री श्रीमप्रकाश बहल	कायकारी पापद नागरिक मभरण व धर्म आदि
३ श्री भागेराम	कायकारी पापद वित्त
४ श्री विशान स्वरूप	कायकारी पापद समाज बल्याण आदि

गोआ, दमण व दीव

राजधानी—पंजिम क्षेत्रफल—३ ८१३ वग कि० मी०
 जनसंख्या—८,५७ ७७१
 मुख्यभाषा—मराठी व कर्णवी साक्षरता प्रतिशत—४४ ५३
 उपराज्यपाल—श्री एम० क० बनर्जी शासक दल—गामानक दल
 सदस्य संख्या—३२ ।

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या व सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वग कि० मी०)	जनसंख्या (१९७१ की जन गणना के अनुसार)	मुख्यालय
१ गोआ	३ ७०१	७ ६५ १२०	पणजी
२ दमण	७२	३८ ७३६	दमण
३ दीव	६०	२४ ८१२	दीव

लक्षदीय, मिनिकाय, अमीनदीयी द्वीप समूह

राजधानी—नररहि, क्षेत्रफल—३० वग कि० मा०

जनसंख्या—१६७१—३१ ८१०

मुख्यभाषा—बहुभाषी प्रशासन—श्री व० टी० मनन ।

मिजोरम

क्षेत्रफल—७१ ०८७ वग कि० मी० जनसंख्या— २० ३६० मुख्यतय—एत्रा

मुख्यभाषाए—मिजा और अयजा

मुख्यमंत्री—श्री चतछगा उपराज्यपाल—शातिप्रिय मुग्जर्जी ।

पाण्डिचेरी

राजधानी—पाण्डिचेरी क्षेत्रफल—६८० वग कि० मी०

जनसंख्या—१६७१—६७१ ७०७

मुख्यभाषा—तमिल मन्थानम तल्लू साक्षरता प्रतिशत—६३ ७

उपराज्यपाल—श्री छेनीलान ।

जिलो का क्षेत्रफल, जनसंख्या व सदरमुकाम

जिला	क्षेत्रफल (वग कि० मा०)	जनसंख्या (१६७१ जनगणना)	मुख्यालय
कारैकाल	१६१	१ ०० ०६२	कारैकाल
माहे	६	२३ १३४	माहे
पाण्डिचेरी	२६०	३ ४० २४०	पाण्डिचेरी
यनाम	२०	८ २६१	यनाम

१९७३ : कठिनाइयों का वर्ष

सन १९७३ भारत के लिये कमरतोड़ महगाई तथा वार्षिक कठिनाइया का वर्ष रहा। वर्ष का प्रारम्भ अनाज व बिजला की कमी के संकट से हुआ तो अंत अखबारी कागज व तेल के भारी अभाव से हुआ।

सरकार ने अनाज के सम्भावित अभाव को दृष्टिगत रखते हुए गहू के थोक व्यापार का सरकारीकरण किया। अनाज का उत्पादन बढ़ाने हेतु रबी अभियान में लगभग १०० करोड़ रुपये अतिरिक्त व्यय करने पर भी खाद्यान्न उत्पादन में ६५ प्रतिशत की गिरावट आई। विदेशों से ६१ लाख टन अनाज मगवाना पड़ा। इससे २० लाख टन गेहूँ अर्थन के रूप में लिया गया।

मूल्य-वृद्धि भी १९७३ के दौरान चरम सीमा तक पहुँच गयी। एक वर्ष के दौरान लगभग २४ प्रतिशत मूल्य वृद्धि हुई। अनेक वस्तुओं के मूल्य तो डबोड़े तक हो गये।

अखबारी कागज तथा बिजला की भी भारी कमी रही। अखबारी कागज की कमी के कारण जहाँ समाचार-पत्रों के फोटे में ३० प्रतिशत कटौती करनी पड़ी वहाँ कोयला व बिजली के अभाव के कारण उद्योग क्षेत्र को भारी संकट का सामना करना पड़ा। अरब इस्राइल युद्ध के दौरान अरब देशों ने अचानक तेल में कटौती के साथ-साथ मूल्य वृद्धि कर भारत व विश्व के समस्त एक भीषण संकट ही उत्पन्न कर लिया। तेल व पेट्रोल की मूल्य वृद्धि व कमी का भी उद्योग पर भारी दुष्प्रभाव पड़ा। इन सब कारणों से देश वार्षिक संकट की सम्भावना से त्रस्त हो उठा।

दश में तेजी से हुई मूल्य-वृद्धि तथा वस्तुओं के अभाव से समाज के प्रत्येक वर्ग में असंतोष व आक्रोश फैलना स्वाभाविक था। अंत इसका परिणाम सरकारी कर्मचारियों, शिक्षकों, रेल कर्मचारियों व डाक्टरों आदि की हड़ताल के रूप में सामने आया। औद्योगिक क्षेत्र के कर्मचारियों ने भी हड़ताल का सहारा लिया। अंत प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी तथा राष्ट्रपति श्री गिरि तंक ने इन संकटों का धैर्य से सामना करने तथा वार्षिक विकास के लिये हड़तालों का अंत समाप्त करने का आह्वान किया।

अनाज वनस्पति व चीनी आदि की भारी महगाई व अभाव के कारण आम जनता ने इस वर्ष धुंध-होकर-प्रदर्शनों व हिंसा तक का सहारा लिया। स्थान-स्थान पर सरकार विरोधी प्रदर्शनों तथा अंत के लिये दंगे हुए। छात्र आंदोलन भी १९७३ के दौरान व्यापक रूप धारण किया। लखनऊ चारणनी भरत निल्ली आदि में अलग-अलग कारणों से छात्रों ने आंदोलनों का मार्ग अपनाया। लखनऊ में ता. पी० ए० सी० व छात्रों व संयुक्त आन्दोलन ने अत्यन्त उग्र रूप धारण कर लिया तथा अंत परिणामस्वरूप पी० ए० सी० में विद्रोह ही कर डाला।

राजनीतिक उथल-पुथल

१९७३ के दौरान आपसी उथल-पुथल व दलबन्दी के कारण भारत के अनेक राज्यों

की कांग्रेसी सरकारों गिरी व बनी। आलोच्य वप म उड़ीसा, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं गुजरात म राष्ट्रपति शासन लागू करना पडा। बिहार, राजस्थान मैसूर और पांडिचेरी मे मन्त्रिमण्डल को सकट से गुजरा पडा। आंध्र विभाजन की माग को लेकर भीषण हिंसक घटनाएँ हुई तथा अंत मे मन्त्रिमण्डल को त्यागपत्र देना पडा। १८ जनवरी को राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। दिसम्बर के तीसरे सप्ताह मे आंध्र सरकार का गठन सम्भव हो सका।

इसी प्रकार उड़ीसा म कांग्रेसियो ने ही मुख्यमंत्री श्रीमती नदिनी सत्यधी के विरुद्ध तथा गुजरात मे श्री घनश्याम भोजा के विरुद्ध विद्रोह खडा कर उन्हें त्यागपत्र का विवश कर दिया। उत्तर प्रदेश म पी० ए० सी० के विद्रोह के बाद श्री कमलापति त्रिपाठी की सरकार को १२ जून को त्यागपत्र देना पडा। राष्ट्रपति शासन के बाद श्री हम्बतीनदन बहुगुणा क नतत्व म नयी सरकार का गठन हुआ।

मणिपुर विधानसभा के १० विधायकों द्वारा दल बदल किये जाने के परिणामस्वरूप २८ मार्च को वहा भी राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। राजस्थान म मुख्यमंत्री श्री बरकतुल्लाखा क निधन के बाद मुख्य मंत्री पद के दावेदारो म सपप की नौबत आते आते टली।

रूस से समझौता

देश का आर्थिक संतुलन बनाये रखने के लिये भारत सरकार ने २ फरवरी का नयी औद्योगिक नीति की घोषणा की। ५ जुलाई १९७३ को भारत और बंगलादेश के बीच तीन वर्षीय व्यापारिक समझौता सम्पन्न हुआ।

सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अध्यक्ष श्री ब्रेझनेव २६ नवम्बर को दिल्ली पधारे तथा ३० नवम्बर को भारत रूस के बीच महत्वपूर्ण आर्थिक और वाणिज्य विषयक समझौता सम्पन्न हुआ। सोवियत संघ ने तेल सकट से उबारने के लिये तेल स्रोतों को विस्तार करने हेतु भारत को प्राविधिक सहायता देने की घोषणा की। श्री ब्रेझनेव ने घोषणा की— सोवियत संघ मुख दुख म भारत के साथ रहेगा। सोवियत जनता भारत का आर्थिक उन्नति करने देखकर प्रसन्न होगी।

३० नवम्बर को जारी भारत रूस समुक्त विज्ञप्ति मे कहा गया कि दोनों पक्षों का विश्वास है कि देशों का अपने मबध एक दूसरे की सीमाओं की अखंडता प्रभुसत्ता के समा दर एक दूसरे क घरेलू मामलों मे हस्तक्षेप न करने तथा समानता व पारस्परिक हित के आधार पर बनाने चाहिए। इस प्रकार एशिया की स्थायी शांति का क्षेत्र बनाया जा सकता है।

संयुक्त घोषणा मे यह भी प्रकट किया गया है कि तिरस्त्रीकरण के लिए विश्व सम्मेलन की ठाग तयारी का अन्वसर आ गया है। इस प्रसंग म रूस अमरीकी समझौत का जिक्र करते हुए १०० रा० का विशेष समिति को सहयोग देने का फमला किया गया।

संयुक्त घोषणा म उपमहाद्वीप की समस्याओं के संबध म कहा गया है कि पाकिस्तान द्वारा बंगलादेश का मायता देने स इस क्षेत्र म राजनीतिक हल तजी से होगा और स्थिरता कायम होगा। घासा प्रश्न की गई है कि पाकिस्तान निकट भविष्य म ऐसे कदम उठाएगा। चीना दशा क संबध माभाय करने क लिए शिमला समझौते व दिल्ली समझौत को आधार बनाया गया।

घोषणा म पश्चिमी एशिया और हिंद महासागर क प्रश्ना पर भा विचार प्रकट

विए गए हैं। श्रव इलाइल मघप म इलाइल द्वारा जीत हुए क्षेत्र खाली करने तथा स० रा० के प्रस्ताव का आदर करन की आवश्यकता बताई गई है। हिंद महासागर के बारे में अग्र्य सबद देशों से मिलकर इसे शान्ति का क्षेत्र बनाने व प्रश्न का 'याययुवन हल' निकालने के प्रयत्न करने पर सहमति प्रकट की गई है।

संयुक्त घोषणा में आर्थिक सहयोग को बढ़ाने का भी जिक्र है जिसमें भिलाई की क्षमता को ७० लाख टन तक और बोकारो को १ करोड़ टन तक पहुंचाने तथा मधुरा तेल शोधशाला लगाने में सहयोग की व्यवस्था है। आशा की गई है कि १९८० तक दोना देशों का व्यापार डेढ़ से दो गुना तक बढ़ जाएगा। इसके लिए १९७४ में संयुक्त प्रस्ताव तयार किए जाएंगे।

चेकोस्लोवाकिया से समझौता

दिसम्बर १९७३ के प्रथम सप्ताह में चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के महा सचिव डा० गुस्ताव हुसाक भारत पहुंचे। २ दिसम्बर का भारत-चेकोस्लोवाकिया के बीच आर्थिक समझौता सम्पन्न हुआ।

डा० हुसाक व श्रीमता गांधी द्वारा जारी संयुक्त घोषणा में आर्थिक सहयोग समझौता तथा आर्थिक तकनीकी और वनानिक सहयोग के जरिये भारत और चेकोस्लोवाकिया में उपयोगी तथा लाभप्रद सहयोग की वृद्धि पर बल दिया गया है। हाल में दोना देशों में विज्ञान, तकनीकी तथा औद्योगिक क्षेत्र में सहयोग पर भी एक समझौता किया गया।

वर्तमान समझौता के अर्धीन चेकोस्लोवाकिया भारत के औद्योगिक विकास में मदद देगा। बिजली उत्पादन रेलवे के त्रिजलीकरण उबरक उत्पादन तथा इजीनियरी और वर्तमान कारखाना की क्षमता के विस्तार में यह सहायता देगा।

चेकोस्लोवाकिया में भारत आर्थिक विकास में योगदान के लिये ८० करोड़ रुपये का ऋण देने की घोषणा की।

पोलण्ड के प्रधान मंत्री श्री प्योत्र यारोशविक भी भारत आये तथा पोलण्ड के साथ भी एक व्यापारिक समझौता हुआ। इसी प्रकार जनवादी जर्मन गणराज्य के प्रधान मंत्री श्री विली स्टोफ भी भारत आये तथा जर्मनी के साथ आर्थिक सहयोग का आश्वासन दिया।

अमेरिका ३ दिसम्बर में पी० एल० ४८० पर एक समझौता संपन्न हुआ।

नेपाल नरेश की यात्रा

१२ अक्तूबर को नेपाल नरेश महाराजाधिराज श्री बीरेन्द्र वीर विजयशाह देव तथा महारानी ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी एक सप्ताह की यात्रा पर भारत पहुंचे। प्रधान मंत्री व अग्र्य नेताओं से हुई वार्ता से दोना देशों के बीच उत्पन्न अनेक आशंकाओं का समाधान हुआ। नेपाल नरेश ने दृढ़ता के साथ कहा कि नेपाल एक हिंदू राष्ट्र होने के कारण भारत से घट्ट सबंध रखता है तथा दोना की मंत्री सुदृढ़ व घट्ट है।

भारत ने नेपाल के विकास में पूर्ण योगदान का आश्वासन दिया।

अनेक आर्थिक व राजनीतिक मुद्दों का जस तस मामला करते हुए देश ने १९७३ वर्ष को विदा किया। इस प्रकार आलाच्य वर्ष सफट और उनस लडने की प्रक्रिया में सफलता की ओर कदम बढ़ाने का वर्ष रहा।



राष्ट्रीय घटनाचक्र : १९७३

जनवरी

- १ आंध्र के ११ वाप्रसी सतद सदस्या ने आंध्र विभाजन की खुली मांग की ।
- २ स्थल सेनाध्यक्ष मानेकशा को फील्ड मार्शल का पद मिला ।
- ३ उड़ीसा में डा० हरेकृष्ण मेहताब का कांग्रेस से इस्तीफा ।
- ४ दूसरे क्रिकेट टेस्ट मच में (कलकत्ता) भारत ने इंग्लैंड को २८ रनों से हराया ।
- ५ बलुादशहर में सोशलिस्ट पार्टी का सम्मेलन शुरू
- ७ सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में कांग्रेस को अपदस्य करने का आवाहन किया गया ।

८ पुलिस की गोली से २ पथक आंध्र आंदोलनकारी मर ।

१० पोलैंड के प्रधान मंत्री थो प्यात्र याराशविच भारत आये ।

११ आंध्र मन्त्रिमण्डल में आठ मन्त्रियों की नियुक्ति ।

१२ कांग्रेस उच्चाधिकार समिति ने आंध्र में राष्ट्रपति शासन लागू करने की सिफारिश की ।

—भारत और पोलैंड के बीच व्यापार समझौता ।

१३ कांग्रेस कार्य समिति ने रबी मोजन से गेहूँ के सरकारी धोक व्यापार का निगम किया ।

१४ उत्तर प्रदेश विद्युत बाड के अभियन्ताओं की राजब्यापी हड़ताल शुरू ।

१५ जनरल बबूर स्येन मनाध्यक्ष तथा एयर मार्शल आ० पी० मेहरा वायु सेनाध्यक्ष हुए ।

१६ उत्तर प्रदेश सरकार ने बिजली अभियन्ताओं का हड़ताल को अवध घोषित किया—बिजली आपूर्ति न होने से दिल्ली-द्वारका के बीच रेलें बंद ।

१७ आंध्र प्रदेश मन्त्रिमण्डल ने त्यागपत्र दिया ।

—मद्रास के तीमरे टेस्ट मच में भारत ने इंग्लैंड को चार विकेट से हराया ।

१८ आंध्र में राष्ट्रपति शासन लागू ।

२१ आंध्र में पुनिस की गोली से चार मरे—आन्तानकारिया ने तान रलवे स्टेशन जताय ।

—जईर (बागा) के राष्ट्रपति जनरल माबुनु भारत आये ।

२२ उत्तर प्रदेश सरकार ने गहूँ चावन का धोक व्यापार अपने हाथ में लेने का निगम किया ।

२३ आंध्र में चार प्रशगनकारी पुनिस की गोली से मर ।

- २४ उत्तर प्रदेश व बिजली इजीनियरों की हड़ताल समाप्त ।
- २५ भारत-जर्जर (कागो) की समुक्त विनक्ति म उभय दशा म मह्योग व लिए समिति बनाने की घोषणा ।
—प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी न कहा कि भारत चीन से सम्बन्ध सुधारन की इच्छुव है ।
- २६ गणतंत्र दिवस के उपरान्त म राजधानी में परट के अवसर पर आधुनिकतम प्रस्त्रा का प्रदर्शन ।
- २७ लाओस के प्रधान मंत्री सुवन्ना फोमा भारत आये ।
- ३० ४६४ काकिंग कोषला खाना का प्रवर्ध सरकार ने अपन हाथ म लिया ।
—कानपुर म भारत इगलैण्ड का चौथा क्रिकेट मैच अनिश्चित रहा ।

फरवरी

- १ नयी दिल्ली म राज्या तथा जिला काग्रेम नताम्ना का दा दिवसीय सम्मेलन ।
- २ भारत सरकार ने नयी औद्योगिक नीति की घोषणा की ।
—भारत और मिस्र के बीच व्यापार समझौता ।
- ३ राष्ट्रसंघ के महामन्त्री डा० कुट वाल्डेम भारत आये ।
—पाचवी योजना के बार मे प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने विराधी दल के नेताम्ना स वार्ता की ।
- ४ केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल का विस्तार हुआ ।
- ५ नयी दिल्ली म एक एशिया' समन्वली की बैठक ।
- ७ प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी नेपाल पहुंचा । दोना प्रधान मन्त्रिया ने दक्षिण एशिया म स्थायी शांति पर जार दिया ।
- ८ काठमाण्डू म प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी की नेपाल नरेश बीरेन्द्र से वार्ता ।
—उत्तर प्रदेश म ४० प्रतिशत बिजली कटौती का आदेश जारी ।
- ९ उत्तर प्रदेश मे रोडवेज कमचारिया की हड़ताल ।
—कानपुर म जनसंघ का अधिवेशन शुरू ।
- १० प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी नेपाल स भारत लौटी ।
- ११ बम्बई म पाचवा क्रिकेट टेस्ट मैच अनिश्चित रहा—भारत न रजर जाना ।
—अनुशासनहीनता के लिए जनसंघ न श्री बलराज मधाक की वारण बताओ नोटिस दिया ।
- १४ भारत में बना प्रथम विकसित मिग २१ वायुसेना की समर्पित ।
- १५ भारत सरकार ने रुपये का पुनर्मूल्यांकन न करने की घोषणा की ।
- १६ ससद का बजट अधिवेशन शुरू—राष्ट्रपति श्री गिरि न आ छ समस्या के शांति पूण हल की अपील तथा पाकिस्तान से त्रिपक्षीय वार्ता के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने जाने की माग की ।
- २० लद्दत म भारतीय उच्चवाग पर नकाबपोश पाकिस्तानिया का हमला ।
—लोकसभा म नवन बजट पेश—विराया तथा माल भाडा बन्धन जाने का प्रस्ताव ।

—नये घमरिकी राजदूत उनियन माथीहा भारत भाय ।

२३ मंगोलिया के प्रधान मन्त्री श्री युमजागिा भारत भाये ।

२४ मुख्य मन्त्रिया के सम्मेलन म रबी फगन स गृह क खात ब्यापार के अधिग्रहण क निणय की पुष्टि की गयी ।

२५ नलगाडा (घाघ्र) म विगाक्त शराब पान स ६० स अधिन व्यक्ति मरे ।

—कानपुर म अधिल भारतीय प्रातिवारी सम्मेलन ।

२६ ससद के दोना सदन म घा घ के विभाजन की जोरदार माग की गयी ।

२७ लोकसभा म प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी न कहा कि घाघ्र-नमस्या का निणय दबाव स नहीं हागा ।

२८ लोकसभा म भारत सरकार का ३३५ करोड की कमी का बजट पेश, ६२ करोड का नया कर लगाने का प्रस्ताव ।

माच

१ उडीसा मन्त्रिमण्डल ने त्यागपत्र दिया—मुख्यमन्त्री श्रीमती सत्यधी न नया चुनाव कराने का सुझाव दिया ।

—उत्तर प्रदेश म सरकारी डाक्टरो की प्राइवेट प्रक्टिस पर रोक लगी ।

३ उडीसा मे राष्ट्रपति शासन लागू— विधान सभा भग ।

४ राष्ट्रपति गिरि मलेशिया की यात्रा पर रवाना ।

५ बवालालम्पुर मे राष्ट्रपति गिरि ने कहा कि दक्षिण-पूव एशिया को शांति-क्षेत्र बनाया जाय ।

६ लोकसभा म अचल सम्पत्ति की अवाप्ति और अधिग्रहण (सशोधन) विधेयक पारित ।

८ लोकसभा म रेलवे को क्षति पहुचाने वाले को मृत्युदण्ड देने का रेलव सशोधन विधेयक पेश ।

९ उत्तर प्रदेश विधानसभा मे ४० ०३ करोड की कमी का बजट पेश ।

—मलेशिया की यात्रा समाप्त कर राष्ट्रपति श्री गिरि दिल्ली लौटे ।

१० भारत मिस्र की समुक्त विज्ञप्ति म मिस्र ने भारत की नीति का समर्थन किया ।

११ ऊगाण्डा से ५४ हजार भारतीय निकाले गये ।

१२ उत्तर प्रदेश विधानसभा मे १ अरब ६० करोड का वित्तियोग विधेयक पारित ।

१३ श्री बलराज मधोव जनसभ से ३ वष के लिए निष्कासित ।

—भारत, सूडान के बीच तकनीकी ऋण समझौता ।

१४ प्रयाग उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि एडवोकेट अदालत के सामने धोती-श्रुता म उपस्थित नहीं हो सकते ।

—राज्यसभा म विदेशमन्त्री श्री स्वर्ण सिंह ने कहा कि पाकिस्तान को अमेरिकी शस्त्रपूर्ति स शिमला समझौते के क्रियाचयन म बाधा प्रायेगी ।

१५ पाकिस्तान को शस्त्र देने पर भारत सरकार ने अमेरिका से कडा विरोध प्रकट किया ।

—उत्तरप्रदेश सरकार ने ३१ माच स गृह क थोक ब्यापार के अधिग्रहण की घोषणा की ।

- मणिपुर म सत्ताम्ब विधायक दल के १० विधायक ने इस्तीफा दिया ।
- १६ केन्द्रीय नगर विमानन मंत्री डाक्टर कर्णसिंह ने त्यागपत्र दिया ।
- १८ भारत मित्त धीर यूगास्लाविया म व्यापार समयात म पाच साल की वद्धि हुई ।
—नागर विमानन मंत्री श्री कए सिंह ने त्यागपत्र वापस लिया ।
—जितपुर (धनबाद) कोयला खान म विम्फोट से ३७ थ्रमिक मरे ।
- १९ जनवा ी जमन गणराज्य के प्रधान मंत्री विली स्टोफ भारत आये ।
- २२ महाराष्ट्र विधानसभा के २७ विधायक ४ दिन क लिए निलम्बित ।
- २४ राष्ट्रपति गिरि न ८५ व्यक्तियों को प्रलकत किया ।
- २६ मणिपुर म समुक्त विधायक दल की सरकार का इस्तीफा ।
- २८ मणिपुर म राष्ट्रपति शासन लागू
- ३० उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य मे गेहू के थाक व्यापार का काम अपने हाथ म लिया ।
- ३१ वेतन आयोग की रिपोर्ट केन्द्रीय सरकार को प्राप्त ।

भारत

- १ इण्डोनेशिया के विदेश मंत्री आदम मलिक भारत आये ।
- २ वेतन आयोग की रिपोर्ट लोकसभा मे पेश ।
—भारत सरकार ने नयी आयात नीति की घोषणा की ।
- ४ भारत सरकार ने पाच लाख बेरोजगारों का राजगार देने के लिए विशेष समिति का गठन किया ।
- ५ सिक्किम ने भारत स सैनिक सहायता मागी गगटोक म ३ पुलिस घाना पर प्रदर्शनकारियों का बन्जा ।
- ६ सिक्किम के कई क्षत्रा मे भारतीय सेना का प्रवेश ।
- ७ सिक्किम के दक्षिण पश्चिम जिला म जनता की सरकार बनी ।
- ८ चोग्याल के लिखित अनुरोध पर भारत ने सिक्किम का प्रशासन सभाला ।
- ९ सिक्किम म सघष समिति का आदोलन स्थगित ।
—महेशनगर (गया) मे सगठन कांग्रेस क अधिवेशन में सरकारी मल्ला व्यापार के गम्भीर परिणाम को आशका व्यक्त ।
—पटना में आनन्दमार्गी अवधूत द्वारा आत्मगह ।
- १० कांग्रेस अध्यक्ष डा० शंकरदयाल शर्मा ने चेतावनी दी कि वादा पूरा न होने पर हिंसात्मक क्रान्ति समभव है ।
- ११ दिल्ली में रामचरितमानस चतुशती समाराह का प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने शुभारम्भ किया ।
- १३ प्रमुख फिल्म अभिनेता तथा निर्देशक श्री बलराज साहनी का निधन ।
- १५ सिक्किम के चोग्याल को राजगद्दा से हटान की माग आया ।
- १६ देश की प्रमुख मण्डियों म गेहू की सरकारी खरीद शुरू ।
—कांग्रेस का सोशलिस्ट फोरम भंग ।
- १७ भारत बंगलादेश पाकिस्तानी युद्धविदियों की रिहाई पर सहमत ।

- १८ भारत बंगलादेश व प्रस्ताव का ब्रिटेन और अमेरिका द्वारा स्यागत ।
—नागपुर में सस्ते गल्ले की दुकान लूटी गयी ।
—बाबा व ससदीय उपनिर्वाचन में सोशलिस्ट नेता मधु लिमय जीने ।
- १९ सर्वोच्च न्यायालय ने सुरक्षा अधिनियम की धारा १७(ए) अवध घायित की ।
- २० भारत बंगलादेश की समुक्त विज्ञप्ति पर विचार कर पार्लियामन्त सरकार ने भारत सरकार के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया ।
- २२ नासिक में गल्ले व प्रश्न पर हुए उपद्रव में पुलिस की गोली से ५ मरे ।
- २४ ससद को सविधान के सभी अनुच्छेदा में संशोधन का अधिनियम गौतमनाथ के मुकदमे का निणय रद्द सर्वोच्च न्यायालय का फैसला ।
- २५ राष्ट्रपति ने अजितनाथ राय को सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया ।
- २६ सर्वोच्च न्यायालय व तीन बरिष्ठ न्यायाधीश श्री जे० एम० शलट व श्री के० एस० हेगडे, श्री ए० एन० घोवर ने इस्तीफा दिया ।
—विधिमन्त्री श्री एच० आर० गोखल न मुख्य न्यायाधीश के पद पर श्री राय की नियुक्ति को संबन्धितक बताया ।
- २७ प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी लका पहुँचा ।
- २८ श्रीलका की ससद में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि उभय देश बड़ी शक्तियों के हथकण्डों से सतक रहें ।
- ३० भारत सरकार ने ६० ७० लाख टन गल्ले का आयात करने का निणय लिया ।

मई

- २ लोकसभा में इस्पात और खान मन्त्री श्री कुमारमंगलम ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश की नियुक्ति में वरीयता नहीं बरन दृष्टिकोण मुख्य आधार है ।
- ३ सम्पूर्ण देश में न्यायालयों का अधिवक्ताओं ने बहिष्कार किया ।
- ४ कोचीन में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता को कोई खतरा नहीं है ।
- ८ बेलगाव में गल्ले की ५ दुकान लूटी गयी ।
- १९ सीतापुर में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि किमाना ने गेहूँ नहा बेचा तो आयात होने पर उनकी क्षति होगी ।
- २१ लखनऊ में पी० ए० सी० के जवानों का खुला विद्रोह ।
—लखनऊ विश्वविद्यालय में भयंकर अग्निकाण्ड ।
- २२ उत्तर प्रदेश में पी० ए० सी० पर सेना का नियंत्रण । रामनगर और कानपुर में सेना व पी० ए० सी० सघम में ३१ जवान मरे ।
- २४ गोरखपुर में पी० ए० सी० का आत्मसमर्पण ।
- २५ जहागीराबाद (बाराबंकी) में पी० ए० सी० का आत्मसमर्पण ।
- २६ उत्तर रेलवे के लाको रनिंग स्टाफ के कमचारियों की हड़ताल से ४८ माली ट्रेनें रद्द ।

- भारत सरकार ने रेल्वे म हड़ताल पर ६ महीने के लिए प्रतिबंध लगाया ।
- २७ उत्तर प्रदेश विधायक दल की बैठक में मुख्यमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी से त्यागपत्र की मांग ।
—उत्तर प्रदेश पुलिस कमचारी परिषद भ्रष्टाचार घातित ।
—बिहार मन्त्रिमंडल से ७ मंत्री हटाये गये ।
- २८ बिहार में श्री केदार पाण्डेय के नेतृत्व में नया मन्त्रिमंडल ।
- २९ रेल्वे की हड़ताल से ग्रभावग्रस्त क्षेत्रों का सकट बड़ा
- ३० उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रशासनिक ढांचे में भारी उलटफेर का निर्णय किया ।
- ३१ दिल्ली के पास विमान दुर्घटना में केन्द्रीय मंत्री श्री कुमारमंगलम पंजाब के मृत पूर्व मुख्य मंत्री श्री गुरनाम सिंह सहित ४८ यात्रियों की मृत्यु ।
—उत्तर प्रदेश में पी० ए० सी० के १०४९ कमचारी बर्खास्त ।
—बम्बई ट्रेन दुर्घटना में २० व्यक्ति मरे ।
—सोको रनिंग कमचारियों की हड़ताल समाप्त ।

भारत

- ३ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी ने मन्त्रिमण्डल तथा प्रशासन में हरफेर का संकेत दिया ।
—ग्राम्प्रेलिया के प्रधान मंत्री एडवर्ड गोग व्हिटम भारत आये ।
- ४ भारत ने अंतरराष्ट्रीय न्यायालय का बहिष्कार किया ।
- ५ राष्ट्रीय स्वयंसेवकसंघ के सरसचिवालक श्री मा० स० गोलवलकर (श्री गुरु जी) का महानिर्वाण ।
- ६ समुक्त विज्ञप्ति में भारत ग्राम्प्रेलिया हिंद महासागर को शांति क्षेत्र बनाने पर सहमत ।
- ७ उत्तर प्रदेश सरकार ने पी० ए० सी० की तीन बटालियन भंग की ।
- ८ उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन होने की सम्भावना बढ़ी ।
- ९ दिल्ली में उत्तर प्रदेश के मंत्रियों की बैठक ।
—बम्बई विप्लव केन्द्र पर बिजली गिरने से बिजली का विकट सकट ।
- १० नेपाला विमान का अपहरण कर ३८ लाख रूपया लूटा गया ।
- १२ उत्तर प्रदेश में कमलापति त्रिपाठी मन्त्रिमण्डल ने इस्तीफा दिया ।
- १३ उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू विधान सभा स्थगित ।
- १४ दिल्ली में राज्य के मुख्यमंत्रियों तथा खाद्य मंत्रियों का सम्मेलन ।
—प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी कनाडा तथा यूगोस्लाविया की यात्रा पर रवाना ।
- १५ प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने वेलिंग्टन में कहा कि पाकिस्तान के विपरीत रुख के बावजूद भारत शांति पर लड़ रहा है ।

- १७ भारत-यूगोस्लाव रिश्तों में बढ़ावा दिया गया कि अमीर और गरीब देशों के बीच बढ़ते अंतर से शांति को बचाया है।
 —भारत सहायता मण्डल के देशों ने भारत का ८१८ करोड़ की सहायता देने का निर्णय किया।
 —प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भोटावा (कनाडा) पहुंची।
- २२ बिहार मन्त्रिमण्डल के ४० सदस्यों में से २४ ने इस्तीफा दिया।
- २४ शक्ति परीक्षण में पराजित होने पर बिहार के मुख्यमंत्री श्री बेदार पाण्डेय का इस्तीफा।
- २५ प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी लंदन में ब्रिटिश प्रधानमंत्री हॉथ से मिली।
- २७ प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी विदेश यात्रा से भारत लौटी।
- २६ गुजरात के मुख्यमंत्री श्री घनश्याम ओझा ने इस्तीफा दिया।
- ३० युद्ध होने पर ईरान ने भारत के विरुद्ध पाकिस्तान को मदद करने की धमकी दी।

जुलाई

- १ श्री अटुल गफूर बिहार कांग्रेस विधानमण्डल दल के नेता मनोनीत।
- २ बिहार में अटुल गफूर के नेतृत्व में नया मन्त्रिमण्डल गठित।
 —मलवा जिले में सोनीपुर नदी में बस गिरने से ७० यात्री डूबे।
- ३ गुजरात में श्री कांतिलाल धीया ने विधायक दल के नेता पद का चुनाव लड़ने की घोषणा की।
 —विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह ने पाकिस्तान से दिल्ली में अधिकारिक स्तर पर वार्ता करने का प्रस्ताव किया।
- ५ भारत-बंगलादेश में तीन वर्ष का व्यापार समझौता।
- ६ पाकिस्तान ने भारत से २८ जुलाई से रावलपिण्डी में वार्ता का मुझाव दिया।
- ७ पाकिस्तान से वार्ता करने के लिए भारत-बंगलादेश में सहमति।
 —केन्द्रीय विधि राज्य मंत्री डी० आर० चव्हाण का निधन।
- १० सूख से उत्तर प्रदेश के पूर्वी तथा दक्षिणी जिला में अकाल की स्थिति।
- ११ पाकिस्तान को वार्ता के लिए भारत का मुझाव मांग।
- १२ केरल सरकार ने खाद्य अभाव के कारण शिक्षण संस्थानों को बंद करने का आदेश दिया।
- १३ गुजरात में कांग्रेस विधानमण्डल दल के नए नेता के लिए गुप्त मतदान।
 —मध्य प्रदेश के पांच असांतुष्ट मंत्रियों का इस्तीफा।
- १५ उत्तर प्रदेश में सूख से पांच करोड़ जनता का जीवन संकटापन्न।
- १६ श्री चिमनभाई पटेल गुजरात कांग्रेस विधायक दल के नेता निर्वाचित।
- १८ गुजरात में श्री चिमन भाई पटेल ने मुख्य मंत्री पद की शपथ ली।
- १९ भारत तथा रूस में अफगानिस्तान की नयी सरकार को मान्यता दी।

- २० भारत सरकार ने अखबारी कामज के कोटे में ३० प्रतिशत कटौती की ।
- २१ श्री अशोक महता सगठन कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित ।
- २३ सदन का पावस अधिवेशन शुरू ।
—श्री पी० एन० हक्सर के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल इस्ताम्बाद पहुंचा ।
- २४ रावलपिण्डी में भारतीय तथा पाकिस्तानी अधिकारियों की वार्ता शुरू ।
- २५ भारत सरकार ने चालू वर्ष में ४५ लाख टन गेहूँ के आयात का निणय किया ।
- २६ अधिक सबट का मुकाबला करने के लिए प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने विपक्षी नेताओं से ३ घण्टे बात की ।
—पेरिस में राष्ट्रपति भुट्टो ने कहा कि कश्मीर के प्रश्न पर भारत से समझौता नहीं होगा ।
- २७ मधुपुर स्टेशन (बिहार) पर दो घाती गाडिया की टक्कर में २० मरे ।
- २६ रावलपिण्डी में भारत-पाकिस्तान के अधिकारियों की वार्ता निर्णायक दौर में पहुंची ।
—वार्तामण्डल में ईरान के शाह ने कहा कि पाकिस्तान का विघटन असहनीय है ।
- ३० रावलपिण्डी में भारत-पाकिस्तान अधिकारियों की वार्ता विफल, अगली वार्ता दिल्ली में करने का निणय ।
—मसूर राज्य का नाम कर्नाटक हुआ ।

अगस्त

- १ लोको कमचारियों की हड़ताल से ८१ ट्रेनें रुकी ।
- ३ दिल्ली के सेण्ट्रल बैंक से १ लाख १२ हजार रुपया लूटा गया ।
- ४ हड़ताल के कारण देश में ४६० ट्रेनें का चलना स्थगित ।
- ६ पत्नी की हत्या के आरोप में तिरहुत के आयुक्त एन० नागमणि गिरफ्तार ।
- ७ लोको कमचारियों की हड़ताल जारी—७०० घाती ट्रेनें रुकी—भालगाडियों का आवागमन ठप्प ।
- ८ केन्द्रीय मंत्रियों का वेतन में दस प्रतिशत कटौती ।
- १० केन्द्रीय सरकार ने राज्य सरकारों के खर्चों में चार अरब की कटौती करने का निणय किया ।
—ओटावा में परराष्ट्रमंत्री श्री स्वर्णसिंह ने कहा कि भारत पाकिस्तान से अयुद्ध समझौते के लिए तयार है ।
- ११ पूना में गोला-बारूक का कारखाने में विस्फोट से १२ व्यक्ति मरे ।
- १२ लोको कमचारियों की हड़ताल समाप्त ।
—गांधी के मुख्यमंत्री श्री दयानन्द बंदोपकर का निधन ।
- १३ लोको कमचारियों की ड्यूटी १४ घण्टे से घटाकर दस घण्टे की गयी ।
- १५ लालकित्त में २५ वर्षों के बत की वानमजूपा भूमि में गाडी गयी ।
- १६ उत्तर प्रदेश विजली इंजीनियरों की हड़ताल समाप्त ।
- १७ भारत से वार्ता करने के लिए पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल दिल्ली आया ।
—भापाल में मूल्य वृद्धि के विरोध में हुए उग्र आन्दोलन में पुलिस की गोली से आठ व्यक्ति मरे ।

- ३० हिन्दू महासागर में समरित्री जमी बड़ न बड़ा न गिना ।
 ३१ भारत सरकार ने एक करोड़ की पूजी धान उद्यान का धाना मादगम मे मुक्त किया ।

मध्यमर

- १ उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री बहुगुणा हाग—गण्डित कमतापति गिनाठी केन्द्र में जाने की राजी ।
 ३ दश में पट्टाल तथा मिट्टी के तल का भाष बड़ा ।
 —मऊनी घरव ने भारत की तल प्राप्ति में १० प्रतिशत की बटोती की ।
 ५ हैदराबाद में कांग्रेस महासमिति द्वारा धांध व ६ सूत्रीय फामूल का अनुमान ।
 ६ कलकत्ता में भूगर्भ रेलवे बनाने के लिए रल मन्त्राय घोर रुमी फम में गमगोता ।
 —प्रयाग उच्च न्यायालय ने यामालय की मानहानि व धारोण में प्रयाग व जिना मजिस्ट्रेट को जल की सजा दी ।
 ७ उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने के लिए राज्यपाल ने श्री बहुगुणा को धामत्रिा किया ।
 —लघनऊ विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर श्री गोपान त्रिपाठी नितबिन ।
 ८ उत्तर प्रदेश में श्री हमबतानदन बहुगुणा के नन व नये मनिमन्त का गठन ।
 —गण्डित कमतापति त्रिपाठी वन्द्रीय नौपरिवहन मंत्री हुए ।
 —केन्द्रीय विद्युत एव सिंचाई मंत्री डाक्टर के० एन० राव का इस्तीफा ।
 ९ केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में दूसरी बार उत्तरफर ।
 १२ लोकसभा का शीतकालीन अधिवेशन शुरू सदन में मूल्य-वृद्धि की तीव्र आलाचना ।
 १३ नयी पाली पद्धति के विरोध में इंडियन एयरलाइंस की कई उड़ानें रद्द ।
 १७ लखनऊ में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विपक्षियों से आर्थिक सत्र में सहयोग करने की अपील की ।
 १८ पटना में शेख अब्दुल्हा ने कहा कि मुस्लिम लीग से मुसलमानों का ग्रहित होगा ।
 १९ रूस भारत शिखर वार्ता का आधार तयार करने के लिए उभय दशा व अधि कारियों की बैठक ।
 —पंजाब के सात मन्त्रियों का इस्तीफा ।
 २१ पंजाब मन्त्रिमण्डल में १० नये मंत्री शामिल ।
 २२ लोकसभा में सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव २३ के विरुद्ध २४७ मतो से गिरा ।
 २३ दिल्ली में राज्यपाल सम्मेलन शुरू ।
 —केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल को पाचवी योजना का प्रारूप मजूर ।
 २४ इंडियन एयरलाइंस में तालाबदी विमानों की उड़ानें ठप ।
 २६ रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान श्री ब्रेझ्नेव भारत आये ।
 २७ लालकिले में अभिनन्दन के समय श्री ब्रेझ्नेव ने कहा कि रूस भारत के सुख दुख में सदा उसका साथ रहेगा ।
 २८ श्री ब्रेझ्नेव ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की आलोचना की ।
 २९ रूस भारत के बीच आर्थिक और वाणिज्य समझौता ।

—भारतीय ससद म सावियत कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान श्री ब्रेझनेव न एशियाई सामूहिक सुरक्षा पर विचार का आवाहन किया ।

३० रूस भारत समझौता सम्बन्धी दस्तावेज लोकसभा मे पेश ।

दिसम्बर

- १ डा० रामधारी सिंह दिनकर को 'उवशी पर ज्ञानपीठ का पुरस्कार ।
- २ प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने हरिद्वार मे गंगा नदी पर पुल का शिलान्यास किया ।
—श्रीनगर म शेख अब्दुल्ला ने कहा कि स्वतंत्र कश्मीर का नारा अत्यवहारिक है ।
- ३ चेकोस्लोवाकिया कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान श्री गुस्ताव हुसाक भारत आये ।
- ४ भारत चेकोस्लोवाकिया म व्यापार समझौता—चेकोस्लोवाकिया न ८० कराड के ऋण देने के समझौते पर हस्ताक्षर किया ।
—भारत चेक सयुक्त विनक्ति म शांति तथा सुरक्षा के लिए एशियाई दशा के सहयोग का आह्वान किया गया ।
- ६ उत्तर प्रदेश म भारतीय क्रांति दल मुसलिम मजलिस व ससोपा म चुनाव समझौता ।
- ७ कांग्रेस ससदीय दल ने श्री जलगान बेनगल राव को आंध्र का नया मुख्यमंत्री मनोनीत किया ।
- ८ दिल्ली म राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक शुरू ।
- ९ राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक म पाचवी योजना के उद्देश्या नीतिया तथा लक्ष्या की पुष्टि ।
—पत्नी की हत्या के अपराध म दिल्ली के नेत्र चिकित्सक डाक्टर जैन गिरफ्तार ।
- १० आंध्र म श्री बेनगल राव के नतत्व म नया मंत्रिमण्डल ।
—एयरलाइम के तक्नीकी कमचारी काम पर लौटे ।
—प्रयाग मे साम्प्रदायिक दंगा—नगर म कफ्यू ।
- ११ महाराष्ट्र म कन्नडभाषिया के विरुद्ध हिंसात्मक आंदोलन ।
—साबरकाठा (गुजरात) ससदीय क्षेत्र क उपचुनाव म सगठन कांग्रेस की कुमारी मणिवेन विजयी ।
—मेरठ म साम्प्रदायिक उपद्रव—पुलिस की गोली से दा मरे कफ्यू लगा ।
- १२ उत्तर प्रदेश सरकार ने दगाइयो को देखने ही गोली मारने का आदेश दिया ।
—दिल्ली म धूमियत बैंक डकती काण्ड के सभी अभियन्त पकडे गये ५॥ लाख रुपया बरामद ।
- १३ पी० एल० ४८० के सम्बन्ध म भारत अमेरिका क बीच समझौता ।
—बिहार विधानसभा म प्रत्याशित मतदान के समय बिहार सरकार पराजित ।
—महाराष्ट्र मे कन्नडो पर हुए आक्रमण के प्रतिशोध म कर्नाटक म लूटपाट तथा उपद्रव ।
- १४ कर्नाटक मंत्रिमण्डल के ७ पुराने मंत्री हटाये गये ।
- १५ उत्तर रेलवे के ७ डिवीजना के लोको कमचारिया की हड़ताल शुरू ।
—सरकार ने खुले बाजार म चीनी का दाम ७॥ प्रतिशत बढ़ाया ।
- १६ भारत सरकार ने लाका के हड़ताली कमचारिया को बन्धी चेतावनी दी ।
—बम्बई म सूती मिल क एक लाख कमचारिया की हड़ताल ।

- १७ रत्न कर्मचारियों की हड़ताल में ७५ दिनों रुक ।
 १८ सोरगभा में सविधान का २३वां संशोधन विधायक पारित ।
 १९ दलित युव रेलवे में भी लोका कर्मचारियों की हड़ताल ।
 —सोरगभा में पापनी घोषणा का मंगलान्त पत्र ।
 २० मध्य रेलवे में लोको कर्मचारियों की हड़ताल ।
 —शिरी हवाई छट्टे पर पश्चिमी जमनी का विमान धरत हुआ—एक भी घटी नहीं पड़ा ।
 २२ भारत गवर्नर रामाज क घन के दूरगमन क नामने में कपुर घाणों का रिपान सोरगभा में पत्र ।
 २४ लोको कर्मचारियों की हड़ताल समाप्त ।
 २५ पूर्वोत्तर रेलवे के ४ दिशाजता क स्टेशन मास्टरों की हड़ताल शुरू ।
 —महाराष्ट्र कर्नाटक तथा घाघ्र का हड़ताल नती जत विधान समाप्त ।
 २६ उत्तर भारत में भयंकर भीतमहरी ।
 पूर्वोत्तर रेलवे क स्टेशन मास्टरों की हड़ताल समाप्त ।
 २७ उत्तर प्रदेश उड़ीसा नागालण्ड तथा मणिपुर में विधानसभा क पनाक क निरुत्तियता की घोषणा ।
 —यूजील क प्रधानमंत्री नारमन क भारत घाय ।
 २८ पाकिवरी क दो मंत्रियों ने इस्तीफा दिया—गररार घायता में हुई ।
 ३० पाकिवरी क मुदन में जी श्री पाठक मारितर का इस्तीफा ।

'शुभ कामनाए'

मध्य प्रदेश राइस मिल्स एसोसियेशन

मुख्यालय रायपुर (म० प्र०)

अध्यक्ष श्री नेमीचंद श्रीधरीवाल

उपाध्यक्ष

श्री नारायण राज शम्बीलकर

श्री मदनलाल रुगटा

श्री मातूराम शम्भवाल

श्री गोनाराम

कोषाध्यक्ष श्री गवालदास डागा

महो श्रीमन्वराम पतनानी

एव सदस्यगण

विध्य क्षेत्र का सर्वाधिक प्रसारित लोकप्रिय दैनिक पत्र

बान्धवीय समाचार

(प्रगतिशील निष्पक्ष राष्ट्रीय विचारधारा का प्रवक्ता)

नार बान्धवीय

दस्तावेज ४४८

विज्ञापनों को हजारों हाथों में पहुंचाने का एक सशक्त प्रभावी माध्यम

राकेश प्रसाद मिश्र

जागश्वर प्रसाद पांडेय

सातप्रसाद मिश्र, माधव प्रसाद मिश्र

प्रकाशक

सम्पादक

हृष प्रसाद मिश्र, अशोक मिश्र

प्रशासक

दूतावास और उच्चायुक्त

विदेशों में भारतीय राजदूत

अफगानिस्तान राजदूत—श्री ए० एन० मेहता भारतीय दूतावास मलाईवाट काबुल ।
अलजीरिया राजदूत—मी० मूनुम, भारतीय दूतावास ११६ टेर रियूइ डिडूशे
मोराद अलजीयस ।

अर्जेंटीना राजदूत—(पराग्वे और उरुग्वे के भी राजदूत) श्री बी० के० सायाल
भारतीय दूतावास लावाल ४२ (तीमरी मजिल) ब्यूनस एअस ।

ऑस्ट्रिया राजदूत—श्री वी० सी० त्रिवेदी, भारतीय दूतावास १ ओपेर्नरिंग
वियना १ ।

बेल्जियम राजदूत—श्री बी० आर० पटेल, भारतीय दूतावास १२१ एव्यू
मालिएर, ब्रूसेल्स १८ ।

ब्राजील राजदूत—(बोलिविया और वेनेजुएला के भी) श्री पथीसिंह भारतीय
दूतावास, ह्यूमा वाराओ डी फ़ेमगो २२, एप्टोस ८०१ ८०२ रिओ डी जेनिरो ।

बर्मा राजदूत—श्री वालेश्वरप्रसाद भारतीय दूतावास, आरियटल इग्मोरेंस
बिल्डिंग ५४५ ४७ मर्चेंट स्ट्रीट रंगून ।

बंगला देश राजदूत—श्री समर सेन भारतीय दूतावास ढाका ।

कम्बोडिया राजदूत—डा० एस० गुप्ता, भारतीय दूतावास प्नीमपह ।

चिली राजदूत—(कालबिया और परू के भी) श्री व० एल० मेहता भारतीय
दूतावास ८७१ विमाना सटिआगो ।

चीन मंत्री और चाञ्ग डी अफेयस—श्री बी० मी० मिश्र भारतीय दूतावास, ८
क्वाग हुआ लू पेंकिंग ।

कांगो राजदूत—(गेबून और कांगो—त्राजेविले के भी) श्री सुरेद्रसिंह आफ
अनीराजपुर भारतीय दूतावास १८ एन्यू ८ इमे आरमी लिओपोल्डविले ।

चकोस्लोवाकिया राजदूत—श्री एस० एच० देसाई भारतीय दूतावास वाल्डस्टे
जेस्वा ६ प्राग १ ।

डेनमार्क राजदूत—श्री एस० आर० थडानी भारतीय दूतावास ८ ११ अमरेगर
टोव कापेन हेगन ।

इथापिया राजदूत—श्री के० सी० सेनगुप्त भारतीय दूतावास पी० ओ० ५२८
अन्तिम आबावा ।

फिनलैंड राजदूत—श्री सी० जे० स्ट्रेसी भारतीय दूतावास वानसाकोलकालू
५ बी १४ हेलीमिक्की १० ।

फ्रांस राजदूत—श्री डी० एन० चटर्जी भारतीय दूतावास १५ रय एसफ
बेहाडनक, पेरिस १६ ।

जमनी (फडरल रिपब्लिक) राजदूत—श्री यागद्रहण पुरी भारतीय दूतावास
२६२, एडेनायूराली बोन ।

पूष जमनी (ज० ज० गणराज्य) राजदूत—श्री ज० गा० धजमानो भारताय
दूतावास बर्लिन ।

गुएना राजदूत—(माली क भा) था श्याममुत्तरनाथ भारतीय दूतावास बोनान्ने ।

हंगरी राजदूत—कुमारी सी० बी० मुषामा भारतीय दूतावास बुजार्बिराग उत्का
१४ बुडापेस्ट २ ।

इंडोनेशिया राजदूत—श्री एन० बी० मेनन भारताय दूतावास पा० वाक्म न०
११८ ४४ कंबून सेरीह यकर्ता ।

ईरान राजदूत—श्री एम० ए० रहमान भारतीय दूतावास, ३५८६/७ एवयू
साबा शोमाली तेहरान ।

इराक राजदूत—श्री महबूब महमद भारतीय दूतावास २२/१० A १ तट्टराई
स्ट्रीट, बजीराह बगदाद ।

आयरलंड राजदूत—श्री एस० बी० पटल भारताय दूतावास ५८ अपर लीमन
स्ट्रीट डबलिन ।

इटली राजदूत—(मालटा के उच्च आयुक्त भी) था ए० वा० पत भारताय
दूतावास वाया फानसेसको डेनसे ३६ रोम ।

जापान राजदूत—श्री वीनसट एच० केहलो भारतीय दूतावास न० २ २ चीमे
कुडाल मिनामी चियोडाकू टोकियो ।

कुवत राजदूत—श्री एम० के० चौधरी भारतीय दूतावास, विंगरोड न० १ कुवत ।

लाओस राजदूत—श्री ए० एस० गोतसालरस भारतीय दूतावास पो० आ० वाक्स
न० २२५ वियनटिएन ।

लेबनान राजदूत—(जोडन के राजदूत और साइप्रस के उच्चायुक्त भी) श्री ए०
के० दर भारतीय दूतावास शाहमिरानी विल्डिंग ३१ कनटारी स्ट्रीट बरुत ।

मालागासे राजदूत—श्री ए० आर० सेठी पो० ओ० वाक्स १७८७ टानानारिवे ।

मक्सिको राजदूत—(क्यूबा और पनामा के भी राजदूत) श्री बी० माधवन नायर
भारतीय दूतावास एवेनिंग टेनयुसन ६७ काल पोलागो मक्सिको ५, डी० एफ० स्टेशन
मक्सिको सिटी ।

भोरक्को राजदूत—(ट्यूनेशिया के भी) (रिक्त) भारताय दूतावास ११ रयूए
डेसकारटेस रवात ।

नेपाल राजदूत—श्री महाराज वृष्ण रसगोत्रा भारतीय दूतावास जी० पी० ओ०
वाक्स २६२ काठमान्डू ।

नीदरस ड राजदूत—श्री ज० एन० धमाजा भारतीय दूतावास, बयूइटेनरूस्टबाग
२ दहेग ।

नार्वे राजदूत—श्री ज० व० गजू भारतीय दूतावास ४८, फ्रोफसर डाहलस गेट
ओस्लो ।

फिलीपींस राजदूत—श्री वी० दवा राव भारतीय दूतावास, १८५६, वी० बोकोवा
स्ट्रीट, मालाते मनिला ।

पोलंड राजदूत—श्री दिलीप कामटेकर, भारतीय दूतावास, न० १६, नीगोले
बन्कीगा, वारसा ।

रुमानिया राजदूत—श्री यिब्वेनगादा धान, अलीइया स्टेफन धोरगिन १६
बुखारेस्ट ३ ।

सऊदी अरब राजदूत—श्री टी० टी० पी० अब्दुल्ला भारतीय दूतावास सुलेमान
ऊन-टर्की हाउस अल शराफिया, बगदादिया जेदा ।

सेनेगाल राजदूत—(आइवरी कोस्ट, मारीटानिया और अपर बोल्टा के राजदूत
और जाबिया व उच्चायुक्त भी)—श्री हरिकृष्ण सिंह, भारतीय दूतावास पो० बाक्स ३६८
डकार ।

सोमालिया राजदूत—श्री जे० वी० मुघियाल भारतीय दूतावास, पो० बाक्स
६५५ मागाडिषू ।

दक्षिणी घमन (गणराज्य) राजदूत—जे० एल० मलहोत्रा भारतीय दूतावास अदन ।

स्पेन राजदूत—श्री एम० विक्रमशाह काले मारक्यूएस डी उरक्यूइजा मेडिड ।

सूडान राजदूत—श्री के० एल० दलाल, पो० बाक्स न० ७०७ खारतूम ।

स्वीडन राजदूत—श्री ए० व० दामोदरन भारतीय दूतावास वी० ट्राडगार
डसगाटन १५ स्टाक्होम ।

स्विट्जरलैंड राजदूत—एयर चीफ माशल अर्जुनसिंह, भारतीय दूतावास २०
कालचेग्गेवेग, ३००० बन ।

सीरियन अरब गणराज्य राजदूत—श्री वी० ए० किदवाई भारतीय दूतावास
८०/४६ यासीन नुवाई लाटी बिल्डिंग एबन्यू अदनान मालका इम दमिश्क ।

थाईलैंड राजदूत—डा० पी०के० बनर्जी, भारतीय दूतावास १३६ पानरोड बकाक ।

तुर्की राजदूत—श्री यू० एस० वाजपेयी भारतीय दूतावास न० ५० विजिलीर-
याक साकाक कोसाटेपे, अकारा ।

सयुक्त अरब गणराज्य राजदूत—श्री आइ० जे० बहादुरसिंह भारतीय दूतावास
५ अल शारिया अल माहान, स्विसरि जामालाक पो० अ० बाक्स ७१८, काहिरा ।

सयुक्त राज्य अमेरिका राजदूत—श्री टी० एन० कौल भारतीय दूतावास, २१०७
मसाच्यूसटस एवेयू एन० डब्ल्यू०, वाशिंगटन ८ डी० सी० ।

रूस - राजदूत—डा० एम० के० शेलवाकर भारतीय दूतावास न० ६ और ८
उलोत्सा ओवुका मस्क्वा ।

यूगोस्लाविया राजदूत—श्री रिखी जयपाल भारतीय दूतावास प्रोलेटेर सकेह
ब्रिगेड ६ बेनग्रेड ।

उत्तर वियतनाम राजदूत—शिशिरकुमार गुप्त भारतीय दूतावास हनाई ।

उच्चायुक्त

आस्ट्रेलिया उच्चायुक्त—श्री ए० एम० टामम, ६२, मग्गा वे रटहिल कनबरा ।

कनाडा उच्चायुक्त—श्री ए० बी० भद्रकामवार, २००, मन्मारन स्ट्रीट घोडामा,
४, मोनटेरिओ ।

श्रीलंका उच्चायुक्त—श्री विनसेंट ह्वेट केह्लो, ७ कालूपितिया स्टेशन रोड,
कोलंबो ३ ।

घाना उच्चायुक्त—(लिवरीया व राजदूत और सिरा लियोन व उच्चायुक्त भी)
—श्री ए० एस० मेहता पो० बाक्स ३०४०, अकरा ।

गुयाना उच्चायुक्त—डा० गोपालसिंह ७८ चच स्ट्रीट, जाज टाउन ।

केन्या उच्चायुक्त—श्री गुरुबचनसिंह जीवन भारती बिल्डिंग हारामबा एव्यू
नरोबी ।

मलावी उच्चायुक्त—श्री एम० एम० खुराना भारतीय उच्चायोग पा० बा० न०
३६८ बलानटयरे ।

मलेशिया उच्चायुक्त—श्री के० चंद्रशेखरन नायर पा० बाक्स न० ५६ १६
मालाक्वा स्ट्रीट कुमालालम्पुर ।

मारीशस उच्चायुक्त—श्री कृष्णदयाल शर्मा बक आफ वडौंग बिल्डिंग पोर्ट लुइस
मारीशस ।

मूजीलड उच्चायुक्त—श्री पी० एस० नास्कर ४६ विलिसस्ट्रीट बेलिंगटन स्टेशन
वलिगटन ।

नाइजीरिया उच्चायुक्त (कमरून दहोम और टागो गणराज्य के राजदूत भी)
श्री एम० जी० रामचंद्रन प्राइवट मल वेग २३२२ लागोस नाइजीरिया ।

सिंगापुर उच्चायुक्त—श्री थोमस अब्राहम इण्डिया हाउस ३१ ग्रानगे रोड
सिंगापुर ।

तनजानिया उच्चायुक्त—श्री वी० सी० विजयराघवन २८ इण्डिपेंडस एव्यू
दारे प्रस सनाम ।

त्रिनिडाड और टोबागो उच्चायुक्त—श्री एल० एन० राय पो० बा० न० ५३०
पोट आफ स्पेन (त्रिनिडाड) ।

उमाडा उच्चायुक्त—(बुरुण्डी की राजशाही और रुआंडा गणराज्य के राजदूत
भी) श्री थार० थार० सिंहा बैंक आफ इण्डिया बिल्डिंग कपाला रोड कपाला ।

ब्रिटेन उच्चायुक्त—(रिक्त) इण्डिया हाउस एल्डविच लंदन डट्यू० सी०-२ ।

जाबिया उच्चायुक्त—श्री जे० सी० कक्कड, भारतीय उच्चायुक्त कार्यालय पो०
ओ० बाक्स २१११ लुसाका ।

भारत में विदेशी दूतावास

अफगानिस्तान राजदूत—अनाउल्लाह नासर जिया ६ ए रिगरोड लाजपतनगर
नई दिल्ली २४ ।

अल्जीरिया राजदूत—मली लाखदारी १३ सुद्धर नगर नई दिल्ली ११ ।

अर्जेंटीना राजदूत—एडोल्फ ए० बोत्लीना, सी २७/२८ साउथ एक्सटेंशन भाग २
नई दिल्ली ४६ ।

आस्ट्रिया राजदूत—डा० जोहान्ना नेसटर, ३ ए याय माग चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

बेलजियम राजदूत—चाल्स बेरेमास ७ गोल्फ लिक्म, नई दिल्ली ३।

ब्राजील राजदूत—बनादीमीर डी० अमाराल मुरटिनहा, ८ श्रीरगजैव रोड नई दिल्ली ११।

बल्गेरिया राजदूत—नाइदेन पी० बेलचेव १६८ गार्फ लिक्स एरिया, नई दिल्ली ३।

बर्मा राजदूत—यूह्ला माव बर्मा हाउस ३/५० एफ शातिपथ चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

बुर्बोडिया राजदूत—नागकिमन, २५, गार्फ लिक्स एरिया नई दिल्ली ३।

उत्तर कोरिया गणतन्त्र राजदूत—श्री पक्चन ह्यून।

चिली राजदूत—जूलिओ बोरेनेचेन्ना पी० सी० १०८ नई दिल्ली साउथ एक्मटेशन २ नई दिवना ४६।

चीन राजदूत—(रिक्त) शातिपथ चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

कोलम्बिया राजदूत—डा० जोशे इरागोरी, २० जारवाग नई दिल्ली ३।

क्रागो (प्रजातान्त्रिक गणराज्य) राजदूत—जनरल लिथोर्नाड मुलाम्बा ५ गार्फ लिक्म नई दिल्ली ३।

क्यूबा राजदूत—जे० इलोप बल्देस, ५६ रिग रोड लाजपतनगर ३ नई दिल्ली २४।

चकोस्लोवाकिया राजदूत—रिचाड दवाराक ४५ सुदरनगर नई दिल्ली ११।

डेनमार्क राजदूत—हास एडोल्फ वीयरिंग ६ गोल्फ लिक्म एरिया नई दिल्ली ३।

इथोपिया राजदूत—गेनाचेड मकाशा २६ पथ्वीराज रोड, नई दिल्ली ११।

फिनलंड राजदूत—विलहेल्म शरेस्क ४२, गोल्फ लिक्स नई दिल्ली ३।

फ्रांस राजदूत—जीन डरीडान २ श्रीरगजैव रोड नई दिल्ली ११।

१० जमनी (पेंडरल रिपब्लिक) राजदूत—म्वेंटेर डीहेल न० ६ ब्लाक, ५० जी शातिपथ चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

१०० जमनी (जमन जनवादी गणतन्त्र) राजदूत—हृषट फिशर २ याय माग नई दिल्ली।

ग्रीस राजदूत—डा० क० पानायटाकोस १८८, जोरवाग पी० वाक्स ३०५८ नई दिल्ली-३।

हंगरी राजदूत—डा० पीटर कास १५ जोरवाग नई दिल्ली ३।

इण्डोनेशिया राजदूत—मु० राफिज ५० ए चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

ईरान राजदूत—जी० ए० माजदारानी ३७ गोल्फ लिक्स नई दिल्ली ३।

इराक राजदूत—सईद के० हिदावी, ३३ गोल्फ लिक्स, नई दिल्ली ३।

आयरलैंड राजदूत—अवेल होम्स १३, जोरवाग नई दिल्ली ३।

इटली राजदूत—डा० अमेदे मुइलेट ७ जोरवाग नई दिल्ली ३।

जापान राजदूत—निनया निसकी प्लाट न० ४ और ५, ब्लाक ५० जी शातिपथ चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

जोड़न राजदूत—घत्रीट गितानी १२०, मानवा मार्ग चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

कृत राजदूत—अनुन रहमा १६ फडग बालोनी शर १६ गिता १६।

ताम्रोस राजदूत—श्री ए० ए० नारायण ६, मकुनर रोड चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

सैबनान राजदूत—महमू हार्फिज १०, मरगर पटन माग चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

मविसको राजदूत—बारलोग गुटीर्रेज मीरीप्राग १३६ गोप निव नई दिल्ली ३।
मगोलिया (जरावानी गणराज्य) राजदूत—मा० ब० डहायान ३६, गोप निव नई दिल्ली ३।

मोरबनी राजदूत—अनुनना लामरानी, १६६ जारवाग नई दिल्ली ३।

नेपाल राजदूत—श्री कृष्णबाम मल्ला बाराघभा राड नई दिल्ली १।

नीडरलड राजदूत—फ्रेडरिखबाल बीन ६/५० एन मानिपय चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

नार्वे राजदूत—हानून नाड बीटिन्य माग, चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

पेरू राजदूत—डा० रेन हपरलोपेज २६० डिफेंस बालानी नई दिल्ली ३।

फिलीपींस राजदूत—लीघोन मा० गयुएर्रेरो ५० एन याम माग चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

बंगला देश ए० प्रार० मानव बी २० पटर कलाश नई दिल्ली।

पोलंड राजदूत—श्री रामभाल्ड स्पासावस्की २२ गोल्फ लिक्म नई दिल्ली ३।

रुमानिया (समाजवादी गणराज्य) राजदूत—ए० अरदेल्घान् ४८ गोल्फ लिक्म नई दिल्ली।

सऊदी अरब राजदूत—शय अनास यूसुफ मासीन, १, ईस्टन एबमू महारानी बाग नई दिल्ली १४।

स्पेन राजदूत—गुड्लेरेमो तादात १२ पृथ्वीराज रोड नई दिल्ली ११।

सूडान राजदूत—हसन मौ० अल अमीन ६ जोरबाग नई दिल्ली ३।

स्वीडन राजदूत—गुनार हेक्श्चेर, याम माग चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

स्विटजरलंड राजदूत—डाक्टर ए० लिडट याम माग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

सौरियाई अरब गणराज्य राजदूत—रासलान अलउश १०, पबशील माग नई दिल्ली २१।

थाईलंड राजदूत—प्रिस प्रम पुराक्षत्र, ५६ एन याम माग चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१।

तुर्की राजदूत—गुनदागू उस्तुन, १० २७ जोरबाग नई दिल्ली ३।

सोवियत रूस राजदूत—विक्टर फेडरोविच मालासेव शातिपय चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१।

समुक्त अरब गणराज्य राजदूत—मोहम्मद अमीन हत्मी द्वितीय, ५५, सुन्दरनगर, नई दिल्ली ११।

अमेरिका राजदूत—डेनियल पी० मायनाहन, शातिपथ, चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१ ।

उद्योग राजदूत—डी० लिस्सीडनी, डी० १३८, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली ३ ।

वेनेजुला राजदूत—पिटो मालीनास, १८५ जोरबाग, नई दिल्ली ३ ।

यूगोस्लाविया राजदूत—श्री इलिजा तोपालोस्की ३/५० जी, नीति माग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१ ।

भारत में उच्चायुक्त

आस्ट्रेलिया उच्चायुक्त—पत्रिक शाह सी० बी० ई० १/५०-जी शातिपथ चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१ ।

श्विडेन उच्चायुक्त—सर टेरन्स ग्रैव, शातिपथ चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१ ।

कनाडा उच्चायुक्त—सर विलियम्स, ७१८ शातिपथ, नई दिल्ली २१ ।

श्रीलंका उच्चायुक्त—सिरी परैरा २७ कौटिल्य माग, चाणक्यपुरी नई दिल्ली २१ ।

घाना उच्चायुक्त—मेजर जनरल एम० जे० घोटबू २, गोलफ लिंक, नई दिल्ली-३ ।

मलेशिया उच्चायुक्त—त्वान अदुल खालिद, ३ लिंक रोड, जगपुरा, नई दिल्ली १४ ।

भारोशम उच्चायुक्त—रवींद्र धरभरन वी १०, मालचा माग चाणक्यपुरी, नई दिल्ली २१ ।

यूजीलंड उच्चायुक्त—बी० एस० लेंडम ३६ गालफ लिंक, नई दिल्ली ३ ।

नाइजीरिया उच्चायुक्त—सोजी विलियम्स, १६६/१७०, जोरबाग, नई दिल्ली ३ ।

सिंगापुर उच्चायुक्त—मोरिसे बेकर १६ रिग रोड, लाजपतनगर नई दिल्ली २४ ।

तनजानिया उच्चायुक्त—सर्वस्टियनचाले, ई १०६ हिल ट्यू ग्रेटर कलाश नई दिल्ली ४८ ।

उगाडा उच्चायुक्त—जी० डब्ल्यू० एम० काम्बा ११, गोलफ लिंक नई दिल्ली ३ ।



वष १९७३ ७४ में नगर महापालिका वाराणसी की आवासीय योजनाए नगर के विकास के प्रतिरिक्त ग्रहण घाय और कमजोर वग को सहायता पहुंचाती है ।

(१) १५ लाख ६२ हजार की लागत से १४२ भवना का निर्माण सक्कामक रोग अस्पताल पहाडिया और शिवपुर में जिनमे से सक्कामक रोग अस्पताल का निर्माण काय पूण हो चुका है । शेष काय प्रगति पर है ।

(२) ६ लाख की लागत से इगलिशिया लाइन में काशियल काम्प्लेक्स-जिनमे से नीचे की मजिल पर दुकाना का निर्माण काय प्रारम्भ हो चुका है ।

(३) ११ लाख की लागत से सडका का नवीनीकरण ।

घाय बनाने तथा देय करा का उगाही के विशेष अभियान स्वरूप गत वष की अपेक्षा इस वष घाय में १० लाख रुपये की बढ़ोतरी हुई है ।

नगर की स्वच्छ स्वास्थ्यवद्धक और आकषक बनाने हेतु वाराणसी महापालिका आपके सह योग का स्वागत करती है ।

सातचंद्र श्रोत्रा

प्रशासक

नगर महापालिका, वाराणसी

कुछ तथ्य

१९७३ में रुपये का मूल्य

वित्त मंत्री के ससद के एक उत्तर के अनुसार १९४६ के उपभोगना मूल्या के सूचकांक को आधार मानकर लगाये गये हिसाब के अनुसार रुपये की क्रम शक्ति १९५० में ६६ पैसे १९६० म ८० ६ पैसे १९७० में ४४ ६ पैसे तथा जनवरी १९७४ म ३५ पैसे थी ।

राष्ट्रीय आय वृद्धि का ब्यौरा

१९६० ६१ के भावा पर राष्ट्रीय आय की वृद्धि का ब्यौरा निम्न प्रवार है	
१९६६ ७०	५ ३ प्रतिशत
१९७० ७१	४ २ प्रतिशत
१९७१ ७२	१ ७ प्रतिशत
१९७२ ७३	० ६ प्रतिशत

रेल भाडे पर एक नजर

वष	प्रति टन प्रति किलोमीटर भाडा	प्रति यात्री प्रति किलोमीटर भाडा
१९५० ५१	३ १६	१ ४८
१९६० ६१	३ ५०	१ ७३
१९६८ ६९	५ ०८	२ ४८
१९७१ ७२	५ ६१	२ ५५

(सरवाज तथा अनिरिक्त टक्को को छोडकर)

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के खर्चों का ब्यौरा

	रुपयो में
१९४८ ४९	१२,८० ०००
१९६८ ६९	३२ ०५ ५२६
१९७१ ७२	५४ ३० ०००

ग्रीवर टाइम के ५१ करोड

२३ नवम्बर ७३ का दी गई वित्त मन्त्रानय की एक सूचना के अनुसार मन्त्रिवालयी कार्यालय के कन्ट्राम सरकार के कमचारिया का १९७२ ७३ म समयोपरि भत्ते के रूप म दी गई कुन रकम ६० लाख २६ हजार रुपए था । कन्ट्राम सरकार के सभी कार्यालयी के कमचारिया का १९७२ ७३ म समयोपरि भत्ते के रूप में दी गई कुन रकम ५१ करोड १३ लाख रुपए थी ।

२५ करोड दरिद्र

योजना मन्त्री की सूचना के अनुसार दरिद्रता की सीमा के नीचे के लोगो की सख्या

१९५१ ५२	२१ करोड
१९५६ ५७	२१ करोड
१९६१ ६२	२३ करोड
१९७३	२५ करोड

दरिद्रतम लोगो की ग्रामदनी

पाचवी योजना के अनुसार देश के दरिद्रतम ३० प्रतिशत लोगो की मासिक आय २५ रुपए है। योजना के अंत में इनकी आय २६ रुपए हागी (२६ रुपए की त्रय शक्ति तब आज के २५ रुपए से भी कम होगी)।

बेकारी

रोजगार दफनरा में दज बेकारा की सख्या का विवरण १६ नवम्बर १९७३ को राज्यगभा के उत्तर में से लिया गया है।

१९७१ के अंत में	५१ लाख
१९७२ के अंत में	६६ लाख
अगस्त, १९७३ तक	६१ लाख

(लाख से)

अनुसूचित जाति के
बेकारों की सख्या

अनुसूचित जनजाति के
बेकारा की सख्या

१९६६	३ ८६	० ८१
१९७०	४ ४६	० ६४
१९७१	५ ४५	१ १२
१९७२	७ ०५	१ ५१
जून १९७३ तक	७ ६०	२ २२

पेशेवर, तकनीकी तथा बेकार वैज्ञानिको की सख्या

३० जून १९६६	२ ८२ १५२
३० जून १९७३	४ १०, ८७४

(समद में दिये गए २० दिसम्बर, १९७३ के उत्तर से)

स्नातकोत्तर बेरोजगारो की सख्या

स्नातकोत्तर बेरोजगारों की सख्या

उत्तर प्रदेश	६४४६	पंजाब	२६१५
बिहार	४६५६	तमिलनाडु	२४७३
पश्चिम बंगाल	४४५१	कर्नाटक	२३२५
मध्य प्रदेश	३१७३	महाराष्ट्र	२२३२
राजस्थान	३००१	हरियाणा	१७३३
केरल	२७६१	उड़ीसा	१२२४
आंध्र	२६६७	गुजरात	२२१

(योजना राज्य मंत्री श्री मोहन धारिया के लोकसभा के उत्तर से)

विदेशी ऋण

१९६६
१९७२
१९७३ के अन्त म

२६११ करोड
६९५४ करोड
१०००० करोड से अधिक

खाद्यान्न आपूर्ति

(हजार टनो मे)

राज्य	१९७१ मे दिया गया खाद्यान्न	१९७२ मे दिया खाद्यान्न
प० बंगाल	२२६२ ००	२३३० ००
महाराष्ट्र	११८६ ००	१२३६ ०१
केरल	९३६ ००	९६७ ००
बिहार	९१९ ०७	१०८५ ००
असम	३९७ ०२	३०५ ००
दिल्ली	३१३ ०८	४७० ००
उत्तर प्रदेश	३९२ ०२	९५८ ००

(२६ नवंबर ७३ का लोकसभा में कृषि राज्य मन्त्री श्री शिंदे के उत्तर स)

स्वदेश

इंदौर तथा ग्वालियर म एक साथ प्रकाशित एक संपूर्ण हिन्दी दैनिक

प्रसार क्षेत्र

- (क) पश्चिमी मध्य एव उत्तरी मध्य प्रदेश के सभी नगर तथा प्राय सभी देहात भी
- (ख) महाराष्ट्र गुजरात राजस्थान एव उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जिल भी

प्रसार सख्या

- (क) स्वदेश इंदौर मारे मध्य प्रदेश में प्रसार सख्या की दृष्टि से अग्रक्रम स द्वितीय
- (ख) स्वदेश ग्वालियर उत्तरी मध्य प्रदेश में प्रसार सख्या की दृष्टि स अग्रक्रम म प्रथम
- (ग) स्वदेश इंदौर ग्वालियर अपने प्रसार क्षेत्र म प्रसार सख्या की दृष्टि से अग्रक्रम म द्वितीय

प्रसार विशेषताए

- (क) अपने प्रसार क किसी भी समाचार पत्र स अधिक लगभग साठे तीन सौ प्रसार अभिकरण एव उप अभिकरण ।
- (ख) प्रमुख समाचार अभिकरण तथा अपने स्वय के सक्का प्रतिनिधि एव सवाद दानामा द्वारा स्वरित प्रेषित प्रामाणिक समाचार ।
- (ग) मिनेमा कृषि महिला बाल श्रीहा व्यापार माहित्य आदि विषयक अनेक रोचक एव पानवचक स्तम्भ ।
- (घ) सभी वर्गों एव सभी हिता की सक्क मवा ।

मुख्यालय ९१ तिलक पथ इंदौर—४५२००४

फोन ३४५९९ ३४४८८

तार-श्रीरेवा

शाखा जयदेवराज लखर ग्वालियर ६७४००१

फोन २,३३० तथा २२१८२

तार-स्वदेश

मध्य प्रदेश राज्य भण्डार गृह निगम

१७ रैस कोर्स रोड, इन्दौर-३

हम राष्ट्र की सेवा करते हैं —

१ वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधा प्रदान करके

२ भण्डारण में कीड़ा चूहा नमी तथा जीवाणुमा से हाने वाली क्षति का कम बरके ।

अपना माल भण्डार गृह निगम के पास जमा कीजिये

उपलब्ध सुविधाएँ —

१ वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधा

२ भण्डारगृह का रसीद की प्रतिभूति पर बैंक से अग्रिम धनराशि प्राप्त

३ अग्नि, चोरी तथा बाढ़ इत्यादि के लिए बीमा

४ माल की विस्म एवम मात्रा की सुरक्षा

हम आपके अपन गोठामा म भी कीटनाशक विस्तार सेवा के अतगत अपनी मवाए प्रदान करत हैं ।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये

प्रबंध सचालक

मध्य प्रदेश राज्य भण्डार गृह निगम

इन्दौर ३

बुद्ध और महावीर के बिहार का परिदर्शन करें

पाटलिपुत्र के प्राचीन नगर नालन्दा के विश्वविद्यालय विद्यालय तथा राजगृह की भव्य दीवारा के भग्नावशेष, सत्तराम स्थित शेरशाह का मकबरा वशाली अरैराज और लारिया नदनगढ़ के अशोकस्तम्भ, बोधगया देवघर, पारमनाथ और पावापुरी के प्राचीन मन्दिर और पटना के सिद्ध गुरुद्वारे को अवश्य देखें ।

राजगृह के गम जन के झरना में स्नान करना तथा छोटानागपुर के जल प्रपात मनारम पहाडिया, झाला और जगला के प्राकृतिक सौंदर्य का अवलोकन करना न भूलें ।

जमशेदपुर हटिया (राची) सिद्धरी धनवाद पचेत मैथन तिलया बरौनी तथा बोकारो के सुविख्यात औद्योगिक केन्द्रों का परिदर्शन करें ।

पटना, राजगृह गया राची, नेतरहाट, देवघर और मुजफ्फरपुर म टूरिस्ट बस टूरिस्ट यान तथा उत्तम कोटि की आरामदेह मोटर गाडिया भी सुलभ हैं ।

राजगृह वशाली, नेतरहाट (पटना) और हजारीबाग में पयटन के आवास की सुविधा के लिए उत्तम कोटि के आरामदेह टूरिस्ट बगला की स्थापना पयटन विभाग द्वारा की गई है । राजगृह म जापान भारत सर्वोदय मित्रता संधि जापान के सहयोग से रत्नागिरि के शिखर पर निर्मित विश्व शांति स्तूप के परिदर्शन के लिए पयटन विभाग द्वारा आकाशीय रज्जुपथ का संचालन किया गया है । मात्र एक रूपया प्रति व्यक्ति की दर में शुल्क देकर रज्जुमाग की यात्रा की जा सकती है ।

—पर्यटन विभाग, बिहार, पटना

मध्यप्रदेश में...

सहकारिता के बढ़ते चरण

	१९५०-५१	१९७१-७२
		(लाखों में)
सप्तस्य सप्टया	३८६	३२७२
ग्रामगत पूजा	०६७	८८४६
वायगत पूजा	७७३	४०८६२
अल्पावधि तथा मध्यावधि		
ऋणा का वितरण	११२	५६५३
खाद बीज कीटनाशन दवाओं		
कृषि उपकरण आदि का वितरण -		२१८२
कृषि उपज का विपणन		२३४५
दीर्घावधि ऋणा का वितरण	००३	७७३

इसके अतिरिक्त

७६६ करोड़ रुपये को लघु सिंचाई योजनायें

३२ कृषि विकास की विशेष योजनायें

४३,५४६ एकड़ भूमि का हरिजन एवं आदिवासियों में वितरण

१३००० लाख रुपये की तकावी का वितरण

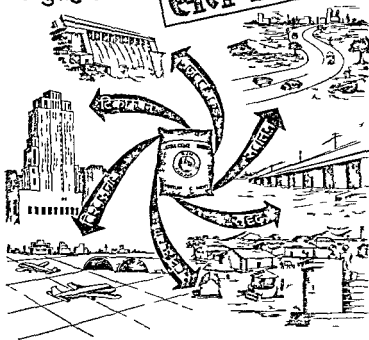
राज्य के सौफीसदी गाव तथा जनसख्या का ३६ प्रतिशत
भाग सहकारिता से लाभान्वित

(पञ्जीयक सहकारी सस्थायें मध्यप्रदेश द्वारा प्रसारित)

निर्माण में सुदृढता एवं स्थायित्व के लिए

खजुराहो ब्राण्ड

सतना सिमेंट



सतना सिमेंट वर्क्स, सतना (मध्य प्रदेश)

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

के पुस्तक विनिमय प्रकाशन

(विरलत सूचीपत्र उक्त विषयविषयगत एवं प्रकाशन विभाग में निम्न प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं)

१	अथर्वशास्त्रादिप्रमाणिका	८००
२	श्रीमद्भगवद्गीता (१६ अध्याय भास्कर भाग)	४१०
३	महाभारतु भाग (१३ भाग)	११००
४	सप्तसप्तशतिका (१२ भाग)	३८५
५	वासुदेवचरितम् (द्वितीयभाग) धर्मशास्त्र	८००
६	पाणिनीय व्याकरण प्रमाण समग्र (भाष्य प्रबंध)	४६०५
७	पाणिनीय धातुपाठ समग्र (भाष्य प्रबंध)	१८५०
८	प्राचीन प्रमाण (संस्कृत विद्यापीठ मारवाडी प्राचार्यजी तथा १० बाल्ये उपरिभाष्य का द्वितीय टीका का भाग)	१००१
९	बृहत्संहिता (१२ भाग मद्रोपनिषदांश)	३८००
१०	प्राचीनभारतीयम् श्रुतिविज्ञानम् (भाष्य प्रबंध)	१८००
११	अथर्ववेद ज्योतिर्विज्ञानम्	१३००
१२	ज्योतिर्विज्ञानम्	६००
१३	वायुविज्ञानम्	१००
१४	वायुसुखाश्चरित (भाषानुवाद-महिम्ना)	५६५०
१५	पञ्चासत्संस्कृतम् (सूत्राय शैविका युक्त)	११००
१६	तन्त्ररत्नम् (मूलाय भाग ४४०, नतुय भाग १३००)	१८५०
१७	वायुवेदसुक्त (प्रथम भाग ३५५ द्वितीय भाग १०००)	१३५
१८	विद्वान्निविश्रितिमात्रागिद्विद्वयम् (भाष्यवृत्ति तथा द्वितीय टीका मन्त्र)	६५
१९	भक्तिरत्नाकरा	१५००
२०	श्राद्धरत्न	१६००
२१	द्वैतपरिशिष्टम्	८००
२२	वैदिकपुराणम्	१८००
२३	गणसंहिता	१०००
२४	नानवचन्द्रोत्थ महावाक्यम्	३१०
२५	काव्यप्रकाश (१३ भाग) (दीपिका टीका)	१२२५
२६	काव्यप्रकाश (मोटुलनामी)	८००
२७	विशुद्धिभङ्गा (१२ भाग परमायमञ्जुपामहाटीका)	६८००
२८	अभिधम्मसूत्रसंग्रह (भाषानुवाद सहित) प्रथम भाग १५०० द्वितीय भाग	२०००
२९	नतसंग्रह (प्रथम भाग १६०० द्वितीय भाग १७००)	३३००
३०	नित्यापाठशिकाणव	२५००
३१	महायमञ्जरी	१७५०
३२	लुप्तगमसंग्रह	१२००
३३	गौरवामिद्वानमसंग्रह	१०५०
३४	यागिनीहृदयम्	१०००
३५	अथर्ववेद मनाविज्ञानम्	१२००
३६	भारतस्य सांस्कृतिकी दिग्विजय	१०००

हस्तलेख सूची १११२ खण्ड (लगभग १ लाख हस्तलिखित वेदादि
विवरण ग्रन्थों की विवरणार्थिका सूची)

८६३७

प्रकाशनाधिकारी, अनुसंधान सस्थान,
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

Look for the GUJCOMASOL mark on all farming aids you buy
 Reap a bumper harvest of happiness and wealth

GUJCOMASOL for quality goods

High quality hybrid seeds fertilizers and pesticides for a bumper crop! And high quality at reasonable prices!

Widespread fertilizer distribution network
 Stock up your fertilizers before the season starts Benefit from over 3 400 GUJCOMASOL distribution centres all over Gujarat

Special facilities

- Three types of fertilizers supplied in one truck load
- Special concessions to small farmers who place advance orders
- Special rebate on transport charges to small farmers



GUJCOMASOL

Where to place your order
 GUJCOMASOL has over 3 400 outlets all over Gujarat Register your requirements at the centre nearest to your village

All your farming aids under one roof

Hybrid Seeds
 G S F C Fertilizer
 N P K (from IFFCO) Imported Fertilizer (from the Pool)
 Insecticides like Thiram DDT BHC Lindane etc
 Irrigation Pumps Engines
 Electric Motors etc
 And at reasonable rates too!

Also Amul milk products like Butter Ghee Whole Milk Powder and Cheese in Gujarat and Rajasthan



Gujarat State Co-operative Marketing Society Ltd
 Sahakar Bhavan Relief Road Ahmedabad

With Compliments from

Phone 8312
Telex (care) P N 218
Gram JG Flasks
P O Box 21 (Chinchwad)

JG Vacuum Flasks Pvt. Ltd.

Plant Office Akurdi, Chinchwad, Poona 19
Regd Office Bombay Poona Road, Pimpri, Poona 18
(INDIA)

दोपक चिह्न
युक्त
प्योर पैक प्रोडक्ट्स
द्वारा प्रस्तुत
शुद्ध एव स्वादिष्ट मसाले
प्योर पैक प्रोडक्ट्स
१३, रानी रातमनी रोड,
बलकृता १३

दी रायपुर को आपरेटिव सेन्ट्रल बैंक लिमिटेड, रायपुर (म० प्र०)

स्थापित १९१२

दूरभाष १५२

बैंक को २६ शाखाओं में सभी प्रकार की बँकिंग सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
लिबिंग में पूरे भारतवर्ष में धरणी

(१) भ्रम पूजा	लाख रुपया में	६६ ३६
(२) रक्षित एव भ्रम निधिया		७० १६
(३) भ्रमानर्त		१६७ ०७
(४) सहकारी सस्थाओं का ऋण		८४४ ८१
(५) कायशील पूजा		६६५ १६

मन्नालाल शक्ला
अध्यक्ष

हजारीलाल वर्मा
उपाध्यक्ष

भजनलाल वर्मा
प्रवे० सचिव

शा० ब० कुलकर्णी
महाप्रबंधक

वार्षिकी १९७४ के प्रकाशन पर

रायपुर चेम्बर आफ कामर्स एंड इन्डस्ट्रीज
की शुभकामनाएँ

एम० एल० नायानो
अध्यक्ष

लूनकरण पारख
मानसेवी सचिव

शिक्षा में गुणात्मक विकास

के लिए

सतत प्रयत्नशील

*

मध्यप्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम

Gram KHETANCO

Phone [Office 25596
Factory 41192

Hindustan Concrete & Allied Industries

Manufacturers of

PRE STRESSED CONCRETE POLES HUME PIPES FENCING
POSTS ETC

Works at

BANKA GHAT
PATNA

Office

KRISHNA CHOWK
STATION ROAD
PATNA 1

स्वदेशी खडसारी उद्योग

दानेदार सफेद चीनी के निर्माता



हमेशा राकेट ब्रान्ड दानेदार खडसारी
व चीनी प्रयोग कीजिए

कारखाना

शारम पेठ

मेडक जिला

फोन-३७

(वाडियाराम एक्सचेंज क द्वारा)

गायानग

१५-२ ३४३ मुहम्मदगज

हैदराबाद-१०००१२

फोन-गाया-१ ३ ६

पिनकोड-६२६६६

FOAM AND FROLIC



Hal Hal my ears are plugged with U FOAM!

U-FOAM

the amazing m lli pu pose u etha e foam

Sanatnagar Hyderabad 18

With Best Compliments

From

ALKA TRAVEL SERVICE

(TOURIST CAR SERVICE CENTRE)

Office

18602, Pankor Naka Opp Jumma Masjid,
AHMEDABAD-380001

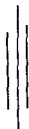
Phone Office 23638
26159
Rest 83597

ON THE SILVER JUBILEE YEAR
OF

HINDUSTHAN SAMACHAR

Wishes Best Compliments

From



MURCURY MOTORS

MIPZAPUR ROAD

AHMEDABAD 1

PHONE 22825

With best
compliments
from

Members of the District Council of

All India Manufacturers' Organisation

Tinsukia (Assam)

CHARMINAR QUIWAM



*Tobacco Paste blended with Pure Saffran
Amber & Musk*

(पात में खाने का तम्बाकू (कियाम))

For Agency write to—

C.D. ZARDA WORKS

367 Ladbazar, Hyderabad-500002

Gram QUIWAM

Phone 45802

Quarter Century of Progress in

HIMACHAL PRADESH

- * Himachal Pradesh has been making tremendous progress in various fields of development ever since it came into existence on April 15 1948 From a Chief Commissioner's Province with an area of 24 000 sq K.Ms and a population of 9 36 lacs in 1948 Himachal Pradesh today is a fullfledged State having an area of 55,658 sq K Ms and a population of 34 60 lacs
- * Then its revenue was Rs 85 lacs Now it stands at Rs 35 94 crores In respect of per capita income Himachal which was one of the most backward areas of India now ranks as the fifth State in the country
- * During 1st Plan the Pradesh spent Rs 5 3 crores During 4th Plan it is utilizing Rs 115 crores For the 5th Plan our proposals amount to Rs 323 crores
- * In 1948 there were only 228 K Ms of roads in the Pradesh Today the roads measure over 12 000 K Ms
- * There are now 4050 electrified villages and towns in the State as against just 20 in 1948 The Himachal Government Transport is covering 1 95 lac K Ms per annum now as compared to just 2000 K Ms then
- * The Production of fruits—apples plums pears peaches citrus mangoes almonds walnuts chilgoza has jumped from 1500 tonnes in 1948 to 1 74 lac tonnes this year
- * The numbers of educational institutions in Himachal Pradesh today are 5500 as compared to 541 at the time of Pradesh's formation The literacy percentage has gone up by more than 500 per cent and today stands at 31 30% Now 18 000 students attend college as against only 50 in 1948 In the field of public health now Himachal has 657 hospitals dispensaries and other medical institutions as compared to 12 in 1948

THE SONS AND DAUGHTERS OF THE PRADESH LIVING ON THE INDO-TIBETEN BORDER ONCE AGAIN ASSURE THE NATION THAT THEY WOULD LEAVE NO STONE UNTURNED IN THEIR EFFORTS TOWARDS NATIONAL DEFENCE AND DEVELOPMENT

HIM LOK SAMPAK

A N N

PROMOTES
ESTABLISHES
FINANCES

MEDIUM AND LARGE INDUSTRIES IN MADHYA PRADESH

For further details and application form please contact —

(1) *Managing Director*

Madhya Pradesh Audyogik Vikas Nigam Limited
36 Bhadbhada Road New Market Bhopal

(2) *Liaison Officer*

Madhya Pradesh Audyogik Vikas Nigam Limited
6 B Pusa Road New Delhi 5

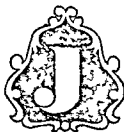
(3) *Liaison Officer*

Madhya Pradesh Audyogik Vikas Nigam Limited
19, Esplanade Mansions 14 Government Place
East Calcutta 1

(4) *Liaison Officer*

Madhya Pradesh Audyogik Vikas Nigam Limited
10/12 Mandlik Road 2nd floor Off Colaba Causeway
Bombay 1

मनमोहक आकर्षक



**JIJAJEE
FABRICS**

जियाजो रॉसिलिन सूटिंग

आपकी कल्पना से परे

अनेक नये

अनोखे डिजायनों में

उपलब्ध

निर्माता

जियाजीराव काटन मिल्स लि०

बिरलानगर

आपके रजत जयंती समारोह पर
हमारी आपको हार्दिक शुभ कामनायें

दी मर्केन्टाइल को-आपरेटिव बैंक लि० जयपुर

यह सम्बंधित श्रेष्ठ एवं द्रुत सेवाएँ हेतु हमारी निम्न शाखाओं पर पधारिये —

सायकालीन शाखा

राजा पाव आदश नगर फोन ६६०३३	विजयपथ यू. बालोनी फोन ७६८६५	एम० एम० एम० नन्दे चौडा रास्ता जयपुर ३ फोन ७३२८३
डा० पी० के० महती अध्यक्ष	कपूरचंद जन उपाध्यक्ष	टी० सी० जन प्रबंध सम्पादन
		एम० पी० भागव व्यवस्थापक

धर्मिकों की सद्भावना और अधिक परिश्रम तथा पूर्ण सहयोग पर आधारित
शोषण रहित नभाज तथा आर्थिक सतुलन की दिशा में एक कदम

सहकारी सूत मिल मर्यादित वरहानपुर, म० प्र०

मध्य प्रदेश की एकमात्र सहकारी सूत मिल

विकेन्द्रित युनिकर्षों की सेवा में गत पाच वर्षों से सतत कार्यरत है।
उत्तम जात के ३४, ४० और ६० नम्बर सूत के निर्माता।

विस्तार कार्यक्रम के प्रथम चरण कार्यान्वित कर शीघ्र ही
शेष विस्तार कार्यक्रम को पूरा करने में प्रयत्नशील है।

सु० प्र० तिबारी
प्रबंध सचिव

ग० च० दीक्षित
उपाध्यक्ष

जे० एन० कौल आई ए एस
अध्यक्ष

मैनेजिंग डायरेक्टर, सहकारी सूत मिल मर्यादित, वरहानपुर

आई० टी० आई० सेवा के २५ वर्ष

१९६८—आई० टी० आई० का जन्म। भारत में भारतीयों को सेवा का नया उद्गम। प्रगति की ओर एक नया कदम। दूरसंचार की सेवा में बड़ी हुई गति का प्रमाण करने के लिए।

विद्यमान २५ सालों के दौरान दूरसंचार की सेवा में आई० टी० आई० ने अपने उत्कृष्ट प्रगति का उदाहरण के साथ-साथ दूर-दूर तक विस्तार किया है। आई० टी० आई० ने दूरसंचार के विभाग के लिए कुछ सामर्थ्य के उदाहरणों का निर्माण किया है। इनमें शामिल हैं: उदाहरण स्वरूप और प्रगति के लिए। गुणवत्ता के माध्यम के लिए उदाहरण सामर्थ्य और गुणवत्ता के उदाहरण के लिए उदाहरण सामर्थ्य है। आई० टी० आई० का बुद्धिमान विचार प्रथम पक्ष की ओर है। ३८ करोड़ रुपयों में भी प्रगति हो सके है। इसीलिए तो आई० टी० आई० का प्रगति उदाहरण पर बहुत बड़ा प्रभाव है। और इस बात पर तो और भी गहरी है कि आई० टी० आई० के उदाहरण ६२ में भी प्रगति करता देता जिसमें प्रगति और प्रगति सामर्थ्य है। सेवा में प्रगति है।

विद्यमान की प्रगति सामर्थ्य प्रगति के साथ-साथ चले हुए आई० टी० आई० ने अपने प्रगति और विभाग के साथ में भी काम करता है। आई० टी० आई० द्वारा विद्यमान लिए गए उदाहरण में मशीन विद्यमान उदाहरण गुणवत्ता उदाहरण में केन्द्र उदाहरण के लिए उदाहरण जा सके तरीका में संचार का सुविधाजनक बनाने में रचना और रचना के लिए विद्यमान उदाहरण तथा प्रति प्रगति उदाहरण उदाहरण सामर्थ्य है।

दूरसंचार प्रगति का मुख्य प्रगति के रूप में आई० टी० आई० का प्रगति बड़ी प्रगति का सामर्थ्य करना पड़ता है। यह है कि इस में बड़े प्रगति पर प्रगति हुई दूरसंचार का उदाहरण की मांग। इस पूरा करने के लिए अभी हमें हाथ में। तो में ही और कमतर में एक मिनट में उत्पादन प्राप्त कर लिया है। इसमें प्रगति समयवर्ती और केवल में भी एक-एक मिनट लगायी जायगी सचिवा आई० टी० आई० की कहानी में प्रगति प्रगति हाथ। प्रगति प्रगति देखा—

ता संचार में आई० टी० आई० की प्रगति की वही एक छोटी सा कहानी। १७००० से भी प्रगति संचार संचार करने वाले सांग की कहानी। इस प्रगति प्रगति रूप से फले देश और समुदाय की प्रगति दूरसंचार के द्वारा जोड़ने के साथ ही गए संचार के प्रगति में आई० टी० आई० प्रगतिशील है। देखा है भारत ही अपने प्रगति में एक संचार है।

आई० टी० आई० अपने २५ सालदार वर्ष पूरे करती है। अपनी रचना-उपती के शुभ प्रवृत्ति पर आई० टी० आई० एक ही उद्देश्य से सबसे प्रगति नतमस्तक है—

हमें एक महान् राष्ट्र की सेवा करनी है।

इण्डियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, बेंगलोर-५६००१६

ओरियन्ट पेपर मिल लिमिटेड

बजरानगर
(उड़ीसा)

भारत
(मध्य प्रदेश)

भारत की दुनिया में कागज शक्तिशाली माध्यम है। जिससे हमारा मानव समाज का कोई भी सदेश बड़ी ही सरलता से प्रेषित किया जा सकता है। ओरियन्ट के मोर ब्राड प्रिंटिंग और राइटिंग कागज देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

ओरियन्ट कागज परम्परा कायम रखता है।

श्री आर० एन० बाजपेयी, चीफ रेजिडेंट आफिसर

- ① CARBON BLOCKS
- ② CARBON BRUSHES
- ③ CARBON GRANULE

M
A
K
E
R
S

Assam Carbon Products Limited

GAUHATI-21

WITH
BEST COMPLIMENTS

From



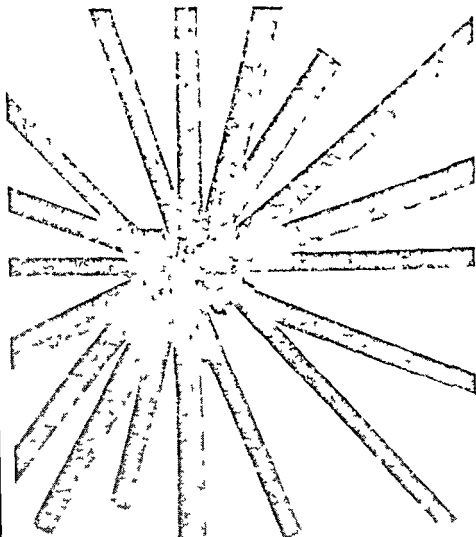
The Gwalior Rayon Silk Mfg (Wvg) Co. Ltd.

(Staple Fibre Division)

P O BIRLAGRAM (NAGDA) M P

Telegram
'GRASIM' Birlagram

Telephone
Nagda 38 & 88



You are looking at an artist's impression of HMT unlimited

It is that for a
 minute and you feel
 that
 Daring.
 You see the same
 day and at work at HMT
 HMT stakeholder
 much to do. More in
 the for
 watches factory
 form and peering

much crying
 please in the
 no heavy tom
 sure
 Today HMT is vigorous
 in the national
 so drive for
 another
 in no

HMT

Rings P.O.
 Karams Hyderabad



GUJARAT EXPORT CORPORATION LIMITED

(A State Government Corporation, and an Eligible Export House)
 HAVING EXPORTED 101 COMMODITIES TO 56 COUNTRIES
 OFFERS ITS SERVICES FOR EXPORTS AS WELL AS FOR
 IMPORTS

Please contact at

GUJARAT EXPORT CORPORATION LTD

Udyog Bhavan Behind Natraj Theatre Ranchhodlal Marg
 AHMEDABAD 380009

Phone No 50244 50485

Telex No 021 359

CABLE GUJEXCO BOX No 290
 AHMEDABAD 380001

With Best Compliments

From



The Jewellers Association

JOHARI BAZAR, JAIPUR (INDIA)

PHONE 72829

With Best Compliments From



Sudip Pharmaceuticals

Distributors for Rajasthan
MAC LABORATORIES PRIVATI LTD
BOMBAY 77

POST BOX NO 115 SMS HIGHWAY
JAIPUR

Phone 74762

Gram SUDIP

With best compliments from

R C S VANASPATI INDUSTRY, JAIPUR-6
(Prop The Ramnuggar Cane & Sugar Co Ltd)

Manufacturer of

**MAHARAJA
&
LADLA
VANASPATI**

Factory

164/181 Industrial Area
Jhotwara, Jaipur 6

Tel No 75820 75985

Office

A 8 Sardar Patel Marg
Jaipur 1

Tel 65198 72672
Res 73992
Gram VITICO
TELEX 036 220

For Your Requirement of

- * HESSIAN
- * SACKING
- * CARPET BACKING
- * COTTON BAGGING
- * ALL OTHER JUTE GOODS

Please contact —

MESSRS HASTINGS MILL LTD

14 Netaji Subhas Road
CALCUTTA 1

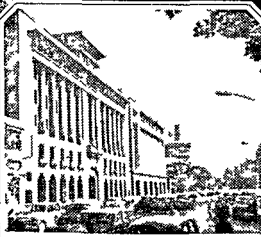
Grams GUNYEXPORT
Telex 7538

Phone 22 6861 (10 lines)


Our other range of manufacture RILAXON Brand Rubberised Coir Cushioning Material suitable for Hospital Automobile Industries Non Woovan Jute Felt for packing & padding purposes Mattresses, Pillows etc

A N D

'GOLD STAR' Synthetic Suitings & Shirtings in charming and fashionable shades



उत्कृष्ट सेवा ही अनोखी
सफलता का राज है।

 **बैंक ऑफ इन्डिया**

With Best Compliments from

M/s. Bipin Trading Company

Manufacturers, Distributors,
Representatives and Suppliers

H O

Ashok Bhavan,
MS Road,
Gauhati 781001

Branch

Kishan Bandhu,
Akhora Road,
Agartala

Phones 5484 5171

Gram "RAHNUMA"

Phone

Office 43210
Press 31228
Res 31215

READ AND ADVERTISE IN
THE
RAHNUMA-E-DECCAN
DAILY

HYDERABAD-12

LARGEST CIRCULATED URDU NEWSPAPER
OF
SOUTH INDIA
MEMBERS OF

INDIAN & EASTERN NEWSPAPER SOCIETY NEW DELHI
AUDIT BUREAU OF CIRCULATION BOMBAY

PUBLISHED FROM HYDERABAD

MANAGING EDITOR
S LATEEFUDDIN

CHIEF EDITOR
S VICARUDDIN

With Best Compliments from
M/s Lalji H Thacker & Co.

ESTATE AGENTS

M/s Kantilal K Thacker & Co.

ESTATE CONSULTANTS

A 1 Jeevan Jyot
 18-20 Cawasji Patel Street
 Fort, Bombay 1
 Phone No 290021

PRATIMA CASTINGS

Quality Casting in Non Ferrous
 Specialist in Bronze, Sculptures & Impellers

A 131 M I D C D DOMBIVALI,

(MAHARASHTRA)

Phone 484

With The Best Compliments Of

RAMKUMAR MILLS PRIVATE LIMITED

AND

SRI KRISHNA SPG & WVG MILLS PVT LTD

BANGALORE 560 053

With Best Compliments from

THE BINOD MILLS CO. LTD.

(Binod & Bimal Mills)

Agar Road Ujjain M P

फोन 34 4792, 34 2876

तार कृपाएमजी

एस० जी० सप्लाई एजेन्सी

४८, डी, मुक्ताराम वावू स्ट्रीट, कलकत्ता ७

सोल सेलिंग एजंट्स —

डालमिया मंगनेसाइट कारपोरेशन, सालेम (तमिलनाडु)

शाखा, प्रतिनिधि एवं अभिकर्ता कार्यालय

- | | | | |
|-------------|-------------|----------|------------|
| ① नई दिल्ली | ② दुर्गापुर | ③ भिलाई | ④ राजरकेसा |
| ⑤ नागपुर | ⑥ कानपुर | ⑦ बोफारो | ⑧ राची |

INDIAN GEMMOLOGY (ENGLISH)

रत्न प्रकाश (हिन्दी)

BY

राजरूप टाक

पता श्री राजरूप टाक जोहरी मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जोहरी बाजार जयपुर ३*With the Best Compliments from***M/s K. K. Agrawal**

Tube Well Contractor

SAKTI

BILASPUR (M P)

Telegram RUBBER

Office	406
Telephone Factory	360
Res Mg Director	218
Res Fy Manager	219

THE NATIONAL INDIA RUBBER WORKS LTD

Regd Office KATNI (M P)

Manufacturers of all types of Rubber Goods Moulded
Extruded and Sheeted made of Natural and Synthetic
Rubbers as per Customer's Specifications and drawings

Registered with Govt D G S & D, Defence and Railway Establishments

गणतन्त्र का हार्दिक अभिनन्दन

मध्य प्रदेश राज्य सहकारी गृह निर्माण वित्त समिति मर्या०, भोपाल
सहकारिता के आघार पर अपने निजी मकान का स्वप्न साकार करने का एकमात्र स्रोत ।
सहकारिता को सफल बनाने के लिए आपका सहयोग अपेक्षित ।

आसान ब्याज दर पर ऋण राशि की उपलब्धि ।

अभी तक सस्या के ऋण से प्रदेश में ४०० मकान आवास के निमित्त ।

त्रिभुवन यादव

पी० आर० श्रीवास्तव

मुनालाल शुक्ल

उपाध्यक्ष

प्रबन्ध संचालक

अध्यक्ष

दि मध्य प्रदेश स्टेट इन्डस्ट्रीज कारपोरेशन लि०,

(म० प्र० सरकार का प्रतिष्ठान)

मध्य प्रदेश में विभिन्न उद्योगों को चलाकर राष्ट्र और सबसाधारण जनता के सेवास
हम निम्न उत्पादन करते हैं

परिष्कृत एवं विगुणित स्पिरिट सिविल एवं मिलिटरी चमड़े के जूते और टेन्स रगिन
कार्बो फर्शो टाइल्स एवं पाइप्स वाइसिकल स्टील फर्नीचर लकड़ी के फर्नीचर वाटर प्रम्स,
कपि औजार छाता की कमानिया काटेदार तार ब्रश एवं खेल के सामान ।

हम कपड़े का क्लेडरिंग तथा सूत की रगाई एवं खाला का शोधन भी करते हैं ।

उपरोक्त सम्बन्ध में अपनी आवश्यकता के लिए कृपया सम्पर्क करें—

दि एम० पी० स्टेट इन्डस्ट्रीज कारपोरेशन लि०

माहेश्वरी भवन, सिविल लाइन्स, भोपाल-२ (म० प्र०)

राजस्थान नहर

(राष्ट्रीय महत्त्व की एक विशालतम सिंचाई परियोजना)

- १ भारत के उत्तर-पश्चिम में राजस्थान के रजिस्तानी भाग को हरा भरा बनाने वाली योजना ।
- २ पंजाब में हरिं के पटन से निकल कर राजस्थान के जेसलमर क्षेत्र तक विस्तृत मुख्य नहर की ही लम्बाई ६५० किलोमीटर होगी । इसके अतिरिक्त राजकीय वितरण प्रणाली ६१०० किलोमीटर में और भी होगी । नहर के उदगम पर इसकी गहराई ७ मीटर एवं क्षमता ५२० घन मीटर प्रति सेकण्ड होगी ।
- ३ इस परियोजना पर निमाण कार्य सन १९५८ में प्रारम्भ हुआ था एवं अब तक इसकी मुख्य नहर ३३० किलोमीटर लम्बी पूरा हो चुकी है ।
- ४ २७६ करोड़ रुपये की सहायित अनुमानित लागत में बनने वाली यह योजना औसतन कोर्ट १५००० से अधिक व्यक्तियों का प्रतिदिन रोजगार प्रदान करता है ।
- ५ वर्ष १९७३-७४ में इस योजना से लगभग २ लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की गई है जो योजना के पूरा होने पर १२६० लाख हेक्टेयर तक बढ़ जावेगी ।
- ६ इस योजना के पूरा होने पर इस क्षेत्र का वार्षिक कृषि उत्पादन लगभग ३० लाख टन बढ़ जावेगा जिसका अनुमानित कीमत ३०० करोड़ रुपये होगी । शत्रु का मुख्य फसलें गेहूँ घना सरसो चुकन्दर भूगफली गवार गन्ना एवं कपास होगी ।
- ७ यह परियोजना नागरिका श्रमिका किसानों अग्रियन्ताओं एवं उत्पादकता के उज्ज्वल भविष्य के हेतु एक स्वयं श्रवसर प्रदान करती है ।
इस राष्ट्रीय योजना को सफल बनाने में सभी समुदायों का योगदान अपेक्षित है ।

—सचिव, राजस्थान नहर मण्डल,

सिंचाई भवन भवानीसिंह मार्ग जयपुर ५ द्वारा प्रसारित

नगरपालिका परिषद्, शिवपुरी (म० प्र०)

बहिर्गामी नगरपालिका परिषद् शिवपुरी के चार वर्षीय कार्यकाल म नगर शिवपुरी न अपने सुयोग्य नागरिको के सहयोग से विकास की मजिले तय की है, उन उपलब्धिया का दिग्दर्शन कराते हुये वह सम्मानीय नागरिको को नगर के विकास सम्बन्ध म श्रेष्ठ सुझावों की अपेक्षा करती है।
प्रगति के चरण

धाय	व्यय	जन उपयोगी कामों पर व्यय
१९७० ७१	८४२५६३ ३८	७३६३६३ ५४
१९७१ ७२	११६३४०० ८८	८५२८१६ ५४
१९७२ ७३	११४२१२७ ३७	१०२५८०२ ६५
१९७३ ७४	१६१११२० ००	—
		३०१६६० ०० लगभग

एजाज हुसन खा
मध्य नगर पालिका अधिकारी

रामधरवतार शर्मा
प्रशासक

गणतन्त्र दिवस १९७४ के शुभ अवसर पर नागरिकों का हार्दिक अभिनन्दन

नगर की उप्रति म सहयोग प्रदान कर। करा का भुगतान समय पर करें। अनधिकृत अतिक्रमण न करे तथा कृत्रिम भूमि को निजी व नगरपालिका भूमि मान कर निर्माण कार्य न करावे। नालिया मे टट्टी पशाब न करे न करने दें। नगरपालिका सम्पत्ति का क्षति न पहुचाये न पहुचाने दें। अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत करके सहयोग प्रदान करें।

एम० ए० एजाजी धार० एम० एस०
अधिसासी अधिकारी नगरपालिका बूदी

रामसिंह जन धार० ए० एस०
प्रशासक नगरपालिका, बूदी (राज०)

Phones { Shop 76785
Resi 65490
Works 62885

With Best Compliments From

SHREE KHATRI CLOTH STORE

17 Bapu Bazar Jaipur (Raj)

Specialists BARMERI AND SAGANERI PRINTS

Famous For Fast Colour & Charming & Historical Designs A Marvellous
Colour Combinations and fine Workmanship

Of

Prem Printing & Dyeing Works

With Best Compliments From

SYNTHETIC DRUGS PLANT

HYDERABAD 500037

Manufacturers of

SULPHA & ANTI TB DRUGS HYPNOTICS ANTHELMINTICS
ANALGEBICS & ANTIPYRETICS VITAMINS ETC

REGD OFFICE

INDIAN DRUGS PHARMACEUTICALS LTD

(A Government of India Undertaking)

N 12 N D S E Part I New Delhi 49

FORT GLOSTER INDUSTRIES LTD.

(Jute Mills Department)

21, Strand Road, Calcutta-1

Manufacturers of

- QUALITY HESSIAN
- SACKINGS
- CARPET BACKING CLOTH
- JUTE WEBBINGS
- TWINE ETC

Gram ' FORTFIBRE

Telex CA 7749

Phone 229601/6

The Rajasthan State Industrial Coop Bank Ltd

Post Box No 168, Manohar Building, MI Road, Jaipur Phone 76103

Evening Branch, Chandpole Bazar Jaipur Phone 61905

State level organisation on the cooperative basis for meeting financial requirements of Industries & trade

State participation in share capital

Attractive Interest Rates

(Savings 5%)

(Short term 5 to 6%)

(Fixed 5 to 8%)

Draft facilities on more than 50 outstations

All types of loan accounts

VISHWANATH SINGH

N K KHANDELWAL

GENERAL MANAGER

CHAIRMAN

With Best Compliments From

THE BRITISH INDIA CORPORATION LTD

New Egerton Woollen Mills Branch,

DHARIWAL (Pb)

MANUFACTURERS OF COUNTRY'S LARGEST SELLING SUITINGS
TWEEDS FLANNELS RUGS LOHIS SHAWLS & KNITTING YARNS

Himachal Pradesh State Coop Bank Ltd H O Simla

(Sponsored and Financed by Government of Himachal Pradesh)
HELPS FARMERS IN AGRICULTURAL PRODUCTION

The Bank offers most attractive and competitive rate of interest on deposits. The Fixed Deposits are accepted upto a maximum rate of interest of 7½% P A interest @ 4½% P A is paid on Savings Bank deposits.

The Bank transacts all types of Banking business including remittance of funds and collection of bills through a net work of its Branches all over Himachal Pradesh and agency arrangements at all leading business centres of the country.

Loans to farmers for agricultural purposes and milch cattle in the areas selected for Dairy Development are issued at concessional rates of interest through their Cooperative Societies.

For full details please contact any of our Branches

K R CHAUHAN M L A K C DHAWAN C S TOMAR
President Manager Head Office General Manager

Himachal Pradesh Financial Corporation

1st Floor Kishore Bhawan The Mall Simla 1

(Established under the State Financial Corporation Act 1951)
Are you interested to set up an Industry

Or

Expand the present one in Himachal Pradesh
Let us solve your Financial Problems

The Corporation provides loans ranging from Rupees ten thousand to Rupees fifteen lacs (for Companies and Co operative Societies up to Rupees thirty lacs)
Interest is only 7½% in backward districts on availing refinance and assistance is up to 75% of Fixed Assets
For further details please contact the corporation

GOBIND SAHAI
Managing Director

Tel Off 3109
 Res 3056

Grams 'KAILCO

Head Office	2526
Tel Potato Office	2356
Secy's Residence	2041

**The Kailash District Co-operative Marketing
And Supply Federation Ltd**
DHALI-SIMLA-12, (HIMACHAL PRADESH)

On the forefront at service of the people of Simla Hills for supply of their all consumers requirements on fair prices and marketing of their main cash crop of seed potatoes ensuring remunerable price to the poor growers

For graded Agmark disease free and quality seed Potatoes

Viz KUFRI JYOTI KUDRI CHANDERMUKHI
& UPTODATI varieties

Always remember and contact

**The Kailash District Co operative Marketing and
Supply Federation Limited**

Potato Office Ground Floor, Thakur Hotel (Royal Hotel) Simla 1

K S DULTA
SECRETARY

H C BHALLIAK
CHAIRMAN

Always Ahead of Fashions

FABINA

SUITINGS & SHIRTINGS

Manufacturers

BINA SILK MILLS

Balrajeshwar Road, Mulund, Bombay 80

Phone 591329

The Himachal Pradesh State Cooperative Marketing & Development Federation Ltd Simla

No 1 Bank Building The Mall Simla

Telegram HIMFED Telephones Office 3329 Residence 5075

- 1 Wholesale Nominee of Government Foodgrains Sugar and Iodised Salt for Simla District
- 2 Dealers in Iron and Steel
- 3 Wholesale Suppliers of Consumer Goods and Hosiery Goods
- 4 Distributors of Laxmi Brand Pure Desi Ghee
- 5 Stockists of (i) Panghat (ii) Jawan and Rath Vegetable Ghee
- 6 Suppliers of (a) Chemical Fertilizers Insecticides and Pesticides
Dithene Z 78 and Dithene M 45 Stam F 34
Grass and Weed Killer
(b) Granulated Fertilizer Mixture for Balanced Fertilization
- 7 Dry Batteries Transistors and Battery Cells
- 8 Imported Goods (i) Transistors Watches, Blades Cloth and Confectionaries etc (ii) Seedless Dates (Iraq)
- 9 Best Quality Ready Made Shirts Cotton and Terene and Tericot Orylene
- 10 Stainless Steel Utensils, and Plastic Goods
- 11 Marketing Himachal Sweet and Delicious Apples in Delhi Calcutta Madras Bombay Markets and Marketing Himachal Best Graded and Disease Free Seed Potatoes

Avail Our Services to Get Benefits

B K. SHARMA
SECRETARY

SANT RAM SHARMA M L A
PRESIDENT

WITH
BEST COMPLIMENTS
FROM

{
,
}
)

Hukumchand Jute Mills Ltd.

15 INDIA EXCHANGE PLACE
CALCUTTA-700001

With Best Compliments from

**Bharat General & Textile Industries
Ltd.**

9 PARSEE CHURCH STREET,
CALCUTTA 700001

With Best Compliments from

**M/s Kesoram Industries & Cotton
Mills Ltd.**

9/1, R N Mukherji Road
CALCUTTA-700001

*With Best
Compliments from*

M/s Woodcraft Products Ltd.

91, R N Mukherji Road,
CALCUTTA-700001

Factory

- 1 JAIPUR (Rajasthan)
- 2 LEDO (Assam)
- 3 BIPHU (Assam)

शुभ कामनाओं के साथ

नगरपालिका मण्डल, सुजानगढ़ (चूरु)

गणतंत्र दिवस पर नागरिकों का हादिक अभिनन्दन करती हैं एवं अपील करती हैं कि —

- १—नगर का स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखें।
- २—खाद्य सामग्री में मिलावट न कर।
- ३—कूड़ा कचरा सड़कों व नालियों में न फेंकें तथा बच्चा का नालिया में डट्टी न करायें।
- ४—ग्राम सड़क तथा छुले सार्वजनिक स्थानों पर पत्थर मलबा वगैरा इकट्ठा न करें।
- ५—पालिका की संपत्ति को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचायें।
- ६—नगरपालिका की वकाया रकम शीघ्र जमा करायें।
- ७—चुगी चोरी करने वालों की सहयोग न दें।
- ८—श्रवण निर्माण, सरकारी भूमि पर अतिक्रमण एवं फुटपाथ पर अतिक्रमण करना कानूनी अपराध है।
- ९—जन विकास कार्यों में पालिका की मुक्त हाथ से सहायता करें।
- १०—पालिका द्वारा जारी किये जाने वाले अनुना पत्रों का समय पर नवीनीकरण करावें।
- ११—जन्म मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करावें। आपके व देश की भावी योजना के लिय हितकर है।

यह पालिका आपकी अपनी सस्था है, आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर स्वायत्त शासन को सफल बनावे।

मनोहर लाल
प्रशासक

त्रिशूल मार्क सीमेड ही श्रपनाइये

क्याकि यह —

प्रत्येक प्रकार की जलवायु में उपयुक्त होता है और उच्चतम प्रतिफल प्रदान करता है।
आधुनिक मशीना के प्रयोग व साथ पूण कुशल प्रबंध द्वारा संचालित है।
विशुद्ध भारतीय श्रम व पूजा के अनुकरणीय सहयोग का ज्वलंत उदाहरण है।
राष्ट्रानति की विशाल योजनाओं में महत्वपूर्ण योग प्रदान करता है।

डी जयपुर उद्योग लि० जयपुर
कारखाना सवाई माधोपुर (१० रेलवे) राजस्थान

फोन ६५

खचेडूसिंह नरेन्द्रकुमार (रजि०)

४३१ कृष्णगज पिलखुवा (मिरठ) उत्तर प्रदेश

साडिया, बैडशीट, लिहाफ आदि की आकषक व पक्की छपाई
तथा रँगई का देशभर में विख्यात केन्द्र।

With Best Compliments From

RAJENDRA PLASTIC INDUSTRIES

61/1, Industrial Area, Jhotwara, JAIPUR-6

(MANUFACTURERS OF P V C FOOTWEAR)

Phone 65578

Gram RAJPLAST

The West Coast Paper Mills Limited

Manufacturers of

"Sudarshan Chakra" brand quality paper—
Azorelaid, Kraft, Poster, Board, Maplitho Printing Surface Sized

WEST COAST PAPER PRODUCE MORE THAN
45 000 TONNES OF PAPER ANNUALLY

PAPER FOR INDIA S MANY GROWING NEEDS

Administrative Office

Shreenivas House

Hazarimal Soman Marg,

BOMBAY 400 001

Telephone Nos 268241 & 260041

Registered Office & Mills at :

Dandeli

Dist North Kanara

KARNATAKA

With best compliments



Manakchand Bachraj

MANUFACTURER S REPRESENTATIVES

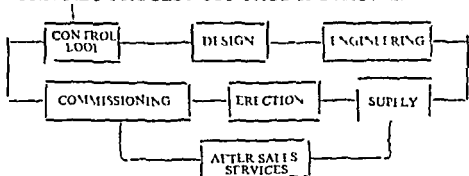
THANGAL BAZAR

P O IMPHAL (MANIPUR)

PHONE NO 93

GRAM DUGAR

TURN-KEY PROCESS CONTROL INSTRUMENTATION



For
Steel, Chemical Fertilizer Petrochemical Thermal or Atomic
Power Station and other Process Industries



Contact

Chief Commercial Manager,

Instrumentation Limited

Kota-324 005 (Rajasthan)

Or your nearest Regional Offices at

BOMBAY

'F Shyvsagar Estate
6th Floor

Dr A Besant Road
Worli Bombay 18
Phone 378717

CALCUTTA

Kohinoor Building
105 Park Street

Calcutta 16
Phone 248453

DELHI

D 30 NDSE Part II
New Delhi

Phone 622563
Telex ILND 3237

MADRAS

55 A/1 Peter's Road
Madras 6

Phone 88082 TELEEX 041 7243

IL-INSTRUMENTAL IN YOUR FUTURE

PUNJAB STATE ELECTRICITY BOARD

is Proud of its Progress since Independence

The figures speak for themselves

	On March 1948	On May 1967 on the formation of New Punjab State Electricity Board	At Present 1974
Domestic Connections	12952	418668	796700
Commercial Connections	3057	99038	156315
Industrial Connections	766	18863	31705
Tubewell Connections	—	32307	121989

So far 6750 villages have been electrified in the State
The Power Tariff in the state is the lowest in the country
Public Relations Department Punjab State Electricity Board

With best compliments from

SATYA NARAYAN BHAGCHANDKA

Dealers in
IMPORT ENTITLEMENT & BARTER LICENCES
 6/1, Clive Row, Calcutta 700001

Tele NEGOLICE

Phone { Office 22 8035
 22 3617
 Resi 34 9092

The Madhya Pradesh State Mining Corporation Ltd

(A Government of Madhya Pradesh Undertaking)

E 1/2, Arera Colony Bhopal 14

The Corporation has embarked upon large scale mining activities in respect of limestone, dolomite glass sand pyrophyllite and diaspor. In addition to this it is also supplying minor minerals to building construction programmes in the State

The Corporation hopes to serve the mineral based industry in a big way

CHOWDHARY STEEL

Corporation

Importers & Stockists of
Tool, Alloy & Special Steel

5B Clive Ghat Street,

CALCUTTA 1

Phone { Office 23 0782
 Resi 45 2996

With best Compliments from

LILASONS BREWERIES (P) LTD

Industrial Area Govindpura

Bhopal 462023

Makers of

NORTHPOLE CHELMSFORD KOHINOOR &
 KHAJURAHO
 brands of beers

HOLDING THE PRICE LINE FOR COFFEE BLEND COFFEE POWDER

Available at Pegged Price of Rs 10 Per Kilo (Inclusive of Taxes)
FROM

ALL INDIA COFFEE DEPOTS AND COFFEE HOUSES OF
THE COFFEE BOARD

TILL DECEMBER 31 1974

Newly roasted and freshly ground
by those

who know coffee best,

this Coffee Powder is available in sealed packets
from

India Coffee Depot No 66 Tolstoy lane New Delhi

India Coffee Depot, Aryasamaj Road Karol Bagh New Delhi

India Coffee Room Shastri Bhavan New Delhi

India Coffee Room Udyoga Bhavan New Delhi

India Coffee Room Yojana Bhavan New Delhi

India Coffee Room Parliament House New Delhi

and other India Coffee Depots of the Board in all parts of India

COFFEE BOARD

NO 1 VIDHANA VEEDHI

BANGALORE 1

BHOPAL UNIVERSITY ON THE PATH OF PROGRESS

- 1 24 Colleges are affiliated
- 2 15000 Students taking education
- 3 Nine faculties exist viz Education Arts Science Social Science
Commerce Law Home Science Medicine & Engineering & Technology
- 4 Ph D awarded to seven candidates
- 5 Teaching Dep'tts to be started in future

(1) Dep'tt of Bio Sciences

(2) Dep'tt of Regional Planning and Economic Growth

(3) Dep'tt of Arabic Persian German French Sanskrit etc

(4) Dep'tt of Higher Legal Studies and Diploma Courses

other projects submitted

(1) Introduction of Correspondence courses for Degree Examinations

(2) Pre Examination Training Centre for IAS/IPS & Allied
Examination 1974

(3) Establishment of the Central Laboratory

(Research Promotion Service Science)

(4) Central Science Service Centre

(5) Postgraduate courses in Electrochemistry

With best compliments from

RAVI CHEMICALS PVT LTD

139B/1 Anand Palit Road Calcutta 700014

Post Box No 11221

Agents for **SOLAR CHEMICALS (KANPUR) PVT LTD**

Manufacturers of **SODIUM SULPHIDE (Beads & Solid)**

Agents for **Dinkar Chemicals**

Manufacturers of

SODIUM BICHROMATE CHROMIC ACID CENTURY RAYON

SODIUM SULPHATE ANHYDROUS

Specified items **Caustic Soda Tri Sodium Phosphate Soda Ash**

Sodium Sulphite Zinc Chloride Hypo Powder etc

मुपत ।

मुपत ।।

मुपत ।।।

सफेद दाग

अगर आप सफेद दाग या किसी प्रकार के चम रोगों से परेशान हैं तो चिन्ता न कर। रोग विवरण लिखकर दो पाकेट लगाने की विरयत तथा प्रसिद्ध अमृतकुटी मुपत मगाकर सिर्फ ५ दिनों में लाभ प्राप्त करें।

हिन्द आयुर्वेद भवन (BH)

पो० कतरीसराय (गया)

With best compliments from

SHINE PRODUCTS

Factory

1, Oil Installation Road, Calcutta 43

Tele 45 5977

Office

23A, Netaji Subhas Road (5th Floor) Room 21

Calcutta - 1

TELEGRAPHIC ADDRESS SHPROTAPE

RENOWNED FGR QUALITY GUMMED PAPER TAPES

Grains MINDCORP

Tele-phones 3993 3792

The Himachal Pradesh

**Mineral & Industrial Development Corporation Limited
(A STATE GOVERNMENT UNDERTAKING)**

**Kashore Bhawan The Mall Simla 1
IN THE SERVICE OF THE NATION**

Our Factories

- (a) Nahar Ceramics Paints
Sahib Distt Sirmur
- (b) Silk Millinery Bodh Nur
pur Distt Kangra
- (c) Carpet Factories
Nurpur/Bilampur Distt
Kangra
- (d) Furniture Factories
Dharmpur (Distt Solan)
Bilaspur Distt Bilaspur

Products

- Quality Tea Sets toys flower vases
and I T Shackl- insulators
- Raw silk and bye products
- Quality carpets
- Office/domestic furniture of super or
quality

Other Assignments

- (a) Imported wool and woollen yarn for distribution to Hosiery and
Handloom units in the Pradesh
- (b) Mining of Dolomite and Limestone
- (c) Development of Industrial Areas in Himachal Pradesh
- (d) Establishment of a 2400 Worsted Spindles Plant at Nalagarh Distt
Solan

**GAIC IS MOVING HEAVEN & EARTH
FOR A GREEN REVOLUTION**

GAIC with its three subsidiaries and two associate companies now encompasses almost every human endeavour in the field of agriculture In an attempt to help the cause of agriculture and agro Industries GAIC —has

- * established 20 agro service centres throughout Gujarat for tractor and farm machinery servicing and farm inputs distribution
- * set up cold storages and canning units
- * been manufacturing cattle feed and pesticides
- * set a troubled tractor factory on its way to rehabilitation
- * set up extraction plants to extract oil from various oilseeds and rice bran
- * undertaken aerial spraying for plant protection
- * exported oil extractions and other products earning foreign exchange worth twenty five million rupees
- * hit a total turnover figure of sixty five million rupees in the last year only

And all these at an age of just four years

We have many more greener years to go !!

Gujarat Agro Industries Corporation Ltd

Gujarat Agro Oil Enterprises Ltd

Gujarat Agro Foods Ltd

Gujarat Agro Marine Products Ltd

Gujarat Agro Vivekanand Gums Ltd Hindustan Tractors Ltd

(Authorised controller Gujarat Agro Industries Corporation Ltd)

**Khet Udyog Bhavan, Opp High Court, Navrangpura
Ahmedabad-380014**



PESTICIDES
ENSURE
ERADICATION OF
ALL PESTS OF
AGRICULTURAL CROPS



*For any Requirements
Please contact —*

NATIONAL PESTICIDES
5, Industrial Estate, Vidisha (M P) C Rly

Gram PESTICIDES

Phones

Factory & Office 152
After Office Hours 87

RAJDHANI EXPRESS A NEW CONCEPT IN SPEED AND COMFORT

Ride in luxury in the dust free noise insulated smooth riding fully air conditioned train from Howrah to Delhi in just 17 hrs 20 mts Thrill to the experience of travelling at 120 Km per hour Listen to the soft music brought to you over the public address system Enjoy the excellent cuisine—evening tea dinner and breakfast at your seat at no extra cost served to you from the well appointed Pantry Car

TRAVEL SLUMBERETTE OR SLEEPER

Twice weekly—Howrah :
Mondays & Fridays
New Delhi: Wednesdays
and Saturdays
Slumberette—Rs 90/
including food
Sleeper—Rs 280/-
including food



EASTERN RAILWAY

*'In A Hundred Ages Of The Gods, I Could Not Tell Thee
Glories Of Himachal*

(SKANDA PURANA)

VISIT HIMACHAL PRADESH

FOR

Boating	In the lakes of Renuka Rewalsar Khajjar and Govindsagar
Trout and Mahashir Fishing	Rohru Barot Giri River Bilaspur and Katrain
Golf	At Naldehra and Khajjar
Skating	At Kufri Narkanda Manali and Khajjar
Fairs and Festivals	Renuka (Sirmur) Minjar (Chamba) Shivratri (Mandi) Shri Naina Devi Jee & Nalwari (Bilaspur) Lavi (Rampur) and Kulu Dushera
Temples	Jwalamukhi Baijnath Varjeshwari Devi (Kangra) Lakshmi Narayan (Chamba) Shiv Mandir (Bharmaur) Shri Naina Devi Jee (Bilaspur) Mahunag Mandi (Mandi) Hatkoti Bhimkali (Sarahn) and Chamunda Devi (Dadh)
Trekking & Mountaineering	In the interwoven valleys spread through out the Pradesh especially in Kulu and Chamba Valleys
Accommodation	Tourist accommodation available at moderate rates in the Tourist Bungalows and Government Rest Houses at Simla Chail Manali Bilaspur Dharm sala Chamba Dalhousie Narkanda Jogindernagar Palampur Renuka Nahan and Paonta Sahib <i>For assistance information and reserva tion of accommodation Please contact</i> Tourist Bureaux Simla (Phone No 3311) Dalhousie (P No 36) Wild Flower Hall Chharabra (8 212) Winter Sports Club Kufri (8 239) Manali (P No 25) Dharam sala (P No 63) Palampur (P No 81) Bilaspur (P No 24) Mandi (P No 175) Chamba (P No 94) Jogindernagar (P No 77) Nahan (P No 10) Pathankot (P No 30) New Delhi (P No 43984) Kasuli (P N 7) Narkanda Tourist Bungalow (P No 30) Chail (P No 43)

Issued by the Managing Director, Himachal Pradesh
Tourism Development Corporation Ltd.,
Kennedy House Simla 4 (P No 3294)

JAWAHAR WELL BORING WORKS, RAIPUR
(A Class Registered Contractor)
FAFADIH CHOWK RAIPUR

Specialists in
Prospecting Works, Bridges
Dam Foundations and
Mines etc

HALL & ANDERSON
FOR

Hill's Woolen Pair Carpets
Super Quality Steel Almira's
Folding Aluminium Furniture
Flocked Nylon Carpets
Comtrust Washable Cotton Rugs
Uniforms For Home, Office Industry
PROPS SHREE MADHUSUDAN MILLS LTD
Showroom Park Street, Calcutta

नगर महापालिका, लखनऊ

द्वारा संचालित

आवास एवं विकास योजनाओं में प्रमुख
अलीगज मार्ग एवं नगर प्रसार योजना
के अंतर्गत

- (१) द्वायिक दष्टि स कमजार व्यक्तिया क लिए १००० किराये के भवना की व्यवस्था की गई है।
- (२) हरिजना क लिए १००० किराये क भवना की व्यवस्था की गई है।
- (३) मध्यम आय वग, लिमन आय वग एवं गरीबा क लिए किराया कम पर प्राप्त करन क लिए लगभग १५०० भवन निर्माण की योजना प्रगति पर है।
- (४) इतने अतिरिक्त २००० भूखण्ड विभिन्न श्रेणी के व्यक्तिया का शीघ्र उपलब्ध कराये जायगे।

नव निर्मित २०० भवनों का आवंटन प्रारम्भ कर दिया गया है।

हम लखनऊ के नागरिका के लिए अधिक भूखण्ड, भवन व्यापारिक केन्द्र, टासपोट नगर तथा अन्य नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराने की योजनाओं में तल्लीन हैं।

ह० मुहीउददीन अहमद
प्रशासक

With Best

Compliments

from

|

Bells General Industries

26/1, Strand Road

CALCUTTA 700001

Phone 220415

Gram MOLYCAROM

Stores Supply (India) Agency

|||

HEAD OFFICE

5-B, Clive Ghat Street,
Calcutta-7

Phone 224826
224827

REGIONAL OFFICE

4044, Ajmeri gate
Delhi 6

Phone 275707

With best

compliments

from,

JODHPUR WOOLLEN MILLS Ltd.

Manufacturers of

**Woollen Yarns, Carpets, Woollen Fabrics
Guar Splits & Guar Gum Powder**

Regd Office & Mills

**5 & 6 Heavy Industrial Area
JODHPUR (Rajasthan)**

Gram Wooltex

Phone 21776 23216 21075

DO YOU KNOW

**FLAX is the strongest natural fibre
It is most ancient and most modern
It is irreplaceable for its natural qualities
Its products always retain their shape**

**FLAX & REINFORCED RUBBERLINED FIRE HOSES
ARE OUR SPECIALITIES**

For flax goods we are the only manufacturers in India

With all this and HT & LT Insulators and Pressed Porcelain too

JAYA SHREE TEXTILES & INDUSTRIES LTD

P O Rishra, Dist Hooghly, West Bengal, India

Phone 618 226 227 228 244 & 661

Telegram **LINENMILL** Rishra

राज० बँक की लाभकारी ऋण योजनाए

कृषि सघ व कृषीर उद्योग स्वयंभवाविया परिवर्तन चालना प्रतारा गुरा
व्यापारिया व प्राय मभी वर्गा व निए

विदेशी विनिमय व्यवसाय बी मुविधा भी उपलब्ध
निकटस्थ शाखा से सम्पर्क करें

दी बँक आफ राजस्थान लि०

पञ्जीकृत कार्यालय, उदयपुर

केन्द्रीय कार्यालय जयपुर

एस० डी० मेहरा अध्यक्ष

With Best Compliments of

S L MAHESWARI

Sole Proprietor

SHREELAL SAGARMAL

23/A 44A Block C New Alipore
CALCUTTA

BIRJHORA TEA

is famous for
its Superb Quality Liquor & Flavour
For your requirement Teas

Contact —

BHUTAN DUARS TEA ASSOCIATION LIMITED

(Owners of Birjhora Tea Estate Assam)

Nilhat House (6th floor) II Rajendra Nath Mukharjee Road
CALCUTTA 1

Phone No 23 8582

Phones { 2845 (Office)
2843 (Work Shop)
PST No RYP/1583
CST No RYP/751 (C)

Established 1932

Big size Boring of 6" to 18" also undertaking

RAIPUR WELL BORING COMPANY

Specialists in Prospecting Works Bridges & Dams Foundations and
Mines etc

Station Road Fafadith Chowk RAIPUR (M P)

Dhanlaxmi Pipe & Engineering Stores

Dealers in Drilling Spares Pipes Pumps Nut Bolts & Engineering
Spare Parts & Order Suppliers

M G Road, RAIPUR (M P)

With Best Compliments

From

Shree Synthetics Limited

Naulakhi Maksi Road

UJJAIN (M P)

Manufacturers of

SHREELON & SHREESTER

the yarns that make beautiful fabrics

Gram SHREENYLON

Phones 1025 1135 1225

Despite A wide gap between Power Demand and Availability

The U.P. State Electricity Board

ARE

Endavouring to Maintain and Maximize Supply to

As many of 12 Lakh Consumers as Possible and this is how we Plan to Serve you

Anticipated achievement

	By the end of Fourth Plan (31 3 74)	By the end of Fifth Plan (31 3 79)
--	--	---------------------------------------

Installed Generation Capacity (MW)

Thermal	1 169	3 074
Hydel	660	1 434
	<u>1 829</u>	<u>4 508</u>

Transmission Lines (ckt km)

66 kv & above	9 900	15 935
below 66 kv	1 82 800	3 61 800
	<u>1 92 700</u>	<u>3,77 735</u>

Villages and Harijan

Bastis Electrified (Nos)	37 742	66 642
Private Tubewells/Pumpsets Energised (Nos)	2 33 287	6 33 287
State Tubewells Energised (Nos)	12 300	22 300
Number of Consumers (Nos)	12 60 000	18 00 000

राज० बैंक की लाभकारी ऋण योजनाएँ

शुद्धि लघु व कुटीर उद्योग स्वयंसेवकगणिया परिवर्द्धन चालवा दम्तवागण गुट्टरा
व्यापारिया व ग्राम सभो वर्गा व लिए

विदेशी विनिमय व्यवसाय शो सुविधा भी उपलब्ध
निकटस्थ शाखा से सम्पर्क करें

दी बैंक आफ राजस्थान लि०

पञ्जीकृत कार्यालय, उदयपुर

केन्द्रीय कार्यालय जयपुर

एस० डी० मेहरा अध्यक्ष

With Best Compliments of

S L MAHESWARI

Sole Proprietor

SHREELAL SAGARMAL

23/A 44A Block C New Alipore
CALCUTTA

BIRJHORA TEA

is famous for
its Superb Quality Liquor & Flavour
For your requirement Teas

Contact —

BHUTAN DUARS TEA ASSOCIATION LIMITED

(Owners of Birjhora Tea Estate Assam)

Nilhat House (6th floor) II Rajendra Nath Mukharjee Road
CALCUTTA 1

Phone No 23 8582

Phones { 2845 (Office)
2843 (Work Shop)
PST No RYP/1583
CST No RYP/751 (C)

Established 1932

Big size Boring of 6" to 18" also undertaking

RAIPUR WELL BORING COMPANY

Specialists in Prospecting Works Bridges & Dams Foundations and
Mines etc

Station Road Fafadith Chowk RAIPUR (M P)

Dhanlaxmi Pipe & Engineering Stores

Dealers in Drilling Spares Pipes Pumps Nut Bolts & Engineering
Spare Parts & Order Suppliers

M G Road, RAIPUR (M P)

With Best Compliments

From

Shree Synthetics Limited

Naulakhi Maksi Road

UJJAIN (M P)

Manufacturers of

SHREELON & SHREESTER

the yarns that make beautiful fabrics

Gram SHREENYLON

Phones 1025 1135 1225

Despite A wide gap between Power Demand and Availability

The U.P. State Electricity Board

ARE

Endavouring to Maintain and Maximize Supply to

As many of 12 Lakh Consumers as Possible and this is how we Plan to Serve you

Anticipated achievement

	By the end of Fourth Plan (31 3 74)	By the end of Fifth Plan (31 3 79)
--	--	---------------------------------------

Installed Generation Capacity (MW)

Thermal	1 169	3 074
Hydel	660	1 434
	<hr/> 1 829	<hr/> 4 508

Transmission Lines (ckt km)

66 kv & above	9 900	15 935
below 66 kv	1 82 800	3 61 800
	<hr/> 1 92 700	<hr/> 3,77 735

Villages and Harijan

Bastis Electrified (Nos)	37 742	66 642
--------------------------	--------	--------

Private Tubewells/Pumpsets

Energised (Nos)	2 33 287	6 33 287
-----------------	----------	----------

State Tubewells Energised (Nos)	12 300	22,300
---------------------------------	--------	--------

Number of Consumers (Nos)	12 60 000	18 00 000
---------------------------	-----------	-----------

ALCOBEX

TRUSTED NAME IN NON FERROUS EXTRUDED SEMIS

Whatever the Shape of Component you want to Manufacture cut its cost by using Appropriate Profile (Regular or Irregular) with Confidence in Brasses Aluminium Bronzes and many other Copper and Copper Alloys to your Specification

WELL TESTED WITH LATEST EQUIPMENT

ALCOBEX METALS (P) LTD

24 Heavy Industrial Area JODHPUR (Raj)

Gram ALCOBEX

Phone 21771 & 23066

Regd Office

4909 First Floor Hauz Qazi Chowk, Delhi 110006

Gram ALCOBEX

Phone 271914

STANDING OVATION TO

RAJSICO

Recognised Export House by Government of India
for the

Export of Handicrafts Items

Handprinted textiles Readymade garment Bran Artwares

Ivory Sandalwood etc

not only pieces of Art but items of Utility

available at —

RAJASTHAN HANDICRAFTS EMPORIA

MI Road Jaipur	Connaught Place	Raj Bhawan Road
(Ph 61912)	New Delhi	Mt Abu
	(Ph 45490)	(Ph 96)

230 Dadabhai Naroji Road	Chowranghee Jawaharlal Nehru Road
Bombay 1 (Ph 267746,	Calcutta 16 (Ph 226347)

DISPLAY—CUM—SALES CENTRES

Ashoka Hotel	Bhopal Bhawan	Oberoi Sheraton Hotel
New Delhi	Chittorgarh	Bombay

EXPORT WING at JAIPUR & NEW DELHI

Units of

The Rajasthan Small Industries Corporation Limited

(A Government of Rajasthan Concern)

12 Sahdev Marg C Scheme (P O Box No 180) Jaipur

V I S I T

JODHPUR BIKANER JAISALMER UDAIPUR RANAKPUR MT ABU

Just land by Air at Jodhpur

From

DELHI OR BOMBAY

&

Then take this fabulous tour by car

- 1 Jodhpur to Jaisalmer—170 miles (272 Km)
- 2 Jodhpur to Ranakpur—105 miles (168 Km) and other 95 miles (152 Km) on the same route to Udaipur You can also fly from Jodhpur to Udaipur
- 3 Jodhpur to Bikaner—150 miles (240 Km)
- 4 Jodhpur to Mt Abu—165 miles (265 Km) You can visit Ranakpur enroute to Mt Abu by a diversion of only 28 miles (45 Km) at Sanderao via Falna Bali Sadri & back

For further details contact :

- 1 The Tourist Officer Tourist Bureau Jodhpur Phone No 22608
- 2 The Tourist Officer Tourist Bureau Mt Abu Phone No 51
- 3 The Tourist Officer, Tourist Bureau Udaipur Phone No 405
- 4 The Tourist Officer Tourist Information Bureau Govt of Rajasthan Chandralok Building 36 Jaupath Ground Floor New Delhi Phone No 44762

OR

THE DIRECTOR OF TOURISM, RAJASTHAN, JAIPUR

Phone No 73873

Issued by

DIRECTOR OF TOURISM, GOVERNMENT OF
RAJASTHAN, JAIPUR

MADHYA PRADESH LAGHU UDYOG NIGAM LTD

IN THE SERVICE OF SMALL SCALE INDUSTRIES OF
MADHYA PRADESH

ACTIVITIES

- 1 **Distribution Of Raw Materials**
M P Laghu Udyog Nigam procures and distributes raw materials required by the SSI units of Madhya Pradesh
- 2 **Sale Of Handlooms & Handicrafts**
M P Laghu Udyog Nigam markets the Handloom and Handicrafts of Madhya Pradesh through its own Emporia located within and outside the state
- 3 **Machines on Hire Purchase**
M P Laghu Udyog Nigam supplies machines on hire purchase basis to educated unemployed persons of the State
- 4 **Industrial Areas & Estates**
M P Laghu Udyog Nigam develops industrial areas and constructs sheds for establishing factories
- 5 **Exports**
M P Laghu Udyog Nigam helps SSI units in exports and disseminates the information useful in export marketing

Released by The Madhya Pradesh Laghu Udyog Nigam Ltd

(M P Government Undertaking)

23 Shopping Centre T T Nagar BHOPAL

*With Best Compliments
From*

Manmohanlal Goel

23 Naya Ganj Ghaziabad
Phone 2837 2030 2281 & 3595 (Ghaziabad Exch)

MANAGING DIRECTOR

MANOHARLAL HIRALAL (P) Ltd GHAZIABAD (U P)

OWNERS OF
BHARAT UDYOG, GHAZIABAD (U P)
GOEL STEELS, GHAZIABAD (U P)

PROPRIETOR

Mohan Chitralok Ghaziabad (U P)
Goel Ispat Ghaziabad (U P)
Goel Cables & Conductors, Ghaziabad (U P)
Ramlaxman Sheet Bhandar (Ice Plant & Cold Storage
Hassanpur Moradabad (U P)

SUPPLIERS TO MODERN FARMING M S A I C STANDS FOR

Bringing Green Revolution to the Farmers door steps by

- * Supplying Agricultural machines like Tractors Bulldozers Power Tillers Threshers etc to the farmers on cash
- * Undertaking Well Blasting Well Boring Tractor ploughing Land Levelling Powder spraying etc on hire through Agro Service Centres
- * Supplying Fertilisers Seeds insecticides and other Farm inputs to farmers through Agro Kendras
- * Undertaking repairs and supply of spare parts of Agricultural Machinery
- * Allotting scarce category of Iron and Steel for manufacturing of Agricultural equipment
- * Established Karnataka State Agro Corn Products Ltd to Sell Maize & to Establish Maize Milling plant
- * Established Karnataka State Seeds Corporation Ltd to produce improved seeds & supply

For Further Details Please Contact

The Public Relation Officer
**Mysore State Agro Industries
Corporation Limited**

Hebbal BANGALORE 560024

With Best Compliments From

B. Rajendra Oil Mills & Refinery

Manufacturers of

GOLD MOHAR

Refined Oil & Vinaspati

BEST COOKING MEDIUM & SUBSTITUTE FOR GHEE

Also leading Manufacturers & Exporters of all grades of Castor Oil & such as Commercial BSS BP Medicinal & Hydrogenated

Mill at

Industrial Area
Azamabad Hyderabad
Phone 61248 & 61249

Office at

15 9 449 Afzalgunj
Hyderabad 500012 A P
Phone 44101 & 51572
Telex 266

Gram STRAWBOARD

Phone Factory 85
Residence 151

With Best Compliments From

MADHYA PRADESH BOARD & PAPER MILLS (M.P.)

VIDISHA, M P (C Rly)

(MANUFACTURERS OF ALL TYPES OF STRAW BOARD)

ALSO

Gram PAPERTUBE

Phone 248057

**THE BENGAL PAPER TUBE AND BOX
MANUFACTURING COMPANY**

18 Parak Street Calcutta 16

&

Gram PAPERTUBE

Phone 7473

**M/s CARTON AND CONTAINERS
BHAJUBA (BARODA)**

विधानसभा चुनाव परिणाम—१९७४

पारवरी १९७४ में उत्तर प्रदेश, उड़ीसा मणिपुर परिषदों में हुए विधानसभा के चुनाव सम्पन्न हुए। परिणाम निम्न प्रकार हैं।

उत्तर प्रदेश

दल	१९६६ में प्रत्यासी	१९७४ में प्रत्यासी	१९७४ में प्रत्यासी	१९७४ में प्रत्यासी
कांग्रेस	४२४	१११	४०३	११
जनसपा	३६०	४८	४०१	६१
स्वतंत्र	७२	२	२११	१
कम्युनिस्ट	१०६	४	४०	१६
कम्यु० (भाजपावादी)	१४	१	३६	३
संगठन काँग्रेस	—	—	३६०	४०
ससोपा	२१०	३३	—	—
प्रसोपा	६	३	—	—
सोशलिस्ट	—	—	—	—
भाजपा	४०	६०	३६	१५
हिन्दू महासभा	—	—	३६	६६
मुस्लिम लीग	—	—	३६	१०५
शोपिन समाजदल	—	—	३६	४६१
बन्य दल	—	—	३६	३३४
निदलीय	६०६	३	—	४०३
कुल	१८३१	१८६	१८६	४०६
ससोपा व मुस्लिम मजलिस व प्रसोपा व ससोपा व प्रसोपा व ससोपा व	—	—	—	४६४
भाजपा के १०६ मजलिस प्रसोपा व ससोपा व प्रसोपा व ससोपा व	—	—	—	४४२
मुस्लिम मजलिस के हैं।	—	—	—	३४४
नोट—एक स्थान खाली रिक्त है।	—	—	—	४०२
कुल स्थान ६०	—	—	—	२००
दल	—	—	—	१६७
मणिपुर पीपुल्स फ्रण्ट	—	—	—	४७२
मणिपुर हिन्दू	—	—	—	२६४

मणिपुर

उडीसा

कुल स्थान १४७

दल	१९७१ मे प्रत्याशी	जीते	१९७४ मे प्रत्याशी	जीते
कांग्रेस	१२६	५१	१३५	६६
सगठन कांग्रेस	५०	१	१७	—
उत्कल कांग्रेस	१३७	३३	६२	३३
स्वतंत्र	११५	३६	५६	२१
ससोपा	१५	—	३	२
जन कांग्रेस	६६	१	४२	१
एस०पी०घाई	—	—	१७	२
कम्युनिस्ट	२६	४	१४	७
कम्यु० (माक्सवादी)	११	२	८	३
जनसंघ	२१	—	१२	—
निदलीय	१६२	४	३२६	८
प्रसोपा	५०	४	—	—
झारखंड	१५	४	—	—
फारवह ब्लॉक	४	—	—	—
कुल	८३५	१४०	७२२	१४६

नोट एक स्थान पर चुनाव नहीं हुआ ।

पाडिचेरी

कुल स्थान ३०

दल	१९७४ मे प्रत्याशी	जीते
झमनाद्रमुक	२१	१२
कांग्रेस	१४	७
सगठन कांग्रेस	१६	५
द्रमुक	२६	०
कम्युनिस्ट पार्टी	७	२
माक्सवादी दल	५	१
निदलीय	६६	१

नागालैंड

कुल स्थान ६०

दल	१९७६ मे प्रत्याशी	जात
नागालैंड नेशनलिस्ट धार्मोनाइजेशन	८५	१३
यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट	५३	२५
निर्नाय	१०८	१२
कुल	२१६	६०

विज्ञापनदाताओं की सूची

क्र.सं.	विज्ञापनदाता का नाम	पृष्ठ
१	प्रसन्न कावच प्रोडक्ट्स	गोहाटी ५७३
२	भर्जुनदास एण्ड सन्स	हावडा १८०
३	शम्बिका मिल्स	अहमदाबाद ४८६
४	अल्फा ट्रेवल	अहमदाबाद ५६७
५	प्रसन्न सरकार (Directorate of Tourism) आर्ट गैलरी	अहमदाबाद ३३६
६	प्रसन्न सरकार (कृषि विभाग)	गोहाटी ३६६
७	प्रसन्न सरकार (सूचना प्रकाशन विभाग) आर्ट गैलरी	शिलांग ४०१
८	प्रजमेर सेट्टल को प्राप बैंक लि०	अजमेर ४४०
९	अप्रवाल ब्रदर्स	गगटोक ३४६
१०	अशोक भोपाधि उद्योग	वाराणसी ४८६
११	आल इंडिया म्यूफ्फचरस आरगनाईजेशन	अहमदाबाद ५६८
१२	आंध्र प्रदेश स्टेट को प्राप० बक लि०	हैदराबाद १६६
१३	आंध्र प्रदेश इण्डस्ट्रीयल डवलपमेंट का० लि०	हैदराबाद ६०८
१४	आंध्र प्रदेश स्टेट को प्राप० मार्किटिंग लि०	हैदराबाद ४६१
१५	आर० आई० टुलमजी	जयपुर ३३४
१६	आर० ए० ई० सी० बम्बई (प्रा०) लि०	बम्बई ८२३
१७	आर० सी० एस० वनस्पति इण्डस्ट्रीज	जयपुर ५७६
१८	ईगल वेमिक्न्स	जयपुर ४६५
१९	इण्डियन रेलवे पैसेंजर एसोसिएशन	आसनसाल ४५२
२०	इंडियन प्रायरेन एण्ड स्टील कार्पोरेशन	सिवरबाबा ३५५
२१	इंडियन ट्रेडिंग एण्ड परपयुमिकल लि०	हैदराबाद ५८२
२२	इंडियन इजीनियरिंग क०	बम्बई २८०
२३	इंडियन आईल कार्पोरेशन लि०	बम्बई १६७
२४	इण्डियन टेलिफोन एण्ड टेलीग्राफ लि०	बंगलौर ५७२
२५	उ०प्र० सरकार (सूचना विभाग)	लखनऊ २६४
२६	उ०प्र० स्टेट एसो इण्डस्ट्रीयल का० लि०	लखनऊ ५८
२७	उ०प्र० सहकारी मन्त्रा समिति सध लि०	लखनऊ २२८
२८	उ०प्र० राज्य सहकारी भूमि विकास बक लि०	लखनऊ ६५
२९	उ०प्र० सरकार (कृषि विभाग)	लखनऊ २६६
३०	उ०प्र० सरकार (पर्यटन विभाग)	लखनऊ प्रतिम कवर के अन्दर पर
३१	उ०प्र० सरकार (परिवार नियोजन)	लखनऊ ३६४
३२	उ०प्र० सरकार (हिन्दी समिति)	लखनऊ ३२५
३३	उ०प्र० स्टेट इन्फ्रस्ट्रक्चर डेवलपमेंट	लखनऊ ६०३
३४	उ०प्र० आवागमन विकास परिषद	लखनऊ २००
३५	एक्स्ट्रेट मार्किटिंग लि०	गोहाटी ८

३६	एस० जी० सप्लाई एजेसी		नई दिल्ली	५८०
३७	एल्कोवकम मटल्स (प्रा०) लि०		जोधपुर	६०४
३८	एन० के० इलक्ट्रीकल		जयपुर	२७७
३९	ओरियंट पेपर मिल्स लि०		भ्रमलई	५७२
४०	काफी वाड		बगलौर	५९४
४१	वेडिया वनस्पति प्रा० लि०		हैदराबाद	१९२
४२	के० के० अग्रवाल		विलासपुर	५८०
४३	कृषि उपज मंडी		जबलपुर	४०६
४४	वेडिया एण्ड क०		भोपाल	४१०
४५	किलॉस्कर ब्रादर्स लि०	घाट प्लेट	पूना	४५३
४६	किलॉस्कर कमिश्न लि०	घाट प्लेट	पूना	१
४७	किलॉस्कर आयल इजन्स	घाट प्लेट	पूना	१९३
४८	के० एन० चौधरी		सिलीगुडी	६०८
४९	कलाश डिस्ट० को प्राप० मार्किटिंग एण्ड सप्लाई फेडरेशन लि०		शिमला	५८५
५०	किसान को प्राप० शुगर फक्टरी लि०		पीलीभीत	४९६
५१	खचेडूसिंह नरेन्द्रकुमार		पिलखुवा	५९०
५२	गुजरात स्टेट को आ० बक लि०		अहमदाबाद	८९०
५३	गदरे ब्रदर्स		सागली	२१९
५४	गुप्ता एण्ड क०		बलकत्ता	१७८
५५	गुजरात सरकार (पयटन विभाग)		अहमदाबाद (तीसरा भावरण पृ)	
५६	गुजरात स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन घाट प्लेट		अहमदाबाद	३३७
५७	गुजरात इण्डस्ट्रीयल इनवेस्टमेंट बा० घाट प्लेट		अहमदाबाद	१९२
५८	गुजरात स्टेट फार्मिनेमियल कारपोरेशन		अहमदाबाद	३५६
५९	गुजरात मिनिरेल डेवलपमेंट बा० लि०		अहमदाबाद	२२५
६०	गुजरात स्टेट फर्टीलाइजर क० लि० घाट प्लेट		बडोदा	४००
६१	गुजरात स्टेट को प्राप० सैट ड० बक लि०		अहमदाबाद	३५२
६२	गुजरात एषा इन्स्ट्रियल कारपोरेशन लि०		अहमदाबाद	५९६
६३	गुजरात स्टेट को प्राप० मार्किटिंग सामायटी लि०		अहमदाबाद	५६३
६४	गुजरात एम्प्लोय कारपोरेशन लि०		अहमदाबाद	५७४
६५	ग्वानियर खन मिनरल म्यू० क० लि०		नागदा	१७३
६६	गारी छवि गज		रायगज	३९३
६७	गाम्हा मिनरल मरकार		गाम्हा	४४१
६८	डी०ए०बी०पी० (पी० एण्ड टी०)		नई दिल्ली	२१८
६९	डी०ए०बी०पी० (एन०मा०प्रा०)		नई दिल्ली	०२०
७०	डी०ए०बी०पी० (इन्डियन टैक्स)		नई दिल्ली	४१२
७१	डी०ए०बी०पी० (इन्डियन टैक्स)		बम्बई	३१७
७२	डी०ए०बी०पी० (इन्डियन टैक्स)		गंगानगर	८०५
७३	डी०ए०बी०पी० (इन्डियन टैक्स)		बलकत्ता	५९३
७४	डी०ए०बी०पी० (इन्डियन टैक्स)		ग्वानियर	०२७
७५	डी०ए०बी०पी० (इन्डियन टैक्स)		ग्वानियर	५७६

७६	जवाहर नैल बोरिंग वकस	रायपुर	५६६	
७७	जनता सहकारी बैंक लि०	पूना	४२२	
७८	जेजी बैंक्यूम पलास्क प्रा० लि०	पूना	५६४	
७९	जोधपुर ब्लून मिल्स लि०	जोधपुर	६०१	
८०	ज्वलस एमोसिभेशन	जयपुर	५७४	
८१	दिल्ली प्रशामन	दिल्ली	६०८	
८२	देवीप्रसाद प्रयागदत्त	झाट प्लेट	हैदराबाद	४५०
८३	दैनिक जागरण	षासी	३७६	
८४	धौलपुर सहकारी भूमि विकास वक लि०	धौलपुर	२६६	
८५	धमानी जैन मेटल इण्डस्ट्रीज	जयपुर	४६०	
८६	नाथ फ़टीयर रेलवे	गोहाटी	३६	
८७	मू प्रताप कमिकल लि०	कालीकट	१६०	
८८	नगरपालिका निगम	खालियर	६१२	
८९	नारायण राइस एण्ड ब्राउल मिल्स	बिलासपुर	६१३	
९०	नगर निगम	भापाल	६२१	
९१	नवीन दुनिया	जबलपुर	३६६	
९२	नेशनल इडिमा खब वकम लि०	कटनी	१८०	
९३	नगर पालिक निगम	जबलपुर	३८३	
९४	नेशनल पस्टीसाईड्स	विदिशा	५६७	
९५	नगरपालिक परिषद्	शिवपुरी	५८२	
९६	नगर निगम	नागपुर	४१४	
९७	नगर परिषद्	झाट प्लेट	जयपुर	४७४
९८	नगरपालिका परिषद	उदयपुर	४२४	
९९	नगर निगम	शिमला	४४६	
१००	नगरपालिका	शामली	११३	
१०१	नागरी प्रचारिणी मभा	वाराणसी	६६३	
१०२	नगरमहापालिका	वाराणसी	५५५	
१०३	नगरपालिका	बूदा (राज०)	५८०	
१०४	पलिकेशन बाड	असम	४४२	
१०५	प्यार पैक ब्राडकस्टम	कलकत्ता	५६४	
१०६	प्रधान जर्दी फ़ैक्टरी	मुजफ़्फ़रपुर	३६२	
१०७	पजाब स्टेट को आप० मफ़्फ़ार्ड एण्ड मा० फे० लि०	चण्डीगढ	१७६	
१०८	पजाब एग््रीकलचर मुनिवर्सिटी	लुधियाना	१८६	
१०९	पजाब सरकार (मूचना एवं प्रचार)	चण्डीगढ	१७६	
११०	प्यार डिव (नई दिल्ली) प्रा० लि०	नई दिल्ली	४११	
१११	पजावा चद्र हलवार्ड	रम्बई	४५१	
११२	प्रतिभा बास्टिंग	डोमबीवती	५७८	
११३	पाटार स्पिनिंग मिल्स	जयपुर	०५३	
११४	पावरफ़ुम बन्ध उत्पादन मभ	पिन्धुवा प्रतिभ कवर के पाठे		
११५	फ़र्टीलाइजर कार्पारेशन झाप इडिया लि०	मिन्नी	१६८	
११६	फ़ट प्रीवरजेशन फ़ैक्टरी	मिधटम	१५४	
११७	फ़ाट ग्लोस्टर इण्डस्ट्रीज लि०	कलकत्ता	५८३	

११८	विपिन ट्राडिंग क०		गोहाटी	५७८
११९	बैल्स जनरल इण्टरस्ट्रीज		कलकत्ता	६००
१२०	बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास समिति		पटना	३८६
१२१	बिहार स्टेट इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड		पटना	३७८
१२२	बिहार सरकार (पब्लिक विभाग)		पटना	४५९
१२३	बिहार राज्य एग्रीकल्चर एण्ड मार्केटिंग क०		पटना	४०६
१२४	बिहार स्टेट लाटरीज		पटना	३५०
१२५	बी० आर० राजेन्द्र आयल मिल्स		हैदराबाद	६०७
१२६	बी० किशनलाल खडसारी शहर मिल्स		निजामाबाद	३७६
१२७	ब्रिटिश इंडिया कारपोरेशन लि०		धारीवाल	५८३
१२८	बनारसीदास भनोन एण्ड स स	घाट प्लेट	जबलपुर	४७५
१२९	विनोद मिल्स क० लि०		उज्जैन	५७९
१३०	बिलासपुर की प्रा० सेट्टल बक लि०		बिलासपुर	४९४
१३१	बाधवीय समाचार		रीवा	५४८
१३२	बीना सिल्क मिल्स		बम्बई	५८६
१३३	बैक प्रा० इंडिया		बम्बई	५००
१३४	बुलढाना डिस्ट सट्टल का प्रा० बक लि०		बुलढाना (दूसरा क्वर)	
१३५	बाडमेर सट्टल की प्रा० बक लि०		बाडमेर (राज०)	६०६
१३६	बहेडी की प्रा० केन डवलपमट यूनिफन लि०		बहेडी	१९१
१३७	भारत इलेक्ट्रानिक्स लि०		बगलौर	१६
१३८	भूटान डाय एसोसियेशन		कलकत्ता	६०२
१३९	भारत सरकार (पब्लिक विभाग)	घाट प्लेट	नई दिल्ली	११४
१४०	भोपाल यूनिवर्सिटी		भोपाल	५९४
१४१	भाब प्रा० लि०		बम्बई	३५८
१४२	भिडे एण्ड मंग प्रा० लि०		मागला	०१९
१४३	भारत उद्योग		याजियाबाद	६०६
१४४	महालय सरकार (मूचना विभाग)		शिराग	३२४
१४५	भमूर सट्टल प्रा०	घाट प्लेट	बगलौर	०२५
१४६	भमूर स्टेट एग्री इण्टरस्ट्रीज कारपोरेशन लि०		बगलौर	६०६
१४७	भरपरतन प्रा०		कलकत्ता	१७९
१४८	भरमाना डिस्ट का प्रा० मिन्क यूनिफन लि०		ब्रह्मदाबाद	१६२
१४९	भेट्टा धनरक्ता क०		हैदराबाद	३५
१५०	म०प्र० स्टेट टैक्समार्किंग कारपोरेशन		भापाल	३८५
१५१	म०प्र० स्टेट साहित्य परिषद		भापाल	६१३
१५२	म०प्र० वित्त निगम		इंदौर	२०६
१५३	म०प्र० मधु उद्योग निगम लि०		भापाल	३४१
१५४	म०प्र० राज्य सहायकारी भूमि विभाग बक		भापाल	३८५
१५५	म०प्र० माध्यमिक शिक्षा मण्डल		भापाल	३६१
१५६	म०प्र० हिन्दी प्रा० प्रकाशना		भापाल	६००
१५७	महाराजा त्रिबुवनारायण शिक्षा समिति		ग्वातिमर	८११

१५८	मोहनलाल हरगावि ददास	जबलपुर	४७४
१५९	म०प्र० वाड पेपर मिल्स	विदिशा	६०७
१६०	म०प्र० विद्युत् मडन	जबलपुर	३६८
१६१	म०प्र० शासन (सूचना तथा प्रकाशन सचालनालय)	भोपाल	३४५
१६२	म०प्र० शासन (पयटन मचालनालय)	भोपाल	३४५
१६३	म०प्र० हार्जिसग बोड	भोपाल	४२२
१६४	म०प्र० शासन (सचालन मत्सोद्योग)	भोपाल	३७७
१६५	म०प्र० शासन (पशु चिकित्सा सेवाए)	भोपाल	३७७
१६६	म० प्र० शासन (परिवार नियोजन)	भोपाल	३५१
१६७	म० प्र० शासन (उद्योग सचालनालय)	भोपाल	३५१
१६८	म० प्र० राज्य सहकारी विपणन सभ मर्यान्त	भोपाल	४५०
१६९	म० प्र० स्टेट एग्रो इण्डस्ट्रीज डवलपमट लि०	भोपाल	४२२
१७०	म० प्र० औद्योगिक विकास निगम लि०	भोपाल	५७०
१७१	म० प्र० राज्य सहकारी गृह निर्माण वित्त म०	भोपाल	५८१
१७२	म० प्र० राज्य परिवहन निगम	भोपाल	४२४
१७३	म० प्र० राज्य सहकारी बक मर्या०	जबलपुर	४२६
१७४	म० प्र० स्टेट मार्टिनिंग कारपोरेशन लि०	भोपाल	५६३
१७५	म० प्र० स्टेट इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लि०	भोपाल	५८१
१७६	म० प्र० बेयर हार्जिसग कारपोरेशन	इन्दौर	५५९
१७७	म० प्र० राईस मिल्स एसोसियेशन	रायपुर	५४८
१७८	म० प्र० शासन (पजीकृत सहकारी सस्थाए)	भोपाल	५६०
१७९	म० प्र० पाठ्य पुस्तक निगम	भोपाल	५६५
१८०	महाराष्ट्र स्टेट इलेक्ट्रिकसिटी बोड	बम्बई	२६५
१८१	महाराष्ट्र स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज बा०	बम्बई	२२८
१८२	महाराष्ट्र सरकार (पयटन)	बम्बई	४२३
१८३	महाराष्ट्र स्टेट को भ्रा० बक लि०	बम्बई	१८०
१८४	महाराष्ट्र स्टेट रोड ट्रासपाट कारपोरेशन	बम्बई	१०५
१८५	महाराष्ट्र सरकार (सूचना तथा प्रकाशन)	बम्बई	११६
१८६	मफतलाल सर्विस प्रा० लि०	बम्बई	मृतिम नवर
१८७	महाराष्ट्र स्टेट हैडलूम कारपोरेशन लि०	नागपुर	४६०
१८८	मरकैटाईल को भ्रा० बक लि०	जयपुर	५७१
१८९	मथुरा जिला सहकारी बक लि०	मथुरा	८१४
१९०	यूनियन कारबाई इटिया लि०	नई दिल्ली	८४
१९१	यू-फोम प्रा० लि०	हैदराबाद	१६६
१९२	योगेन्द्र झा	काठमाडू	३५२
१९३	रामकुमार मिल्स (प्रा०) लि०	बगलौर	५७९
१९४	रवि कमिकल प्रा० लि०	कलकत्ता	५६५
१९५	राजकोट नागरिक सहकारी बक लि०	राजकोट	२७८
१९६	राजकोट डिस्ट० को भ्रा० बक लि०	राजकोट	४७४
१९७	रहनुमाए-डकन (उडू दनिष)	हैदराबाद	५७८
१९८	रायपुर वल बेरिंग म०	रायपुर	६०२
१९९	रायपुर को भ्रा० सेट्टन बक लि०	रायपुर	५६४
२००	रायपुर चम्बर ग्राफ कामश एड इण्डस्ट्रीज	रायपुर	५६४

२०१	राजस्थान सरकार (जागृयन विभाग) धारा १०	जयपुर	१६३
२०२	राजस्थान ग्राह्य व्यापार संघ	जयपुर	१६०
२०३	राजस्थान स्टेट इन्स्टीट्यूट ऑफ़ डिजाइनिंग एंड आर्ट्स	जयपुर	दत्त नगर मे गंग
२०४	राजस्थान स्टेट को धारा ६६ वि०	जयपुर	२६६
२०५	राजस्थान धावामा बाट	जयपुर	३१६
२०६	राजस्थान स्थापन इन्स्टीट्यूट कारणाजो वि०	जयपुर	६०४
२०७	राजस्थान सरकार (पाना)	जयपुर	६०२
२०८	राजस्थान स्टेट थयर हाउसिंग कारपोरना	जयपुर	४२६
२०९	राजस्थान राज्य कृषि उद्योग निगम वि०	जयपुर	३६६
२१०	राज्य प्लास्टिक इन्स्टीट्यूट	जयपुर	२६०
२११	राजस्थान स्टेट इन्स्टीट्यूट ऑफ़ ईंज	जयपुर	२८३
२१२	राजस्थान सरकार (राजस्थान गृह मन्त्र)	जयपुर	२८१
२१३	राजस्थान टांक जोहरी	जयपुर	२८०
२१४	राजस्थान लक्षणाट (प्रा०) वि०	जयपुर	३६३
२१५	राष्ट्रीय चनिज विनास निगम वि०	हैराबाद	४००
२१६	साल सफ़ गवामट इजीयोरिंग डिपार्टमेंट	जयपुर	१६१
२१७	सचनऊ प्रोड्यूसर का धारा ५१५ वि०	जयपुर	६६
२१८	सीला सत श्रीयरीज प्रा० लि०	भापाल	२६३
२१९	सालजी एच० ठाकर एण्ड क०	बम्बई	२७६
२२०	विजया बक लि०	जयपुर	१४१
२२१	विश्वमित्र	जयपुर	६६०
२२२	बल टेक्स	पटना	६६१
२२३	विद्वान पेपर मिल्स लि०	जयपुर	३८४
२२४	वाराणसय संस्कृत विश्वविद्यालय	वाराणसी	२६२
२२५	वेस्ट-कोस्ट पेपर मिल्स लि०	बम्बई	२६१
२२६	स्टील बथ प्रा० लि०	गोहाटी	१७७
२२७	स्टोर सप्लाइ (इंडिया) एजेंसी	बलकसा	६००
२२८	सराफ इण्डस्ट्रीज	नई दिल्ली	११५
२२९	स्वदेशी खडसारी उद्योग	हैदराबाद	२६६
२३०	सी० डी० जर्दा बक्स	हैराबाद	२६८
२३१	सहयजन (साप्ता०)	भापाल	४०६
२३२	स्वदेश	इंदौर	२५८
२३३	सतना सीमेंट बक्स	सतना	२६१
२३४	सहकारी सूत मिल मर्चा०	वुरहानपुर	२७१
२३५	सागली अरबन को धारा ६६ लि०	सागली	१६०
२३६	सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन क० लि०	बम्बई	१०६
२३७	स्वास्तिक रबड प्रोडक्ट्स	पूना	२१७
२३८	स्माल सेविंग एण्ड स्टेट लाटरीज	जयपुर	३२६
२३९	सिरोही सट्टल को धारा ६६ लि०	सिरोही (राज०)	४५०
२४०	सुदीप परपूमिकल	जयपुर	२७६
२४१	सिक्किम सरकार (पयटन विभाग)	गंगटोक	२०४
२४२	सिक्किम डिस्टिलरीज लि०	सिक्किम	भारम्भ मे
२४३	सावजनिक निर्माण विभाग	लखनऊ	४२६

२४५	सरना बैंक एन्युपमट मयुक्वर्चरिग क०	नई दिल्ली	४५१
२४६	शार्डन प्राइवटस	कलकत्ता	५६५
२४७	शिपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया (लि०)	बम्बई	२८०
२४८	शिवरतन जी० माहता	जयपुर	३३४
२४९	शक्ति इलक्ट्रिकल प्रा० लि०	जयपुर	८६६
२५०	शोभा (श्री मानुकुमार)	कलकत्ता	३१८
२५१	श्री लक्ष्मी हैण्डलूम फबटरी	पिलखुवा	४७४
२५२	श्री छत्री बलाय स्टोर	जयपुर	५८२
२५३	श्री महामाया माइनिंग एण्ड इण्डस्ट्रीज	जयपुर	२७७
२५४	श्री मधुसूदन मिक्स लि०	कलकत्ता	५६६
२५५	श्री लाल सागरमल	कलकत्ता	६०२
२५६	सत्यनारायण भागचदका	कलकत्ता	५६३
२५७	श्री बलनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि० ब्राट प्लेट	पटना	४६६
२५८	श्री मिथेटिक लि०	उज्जैन	६०३
२५९	हिन्दुस्तान मशीन टुल्स	बगलौर	५७४
२६०	हैस्टिंग मिक्स लि०	कलकत्ता	५७७
२६१	हिन्दुस्तान कंक्रीट एण्ड प्लास इण्डस्ट्रीज	पटना	५६५
२६२	हरियाणा स्टेट इलक्ट्रीसिटी बोर्ड	चण्डीगढ़	३७८
२६३	हिन्दुस्तान टाटम्स	नई दिल्ली	२६४
२६४	हैदराबाद वनस्पति लि०	हैदराबाद	४२६
२६५	हैवी इलक्ट्रिकल (इंडिया) लि०	भोपाल	२७६
२६६	हारा मिन्स लि०	उज्जैन	४६४
२६७	हिमाचल प्रदेश सरकार (जनसम्पत्त विभाग)	शिमला	५६६
२६८	हिमाचल प्रदेश स्टेट को आ० मार्केटिंग ड० फ०	शिमला	५८६
२६९	हिमाचल प्रदेश फाइनेशियल कारपोरेशन	शिमला	५८४
२७०	हिमाचल प्रदेश स्टेट का आ० बक लि०	शिमला	५८४
२७१	हिमाचल प्रदेश मिनिरल एण्ड इण्डस्ट्रीयल लि०	शिमला	५६६
२७२	हिन्दुस्तान एल्युमिनियम क० लि० ब्राट प्लेट	लखनऊ	३७३
२७३	हरियाणा सरकार	चण्डीगढ़	१४३
२७४	कैमोराम इण्डस्ट्रीज एण्ड काटन मिक्स लि०	कलकत्ता	५८८
२७५	कृष्णा प्राइवट प्रोडक्ट्स लि०	कलकत्ता	५८८
२७६	कृष्णमचद जूट मिन्स लि०	कलकत्ता	५८७
२७७	भारत जनरल एण्ड टक्सटाइल्स इण्डस्ट्रीज लि०	कलकत्ता	५८७
२७८	इन्स्ट्रुमेटेशन लि०	कोटा (राज०)	५६२
२७९	जयपुर उद्योग	जयपुर	५६०
२८०	म्युनिमिपल बाड	मुजानगर (राज०)	५८६
२८१	मानवचद वच्छराज	इम्फाल	५६१
२८२	हिन्द आयुर्वेदिन	गया	५६५
२८३	पंजाब स्टेट इलक्ट्रीसिटी बोर्ड	पटियाला	५६२
२८४	ईस्टन रेलवे	कलकत्ता	५६७
२८५	हिमाचल प्रदेश टूरिज्म टवनपमट कारपो० लि०	शिमला	५६८
२८६	जन टूरिज्म एजेंसीज	जयपुर	६१८

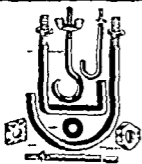


STEELCO INDUSTRIES (Regd)



SPEED
TOOLS CORPORATION (REGD)

WINGO SHOVEL (BELCHA)



MECHANICO INDUSTRIES (Regd)



JAIN Sales Corporation (Regd)

SOLE AGENT *Jain Trading Agencies (Pvt)*

828 INDUSTRIAL ESTATE JAIPUR 8

जन ट्रेडिंग एजेंसोज (इंडिया)
बो० २८ इंडस्ट्रियल इस्टेट, जयपुर ६

स्वादिष्ट,

रुचिकर व

स्वास्थ्यवर्द्धक

पकवान के लिये

चेतक

व

पूजा

वनस्पति

(विटामिन ए व डी से युक्त)

निर्माता

प्रीमियर वेजीटेबल प्रोडक्ट्स लिमिटेड

६५, इन्डस्ट्रियल एरिया,

जयपुर-६

फोन ६२०६७

ग्राम 'प्रीमियर,'

टेलक्स चेतक-२०६

*With the Best Compliments From***SHALIMAR INDUSTRIES PRIVATE LIMITED**

25 Ganesh Chandra Avenue CALCUTTA 13

Cable Address CUTSIZE Calcutta

Tele No 23 7721 (5 Lines)

Largest and Leading Manufacturers and Exporters of Jute Mill
and Cotton Textile Accessories such as**JUTE**Boddins—Spinrite I S F &
I S M Laminated and Per
simmun Shuttles Wooden and
Metal Faced Card Staves Card
and Gill Pins Pine Wood Lagging
Lay Races & Lay Blocks
Laminated Picking Arms Other
Wooden Stores**COTTON**Laminated Ordinary & Auto
Loom Shuttles Laminated Pick
ing Arms & Picking Sticks
Laminated Box Backs Fibre
Card Cans Wooden Bobbins
& Spools Lattices & Spiked
Lags*Invite Your Enquiries For Any Of our Quality Accessories**Factory*

1 Swarnamoyee Road, Shalimar

Phone 67-4661/62

RAJASTHAN FINANCIAL CORPORATION

Has pleasure in announcing agreement in principle with
The Trade Development Authority,
The Indian Institute of Foreign Trade,
The Federation of Indian Export Organisations, and
The Council of Scientific & Industrial Research (and the
National Research Development Corporation)

for development of industries in Rajasthan

The following literature is available in the Corporation

- (1) Descriptive pamphlets on C S I R —developed processes marketed by N R D C
- (2) Market survey including technical notes on Sports Goods published by I I F T
- (3) Market survey on Toys and Decoration

For details please contact

Tel: 73708, 74467

THE PUBLIC RELATIONS OFFICER

Rajasthan Financial Corporation
C-18, Bhagwandas Road,
JAIPUR 1

दी जालोर सेन्ट्रल को-आपरेटिव बैंक लि०

जालोर

शाखायें
माचोर
भीनमाल

[संस्थापित १९६०]

दूरभाष
जालोर ३२
भीनमाल १६६

राज्य सरकार के भागीदारी वाले एक मात्र सहकारी बक में अपना धन जमा कराकर दश वं कृषि उत्पादन कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दीजिये। यह बक सभी प्रकार की भ्रमानतें आकषक ब्याज दर पर जमा करता है। कृषि उत्पादन हेतु फसली ऋण के अतिरिक्त हुण्डी, बिल्टी, डाफ्ट आदि इस बक के प्रमुख काय हैं। अपना बक अपने लिये जिले के प्रतिनिधिया एक राज्य सरकार क प्रतिनिधिया द्वारा समानरूप से संचालित है तथा रिजर्व बैंक व राज्य सरकार द्वारा नियंत्रित है।

इसमें अपना धन जमा कराकर अपने को सुरक्षित पाइये।

अधिकत पूजी	राज्य सरकार	--	₹ ३ ०० ०००)
	सह० संस्थाए	--	₹ १७ ०० ०००)
			₹ २० ०० ०००)
प्रदत्त पूजी	राज्य सरकार	--	₹ २ ०० ०००)
	सह० संस्थाए	--	₹ ८ ३७ २२५)
संचित एवं अग्र्य कोष		--	₹ २७ ८४३)
अवितरित लाभ			₹ ८७१९६)

आपके भ्रमानतों की निरंतर वृद्धि हेतु आकषक ब्याज दें।

- १ बचत भ्रमानतों पर $4\frac{1}{2}$ प्रतिशत
- २ सूचनावित , ५
- ३ स्थाई भ्रमानत , ६% से ८% तक (समयावधि पर)
- ४ रेकर्डिंग जमाओं पर

मासिक क्रिस्त-१२ माह में	२४ माह में	३६ माह में	४८ माह में	६० माह में
५) ₹ ६२ ०००	१२८ ५०	१९६ ००	२७७ ००	३५६ ००
१०) ₹ १२४ ००	२५७ ००	३६८ ००	५५४ ००	७१८ ००

रेकर्डिंग जमा रुपये ५ व १० के गुणन में जमा करा सकते हैं।

राज्य क प्रमुख व्यापारिक केंद्रों व देहली ग्रहमदावाद पर डाफ्ट मुविद्या उपलब्ध है। समस्त भारत में हुण्डी बिल्टी के संग्रह की व्यवस्था है।

यह बैंक बकिंग रेग्युलेशन एक्ट के अन्तगत रिजर्व बैंक आफ इण्डिया द्वारा नियंत्रित है।

विशेष सूचना हेतु व्यवस्थापक से सम्पर्क कीजिये।

नरसारांम सांखला
व्यवस्थापक

जगमालसिंह
अध्यक्ष

USHA MARTIN BLACK (WIRE ROPES) LIMITED

Largest Manufacturer of Wire Ropes in India

USHA MARTIN BLACK

Manufacturer Complete Range of Round
Strand, Flattened Strand,

Seale, Warrington,

Non Rotating
and

latest addition
OF

Locked Coil Wire Ropes

REGISTERED OFFICE

14 Princep Street Calcutta 13

Telephone 23 9516 (5 Lines)

23 4817

Telex Calcutta 483

WORKS

Tatisilwai

Ranchi (Bihar)

Telephone 23601

Telex Ranchi 205

Gram "USHAROPE"

अल्प बचत के नये साधन

७ वर्षीय डाकघर राष्ट्रीय बचत पत्र (पंचम निगम)

य सर्टीफिकेट १ जनवरी १९७४ से १०), १००), १०००) व ५०००) के डाकघरों से खरीद जा सकते हैं।

इनमें ७॥ प्रतिशत चक्र-वृद्धि व्याज दिया जायेगा जो ६४३ प्रतिशत प्रतिवर्ष साधारण व्याज होगा।

डाकघर टाइम डिपोजिट—

५० रुपये के मूल्य में यह डिपोजिट किसी भी डाकघर में करवाया जा सकता है।

व्याज निम्न प्रकार है—

१ वर्ष के लिये ६ प्रतिशत २ वर्ष एवं ३ वर्ष के लिये ७ प्रतिशत ५ वर्ष के लिये ७ प्रतिशत।

५ वर्षीय रिक्तिरहित डिपोजिट योजना—

५ रुपये के अभिमान में यह रिक्तिरहित खाता किसी भी डाकघर में खोले जा सकते हैं—
प्रतिमात्र रकम ₹ ५ १० २० ५० १००, ५००

५ वर्ष बाद कुल रकम ₹ ३५५ ७१० १४२० ३५५० ७१०० ३५५००

५ वर्ष में एक बार किन्तु १ वर्ष बाद जमा रकम की प्राचीन रकम श्रद्धा ल सकते हैं। इन सभी योजनाओं में जमा करने का अधिकतम कोर्स सीमा नहीं है। इनसे व धन स्वतंत्रता में एक वर्ष में एक नाम में मिलने वाला व्याज की रकम ३००० रुपये तक पर कोई धारण नहीं लगाया जाता। धीरे-धीरे न तो खाता पर धारण कटता। इनमें सम्पूर्ण रकम जमा नहीं करा सकता। पूरा विवरण व सेवा हेतु सम्पर्क करें—

निम्ना बचत अधिकारी, राष्ट्रीय बचत (भारत सरकार) या समीक्षक पोस्ट मास्टर एवं अन्य बचत अधिकारी व स्टेट बैंक ऑफ़ बीहार्स एण्ड जयपुर, ग्राम बचत एवं स्टेट बैंक ऑफ़ बिहार, राजस्थान, जयपुर।

नगर परिषद, श्रीगंगानगर

नगर परिषद की ओर से ममस्त नागरिक बंधुओं से नगर के वातावरण को स्वच्छ एवं स्वास्थ्य तथा नगर के सौंदर्य को निरंतर विकासोन्मुख रखने हेतु सम्पूर्ण सहयोग का आह्वान करते हैं व अपील करते हैं —

- १ नगर की स्वच्छता एवं सौंदर्य कायम रखने हेतु अपने मकान एवं दुकान के सामने गंदगी न होने देना तथा निश्चित स्थान पर ही कड़ा-बचरा डालना नगर परिषद के प्रति सबसे बड़ा सहयोग है ।
- २ नगर परिषद व राजकीय भूमि पर अवैध निर्माण न करें ।
- ३ नगर के विकास कार्यो को पूरा करने हेतु समय पर करों का भुगतान करें व जो बकाया है वे शीघ्र ही भुगतान कर दें ।
- ४ सक्रामक रोगो से बचने के लिये सड़े भले फला का प्रयोग न करें और न बेच ।
- ५ जन्म मृत्यु की सूचना दज करवाकर अपना सहयोग दें ।

कालूंसिंह बाफना
प्रशासक

नगर परिषद, श्रीगंगानगर ।

With Best Compliments From

Rajasthan Co-operative Spinning Mills LTD.

Gulabpura (Distt Bhlwara)

Quality Yarn of 20s & 24s cones

Available for Powerlooms

Spindles 14688

Tele { Phone 9 42 & 45
Gram COPSPGMILL

दी वूंदी सेन्ट्रल को-आपरेटिव बंक लिमिटेड, वूंदी

की ओर से

शुभ-कामनाओं सहित

बक की प्रगति की एक झलक

(राशि हजारों में)

१९५७ ५८ १९६१ ६२ १९६५ ६६ १९७० ७१ १९७१ ७२ ३१ १२ ७३

१ चुकता पूजा	७७	४१८	८६८	१५४४	३३६२	३७८३
२ अमानतें	६५	७००	४२१६	१८६४	३७४७	६१५२
३-कुल ऋण बकाया	११५	१३२२	३४३६	७१३८	१०६१८	१६०७०
४ शुद्ध लाभ	१	४२	६१	८२	६०	४०
५-कायशील पूजा	६७७	२७१७	७१४०	६६३६	१६०६४	२०५००

गणेशलाल पालीवाल
प्रध्यक्ष

श्री० एस० अग्रवाल
व्यवस्थापक प्र० वा०

विश्वविख्यात गुलाबी नगर की सुन्दरता को बनाये रखने में
न्यास को सहयोग दीजिये ।

- भवन निर्माण स्वीकृत मानचित्र के अनुसार ही करें ।
- बालोनी की सुन्दरता व एकरूपता के लिये भवन निर्माण सबंधी नियमा व उप नियमा का पालन करें ।
- इपि भूमि में भव्य रूप से रिहायशी भूखण्ड बेचन वाला से सावधान रहें ।

सी० एल० खन्ना
सचिव

नगर विकास न्यास, जयपुर

पर्यटकों का आकर्षण

उत्तरप्रदेश

हिमाच्छादित हिमांचल मे हृदयांगम दृश्यों, प्राकृतिक सौन्दर्य के मनोरम स्थल नैनीताल, ऋषिकेश, मसूरी, अल्मोडा, देहरादून, हरिद्वार, ब्रवीनाथ, केदारनाथ एव काबॅट नेशनल पार्क तथा—

ऐतिहासिक भवनों, वास्तुकला तथा सांस्कृतिक केन्द्र

मथुरा, आगरा, वाराणसी, लखनऊ, इलाहाबाद एव चित्रकूट के भ्रमण योग्य स्थल हैं ।

मसूरी और नैनीताल में वारदोत्सव मनाया जाता है ।

वाराणसी, अयोध्या, (फैजाबाद) इलाहाबाद और चित्रकूट (वादा) में दशहरे के दिनों रामलीला अनुपम ढंग से मनायी जाती है ।

वाराणसी तथा आगरा में संयोजित भ्रमण का आनन्द लीजिए तथा इलाहाबाद, आगरा, वाराणसी, अयोध्या, लखनऊ, हरिद्वार, मुनि-की-रेती एव श्रीनगर में आधुनिक साज सज्जा वाले पर्यटक आवास गृहों में ठहरने की सुविधा का लाभ उठायें ।

विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया निम्नलिखित पर्यटक कार्यालयों से सम्पर्क स्थापित करें —

नैनीताल, रानीखेत, काटगोदाम, अल्मोडा, हरिद्वार, मुनि की रेती, पोड़ी (गढ़वाल), कोटद्वार, श्रीनगर (गढ़वाल), देहरादून, मसूरी, ऋषिकेश, आगरा, वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, अयोध्या एव चन्द्रलोक भवन, ३६ जनपथ, नई दिल्ली ।

निदेशक पर्यटन, उत्तरप्रदेश, द्वारा प्रसारित

ENJOY DURING THE SUMMER VACATION
the beauty and coolness of the KULU Valley at

SAPUTARA

(The Sylvan Beauty of Gujarat)

Saputara, the New Hill Resort in Gujarat is situated on the second highest plateau on the Sahyadri range running through Gujarat State in midst of green and dense forest of Dangs. The hill resort is above mean sea level. Its maximum temperature in summer is 26.7 C and, therefore, its climate is cool and bracing. It is easily accessible all the year round as it has been linked up by all weather asphalt roads having link on one hand with Bilimora on Western Railway via Waghai and Ahwa and on the other with Nasik.

Regular S T buses are also plying from Ahwa and Bilimora. Holiday Homes, Dormitories and Rest House are available for occupation at reasonable rates.

For detailed information please write to

Commissioner of Tourism,
Government of Gujarat,
Sachivalaya
Block No 8
Gandhinagar
(Ahmedabad)

Tel 2439

Tourist Officer
Air Lines Building
Near Rupalee Cinema
Lal Darwaja Ahmedabad 1

Tel 24726

Asstt Director of Information,
Saputara Hill Resort,
Saputara, Dangs Dist
Ahwa